

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF ARCHAEOLOGY
CENTRAL ARCHÆOLOGICAL
LIBRARY

CALL No. 891.431 / Kut / Gup
ACC. No. 46379

D.G.A. 79.
GIPN-S4-2D. G. Arch.N. D./57-25-9-58-1,00,000

MUNSHI KAM MANOHAR LAL
Oriental & Foreign Book-Sellers,
P. B. 1165, Nai Sarak, DELHI-6.

कृतुचन

इत

मिरगावती

लेखक की अन्य कृतियाँ

साहित्य

१. कर्णिका (कहानी संग्रह)
२. प्रसाद के नाटक (आलोचना)
३. बिसराम के बिरहे (लोक-साहित्य)
४. चन्द्रायन (सम्पादित ग्रन्थ)
५. बन्दी की कल्पना (गद्य-काव्य)

पुरातत्व

६. पुरातत्व परिचय
७. भारतीय वास्तुकला

मुद्रातत्व

८. हमारे देश के सिक्के
९. पंचमाकर्ड कायन्स इन आन्ध्रप्रदेश गवर्नमेण्ट म्यूजियम (अंगरेजी)
१०. अमरावती होर्ड आव सिलवर पंचमाकर्ड कायन्स (अंगरेजी)
११. अली कायन्स ऑव केरल (अंगरेजी)
१२. रोमन कायन्स फ्राम आन्ध्र प्रदेश (अंगरेजी)

इतिहास

१३. अग्रवाल जाति का विकास
१४. आज्ञाद हिन्द फौज और उसके तीन अफसरों का मुकदमा

जीवन-वृत्त

१५. कार्ल मार्क्स
१६. शिवप्रसाद गुप्त
१७. जमनालाल बजाज

राजनीति

१८. भारतीय शासन परिचय

समाज-शास्त्र

१९. अपराध और दण्ड

यन्त्रस्थ

२०. द इम्पीरियल गुप्तान (अंगरेजी)
२१. गुप्तकालीन भारत
२२. यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ
मुद्रा सम्बन्धी अंगरेजी तथा हिन्दी में चार पुस्तकें

46379

कुतुबन

कृत

मिरगावती

(मूल पाठ, पाठान्तर, टिप्पणी एवं शोध)

सम्पादक

परमेश्वरीलाल गुप्त

एम० ए०, पी-एच० डी०, एफ० आर० एन० एस०

अध्यक्ष, पटना संग्रहालय

891.431

Kut/Gup



वितरक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

भैरवनाथ, वाराणसी-१

प्रथम संस्करण, १९६७
सोलह रुपये

आवरणचित्र : पकडला प्रतिसे
(सौजन्य, भारत कला-भवन, काशी)

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
LIBRARY, NEW DELHI.

Acc. No. 46379
Date 11.3.1968
Call No. 891.431/Gup

©

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

प्रकाशक : श्रीमती अन्नपूर्णा गुप्ता, बौलिया बाग, नाटीइमली, वाराणसी-१
मुद्रक : ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-६५४३-२२

Received from Mrs Mungli Ram Newsheral - Delhi. 27-11-12. 68 for Rs. 16/- only



डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
(१९०४-१९६६ ई०)

सरस्वतीके तपःपुत्र
दिवंगत डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल
के

श्रीचरणोंमें

जिनसे 'गुरुका आशीर्वाद' और 'भाई साहब कहनेका अधिकार'
प्राप्त था

अनुक्रम

वार्तिक—	क
कृतज्ञता ज्ञापन	छ
अनुशीलन	१-१२
कवि-परिचय	१३-२६
नाम	१३
पीर	१३
भिरगावतीकी रचना	१५
शाहेवक्त	१८
स्थान और कन्न	२५
काव्य परिचय	२७-८५
नाम	२७
लिपि	२८
भाषा	३७
भाषाका स्वरूप	४२
छन्द-योजना	४४
काव्य-स्वरूप	४९
कथा-वस्तु	५२
कथाका मूल-स्त्रोत	६६
वर्णन विधानपर पूरवर्ती प्रभाव	६९
अन्तर्कथाएँ	७३
भौगोलिक परिचय	७७
जीवन चित्रण	७८
रचनाका उद्देश्य	८०
परवर्ती साहित्यपर प्रभाव	८२

सामग्री और सम्पादन	८६-१००
उपलब्ध प्रतियाँ	८६
ग्रन्थका स्वरूप	९१
प्रति परम्परा	९७
पाठ-सम्पादन	९९
पाठोद्धार	९९
सम्पादन-विधि	१००
मिरगावती (पाठान्तर सहित मूल पाठ तथा टिप्पणी)	१०१-३९९
कड़वक-सूची	१०३
काव्य	११३
परिशिष्ट	४०१
प्रक्षेप	४०२
कड़वक—तुलनात्मक सारिणी	४१०
शब्द-सूची	४२६

वार्तिक

ग्रन्थका कार्य समाप्त होनेके पश्चात् और मुद्रण कालके बीच कुछ नये तथ्य सामने आये हैं, उन्हें यहाँ दिया जा रहा है। पाठकोंसे अनुरोध है कि इनका यथा स्थान समावेश कर लें।

कुतुबनकी कन्न

पृष्ठ २५-२६ पर हमने कुतुबनका सम्बन्ध बनारस (वाराणसी)से होनेकी बात कही और वहाँ उनकी कन्न होनेकी सम्भावना प्रकट की है। अभी हालमें काशी विश्वविद्यालयके भारती महाविद्यालयके अध्यापक श्री निसार अहमदसे शत हुआ कि बनारसमें बिसेसरगंजसे सिटी स्टेशनकी ओर जाने वाली सड़क पर हरतीरथकी जो चौमुहानी है, उससे पूरब, लगभग एक फर्लांगकी दूरी पर कुतुबन शहीद नामका एक मुहल्ला है। वहाँ एक मजार है जो कुतुबनकी मजार कही जाती है। कुतुबन, जिनकी वह मजार है और जिनके नामपर वह मुहल्ला है, वे कौन थे और कब हुए, वे शहीद क्यों कहलाये, इस सम्बन्धकी कोई भी जानकारी उस मुहल्लेके बड़े-बूढ़ोंसे प्राप्त न हो सकी। किन्तु असकरीके कथनको, जिसकी चर्चा हमने पृष्ठ २६ पर की है, ध्यानमें रखते हुए इस बातकी ही सम्भावना अधिक है कि इनका सम्बन्ध मिरगावतीके रचयिता कुतुबनसे ही होगा। कदाचित्त भविष्यमें इस पर कुछ अधिक प्रकाश पड़ सके।

बीकानेर प्रतिकी तिथि

पृष्ठ ८९-९० में हमने बीकानेर प्रतिकी पुष्पिकाके सुसमती समाये अनम सर्वन वदीय अतीमुखी सोमावसरे अंशमें उस प्रतिके लिपिकालके होनेकी बात कही है और उसे कैथी लिपि-जनित भ्रष्टतासे पूर्ण बताते हुए सुसंवते समये अनम श्रावण वदीय अतिमुखी सोमवासरेके रूपमें स्पष्ट करनेकी चेष्टा की है और अनमको वर्षका द्योतक कहा है। किन्तु वह क्या है, यह बताने में हम असमर्थ रहे हैं। अभी हालमें डाक्टर उदयनारायण तिवारीकी कृपासे धरणीदासके शब्द प्रकाशकी एक प्रति देखनेको मिली जिसे तिवारीजीने किसी प्रतिसे स्वयं तैयार किया है। उसके अन्त में जो पुष्पिका है उसका एक अंश इस प्रकार है—संवत् १८९९ समेनाम माह फागुन वदी पंचमी रोज सनीचर के तैयार भैल। और तमी डाक्टर शिवगोपाल मिश्र सम्पादित मधुमालतीका दूसरा संस्करण भी देखनेमें आया। उसमें उन्होंने एकडला प्रतिकी जो पुष्पिका दी है उसका आवश्यक अंश इस प्रकार है—सम्बत् १७४४ समैनाम जेठ सुदी दूजी को तैयार भई वार बुधवार को। एकडलासे ही प्राप्त डंगवै कथाकी एक प्रतिकी पुष्पिकाका अंश है—सं० १७४४

सभेनाम वैसाख सुदी तीज ३, दंगे परगढ़ पूरन भई। इसी प्रकार चक्रव्यूह कथाकी प्रतिकी पुष्पिका है—आगे सम्बत १७४६ समैनाम पूस सुदी पंचमी कहुँ लिखा। इनका उल्लेख मिश्रजीने अपने सम्पादित ग्रन्थ डंगवै कथा और चक्रव्यूह कथामें किया है। इन पुष्पिकाओंके प्रकाशमें बीकानेर प्रतिकी पुष्पिका देखनेसे स्पष्ट हो जाता है कि वह पुष्पिका भी इसी परम्पराकी है और उसका समये अनम और कुछ नहीं, इन पुष्पिकाओंका समैनाम (समय नाम) है। इस प्रकार हमने जो अनम में वर्ष के छिपे होने का अनुमान किया था वह निर्मूल सिद्ध हो जाता है।

वस्तुतः बीकानेर प्रतिकी पुष्पिकामें सुसंवत्ते और समय नामके बीच अंकों में वर्षका उल्लेख होना चाहिये था। किसी प्रमादसे लिपिक अपनी प्रति तैयार करनेका वर्ष भूल गया होगा, ऐसी कल्पना तनिक क्लिष्ट होगी। अतः धारणा यही होती है कि यह लिपिककी अपनी पुष्पिका न होकर उस प्रतिकी पुष्पिका है जिससे उसने यह प्रति तैयार की है। सम्भवतः उसमें वर्षवाला अंश नष्ट होगया रहा होगा इससे उसने उसे नहीं दिया। इस धारणाका समर्थन सुसमती और समये अनमके बीच दिये गये खड़ी लकीरसे होता है। अतः यह प्रति कब लिखी गयी, इसके जाननेका जो साधन था वह पुष्पिका होते हुए भी अप्राप्य है।

वर्ष बोधक संवत् और समय दोनों का एक साथ प्रयोग उपयुक्त पुष्पिकाओं के अतिरिक्त बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना में सुरक्षित हलधरदास कृत सुदामाचरितकी एक प्रतिमें भी देखने को मिला। वहाँ सुभसंवत् १८३७ साल समयका प्रयोग हुआ है। इन सभी प्रतियोंका सम्बन्ध उत्तर प्रदेशके पूर्ववर्ती भाग और बिहारसे है। इससे निष्कर्ष निकालना अनुचित न होगा कि बीकानेर प्रति जिस प्रतिसे तैयार की गयी थी, वह इसी प्रदेशकी थी और वह अठारहवीं और उन्नीसवीं शतीमें ही, जब इस दंगसे वर्ष लिखनेका प्रचार था, तैयार की गयी रही होगी। इस प्रकार वह प्रति किसी भी अवस्थामें अठारहवीं शतीसे पूर्वकी नहीं हो सकती। उससे तैयारकी गयी बीकानेर प्रति तो और बादकी होगी। इस प्रकार यद्यपि हम बीकानेर प्रतिका समय निश्चित नहीं कह सकते पर इतना तो निसंदिग्ध रूपसे कह ही सकते हैं कि वह सौ डेढ़ सौ बरससे अधिक पुरानी नहीं है।

वैरागर

कड़वक ६४ की पंक्ति १ में वैराकर हीराका उल्लेख हुआ है। डाक्टर मोतीचन्द्रने उपलब्ध सूत्रोंके आधारपर उसके चाँदा (मध्य प्रदेश) जिलेमें वेनगंगा तट पर स्थित वैरागढ़ होनेका अनुमान किया है। उसे ही हमने अपने टिप्पणी में ग्रहण किया है। अभी हमारा ध्यान पुहकर कृत रसरतनकी ओर गया। उसकी रचना संवत् १६७३ (१६१५ ई०) में हुई है। उसमें वैरागरका एक राजनगरके रूपमें उल्लेख है। कहा गया है—

सोमबंस सोमेसुर राजा । वैरागर अधिपति छिति छाजा ॥
दिसि पूरब प्रतिपालन करई । धर्म राज कलमष हरई ॥
उपजहि जहाँ अमोलक हीरा । सुंढाहल उपजहि बल बीरा ॥

इससे ज्ञात होता है कि वैरागर पूर्वमें स्थित था और वहाँ हीरा और हाथी दोनों पाये जाते थे। इस सूचनाके अनुसार वैरागरके चाँदा जिलेमें होनेका अनुमान ठीक नहीं जान पड़ता। किन्तु हम स्वयं पूर्वमें ऐसा कोई स्थान ढूँढ पानेमें असमर्थ हैं जहाँ हीरा और हाथी दोनों मिलते हों। यदि इसकी पहचान कोई पाठक कर सकें तो बतानेकी कृपा करें।

अँहुट वज्र

कड़वक २८५ की पंक्ति ७ के प्रथम दो शब्दोंको हमने अबहुत बज्र पढ़ा है। वस्तुतः उसका उचित पाठ है अँहुट वज्र, जो एकडला प्रतिका पाठ है। अँहुट वज्र (साढ़े तीन वज्र) का आशय समस्त न पानेके कारणही हमने यह सरल पाठ अपनाया था। अभी शिवगोपाल मिश्र सम्पादित डंगवै कथा देखनेसे ज्ञात हुआ कि कुतबनने यहाँ डंगवै कथाकी ओर संकेत किया है। इस कथाके अनुसार नारदने उर्वशीको दिनमें घोड़ी हो जानेका शाप दिया था। अँहुट (साढ़े तीन) वज्र एकत्र होनेपर ही उसका मोक्ष सम्भव था। अतः कथा प्रसंगमें भीम और कृष्णमें युद्ध होता है और उन दोनोंके वज्रायुध गदा और चक्र टकराते हैं। उस समय दोनोंके बीच-बचाव करनेके निमित्त हनुमान अपना वज्रसम लंगूर पैला देते हैं। इस प्रकार तीन वज्र एकत्र हो जाते हैं। भीमका शरीर आधे वज्रके समान कहा जाता है, इस प्रकार साढ़े तीन वज्रोंका संयोग होता है और उर्वशी बन्धनसे मुक्ति पा जाती है। यहाँ कुतबन उसीकी ओर संकेतकर कहते हैं—अँहुट वज्र जो हों इक ठाँ, तो न यह बँदि छूट (साढ़े तीन वज्र एकत्र हो जाँय तब भी यह बन्दी न छूट पायेगा)।

पाठ-दोष

पुस्तक मुद्रित हो जाने पर ज्ञात हुआ कि प्रेस कापी तैयार करनेमें असावधानी, मुद्राराक्षसोंकी कृपा और प्रूफ देखनेमें चूक हो जानेके कारण काव्य-पाठमें अनेक दोष उत्पन्न हो गये हैं। यथासम्भव उन दोषोंका परिमार्जन यहाँ किया जा रहा है—

पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ	पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ
८१२	बदन	बुदन	२२१६	मिरिग	मिरिगि
१५१४	ब	न	२६१४	दुहुँ	दहुँ
१६१४	एको	एको	२९१२	कहहि	कहँहि
१७१६	कौन	कउन	४२१२	तेज	सेज
१९१२	बेग	बेगि	४८१५	धरहि	धरहि
१९१७	खेल	खेलि	५२१४	हा	हौ

पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ	पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ
५७।४	मै	मै	३३६।३	बरसि	बरिस
७४।२	अछर	अछरि	३४३।१	मतमाता	मदमाता
८०।३	छिरकि	छिरकि	३४४।६	उदेक	उदेग
८०।७	नखन	नखत	३४४।७	की इ	कीन्ह
८६।१	मिरग	मिरिगि	३४९।३	करज	करेज
९०।४	आयुस	आयसु	३४९।६	क	के
९२।२	उधार	उधार	३४९।७	तोहे	तोही
९६।५	इह कह चाह	इह कहँह	३५२।१	निस	निसि
९८।२	कुँवरहू	कुँवरहि	३५४।१	चपटी	चटपटी
९८।४	सोइ	सोई	३५५।१	जा	जो
१३३।१	गै	गिय	३५५।२	हा	हौ
१३८।४	समाना	समानी	३५५।३	हार्इ	होई
१४९।६	रमहा	रइसा	३५५।३	जा	जो
१६१।५	आयसु	आयस	३५५।३	साई	सोई
१८४।४	तोर	तोरे	३५६।६	लग	लोग
२००।३	उपचारा	उपचरा	३६१।७	राजुकुँवर	राजकुँवर
२००।४	मिरगावत	मिरगावति	३६२।२	ठाउँ	ठाऊँ
२०३।१	आहा	अहा	३६२।७	पंयहि	पंथिहि
२०७।७	धनि	धनि	३६३।२	हाडो	हाडो
२१४।३	आयसु	आयुस	३६७।५	के	कै
२१४।५	आयसु	आयुस	३७९।१	साँजेउ	साँजेक
२१६।६	आयसु	आयुस	३७९।२	दुनिया	दुतिया
२१७।६	आयसु	आयुस	३७९।२	रन	रेन
२५४।४	कैवल	कँवल	३८१।३	मोहि	मोँही
२६२।३	देइ	देई	३८४।२	आई	आइ
२६४।५	बरिज	बरजि	३८७।१	कयउ	गयऊ
२९१।३	धुमकर	मधुकर	३८९।२	अहो	उहो
३०४।५	बई	बइ	३९०।२	तुम्हुँहुँ	तुम्हहुँ
३०५।२	गँवावई	गँवावइ	३९२।३	बजाई	बजाइ
३१०।२	दसराइह	दरसाइह	३९२।७	कहै	कीन्ह
३१०।६	ददेरीं	दरेरीं	४००।३	नाउँ	नाऊँ
३२०।४	नाऊँ	नाँउ	४०२।७	मेले	मेलै
३२३।१	आधर	आँधर	४०६।६	गरुई	गरुई
३२९।७	परै	परे	४०८।१	यहु	यह
३३२।५	गिार	गिरि	४०९।४	कर	गर
३३५।३	ताहि	तोहि			

इनके अतिरिक्त भी कुछ अन्य पाठ दोष हो सकते हैं, जो दृष्टि-दोषसे छूट गये हों। पाठक ऐसे दोषोंकी ओर इंगित करनेकी कृपा करें।

शब्द-सूची बनाते समय यह बात भी दृष्टिमें आयी कि एकही शब्द एकसे अधिक रूपोंमें लिखे गये हैं। यह वर्तनी-दोष फारसी लिपिके नुक्तोंके कारण ही मुख्य हैं। उनकी उचित वर्तनी क्या होगी, इस ओर इस अवस्थामें ध्यान देना सम्भव न था। पाठक उनपर स्वयं विचार लें।

कड़वक १११ पंक्ति १ (पृ० १७७) में प्रयुक्त सींघ सिंदूर सम्बन्धी टिप्पणी में सिंदूरका तात्पर्य हाथीसे भिन्न है, इसके प्रमाण में मधुमालती की पंक्ति १८१।२ उद्धृतकी गयी है, पर प्रमादवश मधुमालतीके स्थानपर मिरगावती लिख गया है। पाठक इस भूलको सुधार लें। साथ ही इस टिप्पणी में इतना और जोड़ लें कि हाथी और सिन्दूरकी भिन्नता पुहकर कृत रस रतनकी इस पंक्तिसे भी प्रकट होती है—सिंह सिंदूर उरग विग हाथी (चम्पावती खण्ड, २४)।

कृतज्ञता-ज्ञापन

पटनाके प्रोफेसर सैयद हसन असकरी और भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ डॉ० जियाउद्दीन अहमद देसाईका मैं आभार मानता हूँ जिन्होंने मिरगावतीकी फारसी प्रति उपलब्ध कर इस कार्यके करनेकी प्रेरणा प्रदान की है। असकरी महोदयका इसलिए भी कृतज्ञ हूँ कि उनकी ही कृपा से चन्दायनकी वह प्रति प्राप्त हुई थी जिसके हाशियेपर मिरगावतीका एक पाठ अंकित है। इसके अतिरिक्त वे निरन्तर मेरे इस सम्पादन कार्यमें रुचि लेते रहे हैं। एकडलावाली प्रतिके उपयोग करने की अनुमति प्रदान कर भारत कला भवन के अध्यक्ष रायकृष्णदास ने तो अपना स्नेह ही व्यक्त किया है, उसके प्रति क्या कहूँ !

डाक्टर शिवगोपाल मिश्रने स्वसम्पादित संस्करणकी प्रति भेंट न की होती तो मैं कदाचित्त अनेक जानकारी प्राप्त करनेसे वंचित रह जाता और तब शायद पुस्तक में इस रूपमें प्रस्तुत न कर पाता। बीकानेर प्रतिके टूटका फोटोभी उन्हींकी कृपासे प्राप्त हुआ है। भाई कन्हैया सिंहने अनेक स्थलों पर मेरे पाठ-दोषकी ओर संकेत कर मेरी सहायता की है। इन दोनों ही प्रियजनोंका मैं कृतज्ञ हूँ।

श्री जगन मेहताने एकडला प्रतिके फोटो तैयार किये जिनसे मुझे पाठके सम्पादनमें बड़ी सहायता मिली। उन्हें भी इस अवसरपर स्नेहपूर्वक स्मरण करता हूँ।

अन्तमें यह उल्लेख पर्याप्त होगा कि शब्द-सूची तैयार करनेमें मेरी पत्नी अन्न-पूर्णा और बेटी उपाने हाथ बटाया है। यदि इस सूचीकी कुछ सार्थकता हो तो उसका श्रेय इन दोनोंको होगा।

अनुशीलन

सतरहवीं शतीके आरम्भमें बनारसी दास नामके एक जैन कवि हो गये हैं। उन्होंने बड़ी संख्यामें जैन धर्म सम्बन्धी ग्रन्थोंकी रचना की है। इस कारण उनकी गणना जैन-साहित्यके अग्रणी लेखकोंमें की जाती है। उन्होंने अर्थ-कथानक नामसे अपनी एक पद्य-बद्ध आत्म-कथा भी लिखी है। यह सम्भवतः हिन्दीमें लिखी जानेवाली पहली आत्म-कथा है। अपनी इस आत्म-कथामें बनारसी दासने जन-जीवनकी चर्चा करते हुए एक स्थान पर कहा है—

तव घरमें बैठे रहें, जाहिं न हाट बजार ।
मधुमालति मिरगावति पोथी दोइ उदार ॥
ते बाँचहि रजनी समै, आवहिं नर दस बीस ।
गावें अरु बातें करैं, नित उठि देहिं असीस ॥

इससे उनके समयमें मधुमालती और मिरगावती नामक दो पोथियोंके लोकप्रिय होनेकी सूचना मिलती है। इन काव्योंकी क्या कथा है, इसको उन्होंने कोई न तो चर्चा की है और न कोई संकेत ही प्रस्तुत किया है। अतः सामान्य धारणा हो सकती है कि जैन होने के कारण बनारसी दासने जैन समाजमें प्रचलित किन्हीं कथाओंकी ओर संकेत किया होगा।

काव्यके मिरगावती नामसे परिलक्षित होता है कि कथाका सम्बन्ध मृगावती नाम्नी किसी नारीसे होगा। जैन-साहित्यमें कौशाम्बी-नरेश शतानीककी पत्नी मृगावतीकी कथा अति प्रचलित है। वे वैशालीके हैहय-वंशी राजा चेटककी पुत्री और भगवान् महावीर की ममेरी बहन थीं। अतः अनुमान किया जा सकता है कि उन्होंने इन्हीं की कथाकी ओर संकेत किया होगा। उनकी कथा इस प्रकार है—

एक दिन रानी मृगावतीको, जब वे गर्भवती थीं, रक्तसे स्नान करनेका दोहद हुआ। उनकी इस इच्छाकी पूर्तिके निमित्त प्रधानमन्त्री युगन्धरने जल-कुण्डको रक्त-वर्णके जलसे भरवा दिया और उसे रक्त समझ कर रानी मृगावतीने अपनी इच्छापूर्ति की। जैसे ही वे स्नान करके कुण्डसे बाहर आयीं, उन्हें माँस-पिण्ड समझ कर भारण्ड नामक पक्षी अपने पंजेमें दबोच कर उड़ गया। राजा शतानीकने चौदह वरसों तक रानी मृगावतीकी खोज करायी, पर उनका कुछ पता न चला।

एक दिन अचानक एक वणिक् एक वनवासीको लेकर उनके सम्मुख उपस्थित हुआ और उनके नामसे अंकित कंकण उपस्थित किया और बताया कि उसे वह वनवासी उसके पास बँचनेके लिए लाया था। वह चोरीका माल जान पड़ता है अतः

उसे लेकर वह उनके पास आया है। कंकण देखते ही राजाने पहचान लिया कि यह वही कंकण है जिसे रानीने रक्त-स्नानके समय पहन रखा था।

राजाके पूछने पर वनवासीने बताया कि एक दिन जब वह साँप मार रहा था, एक बालकने आकर साँप मारनेसे रोका और साँपको छोड़ देनेके बदले उसने उसे वह कंकण दिया। उसे उसकी पत्नी विगत पाँच बरसोंसे पहनती रही है। उसकी इच्छा अब कंकणके बदले कुण्डल पहननेकी हुई, इसलिए वह उसे बेचने ले आया था।

यह सुनकर राजा उस वनवासीके साथ मलय पर्वत पर उस जगह गया, जहाँ उस वनवासी को वह कंकण मिला था। वहाँ उसे खोई हुई रानी और पुत्र उदयन, जिसने वनवासीको कंकण दिया था, दोनों मिले। पत्नी पुत्रको लेकर राजा घर आया।

कुछ दिनों पश्चात् राजा शतानीककी राज-सभामें कोई विदेशी आया। उसने राजाके यहाँ उत्कृष्ट चित्रोंके अभाव पर खेद प्रकट किया। विदेशीकी भर्त्सना सुन कर राजाने एक सर्वगुण-सम्पन्न चित्रकारको बुलवाया और उसे उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत करनेका आदेश दिया। चित्रकारको किसी यक्षका बरदान प्राप्त था जिसके कारण वह किसी वस्तुके आंशिक अंशको देख कर ही उसका सर्वांगपूर्ण चित्र बना देता था। एक दिन उसने रानी मृगावतीके पैरका अँगूठा देख कर उनका सर्वांगपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया जिसमें उनके जाँघके तिलका भी अंकन था। उसे देख कर राजाको चित्रकारके चरित्रके प्रति सन्देह हुआ और उसने उसका दाहिना हाथ कटवा कर राज्यसे निष्कासित कर दिया।

चित्रकारने बायें हाथसे रानी मृगावतीका दूसरा चित्र तैयार किया और उसे लेकर उज्जयिनी-नरेश प्रद्योतके पास पहुँचा। चित्र देखते ही प्रद्योत मृगावतीपर मुग्ध हो गया और शतानीकके पास दूत भेजकर मृगावतीकी याचना की। जब वह उसे प्राप्त करनेमें असफल रहा तो उसने कौशाम्बीपर चढ़ाई कर दी। इस युद्धके बीच शतानीकको अतिसार हो गया और उसकी मृत्यु हो गयी। शतानीककी मृत्युके पश्चात् मृगावतीने प्रद्योतके पास कहला भेजा कि यदि बल-प्रयोग किया गया तो मैं जल मरूँगी अन्यथा पति-शोकसे मुक्त होनेपर आपके पास स्वयं आ जाऊँगी। प्रद्योत यह सुनकर लौट गया।

रानी मृगावती अपने पुत्र उदयनको युद्ध शिक्षा देती और प्रद्योतके बुलाओंकी उपेक्षा करती रही। निदान एक दिन फिर प्रद्योतने कौशाम्बीपर चढ़ाई कर दिया। इसी बीच भगवान् महावीर कौशाम्बी पधारे और मृगावतीने उनसे प्रवचन ले ली। और आर्या चन्दनबालाके पास साधना करती हुई चालीस समय उपवास कर मोक्ष प्राप्त किया।

यह कथा प्राचीनतम जैन-ग्रन्थ एकादश अंग सूत्रके पाँचवें अंग भगवतीसूत्रके बारहवें शतकके दूसरे उद्देशकमें पायी जाती है।¹ उसके आधारपर तेरहवीं शतीमें देवप्रभ

१. बौद्ध साहित्यमें भी यह कथा सुधन-मनोहराकी कहानीके रूपमें पायी जाती है (द गिलगिट मैन्स्युस्क्रिप्ट, सम्पा० नलिनाक्ष दत्त)। कथा सरित्सागरमें भी यह कथा किञ्चित्परिवर्तनके साथ दूसरे लम्बकमें है।

सूरिने संस्कृतमें मृगावती चरित लिखा ।^१ इसी कथापर मृगावती चौपाई नामसे विनय समुद्रने संवत् १६०२ में^२, सकलचन्दने संवत् १६४३ से पूर्व^३ और समयसुन्दरने संवत् १६६८ में^४ रचना की । ये ग्रन्थ इस बातके द्योतक हैं कि सतरहवीं शतीमें यह कथा काफी प्रचलित थी । अतः बनारसी दासने इसी कथाकी ओर संकेत किया था, ऐसा समझना अनुचित न होगा ।

किन्तु दृष्टव्य यह है कि बनारसी दासने मिरगावतीके साथ जिस दूसरे लोक-प्रिय काव्य—मधुमालतीका उल्लेख किया है, उसकी चर्चा जैन-साहित्यमें कहीं नहीं मिलती । जैनेतर साहित्यमें मधुमालती नामक एक प्रेमाख्यानक काव्य उपलब्ध है जो मंझन कवि कृत सोलहवीं शतीके मध्यकी रचना है । यह इस बातका संकेत है कि बनारसी दासने मिरगावती नामसे उसी ढंगके किसी जैनेतर प्रेम-कथाको ओर संकेत किया है उपर्युक्त जैन-कथाका नहीं । उस समय मृगावती नामक राजकुमारीसे सम्बन्ध रखनेवाली एक प्रेम-कथा लोकमें प्रचलित थी, इसका प्रमाण दो अन्य प्रेमाख्यानक काव्योंमें मिलता है ।

चितरावली नामक प्रेमाख्यानमें, जिसकी रचना १६१३ ई० में उसमान नामक कविने की थी, लिखा मिलता है—

मिरगावती मुख रूप बसेरा ।

राजकुँवर भयउ प्रेम अहेरा ॥^५

इससे एक वर्ष पूर्व १६१२ ई० की एक दूसरी रचना रूगावती है, जो अभी तक अप्रकाशित है । उसमें ये पंक्तियाँ हैं—

लोरक चन्दा मैना प्रीतिह को तिरे ।

राजकुँवर मिरगावति लिखि लिखि ते धरे ॥^६

इनसे ज्ञात होता है कि बनारसीदासके समय राजकुँवर और मृगावती नामक प्रेमी-प्रेमिकाकी कथा लोकमें काफी प्रचलित थी । इस कथाकी जानकारी लोगोंको इससे भी पहले थी, यह मलिक मुहम्मद जायसीके पदमावतसे, जो १२७ हिजरी (१५२७ ई० के आसपास) की रचना है,^७ प्रकट होता है । उसमें कहा गया है—

१. अगरचन्द नाहटा, सती मृगावती, कल्याण (गोरखपुर), नारी-अंक, जनवरी १९४८, पृ० ७१०-७१२ ।

२. वही ।

३. वही ।

४. समयसुन्दर कृत कुसुमाञ्जलि, सम्पा० अगरचन्द नाहटा, सं० २०१३, पृ० ४६, भूमिका ।

५. चितरावली, कड़वक ३० ।

६. चन्दायन, आगरा संस्करण, पृ० ६; विद्वानाथप्रसाद द्वारा उद्धृत ।

७. कुछ लोग इसकी रचनाका समय ९४७ हिजरी मानते हैं, किन्तु हमें यह अग्राह्य है । हमारे मतके लिए देखिए 'परिषद पत्रिका', पटना, वर्ष ३, पृ० ७२ ।

राजकुँवर कंचनपुर गयऊ ॥
मिरगावति कहँ जोगी भयऊ ॥^१

इससे इस कथाके सम्बन्धमें इतना और ज्ञात होता है कि राजकुँवर मृगावतीके प्रेममें जोगी बनकर कंचनपुर गया था ।

मृगावतीके प्रेममें राजकुँवरके योगी बनकर कंचनपुर जानेकी कथापर आधारित मधुमालतीके ढंगके काव्यके अस्तित्वकी बात पहले पहल १९०० ई० में प्रकाश में आयी । उस वर्ष काशी नागरीप्रचारणी सभाकी ओर से हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंके खोजकी जो पहली रिपोर्ट प्रकाशित हुई, उसमें मृगावती नामक काव्यके एक खण्डित प्रति का परिचय दिया गया, जो कैथी-नागरी लिपिमें लिखी हुई थी और खोजियोंको काशीके चौखम्भा-स्थित भारतेन्दु पुस्तकालयमें मिली थी । रिपोर्टके अनुसार इस कथाका सारांश इस प्रकार है—

चन्द्रगिरिके राजा गनपतदेवका पुत्र कंचननगरके राजा रूपमुरारकी पुत्री मृगावती पर मोहित हो गया । इस राजकुमारीको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर चले जानेकी विद्या ज्ञात थी । राजकुमारने उसका पता लगया और उससे उसका विवाह हो गया । विवाहके पश्चात् एक दिन मृगावती राजकुमारको धोखा देकर उसकी अनुपस्थितिमें उड़ भागी । उसके विरहमें राजकुमार भी योगी-वेश धारणकर घरसे निकल पड़ा । पहले वह समुद्रसे घिरे एक पहाड़पर पहुँचा, जहाँ उसने रुकमिन नामकी एक स्त्री को राक्षससे बचाया । प्रत्युपकारमें रुकमिनके पिताने उसका विवाह उससे कर दिया । वहाँ से उस नगरमें पहुँचा, जहाँ मृगावती अपने पिताके मृत्युपरान्त राज्य कर रही थी । वहाँ वह बारह बरस रहा । इधर गनपतदेव अपने पुत्रकी बाट जोहते-जोहते घबड़ा उठा । अन्तमें उसने एक दूत उसे लौटा लानेके लिए भेजा । वह मार्गमें रुकमिनसे मिलता हुआ कंचननगर पहुँचा और राजकुमारसे पिताका सन्देश कह सुनाया । राजकुमार मृगावतीके साथ अपने देशकी ओर लौटा और मार्गमें रुकमिनको भी साथमें ले लिया । घर पर पहुँचने पर आनन्दोत्सव मनाया गया । वरसों तक राजकुमार अपनी रानियोंके साथ आनन्द मनाता हुआ जीवन व्यतीत करता रहा । अन्तमें एक दिन मृगयामें हाथीसे गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी और उसकी दोनों ही रानियाँ उसके शवके साथ सती हो गयीं ।

खोज रिपोर्टमें इस काव्य ग्रन्थके रचयिताका नाम मियाँ कुतुबन और रचना काल ९०९ हिजरी (१५०३ ई०) बताया गया है और यह भी कहा गया है कि मियाँ कुतुबन शेख बुरहान चिद्दीके शिष्य और सूरवंशीय नरेश शेरशाहके पिता हुसेन शाहके आश्रित थे । उसमें उपलब्ध प्रतिके सम्बन्धमें कहा गया है कि उसने आरम्भ के चार पत्र नहीं थे । उपलब्ध पत्रोंसे आरम्भके चार और अन्तका एक कड़वक उद्धृत भी किया गया है । ये कड़वक प्रस्तुत संस्करणके क्रमशः कड़वक ७, ८, ९, १३

और ४२८ हैं। इससे यह प्रकट होता है कि खोजियोंको जो प्रति उपलब्ध थी वह आदि से ही नहीं, अन्तसे भी खण्डित थी।

खोज रिपोर्ट प्रकाशित होनेके उपरान्त शीघ्र ही किसी समय यह प्रति अपने उपलब्धि-स्थानसे गायब हो गयी और आजतक उसका पता नहीं है। इस कारण उक्त प्रति और उसकी सामग्री की जो भी जानकारी आज उपलब्ध है, वह इस खोज रिपोर्टके माध्यमसे ही है। अतः पूर्ण सामग्रीके अभावमें दो महत्वपूर्ण जिज्ञासाएँ उभरकर सामने आती हैं—

१—आरम्भ और अन्तसे प्रति खण्डित थी, ऐसी अवस्थामें स्पष्ट है कि खोजियोंको सिरनामा और पुष्पिका दोनों ही प्राप्त नहीं थे। फिर उन्होंने किस आधारपर ग्रन्थका नाम सृगावती बताया और लेखकको मियाँ कुतुबन कहा? हो सकता है उपलब्ध पत्रोंके हाशिये पर ग्रन्थका नाम लिखा रहा हो, जैसा कि बहुधा ग्रन्थोंमें मिलता है; किन्तु रचयिताको मियाँ कुतुबन बतानेका कोई आधार जान नहीं पड़ता। रचयिताने अपनी रचनाके बीच यत्र-तत्र अपने नामका उल्लेख किया है, ऐसा पीछे प्राप्त अन्य प्रतियोंसे ज्ञात होता है। किन्तु सर्वत्र लेखकने अपनेको कुतुबन कहा है मियाँ कुतुबन नहीं। कुतुबनके लिए मियाँको उपाधि खोजियों को कहाँ से ज्ञात हुई, यह रहस्य है।

२—खोज रिपोर्टमें उद्धृत कड़वकके अनुसार कुतुबनके गुरुका नाम शेख बुदन था। फिर क्योंकर खोज-रिपोर्टके लेखकोंने उनको शेख बुरहान चिश्ती कहा?

जो भी हो। खोज रिपोर्टके प्रकाशनके पश्चात् कुतुबन और सृगावतीके सम्बन्धमें कदाचित् बहुत दिनोंतक किसीने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। जब मिश्रबन्धु ने मिश्रबन्धु-विनोदका पहला खण्ड प्रकाशित किया तो लिखा—कुतुबन शेखने सृगावती ग्रन्थ संवत् १५६० में बनाया। ये महाशय शेख बुरहानके चेले थे और शेरशाह सूरीके पिता हुसैनशाहके यहाँ रहते थे। इन्होंने पद्मावतीका भाँति दोहा चौपाइयोंमें रचना की। इनकी गणना साधारण श्रेणीमें है।^१ इस प्रकार मिश्रबन्धु ने खोज-रिपोर्टके कथनको दुहरा भर दिया। नयी बात यह की कि कुतुबनको मियाँ से शेख बना और ज्ञात मात्र पाँच कड़वकोंके आधार पर उन्हें साधारण श्रेणी का कवि घोषित कर दिया।

इसी प्रकार जब रामचन्द्र शुक्लने जायसी ग्रन्थावली प्रकाशित किया तो उन्होंने इस सम्बन्धमें लिखा—पूरबमें बंगालके शासक हुसेन शाहके अनुरोधसे, जिसने सत्यपीरकी कथा चलायी थी, कुतुबन मियाँ एक ऐसी कहानी लेकर जनताके सामने आये जिसके द्वारा उन्होंने मुसलमान होते हुए भी अपने मनुष्य होनेका परिचय दिया।^१ इस प्रकार सूर-वंशके हुसेन शाहको कुतुबनका आश्रयदाता न मान कर

१. मिश्रबन्धु विनोद, प्रथम भाग, सं० १९८३, पृ० २२९।

२. जायसी ग्रन्थावली, संवत् २०१३, पृ० ३।

उन्होंने बंगाल-सुल्तान हुसेनशाह को उनका आश्रय दाता बताया। पर शीघ्र ही उनके इस मतमें परिवर्तन हुआ और उन्होंने हिन्दी साहित्य का इतिहासमें बताया कि ये (कुतुबन) चिश्ती बंशके शेख बुरहानके शिष्य थे और जौनपुर के बादशाह हुसेन शाहके आश्रित थे।^१

तदनन्तर सुकुमार सेनने इसलामी बंगला साहित्यमें रामचन्द्र शुक्लके दोनों मतोंके समन्वय रूपमें अपना यह नया मत प्रकट किया कि—कवि कुतुबन जौनपुरके सुल्तान हुसेन शाह का आश्रित था तथा उन्हींके साथ बंगाल चला गया और गौड़के हुसेन शाहके यहाँ उसने आश्रय लिया था। मृगावती काव्य ९०९ हिजरीमें गौड़ देशमें रचा गया।^२

लगभग पचास वर्ष तक कुतुबन और मिरगावतीके सम्बन्धकी कोई नयी सामग्री प्रकाशमें नहीं आयी। इस कालके बीच डाक्टरकी डिग्रीके निमित्त विभिन्न विश्वविद्यालयोंके सम्मुख हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों पर अनेक शोध-प्रबन्ध उपस्थित किये गये। उन सबमें कुतुबन और मिरगावतीकी चर्चाका आधार खोज-रिपोर्ट और उपर्युक्त विद्वानोंका कथन ही है। अनुसन्धित्सुओं पर खोज-रिपोर्टका कुछ ऐसा प्रभाव छाया रहा कि नयी जानकारी प्राप्त करने अथवा प्राप्त जानकारी पर ध्यान देने की उन्होंने या तो आवश्यकताका अनुभव नहीं किया या उनकी ओर उनका ध्यान ही नहीं गया।

१९४९ ई० के मार्चमें पहली बार मिरगावती सम्बन्धी नयी जानकारी सामने आयी। दीनानाथ खत्रीने शादूल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेरसे प्रकाशित होने वाली शोधपत्रिका राजस्थान भारतीमें कुतुबन की मृगावतीकी एक महत्त्वपूर्ण प्रति शीर्षक लेख प्रकाशित किया।^३ इस लेखमें उन्होंने मिरगावतीकी तीन प्रतियोंका संक्षिप्त परिचय दिया। इनमें एक तो चौखम्भा वाली वह प्रति है, जिसका विवरण खोज रिपोर्टमें उपलब्ध है और जिसकी जानकारी सबको रही है। प्रस्तुत परिचय भी उसी रिपोर्टके आधार पर ही दिया गया है। शेष जिन दो प्रतियोंका उल्लेख इस लेखमें है वे पहले सर्वथा अज्ञात थीं। इनमेंसे एक प्रतिके नागरीप्रचारणी सभा, काशीमें होनेकी बात कही गयी है और बताया गया है कि उसमें केवल सात पत्र हैं।^४ दूसरी प्रतिके बीकानेरके अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालयमें होनेकी सूचनाके साथ उसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

दो वर्ष पश्चात् सं २००७ (१९५१ ई०) में परशुराम चतुर्वेदीने सूफी प्रेम-काव्योंके अवतरणोंका एक संग्रह सूफी-काव्य संग्रह नामसे प्रस्तुत किया। इसमें पहली बार मिरगावतीके ऐसे अवतरण उपस्थित किये जो खोज रिपोर्टमें उद्धृत अवतरणोंसे

१. हिन्दी साहित्यका इतिहास, पन्द्रहवीं आवृत्ति, २०२२ वि०, पृ० ९४।

२. इसलामी बंगला साहित्य, १९५० ई०, पृ० ८।

३. राजस्थान भारती, भाग २ अंक ३ (मार्च १९४९), पृ० ३९-४४।

४. सम्भवतः लेखकका तात्पर्य भारत कला भवन, काशी वाली प्रतिसे है।

सर्वथा भिन्न थे। ये अवतरण उन्होंने एक खण्डित प्रतिसे लिये थे, जो उन्हें भारत कला भवन, काशीमें देखनेको मिली थी।^१ मिरगावतीकी किसी प्रकारकी कोई प्रति भारत कला भवनमें है, उस समय तक किसी को पता न था।

अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर और भारत कला भवन, काशी की प्रतियोंके शात होनेके लगभग तीन वर्ष पश्चात् १९५३ ई० में कमल कुलश्रेष्ठका शोध-प्रबन्ध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य प्रकाशित हुआ। उसमें इन दोनोंमें से किसी भी प्रति की कोई चर्चा नहीं है। उसे देखनेसे ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने इनके बारेमें कुछ सुना भी न था। उन्होंने इस शोध प्रबन्धमें खोज-रिपोर्ट वाले अवतरण ही अविकल रूपसे उद्धृत किया और उसमें दिये हुए कथा-सारको ही अंग्रेजीसे अनूदित करके रख दिया है।

१९५४-५५ ई० के आस-पास मिरगावतीकी तीन अन्य प्रतियाँ प्रकाशमें आयीं। इनमेंसे दो प्रतियोंको प्रकाशमें लानेका श्रेय पटना कालेजके प्राध्यापक (अब काशी प्रसाद जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटनाके निदेशक) सैयद हसन असकरी को है। वे मध्यकालीन भारतीय इतिहासके विद्वान् तो हैं ही, उर्दू-हिन्दी साहित्यके प्रति भी उनकी रुचि है और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज उनका व्यसन है। अपने इस व्यसनके परिणामस्वरूप उन्हें अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेका श्रेय प्राप्त है। १९५३-५४ ई० में मनेर शरीफ (पटना) के खानकाहके सजादनशीन शाह इनायतउल्लाहके पुराने ग्रन्थों के बस्तोंको टटोलते हुए उन्हें मौलाना दाऊद कृत चन्दायनकी ६४ पृष्ठोंकी एक खण्डित प्रति मिली। इस प्रतिके प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर कुतुबन कृत मिरगावतीके भी एक-एक कड़वक अंकित हैं। इस प्रतिका परिचय देते हुए असकरी ने एक लेख प्रकाशित किया और चन्दायन और मिरगावती दोनोंसे परिचित कराया।^१ यह प्रति फारसी लिपिमें है।

असकरीको जिस दूसरी प्रतिको प्रकाशमें लानेका श्रेय है, वह भी फारसी लिपि में है और वह भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ जियाउद्दीन अहमद देसाईको १९५४ ई० के लगभग दिल्लीमें प्राप्त हुई थी। उन्होंने उसे अध्ययनके निमित्त असकरीको दिया और असकरीने लेख द्वारा लोगोंको उस प्रतिसे परिचित कराया।^१ यह प्रति लगभग पूर्ण है केवल आरम्भका एक पत्र नहीं है।

तीसरी प्रति कैथी लिपिमें है और अत्यन्त खण्डित है। यह प्रति मूलतः फतहपुर (उत्तर प्रदेश) जिलेके एकडला ग्राम निवासी ओम्प्रकाश सिंह और राजेन्द्रपाल सिंहके परिवार में थी। उन लोगोंसे यह प्रति अगस्त १९५५ में प्रयाग विश्वविद्यालयके प्राध्यापक शिवगोपाल मिश्रको प्राप्त हुई और अब वह भारत कला भवन, काशी में

१. सम्भवतः दीनानाथ खत्रीने इसी प्रतिका परिचय दिया है। उनका विवरण इस प्रतिके विवरण से एक दम मिलता है।
२. करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १७-२४।
३. जर्नल ऑव बिहार रिसर्च सोसाइटी, भाग ८१ (१९५५ ई०), पृ० ४५३।

है। इस प्रति के प्रकाश में आनेकी सूचना कैलाश कल्पितने प्रयागके हिन्दी दैनिक अमृत पत्रिकाके ३ सितम्बर १९५५ ई० के अंक में मृगावती तथा मनुमालतीकी प्रतियाँ प्राप्त शीर्षकसे प्रकाशित किया।

तदनन्तर इस एकडला वाली प्रतिको लेकर उपर्युक्त प्रतियोंकी जानकारीके प्रकाशमें मिरगावतीके सम्बन्धमें उदयशंकर शास्त्री^१, रामकुमार वर्मा^२ और शिवगोपाल मिश्र^३ के कई विवादात्मक लेख प्रकाशित हुए। इन लेखोंके माध्यमसे मिरगावतीकी थोड़ी-सी चर्चा हुई, पर यह चर्चा केवल सतही ही थी।

इस प्रकार मिरगावतीकी अब तक छः प्रतियाँ प्रकाशमें आयी हैं। इनमें चौखम्भा वाली प्रतिका, अनुपलब्ध होनेके कारण, काव्यके सम्पादन-प्रकाशनकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नहीं है। खोज-रिपोर्टमें उद्धृत पाँच कड़वकोंका उल्लेख मात्र किया जा सकता है। मनेर और काशी प्रतियाँ भी काव्यके अंश मात्र हैं। उनसे भी काव्यका कोई रूप सामने नहीं आता। उनका उपयोग केवल पाठान्तरोंको देखने समझनेके लिए ही किया जा सकता है। केवल एकडला, बीकानेर और दिल्ली प्रतियाँ ही काव्य-सम्पादनकी दृष्टिसे उपयोगी कही जा सकती हैं। किन्तु एकडला और बीकानेर प्रतियाँ, दोनों इस प्रकार खण्डित हैं कि वे बहुलांश उपस्थित करते हुए भी, स्वतन्त्र रूपसे काव्यका रूप सामने रखनेमें असमर्थ हैं। दोनोंको एक दूसरेका पूरक कह सकते हैं। दोनोंको मिलाकर काव्यका एक रूप खड़ा होता है, किन्तु उससे पूरा काव्य प्रस्तुत नहीं हो पाता। दिल्ली प्रति ही एक ऐसी है जो आरम्भके एक पत्रको छोड़कर शेष रूपमें पूर्ण है। सभी प्रतियोंका आधार लेकर काव्यको निखरे रूपमें प्रस्तुत करनेकी सामग्री १९५५ ई० के अन्त तक लोगोंके सामने आ गयी थी। पर उनके उपयोगका प्रयत्न तबसे अबतक किन लोगोंने और किस प्रकार किया, यह जाननेका साधन उपलब्ध नहीं है।

सुना जाता है कि दिल्ली, मनेर, काशी और बीकानेर प्रतियोंके आधार पर मिरगावतीके सम्पादनका का कार्य उदयशंकर शास्त्रीने अपने हाथोंमें लिया था। कदाचित उन्होंने उसका सम्पादन समाप्त कर प्रेस कापी भी तैयार कर लिया था और

१. (क) मृगावतीका रचनाकाल १६ वीं शताब्दी, दैनिक भारत, ७ सितम्बर १९५५।

(ख) मृगावतीकी प्रतियोंकी पूर्णता, दैनिक भारत, ९ सितम्बर १९५५।

(ग) भ्रम फैल ही तो गया, दैनिक भारत, २० नवम्बर १९५५।

(घ) कुतुबनकी मृगावती—एक परिचय, दैनिक नवनीत, ७ फरवरी १९५६; ब्रज भारतीय, वर्ष १३ अंक ३ (सं० २०१३), पृ० २३-२८।

(च) मृगावतीका मर्म, दैनिक भारत, ७ फरवरी १९५६।

२. मृगावतीकी नवीन प्रति, दैनिक भारत, १० तथा १२ सितम्बर १९५५।

३. (क) मृगावतीके प्रतिके सम्बन्धमें, दैनिक भारत, १० सितम्बर १९५५।

(ख) मृगावती, दैनिक नवजीवन, ३० अक्टूबर १९५५; हिन्दी प्रचारक, अक्टूबर १९५५।

(ग) मृगावतीके सम्बन्धमें वितण्डावाद, दैनिक भारत, २० अप्रैल १९५६; नवजीवन ९ सितम्बर १९५६।

दशान चो अब कन्ति बावुन बाजाना

अरी बायिन हउन थिजे कावुन
नेसि तुरी कुवान देसि
नाक कात थिजे देसि
बात लहत अन तुरी

किस लोरेसन मोह डराबास
तुलुनि बोल जायिस बास

तुलु लोडक जवु कुवादा
तुलु मारुदनि तुलुन तुलुन

लसिन लोरक सत्के जसि का जाबि ओदु निभार
बावुन अक जवु सर जवु दातुलो बिरसिभार

तुलु अथि मी तुम तुलु
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस

तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस

तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस
तुलु मस मस मस

चन्द्रायनकी मनेर प्रतिका एक पृष्ठ और दो हाशिये, जिन पर मिरगावती अंकित है ।

ममीयेओदेउडिडिउपिपाडी मजाप्रुननओरुडुगाडनाडी
 डिरीगंलेडिडीडीओरुपप्रांठ मजाप्रुननपीडिरेनेपनागा
 श्रीमीडिडेसेडीओरुमागोपागा जसनेगडनीआभेउनजाडा।
 आओपादेदेपपजापे ॥ यडनीगआरुडीलागपवाडे
 मडुनडुनीपोआओरुनजागा मडुनजापाप्रुदाथओरीलागा
 लौ

तानननओरुसोरावगदेपीलीमलेगेपपघाडा।

पेपेवेगेताननरओरुपौगहनप्रुश्रीमीताडा।



श्रीपुत्र

नमपुत्रुप्रुहउरुमवा देपेठकरुकरुचागना
 देपेदोइनाअगहाप्रुहा धैवागमीचागातमुनगा
 देपेओरुप्रुनेगागतडी योगनसुगेठओरुदेरुकरु
 सोमठवेगप्रुमेजुजगी अगनमुचनप्रेजहाजागी
 दारहीनहातेहातनगपगा महीमानगउप्रुगइसनागा
 लौ
 पंधजीहाताप्रुलोपेगप्रुगेनेजोती
 जेपुजलचहेस्ताप्रुनसपेनसापकुतोती

श्रीपीवी श्रीकोइ न है न इकल
 वे प्र न स र न दी व नी स व व न
 व न त व न प न व व व त
 व न व न क प न व त सं व नी
 श्रो ते व न व न क न त व न व न

क न त क ने व नी त स व व व ल
 श्रो न व त स व व व र ॥
 श्रो ते व न व न प नी पी व व
 श्रो वी व न व द डी व नी व नी
 ये क न व व न व न व व न व न

र व ग न (श्री) श्री क की व नी व व व नी के मा म र त व
 व न व नी व न व नी के के ली क व व व नी व न व न व न

मा ह ते ने गी प श हे प्र री ॥
 वी की व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 क न न व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व

ते व व व व व व व व व व
 वी व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व

स व न व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व

प ही ल व ही प ड ड क बा व ही
 प नी ह म व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 प ही ल व व व व व व व व व व

व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व

व व व व व व व व व व व व
 व व व व व व व व व व व व

मुद्रणके निमित्त उसे प्रेसमें भेज भी दिया था, ऐसा भी कहा जाता है ।^१ किन्तु अभी तक उनका यह कार्य प्रकाशमें नहीं आया है ।

एकडला वाली प्रति मिलने पर शिवगोपाल मिश्रने उसके आधार पर मिरगावतीका पाठ तैयार किया और १९५९ ई० के लगभग उसे प्रकाशनार्थ भेज भी दिया । पर एक साल बाद वह बिना प्रकाशित हुए ही उनके पास लौट आयी ।^२ तब उन्होंने बीकानेर, मनेर शरीफ और काशी प्रतियोंका उपयोग कर नये सिरेसे एक दूसरा पाठ तैयार किया, जिसे गत वर्ष (शक सं० १८८५) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागने प्रकाशित किया है । अब तक मिरगावतीका एकमात्र मुद्रित संस्करण यही है ।

मिरगावतीके सम्पादन-प्रकाशनका तीसरा प्रयास मेरा अपना है, जो आपके सम्मुख है । सम्मेलन-संस्करण के प्रकाशनसे बहुत पूर्व जब मैं चन्द्रायनका सम्पादन कर रहा था, तभी असकरीके लेखके माध्यमसे मिरगावतीके दिहड़ी प्रति की ओर आकृष्ट हुआ था । उस समय तक मिरगावतीके सम्पादनकी कोई चर्चा नहीं सुनाई पड़ रही थी । चन्द्रायनके माध्यमसे मनेर शरीफ प्रतिका फोटो मेरे पास पहलेसे ही था । अतः इच्छा हुई कि इन दोनों प्रतियोंके आधार पर मिरगावती का भी सम्पादन करूँ । मिरगावतीके अन्य प्रतियोंके अस्तित्वकी बात तब तक मेरे कानों तक नहीं पहुँच पायी थी ।

मेरी इस इच्छाके पीछे निहित मेरी यह धारणा रही है कि मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्पादनमें फारसी प्रतियों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये । वे नागरी-कैथी प्रतियोंकी अपेक्षा अधिक विकृति-मुक्त होती हैं और मूलसे उनका निकटका सम्बन्ध है । किन्तु अरबी-फारसी लिपिमें लिखे हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंको बिना किसी पूर्व अभ्यासके शुद्ध पढ़ना अत्यन्त कठिन है । अतः उसका पाठोद्धार कार्य सुगम और सर्व-सुलभ नहीं है । हिन्दीके विद्वानोंमें ऐसे लोग कम ही हैं जो इस कामको सफलतापूर्वक कर सकें । चन्द्रायनके पाठोद्धारकी सफलतासे मुझे कुछ ऐसा लगा कि दूसरोंकी अपेक्षा मेरे लिए मिरगावतीका पाठोद्धार अधिक सुगम होगा और मैं उसका उचित पाठ उपस्थित कर सकूँगा । हो सकता है यह मेरा अहं हो । पर मैंने एक बार पुनः अपने क्षेत्र से हट कर पराये क्षेत्रमें उतरनेका दुस्साहस कर ही डाला ।

चन्द्रायनके सम्पादनका कार्य चल ही रहा था, तभी मैंने मिरगावतीके पाठोद्धारमें हाथ लगा दिया । जियाउद्दीन अहमद देसाईने दिल्ली प्रतिके उपयोग करनेकी सहर्ष अनुमति प्रदान की और असकरीने उस प्रतिको मेरे पास भेजनेकी उदारता दिखायी । नस्तालीक़ लिपिमें लिखी होनेके कारण इस प्रतिके पाठोद्धारमें विशेष कठि-

१. परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दीके सफ़ी प्रेमाख्यान काव्य, १९६२ ई० पृ० ४८ ।

२. कुतुबन कृत मृगावती, पृ० ६५ ।

नाई नहीं हुई। १९६२ ई० के आरम्भ में यूरोप जानेसे पूर्व इसका प्रथम वाचन समाप्त हो गया था। कदाचित्त उस समय यदि यूरोप जाना न हुआ होता तो इसका सम्पादन कार्य भी तभी समाप्त हो जाता और हो सकता है कि यह तभी प्रकाशित भी हो जाती। यूरोपसे लौटने पर अन्य कार्योंमें ऐसा व्यस्त हुआ कि इस कार्यको हाथमें लेनेका अवसर न प्राप्त हो सका। तभी १९६३ ई० के जूनमें मैं पटना संग्रहालयका अध्यक्ष होकर चला आया। वह वर्ष उसकी व्यवस्था देखने-समझनेमें ही चला गया। गत वर्ष जब कुछ अवसर मिला तो फरवरीके महीनेमें पुनः इस कार्यमें हाथ लगाया। दिल्ली प्रतिके वाचनको दुहराया और मनेर शरीफ प्रतिके साथ उसकी संगति बैठायी।

सम्मेलन संस्करण के प्रकाशानसे पूर्व बीकानेरके प्रति की मुझे किसी प्रकारकी जानकारी न थी। अतः उस समय उनके उपयोगका कोई प्रश्न मेरे सामने न था। चौखम्भा प्रतिके पाँच कड़वकोंका उपयोग मेरी दृष्टिमें कोई अर्थ नहीं रखता था। काशी वाली प्रतिका मूल भारत कला-भवनमें हूँदनेपर भी न मिल सका। उसकी एक आधुनिक प्रतिलिपि देखनेमें आयी, पर उसे मैंने अपने कामका न माना। बच रही एकडला प्रति। उसका उपयोग मैं केवल पाठान्तरोंके निमित्त करना चाहता था।

एकडला प्रति के फोटो मेरे बम्बई रहते ही प्रिंस ऑव वेल्स संग्रहालयके फोटोग्राफर जगन मेहता काशी जाकर ले आये थे। भारत कलाभवनमें यह प्रति अलग-अलग पत्रों के रूप में उपलब्ध है और उनका वहाँ जो क्रम है, उसका काव्यके कड़वक क्रमसे कोई सम्बन्ध नहीं है। पता नहीं वे मूल रूपमें इसी प्रकार शिवगोपाल मिश्र को प्राप्त हुए थे या पीछे से बिखर गये। ऐसी स्थिति में उनका क्रम स्थिर किये बिना उसका उपयोग करना सम्भव न था। पत्रोंपर दिए हुए संख्या-संकेत भी इस कार्यमें सहायक न थे। इस कारण यह कार्य काफी कठिन और श्रम अपेक्षित था। अतः जबतक मैंने फारसी प्रतियोंका पाठ तैयार नहीं कर लिया, इस प्रतिकी उपेक्षा की। तदनन्तर फारसी प्रतियोंके कड़वकोंको आधार बनाकर एकडला प्रतिके पत्रोंको क्रम दिया और तब पाठान्तर तैयार करनेकी ओर बढ़ा।

इस प्रकार एकडला प्रतिसे मैं पाठान्तर तैयार कर ही रहा था तभी सम्मेलन संस्करण प्रकाशमें आया और अप्रैल या मईके महीनेमें शिवगोपाल मिश्रने उसकी एक प्रति भेजनेकी कृपा की। उसे देखनेपर मुझे लगा कि उससे मिरगावतीकी वास्तविक पूर्ति नहीं होती यद्यपि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उससे मुझे बीकानेर प्रतिका परिचय मिला और यह उचित जान पड़ा कि पाठान्तर रूपमें उसके भी पाठ ग्रहण किये जायँ। इसके निमित्त उसके फोटोग्रिफ्ट उपलब्ध कर देनेके लिए अगरचन्द्र नाहटा को लिखा किन्तु उन्होंने उसकी प्रति प्राप्तिमें अनेक कठिनाइयाँ बतार्यां। अतः मूल प्रतिसे पाठ ग्रहण करनेका विचार त्यागना पड़ा। यह मानकर कि मुद्रित प्रति उस प्रतिकी सावधानीसे की गयी प्रतिलिपि होगी, मैंने उसे ही बीकानेर प्रतिके पाठका आधार बनाया। और जब मुद्रित प्रतिसे बीकानेर प्रतिके पाठ लिये तो चौखम्भा और काशी

प्रतियों के पाठ ग्रहण करनेमें मेरे लिए आपत्ति जैसी कोई बात नहीं रही। अतः उसके भी पाठ पाठान्तरमें ग्रहण किये। इस प्रकार प्रस्तुत संस्करणमें मैंने अबतक ज्ञात सभी प्रतियोंका उपयोग किया है। फलतः काव्य अपने स्वरूपमें पूर्ण है, आरम्भके केवल तीन कड़क नहीं हैं।

पाठ-सम्पादन करते समय मैंने संशुद्ध-पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) प्रस्तुत करने जैसा कोई प्रयास नहीं किया है। दिल्ली प्रतिको पाठका मूल आधार मानकर मैंने अन्य प्रतियोंके पाठान्तर मात्र संकलित कर दिये हैं। ऐसी अवस्थामें यह कार्य कदाचित वैज्ञानिक नहीं कहा जायेगा। किन्तु मेरी निश्चित धारणा है कि मेरे इस कार्यका वैज्ञानिक कथित ढंगपर किये गये कार्यसे कदाचित ही किन्हीं-किन्हीं स्थलोंपर भिन्नता होगी। इस कहनेका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि मेरा कार्य सर्वथा निदोष है। मध्य-कालीन कवियों और काव्योंसे मेरा परिचय अत्यल्प है। हिन्दी साहित्य मेरी जीविको-पार्जनका साधन नहीं, व्यसन (हाबी) मात्र है। व्यसन (हाबी) के रूपमें ही मैंने इस कार्यको किया है। इस भावसे किया गया कार्य सर्वांगपूर्ण होगा, ऐसा समझना दम्भ होगा।

भाषाके सम्बन्धमें मेरी एक विवशता है। वह यह कि नगर-निवासी होते हुए भी मैं ठेठ गँवार हूँ। जब आठवीं कक्षामें था तभी हिन्दी व्याकरणका साथ छूट गया; भाषा-विज्ञानकी किसी पुस्तकसे आजतक सम्पर्क स्थापित न कर सका। राजनीतिक कार्यकर्ताके रूपमें अवधी-भोजपुरी बोलियोंसे सम्पर्क रखनेवाले गाँवोंमें १९३० और १९४३ के बीच महीनों नहीं, बरसों बीते हैं। अतः नागरक कृत्रिमतासे अछूते रहकर शब्द और व्याकरण जिस रूपमें गाँवोंके स्त्री-पुरुषोंके कण्ठ और जिह्वामें समाए हुए थे, वे रातदिन मेरे कानोंसे टकराते रहे हैं। भाषा-सम्बन्धी मेरा ज्ञान वहींसे संचित है। गाँवोंके लोगोंकी बोल-चाल ही भाषाके सम्बन्धमें मेरी पुस्तकें थीं और गाँवके लोग ही मेरे गुरु थे। लोक-जीवन और लोक-व्यवहार ही मेरा शब्द-कोष है। प्रस्तुत कार्यमें मैं अपने इसी ज्ञानपर निर्भर रहा हूँ। हो सकता है प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्पादनमें निष्णात समझे जानेवाले विद्वानों और उनके चारों ओर मँडरानेवाले शिष्योंको, जो पदे-पदे ग्रियर्सनको वेद वाक्यकी तरह दुहराते रहते हैं, मेरा यह कार्य व्याकरणकी अज्ञतासे भरा और भाषा-विज्ञानके सिद्धान्तोंसे शून्य जान पड़े, अतः यह बता देना आवश्यक जान पड़ा।

इन दिनों प्रेमाख्यान काव्योंके सम्पादन-प्रकाशनमें पाठ-सम्पादनके साथ-साथ पाठका व्याख्यात्मक अर्थ देनेकी भी परिपाटी चल पड़ी है। किन्तु उस परिपाटीका निर्वाह इस ग्रन्थमें नहीं है। मेरी धारणा है कि इस काव्यमें कुछ ऐसा नहीं है जो पाठकोंके समझके बाहर हो और किसी प्रकारकी व्याख्याकी अपेक्षा रखता हो। व्याख्या करना अनावश्यक श्रम ही नहीं अकारण ही ग्रन्थकी आकार-वृद्धिका प्रयास भी होता, जो मुझे अभीष्ट नहीं। यदि काव्यको किसी प्रकारकी व्याख्याकी आवश्यकता होती भी

तो कदाचित्त मैं उसका प्रयास न करता । मुझमें वह क्षमता और पाण्डित्य नहीं, जिसके बलपर निष्णात व्याख्याकारोंकी तरह उसकी साँग इस प्रकार हिलती है जैसे उदास मूस (चूहा) हिलता रहता है जैसी उत्कृष्ट व्याख्या, टीका और अर्थ कर सकूँ । मुझ द्वारा सम्पादित चन्द्रायनकी चर्चा करते हुए एक निष्णात व्याख्याकार प्राध्यापकने मुझे जिस ढंगकी चेतावनी दी है, उससे ध्वनित होता है कि काव्य-ग्रन्थोंके अर्थ और व्याख्या करनेका एकमात्र अधिकार विश्वविद्यालयोंके हिन्दीके प्राध्यापकोंको ही है । किसी अन्यका ऐसा करना उसका दुस्साहस है । इस चेतावनीके बाद धर्म-निरपेक्ष राज्यका नागरिक होनेके कारण इस प्राध्यापक-धर्ममें हस्तक्षेप करनेकी बात सोच भी नहीं पाता । अतः मैंने उन शब्दोंके जो मुझे महत्त्वके लगे, अर्थ अथवा उनके सम्बन्धमें आवश्यक टिप्पणी देकर ही सन्तोष माना है ।

इस ग्रन्थको मैंने जिस रूपमें प्रस्तुत किया है, उसे पाठक किस प्रकार ग्रहण करेंगे, इसकी मैं कल्पना करना नहीं चाहता । मेरे इस कार्यसे यदि किन्हीं पाठकोंको अणुमात्र भी लगे कि मैंने हिन्दी साहित्यकी कुछ सेवा की है तो वही मेरे लिए पर्याप्त आनन्दकी बात होगी ।

पटना संग्रहालय,

पटना ।

कार्तिक पूर्णिमा, २०२२ वि० ।

परमेश्वरीलाल गुप्त

कवि परिचय

नाम

मिरगावतीकी उपलब्ध प्रतिधोंमें सिरनामा या पुष्पिकाके रूपमें ऐसी कोई सामग्री उपलब्ध नहीं है जिससे उसके रचयिताके सम्बन्धमें कुछ जाना जा सके। हाँ, काव्यके भीतर पाँच स्थलोंपर^१ कुतुबन नामका इस प्रकार प्रयोग हुआ है कि अनुमान किया जा सकता है कि काव्यके रचयिताका नाम अथवा कवि-नाम कुतुबन था। खोज रिपोर्टमें इन्हें मियाँ कुतुबन कहा गया है और मिश्र-बन्धुने अपने मिश्र-बन्धु-विनोदमें इनका उल्लेख कुतुबन शेखके नामसे किया है। इनके आधारपर परवर्ती लेखकोंने जहाँ कहीं मिरगावतीकी चर्चा की है, लेखकका नाम मियाँ कुतुबन या शेख कुतुबन बताया है। उन्हें मियाँ कहनेका क्या आधार है, कहा नहीं जा सकता। हो सकता है मुसलमान होनेका अनुमान कर खोज रिपोर्ट के सम्पादकने आदर्श मियाँ शब्दका प्रयोग किया हो। उनके शैल होनेकी कल्पनाका आधार सम्भवतः उनके गुरुका शैल होना है।

कुतुबन अपने सम्बन्धमें इतने तटस्थ थे कि उन्होंने चन्द्रायनसे प्रारम्भ होने-वाली प्रेमालयानक काव्यकी परम्पराका अविकल अनुसरण करते हुए भी अपना किसी प्रकारका वैयक्तिक परिचय देना आवश्यक नहीं माना। हमारे पास यह जाननेका कोई भी साधन नहीं है कि वे कहाँके निवासी थे, कहाँ रहते थे।^२ उनके माता-पिताके सम्बन्धमें भी हम कुछ नहीं जान पाते। उनके सम्बन्धमें हम केवल यहीं जानते हैं कि (१) वे किसके शिष्य थे, (२) उन्होंने मिरगावती की कव रचना की और (३) वे किसके आश्रित थे अथवा उनका शाहे-वक्त कौन था।

पीर

चौखम्भा प्रतिमें कुतुबनके पीर (गुरु) का नाम शेख बुदन बताया गया है। एकडला प्रतिमें भी यही नाम दिया हुआ है। पर खोज रिपोर्टमें उनका नाम शेख बुरहान बताया गया है और कहा गया है कि उनका सम्बन्ध चिश्तिया सम्प्रदायसे था। खोज रिपोर्टके इस कथनको रामचन्द्र शुक्लने अपने हिन्दी साहित्य का इतिहास

१. कड़वक ८१२, ११५१६, १२११६, १९६१६, २८०१६।

२. जिस ढंगसे कुतुबनने रचना-कालकी तिथि गणना की है, उससे सन्देह होता है कि वे दक्षिणालय थे अथवा दक्षिणके साथ उनका निकटका सम्बन्ध था। देखिये आगे पृ० १७-१८।

में दुहराया है और उन्हींके कथनको परवर्ती विद्वान् और अनुसन्धित्सु दुहराते चले आ रहे हैं ।

शेख बुरहानकी खोज करते हुए लोगोंका ध्यान जायसीकी इन पंक्तियोंकी ओर गया है—

गुरु मोहदी खेवक मैं सेवा ।
चलै उताइल जिन्ह कर सेवा ॥
अगुआ भयेउ शेख बुरहान् ।
पंथ लाइ मोहि दीन्ह गियान् ॥^१

इस कथन के आधारपर लोगोंने मोहदीके गुरु शेख बुरहानके साथ, जो कालपी में रहते थे, कुतुबनका सम्बन्ध जोड़नेकी चेष्टा की है । शेख बुरहानके कुतुबनके पीर होनेकी कल्पना जिस समय की गयी थी, उस समय पाठ-भ्रष्टताके कारण लोगोंके सामने यह तथ्य न आ सका था कि कुतुबनके गुरु सुहरवर्दी सम्प्रदाय के थे । नामकी भिन्नताके साथ शेख बुरहानका सुहरवर्दी न होना, अपने आपमें इस बातका द्योतक है कि वे कुतुबनके पीर नहीं हो सकते ।

जिन लोगोंने काव्यमें दिये नाम शेख बुदन (बुधन) पर ध्यान दिया उन लोगोंने शेख बोधन शुत्तारीको कुतुबनका गुरु बताया है । शेख बोधन शेख अब्दुल्ला शुत्तारीके वंशज और सिकन्दर लोदीके समकालिक थे । उनकी चर्चा अखबार-उल-अखबारके लेखक मुहम्मद अब्दुल हकने की है । उनका कहना है कि उनके ताऊ (पिताके बड़े भाई) शेख रिज्कउल्लाह, जिन्होंने मुत्ताकी नामसे फारसीमें बाक्यात-पे-मुश्ताकी और राजन टपनामसे हिन्दीमें प्रेम-वान-जोत निरंजन लिखा है, शेख बोधनके पास गये थे और उनसे जिक्र (दीक्षा) प्राप्त किया था । अखबार-उल-अखबार और अखबार-उल-असफिया, दोनोंमें इन पीरका नाम स्पष्टतः बोधन (बे, वाव, दाल, हे, नून) दिया हुआ है; बुदन (या बुधन) (बे, दाल, हे, नून) नहीं । बोधन नाम और शुत्तारी सम्प्रदाय दोनों ही इस बातके स्पष्ट संकेत हैं कि वे कुतुबनके पीरसे सर्वथा भिन्न थे ।

वस्तुतः कुतुबनके पीरका नाम शेख बुदन था जैसा कि दिल्ली प्रतिमें स्पष्ट है । शेख बुदन नामके कई सन्त हुए हैं । एक शेख बुदन मनेरी थे, जिनकी कुछ रचनाएँ मनेर शरीफमें सुरक्षित बयाजमें प्राप्त हैं । यह किस सम्प्रदायके हैं यह अज्ञात है किन्तु इनके बेटे कुतुबमुवडित बस्लीके सम्बन्धमें निश्चित है कि वे फिरदौसी सम्प्रदायके थे । इस कारण इन्हें भी कुतुबनका पीर अनुमान नहीं किया जा सकता । एक दूसरे सन्त मखदूम शेख बुदन हैं । ये सुविख्यात सूफी सन्त ईसा ताज जौनपुरीके शिष्य और उत्तराधिकारी थे । वे कस्बा अजौलीके रहने वाले थे और वहीं उनकी समाधि भी है । सत्रहवीं शतीमें लिखित मीरात-उल-असरारके लेखक अब्दुर्रहमान चिश्तीने, जो

अमेठीके रहने वाले थे, उनके अलौकिक गुणोंकी चर्चा की है। सुप्रसिद्ध सूफ़ी सन्त अब्दुर कुद्दूस गंगोहीने भी अपने एक पत्रमें, जिसे उन्होंने हैबत खाँ सरवानीके नाम लिखा था, उनका उल्लेख 'शेखुलमशायख अल्लामतुलवरा कुदवतुननुकवा शेख बदन'के रूपमें किया है। यह शेख बदन किस सम्प्रदायके थे यह निश्चित रूपसे ज्ञात नहीं है। उनके गुरु मुहम्मद ईसा ताज मूलतः चिश्तिया सम्प्रदायके थे किन्तु उन्होंने सुहरवर्दी आदि कई सिलसिलों (सम्प्रदायों) से भी इजाजत (दीक्षा) प्राप्त की थी। हो सकता है शेख बदनने शिष्यके रूपमें उनसे सुहरवर्दी सम्प्रदायकी दीक्षा ली हो।। यदि यह अनुमान ठीक है तो ये ही कुतुबनके पीर रहे होंगे।

मिरगावतीकी रचना

जायसी कृत पद्मावतमें मिरगावतीकी कथाका सार प्राप्त है। उससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि मिरगावती पद्मावतसे पहलेकी रचना होगी। किन्तु इस प्रकारके किसी अनुमानकी आवश्यकता कभी किसीको नहीं हुई। चौखम्भा प्रतिमें, उसके खोजियोंको एक ऐसा कड़वक उपलब्ध था जिसमें नौ सौ नव जब संवत् अही लिखा हुआ था। उससे उन लोगोंने तभी जान लिया था कि मिरगावतीकी रचना ९०९ हिजरीमें की गयी थी। उस समयसे ही लोग इस बातको मानते चले आ रहे हैं। किन्तु ९०९ हिजरी को विक्रमीय संवत्में परिवर्तन करनेमें लोगोंने निरन्तर भूल की है। रामचन्द्र शुक्ल, कमल कुलश्रेष्ठ और हजारीप्रसाद दिवेदीने उसे १५५८ वि० (१५०१ ई०) बताया है। सत्यजीवन वर्माने नागरी प्रचारणीय पत्रिकामें प्रकाशित अपने एक लेखमें उसे १५६७ वि० (१५१० ई०) ठहराया है। वस्तुतः ९०९ हिजरी २६ जून १५०३ को आरम्भ होकर १४ जून १५०४ को समाप्त हुआ था। अतः चौखम्भा प्रतिसे ज्ञात ९०९ हिजरीके अनुसार मिरगावती १५०३-०४ ई० की रचना है।

बीकानेर प्रतिके प्रकाशमें आने पर उसमें चौखम्भा प्रतिसे सर्वथा भिन्न कड़वक ज्ञात हुआ, जिसमें रचना-कालके सम्बन्धमें कहा गया है—

जहिया तेहे पन्द्र सै साठी।

तहिया ये रे चौपई गाँठी ॥

× × ×

पहिले पाख भादो छठी आही।

सिह रासि सिंघ नीरावही ॥

इन पंक्तियोंसे ऐसा जान पड़ता है कि रचयिताने रचना-कालका उल्लेख विक्रमीय संवत्में किया है। अतः रचनाकालके सम्बन्धमें लोगोंके मनमें कुछ सन्देह और भ्रम उत्पन्न होने लगा। इस भ्रान्तिको दूर करनेका प्रयास करते हुए उदयशंकर शास्त्रीने अपना यह अनुमान उपस्थित किया कि भादो कृष्ण ६ ग्रन्थके समाप्त होनेकी तिथि है। चौखम्भा प्रतिके कड़वकमें उल्लिखित इस बातकी ओर संकेत करते हुए कि

ग्रन्थकी रचना दो मास दस दिनमें हुई थी, उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि काव्यकी रचनाका आरम्भ ज्येष्ठ शुक्ल ११, संवत् १५६० को हुआ होगा। साथ ही उन्होंने इस बातको भी स्पष्ट किया कि विक्रमीय संवत् १५६० (१५०३ ई०) ९०९ हिजरीमें पड़ता है।^१ इसी बातको परशुराम चतुर्वेदीने इस प्रकार व्यक्त किया है— कुतुबनने मृगावतीकी रचना-कालकी तिथि भी भादो बदी ६ दी है और कहा है कि मैंने दो महीने दस दिनमें पूरा किया। उन्होंने एक स्थान पर इस कालको हिजरी सन् ९०९ अर्थात् सन् १५०३ भी बताया है, जो संवत् १५६० में ही पड़ जाता है।^१

शिवगोपाल मिश्रके सम्मुख दिल्ली प्रतिके अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियाँ थीं। पर वे यह निश्चय न कर पाये कि चौखम्भा और बीकानेर प्रतियोंके कड़वक किसी एक ही तथ्यको व्यक्त करते हैं या उनका तात्पर्य दो भिन्न तथ्योंसे है। उन्होंने अपना मत इन शब्दोंमें व्यक्त किया है—चौखम्भा वाली प्रतिमें मुहर्रमकी तिथि भी दी हुई है। दूसरी ओर “पहले पाप भादो छठि”का उल्लेख बीकानेर वाली प्रतिमें है। ऐसी स्थितिमें एक ओर जहाँ यह निश्चित प्रतीत होता है कि मृगावतीका रचनाकाल हिजरी ९०९ तदनुसार सम्बत् १५६० विक्रमी है, वहाँ पर अभी यह तय करना शेष रह जाता है कि कुतुबनने इनमें से एक का अथवा दोनोंका उल्लेख किया।^१

दिल्ली प्रतिसे ज्ञात होता है कि कुतुबनने काव्यकी रचना-काल के सम्बन्धमें दो भिन्न स्थलोंपर चर्चा की है। एक तो आरम्भमें है। वहाँ खोज रिपोर्टके प्रस्तुत-कर्ताओंको प्राप्त कड़वक है। दूसरा अन्तमें है जो चौखम्भा प्रतिके अन्तमें खण्डित होनेके कारण उन्हें न मिल सका था और लोगोंको अब बीकानेर प्रतिमें देखनेको मिला है। बीकानेर प्रति आरम्भसे खण्डित है, इसलिए उसमें चौखम्भा प्रति वाला कड़वक अनुपलब्ध है। सामान्यतः प्रेमाख्यानक काव्योंके मुसलमान रचयिताओंने अपनी रचनाके कालकी चर्चा केवल एक स्थलपर किया है और वह भी हिजरी संवत् में। इस कारण मिरगावतीमें विक्रमीय संवत् के उल्लेखसे लोगोंका असमंजसमें पड़ जाना स्वाभाविक था।

इन दोनों ही प्रतियों—चौखम्भा और बीकानेरमें उपलब्ध कड़वक पाठकी दृष्टिसे अशुद्ध हैं। इस कारण भी वास्तविक तथ्य जाननेमें लोगोंको कठिनाई हुई। पहले कड़वकके आवश्यक अंशका शुद्ध पाठ इस प्रकार है—

नौ सौ नौ जौ संवत अही ॥

माह मुहर्रम चाँदहि चारी।

भई सपूरन कही निवारी ॥

दोइ रे माँस दिन दस महाँ, जोरत यह ओरानेउ जाइ।

१. दैनिक भारत, ७ सितम्बर १९५५।

२. सूफी काव्य संग्रह, पृ० ९७।

३. कुतुबन कृत मृगावती, सम्मेलन संस्करण, भूमिका, पृ० १०।

४. प्रस्तुत संस्करण, कड़वक १३

इससे प्रकट होता है कि ९०९ हिजरीके मुहर्रम मासकी चौथी तिथि को इस काव्यकी रचना हुई और इसके पूरा करनेमें दो मास दस दिन लगे । ४ मुहर्रम ९०९ हिजरीको अंग्रेजी तिथि २९ जून १५०३ ई० और भारतीय तिथि आपाढ़ शुक्ल ६, संवत् १५६० वि० थी । दो मास दस दिनमें पुस्तक समाप्त होनेकी बात कही गयी है । अतः उपर्युक्त आरम्भ होने की तिथिके अनुसार पुस्तक समाप्त होनेकी तिथि १४ रबीउत्सानी ९०९ हिजरी अर्थात् भाद्रपद शुक्ल १५ संवत् १५६० वि० (६ सितम्बर १५०३ ई०) होगी ।

दूसरे कड़वकका आवश्यक अंश इस प्रकार है ।

जहिया पन्द्रह से हुत साठी ।
तहिया ईह चौपाईह गाँठी ॥
बहुल पाख भादों जैह अही ।
सिंघ रासि संघ तैह निरबही ॥'

इन पंक्तियोंसे ऐसा प्रतीत होता है कि वि० संवत् १५६० में जिस दिन भाद्रपदके बहुल (कृष्ण) पक्षका आरम्भ हुआ और सूर्यने सिंह राशिमें जिस समय प्रवेश किया उस समय इन चौपाइयोंकी रचना की गयी । ये चौपाइयाँ ग्रन्थके अन्तमें हैं, अतः यह अनुमान किया जाना स्वाभाविक है कि कवि इन पंक्तियोंमें काव्यके समाप्त होनेका समय बता रहा है ।

पूर्व कड़वकके अनुसार गणना कर काव्यके समाप्त होने की जो भारतीय तिथि ऊपर कही गयी है उससे इस दूसरे कड़वकमें दी गयी तिथिसे मेल नहीं बैठ रहा है । किन्तु भारतीय पंचाग पद्धतियोंपर ध्यान देनेपर इस असंगतिका कारण समझमें आ जाता है । उत्तर भारतमें तिथि गणनामें पूर्णिमान्त मासका प्रयोग होता है और वर्षकी गणनामें ११ पूरे और २ आधे मास होते हैं अर्थात् वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ल १ से होता है और अन्त चैत्र कृष्ण १५ को होता है । इस प्रकार आधा मास आरम्भमें और आधा अन्तमें गिना जाता है । दक्षिण भारतकी तिथि गणनामें आमान्त मासका प्रयोग होता है और वर्ष गणनामें पूरे १२ मास होते हैं । वहाँ भी वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ल १ से ही होता है और नियमित चलकर चैत्र कृष्ण १५ को समाप्त होता है । इस प्रकार पूर्णिमान्त और आमान्त गणना दोनोंमें वर्ष का आरम्भ और अन्त समान रूपसे होता है केवल मासके गणनामें भेद होता है । मासोंमें भी यह भेद शुक्ल पक्षमें परिलक्षित नहीं होता, केवल कृष्ण पक्षकी गणनामें अन्तर होता है और यह अन्तर पूरे एक मासका होता है । दूसरे कड़वकमें दी गई तिथिको यदि हम आमान्त गणनाकी तिथि मान लें तो, वह पूर्णिमान्त गणनाके अनुसार आश्विन कृष्ण १ की तिथि होगी । इस तिथिमें और पहले कड़वकके आधारपर काव्यके समाप्त होनेकी जो तिथि—भाद्रपद शुक्ल

१५—कही गयी है, उसमें केवल एक दिनका अन्तर है। और यह अन्तर भी केवल गणना सम्बन्धी है। संवत् १५६० वि० में आमान्त भाद्रपदके बहुल (कृष्ण) पक्षका आरम्भ ६ सितम्बरको ही, जो पूर्णिमान्त भाद्रपद शुक्ल १५ की अंग्रेजी तिथि है, सायंकाल ६ बजे हुआ था। स्पष्ट है कि कवि ने ग्रन्थ समाप्त होनेकी तिथि आमान्त गणनाके अनुसार दी है।

उत्तर भारतीय तिथि गणनामें आमान्त तिथियोंका प्रयोग प्रायः नहीं पाया जाता। कवि द्वारा तिथिका इस प्रकार उल्लेख इस बातका द्योतक है कि वह उत्तर भारतकी पूर्णिमान्त तिथि गणना पद्धतिकी अपेक्षा दक्षिण भारतकी आमान्त तिथि गणना पद्धतिसे परिचित था। इससे इस बातका भी संकेत मिलता है कि उसका किसी-न-किसी प्रकार दक्षिण भारतसे सम्बन्ध था।

कुतुबनने उपर्युक्त कड़वकमें ग्रन्थ समाप्तिके समय सूर्यके सिंह राशिमें होनेकी बात कही है। यह घटना पञ्चाङ्गके अनुसार उक्त दिन रात्रिमें ३ और ५ बजेके बीच घटी थी। इस प्रकार कविने अत्यन्त सूक्ष्म रूपसे बताया है कि काव्यकी समाप्ति उपा-कालमें हुई थी। निष्कर्ष यह कि काव्यका आरम्भ ४ मुहर्रम ९०९ हिजरी अर्थात् आपाढ़ शुक्ल ६ संवत् १५६० वि० (२९ जून १५०३ ई०) को और अन्त १५ रबी-उत्सानी ९०९ हिजरी अर्थात् आश्विन कृष्ण १ (आमान्त भाद्रपद कृष्ण १) संवत् १५६० वि० (७ सितम्बर १९०३ ई०) को हुआ।

शाहे-वक्त

कुतुबनने चन्द्रायनकी परम्पराका पालन करते हुए शाहे वक्तकी भी चर्चा की है। मौलाना दाऊदने इसके लिए केवल एक कड़वक का उपयोग किया है; कुतुबनने इसके लिए चार कड़वक व्यय किये हैं और दो स्थलोंपर उनके नामका उल्लेख किया है और उनका नाम हुसेन शाह बताया है।^१ पर दो स्थलोंमेंसे किसी जगह भी दाऊद और जायसीकी तरह उन्होंने यह नहीं बताया कि वे कहाँके शाह या सुल्तान थे। जिस दंगसे उन्होंने हुसेन शाहकी प्रशंसा की है, उससे ऐसा आभास होता है कि कुतुबनको हुसेन शाहकी विशेष कृपा प्राप्त थी। हो सकता है वे उनके आश्रित भी रहे हों।

राज्यका नामोल्लेख न होनेके कारण हुसेन शाह कौन थे, निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता; केवल अनुमान ही किया जा सकता है। खोज-रिपोर्टमें हुसेन शाह को सूरवंशके शेरशाहका पिता बताया गया है। किन्तु शेरशाहके पिताका नाम हसन खाँ था हुसेन शाह नहीं और वे एक सरदार मात्र थे, शाह या सुल्तान नहीं। सलतनत तो उसके बेटे शेरशाहने अपने बल और पौरुषसे प्राप्त की थी, दाय रूपमें नहीं। अतः यह निश्चित है कि कुतुबनने जो कुछ कहा है, उसका सम्बन्ध इनसे तनिक भी नहीं है।

रामचन्द्र शुक्लने पहले हुसेन शाहको बंगालका सुल्तान अनुमान किया था; पीछे उन्होंने उन्हें जौनपुरके शर्कीवंशका सुल्तान बताया। कुछ लोग कुतुबनको बंगाल और जौनपुर दोनोंके सुल्तानोंका आश्रित मानते हैं। उनके ऐसा कहनेका आधार यह है कि बंगाल सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह और जौनपुरके शर्की सुल्तान हुसेन शाह दोनों परस्पर सम्बन्धी थे। शर्की हुसेन शाहके बेटे जलालुद्दीनका विवाह बंगाल सुल्तान हुसेन शाहकी पौत्रीसे हुआ था। जब सिकन्दर लोदीने शर्की सुल्तानकी जौनपुरकी सल्तनत छीन ली तो वे अपने सम्बन्धी अलाउद्दीन हुसेन शाहके राज्यमें कलहगाँव (जिला भागलपुर, विहार)में जाकर रहने लगे थे। किन्तु दोनोंके आश्रित होनेकी बातका मेल नहीं बैठता। शर्की हुसेन शाहके कलहगाँव जाकर रहने मात्रसे मान लेना कि कुतुबनने शर्की हुसेन शाहका आश्रय छोड़कर अलाउद्दीन हुसेन शाहका आश्रय ग्रहण कर लिया, अनुचित है। यदि वह सत्य भी हो तो भी यह तो मानना ही होगा कि कुतुबनने उस शाहकी प्रशंसा की है जिसके आश्रयमें वे मिरगावती की रचनाके समय थे, दोनोंकी नहीं। अतः हमें यही देखना चाहिए कि उन्होंने किस हुसेन शाहकी प्रशंसा की है।

इन दोनों हुसेन शाहोंमें से कुतुबनका तात्पर्य किससे था, इस पर विचार करनेके निमित्त उचित होगा कि प्रासंगिक कड़वकोंको सामने रख लिया जाय। वे कड़वक निम्नलिखित हैं—

शाह हुसेन आह बड़ राजा। छात सिंघासन उन्ह पै छाजा ॥
पण्डित औ बुधवन्त सयाना। पोधा बाँच अरथ सब जाना ॥
धरम दुधिरिस्टल वैह कँह छाजा। हम सिर छाँह जियउ जुग राजा ॥
दान देइ बहु गिनत न आवा। बलि औ करन न सरबरि पावा ॥
राइ जहाँ लहि गँधरप अहई। सेवा करहिं बरि सब चहई ॥

चतुर सुजान भाखा सब जानाँ, अइस न देखेंउ कोइ।

सभा सुनहु सब कान दइ, फुनि र बखानाँ सोइ ॥ ९

अगिनित टाट गिनत न आवा। खरदम खेह गगन सब छावा ॥
अपुनहि सँझर आगे कर पावा। पाछे परै सो धूरि फकावा ॥
मेघडम्बर छाया बहु ताने। सेवा करहिं राजु औ राने ॥
तुरिय टाप अस खेह उड़ानी। आधि अम्बर भव पुहुमि जिह जानी ॥
गज गवन जग सासों होई। बासुकि इन्द्र दुहौ बुधि खोई ॥

जिय दान जो चाहे, दिन दस सेवा करो सौ बार।

जाकहँ भौह होइ चख मैली, सो र होइ जरि छार ॥ १०

डाँड इन्द्र बासुकि सेंउ लेई। अउर डाँड लंकेसर देई ॥
इँह बड़ न कोई गुनी सयाना। देवतहिं आयसु इँह कर माना ॥
जासों हँसि कै बात एक कहिहँ। दुख दारिद औ पाप न रहिहँ ॥

पिरिधि म अइस भयउ न कोई। सर तो देंउ सुनेउ जो होई ॥
पाप पुन्न लेउ जरमहि काऊ। धरम करत कछु कहि जाऊ ॥

अधरम कियउ न जग मैंह काऊ, धरम करहिं बहु भौँत।

निसि बासर बिवि तैसहि चितहिं, बुधि परसहिं तो साँत ॥ ११

पढ़हि पुरान कठिन जो होई। अरथ कहहिं समुझावत सोई ॥

एक-एक बोल क दस-दस भावा। पंडितहिं अचकर वकति न आवा ॥

अउर बहुत उन्ह केरि बड़ाई। हमरें कहे कहाँ कहि जाई ॥

मुँह मैंह जीभ सहस जो होई। तोर बड़ाई करै जो कोई ॥

जव लग अस्थिर रहे सुमेरू। हर भारजा बहै जमु नेरू ॥

सवन सुनहु चित लाइ कर, कहौं बात हों एक।

आउ बड़ा हुसन साह कै, आह जगत कै टेक ॥ १२

यदि इन पंक्तियोंकी तुलना जायसी और मंझन द्वारा शाहे-वक्तकी प्रशंसामें कही गयी पंक्तियोंसे की जाय तो स्पष्ट जान पड़ता है कि कुतुबनने अपने शाहे-वक्तके शासन और सेना, दान और न्यायके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है, उसमें कोई मौलिकता नहीं है। तीनों ही कवियोंका वर्णन प्रायः एक-सा है और सम्भवतः परिपाटीका अनुसरणमात्र है। किन्तु यदि यह वर्णन परिपाटीजनित होते हुए भी किसांका वास्तविक चित्रण है तो वह ऐसे प्रतापी शासकका चित्र है जिसका सम्राट्के समान व्यापक प्रभाव था। इस रूपमें यह प्रशंसा शर्की हुसेन शाहपर ही लागू होती है, बंगालके अलाउद्दीन हुसेन शाहपर नहीं।

बंगालका हुसेन शाह मूलतः मुजफ्फरशाहका प्रधान मन्त्री था और अपने शासकके विरुद्ध विद्रोह कर उसने शासनाधिकार प्राप्त किया था। उसका अधिकांश समय अपनी स्थिति संतुलित करनेमें ही बीता। १४९९ ई० तक अर्थात् कुतुबनके मिरगावतीकी रचना करने से चार बरस पूर्वतक, उसका राज्य बंगाल के बाहर दक्षिण विहार में मुँगेरतक ही सीमित था। इस अवधिमें उसे केवल एक बार १४९५ ई० (९०१ हिजरी)में अपनी सेनाको सिकन्दर लोदीके मुकाबले भेजना पड़ा था। पर बिना किसी विशेष शक्ति-प्रदर्शनके ही दोनों पक्षोंमें सन्धि हो गयी थी। १४९९ ई०में पहली बार हुसेन शाह किसी सैनिक अभियानके लिए निकला और कामता-कामरूपको अपना लक्ष्य बनाया। उस क्षेत्रपर अधिकार करनेमें हुसेन शाहको लगभग चार बरस लगे; अर्थात् मिरगावतीकी रचनासे कुल एक बरस पहले वह १५०२ ई० में कामरूप विजय कर पाया। उसने दूसरा अभियान जाज-नगर उड़ीसाके विरुद्ध किया था और वह मिरगावती की रचनासे कई वर्ष पश्चात् १५०८-९ ई० में। इस प्रकार कुतुबनने जो कुछ कहा है वह बंगालके हुसेन शाहपर घटित नहीं होता।

दूसरी ओर शर्की सलतनतका इतिहास निरन्तर सैनिक अभियान और युद्धोंका इतिहास है। जौनपुर सलतनतकी स्थापना करते ही शर्की सुल्तान दिल्लीपर अधिकार

करनेका स्वप्न देखने लगे थे। दिल्ली सुल्तान भी शर्की सुल्तानोंको अपना प्रबल प्रतिद्वन्द्वी समझते रहे। बंगालके सुल्तान शर्की सलतनतके आरम्भिक दिनोंमें ही खिराजदार थे। जहाँतक हुसेन शाहका सम्बन्ध है, उसकी सेना और शासनका अत्यधिक विस्तार था। पूर्वमें तिरहुत और उड़ीसा उसके खिराजदार थे। इनके विरुद्ध उसने अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमें ही अभियान किया था। ग्वालियर नरेशको उसने परास्त कर अपना अत्यन्त हितैषी मित्र बना रखा था। इटावा, कोल और बयाना के सूबेदार लोदियोंका साथ छोड़कर हुसेन शाहसे आ मिले थे। बघेल-खण्ड के हिन्दू राजाओंपर उसका प्रभुत्व था। इस प्रकार हुसेनशाहके शासनका विस्तार पूर्वमें बिहारसे लेकर पश्चिममें दिल्ली सलतनत की सीमातक था जो युद्ध-क्रमसे घटता-बढ़ता रहता था और यह विस्तार दिल्ली सलतनतसे किसी प्रकार कम न था। दिल्ली सलतनतके साथ तो उसकी मुठभेड़ निरन्तर चलती रहती ही रही। परिस्थितियाँ ऐसी आयीं जब दिल्ली सुल्तान हुसेन शाहकी आधीनता स्वीकार करनेको तैयार हुआ; पर हुसेन शाहने अपनी शक्तिके अभिमानमें उसकी शर्तोंको ठुकरा दिया। हुसेन शाहकी सैनिक-शक्तिका अनुमान इस बातसे किया जा सकता है कि उसने बहलोल लोदीके विरुद्ध एक लाख घुड़सवार और एक हजार गज-सेनाके साथ अभियान किया था। इन सब बातोंको देखते हुए लगता है कि कुतुबन ने बिना किसी अत्युक्तिके शर्की हुसेन शाहका ही उल्लेख किया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि कुतुबन हुसेन शाहकी विद्वत्ताकी प्रशंसा करते हुए थकता नहीं। इस दृष्टिके जायसी या मंजानने अपने शाह-वक्तकी प्रशंसा नहीं की है। इससे यह निःसंदिग्ध जान पड़ता है कि कुतुबनका शाह-वक्त वस्तुतः विद्वान् और कलाका प्रेमी था। बंगालका हुसेन शाह किस कोटिका विद्वान् था, इसके सम्बन्धमें कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। केवल इतना ही ज्ञात है कि उससे बंगला साहित्यको प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। उसने किसी अन्य भाषाके साहित्यको प्रोत्साहित किया हो, इसका प्रमाण किसी सूत्रसे नहीं मिलता। शर्की हुसेन शाहकी ख्याति कवि और संगीतज्ञके रूपमें सर्व विदित है। संगीतमें जौनपुर काँगड़ा (खयाल) उसीकी देन बतायी जाती है। विद्वानों और गुणीजनोंका वह बड़ा आदर करता था। अतः कुतुबनने जिस रूपमें प्रशंसा की है, उसका पात्र शर्की हुसेन शाह ही हो सकता है। उसका उन्हें प्रश्रय सरलतासे प्राप्त रहा होगा। यदि कुतुबनके पीर शैल बदन, मुहम्मद ईसा ताजके शिष्य थे, तो निश्चय ही उनका सम्बन्ध जौनपुरके शर्की सुल्तानके साथ रहा होगा। उनके माध्यमसे कुतुबनका हुसेन शाहके सम्पर्कमें आना सहज हुआ होगा और उनको उनसे प्रोत्साहन अथवा आश्रय प्राप्त करनेमें कोई कठिनाई नहीं हुई होगी।

सर्वोपरि, एक बात, जिससे यह निश्चित हो जाता है कि कुतुबनका तात्पर्य बंगालके हुसेन शाहसे नहीं था, वह यह है कि बंगालके हुसेन शाहकी ख्याति इस बातके लिए विशेष है कि उसने सत्यपीर नामसे अपना एक स्वतन्त्र धार्मिक मत चलाया था। यदि कुतुबनका उद्देश्य इस हुसेन शाहकी प्रशंसा करना रहा होता तो

उनका ध्यान उसकी इस धर्माचार्यताकी ओर अवश्य जाता और उसकी प्रशंसा करते हुए इस तथ्यकी अवश्य चर्चा करते। किन्तु ऐसी कोई बात कुतुबनने संकेत रूपमें भी नहीं कही है।

सभी बातोंपर विचार करनेपर यह निश्चित जान पड़ता है कि बंगालके हुसेन शाह कुतुबनके हुसेन शाह नहीं हैं। किन्तु इतिहासकारोंकी धारणा है कि शर्की हुसेन शाहकी मृत्यु ९०५ हिजरीमें ही हो गयी थी; और कुतुबनका कहना है कि मिरगावतीकी रचना उन्होंने ९०९ हिजरीमें हुसेन शाहके जीवन-कालमें और उनके शासनारूढ़ रहते की थी।^१ उन्होंने छत्रछायाके रूपमें उसके युग-युग तक जीनेकी^२ और दीर्घायु होनेकी भी कामना की है।^३ इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हुसेन शाह कमसे कम ९०९ हिजरी तक जीवित थे। यदि इतिहासकारोंका कथन ठीक है तो उपर्युक्त सारी सम्भावनाओंके बावजूद कुतुबनके हुसेन शाहको शर्की हुसेन शाह कदापि नहीं कहा जा सकता। अतः अन्तिम निश्चय करनेसे पूर्व इस सम्बन्धमें भी उहापोहकी आवश्यकता है।

शर्की हुसेन शाह कब मरा, इसकी चर्चा समसामयिक किसी भी इतिहासकारने नहीं की है। घटनाओं आदिको ध्यानमें रखकर ही आधुनिक इतिहासकारों ने उसके ९०५ हिजरीमें मरनेका अनुमान किया है। उसे प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। इस तथ्यपर प्रकाश डालनेवाले सबसे प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण हुसेन शाहके अपने सिक्के हैं, जिनकी इतिहासकारोंने उपेक्षा की है। ये सिक्के हमें उसके शासनारूढ़ होनेके दिनसे ९१० हिजरी तक निर्बाध रूपसे, प्रत्येक वर्षके प्राप्त होते हैं। कलकत्ता संग्रहालयके मुद्रा संग्रहमें कथित मृत्यु-वर्ष ९०५ हिजरीके बादके सिक्कोंमें ९०६, ९०७ और ९१० हिजरीके सिक्के हैं।^४ एच० एम० व्हिटेलने जौनपुर सुल्तानोंके सिक्कोंकी एक सूची प्रकाशित की है।^५ उसके अनुसार ९०५, ९०६ और ९०९ हिजरीके सिक्के ब्रिटिश संग्रहालय (लन्दन) में हैं। ९०८ हिजरीका सिक्का व्हिटेलके अपने संग्रहमें था। ९११ हिजरीका सिक्का लाहौर संग्रहालयमें होनेकी बात भी उन्होंने कही है। हमने स्वयं अभी हालमें लखनऊ संग्रहालयके शर्की सिक्कोंका परीक्षण किया था। वहाँ हमें हुसेन शाहके उपर्युक्त प्रत्येक वर्षके सिक्के बड़ी मात्रामें मिले। वहाँ ८९१ से ९१० हिजरी तकके प्रत्येक वर्षके सिक्के एक ऐसे दफीनेसे प्राप्त हैं जिसका प्राप्ति स्थान, खेद है वहाँके रजिस्ट्रोंमें अंकित नहीं है। एक दूसरे दफीनेमें, जो जालौनसे प्राप्त हुआ था, ८९४ से ९१० हिजरी तकके सिक्के हैं। बाँदा जिलेसे प्राप्त एक अन्य दफीने में भी ९१० हिजरीके सिक्के प्राप्त हुए हैं।

१. उनके राज यह र हम कही। १३।१

२. हम फिर छाँह जियउ जुग राजा। ९।३

३. आउ बढो हुसेन शाहके, आह जगतके टेक। १२।७

४. कैटलाग ऑव द नवायन्स इन दि इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता, खण्ड २, पृ० २१८-१९।

५. न्यूमिस्मेटिक सप्लीमेण्ट, सं० ३६, पृ० ३२-३४।

इतिहासकारोंकी यह धारणा रही है कि ये सिक्के हुसेन शाहके मृत्यूपरान्त किसीने प्रचलित किये होंगे। किन्तु ऐसा कहना और सोचना अत्यन्त हास्यास्पद है। इस तथ्यको न भुला दिया जाना चाहिए कि भारतीय इतिहासमें किसी शासकके मृत्यूपरान्त उसके नामसे इस प्रकार सिक्के जारी करनेका एक भी उदाहरण प्राप्त नहीं है। मुसलमान शासकोंमें सिक्के जारी करनेका विशेष महत्व था और वह उनका एक अत्यन्त सुरक्षित अधिकार था। वह राज्याधिकारका सबसे बड़ा प्रमाण समझा जाता था। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह राजगद्दीका वैध उत्तराधिकारी रहा हो या दावेदार मात्र, अपना अधिकार प्रकट करनेके लिए सबसे पहले अपने नामका सिक्का ढलवाता और मसजिदमें खुतबा पढ़वाता था। ऐसी अवस्थामें कल्पना नहीं की जा सकती कि कोई हुसेन शाहकी मृत्युके पश्चात् अथवा उसके निर्वासन कालमें उसके नामसे सिक्के जारी करेगा। कहा जा सकता है कि मुगल शासनके हास कालमें लोगोंने मुगल शासकोंके नामपर सिक्कोंके ढाले थे; पर उन सिक्कोंके साथ हुसेन शाहके सिक्कोंकी तुलना नहीं की जा सकती। मुगल शासकोंके नामसे सिक्के ढालनेवाले अपना चिह्न विशेष अंकित कर दिया करते थे, जिनसे उन सिक्कोंकी राजकीय तथा अन्य लोगोंके सिक्कोंसे भिन्नता स्पष्ट रूपसे प्रकट होती थी। हुसेन शाहके सिक्कोंमें ऐसा कोई चिह्न प्राप्त नहीं होता जिससे उन्हें उसके शासन काल, निर्वासन काल अथवा मृत्यूपरान्तके सिक्के कह कर विलगाव किया जा सके। उसके सारे सिक्के समान लिपिमें अंकित और एक ही शैलीके हैं।

इस सम्बन्धमें विचारणीय यह भी है कि हुसेन शाहके मृत्यूपरान्त उसके नामके सिक्के ढालनेमें किसीका क्या स्वार्थ हो सकता था; विशेषतः ऐसी स्थितिमें जब कि वह निर्वासित रहा हो और उसके उत्तराधिकारियोंमें अधिकारारूढ़ होनेकी क्षमता न रही हो। यह भी ध्यान देनेकी बात है कि लेन-देन लोक-व्यवहारमें शासकके नामके छापका, उन दिनों आज जैसा कोई महत्व न था। धातु और तौल ठीक होनेपर किसी शासककी छापका सिक्का कहीं भी ग्राह्य था। इस दृष्टिसे भी हुसेन शाहके नामकी सिक्कोंपर कोई आवश्यकता न थी। अतः यह निर्भ्रान्त है कि हुसेन शाहने स्वयं और अपने जीवन-कालमें ही ये सिक्के जारी किये होंगे। वे इस बातके अकाट्य प्रमाण हैं कि हुसेन शाह ११० हिजरी तक तो निसन्दिग्ध रूपसे जीवित था। सम्भावना उसके १११ हिजरी तक जीवित रहने की भी है।

अतः कुतुबनके इस कथनमें तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता कि उसने मिरगावतीकी रचना हुसेन शाहके जीवन-कालमें ९०९ हिजरीमें की थी और उसने उसके दीर्घजीवनकी कामना स्वाभाविक रूपसे की है। किन्तु उसके कथनकी यह ध्वनि कि उस समय हुसेन शाह सत्तारूढ़ भी था, ऐतिहासिक घटनाओंके विश्लेषणकी अपेक्षा रखता है।

इस बातसे किसी प्रकार भी इनकार नहीं किया जा सकता कि वहलोल लोदीने १०१ हिजरी (१४९५ ई०) में हुसेन साहसे उसके सलतनतका इंच-इंच छीनकर अपने

सलतनतमें मिला लिया था और हुसेन शाहको बंगाल सुलतान अलाउद्दीन हुसेन शाहके राज्यमें जाकर शरण लेनी पड़ी थी। वह कहलगाँव (जिला भागलपुर, बिहार) में रहने लगा था। इससे आधुनिक इतिहासकारोंकी कल्पना है कि वह बंगाल सुलतानका आश्रित हो गया था अर्थात् उसे बंगाल सुलतानकी ओरसे नियमित निर्वाह व्यय मिलता था। वस्तुतः हुसेन शाह कहलगाँव निराश्रितके रूपमें नहीं गया था। उसकी स्थिति बहुत कुछ निर्वासित राज्य (स्टेट इन एक्जाइल) की-सी थी। राज्य खोकर हुसेन शाह पंगु होकर बैठ नहीं गया; वह अपना शासन प्राप्त करनेका निरन्तर प्रयत्न करता रहा।

रिज्कउल्लाहने अपने वाक्यात-ए-मुश्ताकीमें लिखा है कि बिहार खोनेके कुछ ही दिन बाद हुसेनशाहने उसे पुनः प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। उसने बिहारपर आक्रमण किया। दरिया खाँ (सिकन्दर लोदीका बिहार स्थित सूबेदार) ने किलेसे निकलकर उसका मुकाबिला किया। वह दो मास तक हुसेन शाहको रोके रखकर किलेकी रक्षा करता रहा। जब सिकन्दर लोदीकी सेना आ गयी तो हुसेन शाहको लौट जाना पड़ा। मुहम्मद कबीरने भी अपने अफसान-ए-बादशाहानमें लिखा है कि जब हुसेन शाह गौड़ (बंगाल) पहुँचा तो वहाँके शासकने उसे आश्वसन दिया और कहा कि अभी कुछ दिन सन्न करो और आक्रमणके लिए उपयुक्त अवसर आने दो। इस तरह अवसरकी प्रतीक्षा करते-करते जब कई बरस बीत गये और बंगाल सुलतानने कुछ नहीं किया, तब हुसेन शाहने उसे पत्र लिखा। अलाउद्दीन हुसेन शाहने पुनः टहरनेके लिए कहा। पर हुसेन शाह रुका नहीं। अकेले ही अपनी सेना लेकर उसने बिहारपर आक्रमण कर दिया और किलेको घेर लिया। उसके साथी रूही चौधरीने किलेकी खाईके पानीको निकाल बाहर करनेके लिए नहर खोद डाला। इस बीच अफगान सेना आ पहुँची और हुसेन शाहको किलेपर अधिकार किये बिना ही लौट आना पड़ा।

दोनों सूत्र हुसेन शाहके निर्वासनके पश्चात् बिहार पर आक्रमणकी बात कहते हैं। वे एक आक्रमणकी या दो भिन्न आक्रमणोंकी बात कहते हैं, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। रिज्कउल्लाहने अपने उल्लेखमें 'कुछ ही दिनों बाद'का प्रयोग किया है और मुहम्मद कबीरने 'कुछ वर्ष बीतने'की बात कही है। इससे ऐसा आभास होता है कि दोनों दो आक्रमणोंकी चर्चा कर रहे हैं। वस्तुस्थिति जो भी हो, इनके कथनसे यह निश्चित है कि हुसेन शाह कहलगाँवमें कभी निश्चिन्त बैठा नहीं रहा; अपना राज्य वापस लेनेके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील था।

सिक्कोंके प्रमाणसे यह भी निश्चित है कि हुसेन शाह सलतनत खोकर भी अपनेको सुलतान मानता और समझता रहा और उसी अधिकारसे अपने सिक्के ढालता रहा। इस कालके सिक्के बिहारमें उपलब्ध हैं या नहीं, इसकी खोज अभी तक नहीं की गयी है। किन्तु जो सिक्के मिले हैं वे सब उत्तर प्रदेशमें ही मिले हैं। अतः यह मानना गलत है कि वह अपना सारा निर्वासित जीवन कहलगाँवमें ही बिताता रहा।

इस सम्बन्धमें एक बात और दृष्टव्य है। जौनपुरमें हुसेन शाहकी कब्र है, यह वहाँकी परम्परागत जनश्रुति है और इस सम्बन्धमें लोग एक कब्रकी ओर इंगित भी करते हैं। यह जनश्रुति कोरी कल्पना नहीं कही जा सकती। यदि वस्तुतः जौनपुरमें हुसेन शाह की कब्र है तो यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि कहलगाँवमें रहने और मरने पर उसकी लाश क्यों और कैसे जौनपुर आयी। जौनपुरसे सम्पर्क बनाये रखनेका हुसेन शाहके पास न तो साधन था और न अवसर। सिकन्दर लोदी हुसेन शाहका इस सीमा तक कट्टर शत्रु बन गया था कि उसने जौनपुर पर अधिकार करनेके बाद तत्काल आदेश दिया कि हुसेन शाह निर्मित सारी इमारतें ढाह दी जाँय। यहाँ तक कि अटाला मसजिद और राजी बीबीकी मसजिद भी उसके क्रोधके लपेटमें आ गये थे। यदि कुछ मुल्लाओंने धर्मके नाम पर दुहाई न दी होती तो वे भी आज अस्तित्वमें न होते। ऐसी अवस्यामें कल्पना करना कठिन है कि सिकन्दर लोदी और उसके अनुचरोंने हुसेन शाहकी लाशको जौनपुर लाकर दफनानेकी अनुमति दी होगी। यदि वस्तुतः वहाँ उसकी कब्र है तो इसका अर्थ यह है कि हुसेन शाह अपने अन्तिम दिनों में जौनपुर पहुँचनेमें समर्थ हो गया था।

इन बातोंको ध्यानमें रखने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि कुतबन एकनिष्ठ आश्रितकी तरह अपनेको हुसेनके राज और छत्र-छायामें ही सुरक्षित समझते रहे। हुसेन शाहका निर्वासन सम्भवतः उनकी दृष्टिमें सैनिक अभियानका अंग मात्र था। अतः बिना किसी अत्युक्ति या तोड़-मरोड़के उन्होंने अपने आश्रयदाताके सम्बन्धमें अपने हृदयके भाव व्यक्त किये हैं। यह बात नहीं कि उन्हें हुसेन शाहके सलतनत-विहीन होनेका ज्ञान न रहा हो। वे उसके प्रति सजग थे इसीलिए उन्होंने दाऊद या जायसीकी तरह उन्हें स्थान विशेषका शासक बतानेकी अपेक्षा मौन रहना उचित समझा।

प्रस्तुत विवेचनके पश्चात् हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि कुतबनका सम्बन्ध हुसेन शाह शर्कीसे था। इतिहासकारोंके लिए, जो अब तक हुसेन शाहके निर्वासित जीवनकी कल्पना करते रहे हैं, उचित होगा कि वे सिक्कों और कुतबनके कथनके प्रकाशमें तथ्योंको जाँचें, परखें और हुसेन शाहके सम्बन्धमें उचित निष्कर्ष पर पहुँचें।

स्थान और कब्र

सूफ़ी प्रेमाख्यानकोंसे सम्बन्ध रखनेवाली किसी पुस्तकमें, जिसे मैं इस समय स्मरण नहीं कर पा रहा हूँ, सैयद हसन असकरीका नाम लेकर कहा गया है कि उन्होंने कुतबनकी कब्रका पता लगा लिया है। यह सूचना अपनेमें महत्त्व की है किन्तु असकरीके कुतबन और मिरगावती सम्बन्धी लेखोंमें इस प्रकारकी चर्चा मेरे देखनेमें नहीं आयी। अतः मैंने स्वयं असकरीसे इस सम्बन्धमें जानकारी चाही। उन्होंने बताया कि कुतबनकी कब्रकी न तो उनको जानकारी है और न इस ढंगकी कोई बात उन्होंने

कहीं लिखा है या किसीसे कहा है। किन्तु यह अवश्य बताया कि बहुत दिन हुए जब वे जौनपुर सलतनतके इतिहासके सम्बन्धमें काम कर रहे थे, कुतुबन नामके किसी व्यक्ति अथवा विद्वान्के बनारसमें रहने और सुलतानको आशीर्वाद देनेकी बात उन्होंने किसी ग्रन्थमें पढ़ा था। किन्तु उस समय उसका कोई विवरण उन्होंने नोट नहीं किया। इसलिए अब उनके लिए यह बता सकना सम्भव नहीं है कि किस ग्रन्थमें और किस प्रसंगमें यह बात कही गयी है। उन्होंने यह भी बताया कि यह बात उन्होंने नर्मदेश्वर चतुर्वेदीको बताया था। हो सकता है, किसी भ्रमसे उन्होंने ही कब्र वाली बात कह दी हो।

जिस कुतुबनकी बात असकरीने पढ़ी थी, वह यदि मिरगावतीके रचयिता कुतुबन ही हैं तो उनके कथनसे यह तो निश्चित हो ही जाता है कि उनका सम्बन्ध बनारससे था। ग्रन्थका नाम और सन्दर्भ ज्ञात होने पर यह बात अधिक प्रामाणिकताके साथ कही जा सकेगी। यदि कुतुबनका सम्बन्ध बनारससे था तो हो सकता है उनकी कब्र भी वहीं हो। काशीके साहित्य-प्रेमी अन्वेषी, यदि इस दिशामें प्रयत्न करें तो कदाचित् कुछ पता चल सके।

काव्य-परिचय

नाम

भारतीय प्रबन्ध-काव्योंके रचयिताओंने प्रायः अपनी रचनाका नाम अपनी नायिकाके नामपर रखा है। संस्कृत साहित्यमें सुबन्धुकी वासवदत्ता, श्रीहर्षकी रत्नावली, बाणकी कादम्बरी इस दंगके कुछ उदाहरण हैं। इसी प्रकार प्राकृत काव्योंमें लीलावती कथा, मलयसुन्दरी कथा, सुरसुन्दरी चरित्रम् आदिका नाम लिया जा सकता है। हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सूफ़ी रचयिताओंने भी इसी परम्पराका अनुसरण किया है। जायसीने अपनी नायिका पद्मावतीके नामपर अपने काव्यका नाम पद्मावत रखा है। नायिकाके नामपर ही मंझनके काव्यका नाम मधुमालती है। मौलाना दाऊदने भी अपनी नायिकाके नामपर ही अपने काव्यको चन्द्रायन नाम दिया है, यद्यपि उनकी नामकरण शैली परम्परासे कुछ हटकर है। अतः यह अनुमान करना स्वाभाविक है कि कुतुबनने भी अपनी नायिकाके नामपर ही अपने काव्यका नामकरण किया होगा।

अभी हालमें एक नवोदित विद्वानने मौलाना दाऊदकी रचनाके नाम चन्द्रायन को गलत सिद्ध करनेकी चेष्टा करते हुए यह मत प्रतिपादित किया है कि सूफ़ी प्रेमाख्यानोके नाम त-अन्त हैं। प्रमाणके लिए उन्होंने पद्मावत, इन्द्रावत आदिका नाम लिया है। यदि उनके इस मतको स्वीकार किया जाय तो कहना होगा कि कुतुबनने अपनी रचनाका नाम मिरगावत रखा होगा। किन्तु इन प्रेमाख्यानक काव्योंकी सूचीपर दृष्टि डालनेसे त-अन्त नामोंकी अनिवार्य परम्परा हो ही, ऐसी बात सामने नहीं आती। कोई कारण नहीं जान पड़ता कि कवियोंने अपनी नायिकाके ईकारान्त नामोंको अकारान्त करनेकी अनिवार्य आवश्यकताका अनुभव किया हो। मधु-मालतीका नाम कहीं मधु-मालत देखनेमें नहीं आता। छन्दानुरोधके कारण कवियोंने ईकारान्त नामोंका इकारान्त रूपमें प्रयोग किया है, इसलिए अधिक-से-अधिक कल्पना यही की जा सकती है कि कवियोंने अपने काव्योंका नाम इकारान्त रखा होगा, अकारान्त नहीं। इस धारणाके अनुसार कुतुबनके काव्यका नाम मिरगावति सम्भव है। बनारसी दासने अपने अर्धकथानकमें मिरगावति नाम दिया भी है।

खोज रिपोर्टमें खोजियोंने कुतुबनके काव्यका नाम मृगावती बताया है। उनके मृगावती नाम देनेका आधार क्या है, यह अज्ञात है। उसके आधारपर ही लोग इस ग्रन्थकी चर्चा करते हुए उसका उल्लेख मृगावती नामसे किया करते हैं। उपलब्ध प्रतियोंमें केवल बीकानेर प्रतिमें पुष्पिका उपलब्ध है। उसमें इसे म्रिगावती कथा कहा गया है। दिल्ली प्रतिके उपलब्ध आरम्भिक पृष्ठके ऊपर बायें कोनेमें ग्रन्थकी लिपिसे

भिन्न लिपिमें किसीने ग्रन्थका नाम लिखा है; किन्तु उसके आरम्भके कुछ अक्षर अस्पष्ट हैं, पढ़े नहीं जा सकते। पठनीय केवल **म मिरगावती** (मीम; मीम रे, गाफ, अलिफ, वाव, ते, बड़ी ये) हैं। जियाउद्दीन अहमद देसाईने अनुमानसे इसे किस्सा पेम मिरगावती पढ़नेकी चेष्टा की है। पर उनका यह अनुमान सन्दिग्ध है। ऐसी स्थितिमें यह निश्चय करना कठिन है कि ग्रन्थका मूल नाम केवल **मिरगावती** है अथवा **सृगावती** कथा या किस्सा पेम मिरगावती।

ऐसी स्थितिमें हमने सीधे-सादे ढंगपर इसका नाम **मिरगावती** स्वीकार किया है। जब तक कोई अन्य नाम निश्चित रूपसे ज्ञात न हो, यही नाम विवाद रहित प्रतीत होता है।

लिपि

मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यान कान्व्योंके सम्बन्धमें सामान्य कल्पनाके विरुद्ध हिन्दी साहित्यके विद्वानोंके एक वर्गकी धारणा है कि उनकी मूल प्रति नागरी लिपिमें अंकित की गयी रही होगी। इस मान्यताको अस्वीकार करते हुए हमने चन्द्रायनके परिचयमें निम्नलिखित तथ्योंकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है—

(१) ये कवि न केवल स्वयं मुसलमान थे, वरन् उनके गुरु भी मुसलमान थे। उनके आश्रयदाता भी मुसलमान ही थे और उनके शिष्य भी मुसलमान थे। सूफ़ी मतका हिन्दुओंमें प्रचार हुआ हो, इसका भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अतः इनके ग्रन्थ मूलतः अरबी-फारसी लिपिके अतिरिक्त किसी अन्य लिपिमें कदापि न लिखे गये होंगे।

(२) नागरी लिपिको मुसलमानी शासन कालमें कभी प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ।^१ अभी पचास वर्ष पूर्वतक, अधिकांश कायस्थ परिवारोंमें रामायण, भगवद्गीता आदिका

१. हमारे इस कथनके विरुद्ध माताप्रसाद गुप्तने हमारा ध्यान इस तथ्यकी ओर दिलानेकी कृपा की है कि मुसलमानी शासनके अनेक सिक्के मिले हैं, जिनपर नागरी लिपिका भी प्रयोग हुआ है। (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७)। वस्तुतः स्थिति यह है कि न तो किसी मुगल शासकने अपने किसी सिक्केपर नागरी लिपिका प्रयोग किया और न जौनपुर, गुजरात, बंगालके सुलतानोंके किसी सिक्केपर नागरी है। दक्षिणके बहमनी, कुतुबशाही, आदिलशाही और निजामशाही सुलतानोंने भी नागरीका प्रयोग कभी नहीं किया। इन सबके सिक्कोंपर विशुद्ध नस्ख अथवा नस्तालीक लिपिमें लेख अंकित किये गये हैं। रही बात दिल्ली सुलतानों की। उनके भी किसी सोने या चाँदीके सिक्केपर नागरी लेख नहीं है। केवल दरब (चाँदी-ताँबाका मिश्रण) और ताँबेके कुछ सिक्कोंपर नागरी लिपिमें बादशाहका नाम अंकित पाया जाता है। इसे नागरीके प्रश्रयका प्रमाण माताप्रसाद गुप्त जैसे विद्वान् ही कह सकते हैं, इतिहास और पुरातत्वका विद्वान् नहीं। जो लोग प्राचीन मुद्राओंकी परम्परासे परिचित हैं, उनकी दृष्टिमें वह परम्पराका निर्वाह मात्र है। यह वह परम्परा है जिसका अनुसरण करते हुए मुहम्मद गौरीको अपने सिक्कोंपर लक्ष्मीका अंकन करना पड़ा था। यदि उसके इन सिक्कोंको प्रमाण माना जाय तो कहना होगा कि मुहम्मद गौरी मूर्तिपूजक था; उसे मूर्तिभंजक कहा जाता है, वह सर्वथा असत्य है। मुसलमानी शासनमें नागरीको प्रश्रय प्राप्त होनेकी बात हम तब स्वीकार करते जब

पाठ उर्दू-फारसीमें लिखी गयी कावियोंसे होता था और लोग शुद्ध उच्चारणके साथ उनका पाठ किया करते थे। इंगलैण्ड और फ्रांसके पुस्तकालयोंमें न केवल सुरसागर आदि धार्मिक ग्रन्थोंकी, वरन् हिन्दू कवियों द्वारा रचित अनेक शृंगार काव्यों, यथा—केशवदासकी रसिक प्रिया, बिहारी सतसई आदिकी भी फारसी लिपिमें लिखी प्राचीन प्रतियाँ सुरक्षित हैं। वे इस बातके द्योतक हैं कि जिस समय प्रेमाख्यानक काव्य रचे गये, देशमें अरबी-फारसी लिपिकी ही प्रधानता थी। ऐसी अवस्थामें कल्पना नहीं की जा सकती कि प्रेमाख्यानक काव्योंके मुसलमान रचयिताओंने अपने काव्यकी मूल प्रति नागराक्षरोंमें लिखी होगी।^१

(३) मुसलमान कवियों द्वारा रचित किसी काव्यकी अवतक कोई भी नागरी-कैथीमें लिखित प्रति ऐसी नहीं मिली है जिसे सतरहवीं शतीसे पूर्वकी कहा जा सके। और इन काव्योंकी नागरी-कैथीमें लिखी जो भी प्रतियाँ उपलब्ध हैं, उनमें कोई भी ऐसी नहीं है, जिसमें फारसी लिपि जनित विकृतियोंकी भरमार न हो। ये विकृतियाँ

हमें मुसलमान बादशाहों और उनके अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों के नागरी लिपिमें लिखे राजकीय पत्र और फरमान प्राप्त होते।

१. हमारे इस कथनका यह अर्थ लगा कर कि कायस्थों तकका सम्बन्ध नागरी लिपिसे नाम मात्रका रह गया था, माताप्रसाद गुप्तने हमें यह जतानेकी कृपा की है कि 'हिन्दी ग्रन्थोंकी नागरीमें जो प्रतिलिपियाँ मिलती हैं, उनमेंसे एक बहुत बड़ी संख्या कायस्थ लिपिकों द्वारा लिखी हुई प्रतियोंकी है। मध्य युगके हिन्दीके कवियोंमें भी कायस्थोंकी संख्या नगण्य नहीं थी भले ही वे शीर्षस्थ नहीं थे; और कहा है कि 'इस तर्कके आधारपर यह नहीं माना जा सकता कि इन मुसलमान कवियोंकी रचनाओंकी आदि लिपि, हो न हो, फारसी लिपि रही होगी।' (भारतीय साहित्य, वर्ष ८ अंक ३, पृ. ८७)।

मध्ययुगमें कितने कायस्थ नागरीके लिपिक अथवा हिन्दीके कवि थे, यह प्रश्न प्रस्तुत प्रसंगसे तनिक भी सम्बन्ध नहीं रखता। प्रश्न यह है कि तत्कालीन पढ़ी-लिखी हिन्दू जनताके बीच हिन्दी अथवा नागरी लिपिका किस सीमातक प्रचार था। आजकी तरह उस समय आकलनकी व्यवस्था नहीं थी। इस कारण कदाचित् माताप्रसाद गुप्तको इस प्रश्नका उत्तर देनेमें कठिनाई हो; अतः दूर अतीतके आँकड़ोंके उल्लेखमें उन्हें न डालकर उनसे दो निवेदन करना चाहूँगा—

एक तो यह कि जिन दिनों वे तीसरी-चौथी कक्षामें पढ़ा करते थे, उन दिनोंकी अपनी कक्षाओंपर दृष्टिपात करें और देखें कि उनके साथ पढ़नेवाले कितने विद्यार्थी हिन्दीके थे और कितने उर्दूके। उन्हें अपने आप याद आ जायेगा कि पैतीस विद्यार्थियोंकी कक्षामें हिन्दी पढ़ने-वालोंकी संख्या आठ-दससे अधिक नहीं थी और उनमें एक भी मुसलमान नहीं था। यह स्थिति उस समय थी जब अंग्रेजी शासनकी छत्रछायामें कहा जाता था कि हिन्दी-उर्दूका स्थान समान है। इस तथ्यके प्रकाशमें कल्पना करें कि मुसलमानों शासन कालमें जब अरबी-फारसीका बोलबाला था, हिन्दी या नागरी जाननेवालों संख्या क्या रही होगी !

दूसरा निवेदन यह होगा कि वे आगरा विश्वविद्यालयके प्रांगणमें रहते हैं। समय निकाल कर वे उन सभी कायस्थ प्राध्यापकोंसे मिलनेका कष्ट करें जिनकी आयु इस समय पचास वर्षसे अधिक है। हर एकसे पूछें कि उनके पितामह किस लिपिसे परिचित थे। उन्हें स्वतः शत हो जायेगा कि हमारे कथनमें कितना तथ्य और तर्कमें कितना बल है।

इस बातका स्पष्ट संकेत देती हैं कि उनकी पूर्वज प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमें थीं। इसके विपरीत इन काव्योंकी जो प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमें उपलब्ध हैं, उनमेंसे अनेक उपलब्ध नागरी-कैथी प्रतियोंसे प्राचीन हैं और उनके पाठ अधिक संगत, स्पष्ट और प्रामाणिक जान पड़ते हैं। ये तथ्य अपने आपमें इस बातके प्रमाण हैं कि इन काव्योंकी मूल प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमें रही होंगी, नागरी लिपिमें नहीं।

हमने अपनी समझमें उपर्युक्त बातें अत्यन्त गम्भीरताके साथ और तर्कपूर्ण ढंगसे कही हैं। किन्तु हमारी ये बातें माताप्रसाद गुप्तको, जो मूल प्रतिके नागरी लिपिमें लिखे होनेकी बात माननेवालोंमें अग्रणी और दृढ़ आग्रही हैं, आवश्यक प्रमाणसे रहित जान पड़ी हैं और उन्होंने यह मान लिया है कि हमने दूसरोंके प्रमाणपूर्ण बातोंकी हँसी उड़ायी है।^१ अतः भिरगावतीके प्रसंगसे हमारे लिए आवश्यक हो गया है कि इस प्रश्न-पर फिरसे विस्तारके साथ विचार किया जाय।

मुसलमान कवियोंके प्रेमाख्यानक काव्योंकी आदि प्रति नागरी लिपिमें लिखी गयी थी, यह कहनेवाले विद्वानोंने अपने पक्षमें जो तर्क दिये हैं, वे उन विकृतियोंकी कल्पनापर आधारित हैं जो उनके मतानुसार नागरी लिपिके लेखन या पाठ प्रमादसे सम्भव हैं। माताप्रसाद गुप्तका कहना है—कैथी में र और न, क और फ, व और ब के बहुत-कुछ मिलते-जुलते रूप होते थे जब कि फारसी-अरबी लिपिमें वे एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न थे। कल्पना कीजिये कि इन कवियोंकी फारसी-अरबी लिपिमें लिखी गयी प्रतियोंमें अनेक स्थलोंपर ऐसे पाठ मिलते हैं जिनमें र के स्थानपर न या न के स्थानपर र, क के स्थानपर फ या फ के स्थानपर क और व के स्थानपर ब अथवा ब के स्थानपर व आता है, ऐसी दशामें क्या यह स्वतः प्रमाणित न माना जायगा कि इन प्रतियोंका कोई पूर्वज नागरी लिपिमें था? पुनः यदि इस प्रकारकी पाठ विकृतियाँ रचनाकी प्रायः समस्त प्रतियोंमें मिलती हैं तो विरोधी प्रमाणोंके अभावमें यह क्यों न माना जायेगा कि इसकी आदि प्रति नागरी लिपिमें थी?^१

जहाँतक माताप्रसाद गुप्तके इस तर्कका सम्बन्ध है, सरसरी तौरपर देखनेसे अकाट्य लगता है। यदि वस्तुतः ऐसी बातें जिसकी कल्पना माताप्रसाद गुप्तने की हैं, फारसी प्रतियोंमें पायी जाती हैं तो निसन्देह कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह माननेमें संकोच न करेगा कि इन फारसी प्रतियोंकी मूल प्रति नागरी लिपिमें थी। किन्तु गम्भीर विश्लेषण करनेपर उनकी बातोंका खोलखलापन अपने आप प्रकट हो जाता है।

क का फ और व का ब अथवा उसका विपर्यय नागरी और कैथी दोनों लिपियोंमें लिखित पाठमें सम्भव है; किन्तु र का न और न का र पड़े जानेकी सम्भावनाकी कल्पना केवल कैथी लिपिमें लिखित प्रतियोंमें ही की जा सकती है। इस

१. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७।

२. वही।

सम्भावनाके साथ माताप्रसाद गुप्तके कथनसे यह झलकता है कि वे यह मानते हैं कि इन ग्रन्थोंकी मूल प्रति कैथी लिपिमें थी। उनकी मान्यताके प्रति इस अनुमानकी पुष्टि उनके इस कथनमें उपलब्ध है—जिस युगमें दाऊद, कुतुबन और मंझन आदि की रचनाएँ प्रस्तुत हुई थीं, उसी युगमें नागरीका एक ऐसा रूप प्रचारमें आया जो कैथी कहा गया है।^१ इस प्रकार माताप्रसाद गुप्त अपनी विचारधाराके विद्वानोंसे एक कदम आगे हैं।

यदि माताप्रसाद गुप्तकी यह धात स्वीकार कर ली जाय तो इसका अर्थ यह होगा कि चौदहवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें, जब मौलाना दाऊदने चन्दायनकी रचनाकी थी, कैथी लिपिका प्रचलन हो गया था। किन्तु इस सम्बन्धमें ध्यान देनेकी बात यह है कि कैथी लिपि एक सीमित क्षेत्रकी लिपि रही है और उस लिपिमें लिखे पत्र, दस्तावेज आदि केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहारके कुछ भागोंमें ही मिलते हैं और उनमेंसे कोई भी दो टाई सौ बरससे पुराने नहीं हैं। कैथी लिपिमें लिखी पुस्तकोंकी प्रतियाँ भी इसी क्षेत्रमें लिखी गयी हैं और इसी क्षेत्रमें बड़ी संख्यामें उपलब्ध होती हैं। अन्यत्रसे इस लिपिमें लिखी पुस्तकें इनी-गिनी ही मिलती हैं और वे इन्हीं क्षेत्रोंसे गयी प्रतीत होती हैं। कैथी लिपिमें लिखी किसी ग्रन्थकी कोई भी प्रति सतरहवीं शतीके पूर्वकी नहीं है। ये तथ्य इस बातके अकाट्य प्रमाण हैं कि कैथी लिपिका प्रचलन सतरहवीं शतीसे पूर्व न था। उसका विकास सतरहवीं शतीमें किसी समय हुआ होगा। ऐसी अवस्थामें सोचना कि किसीने चौदहवीं या पन्द्रहवीं शतीमें कैथी लिपिमें कुछ लिखा होगा, नितान्त हास्यास्पद है।

माताप्रसाद गुप्तने जो कुछ कहा है, उसपर व्यावहारिक ढंगसे भी देख लेना उचित होगा। व्यावहारिक ढंगसे हमारा तात्पर्य यह है कि फारसी लिपिकी प्रतियोंमें कैथी-नागरी जनित जिन विकृतियोंको देखा जाता है, उनको देखा जाय कि क्या वे सचमुच कैथी-नागरी लिपि जनित विकृतियाँ हैं। इस विश्लेषणके लिए माताप्रसाद गुप्त सम्पादित पदमावतका ही परीक्षण उपयुक्त होगा। यह पदमावतका अवतक सबसे प्रामाणिक संस्करण माना जाता है और माताप्रसाद गुप्तको इस बातके लिए ख्याति प्राप्त है कि उन्होंने पदमावतकी भाषा पर जमी काई हटानेमें सफलता पायी है।

पदमावतका यह प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करते हुए माताप्रसाद गुप्तने अपनी भूमिकामें ऐसी पाठ विकृतियोंकी एक तालिका उपस्थित की है जो उनकी दृष्टिमें फारसी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित हो सकती हैं।^१ उन्हें पदमावतके ९ पंक्तियोंवाले ६५३ कड़वकोंमें केवल ६६ स्थलोंपर ऐसी ही विकृतियाँ दिखायी पड़ी हैं; किन्तु इन ६६ विकृतियोंमें उन्होंने एक भी ऐसी विकृति नहीं बतायी है जो क के फ या फ के क तथा र के न या न के र पढ़ने से उत्पन्न हुई हो। अतः स्पष्ट है कि इन अक्षरोंसे जनित

१. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७।

२. पद्मावत, सम्पा० माताप्रसाद गुप्त, भूमिका, पृ० २४-२९।

विकृतियोंकी कल्पना उनके मस्तिष्कतक ही सीमित है। र के न और न के र पढ़नेसे उत्पन्न विकृतियोंका अभाव इस बातका स्पष्ट प्रमाण है कि फारसी प्रतियोंकी आदि प्रति कदापि कैथी लिपिमें नहीं थी।

रही बात फारसी प्रतियोंके मूलमें नागरी प्रति होनेकी। माताप्रसाद गुप्तने पदमावतमें इस प्रकारकी जो विकृतियाँ बतायी हैं, वे निम्नलिखित हैं—

ब का व पाठ	५८ स्थल
व का ब पाठ	१ स्थल
म का भ पाठ	३ स्थल
ग का क पाठ	१ स्थल
इ का द पाठ	१ स्थल
छ का थ या ट पाठ	१ स्थल

इन विकृतियोंकी कल्पना करते समय जान पड़ता है माताप्रसाद गुप्तके ध्यानमें ऐसी हस्तलिखित प्रतियाँ रही हैं जो सतरहवीं-अठारहवीं शतीमें तैयार की गयी थीं। फारसी प्रतियोंके मूलमें यदि कोई नागरी प्रति रही होगी तो निसंदिग्ध रूपसे वह सोलहवीं शतीकी होगी; वह तभी जायसीके हाथकी कही जा सकती है। उस शताब्दीके और उससे पहलेके नागरी लिपिमें लिखे हिन्दी ग्रन्थोंकी प्रतियाँ नहींके बराबर उपलब्ध हैं; किन्तु चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं शतीकी नागरी लिपिमें लिखी संस्कृत और अपभ्रंशके ग्रन्थोंकी अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हैं। उनके देखनेसे यह स्पष्ट अनुभव होगा कि तत्कालीन लिपिक लिपि सौन्दर्यका बड़ा ध्यान रखते थे। तत्कालीन एक भी प्रति शिरोरेखा विहीन न मिलेगी। उनके अक्षर सुडौल, गोलाई, लम्बाई आदि सबमें अनुपात युक्त होंगे; और लिखावटमें आतुरता न होकर धैर्य और सावधानी होगी। अतः तत्कालीन लिखित किसी नागरी प्रतिसे फारसी लिपिमें लिखनेवाला कभी इस प्रकारके भ्रममें नहीं पड़ सकता। वह कभी भी म को भ, ग को क, इ को द, छ को थ या त, नहीं पड़ेगा। अतः तत्कालीन लिपि-स्वरूपोंको ध्यानमें रखते हुए कल्पना ही नहीं की जा सकती कि फारसी प्रतियोंमें ये विकृतियाँ मूल नागरी प्रतिसे आयी होंगी।

जहाँतक ब के व या व के ब पढ़नेकी बात है, प्राचीन कालमें ब और व के रूपोंमें लिपिकारोंने कभी कोई अन्तर नहीं माना। गुप्त-कालीन अनेक अभिलेखोंमें ब व रूपमें लिखा मिलेगा। गुप्त-कालके बादके अधिकांश अभिलेखों, ताम्रपत्रोंमें व के रूपमें ब लिखा मिलेगा। इसलिए चौदहवीं, पन्द्रहवीं या सोलहवीं शतीमें तैयार की गयी किसी भी ग्रन्थके नागरी प्रतियोंमें ब के लिए व का प्रयोग हुआ हो तो कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु ऐसी स्थितिमें यह ध्यान रखना होगा कि व को ब के रूपमें लिखनेवाला लिपिक अपने अभ्यासगत स्वभावसे सर्वत्र ब को व ही लिखेगा। क्योंकि व और ब की यह एकरूपता हजार बरसोंके व्यवहारके परिणामस्वरूप लोक-जीवनके लिए इतनी स्वाभाविक बन गयी थी कि पढ़ते समय पाठकके लिए व और बका भेद करनेमें कोई कठिनाई न होती रही होगी। इस स्वभावसे नागरीको फारसी लिपिमें लिखनेवाला

अनभिज्ञ रहा हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। यदि अनभिज्ञ होता तो वह व के रूपमें लिखे व को सर्वत्र व ही पढ़ता; ५८७७ पंक्तियोंके पदमावतमें, केवल ५८ स्थलोंपर व को व न लिखता या एक स्थलपर व को व लिखनेकी भूल न करता।

ये तथ्य अपने आपमें इस बातको स्पष्ट करनेमें सक्षम हैं कि इन विकृतियोंके आधारपर किसी फारसीके प्रतिके मूलमें नागरी प्रतिके होनेकी कल्पना नहीं की जा सकती। फिर भी माताप्रसाद गुप्त द्वारा बतायी इन विकृतियोंका अलगसे परीक्षण कर लेना उचित होगा।

माताप्रसाद गुप्तके कथनानुसार व को व पड़े जानेकी निम्नलिखित विकृतियाँ पदमावतमें हैं—

(१) पब्बेके स्थानपर पुवे या पवे	४ स्थल
(२) बानिके स्थानपर बानि	१ स्थल
(३) अनवनके स्थानपर अनवन	४ स्थल
(४) जबके स्थानपर जौ	} ४९ स्थल
तबके स्थानपर तो	
कबके स्थानपर कौ	
अबके स्थानपर औ	
सबके स्थानपर सौ	

(१) माताप्रसाद गुप्तने जिन चार स्थलोंपर पब्बैका पुवे या पवै पाठ देखा है वे सबके सब एक ही प्रति (प्रति तृ० ३) में हैं; और यह प्रति फारसीकी नहीं नागरीकी है। व व का भेद लिपि प्राचीन कालसे ही नहीं करते रहे हैं। अतः यह कहना कि लिपिकने गलत लिखा है, उसके प्रति अन्याय होगा। माताप्रसाद गुप्तको इस विकृत-पाठका भ्रम स्वयं अपने पाठसे ही उत्पन्न हुआ है। यदि यह विकृत हो भी तो इसका सम्बन्ध किसी प्रकार भी फारसी प्रतियोंसे नहीं जोड़ा जा सकता।

(२) बानि पाठ एक मात्र ऐसी प्रति (प्रति द्वि ४)में मिलता है जो मुद्रित है और उसको मुद्रित हुए केवल ६० वर्ष हुए हैं। वह १३२३ हिजरीका प्रकाशन है। इस प्रतिको तीन सौ वर्ष पूर्वकी किसी प्रतिके मूलके निर्धारणके लिए किसी प्रकारका प्रमाण माननेको कदाचित् ही कोई तैयार होगा। इस अवधिके बीच उसमें न जाने कितने साधनोंसे विकृतियाँ आयी होंगी। किन्तु यदि उसे प्रमाण माना भी जाय तो भी किसी प्रकार निश्चयपूर्वक यह नहीं कहा जा सकता कि वह बानिसे विकृत होकर ही किसी प्रतिमें गया है। जिस प्रसंगमें यह शब्द प्रयुक्त हुआ है (३१।२) उसके अनुसार बानि के मूलमें वर्ण शब्द जान पड़ता है। वर्णसे पहले बानि होगा तब पीछे बानि (स० वर्ण > प्रा० वण्ण > वान (वानि) > वान (वानि)। हो सकता है कविने मूलतः वानि शब्दका ही प्रयोग किया हो, पीछे लोगोंने उसका बानिके रूपमें सरलीकरण कर लिया हो। इस शब्दके अनेक पाठान्तर विभिन्न प्रतियोंमें मिलते हैं जो साधारणीकरण और सरलीकरणके निःसंदिग्ध प्रयास हैं।

(३) जिस शब्दको माताप्रसाद गुप्तने अनबनके रूपमें ग्रहण किया है और अनबनका विकृत रूप माना है, वह अकेले पदमावतमें ही नहीं, वरन् मिरगावती, चन्द्रायन और मधुमालतामें भी अनेक स्थलोंपर प्राप्त है और वह इन चारों काव्योंकी सभी फारसी प्रतियोंमें अलिफ, नून, वाव, नूनके रूपमें लिखा मिलता है। यह बात तो सभी स्वीकार करेंगे कि ये चारों काव्य न तो एक समयमें लिखे गये और न उनकी प्रतियाँ एक लिपिक द्वारा तैयार की गयी हैं। ऐसी अवस्थामें यह सोचना नितान्त हास्यास्पद होगा कि सभी लिपिक समान रूपसे प्रमादी थे और सबने अनबनको अनबन पढ़ लिया। कोई तो किसी प्रतिमें उसका शुद्ध पाठ अनबन लिखता। अतः सभी काव्योंमें और उनकी सभी प्रतियोंमें एक समान अलिफ, नून, वाव, नूनका लिखा होना यह प्रमाणित करता है कि मूल पाठ अलिफ, नून, वाव, नूनसे ही बना हुआ कोई शब्द है जिसे कैथी-नागरी प्रतियोंके लिपिकोंने इन अक्षरोंके ध्वनि रूपको ग्रहणकर अनबन पढ़ा है और माताप्रसाद गुप्तने भी उसे अविकल रूपसे ग्रहणकर लिया है। इसे बके व पढ़े जानेके प्रमाणमें उपस्थित नहीं किया जा सकता।

अनबनको अनबनका रूप कल्पित कर माताप्रसाद गुप्तने उसके मूलमें अन्य वर्णको देखनेकी चेष्टा की है। यदि अनबन पाठ ठीक है और उसके मूलमें अन्य वर्ण है, तो भी उसे अनबनका विकृत रूप कहना कठिन है। अन्य वर्णसे पहले अनबन होगा और बादमें अनबन। कविके लिए अनबन लिखनेकी आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु अन्य वर्णके अर्थ या भावमें अनबन या अनवन, दोनों रूपोंमें से कोई भी, न तो अवधीमें और न किसी इतर लोक-भाषामें व्यवहृत पाया जाता है। अनबन पाठ ही काल्पनिक है। वस्तुतः अलिफ, नून, वाव, नूनके रूपमें लिखा गया शब्द सीधा-सादा अनों या आनों है जो नाना प्रकारके, भाँति-भाँतिके, तरह-तरहके अर्थमें नित्य भोजपुरी बोलनेवालोंके बीच व्यवहारमें आता है।

(५) जौ तौको माताप्रसाद गुप्तने जब तबका विकृत रूप कहा है। जब तब ऐसे शब्द हैं जिन्हें लोग बात-बातमें प्रयोग करते हैं। लोगोंकी जिह्वापर वे इस प्रकार चढ़े रहते हैं कि नागरी लिपिमें जब तबके रूपमें लिखे होनेपर भी कोई लिपिक उसे भूले भी फारसी लिपिमें जौम वावसे नहीं लिखेगा। जौ और तौ का प्रयोग पदमावतकी एक आध प्रतिमें नहीं, अधिकांशमें पाया जाता है। और उनका प्रयोग पदमावततक ही सीमित नहीं है। वे समान रूपसे अन्य प्रेमाख्यानोंमें भी पाये जाते हैं। यह तथ्य इस बातका द्योतक है कि जौ तौ का व्यवहार निरन्तर जब तबके अर्थमें होता रहा है, वह जब तबका विकृत रूप नहीं है। यदि हम लोक-भाषाओंकी ओर ध्यान दें तो आज भी हमें जौ और तौ का प्रयोग भोजपुरी बोलनेवालोंके मुखसे बराबर सुननेको मिलेगा। अतः जौ और तौ ही मूल प्रतियोंका प्रयोग है। सम्भवतः माताप्रसाद गुप्तको भी यह बात समझमें आ गयी है। उन्होंने अपने मधुमालतीके संस्करणमें इनका उल्लेख विकृतियोंके उदाहरणमें नहीं किया

है और अपनी शब्द सूचीमें उन्हें यदा (जौ <जऊ <यदा) तथा तदा (तौ <तऊ <तदा)का रूप कहकर उनका जब और तब अर्थ ग्रहण किया है।

इसी प्रकार कबका कौ, सबका सौ और अबका औ प्रयोग जौ और तौके अनुकरणपर होते रहे होंगे, यह उपर्युक्त प्रकाशमें हम आसानीसे समझ सकते हैं। असाधारण प्रयोग और क्लिष्ट-कल्पना होनेके कारण लोगोंने कब, सब, अबके रूपमें उनका सरलीकरण कर लिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि व के व पदे जानेका ऐसा कोई उदाहरण पदमावतमें उपलब्ध नहीं है जिसे फारसी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतका निःसंदिग्ध प्रमाण कहा जा सके।

व के व पाठके उदाहरणमें माताप्रसाद गुप्तने केवल एक उदाहरण कड़क ४५ की पंक्ति १ से धूँविय शब्दका दिया है। यह शब्द इसी रूपमें सब प्रतियोंमें मिलता है, यह उनका स्वयंका कथन है। किस आधारपर वे इस शब्दका मूल पाठ धूँविय होनेकी कल्पना करते हैं, यह उन्होंने नहीं बताया है। वासुदेवशरण अग्रवालने अपने संस्करणमें धूँविय पाठको स्वीकार किया है और उसका अर्थ किया है घूमनेपर।^१ घूमनेके अर्थमें धूँवि भोजपुरीका बहु प्रचलित शब्द है। उसके धूँवि होनेका कोई कारण नहीं जान पड़ता। इस प्रकार व के व पाठका भी कोई प्रामाणिक उदाहरण पदमावतमें नहीं है।

माताप्रसाद गुप्तने म के भ पाठके उदाहरणमें कुँभ शब्दको पेश किया है। जहाँतक शब्दका सम्बन्ध है इस बातसे किसीको इनकार न होगा कि कुँभके मूलमें कुसुम (कूर्म) है। किन्तु पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंसे परिचित व्यक्ति यह कभी स्वीकार न करेगा कि नागरीमें लिखे तत्कालीन म को कोई भ पड़ेगा। इस प्रकारकी कल्पना आजकलके म और भ के रूपोंको लेकर ही करना सम्भव है। कुँभ पाठ नागरी लिपि जनित विकृतिके कारण नहीं है, यह बात इस बातसे भी स्पष्ट है कि यह पाठ पदमावतके फारसी-नागरी सभी प्रतियोंमें समान रूपसे प्राप्त है। फिर म के स्थानपर भ का यह अकेला प्रयोग नहीं है। स्वयं माताप्रसाद गुप्तको कुसुमके अर्थमें कुसुँभ पाठ मधुमालतीमें मिला है।^२ चन्द्रायनमें भी कई स्थलोंपर कुसुँभ और कुसुँभी पाठ हैं।^३ इस प्रकार म के स्थानपर भ का प्रयोग न केवल पदमावतमें है वरन् मधुमालती और चन्द्रायनमें भी है। अतः मानना होगा कि पूर्वोक्तको अनुनासिक कर म के स्थानपर भ का प्रयोग उन दिनों मान्य था। आज भी कुसुमको गाँवोंमें कुसुँभ बोलते हुए सुना जाता है। अतः कुँभके प्रयोगको भी लिपि जनित विकृति नहीं कह सकते। माताप्रसाद गुप्त भी इस तथ्यको स्वीकार करते जान

१. पदमावत, द्वितीयावृत्ति, पृ० ५३।

२. २०४।३; ४१०।३।

३. १५६।७; ४३।२; ९४।४।

पड़ते हैं; उन्होंने मधुमालतीमें फारसी लिपियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतियोंकी सूचीमें इसका उल्लेख नहीं किया है।

ग के क पाठके उदाहरणमें माताप्रसाद गुप्तने कड़वक १०५ की पंक्ति ५—
पुहुप सुगन्ध करहि सब आसा। मकु हिरगाइ लेइ हम बासा ॥—के हिरगाइ शब्दको दिया है। नागरी लिपिमें लिखित ग किस कल्पनासे क पढ़ा जा सकता है, यह माता-प्रसाद गुप्त ही बता सकते हैं। इन दोनों अक्षरोंके स्वरूपोंसे परिचित कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति कभी यह सोच भी नहीं सकता है कि ग कभी किसी तर्कसे क पढ़ा जा सकता है। हिरकाइ या हिरिकाइ पाठ लिपि विकृतिके परिणामस्वरूप नहीं है, यह तो समस्त प्रतियोंमें प्राप्त समान पाठसे ही स्पष्ट है। जो लोग भोजपुरीसे परिचित हैं उन्हें यह भली-ज्ञात है कि अत्यन्त निकट लानेके अर्थमें हिरकाना शब्दका ही व्यवहार होता है हिरगानाका नहीं। अतः हिरकाना या हिरिकाना पाठ ही शुद्ध है। उसमें किसी प्रकारकी विकृतिकी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि हिरगाना पाठको ही शुद्ध मानें तो कहना होगा कि हिरकाना पाठ फारसी लिपि जनित है, नागरी लिपि जनित नहीं। यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि मध्यकालीन फारसी लिपिमें गाफके लिए अतिरिक्त मरकजका प्रयोग नहीं होता था। काफ ही गाफका भी काम देता था और प्रसंगानुसार क या ग पढ़ा जाता था। अतः फारसी प्रतियोंमें हिरगाइ सदैव हिरकाइके रूपमें ही लिखा मिलेगा।

इ का द पाठ माताप्रसाद गुप्तको कड़वक ३५१ की पंक्ति २ में दिखाई पड़ा है। वहाँ उन्हें एक प्रति (प्रति प्र० २)में रुईके स्थान पर रूद पाठ मिला। इस सम्बन्धमें केवल इतना ही दृष्टव्य है कि यह प्रति फारसीकी नहीं, नागरीकी है। उसमें आयी विकृतिका सम्बन्ध किस प्रकार फारसी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतियोंसे है, यह माताप्रसाद गुप्त बतानेकी कृपा करें, तभी उसपर कुछ विचार सम्भव है।

छ का थ या ठ पाठ माताप्रसाद गुप्तने कड़वक ३५२ की पंक्ति ७ में देखा है। पंक्ति है—लागों कन्त छार जेऊँ तोरे। उनके कथनानुसार एक प्रति (प्रति पं०)में ठार पाठ है, अन्य सभी प्रतियोंमें पाठ धार है। छारके शुद्ध पाठ होनेमें माताप्रसाद गुप्तको स्वयं सन्देह है। उन्होंने छारके आगे प्रश्नवाचक चिह्नका प्रयोग किया है। जबतक पाठका निश्चय न हो, किसी बहुमान्य पाठको विकृत कहना अनुचित है। दूसरी बात छ का साम्य न तो थ से है और न ठ से; ऐसी अवस्थामें कोई लिपिक क्योंकर छ को थ या ठ पढ़ लेगा, यह समझमें आनेवाली बात नहीं है। यदि अधिकांश प्रतियों में धार पाठ है तो यह स्वीकार करना होगा कि मूल पाठ छार कदापि न रहा होगा। वासुदेवशरण अग्रवालने धार पाठको समीचीन ठहराया है।^१ उनकी मान्यताके प्रकाशमें किसी प्रकारकी विकृतिकी बात उठती ही नहीं।

पदमावतके फारसी प्रतियोंमें माताप्रसाद गुप्तने नागरी लिपि जनित विकृतियोंकी जो कल्पनाकी है और उसके प्रमाणमें जितने भी उदाहरण उपस्थित किये हैं, उनमें एक भी परीक्षण करनेपर खरा नहीं उतरता । उनसे यह सिद्ध नहीं होता कि पदमावतके उपलब्ध फारसी प्रतियों के मूलमें किसी भी अवस्थामें कोई नागरी लिपिकी प्रति थी जिससे कहा जा सके कि आदि प्रति नागरीमें थी ।

जो लोग आदि प्रतिके नागरीमें होनेकी कल्पना करते हैं, उन्हें फारसी लिपिकी प्रतियोंमें नागरी लिपि जनित विकृतियाँ खोजनेके स्थानपर नागरी लिपिमें लिखी ऐसी प्रतियोंका प्रमाण उपस्थित करना चाहिए जिसमें एक भी फारसी लिपि जनित विकृतियाँ न हों । जबतक ऐसी कोई नागरी प्रति सामने नहीं आती, यह माननेका कोई आधार नहीं कि मुसलमान कवियों द्वारा लिखे काव्योंकी आदि प्रति नागरीमें थी । चन्द्रायनमें हमने जो तर्क उपस्थित किये हैं और जिन्हें ऊपर उद्धृत भी किया है, उन्हें दृष्टिमें रखना ही होगा और मानना होगा कि इन काव्योंकी मूल प्रतियाँ फारसी लिपिमें लिखी गयी थीं; और इस कारण फारसी प्रतियोंको नागरी-कैथीकी प्रतियोंकी अपेक्षा प्रामाणिक स्वीकार करना होगा ।

भाषा

लिपिके समान ही मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यान काव्योंकी भाषा के सम्बन्धमें माताप्रसाद गुप्त प्रभृत विद्वानोंका आत्म-विश्वासके साथ कथन है कि वह अवधी है । उनके इस विश्वासके मूलमें रामचन्द्र शुक्लका यह कथन है—ये सब प्रेम कहानियाँ पूरबी हिन्दी अर्थात् अवधी भाषामें एक नियत क्रमके साथ केवल चौपाई-दोहेमें लिखी गयी हैं ।^१ इस सम्बन्धमें हमने चन्द्रायनके परिचयमें इस तथ्यकी ओर ध्यान आकृष्ट किया था कि अब्दुर्कादिर बदायूनीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि—

चन्द्रायन दिल्ली सल्तनतके प्रधान मन्त्री जौनाशाहके सम्मानमें रचा गया था और दिल्लीमें मखदूम शेख तकीउद्दीन रब्बानी जन-समाजके बीच उसका पाठ किया करते थे । यह कथन इस बातकी ओर संकेत करता है कि चन्द्रायनकी भाषा वह भाषा है जिसे दिल्लीके प्रधान मन्त्री जौनाशाहसे लेकर दिल्लीकी सामान्य जनतातक पढ़ और समझ सकती थी । अब्दुर्कादिर बदायूनीने इस भाषाके सम्बन्धमें हमें अपनी कल्पनाका कोई अवसर नहीं दिया है । उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें बता दिया है कि इस मसनवी (चन्द्रायन)की भाषा हिन्दी है । यह हिन्दी निश्चय ही वह हिन्दी होगी, जिसका प्रयोग चिस्ती सन्त शेख फरीदुद्दीन गंजशकर और ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया अपने मुरीदोंसे बातचीत करते समय किया करते थे । उसी हिन्दीको जो दिल्लीके सूफी सम्प्रदायके सन्तों द्वारा व्यवहृत होती थी और राजसभासे लेकर जन-साधारणमें समझी जाती अथवा जा सकती थी, दाऊदने अपने काव्य चन्द्रायन के लिए अपनाया होगा और उसीमें उसकी रचना की होगी ।

१. जायसी ग्रन्थावली, सं० २०१७, भूमिका, पृ० ४ ।

अतः चन्द्रायनकी भाषाको अवधके सीमित प्रदेशमें ही बोली और समझी जानेवाली भाषा अवधीका नाम नहीं दिया जा सकता। चन्द्रायनमें प्रयुक्त भाषा निसन्देह ऐसी भाषाका स्वरूप है, जिसका देशमें काफी विस्तार और विकास रहा होगा।^१

यही बातें मिरगावतीकी भाषाके सम्बन्धमें भी दुहरायी जा सकती हैं। किन्तु न जाने क्यों कर माताप्रसाद गुप्तने कल्पना कर ली है कि हमने इन पंक्तियोंमें चन्द्रायनकी भाषाको दिल्लीकी भाषा कहनेकी धृष्टताकी है।^२ ऐसा कहनेकी धृष्टता कदाचित् कोई मूर्ख ही करेगा। यदि माताप्रसाद गुप्तने तनिक धैर्यके साथ उपर्युक्त अवतरणपर ध्यान दिया होता तो उन्हें न तो ऐसी कल्पनाकी आवश्यकता होती और न हमें यहाँ अपनी बातको विस्तारके साथ दुहरानेकी।

मध्यकालीन दिल्लीका निवासी दिल्लीकी अपनी ही बोली या भाषा समझता रहा होगा, अन्य भाषा उसके लिए कुरानकी भाषाके समान रही होगी, ऐसा माता-प्रसाद गुप्त किस प्रमाण और तर्कसे मानते हैं, यह तो वही बता सकते हैं। जहाँतक सामान्य बुद्धिकी बात है, जन-साधारण किसी दूसरी भाषाको, यदि वह विस्तृत प्रदेशमें प्रचलित है तो, अपनी स्थानीय बोली या भाषाके होते हुए भी समझ तो लेती ही है, बोल भले ही न सके। इस बातको हम हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओंकी आजकी स्थितिको सामने रखकर आसानीसे समझ सकते हैं। ऐसी अवस्थामें हमारे कथनसे यह कहाँ ध्वनित होता है कि चन्द्रायनकी भाषा दिल्लीकी भाषा है? हमारे कहनेका तात्पर्य इतना ही रहा है कि चन्द्रायनमें प्रयुक्त भाषा, ऐसी भाषाका स्वरूप है जिसका देशमें काफी विस्तार और विकास रहा होगा और वह दिल्लीकी राजसभासे लेकर जन-साधारणमें समझी जाती अथवा जा सकती थी। दूसरे शब्दोंमें वह ऐसी भाषा है जिसे भारतीय इतिहासपर सम्यक् दृष्टि रखनेवाला देश-भाषा ही कहेगा, किसी अकेले एक प्रदेशमें बोली जानेवाली भाषा नहीं। अब्दुर्कादिर बदायूनीने चन्द्रायनकी भाषाको हिन्दी कहकर यही भाव व्यक्त किया है।

माताप्रसाद गुप्तने इस सम्बन्धमें जो कुछ कहा है उससे यह भी ध्वनित होता है कि तत्कालीन शासक और राजदरवारी फारसीके अतिरिक्त और कुछ जानते ही न थे। उन्हें कदाचित् यह याद दिलाना अनुचित न होगा कि मुगल सम्राटोंमेंसे अनेककी हिन्दी रचनाएँ उपलब्ध हैं। वे स्वयं इस बातके प्रमाण हैं कि फारसीके अतिरिक्त उन्हें अन्य भाषाका भी परिचय था। मुगल शासकोंसे पूर्वके शासकोंके राजदरवारमें ही नहीं हरमतक हिन्दी पहुँच चुकी थी, यह तत्कालीन इतिहासकारोंके लेखोंमें एक नहीं अनेक स्थलोंमें लिखा मिलेगा। जिस प्रकारकी तन्द्रव प्रचुर हिन्दी में मौलाना दाऊद या तत्प्रभृत कवियोंने रचनाएँ की हैं, उस हिन्दीको मुसलमान शासक कदापि न समझते रहे होंगे, ऐसा माताप्रसाद गुप्तका विश्वास सा जान पड़ता है। इस सम्बन्धमें अपनी ओर से कुछ न कहकर जहाँगीरकालीन इतिहासकार मुहम्मद कबीरने अपने अफसाना-

१. चन्द्रायन, पृ० ३२।

२. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७-८८।

ए-बादशाहानमें मधुमालतीके रचयिता मंझनके आश्रयदाता इस्लाम शाहके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है, उसे ही उद्धृत करना पर्याप्त होगा ।

इस्लाम शाहके चरित्रका उल्लेख करते हुए मुहम्मद कबीरने लिखा है कि— उसके (इस्लाम शाहके) साथ धर्माचार्य (उलमा), विद्वान् (फुजलः) और कवि (शुअरा) रहा करते थे । जिस जगह वह खुद रहते थे, उसके इर्दगिर्द ही उनके भी शामियाने (कोशख) खड़े किये जाते थे । और उन सबमें पान, मुगन्धि आदिकी व्यवस्था रहती थी । उनमें मधुमालतीके रचयिता मीर सैयद मंझन, शाह मुहम्मद फरमूली, उनके छोटे भाई मूसन और सूरदास प्रभृति विद्वान् रहा करते थे । और उनमें अरबी, फारसी और हिन्दवीकी कविताएँ पढ़ी जातीं । इस्लाम शाहने कह रखा था कि जब मैं वहाँ आऊँ तो कोई मेरी अभ्यर्थना (ताजीम) के लिए न उठे । जो जैसे बैठा हो बैठा रहे, यदि लेटा हो तो लेटा रहे । इस प्रकार बेतकल्लुफीके साथ आनन्द उठाया जाय ।^१

उपर्युक्त अवतरणमें मंझन, मूसन और सूरदास तीन नाम ऐसे हैं जो निस्सन्देह हिन्दीके कवि थे । मंझनकी मधुमालतीसे हिन्दी संसार परिचित ही है । मूसनकी रचनाएँ भी अभी हालमें प्रकाशमें आयी हैं । वे कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी विद्यापीठ (आगरा विद्वविद्यालय)के उदयशंकर शास्त्रीको प्राप्त हुई हैं ।^१ सूरदास निश्चय ही सूरसागरके रचयिता न होकर कोई दूसरे सूरदास होंगे । उनके सम्बन्धमें जानकारी अपेक्षित है फिर भी इतना तो अनुमान किया जा ही सकता है कि वे अरबी-फारसीके कवि न रहे होंगे । ये कवि जिस हिन्दवीमें कविता-पाठ करते रहे होंगे उसका अनुमान मधुमालतीकी भाषासे किया जा सकता है । यदि इस्लाम शाह मंझनकी भाषा समझ सकते थे तो कोई कारण नहीं कि जौनाशाह मोलाना दाऊदके चन्द्रायनकी भाषा न समझते रहे हों । इस बातमें सन्देह करनेकी कोई गुंजाइश ही नहीं है कि इन मुसलमान कवियोंने जिस भाषाका प्रयोग किया है वह दिल्लीके शासकों और उनके दरबारियोंमें समझी जाती थी ।

१. दर ऐश व जदन नशतन्द । वह हमः वक्त उलमा व फुजलः व शुअरः हमराह मी बूदन्द । व दरजाए कि खुद मी बूदन्द गिर्द व गिर्दों कोशखः बरपा सास्तः बूदन्द व दरों कोशखः पान व गालिया हर किस्म निहादा बूदन्द । व आजा बमिस्ल मीर सैयद मंझन मुसलिफ मधुमालती व शाह मुहम्मद फरमूली, व मूसन विरादरे खुर्द शाह मुहम्मद व सूरदास बगैरह उलमा व फुजलः व शुअरः दरों कोशखः मी बूदन्द । व शेरे अरबी व पारसी व हिन्दवी मी गुप्तन्द । इस्लाम शाह फरमूद कि चूँ मनश्जा बेयायम कसे अज शुमायानताजिमे मन न खाहेद कर । अगर कसे निशस्तः वाशद उ हम चुना निशस्तः वाशद व अगर खुस्पीदा वाशद हम चुना वाशद । (ब्रिटिश संग्रहालयकी हस्तलिखित प्रति । इस प्रतिकी एक फोनी-स्टाट प्रति काशीप्रसाद जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटनामें उपलब्ध है ।)

२. सैयद हसन अकसरीसे यह बात श्रात हुई है ।

उपर्युक्त अवतरणसे अयाचित् ढंगसे हिन्दी जगतके सम्मुख यह बात भी पहली बार आ रही है कि मधुमालतीके रचयिताका नाम मीर सैयद मंझन था। अवतक हम उन्हें शेख मंझन समझते रहे वह गलत है। नामके साथ मीरका प्रयोग इस बातका संकेत करता है कि वे कोरे कवि न थे, शासनमें एक अधिकारी, सम्भवतः न्यायाधीश भी थे। अफसाना-ए-बादशाहानमें, जिस ग्रन्थसे यह अवतरण उद्धृत है, अनेक प्रसंगोंमें मीर सैयद मंझन राजगिरीका उल्लेख हुआ है, जिससे अनुमान होता है कि मंझन राजगृहके निवासी थे। यदि यह अनुमान ठीक है तो कहना होगा कि जिस भाषामें मधुमालती लिखी गयी है, उसे न केवल दिल्लीके लोग समझते थे, वरन् उससे अवधके बाहर बहुत दूर पूर्वके निवासी भी परिचित थे और निरायास उस भाषामें रचना कर सकते थे।^१

ये तथ्य हमारे कथनका समर्थन ही नहीं करते, वरन् उसे पुष्ट भी करते हैं। हमने जो कुछ कहा है, बहुत कुछ वही बात, दबी जवानसे, भाषाको अवधी नाम देनेवाले कुछ लोग भी कहते हैं। मिरगावतीकी भूमिकामें शिवगोपाल मिश्रने कहा है— अवधीके विकास कालमें जौनपुरसे दिल्लीतक (ईश्वरदासकी रचनामें बादशाह सिकन्दर शाहका वर्णन है) की भाषामें एकरूपता थी। अभीतक कुतयन अथवा ईश्वरदासके निवास स्थानोंका ठीकसे पता नहीं चल पाया किन्तु जायसी तथा शेख निसारके जन्मस्थान क्रमशः जायस तथा शेखपुर (फैजाबादके पास) सिद्ध हो चुके हैं। यदि इन सबकी भाषाओंका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो पता चलेगा कि सबोंने समान रूपसे एक ही भाषाका प्रयोग किया है जो अत्यन्त ठेठ शब्दोंको प्रश्रय देती है। इस प्रकार पूर्वमें गाजीपुर तथा जौनपुरसे पश्चिममें दिल्ली, उत्तरमें पूरा अवध प्रान्त तथा दक्षिणमें मध्य-प्रदेशतकमें अवधीका यही रूप बोला और समझा जाता था। यही अवधी उस कालकी जनताकी भाषा थी।^२ इस प्रकार शिवगोपाल मिश्र भी स्वीकार करते हैं कि यह भाषा अवधकी सीमामें ही सीमित न थी और तत्कालीन जनताकी भाषा थी।

हमारी बातोंका समर्थन विश्वनाथ प्रसादने स्वसम्पादित चन्द्रायनकी प्रस्तावनामें इन शब्दोंमें किया है—चन्द्रायनकी भाषा हिन्दीके विकासका वह प्रारम्भिक रूप है, जिसमें उसके किसी एक स्थानीय स्वरूपको लेकर और उसमें अन्यान्य कई बोलियोंके प्रचलित प्रयोगोंका मिश्रण करके उसे अधिक व्यापक बनानेकी प्रवृत्ति पायी जाती है। भाषाका एक सर्व जन-सुलभ और सुबोध रूप खड़ा करनेके लिए इसमें विभिन्न भाषा क्षेत्रोंमें प्रचलित रूपोंके मिश्रणका कुछ ऐसा ही आदर्श अपनाया

१. कुतुबने तिथि गणनाकी जो दाक्षिणात्य पद्धति अपनायी है, उसके आधारपर हमारी धारणा है कि वे दाक्षिणात्य थे अथवा दक्षिणसे उनका निकटका सम्बन्ध है। यदि हमारी धारणा ठीक है तो यह भी कहा जा सकता है कि सुदूर दक्षिणके लोगोंके लिए भी यह भाषा अपरिचित नहीं थी।
२. कुतुबन कृत मृगावती, भूमिका, पृ० ३५।

गया है, जैसा कि कबीर आदि सन्त कवियोंकी परम्परामें हमें मिलता है। क्योंकि उनका भी उद्देश्य अपने सिद्धान्तोंको अधिक-से-अधिक लोगोंको हृदयंगम कराना था।

मिरगावतीकी भाषाके सम्बन्धमें कुतुबनने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है—

शास्त्री आखर बहु आये।

औ देसी चुनि चुनि सब लाये ॥१३१४

खट भाका जो ईहहिँ बाँचा।

पण्डित विनु पूछत हो साँचा ॥१३११४

इस प्रकार कुतुबनने अपनी भाषाके सम्बन्धमें स्पष्ट कहा है कि तत्सम शब्दों (शास्त्री आखर—संस्कृत)के साथ-साथ देशी शब्दोंका प्रयोग उन्होंने किया है। इस प्रकार उनकी भाषा अनेक भाषाओंका मिश्रण है। यदि मिरगावतीको भाषाके साथ चन्द्रायन, पद्मावत और मधुमालतीकी भाषाकी तुलना करके देखा जाय तो ज्ञात होगा कि सबकी भाषा प्रायः एक-सी है, अर्थात् उनकी रचना मिरगावतीकी भाषा (कुतुबन के शब्दोंमें मिश्रित भाषा)में हुई है। भाषाओं या बोलियोंके मिश्रणसे बनी भाषा किसी प्रदेश विशेषकी भाषा न हो सकती है और न कही जा सकती है। ऐसी भाषाका प्रयोग सदैव विस्तृत क्षेत्रमें बोलने अथवा समझनेके लिए ही किया जायगा। ऐसी भाषाको सर्वदेशीय या राष्ट्रीय भाषा कहना उचित होगा। इस तथ्यको आजकी हिन्दीको सामने रखकर सरलतासे समझा जा सकता है। हिन्दीके मूलमें भाषाविद् मेरठ प्रदेशमें बोली जानेवाली खड़ी बोलीको मानते हैं; किन्तु आजकी हिन्दीको, जो सारे देशमें समझी या बोली जाती है अथवा जिसका प्रयोग लेखनमें होता है, कदापि मेरठ प्रदेशके लोक-जीवन में सीमित बोली नहीं कह सकते। उसने अपने मूल स्वरूपको बहुत पीछे छोड़ दिया है।

इसी बातको अत्यन्त सीधे-सादे और सुलझे हुए रूपमें अबदुकादिर बदायूनीने चन्द्रायनके और मुहम्मद कबीरने मंझन और मधुमालती के प्रसंगसे हिन्दवी शब्द द्वारा व्यक्त किया है। कुतुबनकी अपनी तथा पूर्ववर्ती इतिहासकारोंकी जानी-समझी बातकी उपेक्षा कर मुसलमान कवियोंके प्रेमाख्यानक काव्योंकी भाषाको अवधीके रूपमें प्रादेशिक भाषा कहना निराधार दुराग्रहके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता। जो तथ्य उपलब्ध हैं उनके प्रकाशमें इन काव्योंकी भाषाको हमें व्यापक क्षेत्रमें समझी जानेवाली भाषाके रूपमें देखना चाहिए। हिन्दवी नामको ध्यानमें रखते हुए उसे आरम्भिक हिन्दी, मध्यकालीन हिन्दी या उत्तर भारतीय हिन्दी जैसे किसी व्यापक नामसे पुकारना ही समीचीन होगा।

भाषाका स्वरूप

मिरगावती अथवा उसके समान मुसलमान कवियों द्वारा लिखे गये अन्य काव्योंकी भाषाके सम्बन्धमें तर्क करनेकी अपेक्षा उनकी भाषाके स्वरूपका विश्लेषण करना अधिक व्यावहारिक होगा और वह उचित निर्णयपर पहुँचनेमें सहायक होगा। किन्तु यह कार्य अपनेमें काफी विशद है। उसको यहाँ उठाना हमारे लिए अपनी सीमाओंको देखते हुए सम्भव नहीं है। यदि कोई तटस्थ भावसे इन ग्रन्थोंकी भाषाका परीक्षण और विश्लेषण करे तो उसे यह जाननेमें तनिक भी कठिनाई न होगी कि उनकी भाषापर अनेक बोलियों और भाषाओंकी छाप है। उनमें उसे अपभ्रंशके शब्द मिलेंगे; विद्यापतिकी कीर्तिलतामें प्रयुक्त विभक्तियों और परसर्गोंकी बहुत बड़ी संख्या दिखायी पड़ेगी; भोजपुरी प्रदेशकी शब्दावली, खड़ीबोलीके प्रयोग प्राप्त होंगे और ज्ञात होगा कि क्रिया-प्रयोग अकेले अवधीके नहीं हैं।

भाषा सम्बन्धी परीक्षणके निमित्त तटस्थ भाव बनाये रखनेके लिए यह बात ध्यानमें रखना आवश्यक है कि इन काव्योंकी जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं, उनमें भाषा सम्बन्धी एकरूपता नहीं पायी जाती। उनके नागरी और कैथी प्रतियोंके लिपिकोंने भाषाके साथ अपनी पूरी मनमानी की है। उनके सामने फारसी लिपिके पाठको पढ़नेकी जो कठिनाई रही है उसके कारण अज्ञानसे उत्पन्न पाठ दोष तो हैं ही; जान-बूझकर उनका प्रयास ग्रन्थकी भाषाको अपनी भाषाकी ओर खींचने का भी रहा है। ऐसा कदाचित् उन लोगोंने काव्यकी भाषाको अपनी बोलचालकी भाषाकी दृष्टिसे अटपटी या अजनबी पाकर ही किया है। लोगोंने उनके इस प्रयासको साधारणीकरण या सरलीकरणकी संज्ञा दी है। पाठ-स्वरूपोंकी यह भिन्नता किस सीमातक है, यह मिरगावतीके एकडला और बीकानेर प्रतियोंके पाठोंमें आये शब्दोंकी तुलनासे जाना जा सकता है। उदाहरणके लिए इन दोनों प्रतियोंसे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं—

एकडला प्रति

अगम
भोरा
मन्दिर
साथ
काह
अजगुत
राउ
साजा

बीकानेर प्रति

बहुत
सुधा
महल
संग
कवन
अचम्भो
राजा
रचावा

१. ये उदाहरण शिवगोपाल मिश्रने अपनी भूमिकामें दिये हैं। हमने इन्हें वहींसे ग्रहण किया है। इसके लिए हम उनके ऋणी हैं।

इसी प्रकार दोनों प्रतियोंमें सर्वनामके प्रयोगोंमें भी भिन्नता देखनेमें आती है। यथा—

एकडला प्रति

तोहार
तोह

बीकानेर प्रति

तुम्हार
तैं, तुम, तो

दोनों प्रतियोंके क्रिया रूपोंमें भी काफी भेद देखनेमें आता है। यथा—

एकडला प्रति

लीतिन्ह
दीतिसि
कहेउ
बसेउ

बीकानेर प्रति

लिहिस
दिहिस
कहउ
बसउ

ये उदाहरण इस बातके प्रमाण हैं कि दोनों प्रतियोंके लिपिकोंने एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न शब्द रूपों अथवा भाषाको ग्रहण किया है। इनमें कौन-सा रूप लेखककी भाषाका रूप है, यह सुगमता या सरलतासे नहीं बताया जा सकता। अतः आजका सम्पादक अपने विवेकके अनुसार दो में से किसी एक पाठको स्वीकारकर दूसरेको गलत मानकर अपना सम्पादन कार्य करता है। मूल भाषाका पूरी तरह समाधान प्रति-परम्पराओंपर विचार करनेपर भी नहीं हो पाता।

भाषाके मूल रूपमें सुरक्षित होनेकी सम्भावना फारसी लिपिमें लिखी प्रतियोंमें ही हो सकती है। इसके दो कारण हैं—(१) मूल प्रतियाँ इसी लिपिमें लिखी गयी थीं और आज जो फारसी प्रतियाँ उपलब्ध होती हैं वे नागरी-कैथी प्रतियोंसे अधिक पुरानी हैं। (२) फारसी लिपिमें लिपिकके लिए स्वेच्छा बरतनेकी कम गुंजाइश थी। प्रतिलिपिकारके रूपमें पाठकी कठिनाईका अनुभव करते हुए भी उसे अपनी कल्पना से नये शब्द गढ़नेका श्रम करनेकी आवश्यकता न थी; उसका काम बिना किसी प्रकारकी माथापच्चो किये ही, जैसा देखा वैसा ही मक्षिका स्थाने मक्षिका नकलकर देना भर था। इन ग्रन्थोंके सम्पादक भी यह बात स्वीकार करते हैं कि फारसी प्रतियाँ नागरी-कैथी प्रतियोंसे कहीं अधिक शुद्ध हैं। फारसी प्रतियोंके आधारपर तैयार किये गये पाठका उपयोग करनेपर ही भाषा सम्बन्धी उहापोहके लिए अपेक्षित तटस्थता सम्भव है।

फारसी प्रतियोंसे पाठ उपस्थित करते समय आवश्यक है कि सम्पादकके सम्मुख अपना किसी प्रकारका पूर्व आग्रह न हो। पूर्व आग्रह रहनेपर पाठका शुद्ध रूपान्तर कदापि सम्भव नहीं है। उसमें वैसी ही भ्रष्टता आ जायगी जैसी कि नागरी-कैथी प्रतियोंमें पायी जाती है। यथा—माता प्रसाद गुप्तकी दृढ़ धारणा है कि इन काव्योंकी भाषा ठेठ अवधी है। अपनी इस धारणाको लेकर ही उन्होंने पदमावतका सम्पादन किया है। फलस्वरूप वे फारसी प्रतियोंके पाठोंको तटस्थ भावसे नहीं देख सके हैं। पाठशोध

करते समय उन्होंने उसे सर्वत्र अवधीकी दृष्टिसे देखने और अवधी रूप प्रयोग करनेका प्रयत्न किया है। इस कारण भाषा सम्बन्धी शोधके लिए तटस्थ अनुसन्धित्सु उनके संस्करणपर निर्भर नहीं कर सकता। ऐसी ही बात उनके मधुमालतीके सम्बन्धमें भी कही जा सकती है।

भाषापर विचार करनेकी दृष्टिसे प्रेमाख्यानोंका कोई भी तटस्थ पाठ अभी सामने नहीं है। चन्द्रायनका हमारा पाठ फारसी प्रतियोंपर ही आधारित है; उसमें हमारा पूर्व-आग्रह भी नहीं है। वह सुगमतासे भाषा-शोधका साधन बनाया जा सकता है; पर हम उसे भी इसके लिए पर्याप्त नहीं समझते। मिरगावतीका प्रस्तुत संस्करण भी चन्द्रायनकी तरह ही फारसी प्रतियोंपर आधारित है। इसके लिए जिन दो प्रतियोंका उपयोग किया गया है, वे दोनों ही—दिल्ली और मनेरशरीफ प्रतियाँ—पाठकी दृष्टिसे प्रायः एक समान हैं। उनमें पाठका अन्तर नाम मात्र है। अतः उनके आधारपर जो पाठ प्रस्तुत किया गया है, वह मूलके अत्यन्त निकट है, यह हमारा विश्वास है। यह भाषा-शोधकी दृष्टिसे अधिक उपयोगी हो सकता है, ऐसी हम आशा करते हैं।

छन्द-योजना

मिरगावतीमें आदिसे अन्ततक एक ही छन्द-व्यवस्था है। उसमें सात-सात पंक्तियोंका काव्यांश है। प्रत्येक काव्यांशमें दो प्रकारके छन्दोंका प्रयोग है। आरम्भकी पाँच पंक्तियाँ एक छन्दमें हैं और शेष दो दूसरे छन्दमें। यही छन्द-व्यवस्था पूर्ववर्ती काव्य चन्द्रायनमें भी है। परवर्ती काव्य मधुमालतीमें मंझनने भी इसी छन्द-व्यवस्थाको अपनाया है। जायसीने भी पदमावतमें इसी व्यवस्थाको स्वीकार किया है किन्तु उसके काव्यांश नौ पंक्तियोंके हैं और पाँचके स्थानपर सात पंक्तियाँ एक छन्दमें, शेष दो दूसरे छन्दमें हैं। छन्द-योजनाकी इस परम्पराको प्रेमाख्यानक काव्योंमें तो अपनाया ही गया है, तुलसीदासने भी रामचरितमानसमें ग्रहण किया है।

इन काव्योंमें प्रयुक्त छन्दोंके सम्बन्धमें लोगोंकी सामान्यतः धारणा है कि वे चौपाई और दोहे हैं। और इसी धारणाके आधार पर लोगोंने उनके सम्बन्धमें अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। किन्तु किसीने भी यह बतानेकी आवश्यकता नहीं समझी कि चौपाई और दोहोंसे युक्त काव्यांशोंकी यह परम्परा कब और कहाँसे आरम्भ हुई। उनकी बातोंसे ऐसा श्लकता है कि यह छन्द-योजना हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका ही निजस्व है।

इस प्रकारकी छन्द-योजना अकस्मात् हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके साथ उद्भूत हुई हो, वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। उसकी अपनी प्राचीन परम्परा है जो अपभ्रंश काव्योंमें सुगमताके साथ देखी जा सकती है। वहाँ ये काव्यांश 'कड़वक' नामसे पुकारे गये हैं और अपभ्रंशके पिंगल ग्रन्थोंमें उनकी विस्तृत विवेचना है। हमने इसकी ओर चन्द्रायनमें ध्यान आकृष्ट करनेकी चेष्टा की है। उसकी ओर विद्वानोंका ध्यान अधिकाधिक जाना चाहिए। इस दृष्टिसे इस बातको यहाँ दुहराना अनुचित न होगा।

स्वयंभूके कथनानुसार प्रत्येक कड़वकमें आठ यमक और अन्तमें एक घत्ता होता है, जिसे ध्रुवा, ध्रुवक अथवा छड़निका भी कहते हैं। प्रत्येक यमक में १६-१६ मात्राओंवाले दो पद होते हैं। किन्तु सोलह मात्राओं वाले पदोंकी बात केवल सिद्धान्त रूप है। अपभ्रंशके कवियोंने १६ मात्रा वाले पदोंके अतिरिक्त पन्द्रह मात्राओंवाले पदोंका यमकमें प्रयोग प्रचुर मात्रामें किया है। अतः कड़वकोंमें प्रयुक्त यमक साधारणतः तीन रूपोंमें पाये जाते हैं—

१. पद्धिका—सोलह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम चार मात्राओंका रूप लघु गुरु लघु (जगण) होता है।

२. वदनक—सोलह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम चार मात्राएँ गुरु लघु लघु (भगण) होती हैं। कहीं-कहीं यह दो गुरु रूपमें भी पाया जाता है।

३. पारणक—पन्द्रह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम तीन मात्राएँ लघु होती हैं। कहीं-कहीं लघु गुरु रूप भी मिलता है।

आठ यमकोंवाली बात भी केवल सिद्धान्त रूप है। अपभ्रंशके जो काव्य आज उपलब्ध हैं, उनके कड़वकोंमें ६ से लेकर २०-१५ तक यमक पाये जाते हैं। वे इस बातके द्योतक हैं कि आठ यमकोंवाला नियम कभी भी कठोरताके साथ पालन नहीं किया गया।

घत्ताके द्विपदी, चतुष्पदी अथवा षट्पदी होनेका विधान है; पर अधिकांशतः घत्ता चतुष्पदी ही पाये जाते हैं। घत्ताके पद सात मात्राओंसे लेकर सत्तरह मात्राओंवाले बताये गये हैं। पदोंकी व्यवस्थाके अनुसार घत्ताके तीन रूप कहे गये हैं :

१. सर्वसम—इस घत्तामें चारों पदोंकी मात्राएँ समान होती हैं। मात्राओंकी संख्याके अनुसार सर्वसम घत्ताके नौ रूप होते हैं।

२. अर्धसम—इस प्रकारके घत्तामें प्रथम दो पदोंकी मात्राएँ एक समान और अन्तिम दो पदोंकी मात्राएँ पहले दो पदोंसे भिन्न किन्तु परस्पर समान होती हैं। मात्राओंकी गणनाके अनुसार अर्धसम घत्ताके ११० रूप कहे गये हैं।

३. अन्तरसम—इस प्रकारके घत्तामें प्रथम और तृतीय पदोंकी और द्वितीय और चतुर्थ पदोंकी मात्राएँ समान होती हैं और वह प्रसादबद्ध होता है। मात्राओंके भेदसे इसके भी ११० भेद बताये गये हैं।

यदि उपर्युक्त तथ्यके प्रकाशमें हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योंको ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह बात प्रत्यक्ष सामने आती है कि इनके रचयिताओंके सामने कभी भी १६ मात्राओंकी चौपाई और २३ मात्राओंके दोहेका आदर्श नहीं रहा। जिन लोगोंने चौपाई और दोहोंको इन काव्योंका छन्द समझा है, उन्हें उनका समाधान करनेमें सदैव कठिनाई रही है। इन काव्योंके छन्दोंमें चौपाई और दोहोंकी मात्राओंसे न्यून या अधिक मात्राएँ निरन्तर पायी जाती हैं। ये इस बातके स्पष्ट संकेत हैं कि उनकी रचना अनिवार्य रूपसे चौपाई और दोहोंमें नहीं हुई है। यदि कड़वकके सम्बन्धमें कही गयी उपर्युक्त बातोंपर ध्यान दिया जाय तो इसका अपने आप सन्तोष-

जनक समाधान हो जाता है। इन सब काव्योंकी रचना अपभ्रंश के कड़वक पद्धतिपर हुई है और उनके रचयिताओंने यमक और घत्ताके लिए विभिन्न मात्राओंवाले छन्दोंका स्वतन्त्रताके साथ यथेच्छा उपयोग किया है। चन्द्रायनके परिचयमें हमने यथेष्ट उदाहरण दिये हैं जिनसे प्रकट होता है कि उसके यमक चौपाईतक ही सीमित नहीं हैं और घत्तेके रूपमें दोहोंकी संख्या इनी-गिनी ही है।

जहाँतक मिरगावतीकी बात है, कुतुबनने तो स्पष्ट शब्दोंमें कह भी दिया है कि उन्होंने चौपाई और दोहेके अतिरिक्त अन्य छन्दोंका भी प्रयोग किया है। उनके शब्द हैं—

गाथा दोहा अरिला रचा।

सोरठा चौपाइन्ह कै सजा ॥ १३।३

उन्होंने यहाँ पाँच छन्दोंके नाम लिये हैं। इनमें दो—चौपाई और अरिल्लका यमकके रूपमें और तीन—गाथा, दोहा और सोरठाका घत्ताके रूपमें ही प्रयोग सम्भव है।

चौपाई और अरिल्ल दोनों ही १६ मात्राओंवाले छन्द हैं। चौपाईके सम्बन्धमें विधान है कि उसके पदोंकी अन्तिम मात्राएँ जगण (लघु, गुरु, लघु) होनी चाहिए। इस प्रकार यह अपभ्रंश पिंगलका पदद्विका छन्द है। इसमें तगण (गुरु, गुरु, लघु) का निषेध भी बताया गया है। अरिल्लमें अन्तिम मात्राओंके यगण (लघु, गुरु, गुरु) होनेका विधान है। इस दृष्टिसे मिरगावतीके यमकोंका परीक्षण करनेपर ज्ञात होता है कि कुतुबनने चौपाइयोंकी अपेक्षा अरिल्लका उपयोग अधिक किया है। किन्तु उनके सभी यमक १६ मात्राओंवाले नहीं हैं। यत्र-तत्र १५ मात्राओंवाले यमक भी देखनेको मिलते हैं। यथा—

एक बात अब कहउँ रसाल।

रतन मॉंति आनों भरि बाल ॥ ५१।१

बेगर बेगर सउजहिं साथ।

सारि क बान फोंक ले हाथ ॥ २१।१

हरियर बिरिख दीख एक महा।

मानसरोदक तिह तर बहा ॥ २३।३

कुँवर संगति कुरंगिनी डरी।

मानसरोदक भीतर परी ॥ २३।४

बिखम भुअंगम वेनी भये।

मारग वहे सीस केर गहे ॥ ६८।५

इनके अतिरिक्त मिरगावतीमें यत्र-तत्र ऐसे भी यमक हैं जिनमें दोनों पदोंकी मात्राएँ समान नहीं हैं, या उनमें १५ से कम या १६ से अधिक मात्राएँ हैं। ऐसी पंक्तियोंको पाठ दोष कहकर टाला नहीं जा सकता क्योंकि उनमें किसी प्रकारकी कमी या आधिक्य परिलक्षित नहीं होता। इस प्रकारके कुछ उदाहरण हैं—

राजकुँवर फुान बेगर पड़ा । (१५ मात्राएँ)
 निरखसि साउज जे र जिय घिरा ॥ (१६ मात्राएँ) २११२
 राउ अकेल मिरिगि है जहाँ । (१५ मात्राएँ)
 तीसर अउर न अहै तहाँ ॥ (१४ मात्राएँ) २३११
 तेहि मँह मिरिगी छपानेउ आई । (१९ मात्राएँ)
 बहुरि न निकसा गयउ हिराई ॥ (१६ मात्राएँ) २३१५
 हूँदे लाग न पायसु चाहा । (१६ मात्राएँ)
 बिसरा सबै जो मन मँह आहा ॥ (१७ मात्राएँ) २४१२
 सुधि बिसरी बुधि गई हेरानी । (१७ मात्राएँ)
 चित मँह गढ़ी सो पिरम कहानी ॥ (१७ मात्राएँ) २४१३
 खिन खिन पेम अधिक चित चड़ा । (१५ मात्राएँ)
 दुइज चँदरमाँ जनु गहन सो कड़ा ॥ (१८ मात्राएँ) २४१४
 खटरितु देखत अइस गयी । (१४ मात्राएँ)
 बहु उपकार कथा बहु भयी ॥ (१५ मात्राएँ) ४५१३

कुतुबनने घत्ताके लिए तीन छन्दों—गाथा, दोहा और सोरठाका नाम लिया है। ये तीनों ही छन्द चतुष्पदी हैं। गाथा प्राकृत और अपभ्रंशका छन्द है। इसके प्रथम चरणमें १२, दूसरेमें १८, तीसरेमें १३ और चौथेमें १५ मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार यह विषम छन्द है। दोहा और सोरठा दोनों ही हिन्दीके बहु प्रचलित छन्द हैं। दोहेमें क्रमशः १३, ११। १३, ११ और सोरठामें ११, १३। ११, १३ मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार ये अर्धसम घत्ताके छन्द हैं। दोहेमें दूसरे और चौथे पदोंके तुक परस्पर मिलते हैं, सोरठेमें प्रथम और तृतीय पदों के। दोहेके अन्तमें लघु आवश्यक है।

मिरगावतीके घत्तोंके परीक्षणसे ज्ञात होता है कि निम्नलिखित एक घत्तेको छोड़कर सभी घत्ते तुकान्त हैं—

पद्म पत्र बिसाल अछे, गजकुम्भ पयोहरी ।

हिरदे बसत मोतिह, साखा विलोचन यथा ॥ २४०

इस घत्तेके पदोंकी मात्राएँ क्रमशः १३, ११; ११, १२ हैं; इसके किसी पदमें तुक नहीं है। इस प्रकार सोरठेके लक्षणोंका इसमें सर्वथा अभाव है। इस प्रकार कुतुबनके कथनके बावजूद मिरगावतीमें एक भी सोरठा नहीं है। इसी प्रकार आरम्भिक १०० घत्तोंका परीक्षण करनेपर उनमें हमें एक भी घत्ता दोहेके लक्षणोंसे युक्त नहीं मिला। हाँ, कुछ घत्ते ऐसे अवश्य हैं, जिनके प्रथम दो पदोंमें १३ और ११ मात्राएँ हैं, पर उनके तीसरे चौथे पद दोहेके लक्षणकी पूर्ति नहीं करते। ऐसे घत्तोंके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

मात्राएँ	कड़वक
१३,११ १५,११	४, १२
१३,११ १६,११	२१, ५५
१३,११ १७,११	४३
१३,११ १६,१२	९६
१३,११ १३,१२	९०
१३,११ ११,१०	५४

गाथाके लक्षणोंकी पूर्ति करनेवाले अर्थात् १२, १८, १३, १५ मात्राओंवाले घत्ता भी मिरगावतीमें एक भी नहीं मिले। हाँ, कुछ घत्तोंको छोड़कर प्रायः सभी घत्ते विषमपदीय हैं। वे निम्नलिखित रूपोंमें मिलते हैं—

मात्राएँ	कड़वक	मात्राएँ	कड़वक
११,११ १५,११	७५	११,१२ ११,१३	९४
११,१३ १६,११	९४	११,१६ १६,११	१०
१२, ८ १३,१३	६६	१२,११ १२,१०	६१,७०
१२,११ १४,११	६५	१२,११ १६,११	२८,२९,४८
१२,११ १७,११	५१	१२,१४ १३,१४	७८
१२,१५ १२,१२	६९	१२,१५ १३,१५	४१
१२,१५ १६,११	४९	१२,१६ ९,१०	४६
१२,१६ १४,१०	५४	१३,१० १५,११	२५
१३,१२ १२,११	८०	१३,१३ १३,११	५९
१३,१५ १२,१५	२३	१३,१५ १३,१०	४२
१४, ८ १४,१२	८५	१४,११ १०,१०	६३
१४,१६ १४,११	१३	१५,११ ११,११	८८
१५,११ १२,१२	५६	१५,११ १६,११	१४,४४,९२
१५,११ १७,११	३९	१५,१२ १३,१२	५०
१५,१२ १६,१२	२७	१६, ९ १२,१४	९१
१६, ९ १६,११	६७	१६,१० १६,११	९९
१६,१६ १६,१२	७१	१६,११ १२,११	९८
१६,११ १३,११	७३,९५	१६,११ १३,१३	६
१६,११ १४,११	११,५३	१६,११ १४,१५	६२
१६,११ १५,१०	५७	१६,११ १५,११	१५,३२,३३
१६,११ १६,१०	३१,९७		६८,७६,७९
१६,११ १६,१२	५,४७	१६,११ १७,११	१८,८७
१६,१२ १२,१५	८६	१६,१२ १३,१३	१००

मात्राएँ	कड़वक	मात्राएँ	कड़वक
१६, १२ १६, ११	२२, २६, ३८	१६, १२ १६, १३	८३
१६, १२ १८, ११	३६	१६, १३ १६, ११	५२
१७, ११ १३, १४	६०	१७, ११ १५, ११	८
१७, ११ १६, ११	१९, २०, ३०, ४५	१७, १२ १३, ११	९
१७, १२ १७, १०	८४	१७, १२ १५, ११	७
१७, १५ १८, १२	१६	१७, १४ १३, १६	८२
		१८, ११ १७, ११	६४

घत्तोंके इसी प्रकारके कुछ अन्य रूप शेष कड़वकोंके विश्लेषणसे मिलें तो आश्चर्य नहीं। इन रूपों में कुछ पाठ-दोष जनित हो सकते हैं किन्तु सबको पाठ-दोष जनित कहकर टाला नहीं जा सकता। घत्ताके इन रूपोंपर विचार करना ही होगा। चन्द्रायनका सम्पादन करते समय हमें उसमें भी ऐसे घत्ते मिले थे जिनके चारों पदोंकी मात्राओंमें भिन्नता है। ऐसा एक घत्ता हमने उसके परिचयमें उभूत भी किया है। वहाँ इस दंगके घत्ते अपवाद स्वरूप हैं; यहाँ उनका बाहुल्य है। हो सकता है कुतुबनने इन विषम मात्राओंवाले घत्तोंके लिए ही गाथा शब्दका व्यवहार किया हो।

यदि उनकी बातोंसे हटकर घत्तोंका विश्लेषण किया जाय तो यत्र-तत्र अर्ध-सम अथवा अन्तर-सम घत्ते देखनेको मिल जाते हैं। प्रथम सौ घत्तोंमें केवल एक घत्ता अर्ध-सम है। उसकी मात्राएँ हैं—१४, १४ | ११, ११ (कड़वक ९३)। अन्तरसम घत्ताके दो रूप अबतक हम ढूँढ़ पाये हैं। वे हैं—

१२, ११ | १२, ११ कड़वक ३५

१६, ११ | १६, ११ कड़वक २४, ४०, ७२, ७४, ७७, ८१, ८९।

छन्दोंके सम्बन्धमें इस प्रकारकी जो स्वच्छन्दता मिरगावतीमें देखनेमें आती है वह आश्चर्यजनक है। उन्हें देखकर यही लगता है कि कुतुबनने यद्यपि कतिपय छन्दोंके प्रयोगकी बात कही है, उन्हें छन्द-शास्त्रके नियमोंमें बँधकर चलना अभीष्ट न था।

काव्य-स्वरूप

मिरगावतीका आरम्भ ईश्वरकी स्तुतिसे होता है। ईश्वरकी स्तुतिके बाद क्रमशः पैगम्बरकी वन्दना, चार यारोंका उल्लेख, गुरुकी स्तुति, शाहे-वक्तकी प्रशंसा और रचनाका परिचय है। तदनन्तर कथाका आरम्भ होता है। मौलाना दाऊद रचित पूर्ववर्ती प्रेमाख्यानक काव्य चन्द्रायनका भी ठीक यही स्वरूप है। उसमें भी आरम्भमें ईश्वर स्तुति, पैगम्बरकी वन्दना, चार यारोंका उल्लेख, शाहे-वक्तकी प्रशंसा, गुरु-स्तुति, आश्रयदाताका परिचय और ग्रन्थ परिचय है। परवर्ती मलिक मुहम्मद जायसी रचित पदमावत और मंझन कृत मधुमालतीके भी आरम्भमें ये सभी बातें लगभग इसी क्रमसे पायी जाती हैं। यों कहना चाहिये कि मुसलमान कवियोंके प्रेमाख्यानक

काव्योंका जो यह स्वरूप चन्द्रायनसे आरम्भ हुआ वह अन्ततक कायम रहा। समीने उसे आदर्श स्वरूप ग्रहण किया।

फारसी मसनवियोंमें भी आरम्भमें अल्लाह (ईश्वर) और रसूलकी वन्दना, मेराजका उल्लेख, समसामयिक शासक अथवा किसी अन्य महापुरुषकी प्रशंसा पायी जाती है; तदनन्तर रचनाके उद्देश्यपर प्रकाश डालते हुए कवि मूल विषयपर आता है, हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यों और फारसी मसनवियोंके स्वरूपमें जो यह समानता दिखाई देती है, उसे देखकर रामचन्द्र शुक्लने अपना अभिमत प्रकट किया था कि—इनकी (हिन्दी प्रेमाख्यानोंकी) रचना भारतीय चरित काव्योंकी सर्गबद्ध शैलीपर न होकर फारसी मसनवियोंके ढंगपर हुई है, जिसमें कथा सर्गों या अध्यायोंमें विस्तारके हिसाबसे विभक्त नहीं होती, बराबर चलती है, केवल स्थान-स्थानपर घटनाओं या प्रसंगोंका उल्लेख शीर्षक रूपमें रहता है। उनके इस मतको बिना किसी उहापोहके सत्य और प्रमाण मान लिया गया है; और इन प्रेमाख्यानोंपर लिखनेवाले विद्वानों और अनुसन्धित्सुओं द्वारा ये वाक्य प्रायः आँख मूँदकर तुहरा दिये जाते हैं।

वस्तुतः मसनवी फारसी साहित्यके किसी काव्य-शैलीका नाम नहीं है, वह काव्य-रूप मात्र है। इसमें रमले-मुसम्मने-महधूम कहा जानेवाला छन्द प्रयुक्त होता है, जिसमें चैत (पद) फायलातुनके वजनपर होता है। फायलातुनको छ बार तुहराते हैं; प्रत्येक मिसरेके अन्तमें फायलातका वजन होता है। दो मिसरोंके तुक परस्पर मिलते हैं।^१ इसमें केवल आख्यान या लम्बे क्रमबद्ध काव्य ही नहीं, अन्य प्रकारकी भी रचनाएँ हुई हैं। इस देशमें भी बाबर, हुमायूँ, अकबरके समयमें मसनवी छन्द विशेष ही माना-समझा जाता था। फरिश्ताने अपने इतिहासके प्रथम खण्डमें हुमायूँका एक पत्र उद्धृत किया है जो इसी छन्दमें है। उसे उसने अपनी कन्दहार विजयोपरान्त बैरम खाँको लिखा था और विजयके आनन्दका वर्णन किया है। अकबरके लिखे मसनवी छन्दोंके कुछ नमूने रामपुरके पुस्तकालयमें सुरक्षित हैं। उनमेंसे दोको अब्दुल गनीने अपनी पुस्तकमें उद्धृत किया है। एकमें साकीकी प्रशंसा है, दूसरेमें बसन्त ऋतुका वर्णन है।^१

पुनः हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके प्रसंगमें जिस ढंगसे मसनवीकी चर्चा की जाती है, उससे ऐसा भासित होता है कि वह प्रेम-काव्य है और उसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सूफी मतका प्रचार किया गया है। किन्तु यह धारणा नितान्त भ्रामक है। यदि अमीर खुसरौकी मसनवियोंपर ध्यान दिया जाय तो इस भ्रान्तिका स्वतः निराकरण हो जाता है।

मसनवीकी जो लाक्षणिक परिभाषा है उसके अन्तर्गत हिन्दीके प्रेमाख्यान काव्य नहीं आते, यह उपर्युक्त कथनसे स्पष्ट हो जाता है। यदि उन समानताओंपर विचार किया जाय, जिन्हें देखकर हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके फारसी मसनवियोंका

१. ब्राउन, लिटरेरी हिस्ट्री आव परशिया, खण्ड २, पृ० १८-२४।

२. अब्दुल गनी, अ हिस्ट्री आव परशियन लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर पेट द मुगल कोर्ट, पृ० २०७-२०८।

अनुकरण होनेका भ्रम होता है तो, जैसा कि हमने चन्द्रायनका परिचय देते हुए कहा है, स्पष्ट शत होगा कि ये विशेषताएँ अरबी-फारसी मसनवियोंकी एकमात्र अपनी नहीं हैं। भारतीय काव्य-परम्परा इन बातोंसे बहुत दिनों पहलेसे परिचित रहा है। अरबी-फारसी मसनवियों और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी उपर्युक्त लगभग सभी बातें जैन अपभ्रंश काव्योंमें पायी जाती हैं। प्रायः सभी जैन काव्योंका आरम्भ जिनकी वन्दनासे होता है। किन्हीं-किन्हीं काव्योंमें जिनकी वन्दनाके बाद सरस्वतीकी भी वन्दना होती है। तदनन्तर समकालिक शासकका उल्लेख, कविका आत्म-परिचय, आश्रयदाताकी चर्चा, रचनाका उद्देश्य आदि रहता है। उदाहरणस्वरूप पुष्पदन्त कृत महापुराण, स्वयंभू कृत पउमचरित, श्रीधर कृत पासनाह चरित, लखन कृत जिणदत्त चरित आदि महाकाव्योंको देखा जा सकता है।

संस्कृत काव्योंकी तरह सर्गवद्ध न होनेके कारण भी हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्बन्धमें धारणा बना ली गयी है कि वे फारसी मसनवियोंके अनुकरणपर रचे गये हैं, जहाँ सर्ग जैसा कोई विभाजन नहीं है। ऐसी धारणा बनाते समय अपभ्रंश काव्योंको सर्वथा भुला दिया गया है। यदि उन्हें देखा जाय तो शत होगा कि उसमें सर्गहीन काव्य भरे पड़े हैं।

फारसी मसनवियोंसे समता रखनेवाली हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी अन्य जिस विशेषताओंकी ओर लोगोका ध्यान गया है, वह है उनमें पायी जानेवाली प्रसंगोंकी सुखियाँ (शीर्षक)। खुसरो, जामी, फैजी आदिकी मसनवियोंके प्रसंग शीर्षकोंकी तरह चन्द्रायन, पद्मावत आदि प्रेमाख्यानक काव्योंकी अनेक प्रतियोंमें भी शीर्षक देखनेमें आते हैं। पर इस प्रकारके शीर्षक अपभ्रंश काव्योंमें भी पाये जाते हैं। जहाँतक भिरगावतीका सम्बन्ध है, इसकी तीन प्रमुख प्रतियों—दिल्ली, मनेरशरीफ और वीकानेर—में प्रसंग-शीर्षक जैसी कोई वस्तु है ही नहीं। सम्भवतः इस ढंगके शीर्षक काशी और चौखम्भा प्रतिमें भी नहीं हैं। एकडला प्रतिमें कुछ कड़वकोंके ऊपर शीर्षक प्राप्त होते हैं। अकेले इसके आधारपर अनुमान करना कठिन है कि कविकी मूल प्रतिमें इस प्रकारके शीर्षक रहे होंगे। यदि रहे भी हों तो उससे स्थितिमें अन्तर नहीं पड़ता।

फारसी मसनवियोंके साथ हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका किसी प्रकारका सम्बन्ध जोड़नेसे पूर्व यह भी देखना उचित होगा कि अपने इन बाह्य उपकरणोंके अतिरिक्त, जो उनके अपने निजस्व नहीं हैं और अपभ्रंश काव्योंमें भी समान रूपसे उपलब्ध हैं, आन्तरिक सामग्रीमें वे कितने अभातीय हैं। जहाँतक छन्द योजनाका सम्बन्ध है, वह पूर्णतः भारतीय है, यह हम ऊपर देख चुके हैं। जहाँतक कथावस्तु और कथा सम्बन्धी अभिप्रायों और रुढ़ियोंका सम्बन्ध है, उनमें भी कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिन्हें अभातीय कहा जा सके, यह हम आगे देखेंगे।

अतः अन्त और बाह्य दोनों दृष्टियोंसे हिन्दी प्रेमाख्यानकोंको फारसी मसनवियोंके साथ नहीं रखा जा सकता। वे सर्वांशमें भारतीय हैं। उनके सम्बन्धमें केवल इतना

ही कहा जा सकता है कि उनके रचयिता एक ऐसे धर्मको माननेवाले थे जिसका विकास भारतके बाहर हुआ था। किन्तु अभारतीय धर्मके माननेवाले होते हुए भी इन कवियोंकी भावनाएँ भारतीय चिन्तन-धारासे अनुप्राणित रही हैं, यह काव्यमें व्यक्त विचारोंसे स्पष्ट है।

कथा-वस्तु

भिरगावतीकी कथाका रूप इस प्रकार है—

१—एक अत्यन्त प्रतापी और धार्मिक राजा था। उसके पास पुत्रके अतिरिक्त सब कुछ था। ईश्वरसे उसने पुत्रकी याचना की और भण्डार खालकर दान देने लगा। ईश्वरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की, उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ पण्डित और ज्योतिषी बुलाये गये। उनसे ग्रह-नक्षत्र देखकर नाम रखनेको कहा गया। तुला राशिकी गणना कर उन्होंने उसका नाम राजकुँवर रखा और बताया कि वह बहुत बड़ा राजा होगा और उसके समान दूसरा कोई न होगा। किन्तु उसे “तिय वियोग कर कछु दुःख होई।” राजाने धाई बुलाकर उसके लालन-पालन करनेकी आज्ञा दी। राजकुँवर एक वर्षमें बोलने लगा। जब वह पाँच वर्षका हुआ तो राजाने पण्डितोंसे उसे सारी विद्याएँ सिखानेको कहा। दस वर्षमें ही वह पण्डित और हेंगुरि खेलनेमें दक्ष हो गया। (कड़वक १५-१९)

२—राजकुँवरको आखेट विशेष प्रिय था। एक दिन वह बहुतसे रावतोंको साथ लेकर जंगलमें आखेट खेलने गया। आखेट खेलते-खेलते वह साथियोंसे अलग हो गया। वहाँ उसे एक सतरंगी मृगी दिखायी पड़ी। वह आश्चर्य चकित रह गया। सोचा—यह आभूषण धारण करनेवाली जन्म-जात मृगी नहीं हो सकती। उसने उसे जीवित पकड़नेका निश्चय किया और उसके पीछे अपना थोड़ा छोड़ दिया। पीछा करते-करते वह सात योजनतक चला गया। तब उसे एक हरे वृक्षके नीचे मानसरोवर दिखायी पड़ा। राजकुँवरके डरसे मृगी उस सरोवरमें कूद पड़ी और अन्तर्धान हो गयी। राजकुँवर भी अपने कपड़े उतारकर सरोवरमें घुस गया और मृगीको ढूँढ़ने लगा। खोजते-खोजते जब वह थक गया और वह न मिली तब वह बाहर निकला और रोने लगा। उसे अपने तन-बदनकी सुधि जाती रही। वह घर-द्वार लोग कुटुम्ब सबको बिसार बैठा। (कड़वक २०-२५)

जब साथियोंको राजकुमार दिखायी न पड़ा तो वे उसे ढूँढ़ने लगे। जो मिलता उससे पूछते जाते। लोगोंने बताया कि वह एक मृगीके पीछे गया है। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे लोग भी वृक्षके नीचे मानसरोवरके पास पहुँचे। वहाँ उन्हें राजकुँवर बैठा दिखायी पड़ा। वे लोग थोड़ेसे उतरकर उसके निकट आये और उससे उसका हाल पूछने लगे। पर उसने उनके प्रश्नोंका कोई उत्तर नहीं दिया। जब उसके साथियोंने उसकी इच्छा-पूर्तिका वचन दिया तो उसने सतरंगी मृगीकी बात कह सुनायी। साथियोंने कहा

ऐसी कोई मृगी नहीं हो सकती। वह इन्द्रकी अप्सरा रही होगी। तुम घर चलो। पर उसने जानेसे इनकार कर दिया। (कड़वक २६-३०)

तब सब चिन्तित हुए और आपसमें परामर्श करने लगे। उन्होंने राजकुँवरको बहुत समझाया पर उसकी समझमें कुछ भी नहीं आया। उसने उनसे मृगीको ढूँढ़नेको कहा। उसके कहनेपर उन लोगोंने सरोवरमें घुस-पैठकर देखा पर वहाँ कुछ भी न था। तब फिर समझाया। पर राजकुँवरकी समझमें कोई बात आयी ही नहीं। निदान उन लोगोंने पत्र लिखकर इसकी सूचना राजाको दी। राजाने सुना; वह बहुत दुःखी हुआ। नगरके सभी लोगोंको लेकर राजकुँवरके पास आया। राजाने राजकुँवरसे जो कुछ उसने देखा था सब बतानेको कहा। राजकुँवर सब बता गया। उसकी बातें सुनकर राजाने कहा यह सब बातें मूर्खताकी हैं। पानीमें मृगी नहीं खोयी। तुमने स्वप्नको प्रत्यक्ष समझ लिया है। घर चलो नहीं तो मैं भी तुम्हारे साथ मर जाऊँगा। राजाने राजकुँवरको हर तरफसे मनाया। (कड़वक ३१-३५)

राजाकी बातें सुनकर राजकुँवरने उससे अनुरोध किया कि मुझे यहीं रहने दें। आपके साथ जानेमें मुझे दुःख ही होगा। मेरा हृदय विदीर्ण हो जायेगा और मैं मर जाऊँगा। मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है कि यहाँ एक भवन बनवा दें। राजाने तत्काल भवन बनानेका आदेश दिया और सतखण्डा प्रासाद बनकर तैयार हो गया जिसमें चित्र भी उकेरे गये। उसमें राजकुँवर मृगीका स्मरण करते हुए एक वर्ष रहा। (कड़वक ३६-४५)

एक दिन उसने बवण्डर उठते देखा। फिर उसे इन्द्रकी अप्सराएँ जैसी कोई चीज दिखाई पड़ी और वह देखते ही मूर्च्छित हो गया। फिर वह सँभलकर उठा तो देखा कि वे सब अप्सराएँ सरोवरमें क्रीड़ा कर रही हैं। वे संख्यामें सात थीं और एक ही पिताकी जन्मी-सी जान पड़ती थीं। उन सबका रंग एक-सा था। किन्तु उनमें भी एक अपूर्व थी। वह राजकुँवरके मनमें बस गयी। (कड़वक ४६)

खेलते-खेलते सहेलियोंकी दृष्टि-भवनपर गयी और उसे देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। वे सब आपसमें कहने लगीं कि हम यहाँ वर्षोंमें एक बार आती हैं। पर अभी-तक हमें यहाँ किसी मनुष्यके होनेकी आहट नहीं मिली थी। सो यह क्या है? किसीने कोई प्रपंच तो नहीं रचा है? हम सबको सचेत रहना चाहिए। सो चलो चलें। कहीं कुछ हो गया तो क्या किया जायेगा? उन सबमें जो सबसे अधिक सुन्दरी थी, उसने कहा—भला मनुष्य हमें क्या पायेगा। हम जहाँ चाहें उड़ जायँ। फिर मनुष्य जैसा उत्तम कोई नहीं है। यह तो हमी लोग हैं जो जब जैसा चाहते हैं वेश बना लेते हैं। हमें भला कोई क्या पायेगा। इस तरह वे बातें करती सरोवरसे बाहर निकलीं और अपने कपड़े पहनने और माँग सँवारने लगीं। राजकुँवर उनकी ओर लपका और चाहा कि उनके पावोंपर गिर पड़े। पर उसको आते देख वे सातो उड़ चलीं। (कड़वक ४७-४९)

उनके उड़ जानेपर राजकुँवर मूर्च्छित हो गया। धाईने पास आकर देखा और अमृत छिड़ककर उसे होशमें ले आयी। राजकुँवरने उसे सातो अप्सराओंके आनेकी बात बतायी और उनमें जो सर्वसुन्दरी थी उसका रूप वर्णन किया। (यहाँ उसका आद्यन्त नख-शिल वर्णन है)। सुनकर धाईने कहा कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है। तुम तनिक भी चिन्ता न करो। जैसा मैं कहती हूँ करो। एक बुधवन्त गुनीसे जो बात मैंने सुनी है वह तुमको बताती हूँ। वह मिरगावती रानी है जो यहाँ निर्जला एकादशी करने आयी थी। जिस जगह वह अन्तर्धान हुई वहाँ वह हर पर्वको आती है। वह उसके हाथ आवेगी जो किसी प्रकार उसका चीर पा ले। (कड़वक ५०-७८)

धाईकी बात उसके मनमें बस गयी। उसने सरोवरके किनारे एक कूप बनवाया और निर्जला एकादशीके दिन उसमें जा छिपा। मिरगावतीने निर्जला एकादशीके दिन अपनी सखियोंसे सरोवरमें स्नान करने चलनेको कहा। पर उन्हें यह नहीं बताया कि उसका मन राजकुँवरपर अनुरक्त है। निदान सब साथ हो लीं और सरोवरके किनारे आयीं। अपने वस्त्राभूषण उतारकर वे सरोवरमें घुस गयीं और म्रीडा करने लगीं। ईश्वरका स्मरणकर राजकुँवर बाहर निकला और जाकर मिरगावतीका चीर उठा लिया। जैसे ही उन्हें आहट मिली कि कोई चीर लेने आया है, वे सब अपना-अपना वस्त्र लेने भागीं। सबने तो अपना-अपना वस्त्र उठा लिया पर मिरगावतीको अपना वस्त्र नहीं मिला। यह देखकर सखियाँ बोलीं—हमने तो तुमसे उसी दिन कहा था पर तुमने कहा कि कोई नहीं है। इतना कहकर वे सब उड़ गयीं। (कड़वक ७९-८२)

३—जब मिरगावतीको अपना चीर नहीं मिला तो वह फिर पानीमें घुस गयी। देखा तीरपर राजकुँवर खड़ा है। उसे देखकर बोली—तुमने यह अच्छा काम नहीं किया। मुझे अपनी सखियोंसे विछुड़ा दिया। कुँवरने उत्तर दिया—तुम्हारी चाहमें मेरा यह दूसरा वर्ष है। जिस दिन तुम मृगी बनकर आयी थी उसी दिनसे मैं तुम्हारे लिये पागल हो रहा हूँ। यहाँ रहते अब यह तीसरा वर्ष हो रहा है। और वह अपनी सारी कथा सुना गया। यह सुनकर मिरगावतीने बताया कि मैंने भी तुम्हारे लिए ही मृगीका रूप धारण किया था। दुबारा भी तुम्हारे लिए ही आयी थी और सखियोंको बातोंमें भुलावा दिया था। फिर एकादशीके बहाने यहाँ आयी। तुमने मेरा चीर छिपा कर सहेलियोंका साथ छुड़ा दिया। मेरा चीर दे दो। जो तुम कहोगे, मैं करूँगी।

राजकुँवरने कहा—धाईने मुझे सब बात बता दी है। सो तुम्हारा चीर तो नहीं दूँगा। हाँ, यदि दूसरा चीर चाहो तो एक क्या मैं सात सौ ला दूँ। यह सुनकर मिरगावती ऊपरसे तो बहुत विगड़ी और धाईको गालियाँ देने लगी पर मन-ही-मन प्रसन्न हुई कि उसने उसे उचित उपाय बताया। अन्तमें हारकर बोली—अच्छा अपना ही चीर लाकर दो। उसे पहनकर वह बाहर आयी। फिर दोनों भवनमें आये और सुवर्ण-सिंहासनपर बैठे। राजकुँवरने मिरगावतीके गलेमें हाथ डालकर उरकी ओर हाथ बढ़ाया। तब मिरगावतीने कहा—जरा सँभालो। यदि मेरी मानो तो एक बात कहूँ। तुम राजपुत्र हो और मैं भी कुलवती हूँ। मैं तुम्हारी हूँ, इसमें सन्देह नहीं

पर सहेलियोंको आने दो । विवाहके पश्चात् रस-बात करना । राजकुँवरने उसकी बात मान ली और दोनों परस्पर प्रतिज्ञाबद्ध हुए । राजकुँवरने पिताको अपनी आकांक्षा पूरी होनेकी सूचना दी । (कड़वक ८३-९२)

पत्र पाकर राजा प्रसन्न हुआ और साज-वाजके साथ राजकुँवरसे मिलने आया और पुत्रवधूसे मिलकर बहुत कुछ न्योछावरमें बाँटा । पश्चात् दो-चार दिन रहकर अपने नगर लौट गया । (कड़वक ९३-९६)

४—राजकुँवर और मिरगावती सारसके जोड़ेके समान एक जगह रह कर हँसते खेलते रहे । एक दिन मिरगावतीके मनमें आया कि किसी प्रकार चीर मिल जाय तो मैं यहाँसे उड़ जाऊँ । अगर राजकुँवरको मेरी चाह होगी तो वह ढूँढ़ता हुआ मेरे नगर आयेगा ।

इसी बीच एक दिन राजाको राजकुँवरकी याद आयी और उसने उसे बुलानेके लिए दूत भेजा । पिताका सन्देश पाते ही शकुन-अपशकुनका विचार न कर राजकुँवर चल पड़ा । इधर मिरगावतीने धाईको मीठी बातोंमें फुसला लिया और कामके बहाने अन्यत्र भेज दिया । जब तक धाई लौटे-लौटे, उसने अपना चीर ढूँढ़ निकाला और पहन कर उड़ गयी । धाई लौट कर आयी तो उसे मिरगावती नहीं दिखाई पड़ी । वह उसे इधर-उधर ढूँढ़ने लगी । बाहर आकर भवनके ऊपर देखा तो वह वहाँ बैठी हुई थी । धाई उससे लौट आनेके लिए अनुनय-विनय करने लगी । मिरगावतीने कहा—राजकुँवर आये तो कह देना कि निसिंदिग्ध रूपसे मेरा मन उनमें अनुरक्त है किन्तु जो वस्तु मुफ्त प्राप्त होती है, लोग उसका मूल्य नहीं आँकते । इसलिए मैं उड़ कर जा रही हूँ । कुँवरसे कहना कि वह तत्काल मेरे पास आये । कंचननगर मेरा स्थान है और मेरे पिताका नाम रूपमुरारि है । इतना कह कर मिरगावती उड़ गयी । (कड़वक ९७-१०१)

५—उधर हँसते हुए राजकुँवरके हृदयमें अचानक खलबली मची और वह पितासे विदा लेकर अपने भवन लौटा । कुँवरको आया देख धाई रोने चिल्लाने लगी और मिरगावतीके उड़ जानेका हाल कह सुनाया । सुनते ही राजकुँवर पछाड़ खाकर गिर पड़ा और आत्महत्याकी चेष्टा करने लगा । लोगोंने उसे समझानेकी चेष्टा की और किसी-किसी तरह उसे आत्महत्या करनेसे रोका । वह रोता विलाप करता रहा । उसकी स्थिति पागलोंकी-सी हो गयी । अन्ततोगत्वा वह योगीका साज मँगा कर मिरगावतीकी खोजमें निकल पड़ा । बिना किसी डर भयके रोता विसरता किंगरी बजाता चलता गया और जाकर एक नगरमें पहुँचा । वहाँ रुक कर उसने मिरगावतीकी टोह लेनेकी चेष्टाकी । वह न कहीं जाता और न आता, रोता और प्रेमकी किंगरी बजाता रहता । लोगोंने जाकर राजासे कहा कि योगीके वेशमें एक राजकुमार आया हुआ है । राजाको उसे देखनेकी उत्सुकता हुई । आकर उसे देखा, बातें की । राजकुँवरने अपनी प्रेम-गाथा कह सुनायी । उसकी बातें सुनकर राजाको दया आयी । उसने उसे समझानेकी चेष्टा की, पद्मिनी देनेकी बात कही किन्तु उसने कुछ भी सुनने-लेनेसे इनकार किया

और बोला—किसी ऐसे आदमीको ढूँढ़ कर बुला दोजिये जा कंचनपुरका रास्ता जानता हो। इतनी ही दया काफी है। पता लगा कि उस नगरमें एक जंगम है जो देश-विदेश बहुत घूमा हुआ है। वह बुलाया गया। आकर उसने कंचनपुरके मार्गकी दुर्गमताकी बात कही। पर उससे राजकुमार तनिक भी विचलित नहीं हुआ। निदान जंगम उसे मार्ग बताने चला और सागर-तट पर आकर कहा कि कंचनपुरको यही मार्ग जाता है। वहाँ एक नाव थी। उसी पर सवार होकर राजकुँवर चल पड़ा। (कड़वक १०२-१२०)

६—एक मास तक समुद्रके लहरोंके बीच रहनेके बाद उसे किनारा दिखाई पड़ा। किनारे गिरि-पर्वत पर उसे दो आदमी दिखाई पड़े। उन्होंने बताया कि जिस मार्गसे तुम आये, उसी मार्गसे हम भी आये हैं। पर्वत देखकर हमने समझा कि हम किनारे पहुँच गये हैं पर यहाँ तो लोगोंके उतरनेका कोई घाट ही नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे साथ अनेक नावें थीं पर सभी डूब गयीं। खोजा पर उनका कहीं पता नहीं लगा। एक आश्चर्य यह भी देखा कि एक असाधारण साँप यहाँ है जो नित्य एक आदमी खाता है। हमारे नावमें बहुतसे आदमी थे। उन सबको वह खा गया। अब हम केवल दो ही व्यक्ति बच रहे हैं।

उनकी बात समाप्त हो भी न पायी थी कि सर्प आ पहुँचा और उनमेंसे एकको पकड़ ले गया। दुबारा आकर सर्प दूसरे आदमीको भी ले गया। यह देखकर राजकुँवर रोने और ईश्वरसे प्रार्थना करने लगा। इतनेमें फिर सर्प आया और राजकुँवर अपने जीवनके प्रति निराश होने लगा। तभी एक दूसरा सर्प दिखाई पड़ा। दोनों सर्प आपसमें लड़ने लगे और लहरके साथ बह गये। नहरके साथ नाव भी किनारे आ लगी और कुँवरके जानमें जान आयी। (कड़वक १२१-१२६)

७—नावसे उतर कर राजकुँवर चला। मार्गमें उसे एक आम्राराम दिखाई पड़ा। उसके भीतर जाकर वह बैठ गया। फिर घूम फिर कर उसे देखने लगा। उसे एक भवन दिखाई पड़ा। उत्सुकतावश वह उसके भीतर घुसा। वहाँ उसे पलंग पर बैठी हुई एक राजकुमारी दिखाई पड़ी। वह रो रही थी। राजकुँवरने उससे रोनेका कारण पूछा तो उसने बताया—उस नगरका नाम सुबुद्धया है। वहाँके राजा अयोध्या के सुप्रसिद्ध राघव वंशके हैं। उनका नाम देवराय है। मैं उसकी कन्या हूँ। मेरा नाम रूपमनि (रूपमणि) (बीकानेर और चौखम्भा प्रतिके अनुसार—रुकमिनि) है। यहाँ एक राक्षस रहता है जो वर्षमें एक आदमी लेता है। इस वर्ष मेरी बारी आयी है। इसलिए उन्होंने मुझे दिया है।^१ आप यहाँसे चले जाइये।

१. शिवगोपाल मिश्रने सम्मेलन संस्करणमें कथा-सार देते हुए रूपमनिके एक वर्ष पूर्व राक्षस द्वारा हर लानेकी बात कही है। एकठला प्रतिमें उन्हें वह कड़वक उपलब्ध था जिसमें स्पष्ट कहा गया है—राक्षस एक रहत है पंथा, बरिस देवस एक लेइ। यदि र बरिस ओसरी हम आई, तो उन्ह हम काँह देइ ॥ (कड़वक ९, पृष्ठ ९६)। फिर क्यों और किस आधार पर उन्होंने ऐसा कहा है, कहना कठिन है।

यह सुनकर राजकुँवरने कहा कि मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता। आज मैं उस राक्षसको किसी-न-किसी उपायसे अवश्य मार डालूँगा। तब उस राजकुमारीने कहा—यदि नहीं जाते हो तो मेरे पास आकर बैठो। राजकुँवरने कहा—मैं बचनबद्ध हूँ, इस कारण किसी स्त्रीके पास नहीं बैठता। जीवित रहते इस प्रतिज्ञाका पूर्णतः पालन करूँगा।^१

यह बातें हो ही रही थी कि राक्षस आ पहुँचा। उसके सात सीस और चौदह भूदण्ड थे। उसे देख कर रूपमणि धवराई पर राजकुँवर ने उसे आश्रस्त किया और अपने चक्रसे राक्षसको मार डाला। यह देखकर राजकुमारी मूर्छित हो गयी। राजकुँवर उसे होशमें ले आया। राजकुमारी उसकी वीरता पर मोहित हो गयी और उससे अपने निकट बैठनेका अनुगोष करने लगी। राजकुमार भी, यह सोच कर कि मन शुद्ध हो तो निकट बैठनेमें कोई हर्ज नहीं, जाकर उसके सेज पर बैठ गया।

तब राजकुमारीने कहा—तुम योगी नहीं जान पड़ते। शपथ देकर वह उसका नाम-धाम पूछने लगी। राजकुँवरने बताया—मैं सूर्यवंशी प्रतापी राजा गनपतदेवका पुत्र हूँ, चन्द्रागिरि उनका विशाल गढ़ है। कंचनपुर निवासिनी मिरगावती रानीको देख कर अपनेको भूल बैठा हूँ। तब राजकुमारीने पूछा—तुमने उसे कहाँ देखा? उत्तरमें राजकुँवर आखेटके समय मृगी देखनेसे लेकर चीर-हरणके पश्चात् पाँच मास साथ रहकर मिरगावतीके उड़ जाने तककी सारी घटना सुना गया। (कढ़वक १२७-१३८)

८—प्रातःकाल होने पर लोग रूपमणिकी खोजमें निकले। उसकी हड्डियोंको एकत्र कर चिता पर जलानेके निमित्त रोता हुआ राजा आया। यहाँ आकर उसने रूपमणिको जीवित पाया और उसके पास एक अन्य व्यक्तिको बैठा देखा। राजाको देख कर रूपमणि धवराई और तत्काल सेजसे उठ खड़ी हुई। राजाने उसे गलेसे लगाया और पूछा कि वह किस प्रकार बच निकली। तब राजकुमारीने राजकुँवरको दिखा कर सारी बात कह सुनाई और कहा कि यह कुलमें हमसे उच्च है। इनके पिता सूर्यवंशी चन्द्रागिरिपति हैं।

यह सुनकर देवरायने सोचा कि इसे यहाँसे जाने न दूँगा। मेरे कोई पुत्र नहीं है अतः बेटीके बदले उसे प्राप्त करूँगा। यह सोच कर वह राजकुँवरसे बोला—योगी वेशका परित्याग करो। मैं तुम्हें अपना आधा राज-पाट देकर अपनी बेटी ब्याह दूँगा। राजकुँवरने उत्तर दिया—मैं योगी हूँ। राज-पाटसे मुझे क्या प्रयोजन! राजाने उसे फुसलानेकी बहुत चेष्टा की। जब वह किसी प्रकार न माना तो उसे बन्दीगृहमें डाल देनेकी धमकी दी। धमकीके बाद राजकुँवर कुछ सोच-समझ कर राजाकी बात मानने-

१. इस स्थल पर शिवगोपाल मिश्रने लिखा है कि रूपमणिके गिड़गिड़ाने पर राजकुँवर उसकी सेज पर बैठ गया (सम्मेलन संस्करण, पृ० १९)। किन्तु यह गलत है, ऐसी बात राक्षस-वधके पश्चात् हुई, पूर्व नहीं।

को तैयार हो गया। योगीका वेश उतार कर उसने श्वेतवस्त्र धारण किया। तब राजाने उसे हाथी पर सवार कराया।

नगरके लोग उसे देखने आये और उस पर फूल बरसाये। घर पर सब लोगोंने रूपमणिके पुनर्जीवन पर प्रसन्नता प्रकट किया और न्योछावर बाँटा। (कड़वक १३९-१४६)

९—राजा प्रसन्न हुआ; पर राजकुँवर ऊपरसे तो हँसता पर मनमें दुःखी रहने लगा। राजाने उसके गुणोंकी परीक्षा लेनेका निश्चय किया। फलतः उसने दिखाया कि वह सभी तरहका जुआ खेलनेमें दक्ष है; उसे हेंगुरि और आखेट खेलना भली प्रकार आता है; वह सब विद्याओंसे भी परिचित है। इस प्रकार उसके सब प्रकारसे कुलवन्त होनेके प्रति आश्चर्य होकर राजाने विवाहका निश्चय किया। उधर राजकुँवर भागनेका उपाय सोचने लगा। वह अपने मनकी बात किसीसे न कहता और योगी-जंगमकी टोह लेता रहता। (कड़वक १४७-१५२)

विवाहका आयोजन हुआ, लोगोंने ज्योनार किया और कुल-रीतिके अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न हुआ। विवाहके पश्चात् जब राजकुँवर रूपमणिके साथ सेजपर बैठा तो उसे उसकी याद आयी जिसे वह खो बैठा था। उसने सोचा—भोग-विलासमें रत होना उचित नहीं है। अतः रूपमणिको बातोंमें ही भुलाये रखना ठीक होगा। वह उसे बातोंमें बहलाये मन ही-मन मिरगावतीका चिन्तन करता रहा। (कड़वक १५२-१५६)

प्रातःकाल जब राजकुँवर राजसभामें गया तो उसने एक धर्मशाला बनवानेका प्रस्ताव रखा। धर्मशाला बना। धर्मशालामें जो भी जोगी, जंगम, पंथी आता, उसे भोजन दिया जाता। राजकुँवर उनके पास बैठता, उनसे देश-लोककी बात पूछता और कंचनपुरके सम्बन्धमें जिज्ञासा करता। रूपमणिने ताड़ लिया कि राजकुँवर मुझमें अनुरक्त नहीं है। वह रूठकर खट्वाट् लेकर पड़ रही। राजकुँवर जब सभासे लौटा तो उसने यह अवस्था देखी और यह विश्वास दिलानेकी चेष्टा की मैं तुम्हींसे प्रेम करता हूँ, अन्य किसीसे नहीं। राजकुमारी बोली—मैं तुम्हारी सब धूर्ताचार समझती हूँ। तुम्हारा शरीर तो यहाँ पर मन कहीं और है। राजकुँवरने उसे बहुत तरहसे समझा बुझाकर मनाया और हृदयसे लगाया।

राजकुमारीको मनाकर जब राजकुँवर बाहर निकला तो एक योगीको बैठा पाया। उससे हाल-चाल पूछा। उसने कंचनपुरके सम्बन्धमें जानकारी दी। जानकारी प्राप्त कर राजकुँवरने उस योगीसे उसका कन्या ले लिया और आखेटके बहाने घरसे निकल पड़ा। आखेट खेलते-खेलते जब वह अकेला हो गया तब वे अपने कपड़े उतार कर योगी वेश धारण किया और घोड़ेको वहीं छोड़कर सागर तटपर पहुँचा, जहाँ घाटपर नाव चलती थी। केवटको पैसे देकर वह उस पार जा पहुँचा। (कड़वक १५७-१६४)

जो लोग कुँवरके साथ थे, वे दूँदते हुए वहाँ आये जहाँ राजकुँवर अपना घोड़ा छोड़ गया था। उन लोगोंने कुँवरको दूँदा पर जब वह न मिला तो उन लोगोंने सोच लिया कि उसे बाध खा गया है। वे लोग दुःखी होते हुए घर लौटे। जब यह समाचार रूपमणिको मिला तो वह एकदम कुम्हला गयी और अपने भाग्यपर पश्चाताप करने लगी। (कड़वक १६५-१६७)

१०—उस पार पहुँचकर राजकुँवर वनमें धूमता फिरा। तीस दिन चलनेके पश्चात् वनका अन्त हुआ। वनसे बाहर आनेपर उसे कुछ बकरियाँ चरती दिखाई पड़ीं और एक चरवाहा गड़ेरिया मिला। राजकुँवरको देखते ही गड़ेरिया उसके पास आया और अतिथि कहकर उसका स्वागत किया तथा घर चलनेका अनुरोध किया। राजकुँवरने प्रसन्नतापूर्वक उसका आतिथ्य स्वीकार कर लिया और उसके साथ चल पड़ा। गड़ेरिया उसे लेकर एक खोहमें घुसा और उसे भीतर कर आप द्वार बन्दकर बाहर बैठ गया। यह देख राजकुँवर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उलटकर देखा तो वहाँ उसे अनेक व्यक्ति असाधारण रूपसे मोटे दिखाई पड़े। उसने उनसे उनके सम्बन्धमें पूछा और उनकी असाधारण मुटारूँका कारण जानना चाहा। उन लोगोंने बताया कि गड़ेरिया उन लोगोंको भुलावा देकर ले आया है और उन्हें कोई ऐसी औपधिमूल खिला दिया है जिसके कारण वे लोग चलने-फिरनेमें असमर्थ हो गये हैं।

यह सुनते ही राजकुँवरकी जान सूख गयी। अच्छा आतिथ्य करने आया! खाना खिलानेको कौन कहे, यह स्वयं मुझे खाना चाहता है। इसने मुझे जैसा रास्ता दिखाया है वैसा ही मैं भी कुछ कुलूँ जिससे यह आकाश चला जाय। और वह उससे छुटकारा पानेका उपाय सोचने और मन-ही-मन दुःखी होने लगा। जब उसकी समझमें कोई भी उपाय नहीं आया तो जो लोग भीतर थे, उन लोगोंने उसे उपाय सुझाया। जयतक वह तुम्हें औपधिमूल नहीं खिलाता, उस बीच जो हम कहते हैं करो। वह अभी आकर हममेंसे एकको भूनकर खायेगा और फिर पड़कर सो रहेगा। जब वह सोता रहे तभी सँडसी दग्धकर उसकी आँखमें घुसेड़ दो। राजकुँवरकी समझमें यह उपाय आ गया और उसने वैसा ही किया और गड़ेरियाकी आँखें फोड़ दीं।

गड़ेरिया क्रुद्ध होकर उठा और राजकुँवरको पकड़ना चाहा पर वह भाग गया। गड़ेरिया उसको चारों कोने टटोलने लगा पर वह हाथ न आया। तब वह द्वारपर जा बैठा और द्वारको इस प्रकार बन्द कर दिया कि कोई बाहर निकल न सके। यह देख राजकुँवर पुनः चिन्तित हुआ। तीन दिन तक ऐसी ही स्थिति रही। फिर गड़ेरियाके मनमें आया कि बकरियोंको निकाल दूँ, वे चर आयें। वह एक-एक बकरी निकालने लगा। इसे निकलनेका अच्छा अवसर देखकर राजकुँवरने एक बकरीको मार डाला। और उसका चमड़ा निकालकर ओढ़ लिया और बकरियोंके साथ निकलने लगा। निकलते समय जब गड़ेरियेने उसे टटोला तो उसे लगा कि वह बकरी नहीं है। लेकिन जब तक उसे पकड़नेकी कोशिश करे, राजकुँवर बाहर निकल गया। (कड़वक १६८-१८६)

११—वहाँसे राजकुँवर आगे बढ़ा। चलते-चलते उसे एक भवन दिखाई पड़ा। तब तक शाम हो गयी। उसने वहाँ रात बितानेका निश्चय किया। जब वह भवनके निकट पहुँचा तो उसे एकदम निर्जन पाया। उसे आश्चर्य हुआ और लगा कि वह कोई कौतुकपूर्ण जगह है। वहाँ वह छिपकर बैठ गया। इतनेमें चार अपूर्व कबूतर आये और आकर उन्होंने नारी रूप धारण किया। फिर उन्होंने मन्त्र पढ़ा; विछी हुई सेज आ गयी। पुनः मन्त्र पढ़ा तो चार मोर आये और आकर वे चार पुरुष बन गये। और तब सब सेजपर बैठकर केलि करने लगे। इस प्रकार हँसते खेलते रात बीत गयी। जब सुबह हुई तो दूतने आकर उन्हें सूचना दी कि किसीने गड़रियेको अन्धा कर दिया है। इतना सुनते ही वे सब उड़ गये। यह देखकर राजकुँवर डरा और वहाँसे भागा। जब बहुत दूर भाग आया और धूपसे परेशान हो गया तो एक पेड़के नीचे जा बैठा। (कड़वक १८७-१९१)

१२—उधर मिरगावती जब राजकुँवरके महलसे उड़कर आयी तो सहेलियाँ उससे चीर-हरण की बात पूछने लगीं। कहने लगीं कि कोई विना किसी सम्बन्धके किसीका चीर नहीं लिया करता। तब मिरगावतीने उन्हें बताया कि जिस दिन मैं तुम्हारे साथ स्नान करने गयी थी और तुम लोग मुझे छोड़ कर चली आयी थी, उस दिन रास्तेमें मैंने एक राजकुमारको देखा। उसे देखते ही मुधि-बुधि खो बैठी और मृगीका रूप धारण कर उसे निहारने लगी। उसे अपनी ओर आकृष्ट कर मैं भागी। उसने मेरा पीछा किया पर मैं उसकी पकड़में नहीं आयी और जिस सरोवरमें तुम नहाने गयी थीं, उसमें विलीन हो गयी। फिर दुबारा जब जी नहीं माना तो बहाना करके तुम्हें साथ ले गयी। तुमने सरोवरके निकट जो मन्दिर देखा, वह उसी राजकुमारने बनवाया है। वहाँ वह बैठकर मेरी प्रतीक्षा करता रहा। पुनः जब हम तीसरी बार गयीं तो उसने धाईकी सीखपर मेरा चीर ले लिया और अपना चीर लाकर दिया। उसने मेरा चीर ऐसी जगह छिपा दिया कि वह मिल न सके। उसने जब मुझसे रसरंग की बात कही तो मैंने कहा कि सहेलियोंको आने दो। उनसे माँग कर मेरे साथ सेज-रमण करना। वह मेरी बात मान गया। फिर एक दिन जब मुझे अबसर मिला तो मैंने धाईको भुलावा देकर अन्यत्र भेज दिया और चीर पहनकर भाग निकली। आते समय अपना पता दे आयी और कह आयी कि यदि वह मुझपर अनुरक्त है तो कंचनपुर आये। कहकर तो चली आयी पर यहाँ मन नहीं लग रहा है। तब सहेलियाँ उससे प्रेमकी बातें करने लगीं। (कड़वक १९२-२००)

१३—मिरगावतीके पिता स्वर्गवासी हुए, राजकर्मचारियोंने पुत्रके अभावमें मिरगावतीको राजगद्दीपर बैठाया। वह धार्मिक ढंगसे शासन करने लगी। उसने एक धर्मशाला बनवाया और आदेश दिया कि जो भी योगी-जंगम आये उसे भोजन-पानी दिया जाय। जो भी यात्री आये वह मुझसे विना मिले न जाय। इस प्रकार जो भी योगी-यती आता, उसे वह अपने पास बुलाती और इधर-उधरकी बातोंके बाद चन्द्रागिरिकी बात पूछती। (कड़वक २०१-२०२)

१४—राजकुँवर वृक्षके नीचे आकर बैठा। उसकी दृष्टि ऊपर गयी। वहाँ दो पक्षी बैठे परस्पर प्रेम-कथा कह रहे थे। वह ध्यान देकर उनकी बातें सुनने लगा। वे कह रहे थे कि एक राजकुमार मिरगावतीके प्रेममें अनुरक्त है। उसने अबतक बहुत कष्ट सहे हैं पर अब उसके दुःखके दिन थोड़े ही रहे, वह शीघ्र ही सुख प्राप्त करेगा। यह कहकर वे दोनों उड़ चले। कुँवरने जो यह बात सुनी तो जिस ओर वे गये थे, उसी ओर वह भागता चला। जाते-जाते एक मार्ग मिला। आगे जानेपर उसे एक लक्षाराम मिला। उसे लगा कदाचित् यही कंचनपुर है। वह लक्षाराममें घुस गया और उसे देखता हुआ आगे बढ़ा और कुँवरके निकट आया। वहाँ उसे पनिहारिनें दिखाई पड़ी। उसने पृच्छनेपर ज्ञात हुआ कि वही कंचनपुर है और वहाँ मिरगावतीका राज है। जो योगी-यती वहाँ आते हैं, उनका वहाँ बड़ा मान होता है। (कड़वक २०३-२१४)

राजकुँवरने नगरमें प्रवेश किया। राजद्वारतक पहुँचा। आगे प्रवेश करना सहज न पाकर वह किंगरीपर वियोग बजाने लगा। उसके वियोगकी बात नगरमें फैल गयी। मिरगावतीने सुना आर उसे बुला भेजा। सात द्वार पार कर जब राजकुँवर भीतर पहुँचा तो उसने मिरगावतीको सुवर्ण-सिंहासनपर बैठे पाया। उसे देखते ही वह मूर्च्छित हो गया। (कड़वक-२१५)

उसे मूर्च्छित होते ही वह भौंप गयी कि यह जोगी नहीं, राजकुँवर है। उसने सहेलियों से उसे होशमें लानेको कहा। वे उसे होशमें ले आयीं आर उससे मूर्च्छित होनेका कारण पृच्छने लगीं। फिर उन्होंने अनुमान लगाया कि कदाचित् यह वही है जिसकी बात मिरगावती कहा करती हैं। जब मिरगावतीको भी निश्चय हा गया कि वह वही राजकुँवर है तो उसे निकट बुलाया और अपनी सहेलियोंको यह बात बतायी, तब सहेलियोंने मिरगावतीसे राजकुँवरकी परीक्षा लेनेको कहा। परीक्षामें राजकुँवर खरा उतरा। तब मिरगावतीने दासियोंको उसे स्नान करानेका आदेश दिया। (कड़वक २१६-२२१)

१५—मिरगावतीने शृङ्गार किया और सेज सँवरवाया और उसपर जा बैठी। बैठकर राजकुँवरको बुलवाया। राजकुँवरके आते ही सेजसे उतरकर उसने उसका स्वागत किया। फिर दोनों सेजपर जा बैठे। मिरगावतीने बताया कि क्रोधमें यहाँ आनेको तो आ गयी पर आनेपर पश्चाताप हुआ। मैं दिन-रात तुमको याद करती रही। राजकुँवरने भी अपना सारा दुःख कह सुनाया—किस प्रकार उसने योग-पंथ धारण किया, वनमें खोया, समुद्रमें गया, सर्प-भक्षणसे बचा, राजकुमारीके भक्षणके लिए आये राक्षसको मारा, राजकुमारीसे विवाह किया, वहाँसे भागा, गड़ेरियाके चंगुलमें पड़ा, उसका आँख फोड़ा, यह सब उसने सविस्तार सुनाया। यह सुनकर मिरगावती व्याकुल हुई और उसे कण्ठसे लगा लिया। पश्चात् दोनों आलिंगन-परिरम्भणमें रत हो गये। (कड़वक २३२-२४४)

१६—प्रातःकाल राजकर्मचारियोंने सुना और वे मिरगावतीके पतिको जुहार करने आये। राजकुँवरने उन्हें धन्य-धान्यसे सम्मानित किया। फिर राज-सभामें

बैठा। वहाँ नृत्य-संगीत हुआ। राजकुँवरके सभामें जाने पर मिरगावतीने सखियोंको बुलवाया। वे सब आकर रातकी बात पूछने लगीं। मिरगावती पहले तो चुप रही पीछे उसने राजकुँवरकी प्रशंसा की। सखियाँ अपने घरसे निछावर लयीं। मिरगावतीने उसे ग्रहण किया और उन्हें वस्त्राभूषण मेंटमें दिये। (कड़वक २४५-२६१)

१७—एक दिन किसी सखीके यहाँ कुछ मंगलाचार था। वह मिरगावतीको बुलाने आयी। मिरगावती राजकुँवरसे पूछ कर उसके घर गयी और जाते समय राजकुँवरको मना करती गयी कि घरमें जो ओवरी है, उसे मत खोलना। उसके चले जाने पर राजकुँवरको जाननेकी जिज्ञासा हुई कि ओवरीमें क्या है। उसने जाकर ओवरी खोला। वहाँ उसने कटघरेमें एक आदमीको बन्द देखा। राजकुँवरको देखते ही वह आदमी गुहार करने लगा। राजकुँवरके पूछने पर उसने बताया कि मैं मिरगावतीके पिताका एक कर्मचारी हूँ। मैं उनका विश्वासपात्र था। अर्थ-भण्डार सब कुछ मेरे हाथमें था। स्वामीका प्रियपात्र होनेके कारण अनेक लोग मेरे शत्रु थे। रूपगुरारिके मरते ही लोगोंने मुझे बन्दी कर दिया है। उसने राजकुँवरसे तरह-तरहकी बातें की। उन्हें दया आ गयी और उसने कटघरा खोल दिया।

कटघरा खुलते ही उसमेंसे एक विशालकाय दैत्य निकल पड़ा और निकलते ही वह कुँवरको कन्धे पर रख कर आकाशमें उड़ गया। कुँवरको अपने किये पर पछतावा होने लगा। दैत्य उसे उड़ाकर सौ योजन दूर ले गया और वहाँ कुँवरसे बोला—मेरी प्रियतमाके साथ तुम सुख भोग कर रहे हो और मुझे सताते हो। मैं मिरगावतीका प्रेमी हूँ और वह तुम पर अनुरक्त हो गयी है। एक वर्ष तक मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा पर वह हाथ न आयी। उसे तुम मुफ्तमें ही पा गये अब मैं तुम्हें पृथ्वी पर पटकूँगा। सो कहो तुम्हें पर्वत पर गिराऊँ या समुद्रमें। कुँवरने मनमें सोचा कि इससे उलटी ही बात कहनी चाहिये और उसने उससे पर्वत पर गिरानेको कहा। दैत्यने कहा—नहीं, तुझे पानीमें गिराऊँगा और उसे समुद्रमें डाल दिया। ईश्वरकी कृपासे वह उथले पानीमें गिरा।

इधर राजकुँवरके सिर यह विपत्ति आयी, उधर मिरगावतीके हृदयमें खलबली मची और उसे शंका होने लगी कि पुरुष जाति मना की गयी बातको नहीं मानती। कहीं उन्होंने ओवरी तो नहीं खोल दिया! वह सखीसे घर जानेके लिए अनुमति माँग ही रही थी कि दासी रोती चिल्लाती आयी। और दैत्य द्वारा राजकुँवरके उड़ा ले जाये जानेका समाचार दिया। यह सुनते ही मिरगावती अवाक् रह गयी। एक घड़ीके पश्चात् जब उसे कुछ चेतना आयी तो वह विलाप करने लगी। सहेलियाँ उसे समझाने लगीं। नगरमें समाचारसे खलबली मच गयी।

सखियोंके समझाने बुझाने पर उसने सेवकोंको राजकुँवरको ढूँढ़नेका आदेश दिया। स्वयं भी राजकुँवरको ढूँढ़नेका तरह-तरहसे यत्न करने लगी। तब एक आदमी ने आकर राक्षसके गिरफ्तार किये जानेका समाचार दिया। तत्काल उसे सामने लाये जानेका आदेश हुआ। उससे राजकुँवरके सम्बन्धमें पूछा जाने लगा पर वह मौन

रहा। उसे तरह-तरहके त्रास दिये गये पर उसने कुछ नहीं बताया। अन्तमें उसे कोठरीमें बन्द कर दिया गया। (कड़वक २६२-२८९)

मिरगावतीकी समझमें कुछ नहीं आ रहा था कि राजकुँवरका पता पानेके लिए क्या किया जाय। इतनेमें असाह आ पहुँचा। पवनके द्वारा उसने सन्देश भेजा। पवनने जाकर राजकुँवरसे मिरगावतीकी अवस्था कही। राजकुँवरने भी उससे अपनी अवस्था मिरगावतीसे जाकर कहनेको कहा। पवनने आकर मिरगावतीको राजकुँवरका समाचार दिया। समाचार पाते ही मिरगावती पवनके साथ राजकुँवरके पास पहुँची और उसे ले आयी। नगरमें प्रसन्नताकी लहर छा गयी। तदन्तर दोनों आनन्दपूर्वक रहने लगे। (कड़वक २९०-३०४)

१८—इधर ये लोग रस-भोगमें लीन थे उधर रूपमणिके दिन दुःखमें वीत रहे थे। वह सूखकर पीली हो गयी। दिन-रात पन्थ जोहती रहती। एक दिन भवन-पर चढ़कर वह मार्ग जोह रही थी कि एक बनजारा आता दिखाई दिया। वह आकर सरोवरके किनारे रुका। रूपमणिने यह जाननेके लिए कि वह कहाँसे आ रहा है, आदमी भेजा। आदमीके पूछनेपर बनजारने बताया कि वह चन्द्रागिरिसे आ रहा है और कंचनपुर जायगा। वह गनपतदेवका ब्राह्मण पुरोहित है और उनका सन्देश लेकर जा रहा है। कंचनपुरका नाम सुनते ही धावनने उससे रूपमणिके पास चलनेको कहा कि वह भी अपना कुछ सन्देश भेजना चाहती हैं। वह रूपमणिके पास आया और बताया कि मेरा नाम दूँलभ है। जिस देशमें राजकुँवर लुभाया हुआ है, वही जा रहा हूँ। यह सुनकर रूपमणि रोने लगी और रो-रो कर अपना सारा दुःख कह सुनाया (कविने यहाँ बारहमासाका उपयोग किया है)। (कड़वक ३०५-३३६)

१९—दूँलभ रूपमणिकी दुःख-कहानी सुनकर उसका सन्देश लेकर चला। रास्तेमें उसे अन्धा गड़ेरिया मिला। उससे वह कंचनपुरका रास्ता पूछकर आगे बढ़ा और कंचनपुर पहुँचा। कंचनपुरमें व्यापारियोंने बनजारेके आनेकी बात सुनी तो उसके पास वणिज खरीदने आये। उसने कहा कि यह वणिज तुम्हारे लिए नहीं है। राजा खरीदने आयेगा तो उसके हाथ बेचूँगा। यह बात फैलते-फैलते राजातक पहुँची। राजा (राजकुँवर) को भी उत्सुकता हुई कि उसके पास क्या ऐसी वस्तु है जो केवल हमारे ही हाथ बेचना चाहता है। राजाने उसे बुला भेजा।

ब्राह्मणने आकर राजा (राजकुँवर) को जब आशीष दिया तब उसने उसे पहचान लिया कि यह तो हमारे घरका पुरोहित है। निश्चय करनेके लिए नाम-धाम पूछा। ब्राह्मणने अपना नाम-धाम बताया और पिता-माता तथा रूपमणिका सन्देश कहा—और कहा कि जो उचित हो कीजिए। राजकुँवरने कहा—यहाँकी व्यवस्था कर लूँ तबतक अगस्त उग आयेगा और पानी भी घट जायेगा। तब चला जाय।

ब्राह्मणके सन्देशसे राजकुँवर व्याकुल हुआ, उसे पिताकी स्मृति आयी, रूप-मणिका प्रेम जागा। उसने मिरगावतीसे जाकर कहा कि आज पिताके घरसे आदमी आया है। वे अब अत्यन्त वृद्ध हो गये हैं। उन्होंने बुलाया है। तुम जैसा कहो किया

जाय ! मिरगावतीने कहा—आप जो कहेंगे वह शिरोधार्य है। आप रायभानको राज सौंप दें और राजकर्मचारियोंसे कहें कि जबतक रायभान अवोध है, वे लोग समुचित ढंगसे राजका काम सँभालें। (कड़वक ३३७-३५५)

२०—राजकुँवरने कंचनपुरमें सुखसे चार वर्ष व्यतीत किये। मिरगावतीने दो पुत्रोंको जन्म दिया। बड़ेका नाम रायभान और छोटेका नाम करनराय था। रायभानको राजतिलक दिया गया। अगस्त उगा, पानी घटा तो राजकुँवरने चलने की तैयारी की और सुदिन पूछकर चल पड़ा।

चलते-चलते एक नदी मिली। उसके किनारे एक दिन रुक कर आगे बढ़ा और वहाँ जाकर ठहरा जहाँ उसने गड़ेरियेका आतिथ्य किया था। वहाँ वह गड़ेरियेको देखने गया और लोगोंको उसके छलकी बात बतायी। फिर प्रातःकाल वहाँसे रवाना हुआ। जब सुबुद्ध्या नगर तीस कोस रह गया तो उसने सूचना देनेके लिए दूँलभको आगे भेजा।

उधर रूपमणिने स्वप्न देखा और सखियोंसे उसका अर्थ पूछा। उन्होंने बताया कि तुम्हारा प्रियतम सौत लेकर आ रहा है। यह बातें हो ही रही थीं कि ब्राह्मण आ पहुँचा और प्रतिहारसे अपने आनेकी सूचना देनेको कहा। उधर राजकुमारीने काग उड़ाया। कागका उड़ना था कि समाचार लेकर प्रतिहारी आ गया। समाचार सुनते ही वह उछाहसे भर गयी। उसने दूँलभसे जाकर पिताको सन्देश सुनानेको कहा। दूँलभने राजाको राजकुँवरके आनेकी सूचना दी। राजा तत्काल उसके स्वागतके लिए चल पड़ा। उधर राजकुँवरने मिरगावतीको रूपमणिके सम्बन्धमें सारी बात बता दी और कहा कि ब्याही हुई स्त्री छोड़ी नहीं जा सकती। मिरगावतीने उसकी बात मान ली। (कड़वक ३५६-३७५)

राजा स्वागत कर राजकुँवरको घर ले आया। रूपमणिकी आकांक्षा पूरी हुई। राजकुँवर और रूपमणि मिले आर परस्पर केलि क्रीड़ा करने लगे। यह देखकर द्रन्द्र, उद्रेग, उचाट और वियोगको बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने मिरगावतीके पास जानेका निश्चय किया। वहाँ आकर उन्होंने सुख और आनन्दको मार भगाया। इन लोगोंने राजकुँवरके पास जाकर गुहार लगायी। रूपमणिके साथ रात बिताकर जब प्रातःकाल राजकुँवर मिरगावतीके पास गया तो वह पीठ देकर बैठ रही। तब राजकुँवरने उसे समझाया और प्रेमकी बातें की। उसने अपनी दोनों पत्नियोंको इस तरह रखा कि दोनोंने अनुभव किया कि मुझसे ही प्रेम करते हैं। (कड़वक ३७६-३८९)

२१—एक दिन राजकुँवरने दूँलभको बुलाकर राजाके पास भेजा और कहा कि कि आज्ञा दें तो पिताके पास जाऊँ। उसने जाकर राजासे निवेदन किया और रूपमणि को विदा कराकर राजकुँवरके पास ले आया। और वे लोग वहाँसे रवाना हुए। जब चन्द्रागिरि निकट आया तो राजकुँवरने दूँलभको अपने पिताके पास भेजा। उसका पिता प्रतीक्षा कर ही रहा था। दूँलभने जाकर बताया कि राजकुँवर दस योजन

पर आ गया है और एक गाँवमें ठहरा हुआ है। मुझे उन्होंने आपके पास भेजा है। फिर उसने राजकुँवरका सारा हाल कह सुनाया—किस प्रकार देवरायने उसके साथ अपनी बेटी ब्याही, कैसे उसका मिरगावतीसे मिलन हुआ। सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और टाट-बाटके साथ उसे जाकर लिवा लाया। सब लोग दुःख भूल कर आनन्दसे रहने लगे। (कड़वक ३९०-३९८)

एक दिन जब राजकुँवर आखेटको गया हुआ था, मिरगावतीकी ननद उसके पास आयी और रूपमणिकी चुगली की। बोली—रूपमणि कह रही थी कि विवाहिता तो मैं हूँ मिरगावती तो उदरी (अपहृता) है; फिर भी वह मुझे कुछ नहीं समझती। यह सुनकर मिरगावती बहुत क्रुद्ध हुई। रूपमणिकी दासी यह सब बात सुन रही थी। थी। उसने जाकर रूपमणिसे कहा। रूपमणि गाली-गलोज करने लगी। मिरगावतीने जब यह बात सुना तो वह भी बोलने लगी। दोनों अपनी बड़ाई और दूसरेका निन्दा करने लगीं। शगड़ेकी बात जब सासके कानमें पड़ी तो वह गरजती हुई आयी। उसे देखकर दोनों चुप हो गयीं। सासने आकर इस तरह लड़ने-झगड़नेके लिए उनकी भर्त्सना की। दोनों कुपित होकर अपने-अपने घरमें पड़ी रही।

जब राजकुँवर आखेटसे लौटा तो देखा कि दोनों रानियाँ खट्वाट् लेकर पड़ी हैं। वह ताड़ गया कि दोनोंने परस्पर लड़ाई की है। वह तत्काल माँके पास पहुँचा और कहा कि चलकर दोनोंको मनाओ। सास ननद सब मिल कर पहले मिरगावतीके पास आयीं और उसे समझाया। उसे समझा बुझाकर वे रूपमणिके पास आयीं और उसके क्रोधको भी शान्त किया। (कड़वक ३९९-४०९)

२२—राजकुँवरको आखेट बहुत प्रिय था। बिना आखेट खेले उसे नींद न आती थी। वह स्वप्नमें भी आखेट खेलता रहता। एक दिन प्रातःकाल एक शिकारीने आकर सूचना दी कि वनमें एक ऐसा सिंह आया है जिससे सभी पशु त्रस्त हैं। कल मैं शिकार खेलने गया था तो देखा कि वहाँ असंख्य मैमन्त गज मरे पड़े हैं। पास आकर देखा तो पाया कि उनके मस्तक में तनिक भी गूदा नहीं है। किन्तु उनके शरीर पर एक भी नख नहीं लगा है। जंगलके अन्य जितने जानवर हैं, वे भी मरे पड़े हैं। लगता है कि वे उसके डर मात्रसे मर गये हैं। यह देख डर के मारे मैं वहाँ से भाग आया।

यह सुन कर राजकुँवर हँसा और तत्काल सिंहको मार डालनेका निश्चय किया। और सारी तैयारी कर उस पारधीको लेकर वनमें पहुँचा। वनमें पहुँच कर उसने पारधीसे पेड़ पर चढ़ कर सिंहको देखनेको कहा और स्वयं वनमें घुस गया। वनके भीतर जाकर देखा कि सिंह निःशंक सो रहा है। उसे देख कर उसने सोचा कि सोते मारना पुरुषार्थ नहीं है। उसे जगा कर मारना ही उचित होगा। इतनेमें घोड़ेकी आवाज सुनकर सिंह जाग पड़ा। दोनोंकी आँखें चार हुई। सिंह पूँछ पटक कर गरजा और तड़प कर घोड़ेके सिर पर धावा किया। तब तक राजकुँवरने खाँडा निकाल कर उस पर वार कर दिया। उसका सर धड़से अलग हो गया; धड़से पाँव टूट गये। साथ

ही साथका बाण तड़क कर राजकुँवरके हृदयमें आ लगा ।^१ उसी समय हाथियोंका समूह आया और उसे पकड़ना चाहा । राजकुँवरने उन पर बाण छोड़ा । वह हाथीके मस्तकमें आ लगा और चिंघाड़ता हुआ भागा ।

दोनों ही सिंह जमसे भी विकराल थे । दोनोंको कालने कालसे ही मारा । सिंह और राजकुँवर दोनों ही मर गये । कुँवरके गिरते ही पारधी पेड़से उतरा । देखा कि वह निर्जीव पड़ा है ।

किसीने जाकर राजाको इसकी सूचना दी । सुनते ही राजा जो उठ कर भागा तो ठोकर खाकर गिर पड़ा और वहीं उसकी साँस निकल गयी । करनराय तत्काल जंगलमें पहुँचा । पारधीको जब उसके आनेकी आहट मिली तो वह भूमि पर लोट कर रोने लगा । करनरायने भी आत्महत्या करनी चाही । लोगोंने उसकी कटार थाम ली और समझा बुझा कर अन्त्येष्टि-क्रिया करनेके लिये तैयार किया । लोग राजकुँवरके शवको लेकर नगरमें आये । गंगा-तट पर चिता रची गयी । शवके साथ भिरगावती और रूपमणि सती हो गयीं । उनके साथ राजकुँवरके कर्मचारी और नगरके बहुतसे लोग भी जल मरे । (कड़वक ४१०-४२९)

पश्चात् राजकर्मचारियोंने करनरायको घर लाकर राजगद्दी पर बैठाया । (कड़वक ४३०)

कथाका मूल-स्रोत

भिरगावतीकी यह कथा कुतुबनकी अपनी मौलिक कल्पना नहीं है, यह उन्होंने स्पष्ट रूपसे स्वीकार किया है । उनका कहना है—

पहिलें हिन्दुईं कथा अही ।

फुनि र कौहि तुरकी लै कही ॥

फुनि हम खोलि अरथ सब कहा ।

जोग सिंगार वीर रस अहा ॥ ४३११-२

उनके इस कथनसे जान पड़ता है कि मूलतः यह कोई भारतीय कथा थी जिसे किसीने अरबी या फारसी (तुर्की) में रूपान्तरित किया था । उस रूपान्तरित कथाको लेकर उन्होंने योग, शृंगार और वीर रससे युक्त यह कथा कही है ।

मध्यकालमें भारतीय कथाओंमें बहुतोंके अनुवाद अरबी-फारसीमें हुए थे और उन्होंने लोक-ख्याति प्राप्त की है । अतः प्रस्तुत कथाके मूलतः भारतीय भाषामें प्रचलित रहने और उसके अरबी-फारसी अनुवाद होनेकी बातमें कोई असाधारणता नहीं है । किन्तु हमें किसी भारतीय साहित्य अथवा लोकमें प्रचलित ऐसी कथाका ज्ञान नहीं

१. खोज रिपोर्टमें राजकुँवरके हाथीसे गिरकर मरने की बात कही गयी है । रामचन्द्र शुक्लने भी इसी बातको दुहराया है । शिवगोपाल मिश्रने लिखा है कि जगनेपर सिंह बिजलीकी भाँति राजकुँवरपर टूट पड़ा और उसे मार डाला । (सम्मेलन संस्करण, पृ० २३)

हो पाया जिसमें हम मिरगावतीकी इस कथाको झॉक सकें। न कोई अरबी-फारसीमें अनूदित कथा-साहित्यकी जानकारी हो पायी है जिसमें यह कथा उपलब्ध हो। भारतीय कथा साहित्य अगाध है। हो सकता है किसी अज्ञात कोनेमें यह कथा छिपी पड़ी हो। यह कथा कुतुबनके समयमें लोक-प्रचलित थी तो निसन्देह वह अपभ्रंश साहित्यमें ही कहीं प्राप्त होगी।^१ वहींसे वह अन्यत्र गयी होगी।

मूल रूपमें मिरगावतीकी कथा भले ही उपलब्ध न हो, उसमें कोई ऐसा अभि-प्राय नहीं है जो भारतीय साहित्यका जाना पहचाना न हो। हजारीप्रसाद द्विवेदीने इस कथाके दो अभिप्रायोंको विदेशी बताया है। उनका कहना है कि पुरुषका एका-न्तिक प्रेम और प्रियाको प्राप्त करनेके लिए कठिन साधना तथा प्रियाका धोखा देकर उड़ जाना और दूसरे देशमें राज्य करना, ये दोनों ही कथानक रूढ़ियाँ इस देशके लिये नयी हैं।^२ किन्तु अपभ्रंश काव्योंके देखनेसे ज्ञात होता है कि हजारीप्रसाद द्विवेदीकी यह धारणा भ्रान्तिपूर्ण है। ये दोनों ही रूढ़ियाँ इस देशके लिए नयी नहीं हैं।

मुनि कनकामर (१०६५ ई०) रचित करकण्ड-चरितमें करकण्डके पत्नी-वियोग और उसकी व्याकुलताका राजकुँवरकी व्याकुलताके सदृश ही वर्णन है। कर-कण्ड उसी व्याकुलतामें नाना विपत्तियोंको झेलता हुआ सिंहलद्वीप पहुँचता है। इसी प्रकार पन्द्रहवीं शतीकी रचना रयणसेहरी-कहामें भी रत्नशेखर सिंहल द्वीपकी राजकुमारी रत्नवतीके प्रति आकृष्ट होकर विकल होता है और उसी विकलतामें सिंहलकी यात्रा करता है। इस प्रकारके अन्य अनेक कथा प्रसंग हैं जिनमें नायक नायिकाकी प्रातिके लिये कष्ट सहन करता है। राजकुँवरका मिरगावतीके प्रति विकलता और उसकी खोज-के लिए यात्राको इन कथाओंसे किसी प्रकार भिन्न नहीं कहा जा सकता।^३

इसी प्रकार मिरगावतीके अपने पिताके राज्यपर शासन करनेवाली बातमें भी कोई अनोखापन नहीं है। भारतीय साहित्यमें स्त्री-राज्य और त्रिया-देश सम्बन्धी अनेक कहानियाँ उपलब्ध हैं। मत्स्येन्द्रनाथके प्रसंगमें त्रिया देशकी रानीकी चर्चा तो अति प्रसिद्ध है ही। दिल्लीकी सलतनतपर कुछ ही सौ बरस पहले रजिया अपने पिताके उत्तराधिकारिणीके रूपमें शासन कर चुकी थी। उसका आदर्श कुतुबनके सामने रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

मिरगावतीकी अन्य रूढ़ियों और अभिप्रायोंको भी भारतीय कथा-साहित्यमें सरलतासे ढूँढ़ा जा सकता है। पर सबकी विशद चर्चा न कर हम केवल कुछ रूढ़ियोंकी ओर ही ध्यान आकृष्ट करना चाहेंगे।

१. परशुराम चतुर्वेदीका भी मत है कि मृगावतीकी कथा, सम्भवतः किसी प्राचीन अपभ्रंश रचनासे ली गयी है। भारतीय प्रेमाख्यानकी रम्परा, १९५६ ई०, पृ० १२०।
२. हिन्दी-साहित्य, १९५२ ई०, पृ० २६५।
३. रामका सीताके वियोगमें वन-वन भटकते फिरनेका भी इसी प्रसंगमें उल्लेख किया जा सकता है।

१. पशु-पक्षीका रूप धारण करनेका अभिप्राय तो भारतीय साहित्यमें अत्यन्त प्राचीन है। उसका उल्लेख रामायण महाभारतमें भी उपलब्ध है। जैन कथा-साहित्य तो उससे भरा पड़ा है। मिरगावतीका मृगी रूप धारण कर राजकुँवरको अपनी ओर आकृष्ट करनेका प्रयास बरबस रामायणकी ओर ध्यान आकृष्ट करता है और मारीचिके सुवर्ण मृग बनकर सीताका ध्यान आकृष्ट करनेकी घटनाकी याद दिलाता है। उपवनमें कबूतरों और मोरोंका मानव रूप धारण कर केलि-श्रीड़ा करना, महाभारतकी उस कथाका याद दिलाता है जिसमें कमन्द ऋषि और उनकी पत्नीके मृग रूप धारण कर केलि करनेका उल्लेख है।^१

२. मानसरोदकमें मिरगावती और उनकी सखियोंकी जलश्रीड़ा तथा राजकुँवर द्वारा मिरगावतीका चीरहरण, भागवत वर्णित कृष्ण द्वारा गोपियोंके चीरहरणकी याद दिलाता है।

३. राक्षसके भोजनके निमित्त पारी बाँधनेकी बात भी कथा-साहित्यका एक अत्यन्त जाना-पहचाना अभिप्राय है। पंचतन्त्रकी एक कथामें जगलके पशुओं द्वारा सिंहराजके भोजनके लिए आपसमें पारी बाँधकर एक पशु नियमित रूपसे भेजने का उल्लेख है। महाभारतमें भी इसी प्रकारकी एक कथा है। राक्षसके भोजनक निमित्त एक ब्राह्मणकी पारी थी। दैवयोगसे उस दिन उसके घर भीम अतिथि रूपमें पहुँच गये थे। वे उस ब्राह्मणके स्थान पर राक्षसके पास गये और राक्षसको मार डाला। इस दंगकी एक पौराणिक कथा भी है। इस कथाके अनुसार सर्पराज वासुकि और गरुड़के बीच एक समझौता हुआ था। जिस दिन शंखचूड़ नामक सर्पकी बारी थी, उस दिन जीमूतवाहन उसके स्थान पर गया।^२

४. पक्षियोंके परस्पर वार्तालाप द्वारा सूचना पानेका अभिप्राय भी कथा-साहित्यमें बहुत प्रसिद्ध है। नेमिचन्द्रकी लीलावती कथामें चूतप्रिय और बसन्तदोहला नामक शुक्र-दम्पतीकी चर्चा है जो वृक्ष पर बैठे परस्पर कुसुमपुरीकी राजकुमारी वासवदत्ताकी चर्चा कर रहे थे। उनकी बातोंसे कन्दर्पको वासवदत्ताका परिचय उसी प्रकार मिला जिस प्रकार प्रस्तुत कथामें राजकुँवरको कंचनपुरके निकट होनेकी सूचना वृक्ष पर बैठे पक्षियोंकी बातचीतसे मिलती है। कथासरित्सागरमें भी इस दंगका अभिप्राय है। वहाँ शक्तिदेव नामक व्यक्तिको पक्षियोंकी बातचीतसे कनकपुरीका पता लगनेकी बात कही गयी है।^३

इसी प्रकार मिरगावतीके अन्य अभिप्रायों और रुढ़ियोंको भारतीय कथा-साहित्यमें ढूँढ़ा और पहचाना जा सकता है। गुप्तोत्तरकालमें समुद्रयात्रा कर भारतीय सार्थवाह दूरस्थ द्वीप-द्वीपान्तरोँ तक जाने लगे थे। लौट कर उनका मार्गकी कठिनाइयों, समुद्री तूफानों, तूफानसे नावोंके फट जानेकी घटनाओं, समुद्री जीवोंके आक्रमणों, वह

१. इस कथाका उल्लेख कथासरित्सागरके चौथे लम्बकमें भी है।

२. यह कथा कथासरित्सागरके चौथे लम्बकमें भी प्राप्त है।

३. पाँचवा लम्बक, विद्याधर शक्तिवेगकी कथा।

कर अज्ञात किनारों पर पहुँच जाने और दस्तुओं तथा नर-भक्षियों आदिके हाथ पड़ जानेकी घटनाओंका अतिरंजित वर्णन करना स्वाभाविक था। सार्यवाहोंकी इन सच्ची तथा मनगढन्त कहानियोंने तत्कालीन कथा-साहित्यमें स्थान प्राप्त कर लिया था। उन्होंने कथाकारोंको मौलिक कल्पनाएँ करनेकी सामग्री प्रस्तुत कर दी थी। दूसरी ओर अरब और फारसके सम्बन्धसे सहस्ररजनी (अलिफ लैला) जैसी कथाओंसे भी भारतीय परिचित होने लगे थे। अतः इन सबसे प्राप्त सूत्रोंसे कथा-साहित्यमें साहसिकता और मार्गकी दुर्गमताके वर्णन समाविष्ट हो गये थे। फलतः मिरगावतीमें जिस ढंगकी साहसिकता और मार्गकी दुर्गमताकी बात कही गयी है, उस ढंगकी कथा-रूढ़ियों खोज करने पर भारतीय कथाओंमें अनेक मिल जायेंगी।

वर्णन-विधान पर पूर्ववर्ती प्रभाव

कथा-अभिप्रायों और रूढ़ियोंके साथ-साथ मिरगावतीकी वर्णन शैली पर भी पूर्ववर्ती कथा-साहित्यका पूर्ण और स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। पूर्ववर्ती संस्कृत या अपभ्रंश साहित्यसे कुतुबनने कितना ग्रहण किया है, यह अपने-आपमें अनुसन्धानका विषय है। अतः इस सम्बन्धमें यहाँ सांगोपांग रूपसे तो कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, कुछ बातोंकी ओर इंगित किया जा सकता है। यथा—

राजकुँवरके विरह-वर्णनमें ऋतु-वर्णन और रूपमणिके विरह-वर्णनमें जिस प्रकार मास-वर्णन किया गया है, वह भारतीय साहित्यके लिए जाना पहचाना है। आरम्भसे ही ऋतु-वर्णन कवियोंका प्रिय विषय रहा है। वे उसका वर्णन प्रसंगानुसार अथवा केवल वर्णनके लिए ही करते रहे हैं। इस दृष्टिसे कालिदासका ऋतुसंहार तो प्रसिद्ध है ही। पीछे चल कर नायिकाओंके विरह वर्णनके लिए कवियोंने ऋतुओं और महीनोंको माध्यम बनाया, बारहमासे लिखे। अइहमाण (अब्दुल रहमान)ने सन्देश रासकमें विरहणीके भावोंको व्यक्त करनेके लिए ऋतु-वर्णनका सहारा लिया है। जैन साहित्यमें बारहमासेका प्रयोग तेरहवीं शताब्दीसे ही हो गया था। विनयचन्द्र सूरि कृत नेमिनाथ चतुष्पदिकामें राजमति (राजुल)के विरहकी अभिव्यक्ति बारहमासेके रूपमें किया गया है। राजमतिकी विवाह नेमिनाथ (बाइसवें तीर्थंकर) से होनेकी बात थी। इसी बीच बलि-पशुओंको देखकर नेमिनाथको वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे तपस्याके निमित्त गिरिनार पर्वत चले गये और विवाह न हो सका। राजमति (राजुल)ने विरहका अनुभव किया। उसका वर्णन कविने बारह मासेके रूपमें किया है जो श्रावणसे आरम्भ होकर आषाढ़ पर समाप्त होता है। प्रतिमास राजमति अपनी विरहावस्था व्यक्त करती है और सखियाँ उसे सांत्वना देती हैं। हिन्दी काव्योंमें बीसलदेव रासो, चन्द्रायन और मैना-सतमें भी बारहमासेका इसी रूपमें प्रयोग हुआ है।

सौन्दर्य वर्णनके लिए नख-शिल्प वर्णन भी अपभ्रंश साहित्यमें प्रचुर परिभाषामें उपलब्ध है। उनके अनुकरणपर मौलाना दाऊदने चन्द्रायनमें चाँदका रूप-सौन्दर्य वर्णन किया है। उसी ढंगपर मिरगावतीका रूप वर्णन मिरगावतीमें किया गया है।

अपभ्रंश काव्योंमें वृक्षों, फूलों, फलों और वस्तुओंके नाम गिनानेकी प्रवृत्ति काफी देखनेमें आती है। तत्कालीन कवि मौके-बेमौके वृक्षों और फूलों आदिका उल्लेख करते रहे हैं। अइहमाण (अब्दुल रहमान) ने सन्देश रासकमें इसी तरह फूलोंके नाम गिनाये हैं। चन्द्रायनमें डाऊदने गोवर नगरके वर्णनमें, भोजके उल्लेखमें, युद्धकी तैयारीमें विविध वस्तुओंकी लम्बी सूचियाँ प्रस्तुत की हैं। कुतुबनने भी उनका अनुकरण किया है किन्तु वे इस प्रकारकी सूची प्रस्तुत करनेमें संयत रहे हैं। उन्होंने एक स्थलपर कुछ घोड़ोंके नाम गिनाये हैं (कड़वक १३) और दूसरे स्थलपर फूलोंके (कड़वक २०६-२०७)।^१

नैसर्गिक वस्तुओंको विरहणियोंका सन्देशवाहक बनाकर भेजना संस्कृत काव्यका एक अत्यन्त प्रसिद्ध विषय है। कालिदासका मेघदूत इसका एक अनुपम उदाहरण है। कुतुबनने भी मिरगावतीमें पवन-दूतकी कल्पना की है जो मिरगावतीके कहनेपर दैत्य द्वारा अपहृत राजकुँवरको ढूँढ़ने जाता है और लौटकर मिरगावतीको उसका पता बताता है।

इन बहुप्रचलित काव्य विधानोंके अतिरिक्त, मिरगावतीके रचना-विधानमें ऐसे बहुतसे तत्त्व हैं जो चन्द्रायनसे अपनाये गये जान पड़ते हैं। यथा—

१—राजकुँवरके जन्मपर ज्योतिषियोंका आना और भविष्य कहना, चाँदके जन्मपर ज्योतिषियोंके आने और भविष्य कहनेके साथ समानता रखता है।

२—राजकुँवर जिस प्रकार मिरगावतीका नख-शिख वर्णन धाईसे करता है, उसी प्रकार बाजिरने चाँदका रूप-वर्णन राजासे किया है।

३—जिस प्रकार चन्द्रायनमें चाँदके घौराहरमें चित्रकारीका वर्णन है। उसी प्रकार मिरगावतीमें राजकुँवरके घौराहरके चित्रकारीका वर्णन है।

४—जिस प्रकार चन्द्रायनमें चाँद लोरकपर मुग्ध होकर अचेत होती है और बृहस्पति उसे होशमें लाती है, उसी प्रकार मिरगावतीके रूपपर मुग्ध होकर राजकुँवर अचेत होता है और धाई उसे होशमें लाती है।

५—जिस प्रकार चन्द्रायनमें नागरिक बाजिरसे उसके अचेत होनेका कारण पूछते हैं, लगभग उसी प्रकार मिरगावतीमें वनवाले भवनमें धाई और मिरगावतीके राजप्रासादमें मिरगावतीकी सहेलियाँ राजकुँवरसे उसके अचेत होनेका कारण पूछती हैं।

६—जिस ढंगसे चन्द्रायनमें चाँदके साँप ढँसनेपर लोरकको विलाप करते पाते हैं, उसी ढंगसे मिरगावतीमें राजकुँवर मिरगावतीके उड़ जानेपर विलाप करता है।

७—जिस ढंगसे चन्द्रायनमें पूजाके निमित्त जाती चाँदकी सखियोंका वर्णन किया गया है, उसी तरहका वर्णन मिरगावतीमें मिरगावतीके सखियोंका वर्णन है (कड़वक ८०)।

८—घोड़ोंकी सूची, गोरखपन्थी योगीका वेश-वर्णन चन्द्रायन और मिरगावतीमें प्रायः एक समान है।

१. धीकानेर प्रतिमें इस प्रकारके अनेक स्थल हैं पर हमने उन्हें प्रक्षिप्त माना है।

९—जिस दंगसे चन्द्रायनमें लोरकने न्याय सभा में अपना परिचय दिया था उसी दंगपर मिरगावतीमें राजकुँवर राजाके यहाँ अपना परिचय देता है ।

१०—चन्द्रायनमें युद्ध-विजयके पश्चात् लोरक हाथीपर बैठाया गया और राज-नारियाँ उसे देखने आयीं । उसी तरह मिरगावतीमें राक्षस-बधके पश्चात् राजकुँवर हाथीपर बैठाया गया और नागरिक उसे देखने आये ।

११—चन्द्रायनमें जिस तरह चाँद-बावनके विवाह और उससे सम्बद्ध ज्योनार-की चर्चा है, उसी तरहका वर्णन मिरगावतीमें राजकुँवर-रूपमणिके विवाह और ज्योनारका है ।

१२—कंचननगर पहुँचनेपर राजप्रासादमें मिरगावती राजकुँवरको पहचानते हुए भी न पहचाननेका बहाना करके अनजान दंगसे प्रश्न करती है, धमकाती है और राजकुँवर उसका जिस दंगसे उत्तर देता है वह चन्द्रायन वर्णित चाँदके घौराहरपर लोरकके पहुँचनेपर चाँदके व्यवहारके समान ही है ।

१३—मिरगावतीके अन्तःपुरमें सुगन्धियोंका वर्णन और मिरगावती-राजकुँवर तथा रूपमणि-राजकुँवरका केलि-वर्णन चन्द्रायनके चाँदके घौराहरके सुगन्धि-वर्णन और चाँद-लोरकके रति वर्णनके समान है ।

१४—जिस प्रकार चाँदके सुसरालसे वापस आनेपर उसकी सहेलियोंने उससे रति-सुखके सम्बन्धमें जिज्ञासा की थी, उसी प्रकारकी जिज्ञासा मिरगावतीमें हम मिरगावती-राजकुँवर-समागमके पश्चात् मिरगावतीकी सहेलियोंको करते पाते हैं ।

१५—चन्द्रायनके मैनाके समान ही मिरगावतीमें रूपमणि अपने पतिके वियोगमें विसुरती है और टाँडके आने पर उसके माध्यमसे सन्देश भेजती है और वारहमासेमें अपनी विरह-वेदना व्यक्त करती है ।

१६—मौलाना दाऊदने मैनाके विरहका टाँड लाद कर चलने पर, उसके शारसे मार्गके वस्तुओंके जलने और काले होनेकी जो कल्पनाकी है, उसी कल्पनाको कुतुबनने भी रूपमणिके विरहके टाँडके प्रसंगमें अपनाया है ।

१७—दोनों ही काव्योंमें विरहणियोंके सन्देश-वाहक ब्राह्मणके रूपमें उपस्थित होते हैं और दोनोंके वेशका एक-सा ही वर्णन है । दोनों ही समान दंगसे सन्देश प्रस्तुत करते हैं ।

१८—चन्द्रायनमें जिस तरह लोरकके दल-बल सहित वापस लौटने पर गोबरमें खलबली मचती है, वैसी ही खलबली मचने की बात कुतुबनने राजकुँवरके सुबुद्धया लौटने पर कही है ।

१९—जिस तरह चन्द्रायनमें लोरकके गोबर पहुँचनेके एक दिन पूर्व मैनाका मन उल्लसित हुआ और उसने रातको स्वप्न देखा और उसकी सासने उसका फल विचारा, उसी तरह हम मिरगावतीमें रूपमणिको राजकुँवरके आनेसे पूर्व उल्लसित होते और स्वप्न देखते पाते हैं और सखी स्वप्नका विचार करती है ।

२०—मिरगावतीमें रूपमणि और मिरगावतीकी कहा-सुनीका रूप बहुत कुल वैसा ही है जैसा कि चन्द्रायनमें चाँद और मैनाके बीच मन्दिरमें हुई कहा-सुनीका है ।

२१—जिस तरह चन्द्रायनमें लोरक और मैनाके बीच कहासुनी होने पर खोलिन आकर दोनोंको शान्त करती है और मैनाको समझाती है, उसी तरह मिरगावतीमें हम सासको दोनों बहुओंकी कहा-सुनीको शान्त करते और समझाते पाते हैं ।

इस प्रकार मिरगावतीकी कथा चन्द्रायनकी कथासे सर्वथा भिन्न होते हुए भी चन्द्रायनके उपादानोंसे अत्यधिक प्रभावित ज्ञात होता है । चन्द्रायनका प्रभाव मिरगावती पर यहीं तक सीमित नहीं है । अनेक स्थलों पर चन्द्रायन के भाव और कहीं कहीं तो वाक्य और शब्दावली भी मिरगावतीमें अविकल रूपमें प्राप्त होते हैं । ऐसे कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं जो अनायास दृष्टिमें आ गये हैं—

मिरगावती^१

राजा पूत मँदिर औत।। १७।१
सरवर तीर बरिस दिन रहा ।
चाह कुरंगिनि मगको गहा ॥ ४५।१
संगि न साथी मीत न आहा । ५१।१
माई मोर तुम धाई न होहू । ५२।१
सास न होहू माइ तुम्ह मोरी । ४०८।१
चगत सवन मौँझ तिल भया । ५९।१
विध सर कमल भुजंग निरमया । ५९।१
सो तिल मुखका भयउ सिंगारू । ५९।४
तिलक फूल जस उपम दीजै । ६२।२
देव सराईहिँ तैसो गोरी । ६२।३
जीभ जानु मुँह कँवल अमोला ।
फूल झरहिँ जो हँसि हँसि बोला । ६५।५
देखत रूप विमोहहिँ देवा । ६९।५
पूरी जानु गुनवार पकाये । ७२।३
काहे बरजा मोर सँघाती । १०६।१
धन सो जननि जैँ यह जाना । १४५ ४
छीपर नेत पटोर बिछाई । १५२।४
मारग नेत पटोर बिछाये । ३७६।१
सिखर ऊँच बड़ तरुवर,
औ फल लाग अकास । २२१।६

चन्द्रायन^२

सहदेव मँदिर चाँद औतरी । ३३।१
एक बरिस लोरक मढ़ि सेवा ।
चाँद सनेह मनायसि देवा । १७५।१
संगि न साथी मीत न धाई । १८२।२
माइ मोर तुम सास न होहू । २३८।१
नैन सवन बिच तिल एक परा । ८५।१
पदम पुहुप सिर बैठ भुजंगू । ८५।२
मुखक सोडाग भयउ तिल संगू । ८५।२
तिलक फूल जस फूल सुहावा । ८०।४
देव सराईहिँ तैसो गोरी । ८६।३
वानि जैसि मुख जीभ अमोला ।
फूल झरहिँ जो हँसि हँसि बोला । ८३।५
देखत रूप विमोहे देवा । ९४।७
जानु सुहारी धिरत पकाये । ८९।३
काहे देखी तैँ मोर सँघाती । ३४९।२
धन सो जननि अइस जैँ जना । १४५।४
छीपर नेत पटोर बिछाई । ४३।२
विरिख ऊँच फल लाग अकासा । ६८।२

१. प्रस्तुत संस्करण ।

२. बम्बई संस्करण ।

मिरगावती

चन्द्रायन

डंडाकारन बीछ बनाहॉ । २८३।३
दूसर समो आइ अब लागा । ३२१।५
मैं तुम्ह आगे सब दुख टेरा । ३३४।१
दन्द उदेग उचाट लदावा । ३३५।१
विरह वियोग संताप जो लीन्हा । ३३५।२
खरभर सुन सासु गंगा,

डंडाकारन बीछु बनाहॉ । १९६।२
दूसर समो आइ अब लागा । ४०१।५
मैं सब दुख तुम्ह आगे रोवा । ४१२।१
दन्द उदेग उचाट विसाहा । ४१७।२
सोंक संताप विरह दुख लीन्हा । ४१७
सुन खरभर खोलिन तस धाई ।

आई उन्ह ठाँ धाई । ४०३।६
एक एक बोल मोंति जस पिरवा,
वकता चित मन लाई । १३।७

जस भगिरथ यह लागिन आई । २४५।१
एक एक बोल मोंति जस पिरवा,
कहउ जो हीरा तोर । ३०६।७

इस प्रकारके भाव और शब्दावलीकी समानता खोज करनेपर बड़ी संख्यामें मिल सकती है। इन सबको मात्र आकस्मिक, संस्कारजन्य अथवा अविच्छिन्न विचार परम्पराका परिणाम नहीं कहा जा सकता। यह स्वीकार करना ही होगा कि कुतुबनके सामने चन्द्रायन रहा है और उससे उन्होंने बहुत कुछ ग्रहण किया है।

अन्तर्कथाएँ

कुतुबनने कथा-वस्तु और रचना विधानमें पूर्वानुकरणके साथ-साथ लोक-प्रचलित अनेक कथाओंका उपयोग अपने काव्यके सँवारनेमें किया है। इन कथाओंका उपयोग उन्होंने मुख्यतः उपमा, उत्प्रेक्षा या रूपकके रूपमें किया है और सर्वत्र उनका संकेत मात्र दिया है। उनका कथाओंका इस रूपमें प्रयोग, इस बातका द्योतक है कि ये कथाएँ लोक-जीवनमें उस समय इस प्रकार व्याप्त थीं कि उनका संकेत मात्र उनके जानने समझनेके लिए पर्याप्त था।

इन कथाओंमें कुतुबनने सबसे अधिक उल्लेख रामायणकी घटनाओंका किया है। इनसे पूर्व मौलाना दाऊदने भी चन्द्रायनमें रामायणकी घटनाओंकी चर्चा की है। इन दोनोंने रामायणकी घटनाओंको जिस प्रकार ग्रहण किया है, उससे ऐसा ज्ञात होता है कि तुलसीदास द्वारा रामचरित मानसकी रचना किये जानेसे बहुत पूर्व भारतीय लोक-जीवनमें राम-कथा व्याप्त हो चुकी थी। यही नहीं, उनके समयमें लोग राम-कथा पर आधारित रामायण नामक किसी ग्रन्थसे भी परिचित थे। चन्द्रायनके अनुसार तो लोग उसका पाठ भी किया करते थे (परवा राम रमायन कहहीं^१)। कुतुबनने भी राम रमायनका उल्लेख किया है (भारत राम रमायन चीता)।^२

१. यह पंक्ति पद्मावतमें भी है। वहाँ वासुदेवशरण अग्रवालका पाठ है—डंडक आरन वीस बनाहॉ । (१३७।५)।

२. मनेर प्रतिमें उपलब्ध पाठ। इसकी ओर हसन असकरीने अपने लेखमें ध्यान आकृष्ट किया है।

३. चन्द्रायन, बम्बई संस्करण, २९।२।

४. प्रस्तुत संस्करण, ३९।४।

मिरगावतीमें रामायणके निम्नलिखित व्यक्तियों और घटनाओंका उल्लेख है :—

- | | |
|-------------------|---|
| १. राम | आन भई जस राम कली का । ३५६।४
राघो बंस राम औतारा ॥ ३५६।५ |
| २. राम-लक्ष्मण | राम लखन जस सीता ठाऊँ । १७६।४ |
| ३. सीता | कहाँ सो तिरिया सीता सती । ४१९।२ |
| ४. हनुमान | वे हनिवन्त छुदाये कर पर । १७६।७
जस हनिवन्त सामि के काजा । २६६।५
पिय वियोग भो सकती बान, जो लागेउ मुहि र अपूर ।
को आने हनिवन्त जिउ, सजन सजीवन मूर ॥ २८१।६-७
कोर र राम मिरवइ सिय आनी । २८२।१
हनिवन्त जैस करो उपकारा । २९०।३
हनिवन्त मूर सकती कहँ आनी । ३००।५ |
| ५. दशरथ सुत-वियोग | सुत वियोग दसरथ जस कीन्हा । ११०।२ |
| ६. सीता-हरण | रावन हरी राम घर सीता । ३९।४
रावन सिय हरी जो आयी । १०२।५
सिय रावन जो लंका हरी । १७६।५ |
| ७. राम-वियोग | राम वियोग भयउ जिहि कारन । १०२।७ |
| ८. सीता-वियोग | जस र सिय कहँ दिन दस दुआपर,
राम क भयउ वियोग । २७९।६ |
| ९. वाली-वध | यहै राम जँ मारेउ बारी (वाली) । १४५।९ |
| १०. लंका-दहन | हनिवन्त सिय लगी जारस लंका । १०५।३
यहिया हनिवन्त लंक गढ़ दहा । २१८।४ |
| ११. सेतु-बन्धन | रामा सेत बाँधेउ सिय लागी । १०५।२ |
| १२. लंका में अंगद | अंगद जाँव लंका मँह रोपी । ३९।५ |
| १३. रावण-वध | को राम जँ रावण मारा, सिय लाग हन जिय । १४०
रावन मार सिय लै आवा । १४५।१
इहे राम जै रावण मारा । १४५।३ |

रामायणकी तरह ही महाभारतकी कथासे भी जनमानसका परिचय था, ऐसा कुतुबनके भारत राम रमायन चीता (३९।४) कथनसे भासित होता है। उन्होंने महाभारतके कुछ पात्रों और घटनाओंका भी उल्लेख किया है :

- | | |
|--------------|--|
| १. युधिष्ठिर | धरम दुधिस्टिल उह कहँ छाजा । ९।३
चेरी कहा दुदिस्टिल हरा ।
कबिरा दानों कर अपकारा । २७८।४ |
|--------------|--|

२. अर्जुन

अरजुन राहु देध जस कीता ।
 कौरो मार दुरपदी जीता ॥ ४०।३
 करन अरजुन भै जस खेता । ५७।४
 जस अरजुन अहिवन के मारे । ११०।३
 जो पण्डो कौरो दर जीता ।
 यहै धनुक अरजुन कर लीता ॥ २१८।१
 कित अरजुन वाना उर सन्धी । ४१९।१

३. भीम

भीम उरेह कीचक मार ।
 लिहा दुसासन भुएँ उपार ॥ ४०।१
 इहै भीम कर कीचक मारी ।
 इहै दुसासन भुजा उपारी ॥ १४५।४
 कौरा दानो पण्डो हरो ।
 उनकहँ जाइ भीउ उपकरी ॥ १७७।५

४. सहदेव

पण्डित सहदेव लिहा सयाना । ४०।४

५. द्रौपदी

कहाँ दुरपती पाँचों रती । ४१९।२

६. कर्ण

भारत जीत करन सर भेजी । ५७।३
 बलि औ करन न सरभरि पावा । ९।४

७. जनमेजय

जस र जलमदेव वरज न कीन्हा । २६९।२
 जस र जलमदेव साँप बिपारी ।
 सबै आन हुतासन जारी ॥ २८६।३

कृष्ण-कथाका प्रचार कुतुबनके समय हो चला था, ऐसा मिरगावतीसे प्रकट होता है । उसमें तीन स्थलोंपर कृष्णसे सम्बन्धी घटनाओंका उल्लेख है—

कान्ह सहित सोलह सौ गोपी । ३९।५
 इहै कन्ह जै नाथसि कारी । १४५।२
 इहै कन्ह जै कंस वितारा । १४५।३

पौराणिक कथाओंकी ओर भी कुतुबनका ध्यान गया है और उन्होंने उनका उल्लेख मिरगावतीमें किया है ।

१. सागरमंथन

कहाँ सो बल जिह सायर मथा । ४१८।५

२. नृसिंह

इहै सिंह हरनाकुस हना । १४५।५

३. वामन

जस बलि बावन बाँध अडारा । २८६।१

४. बलि

बलि औ करन न सरभरि पावा । ९।४

५. हरिचन्द्र

हरिचन्द्र परहि भुलाई । ४१९।६

६. श्रवण

जस अन्या अन्या बिनु सरवन,

फेकरि मुए चिल्लाय । ११०।६

७. परशुराम पारुधि परसुराम कलजुग मँह । ५६।६
सोइ जावस परसुराम कर, सोइ पारुधि सोइ बान । २१८।६
८. धुन्धमाल कहाँ सो धुन्धमाल कै कथा । ४१८।५

कुतुबनका ध्यान ऐसी ऐतिहासिक घटनाओंकी ओर भी गया है जो उस समय-तक कथा-साहित्यमें प्रवेश पा चुकी थीं ।

१. विक्रम-बैताल जइसे सेउ विक्रम कै, जिय सँउ किय बैताल । २६६।६
२. विक्रम-भोज जस भोज विक्रम पछिताना ।
जस भैरोनन्द हुत सयाना ॥ २६९।४
३. विक्रम जस विक्रम राउ उबारा । २७५।२
कहाँ सूर विक्रम सकबन्धी । ४१९।१
सुवा मारि राजा पछताना । २६९।३
४. भोज चौदह विद्या भोज निदाना ।
वररुचि एक अधिक यह जानौं ।
राज हार धरें कहँ दीन्हा ।
लैं र छुपायसि दइ न चीन्हा ॥ २८९।१-२
कहाँ भोज दस चारि निदाना ।
परकाया परवेस जो जाना ॥
संकर बचा सिध जो करता ।
कर पसारि जिह के सिर धरता ॥ ४१९।३-४
५. जलन्धर जस र जलन्धर कुएँ अडारा । २७५।३
६. दंगवै-भीम जस दंगवै भीम परगाही । १३३।५

कुतुबन प्रेम-काव्यकी रचना कर रहे थे । उनका ध्यान प्रेम-कथाओंकी ओर स्वाभाविक रूपसे जाना चाहिए था । पर आश्चर्यकी बात है कि उन्होंने अपने समूचे काव्यमें केवल तीन ही प्रेम-कथाओंका उल्लेख किया है—

१. नल-दमयन्ती नल जानौं भेंटी दमावती । २११।२
इंस दमावति सँउ मिरवहि । २४०।७
को नल आनि दमावति पास । २८२।२
२. भर्तृहरि-पिंगला लिहा भरथरी औ पिंगला । ४०।२
जस भरथरी भयउ पंथ जोगी, रस पिंगला वियोग । १०५।७
सुनतहि जइस रे पिंगलहि कीन्हा । २७८।३
३. माधवानल-कामकन्दला कामौं जनु माधोनल आई । २११।१
माधोनल तौ रावसि कामा । २७१।२

मिरगावतीमें उन प्रेम-कथाओंमें से एकका भी उल्लेख नहीं है, जो परवर्ती काव्योंके विषय हैं ।

भौगोलिक परिचय

कथा-साहित्यमें उपलब्ध सामग्रीको सँजोकर कुतुबनने मिरगावतीकी जो कथा उपस्थित की है, उसमें कोई तत्त्व ऐसा नहीं है जिससे किसी प्रकार भी कल्पना की जा सके कि पद्मावतकी तरह इस कथाकी कोई ऐतिहासिक अथवा अर्ध-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही होगी। किन्तु प्रायः कथाकारोंने अपनी कहानियोंमें भौगोलिक तत्त्व निरोपित करनेकी चेष्टा की है और अपने समयके प्रसिद्ध स्थानोंके साथ अपने कथाके पात्रोंका सम्बन्ध जोड़ा है। इस प्रकारकी सम्भावनाकी कल्पना मिरगावतीमें भी की जा सकती है।

इस दृष्टिसे देखनेमें ज्ञात होता है कि मिरगावतीकी घटनाएँ केवल तीन स्थानों-तक सीमित हैं—

१—राजकुँवरकी पितृभूमि—चन्द्रागिरि

२—रूपमणिकी पितृभूमि—सुबुद्ध्या

३—मिरगावतीकी पितृभूमि—कंचननगर, जिसे कंचनपुर या कनकनगर भी कहा गया है।

ये नाम तत्कालीन किन्हीं स्थानोंके हैं या काल्पनिक, कहना कठिन है। इन नामोंसे प्रसिद्ध किसी स्थानका उल्लेख, जहाँतक हमारी जानकारी है, अन्यत्र कहीं प्राप्त नहीं हैं। कुतुबनने इन नगरोंकी दूरी दिशा आदिका कोई संकेत नहीं किया है जिनसे इनकी वास्तविक या काल्पनिक स्थिति ढूँढ़ी जा सके। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि चन्द्रागिरि एक ओर था और सुबुद्ध्या तथा कंचनपुर दूसरी ओर। इनके बीच समुद्र था। वहाँतक पहुँचनेके लिए अगम वन और पर्वत भी पार करने पड़ते थे। ऐसा जान पड़ता है कि नौकानयन करनेवाले तत्कालीन साहसिक सार्थवाहोंकी कहानियोंसे प्रेरणा लेकर इन स्थानोंकी कल्पना की गयी है। कवि कल्पनामें या तो सुदूरपूर्वके वे द्वीप रहे हैं जो गुप्तोत्तर कालमें भारतीय सम्पर्कमें थे या फिर अरब आदि देश, जिनके साथ मध्य-युगमें भारतका व्यापारिक सम्बन्ध था।

मानसरोदक और कदलीवन दो अन्य भौगोलिक नाम हैं जिनका उल्लेख कुतुबनने किया है। ये नाम अन्य काव्योंमें भी पाये जाते हैं। मानसरोवर हिमालय स्थित सुप्रसिद्ध झीलका नाम है और महाभारतमें ऋषिकेशसे बद्रिकाश्रमतकके वन-प्रदेशको कदलीवन कहा गया है।^१ किन्तु इन भौगोलिक नामोंका प्रयोग इन प्रेमाख्यानक काव्योंमें वास्तविक भौगोलिक स्थानोंके रूपमें हुआ नहीं जान पड़ता। मानसरोदकका उल्लेख इन काव्योंमें सर्वत्र स्वच्छ और सुन्दर तालाबोंके लिए ही पाया जाता है। मिरगावतीमें उल्लिखित मानसरोदक चन्द्रागिरिसे केवल सात योजन दूर था। पद्मावतमें जिस मानसरोदककी चर्चा है वह सिंहल द्वीपमें स्थित था। इसी प्रकार कदलीवन भी किसी वन्य प्रदेश विशेषके लिए प्रयुक्त नहीं जान पड़ता। सम्भ-

वतः ऐसे वनोंके लिए, जिनमें सघनताके कारण प्रकाश कठिनतासे या विलकुल नहीं पहुँच पाता था, कवियोंने कदलीवन या कजरीवनका नाम दिया है। मिरगावती वर्णित कदलीवन समुद्र पार कंचनपुरके मार्गमें कहीं था।

इस काव्यमें प्रासंगिक रूपसे तीन अन्य भौगोलिक नाम आये हैं।

१. नगर बहुत देखेहु बहु गाऊँ ।

राजस्थान औ आनीं ठाऊँ ॥ ११७।३

२. राघो बंस जो आहे अयोध्या । १३५।४

३. पुरुखनाथ गुरु जाह हमारेउ, गोरखपुर सेंउ खेल । १६१।७

राघव वंशकी राजधानीके रूपमें अयोध्याकी ख्याति सर्व विदित है। नाथपंथियोंके पीठके रूपमें गोरखपुरको प्रसिद्धि है ही। अतः इन दोनोंका प्रसंगानुसार उल्लेख स्वाभाविक ही है। उनके सम्बन्धमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं।

राजस्थान शब्दका प्रयोग कुतुबनने राजधानी सदृश बड़े नगरोंके लिए किया है या उनका तात्पर्य किसी प्रदेश विशेषसे रहा है यह बहुत स्पष्ट नहीं है। दोनों ही सम्भावनाएँ अनुमान की जा सकती हैं। यदि उनका तात्पर्य किसी प्रदेश विशेष और उस प्रदेशसे था जिसे हमने स्वतन्त्रता उपरान्त राजस्थान नाम दिया है, तो यह उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्वका है। इस नामका इतना प्राचीन उल्लेख सम्भवतः अन्यत्र नहीं है।

जीवन-चित्रण

कहानी और कथाओंके आवरणमें कथाकार जो चित्र उपस्थित करता है, उसमेंसे यदि अलौकिकता और असाधारणताके तत्त्वोंको अलग और वर्णनकी अतिशयोक्तियोंकी उपेक्षा कर दी जाय तो कथाका जो स्वरूप बच रहता है, उसे बहुत कुछ रचनाकारके सम-सामयिक समाजका चित्र समझा जा सकता है; क्योंकि कथाकार अपनी कथाको अपने चारों ओरके जीवनसे ही सजाता सँवारता है। कुतुबनको राजाश्रित होनेके कारण तत्कालीन सामन्तवादी जीवनको अत्यन्त निकटसे देखने-सुननेका अवसर मिला होगा और उन्होंने उन्हींको अपनी कथाका उपादान बनाया होगा। इस दृष्टिसे मिरगावतीको देखा जाय तो उसमें आरम्भिक सोलहवीं शतीके सामन्तवादी जीवनकी झलक देखनेको मिलती है।

पुत्राकांक्षा भारतीय जीवनमें अति प्राचीन कालसे रहा है। भारतीय समाजमें मोक्ष प्राप्तिके लिए सन्तानका होना आवश्यक समझा जाता था। इस कारण राजा-रंक सभी सन्तानके लिए लालायित रहते थे। कोई भी निःसन्तान नहीं रहना चाहता था और वह पुत्र प्राप्तिके लिए नाना प्रकारके उपाय करता था। प्रस्तुत कथामें पुत्र-प्राप्तिके निमित्त उदारतापूर्वक दान दिये जानेकी चर्चा है। इससे ऐसा अनुमान सहज है कि उन दिनों दानका महत्व अत्यधिक माना जाता था।

बच्चोंके जन्मपर ज्योतिषी आवश्यक रूपसे बुलाये जाते थे, यह भी इस कथासे प्रकट होता है। वे राशि-नक्षत्र आदिकी गणना कर नवजात शिशुका भविष्य कथन करते और नक्षत्र-राशिके आधारपर ही शिशुका नामकरण किया करते थे। सम्भवतः यह सब शिशुके जन्मके तत्काल बाद होता था।

बच्चोंके लालन-पालनके लिए धाईका रखना आज भी उच्चवर्गीय समाजमें आवश्यक समझा जाता है। तत्कालीन सामन्तवादी युगमें तो यह और भी अनिवार्य रहा होगा। अतः कुतुबनने धाईकी चर्चा स्वाभाविक रूपसे ही राजकुँवरके लालन-पालनके निमित्त किया है। बच्चेका एक वर्षमें बोलना नैसर्गिक है। पाँच वर्षकी आयुमें शिक्षारम्भ इस देशकी अति प्राचीन परिपाटी है। प्राचीन कालमें पच्चीस वर्षकी अवस्थातक ब्रह्मचर्य काल माना जाता था और वह शिक्षाका काल होता था। किन्तु कुतुबनने केवल दस वर्ष अर्थात् पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें ही शिक्षा समाप्त हो जानेकी बात कही है। सम्भवतः इस कालमें शिक्षाके लिए दस वर्षकी अवधि पर्याप्त समझी जाने लगी थी।

मिरगावतीके अनुसार सामन्तवादी जीवनमें राजकुमारोंके लिए धनुर्विद्या (युद्ध-शास्त्र)के अतिरिक्त काव्य, काव्यशास्त्र, संगीत, शालहोत्र, ज्योतिष, धर्म-ग्रन्थ और काम-विज्ञानका अध्ययन आवश्यक था। आखेट, हँगुरि और जुआ तत्कालीन उच्चवर्गके आमोदके साधन थे।

सम्भवतः तत्कालीन समाजमें युवक-युवतियोंका स्वच्छन्द मिलन बुरा नहीं माना जाता था। कदाचित् अविवाहितोंके बीच आलिंगन-चुम्बनकी भी छूट थी। हम रूपमणिको निःसंकोच राजकुँवरको अपने सेजपर बैठनेके लिए आमन्त्रित करते पाते हैं। मिरगावती भी सुरतिके अतिरिक्त सब कुछ करनेकी छूट राजकुँवरको देती है (भउर भाउ सब मानहु मोसों, एक भाउ न होइ। ९१६)। फिर भी विवाहका उत्तरदायित्व पितापर था। इसके निमित्त कन्याके पिता अपनेसे उत्तम कुलकी बात सोचते थे और वरके गुण शिक्षा आदिके सम्बन्धमें उहापोह किया करते थे।

उन दिनों विवाहसे पूर्व सार्वजनिक भोज देनेकी प्रथा थी, ऐसा जान पड़ता है। भोजके पश्चात् ब्राह्मण मण्डपमें आते थे और कुल-रीति आरम्भ होता था। वर मुकुट पहनकर बैठता था और कन्या उसके गलेमें जयमाला पहनाती थी। पश्चात् ब्राह्मण लोग जन्मपत्री देखकर भविष्य विचार करते थे; फिर विवाह होता था। वर-वधू गाँठ जोड़कर भाँवर देते थे। तदनन्तर कुलके अन्य रीति-आचार होते थे। विवाह आदि हर्षके अवसरोंपर नेग देने और धन लुटाने (न्योछवर करने) की प्रथा काफी प्रचलित थी। कन्या पक्ष द्वारा विवाहमें दहेज देनेका भी प्रचलन उस समय था और लोग उत्साहपूर्वक दहेज दिया करते थे।

पारिवारिक जीवनमें एकसे अधिक पत्नी रखना बुरा नहीं माना जाता था। किन्तु सौतेल्लोंके बीच परस्पर कलह होता रहता था। पति और परिवारके लोग कलह शान्त रखनेकी चेष्टा करते रहते थे।

पतिकी मृत्युके पश्चात् पत्नियोंके चितापर जलकर सती हो जानेकी प्रथा प्रचलित थी। यह प्रथा इस देशमें गुप्त कालसे ही देखनेमें आती है। किन्तु इस सम्बन्धमें कुतुबनने अत्यन्त आश्चर्यजनक बात यह कही है कि राजकुँवरके साथ, उसकी पत्नियोंके अतिरिक्त उसके निजी सेवक-सेविकाएँ तथा कुछ अन्य नागरिक भी जल मरे। सेवक-सेविकाओं और प्रजाके इस प्रकार स्वामीके शवके साथ जल मरनेकी प्रथा इस देशमें अन्यत्र अज्ञात है। इसकी चर्चा कुतुबनने किस आधारपर किया है, यह इतिहास और समाजशास्त्र की दृष्टिसे शोधकी अपेक्षा रखता है।

सामाजिक और नागरिक जीवनके चित्रणमें सामान्य जनताका चित्र अत्यल्प है। जोगी, यती आदिकी चर्चा और उनकी वेश-भूषाका उल्लेखमात्र किया गया है। गोरखपन्थका सम्भवतः उन दिनों अधिक प्रचार था। शाही शान-शौकतका यत्र-तत्र चित्रण हुआ है। छत्रपति राजा, राजा-रावोंका संघटन, युद्धकी तैयारी, जंगलमें शिकार, हाथियोंका जलस, राज-सभामें नृत्य-संगीत, अल्प समयमें प्रासादका निर्माण, दूतों द्वारा सन्देश प्रेषण आदि सामन्ती जीवनकी रूपरेखा उपस्थित करते हैं।

नियतिवाद और ईश्वरमें अटूट विश्वास इस देशमें अनन्त कालसे चला आ रहा है। कुतुबनने भी सर्वत्र ईश्वरेच्छाको सर्वोपरि बताते हुए मनुष्यको उसके सहारेपर चलने-वाला चित्रित किया है। उन्होंने विश्वास प्रकट किया है कि काल बलवान है। उससे कोई बच नहीं सकता। ईश्वरके प्रति उन्होंने अटूट श्रद्धा प्रकट की है और अपने पात्रोंको लक्ष्य-पूर्तिके लिए उसकी शरणमें जाते दिखाया है! फल प्राप्तिके पश्चात् उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

इस प्रकार मध्यकालीन सांस्कृति और जीवनके अध्ययनके लिए मिरगावतीमें प्रचुर सामग्री है।

रचनाका उद्देश्य

मिरगावतीकी रचनाके पीछे कुतुबनका क्या उद्देश्य था, यह उन्होंने कहीं स्पष्ट नहीं कहा है। इस सम्बन्धमें शिवगोपाल मिश्रने निम्नलिखित पंक्तियोंकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है—

मैं रस बात कही रस तोसों, जो रस क्रीजइ बात ।

सो रस रहे दुहूँ जग ताकर, जो रस सौँ रँगरात ॥ ८९।६-७

और कहा कि उपर्युक्त पंक्तियोंसे यह ध्वनित होता है कि कुतुबनका उद्देश्य रसवात या प्रेमकी कथा कहना मात्र था। किन्तु जिस स्थलसे यह उद्धृत किया गया है, वह प्रेम-रससे सम्बन्ध अवश्य रखता है पर ऐसा स्थल नहीं है जो कुतुबनका प्रयोजन व्यक्त करता हो। कुतुबनसे अपेक्षा थी कि वह अपना उद्देश्य या तो आरम्भमें कहेंगे या फिर अन्तमें। आरम्भमें उन्होंने केवल इतना ही कहा है—

एक बात अब कहूँ रसाल ।
 रतन मोंति आनउँ भर थाल ॥ १५१
 पदत सुहावन दे जै कानू ।
 यहि कै सुनत न भावइ आनू ॥ १३।५

अन्तमें कहा है—

बहुत अरथ हहिँ इहँ महुँ, जो सुधि से काहू वृत्त ।
 कहेउ जहाँ लग पारेउ, जो कछु बहै हियँ मैं सूझ ॥ ४३१।६-७

इससे इतना ही जान पड़ता है कि उन्होंने अपने काव्यमें रसभरी बात कही है जो पढ़ने-सुननेमें भली है। इस काव्यमें बहुतसे अर्थ भरे हैं। उनका समझना-वृक्षना उन्होंने पाठकोंपर छोड़ दिया है। उनके कहनेसे इतना अवश्य जान पड़ता है कि उन्होंने अपनी कथाके माध्यमसे कुछ रहस्य भरी बातें कही हैं।

यह रहस्य भरी और गूढ़ बातें क्या हैं, इसका हमें अनुमान करना होगा। सामान्य दंगसे पढ़नेपर मिरगावती प्रेम कहानीसे अधिक कुछ नहीं है। किन्तु कुतुबनका सम्बन्ध सूफी सम्प्रदायके साधकोंसे था। सूफी साधक प्रेमके माध्यमसे परमात्माका नैकट्य प्राप्त करते हैं। उनका प्रेम निराकार ईश्वरके प्रति होता है, इस कारण उनके लिए उनका वर्णन प्रतीक द्वारा ही सम्भव हो पाता है। वे अपने इस प्रेमका वर्णन लौकिक प्रेम-प्रदर्शनके प्रतीकों द्वारा किया करते हैं। वे अपने इस आदर्श प्रेमके वर्णनमें ईश्वरको नारी रूपमें स्वीकार करते हैं और लौकिक प्रेमके वर्णनमें वे अलौकिक प्रेमकी झलक देखते हैं। सम्भवतः कुतुबनने अपने उपर्युक्त शब्दोंमें इसी दिशाकी ओर इंगित किया है और यह कहना चाहा है कि उन्होंने अपने इस प्रेमाख्यानके रूपमें सूफियोंकी प्रेममूलक साधनाका स्वरूप उपस्थित किया है। दूसरे शब्दोंमें लौकिक प्रेमके आवरणमें उन्होंने अलौकिक प्रेमको व्यक्त करनेकी चेष्टा की है।

इस दृष्टिसे मिरगावतीको देखा जा सकता है। मिरगावतीको ब्रह्मका, राजकुँवरको भक्तात्माका और दूतको गुरुका प्रतीक कहकर सूफी प्रेम-साधनाकी व्याख्या की जा सकती है। किन्तु राजकुँवरका द्विपत्नीत्व इस कल्पनाको खण्डित कर देता है।

कंचनपुर पहुँचनेके बाद मिरगावतीके निकट पहुँचनेके मार्गमें राजकुँवरको सात प्रतोलियोंको पार करनेकी बात कुतुबनने कही है—

सातों पैवरि नाँधि जो आवा ।
 बेगर बेगर सातउ भावा । २१५।३

रामपूजन तिवारीने इस पंक्तिमें सूफी-मार्गके सात मंजिलों (लब्धुदियत, इस्क, शुहूद, मारिफत, वजद, हकीकत और वस्ल) को देखनेकी चेष्टा की है।^१ पर हमें इसमें वैसा कुछ नहीं जान पड़ता।

१. हिन्दी लुफी काव्यकी भूमिका पृ० १७२।

जो भी हो। कुतुबनने मानवकी शृंगार और वियोगकी अनुभूतियोंका सहज और स्वाभाविक चित्रण किया है। उसीमें कविकी सफलता निहित है। कदाचित् उनका अभिप्राय भी यही था—

जोग सिंगार वीर रस अहा । ४३११२

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव

कुतुबनकी मिरगावतीका परवर्ती साहित्यपर क्या और किस प्रकार प्रभाव पड़ा, कहना कठिन है। परवर्ती मुसलमान कवियोंमें मंझनने अपनी मधुमालतीमें मिरगावतीके पाँच यमक और एक घत्तावाला कड़वक अपनाया है। किन्तु यह मिरगावतीका अपना निजस्व नहीं है। वह इसे चन्द्रायनसे प्राप्त हुआ है। परवर्ती काव्योंके आरम्भमें ईश्वर, पैगम्बर, चार यार, गुरु, शाहेवक्त आदिकी जो प्रशंसा की परिपाटी पायी जाती है, वह भी मिरगावतीमें चन्द्रायनसे ही आया था। इसी प्रकार नायक अथवा नायिकाके जन्मके पश्चात् ज्योतिषियोंका आना, भविष्य बताना, नायकोंका नायिकाके विरहमें योगी वेश धारण करना, उनके मार्गमें कठिनाइयोंका आना आदि भी ऐसी घटनाएँ हैं जो चन्द्रायनमें उपलब्ध हैं, वहाँसे मिरगावतीमें आयी हैं। नख-शिख वर्णन और विरह-विदग्ध बारहमासा भी चन्द्रायनमें प्राप्त है। इन्हें परवर्ती कवियोंने मिरगावतीसे ग्रहण किया होगा, ऐसा मानना क्लिष्ट कल्पना होगी। जायसीने पद्मावतको रचनाका आरम्भ मिरगावतीकी रचनाके केवल १८ वर्ष पश्चात् (१२७ हिजरीमें) किया था; मंझनको मधुमालतीकी रचना भी मिरगावतीसे केवल ४४ वर्ष पश्चात् (१५२ हिजरीमें) हुई थी। इस अल्प अवधिमें मिरगावती इतनी ख्याति प्राप्त कर सकी होगी कि लोग उसे अपना आदर्श बनायें, मानना तनिक कठिन है। किन्तु इनकी कहानियोंका जो स्वरूप है वह चन्द्रायनकी कहानीकी अपेक्षा मिरगावतीके अधिक निकट है, यह स्वीकार करना होगा।

जहाँतक मिरगावतीकी कथाका सम्बन्ध है, उससे मिलती-जुलती कथासे युक्त कुछ परवर्ती काव्य देखनेमें आते हैं। संवत् १७२३ (१६५५ ई०)में मेघराज कविने ओड़छा नरेश सुजान सिंहके आदेशसे मिरगावती कथा नामक काव्यकी रचना की थी। इस रचनामें मेघराजने कुतुबनके मिरगावतीका आश्रय लिया है ऐसा स्पष्ट झलकता है। दोनोंकी घटनाओंमें अत्यधिक साम्य है। इस काव्यकी कथा इस प्रकार है—

कर्णाटक देशके राजाका पुत्र जब वयस्क हुआ तो राजाने अपने मन्त्रीसे कहा कि राजकुमार पूर्व दिशाके अतिरिक्त किसी भी दिशामें आखेट खेलने जा सकता है। जब राजकुमारको यह बात शत हुई तो उसने पूर्व दिशामें जानेसे वर्जित किये जानेका रहस्य जाननेका निश्चय किया और लोगोंके मना करनेपर भी वह पूर्व दिशाकी ओर चल पड़ा। कुछ दूर जानेपर एक सुवर्ण मृगी दिखाई पड़ी। उसे राजकुमार और उसके

साथियोंने पकड़नेकी चेष्टा की तो वह पासके एक सरोवरमें कूद कर अन्तर्धान हो गयी । बहुत हूँदनेपर भी जब वह न मिली तो राजकुमारने निश्चय किया कि या तो वह उस मृगीको प्राप्त करेगा या फिर वह न मिलनेपर प्राण त्याग देगा । इस निश्चयके साथ वह वहीं रह गया । उसके साथी उसको इस निश्चयसे न डिगा सके, निदान हारकर लौट आये ।

राजाको जब इसकी सूचना मिली तो पण्डितको बुलाकर इसका रहस्य पूछा । पण्डितने बताया कि यह मृगी इन्द्रसभाकी अप्सरा है । एक समय वह उक्त सरोवरमें स्नान करने आयी थी । वहाँ वह मृगीकी क्रीड़ा देखनेमें इतनी मग्न हो गयी कि उसे समयसे इन्द्रसभामें पहुँचनेका ध्यान ही न रहा । देरसे पहुँचनेके कारण इन्द्रने उसे मृगी हो जानेका शाप दे दिया जिसे वह मृगी हो गयी । अब वह प्रत्येक एकादशीको नारी रूप धारणकर उस सरोवरमें स्नान करने आती है । यदि उस समय उसके वस्त्र चुरा लिये जायँ तो वह वशमें आ सकती है ।

यह सुनकर राजाने उसी सरोवरके किनारे राजकुमारके लिए एक महल बनवा दिया । राजकुमार वहीं रहने लगा और एक दिन पिताकी बतायी हुई विधिसे उसने उस अप्सराको प्राप्त भी कर लिया । उसे लेकर वह कर्णाटक लौटा । राज्य भरमें आनन्द मनाया गया ।

उसी समय एक शिकारीने आकर सूचना दी कि जिस सरोवरके किनारे राजकुमार रहता था, वहाँ एक विशाल वराह सो रहा है । यह सूचना पाते ही राजकुमार अप्सराको रसोई बनानेवाली ब्राह्मणीकी देख-रेखमें छोड़कर आखेटके लिए चल पड़ा । जब ब्राह्मणी रसोईमें व्यस्त थी, मृगावतीने अपना वस्त्र हूँद निकाला और पहनकर लुप्त हो गयी । उसके लुप्त हो जानेपर ब्राह्मणी बिलखने लगी । लौटकर राजकुमारने जब उसे बिलखते देखा तो समझ गया कि मिरगावती गायब हो गयी । तत्काल वह राजकुमार योगी बनकर मृगावतीको खोज में निकल पड़ा ।

मार्गमें उसे एक युवती मिली । वह नाना प्रकारके व्यंजन लेकर राक्षसके आनेकी प्रतीक्षा कर रही थी । वह स्वयं भी राक्षसकी भक्ष होने वाली थी । योगी राजकुमारने उस राक्षसका वधकर युवतीको मृत्युके मुखसे बचा लिया । कृतज्ञतायापन स्वरूप उस युवतीके पिताने उस युवतीके साथ राजकुमारका विवाह कर दिया । कुछ दिनोंतक वहाँ रहकर राजकुमार कंचनपुरकी ओर चल पड़ा । रास्तेमें समुद्र मिला जिसे उसने एक सेमलके वृक्षके सहारे पार किया । कंचनपुरके निकट उसका एक दैत्यसे सामना हुआ । उसने पहले तो योगी राजकुमारका स्वागत किया फिर उसे ले जाकर एक गुफामें बन्द कर दिया । युक्तिपूर्वक राजकुमारने दैत्यकी आँखोंमें लोहेकी गरम सलाख घुसेड़ दी जिससे वह अन्धा हो गया । उसे अन्धाकर वह निकल भागा और कंचनपुर पहुँचा । वहाँ उसे एक दासीने देखा और मृगावतीको सूचना दी । मृगावतीने उस योगीको बुलवाया और उसके साथ विवाह कर लिया । दोनों मुखपूर्वक रहने लगे ।

एक दिन राजकुमारने उस कोठरीको खोल दिया जिसे मृगावतीने खोलनेसे मना किया था। उसमें बन्द दैत्य निकल पड़ा और राजकुमारके प्राण संकटमें पड़ गये। किसी-किसी प्रकार उसकी जान बची। तदनन्तर वह मृगावतीको लेकर अपने देशको चल पड़ा। मार्गमें अपनी दूसरी पत्नीको लिया। पुत्र और बधुओंको देख कर माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए।

सतरहवीं शतीके अन्तिम चरणमें द्विज पशुपति नामक बंगला कविने भी मिरगावतीकी कथाको किञ्चित् परिवर्तनके साथ चन्द्रावली नामसे प्रस्तुत किया है। इसकी कथा इस प्रकार है—

रत्नपुरके राजा चन्द्रसेनके पाँच कन्याएँ थीं जो इन्द्रकी सभामें नृत्य किया करती थीं। उनमें सबसे छोटीका नाम चन्द्रावली था। वह इन्द्रसे प्रेम करने लगी। फल स्वरूप इन्द्रने उसे शाप दे दिया कि वह बारह वर्षतक हिरणी बनकर रहे। तदनन्तर बनके बीच काम सरोवरमें डूबनेसे उसकी मुक्ति होगी।

पश्चिममें स्थित कनकापुरके राजा सत्यकेतुकी पत्नी सुलक्षणीसे विश्वकेतु नामक पुत्र हुआ। उसने सभी विद्याएँ सीखकर बयालीस सुरों वाला गीत सीखा। एक दिन आखेटके लिए बनमें गया तो उसे एक हिरणी दिखाई दी। उसने उसका पीछा किया। वह भागती-भागती काम सरोवरमें जाकर डूब गयी और अपने पूर्व रूपको प्राप्त हो गयी। पश्चात् राजकुमारको अपना परिचय देकर अन्तर्धान हो गयी। राजकुमार उसके लिए उसी सरोवरके किनारे बैठा रहा और किसी प्रकार भी घर आनेको तैयार नहीं हुआ। तब राजाने उसके निवासके लिए वहाँ महल बनवा दिया और सुमति नामक धाईको नियुक्त कर दिया। सुमतिकी देख-रेखमें राजकुमार वहाँ रहने लगा।

चन्द्रावली अप्सरा रूपमें एकादशीके दिन काम सरोवरमें स्नानार्थ आयी तो विश्वकेतुने उसके कपड़े चुरा लिये। फलतः वह उसके हाथ आ गयी और वह उसे लेकर राजधानी लौट आया और उससे विवाह कर लिया। किन्तु एक दिन चन्द्रावलीने अपने कपड़े प्राप्त कर लिये और उड़ गयी। जाते समय वह सुमतिसे कहती गयी कि यदि राजकुमार मुझे प्राप्त करना चाहे तो रत्नपुर आये। तदनुसार विश्वकेतु कालिकाकी पूजा कर योगी बनकर निकल पड़ा। मार्गमें उसे एक वृक्षके नीचे एक व्यक्ति मिला जिसके अनुरोधपर उसने कपूरनगरके वसुदत्तसे युद्ध किया और उसे मार डाला। कुछ दिनों वहाँ रहकर वह आगे बढ़ा।

एक वनमें राजकुमारकी भेंट चित्रमाला नामक युवतीसे हुई जिसे एक राक्षसने बन्दी कर रखा था। राजकुमारने समस्यापूर्ति द्वारा राक्षसको पराजित किया फिर उसे अन्धा बनाकर मार डाला। इससे प्रसन्न होकर युवतीके पिता उदयचन्द्रने उस युवतीका विवाह राजकुमारसे कर दिया।

आगे बढ़नेपर उसकी भेंट एक गड़रियेसे हुई जो अपनेको मेघाम्बर कहा करता था। उसने अनेक राजकुमारोंको बन्दी कर रखा था। विश्वकेतुने उसका आतिथ्य स्वीकार किया फिर उसे भ्रन्धा बनाकर आगे चला और कंचननगर पहुँचा। वहाँ रुद्रभर्ता नामक योगीसे उसने दीक्षा ली फिर अनेक कष्टोंपर विजय प्राप्त करता हुआ मणि प्राप्त कर चन्द्रावलीके पास पहुँचा। दासियोंने उसके आनेकी सूचना दी। उसने पहले उसकी परीक्षा ली फिर उसका स्वागत किया कुछ दिनों पश्चात् वह चन्द्रावली और रूपमालाको लेकर अपने देश लौट आया।

असमी कवि द्विजरामने भी कामरूपकी बोलीमें इस कथाकी रचना सृगावती चरित नामसे की है।^१ उसकी कथा भी कुतुबनकी मिरगावतीसे मिलती-जुलती है।

सृगावती नामसे एक अन्य रचना बंगलामें प्राप्त है, जिसकी रचना उन्नीसवीं शतीके मध्यमें मुहम्मद खातिर नामक कविने की है। नाम साम्यके कारण लोगोंका अनुमान है कि इसकी कथा भी कुतुबनके मिरगावतीके अनुसरणपर लिखी गयी होगी। किन्तु यह कथा हमें उपलब्ध नहीं हो सकी। अतः नहीं कहा जा सकता कि इसकी कथा भी वही है अथवा उससे सर्वथा भिन्न है।

१. हेमचन्द्र गोस्वामी, असमीय पुथीर विवरण, १९३० ई०, पृ० १५२-१५३।

सामग्रियों और सम्पादन

उपलब्ध प्रतियाँ

मिरगावतीकी अवतक निम्नलिखित छः प्रतियाँ प्रकाशमें आयी हैं और ये सभी किसी-न-किसी रूपमें खण्डित हैं :—

दिल्ली प्रति—यह प्रति फारसी लिपिकी नस्तालीक शैलीमें देशी कागजपर लिखी हुई है। इसमें ९० पत्र थे जिसमेंसे आरम्भका एक पत्र अनुपलब्ध है। इस प्रकार ज्ञात प्रतियोंमें यह सबसे कम खण्डित है। इसके प्रत्येक पृष्ठपर १६ से १९ पंक्तियाँ हैं। इस प्रतिमें ४३० कड़वक रहे होंगे जिनमेंसे ४२६ उपलब्ध हैं। इस प्रतिके हाशियेपर यत्र-तत्र मूल लिखावटसे भिन्न लिखावटमें पाठान्तर अंकित हैं। कहीं शब्द मात्र हैं, कहीं पंक्तियाँ हैं और एक-आध स्थल पर पूरे कड़वक भी हैं। अनुमान होता है कि प्रति तैयार होनेके बाद किसी समय किसी व्यक्तिने किसी अन्य प्रतिसे इसका पाठ मिलाया है और जो अन्तर उसकी दृष्टिमें आये, उन्हें उसने अंकित कर दिया। इस प्रकार यह प्रति दो प्रतियोंका पाठ प्रस्तुत करती है। हाशियेवाले पाठ इस संस्करणमें जहाँ भी ग्रहण किये गये हैं, वहाँ उनका उल्लेख दिल्ली माजिनेके रूपमें किया गया है।

इस प्रतिमें आरम्भिक पत्र न होनेसे सिरनामा अज्ञात है। अन्तमें भी लिपिकारने कोई पुष्पिका नहीं दी है। इससे ग्रन्थका नाम, लिपिकाल, लिपिक आदिका कुछ भी परिचय नहीं मिलता। हाँ, अन्तिम पत्रके पीठवाले पृष्ठपर यह महत्वपूर्ण सूचना फारसी लिपिमें अंकित है कि 'यह प्रति अकबराबाद (आगरा) निवासी मोमिन सहाफ (जिल्दबन्द)से आठ आनेमें क्रय की गयी। क्रय अधिकारसे इसके स्वाभी सन् ११२१ हिजरी (१७०९-१० ई०)में काजी मुहम्मद आरिफके पुत्र अजी-दुल्लाह हैं।' इसी आशयकी पंक्ति उपलब्ध आरम्भके पृष्ठके ऊपरी कोनेपर भी लिखी हुई है किन्तु उसका कुछ अंश खण्डित है।^१ इन वाक्योंसे इतना तो निश्चित रूपसे

१. मूल लेख है—खरीदः शुद ब हशत आनः अज मोमिन सहाफ अकबराबादी मालिकः वा लबीज अजीजुद्दीन बिन काजी मुहम्मद आरिफ दर सनः ११२१ हिजरी। इसमें जो तिथि दी है उसके अन्तिम दो अंकोंके कुछ अंश नष्ट हो गये हैं। सैयद हसन अरकरीने उसे १११९ पढ़ा है (जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ४१, पृ० ४५३) किन्तु अन्यत्र यह तिथि स्पष्ट ११२१ है।
२. उपलब्ध अंश है—.....कितान वक खरीदः शुद अज मोमिन सहाफ अकबराबादी..... दर सनः ११२१।

ज्ञात हो ही जाता है कि यह प्रति अठारहवीं शताब्दीके प्रथम दशकसे बहुत पहले की है। लेखन शैलीके आधारपर सैयद हसन असकरीका अनुमान है कि यह प्रति सोलहवीं शतीके प्रारम्भमें तैयार की गयी होगी।^१ यदि उनका यह अनुमान ठीक है तो यह प्रति काव्य रचनाके दस-बीस वर्षके भीतर ही तैयारकी गयी होगी। इतनी प्राचीनता न स्वीकार करते हुए भी कागजकी बदरंग स्थिति और लिपि दोनोंको दृष्टिमें रखकर हमारी धारणा है कि यह प्रति सोलहवीं शतीके अन्त अथवा सतरवीं शतीके प्रारम्भकी है।

यह प्रति भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ जिआउद्दीन अहमद देसाईके पास है। उन्हें यह प्रति १९५४ ई० में दिल्लीके किताबघर नामक पुस्तक संस्थानके रहमत कुतुबीसे प्राप्त हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि उनके पास आनेसे पहले यह प्रति दिल्लीके सुप्रसिद्ध राजनीतिक नेता हकीम अजमल खाँके निजी पुस्तकालयमें थी। इस प्रतिको प्रकाशमें लानेका श्रेय पटना कालेजके इतिहासके भूतपूर्व प्राध्यापक (अब काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थानके निदेशक) सैयद हसन असकरीको है। उन्होंने इसके आधारपर एक लेख जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटीमें प्रकाशित किया है।^२

मनेरशरीफ प्रति—यह प्रति फारसी लिपिकी नस्तालीक शैलीकी ओर झुकती हुई नस्ख शैलीमें लिखी हुई है। लिपि शैलीसे अनुमान होता है कि यह प्रति सोलहवीं शतीमें किसी समय तैयार की गयी होगी। इस प्रतिके कुल ३२ पत्र (६४ पृष्ठ) उपलब्ध हैं। यह मूलतः मौलाना दाऊद कृत चन्द्रायनकी प्रति है। उसके प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर मिरगावतीके कड़वक लिखे गये हैं। ये कड़वक भी उसी हस्तलिपिमें हैं जिसमें चन्द्रायनकी प्रति तैयार की गयी है। उपलब्ध पृष्ठोंमेंसे एक पृष्ठका हाशिया रिक्त है जिसके कारण इसमें केवल ६३ कड़वक प्राप्त हैं। उपलब्ध पत्रोंमेंसे कुछके बायें हाशियेके ऊपर पत्र संख्या अंकित हैं। ये पत्र संख्या १४८, १४९, १५२-१५७, १५९-१६१ हैं; शेषपर कोई संख्या नहीं है। इन रिक्त पत्रों पर असकरीने अपने अनुमानके आधारपर कहीं अँगरेजी और कहीं फारसी अंकोंमें पत्र संख्या अंकित कर दिये हैं; किन्तु उनके अनुमानित ये पत्रांक भ्रामक हैं। अन्य सूत्रोंके साक्ष्यसे ज्ञात होता है कि उपलब्ध पत्रोंकी वास्तविक संख्या १४४-१४९, १५२-१५७, १५९-१६४, १६८-१७४, १७६-१८१ है।

यह प्रति मनेरशरीफ (जिला पटना)के खानकाहके सजादनशीन शाह इनायतउल्लाहके संग्रहमें है। उनके भाई मौलवी मुरादुल्लाहकी कृपासे वह सैयद हसन असकरीको प्राप्त हुई थी और उसके आधार पर उन्होंने चन्द्रायन और मिरगावतीके सम्बन्धमें एक लेख प्रकाशित किया था।^३

१. जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ४१, पृ० ४५४।

२. वही, पृ० ४५२-४८७।

३. करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १६-२३।

एकडला प्रति—यह प्रति सचित्र ओर कैथी लिपिमें लिखी हुई है। इसके प्रत्येक पत्र पर एक ओर मिरगावतीका एक कड़वक अर्थात् सात पंक्तियाँ हैं; दूसरी ओर उसी कड़वकके आधार पर अपभ्रंश शैलीमें अंकित चित्र है। इन चित्रोंकी शैलीके आधारपर अनुमान किया जाता है कि यह प्रति सतरहवीं शतीके आरम्भमें किसी समय तैयार की गयी होगी। किन्तु इस प्रतिका जो पाठ आज उपलब्ध है, वह इतना प्राचीन नहीं है। वह उन्नीसवीं शताब्दीके पूर्वार्द्धका है। एकडला (जिला फतहपुर, उत्तर-प्रदेश)के मनसबदार हनुमानदीनने, जिनके वंशधरोंसे यह प्रति प्राप्त हुई है, संवत् १८९० (१८२८ ई०)के आस पास अपने संग्रहके हस्तलिखित ग्रन्थोंका पुनर्निरीक्षण कराया था। उस समयतक कदाचित् यह प्रति जीर्ण हो चुकी थी। अतः चित्रोंकी रक्षाके निमित्त उन्हें उस समय मोटे खुरदुरे कागजपर चिपका दिया गया। फलस्वरूप उसपर लिखा पाठ छिप गया। तो उन्होंने इस नयी पीठपर नये सिरेसे मिरगावतीका पाठ अंकित कराया। पूर्ववर्ती पाठके सम्बन्धमें इस कारण अधिक जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकती। उत्तरवर्ती प्रति पूर्ववर्ती प्रतिसे ही तैयार की गयी है या किसी अन्य प्रतिसे इसके जाननेका भी कोई साधन नहीं है। उत्तरवर्ती प्रति दो व्यक्तियों द्वारा तैयार की गयी जान पड़ती है। ये लिपिक सम्भवतः अधिक पढ़े लिखे और सतर्क नहीं थे। इस कारण इस प्रतिमें पाठ-दोष तो अधिक हैं ही, अनेक स्थलोंपर पंक्तियाँ रिक्त हैं, जो इस बातकी द्योतक हैं कि वे या तो अपने आदर्श प्रतिको पढ़ न सके या फिर आदर्श प्रति ही उसी रूपमें खण्डित अथवा भ्रष्ट थी।

यह प्रति १९५४ ई०के अगस्तमें प्रयाग विश्वविद्यालयके प्राध्यापक शिवगोपाल मिश्रको मूल स्वामीके वंशधर ओमप्रकाश सिंह और राजेन्द्रपाल सिंहसे प्राप्त हुई थी और अब यह काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवनमें है। मूल रूपमें इस प्रतिके २५३ पत्र शिवगोपाल मिश्रको मिले थे। भारत कला भवनमें केवल २५० पत्र हैं।^१ कहा जाता है कि शिवगोपाल मिश्रने शेष तीन पत्र अपने किसी कलाप्रेमी मित्रको दे दिये। भारत कला भवनमें उपलब्ध पत्रोंमें तीनमें केवल चित्र हैं और उनके पृष्ठ भाग रिक्त हैं।^२ शेषमेंसे एकपर केवल एक अस्पष्ट पंक्ति अंकित है।^३ इसके अतिरिक्त एक ही कड़वक (कड़वक १८७) दो पत्रोंपर अंकित है।^४ इस प्रकार भारत कला भवनमें उपलब्ध पत्रोंसे इस प्रतिके २४५ कड़वक शात होते हैं। अनुपलब्ध तीनों पृष्ठ सम्भवतः लेखांकित थे। इस प्रकार इस प्रतिसे उपलब्ध कड़वकोंकी संख्या २४८ है।^५

१. भारत कला भवनकी आगत पंजिका संख्या ७७४२-७९९१।

२. वही, संख्या ७८६५, ७८६८, ७८७४।

३. वही, संख्या ७९५६।

४. वही, संख्या ७८४६, ७९३६।

५. सम्मेलन संस्करणमें शिवगोपाल मिश्रने जो पाठ प्रस्तुत किया है, उससे ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने इस प्रतिसे २५१ कड़वक दिये हैं। वस्तुतः उसमें एकडला प्रति कथित तीन कड़वक (सम्मेलन संस्करण, कड़वक ७२, ८५ और ११०) बीकानेर प्रतिके हैं; और एक कड़वक (वही,

इस प्रतिके ज्ञात होनेकी सर्व प्रथम सूचना कैलाश कल्पितने प्रयागसे प्रकाशित दैनिक अमृत पत्रिका (३ सितम्बर १९५५) में दी थी। तदनन्तर शिवगोपाल मिश्रने इस प्रतिके आधारपर कई लेख प्रकाशित किये।

बीकानेर प्रति—यह प्रति मटमैले रंगके कागजपर कैथी लिपिमें लिखी गयी है। इसके लिखनेमें काली और लाल दोनों प्रकारकी स्याहियोंका प्रयोग किया गया है। आरम्भके एक और बीचके तीन-चार पत्रोंको छोड़कर सर्वत्र घत्ता लिखनेके लिए लाल स्याहीका प्रयोग हुआ है। इस प्रतिमें मूलतः ८६ पत्र हैं; किन्तु मिरगावती ७७ पत्रोंमें समाप्त हो जाती है। तदनन्तर गंग कृत बारहमासा प्रारम्भ होता है जिससे हमें कोई प्रयोजन नहीं है। इस प्रतिके प्रत्येक पृष्ठपर २१ पंक्तियाँ अर्थात् तीन कड़वक हैं। अन्तिम पृष्ठ पर केवल एक कड़वक है। इस प्रकार इस प्रतिके अनुसार मिरगावतीमें ४५७ कड़वक हैं। किन्तु इस प्रतिके केवल ५९ पत्र उपलब्ध हैं। पत्र १-५, १६, १८, २०, २४-२७, ५६^१, ५७ तथा ६२ नहीं हैं। इस कारण इस प्रतिके केवल ३१३ कड़वक अर्थात् कड़वक ३१-३६, ९७-१२२, १०९-११४, १२१-१३८, १६३-३१२, ३१९-३३६, ३४३-३६६ और ३७३-४५७ उपलब्ध हैं।

शिवगोपाल मिश्रकी धारणा है कि यह प्रति प्राचीन है। उनका यह भी कहना है कि प्रति अन्तसे पूर्ण है फिर भी उसमें लेखक (सम्भवतः उनका तात्पर्य लिपिकसे है)का नाम एवं लेखन काल नहीं पाया जाता।^१ किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। अन्तमें पुष्पिका उपलब्ध है, जिसे शिवगोपाल मिश्रने स्वयं दो स्थलोंपर उधृत किया है।^२ भूमिकामें उधृत पाठके अनुसार पुष्पिका इस प्रकार है—एती मृगावती कथा समप समांपती सुभ असुभ सी गुरु प्रसाद न सुसमती। समयेअ नम सर्वन बदीय।

कड़वक ९०), जिसे उन्होंने बीकानेर प्रतिका बताया है, एकडला प्रतिका है। इस प्रकार उक्त संस्करणमें एकडला प्रतिके २४९ कड़वक ज्ञात होते हैं। सम्मेलन संस्करणमें एकडला प्रतिके कहे गये कड़वकोंकी भारत कला भवनमें उपलब्ध सामग्रीसे तुलना करनेपर ज्ञात होता है कि भारत कला भवनकी सामग्रीके अतिरिक्त संस्करणमें चार कड़वक (प्रस्तुत संस्करणके कड़वक ७, ८, ९ और ६४) ऐसे हैं जो भारत कला भवनमें उपलब्ध नहीं हैं। इनमेंसे तीन कड़वक तो उन पत्रोंके हो सकते हैं जिन्हें शिवगोपाल मिश्रने अपने मित्रको दे दिये हैं। शेष एक कड़वक उन्हें कहाँसे मिला या उन्हें एकडला प्रतिका कहनेका क्या कारण है, यह उन्होंने कहाँ नहीं बताया है। हो सकता है उन्हें इस प्रतिके २५४ पत्र मिले हों और किसी भूलके कारण वे २५३ होनेकी बात कहते हों। अपने मित्रको तीनके स्थानपर चार पत्र दिये हों। इस प्रकार एकडला प्रतिसे उपलब्ध कड़वकोंकी संख्या २४९ है।

१. शिवगोपाल मिश्र और दीनानाथ खत्री, दोनोंने पृष्ठ ५३ के लुप्त होनेकी बात कही है। किन्तु वस्तुतः पत्र ५६ लुप्त है। प्रतिमें जो पत्र, पत्र ५६ के स्थानपर उपलब्ध है वह वस्तुतः पत्र ५३ है और किसीके प्रमादसे पत्र ५६ के स्थानपर रख गया है। यह काव्य प्रवाह और दिल्ली प्रतिके देखनेसे प्रकट होता है।
२. कुतुबन कृत मृगावती, पृ० २।
३. वही, पृ० ३ तथा २०४।

अती मुखी सोमावसरे ।^१ अन्तमें उन्होंने इससे तनिक भिन्न पाठ दिया है—एती त्रिगावती कथा समये समापतिः सुभ असुभ सी गुरु प्रसादम सुसमती । समांएअनम सर्वन वदीय । अतीमुखी सोमावसरे ।^२ दीनानाथ खत्रीने भी इस पुष्पिकाको अपने लेखमें उद्धृत किया है । वहाँ इन दोनोंसे कुछ भिन्न पाठ है—एती मृगावती कथ समए समापती सुंभ असुसी गुरु प्रसादम सुसभती । समाये अनम सर्वन वदीय ॥ अतीमुखी सोमावसरे ॥^३ हमें मूल प्रति देखनेको न मिल सकी, इसलिए हम कहनेमें असमर्थ हैं कि वस्तुतः पाठ क्या है । किन्तु इन पाठोंपर तनिक ध्यान देनेपर स्पष्ट हो जाता है कि वे अत्यन्त भ्रष्ट हैं । यह भ्रष्टता कैथील्लिपि जनित और लिपिक-जनित दोनों ही हो सकती है । इन पंक्तियोंमें वस्तुतः क्या लिखा है, इसे जानने समझनेकी किसीने भी चेष्टा नहीं की । इन पंक्तियोंमें तीन बातें कही गयी हैं—

(१) अति मृगावती (त्रिगावती) कथ (कथा) समए समापतिः (समापती, समापती) अर्थात् इति मृगावती (त्रिगावती) कथा समय समाप्तिः ।

(२) सुभअसुसी (असुभसी) गुरुप्रसादम (गुरु प्रसादम) अर्थात् शुभ आशीशे गुरु प्रसादम (गुरुके प्रसादरूपी शुभ आशीशसे)

(३) सुसमती (सुसमती) समाये (समांए) अनम सर्वन वदीय अतिमुखी सोमावसरे ।

यही अन्तिम पंक्ति सबसे महत्त्वकी है और इसमें लिपि-काल अंकित है । किन्तु इसका पाठ समुचित रूपसे स्पष्ट नहीं है । पहला शब्द सुसंवते जान पड़ता है । दूसरा शब्द सम्भवतः समये है जिसका अर्थ होता है वर्ष । तीसरे शब्द अनमका पाठ शुद्ध है अथवा वह किसी शब्दका विकृत रूप है, कहना कठिन है; किन्तु इतना तो निस्संदिग्ध है कि वह वर्षका द्योतक है । हो सकता है यहाँ अंक रहा हो जो न पढ़ा जा सका हो; यह भी सम्भव है कि अक्षर संकेतसे वर्षका बोध कराया गया हो । तीसरी सम्भावना यह भी है कि गौरव (बार्हस्पत्य) वर्षके नामोंमेंसे कोई नाम हो । किन्तु तीनों ही दृष्टिसे हम किसी वर्षका अनुमान कर पानेमें असमर्थ रहे हैं । आगे सर्वन स्पष्टतः श्रावण है, वदीयके सम्बन्धमें कुछ कहना ही नहीं, वह कृष्णपक्षका पर्याय है । अतिमुखी शब्दका प्रयोग तृतीयाके लिए हुआ जान पड़ता है । तदनन्तर सोमवासरे स्पष्ट है । इस प्रकार इस पुष्पिकाके अनुसार अनम (?) वर्षके श्रावण कृष्ण तृतीयाको यह प्रति लिपिवद्ध हुई थी । अनम वर्ष क्या है यह अधिक उहापोहकी अपेक्षा रखता है । शिवगोपाल मिश्र इस प्रतिको जितना प्राचीन समझते हैं, यह नहीं है । हमारी धारणा है कि यह किसी भी अवस्थामें अठारहवीं शतीसे पूर्वकी प्रति नहीं है ।

यह प्रति बीकानेरके अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालयके हिन्दी विभागमें है । वहाँ यह हस्तलिखित प्रति संख्या ११२ के रूपमें अंकित है । इसकी ओर ध्यान आकृष्ट

१. वही, पृ० ३ ।

२. वही, पृ० २०४ ।

३. राजस्थान भारती, वर्ष २, अंक २ (१९४९) पृ० ४४ ।

करनेका श्रेय दीनानाथ खत्रीको है। उन्होंने कुतुबनकी सृगावतीकी एक महत्त्वपूर्ण प्रति शीर्षकसे इसका परिचय १९४९ ई० में राजस्थान भारतीमें प्रकाशित किया था।^१

काशी प्रति—यह प्रति कैथी लिपिमें काली स्याहीसे ४ $\frac{३}{४}$ " × ६" आकारके कागजपर केवल एक ओर लिखी गयी बतायी जाती है। इसके केवल ७ पत्र उपलब्ध कहे जाते हैं जिनपर पत्रांक १४६ से १५२ तक अंकित है। इनमें २५ कड़वक (प्रस्तुत संस्करणके कड़वक २११ से २३५ तक उपलब्ध हैं। यह प्रति भारत कला भवन, काशीमें सुरक्षित कही जाती है किन्तु चेष्टा करनेपर भी हमें वह देखनेको प्राप्त न हो सकी। इस प्रतिको परशुराम चतुर्वेदीने देखा था। सम्भवतः शिवगोपाल मिश्रने भी इस प्रतिको देखा है। उनका कहना है कि यह प्रति अत्यन्त असावधानीसे तैयार की गयी है और उसमें अनेक पंक्तियाँ छूटी हुई हैं।

इसकी दो आधुनिक प्रतिलिपियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति तो भारत कला भवनमें ही है। सम्भवतः यह प्रतिलिपि पहले नागरी प्रचारणी सभाके पास थी। दूसरी प्रति अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालय बीकानेरमें है।

इस प्रतिसे दस कड़वक परशुराम चतुर्वेदीने अपने सूफ़ी काव्य संग्रहमें उद्धृत किये हैं।^२ उन्हें इस प्रतिकी जानकारी देनेके साथ-साथ मिरगावतीके अंश प्रकाशमें लानेका भी श्रेय प्राप्त है।

चौखम्भा प्रति—यह प्रति एकडला प्रतिकी तरह ही सचित्र और कैथी लिपिमें लिखी हुई थी। यह प्रति १९०० ई० के आस-पास चौखम्भा (काशी) स्थित भारतेन्दु हरिश्चन्द्रके निजी पुस्तकालयमें थी। वहीं उस समय नागरी प्रचारणी सभाकी ओरसे हस्तलिखित ग्रन्थकी खोज करनेवाले लोगोंने देखा था और उसका विवरण तैयार किया था जो उस वर्षके खोज रिपोर्टमें प्रकाशित है। इस रिपोर्टके प्रकाशनके पश्चात् वहाँसे यह प्रति किसी समय गायब हो गयी और अब उसके अस्तित्वका कोई पता नहीं है। आज इसकी जानकारीका साधन एकमात्र खोज रिपोर्टमें दिया गया विवरण ही है।

इस विवरणके अनुसार इसमें ८" × ६" के ३५० पत्र थे और प्रत्येक पत्र पर १८ पंक्तियाँ थीं। उसमें चित्र और काव्यका अंकन किस ढंगसे हुआ था इसका कोई उल्लेख नहीं है। रिपोर्टमें आदि-अन्तसे ५ कड़वक (प्रस्तुत संस्करणके कड़वक ७, ८, ९, १३ और ४२८) उद्धृत किये गये हैं। उसके देखनेसे अनुमान होता है कि (प्रस्तुत संस्करणके अनुसार) आरम्भके ६ और अन्तके ४ कड़वक नहीं थे।

ग्रन्थका स्वरूप

बीकानेर प्रतिमें काव्य ७७ पत्रोंमें समाप्त हुआ है। प्रत्येक पत्रपर समान रूपसे छः कड़वक लिखे गये हैं। अन्तिम पत्रपर केवल एक कड़वक है। इस प्रकार इस

१. वर्ष २, अंक २ (मार्च १९४९), पृ० ३९-४४।

२. सूफ़ी काव्य संग्रह, संवत् २००७, पृ० ११०-११७।

प्रतिके अनुसार काव्यमें ४५७ (७६ × ६ + १) कड़वक थे । मनेर प्रतिका उपलब्ध अंश १४४ पत्रसे आरम्भ होता है । प्रत्येक पत्रपर दोनों ओर एक-एक कड़वक लिखा गया है । इसके अनुसार १४४वें पत्रके पृष्ठपर कड़वक २८७ होना चाहिये । और वस्तुतः हम पाते हैं कि बीकानेर प्रतिका २८७वाँ कड़वक और मनेर प्रतिके पृष्ठ १४४अ का कड़वक एक ही है । इस समताको देखते हुए अनुमान किया जा सकता है कि मनेर प्रतिके भी बीकानेर प्रतिके समान ही ४५७ कड़वक रहे होंगे । किन्तु मनेर प्रतिकी उपलब्ध सामग्रीमें एक पृष्ठ रिक्त है और एक कड़वक ऐसा है जो बीकानेर प्रतिके नहीं है । इस तथ्यके प्रकाशमें अनुमान करनेकी गुंजाइश है इस तरहके अन्तर मनेर प्रतिके आगे पीछे भी रहे होंगे । अतः निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि मनेर प्रतिके बीकानेर प्रतिके समान ही कड़वक रहे होंगे ।

दिल्ली प्रतिके क्रमबद्ध पाठके रूपमें ४२६ कड़वक हैं; आरम्भका अंश खण्डित है । बीकानेर प्रतिके आरम्भिक पत्रोंमें पत्र ६ उपलब्ध है । पत्र ६ का पहला कड़वक उक्त प्रतिकी गणनाके अनुसार ३१वाँ कड़वक है । इस आधारपर बीकानेर प्रतिके ३१वें कड़वकके साथ दिल्ली प्रतिके समान कड़वक को सन्तुलित करनेसे ज्ञात होता है कि दिल्ली प्रतिका उपलब्ध आरम्भिक पृष्ठ बीकानेर प्रतिके अनुसार चौथे कड़वककी अन्तिम दो पंक्तियोंके साथ आरम्भ होता है । इससे ज्ञात होता है कि दिल्ली प्रतिके आरम्भके चार कड़वक नहीं हैं और दिल्ली प्रतिके अनुसार काव्यमें केवल ४३० कड़वक थे ।

इस प्रकार बीकानेर और दिल्ली प्रतियोंमें काव्यके आकारमें २७ कड़वकोंका अन्तर है । अतः विचारणीय हो जाता है कि दिल्ली प्रतिके इन कड़वकोंकी छूट है या बीकानेर प्रतिके अधिक कड़वक अतिरिक्त और प्रक्षिप्त हैं ।

प्रथम तीस कड़वक बीकानेर प्रतिके नहीं हैं और इस अंशके २६ कड़वक दिल्ली प्रतिके उपलब्ध हैं । आरम्भका एक पत्र अप्राप्य है । इस अप्राप्य पत्रमें बीकानेर प्रतिके अनुसार चार कड़वक रहे होंगे यह हमने ऊपर मान लिया है । इस प्रकार यहाँ तक दोनों प्रतियाँ समान हैं । आगे यह समानता ३४वें कड़वक तक चलती है । दिल्ली प्रतिका ३५वाँ कड़वक बीकानेर प्रतिके दो कड़वकों (कड़वक ३५-३६)^१ में विभक्त मिलता है । कड़वक ३५ में आरम्भकी चार और कड़वक ३६ में अन्तिम तीन पंक्तियाँ हैं । विषय और कथा प्रवाहको देखते हुए जान पड़ता है कि इस स्थलपर मूलतः बीकानेर प्रतिके ही दोनों कड़वक रहे होंगे । अनुमान होता है कि दिल्ली प्रतिकी आदर्श कोई ऐसी प्रति थी जिसके प्रत्येक पृष्ठपर एक ही कड़वक था । इस कारण लिपिककी दृष्टि एक पृष्ठसे दूसरे पृष्ठपर फिसल गयी और उसने केवल पंक्तियोंका ध्यान कर अगले कड़वककी तीन पंक्तियाँ पहले कड़वककी लिख चुकी चार पंक्तियोंके नीचे लिख दिया । इस प्रकार वह एक कड़वक चूक गया । अतः हमारी धारणा है कि इस स्थलपर बीकानेर प्रतिके दोनों कड़वक ग्रहण किये जाने चाहिये ।

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक २१-२२ ।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक ३७ से ९६ तक अनुपलब्ध हैं। इस अंशके रूपमें दिल्ली प्रतिमें केवल कड़वक ३६-८४ हैं। यहाँ यह बात सामने आती है कि बीकानेर प्रतिमें अनुपलब्ध ११ कड़वक दिल्ली प्रतिमें भी नहीं हैं। ये अनुपलब्ध कड़वक, कड़वक ३७ और ९६ के बीच किन स्थलोंके थे और वे दिल्ली प्रतिमें छूट गये हैं या बीकानेर प्रतिमें अतिरिक्त और प्रक्षिप्त थे, कहा नहीं जा सकता। जहाँतक पाठ प्रवाहका सम्बन्ध है दिल्ली प्रतिमें किसी प्रकारका कोई अभाव लक्षित नहीं होता। ऐसी अवस्थामें यही अनुमान होता है कि बीकानेर प्रतिके ये अनुपलब्ध कड़वक अतिरिक्त और प्रक्षिप्त रहे होंगे।

पुनः दिल्ली प्रतिके कड़वक ८५-१०९ बीकानेर प्रतिके कड़वक ९७-१२२^१ के समानान्तर चलते हैं और बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध कड़वकोंकी पूर्ति बिना किसी प्रकारकी कमी-बेशीके करते हैं। किन्तु बीकानेर प्रतिका कड़वक १०९^१ दिल्ली प्रतिमें नियमित क्रममें न होकर माजिनमें प्रथम पंक्ति विहीन अंकित है। सूक्ष्म परीक्षणसे प्रकट होता है कि दिल्ली प्रतिका कड़वक ९७ बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकों (कड़वक १०९-११०)^१ में विभक्त है। कड़वक १०९ में दिल्ली प्रतिकी पंक्ति ८ के साथ ६ नयी पंक्तियाँ हैं और कड़वक ११० में पहली पंक्ति नयी है और शेष दिल्ली प्रतिकी पंक्तियाँ २-७ हैं। अतः स्पष्ट है कि दिल्ली प्रतिके माजिनमें कड़वक ९७ के पाठान्तर स्वरूप बीकानेर प्रतिके कड़वक १०९ की पंक्ति २-७ हैं। दिल्ली प्रतिके कड़वक ९७ की पंक्तियाँ जिस रूपमें दो कड़वकोंमें विभक्त हैं, उनसे लक्षित होता है कि विस्तारके निमित्त उन्हें यह रूप दिया गया है। बीकानेर प्रतिके कड़वक ११० में दिल्ली प्रतिके कड़वक ९७ के प्रथम पंक्तिके स्थानपर जो पंक्ति जोड़ी गयी है, वह इस बातको स्पष्ट रूपसे व्यक्त करती है। दिल्ली प्रतिका कड़वक ९७ अपने आपमें पूर्ण है और बीकानेर प्रतिकी पंक्तियोंके अभावमें काव्यप्रवाहमें कोई कमी नहीं आती। अतः हमारी धारणा है कि बीकानेर प्रतिका यह अंश प्रक्षिप्त है और मूल पाठमें अग्राह्य है।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३-१२९^१ के बीचके कड़वकोंमें केवल दो कड़वक (कड़वक १२४ और १२७)^१ दिल्ली प्रतिमें कड़वक ११० और १११ के रूपमें उपलब्ध हैं। बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३, १२५, १२६^१ दिल्ली प्रतिमें हैं ही नहीं। कड़वक १२८^१ की प्रथम दो पंक्तियाँ और कड़वक १२९^१ की पंक्ति १, ४, ५, ६ और ७

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ४४-६९।

२. वही, कड़वक ५६।

३. सम्मेलन संस्करण कड़वक ५६-५७।

४. वही, कड़वक ७०-७६।

५. वही, कड़वक ७१-७४।

६. वही, कड़वक ७०, ७२, ७३।

७. वही, कड़वक ७१।

८. वही कड़वक ७६।

को मिलाकर एक पूर्ण कड़वक दिल्ली प्रतिके मार्जिनपर अंकित है समूचे अंशके परीक्षणसे प्रकट होता है कि बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३, १२५ और १२६ प्रसंगानुरूप अनावश्यक हैं। दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें जो कड़वक अंकित है वह अपने आपमें पूर्ण है, उसे बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकोंमें बाँटकर अनावश्यक विस्तार किया गया है। अतः कड़वक १२३, १२५, १२६ और कड़वक १२८ की पंक्ति ३-७ और कड़वक १२९ की पंक्ति २-३ हमारी सम्मतिमें प्रक्षिप्त हैं और मूल पाठमें अग्राह्य हैं। दिल्ली प्रतिके मार्जिनवाला कड़वक दिल्ली प्रतिमें छूट है। उसे कड़वक १११ के बाद मूल पाठमें ग्रहण किया गया है।

तदनन्तर बीकानेर प्रतिके कड़वक १३०-२११^१ दिल्ली प्रतिके कड़वक ११२-१९३ के साथ समान रूपसे चलते हैं और बीकानेर प्रतिमें अनुपलब्ध कड़वकोंकी पूर्ति बिना किसी कमी-बेशीके करते हैं। इनके आगे दिल्ली प्रतिमें तीन कड़वक (कड़वक १९४-१९६) ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें नहीं हैं। ये कड़वक काव्य प्रवाहकी दृष्टिसे मूल काव्यके अंग जान पड़ते हैं। सम्भवतः वे लिपिकके प्रमादसे बीकानेर प्रतिमें छूट गये हैं। अतः वे प्रस्तुत संस्करणमें मूल पाठके रूपमें स्वीकार किये गये हैं। पुनः बीकानेर प्रतिके कड़वक २१२-२१८^२ दिल्ली प्रतिके कड़वक १९७-२०३ के साथ समान रूपसे चलते हैं। आगे दिल्ली प्रतिके कड़वक २०४ की प्रथम दो पंक्ति तथा पाँच नयी पंक्तियोंके योगसे बना बीकानेर प्रतिका कड़वक २१९^३ है। और उसके बादका कड़वक २२०^४ दिल्ली प्रतिमें नहीं है। किन्तु उसके मार्जिनमें बीकानेर प्रतिके कड़वक २१९ की पंक्ति ३-७ और कड़वक २२० अंकित हैं। ऐसा जान पड़ता है कि ये किसी अन्य प्रतिसे दिल्ली प्रतिके मार्जिन पाठान्तरके रूपमें लिखे गये हैं। ध्यानसे देखनेपर प्रकट होता है कि बीकानेर प्रति और दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें अंकित ये अंश विस्तारके निमित्त जोड़े गये हैं। वे प्रक्षिप्त हैं और मूल पाठमें अग्राह्य हैं।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक २२१-२५९^५ दिल्ली प्रतिके कड़वक २०५-२४३ के साथ समान रूपसे चलते हैं। फिर दिल्ली प्रतिका कड़वक २४४ बीकानेर प्रतिके दो कड़वकों (२६०-२६१)के रूप में बैठा है। कड़वक २६० में दिल्ली प्रतिके कड़वक २४४ की प्रथम दो पंक्तियोंके साथ पाँच नयी पंक्तियाँ हैं; और कड़वक २६१ में दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्तियाँ ३-५ हैं उसके बाद दो पंक्ति रिक्त है और अन्तमें पंक्ति ६-७ है।^६ बीकानेर प्रतिके कड़वक २६० की नयी पंक्तियोंका अन्य पंक्तियोंके

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ७७-८५; १०९-१५७।

२. वही, कड़वक १५८-१६४।

३. वही, कड़वक १६५।

४. वही, कड़वक १६६।

५. वही, कड़वक १६७-२०५।

६. वही, पृ० १३७, पाद टिप्पणी।

साथ कोई संगति नहीं बैठती। इसी कारण शिवगोपाल मिश्रने उन्हें मूलमें न ग्रहण कर पादमें दिया है। यह अंश स्पष्टतः प्रक्षिप्त और अग्राह्य है।

इसके बाद बीकानेर प्रतिका कड़वक २६२^१ दिल्ली प्रतिके कड़वक २४५ के समान है। आगे दिल्ली प्रतिका कड़वक २४६ बीकानेर प्रतिमें दो कड़वकों (२६३-२६४) में बँटा है। कड़वक २६३ में दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्ति १-३ के बाद चार नयी पंक्तियाँ हैं और अन्तमें पुनः पंक्ति ६-७ हैं।^१ इन पंक्तियोंमें अनावश्यक रूपसे पानके गुण गिनाये गये हैं जो काव्यको बोझिल बनाते हैं। पाठकी असंगति देखकर शिवगोपाल मिश्रने बीकानेर प्रतिके अतिरिक्त पाठको पादमें दिया है। एक-डला प्रतिके पाठको देखनेसे भी यह अंश प्रक्षिप्त और अग्राह्य जान पड़ता है। उसमें दिल्ली प्रतिवाला पाठ है।

पुनः बीकानेर प्रतिके कड़वक २६५-२६६^३ दिल्ली प्रतिके कड़वक २४७-२४८ के समान हैं। आगे बीकानेर प्रतिका कड़वक २६७^४ दिल्ली प्रतिमें नहीं है परीक्षणसे प्रकट होता है कि विस्तारके निमित्त वह पीछेसे जोड़ा गया है। इसलिए वह मूल पाठमें अग्राह्य है। तदनन्तर बीकानेरके प्रतिके कड़वक २६८-२७४^५ दिल्ली प्रतिके कड़वक २४९-२५५ के समान हैं। आगे दिल्ली प्रतिका कड़वक २५६ बीकानेर प्रतिमें कड़वक २७५-२७७ में विभक्त है। कड़वक २७५ में दिल्ली प्रतिकी प्रथम चार पंक्तियोंके बाद तीन नयी पंक्तियाँ और कड़वक २७६ के रूपमें एक नया कड़वक, तदनन्तर कड़वक २७७ में दिल्ली प्रतिकी पंक्ति ५ को पंक्ति २ के रूपमें दिया गया है। उसकी पंक्ति १, ३-५ नयी हैं। अन्तमें पंक्ति ६-७ दिल्ली प्रतिके कड़वककी है।^१ सखियोंके उल्लेखके बीच इन पंक्तियों द्वारा नायिका भेदका वर्णन अनावश्यक रूपसे टूसा गया है। शिवगोपाल मिश्रने भी इन्हें पादमें दिया है। ये अंश मूल पाठमें अग्राह्य हैं।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक २७८-३९८^६ दिल्ली प्रतिके कड़वक २५७-३७६ के साथ समान रूपसे चलते हैं और बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध कड़वकोंकी पूर्ति बिना किसी कमी-बेशीके करते हैं। तदनन्तर बीकानेर प्रतिका कड़वक ३९९^७ दिल्ली प्रतिमें नहीं है। परीक्षणसे ज्ञात होता है कि यह कड़वक विस्तारके लिए पीछेसे जोड़ा गया है और अनावश्यक है। अतः मूल पाठमें अग्राह्य है।

१. सम्मेलन संस्करण कड़वक २७७।

२. वही, पृ० १३८, पाद-टिप्पणी।

३. वही, कड़वक २०९-२१०।

४. वही, कड़वक २११।

५. वही, कड़वक २१२-२१८।

६. वही, पृ० १४२, पाद-टिप्पणी।

७. वही, २२०-३३१।

८. वही, कड़वक ३३२।

तदनन्तर बीकानेर प्रतिके कड़वक ४००-४१२^१ दिल्ली प्रतिके कड़वक ३७७-३८९ के साथ समान रूपसे चलते हैं। आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक ४१३-४१७^३ के स्थानपर दिल्ली प्रतिमें केवल एक कड़वक (कड़वक ३९०) है। उसकी प्रथम पंक्तिके साथ ६ नयी पंक्तियाँ कड़वक ४१३ में हैं। उसके आगे कड़वक ४१४ सर्वथा नवीन है। तब कड़वक ४१५ के आरम्भमें दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्ति २-३ हैं तदनन्तर कड़वककी शेष पंक्तियाँ सर्वथा नवीन हैं। फिर कड़वक ४१६ एकदम नया है। अन्तमें कड़वक ४१७ के आरम्भमें दिल्ली कड़वककी पंक्ति ४-५ हैं, शेष पंक्तियाँ नयी हैं। दिल्ली प्रतिके कड़वककी पंक्ति ६-७ एक दम छोड़ दी गयी है। पंक्तियोंका विभिन्न कड़वकोंमें इस प्रकार विभाजन स्वतः इस बातका द्योतक है कि इन कड़वकोंका संयोजन विस्तारके निमित्त ही किया गया है। अतः बीकानेर प्रतिके ये सभी कड़वक मूल पाठके रूपमें अग्राह्य हैं।

अन्तमें बीकानेर प्रतिके कड़वक ४१८-४५७^३ दिल्ली प्रतिके कड़वक ३९१-४३० के समान हैं।

इस प्रकार दिल्ली और बीकानेर प्रतियोंके तुलनात्मक परीक्षणसे प्रकट होता है कि दिल्ली प्रति मूलके निकट है और बीकानेर प्रतिमें काफी अंश प्रक्षिप्त हैं। बीकानेर प्रतिके उपलब्ध ३१३^१ कड़वकोंमेंसे केवल २८८ दिल्ली प्रतिसे समता रखते हैं। बीकानेर प्रतिमें आठ कड़वक (१२३, १२५, १२६, २६७, २७६, ४१४, ४१६) एकदम नये हैं। एक कड़वक (२२०) पाठान्तरके रूपमें दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें है। एक कड़वक (२१९) दिल्ली प्रतिमें आंशिक भिन्नताके साथ उपलब्ध है। दिल्ली प्रतिके पाँच कड़वकों (३५, ९७, २४४, २४६, २५६) को बीकानेर प्रतिमें दो-दो कड़वकोंमें (३५-३६ : १०९-११० : २६०-२६१ : २६३-२६४ : २७५-२७७) और एक (३९० कड़वकों) को तीन कड़वकों (४१३, ४१५, ४१७) में बाँट दिया गया है। इनके अतिरिक्त बीकानेर प्रतिके कड़वक १२८-१२९ भी दिल्ली प्रतिके मूल पाठके अन्तर्गत नहीं हैं। वे पाठान्तरके रूपमें मार्जिनमें हैं। इन अतिरिक्त कड़वकोंमें दिल्ली प्रतिके कड़वक ३५ के स्थानपर बीकानेर प्रतिके कड़वक ३५-३६ मूल पाठके जान पड़ते हैं, जैसा कि ऊपर कहा गया है। शेष सब अनावश्यक विस्तारके लिए वादमें जोड़े गये हैं और प्रक्षिप्त हैं। दूसरी ओर दिल्ली प्रतिमें तीन कड़वक (१९४-१९६) ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें लिपिकके प्रमादसे छूट गये हैं।

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ३३३-३४५।

२. वही, कड़वक ३४६-३५०।

३. वही, कड़वक ३५१-३९०।

४. सम्मेलन संस्करणकी भूमिकामें बीकानेर प्रतिसे केवल ३०७ कड़वक प्राप्त होनेका उल्लेख है (पृ० ६१)। उक्त संस्करणमें मुद्रित कड़वक ७२, ८५ और ११० को एकटला प्रतिका बताया गया है। वस्तुतः वे बीकानेर प्रतिके हैं। इस प्रकार तीन कड़वकोंकी भूल तो स्पष्ट है। शेष तीन कड़वकोंकी भूलका कोई कारण नहीं जान पड़ता क्योंकि उक्त संस्करणमें ही सभी ३१३ कड़वक उपलब्ध हैं।

शेष प्रतियोंमेंसे एकडला प्रतिमें एक कड़वक^१ के अतिरिक्त सभी कड़वक दिल्ली प्रतिमें उपलब्ध हैं। उसमें एक भी कड़वक ऐसा नहीं है जो दिल्ली प्रतिमें न हो और बीकानेर प्रतिमें हो। खण्डित होते हुए भी एकडला प्रतिकी दिल्ली प्रतिके साथ यह समानता बीकानेर प्रतिके अतिरिक्त कड़वकोंके प्रक्षिप्त होनेकी बातको पुष्ट करती है। एकडला प्रतिमें एक कड़वक ऐसा है जो किसी अन्य प्रतिमें उपलब्ध नहीं है, वह काव्यके आरम्भका है और दिल्ली प्रतिमें अनुपलब्ध चार कड़वकोंमेंसे एक है। इसलिए उससे एक कड़वकके अभावकी पूर्ति होती है।

मनेर शरीफके ६३^३ कड़वकोंमेंसे ६२ दिल्ली प्रतिमें प्राप्त हैं। दिल्ली प्रतिकी अनुपस्थितिमें उनमेंसे सात (१६८अ-१७१अ) बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध अंशकी किंचित् पूर्तिमें सहायक होते हैं। शेष एक कड़वक (१६०अ) न तो दिल्ली प्रतिमें है और न बीकानेर प्रतिमें। जिस स्थानपर वह है, उस स्थानपर उसकी संगति समझ पानेमें हम असमर्थ रहे। अतः हमने उसे मूल पाठमें स्थान नहीं दिया है। अन्य दो प्रतियोंमें ऐसी कोई सामग्री नहीं है जो उपर्युक्त प्रतियोंमें न हो।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करणमें दिल्ली प्रतिके ४२६ कड़वकोंमेंसे एक (कड़वक ३५) को छोड़कर सब स्वीकार किये गये हैं। दिल्ली प्रतिके कड़वक ३५ के स्थानपर बीकानेर प्रतिके दो कड़वक (३५-३६) ग्रहण किये गये हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली प्रतिके कड़वक १११ के बाद, उसके मार्जिनमें अंकित कड़वकको मूल पाठमें सम्मिलित किया गया है। एकडला प्रतिके एक कड़वकसे आरम्भके अनुपलब्ध अंशकी पूर्ति होती है। इस प्रकार इस संस्करणमें मूलपाठके रूपमें कुल ४२९ कड़वक दिये जा रहे हैं। तीन कड़वक अनुपलब्ध रह जाते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण काव्यमें ४३२ कड़वक होनेका अनुमान है।

बीकानेर और मनेर प्रतिके जो अंश मूल पाठमें ग्रहण नहीं किये गये हैं, उन्हें प्रक्षिप्त कह कर अलग परिशिष्ट १ में संकलित कर दिया गया है।

विभिन्न प्रतियों में उपलब्ध कड़वकोंकी समताको स्पष्ट करनेके लिए उनकी भी एक तालिका परिशिष्ट २ के रूपमें दी जा रही है।

प्रति परम्परा

मिरगावतीकी उपलब्ध प्रतियोंमें दो परम्पराओंके होनेकी बात अनायास सामने आती है। कुछ प्रतियोंमें सुबुद्धयाकी राजकुमारीका नाम रूपमनि (रूपमणि) और कुछ प्रतियोंमें रुक्मिन (रुक्मिणी) मिलता है। निसन्देह इन दो नामोंमेंसे एक नाम मूल परम्पराका नाम होगा और दूसरा नाम वादमें किसी प्रकार काव्यमें प्रविष्ट हो गया होगा। इस दृष्टिसे दिल्ली, मनेरशरीफ और एकडला प्रतियाँ एक परम्पराकी हैं। इनमें सर्वत्र रूपमनि नाम मिलता है। दूसरी परम्पराकी प्रतियाँ बीकानेर और चौखम्भा प्रतियाँ हैं। उनमें रुक्मिन नाम मिलता है। काशी प्रतिमें जो अंश उपलब्ध हैं उनमें

१. सम्मेलन संस्करण, कड़वक ८।

२. इस प्रतिमें ६४ पृष्ठ उपलब्ध हैं जिनमें एक पृष्ठ रिक्त है।

शब्दके आरम्भमें आये वाव को सर्वत्र व और अन्तमें आये वाव को प्रायः उ के रूपमें लिया गया है ।

शब्दके आरम्भमें आये अलिफको अ, आ, इ और उ के रूपमें और ये को य के रूपमें लिया गया है ।

शब्दके आरम्भमें अलिफ और वाव के संयुक्त प्रयोगको ऊ, ओ, औ अथवा अउ पढ़ा गया है । शब्दके अन्तमें उसे आउ माना गया है ।

संज्ञा आदि शब्दोंके अन्तमें वाव और ये के संयुक्त प्रयोगको प्रसंगानुसार वे अथवा वै पढ़ा गया है, किन्तु क्रियाओंमें हमें वै की अपेक्षा वइ पाठ अधिक संयत और उचित जान पड़ा है ।

सम्पादन-विधि

प्रस्तुत सम्पादन कार्यमें प्रत्येक कड़वकको अंक-बद्ध कर पाठ-क्रम निर्धारित किया गया है; और प्रत्येक कड़वक संख्याके नीचे प्रति अथवा प्रतियोंका नाम दिया गया है जिनमें वह उपलब्ध है । दिल्ली प्रतिसे पाठ लिया गया है, इसलिए उसका नाम पहले रखा गया है तदनन्तर अन्य प्रतियोंका । उसके नीचे कड़वकका पाठ है और उसकी प्रत्येक पंक्तिको अंक-बद्ध कर दिया गया है जिससे निर्देशमें सुविधा हो ।

यदि गृहीत पाठमें कोई छूट या अभाव है तो वह दूसरी प्रतिसे लेकर पूरा किया गया है । इस प्रकार दूसरी प्रतिसे लिये पाठको बड़े कोष्ठक [] में दिया गया है । यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति अनुमानसे की गयी है तो उसे बड़े कोष्ठक [] में रखकर तारांकित कर दिया गया है । यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका तो वहाँ बड़े कोष्ठकके भीतर मात्राओंका अनुमान कर डैश रख दिया गया है ।

यदि कहीं लिपिकने प्रमादवश किसी शब्दको दुहरा दिया है तो उस शब्दको तारांकित कर दिया गया है । यदि उसने कोई अनपेक्षित अतिरिक्त शब्द रख दिया है तो उस शब्दको पाठसे निकाल दिया गया है और अलग उसका निर्देश कर दिया गया है । इसी प्रकार दिल्ली प्रतिका यदि कोई शब्द स्पष्ट रूपसे अशुद्ध जान पड़ा है तो वहाँ दूसरी प्रतिके पाठको स्वीकार किया गया है और दिल्ली प्रतिके पाठको पाठान्तरके रूपमें दिया गया है । यदि दूसरी प्रतिमें पाठ नहीं है तो अनुमानित पाठ ग्रहण कर मूल पाठको अलग दे दिया गया है । दोनों ही अवस्थाओंमें इस प्रकार गृहीत शब्दोंको छोटे कोष्ठक () में रख दिया गया है ।

ऐसे शब्दोंको जिनका समुचित पाठोद्धार करनेमें हम असमर्थ रहे अथवा जिनके सम्बन्धमें हमें किसी प्रकारका सन्देह है, पाठके अन्तर्गत भिन्न टाइप में दे दिया है ।

मि र गा ब ती

(पाठान्तर सहित मूल पाठ तथा टिप्पणी)

कड़वक सूची

[उपलब्ध प्रतियोंमेंसे किसीमें न तो कथाका विषयानुसार कोई विभाजन है और न अन्य प्रेमाख्यानक काव्योंकी तरह कड़वकोंके शीर्षक उपलब्ध हैं। अतः पाठकोंकी सुविधाके निमित्त यहाँ प्रत्येक कड़वकोंका संक्षिप्त आशय देकर उनका विषयानुसार विभाजन कर दिया गया है। इससे अपेक्षित कड़वक ढूँढ़नेमें सरलता होगी।]

स्तुति—

१-५—ईश्वर स्तुति (केवल दो कड़वक उपलब्ध); ६—मुहम्मद स्तुति; ७—चार मीतोंका वर्णन; ८—पीरकी प्रशंसा; ९-१२—शाहेवक्त हुसेन शाहकी प्रशंसा; १३-१४ ग्रन्थ परिचय।

राजकुँवरका जन्म और शिक्षा—

१५—राजाकी संतति आकांक्षा; १६—दान-वितरण; १७—पुत्र-जन्म; १८—भाग्य गणना; १९—पालन-पोषण और शिक्षा।

मिरगावती दर्शन—

२०—आखेट; २१—सतरंगी मृगी; २२—मृगी पकड़नेका प्रयत्न; २३—मृगीका मानरोदक-प्रवेश; २४—मृगीकी खोज; २५—मृगी-वियोग।

राजकुँवरकी खोज—

२६—राजकुँवरकी खोज; २७—मानसरोदक वर्णन; २८—राजकुँवरका मिलना; २९—राजकुँवरकी अवस्था; ३०—मिरगावतीका रूप; ३१—साधियोंकी चिन्ता; ३२—राजाको सूचना।

राजाका आगमन और भवन-निर्माण—

३३—राजाका आगमन; ३४—राजकुँवरकी अवस्था; ३५—राजाका समझाना; ३६—राजकुँवरका अनुरोध; ३७—मन्दिर बनानेका आदेश; ३८—स्थपितोंका आगमन; ३९—भवन-निर्माण; ४०—चित्रांकन; ४१—धार्इका समझाना; ४२—वर्षा ऋतुकी अवस्था; ४३—जाड़ेकी अवस्था; ४४—गरमोकी अवस्था।

मिरगावतीका पुनरागमन—

४५—तीन वर्ष पश्चात् रूपवतियोंका आगमन; ४६—उन्हें देखनेपर राजकुँवरकी अवस्था; ४७—सहेलियोंका सशंका होना; ४८—मिरगावतीका समाधान; ४९—राज-

कुँवर द्वारा रूपसियोंको पकड़नेकी चेष्टा, उनका पलायन; ५०-राजकुँवरका मूर्च्छित होना; ५१-धाईका मूर्च्छाका कारण जानना ।

मिरगावतीका रूप वर्णन—

५९- राजकुँवर द्वारा मिरगावतीका रूप वर्णन; ५३-माँग; ५४-केश; ५५-ललाट; ५६-मौंह; ५७-वरौनी; ५८-नेत्र; ५९-तिल; ६०-कान; ६१-कपोल; ६२-नाक; ६३-अधर; ६४-दाँत; ६५-जोभ; ६६-ग्रीवा; ६७-कर; ६८-पीठ; ६९-कमर; ७०-कुच; ७१-रोमावली; ७२-पेट; ७३-जाँघ; ७४-वर्ण; ७५-आकार; ७६-बारह अमरण; ७७-गीत आदि ।

मिरगावतीका चीर-हरण—

७८-धाईका मिरगावतीके पानेका उपाय बताना; ७९-मिरगावतीका सहेलियोंको बुलाना; ८०-सहेलियोंके साथ मिरगावतीका सरोवरमें स्नान; ८१-जल-क्रीड़ा । ८२-राजकुँवरका चीर-हरण; सहेलियोंका उड़ जाना; ८३-मिरगावतीका साड़ी न पाना और राजकुँवरको देखना; ८४-८५-राजकुँवरका अपनी कष्ट कथा कहना; ८६-मिरगावतीका चीरकी याचना करना; ८७-राजकुँवरका दूसरी साड़ी देना ।

राजकुँवर-मिरगावती मिलन—

८८-राजकुँवर-मिरगावतीका भवनमें आना; ८९-मिरगावतीका राजकुँवरसे कहना; ९०-राजकुँवरका उसकी बात मानना; ९१-मिरगावतीका राजकुँवरको पत्नी होनेका वचन देना; ९२-राजकुँवरका पिताको सूचना; ९३-राजाका राजकुमार-के पास जानेकी तैयारी करना; ९४-अश्ववर्णन; ९५-पिता-पुत्र मिलन ।

मिरगावतीका पलायन—

९६-मिरगावतीके मनमें राजकुँवरकी प्रेम-परीक्षाका विचार आना; ९७-राजाका राजकुमारको बुलावा; ९८-राजकुँवरका राजाके पास जाना; ९९-धाईको भुलावा देकर मिरगावतीका उड़ जाना; १००-धाईका मिरगावतीको ढूँढ़ना और छतपर बैठना देखना; १०१-मिरगावतीका राजकुँवरको सन्देश; १०२-राजकुँवरका वापस आना और धाईका मिरगावतीके उड़ जानेकी बात कहना; १०३-सुनते ही राजकुँवरका बेहोश होना; १०४-१०७-राजकुँवरका विलाप ।

राजकुँवरका जोगी होना—

१०८-राजकुँवरका जोगी होनेका निश्चय; १०९-जोगी वेश धारण; ११०-राजाका पुत्रके लिए विलाप; १११-राजकुँवरका मिरगावतीके खोजमें चलते जाना; ११२-एक नगरमें पहुँचना; राजाको सूचना; ११३-बतीसो राजलक्षण होनेकी बात; ११४-राजाका आकर जोगी होनेका कारण पूछना; ११५-राजकुँवरका अपनी

प्रेम कहानी बताना; ११६-राजाका जंगमको बुलवाना; ११७-जंगमका कंचनपुरके मार्गकी दुर्गमता कइना; ११८-राजकुँवरका दुर्गमताको बातसे भय न खाना; ११९-राजाका समझाना और राजकुँवरका कुछ न सुनना; १२०-जंगमका मार्ग बताना और राजकुँवरका नावपर सवार होना ।

समुद्रमें राजकुँवर—

१२१-समुद्रके लहरमें नावकी अवस्था; १२२-एक मास बाद किनारे लगना; दो आदमियोंका मिलना; १२३-उनका मनुष्य-भक्षी सर्पकी बात बताना; १२४-मनुष्य-भक्षी सर्पको देखकर राजकुँवरका परेशान होना १२५-ईश्वर स्मरण; १२६-सर्पका राजकुँवरको खानेकी चेष्टा; दूसरे सर्पका आना और परस्पर लड़ भरना ।

राक्षस-वध—

१२७-राजकुँवरका आमके बगीचेमें प्रवेश; १२८-भवनके भीतर एक राजकुमारीको बैठकर रोते देखना; १२९-राजकुँवरका रोनेका कारण पूछना; १३०-कुमारीका राक्षस द्वारा अपने खाये जानेकी बात बताना; १३१-राजकुँवरका राक्षसको मारनेका निश्चय; १३२-राक्षसका वध; १३३-राजकुमारीका दृश्य देखकर मूर्च्छित होना; १३४-राजकुमारीका आत्म-समर्पण; १३५-राजकुमारीका राजकुँवरसे परिचय पूछना; १३६-राजकुँवरका आत्म परिचय देना; १३७-मिरगावतीको देखने और चीर-हरणकी बात बताना; १३८-बातों बातोंमें सूर्योदय होना; १३९-रूपमणि (राजकुमारी)की खोजमें राजाका आना और उसका एक अन्य व्यक्तिके साथ जीवित देखना; १४०-राजाका राजकुमारीका कण्ठसे लगाना और जीवित रहनेकी बात पूछना; १४१-राजकुमारीका राजकुँवरका परिचय देना; १४२-राजाका राजकुँवरको जोगी वेश त्यागनेको कहना । १४३-राजाका बात न माननेपर बन्दी बनानेका भय दिखाना; १४३-राजकुँवरका सोच-विचारकर राजाकी बात मानना १४४-राजकुँवरका जोग उतारना और हाथीपर सवार होना; १४५-लोगोंका राजकुमारी और राजकुँवरको देखने आना; १४६-परिवारके लोगोंका निछावर बाँटना ।

राजकुँवर-रूपमणि विवाह—

१४७-राजकुँवरका चिन्तित होना; १४८-राजाका राजकुँवरकी गुणोंकी परीक्षा करना; १४९-राजकुँवरका हेंगुरि और आखेट खेलना; १५०-राजकुँवरकी विद्वत्ता; १५१-राजाका राजकुँवरसे रूपमणिके विवाहका निश्चय; १५२-ज्योनार; १५३-१५४-विवाह; १५५-राजकुँवरका रमणके प्रति विरक्ति; १५६-रूपमणिको भुलवा देनेका प्रयत्न; १५७-राजकुँवरका धर्मशाला बनवानेका निश्चय; १५६-धर्मशालामें आनेवाले जोगी जातियोंसे कनकनगरके समाचार पूछना; १५९-रूपमणिको भाँप लेना कि राजकुमार अनुरक्त नहीं है । १६०-राजकुँवरका रूपमणिको

मनाना; १६१-मनाकर बाहर आनेपर एक साधूको बैठे देखना; १६२-उससे कंचनपुरका मार्ग जानना ।

रूपमणिका परित्याग—

१६३-आखेटके बहाने घरसे निकलना और योगी वेश धारण करना; १६४-नदी पार होना; १६५-साथियोंका राजकुँवरको न पाना और मान लेना कि हिंखजन्तुने खा लिया; १६६-१६७ रूपमणिका समाचार सुनकर दुखी होना और पश्चाताप करना ।

मनुष्य-भक्षी गड़ेरिया—

१६८-राजकुँवरके चलते-चलते शाम होना; १६९-वनमें भ्रमित होना; १७०-वनमें तीस दिनतक चलते रहना; १७१-वनका अन्त और गड़ेरियासे भेंट; १७२-गड़ेरियाका अतिथिके रूपमें निमंत्रित करना; १७३-राजकुँवरको ले जाकर गड़ेरियाका खोहमें बन्द करना; १७४-यह देखकर राजकुँवरका जी सूखना और गड़ेरियाको मारनेकी सोचना; १७५-१७८ राजकुँवरका अपनी खित्तसे परेशान हाना; १७९-भीतर बन्द मनुष्योंका गड़ेरियासे छुटकारा पानेका उपाय बताना; १८०-गड़ेरियाका आना और एक आदमीको खाकर सो रहना; १८१-राजकुँवरका संड़सी दग्धकर गड़ेरियाका आँख फोड़ देना; १८२-गड़ेरियाका राजकुँवरको पकड़ न पाना; १८३-उसका द्वार अवरुद्ध कर बैठना; १८४-राजकुँवरका पुनः चिन्तित होना; १८५-चौथे दिन गड़ेरियाका बकरियोंको बाहर निकालना; १८६-बकरियोंके साथ कुँवरका बाहर निकल जाना ।

निर्जन भवनमें अद्भुत दृश्य—

१८७-राजकुँवरका आगे जाना; १८८-भवन दिखाई पड़ना और शम होना; १८९-चार कवूतरीयोंका आना और स्त्रीरूप धारण करना; १९०-चार मोरोंका आना और पुरुष वेश धारण करना; और परस्पर केलि करना; १९१-प्रातः होते ही उनका उड़ जाना और राजकुँवरका डरकर भागना; भागकर एक वृक्षके नीचे आराम करना ।

सहेलियोंके बीच मिरगावती—

१९२-मिरगावतीके आनेपर सहेलियोंका हाल-चाल पूछना और उसका बताना । १९३-राजकुँवरपर मोहित होनेकी बात कहना; १९४-चीर-हरणकी बात बताना; १९५-प्रणयसे रोकनेकी बात कहना; १९६-अवसर पाकर भाग निकलनेकी बात कहना; १९७-१९९-एक सहेलीका प्रेमकी कठिन्ता बताना; २००-सहेलियोंका मिरगावतीसे धैर्य रखनेको कहना; २०१-मिरगावतीके पिताका स्वर्गवास और मिरगावतीका सिंहासनारोहण; २०२-मिरगावती द्वारा धर्मशालाका निर्माण; और यात्रियोंसे चद्रागिरि (राजकुँवरके नगर)की बात पूछना ।

पक्षी-संवाद—

२०३-पेड़पर बैठे दो पक्षियोंका राजकुँवर और मिरगावतीके प्रेमकी चर्चा करना और राजकुँवरके दुखके अन्त होनेकी बात कहना । २०४-राजकुँवरका यह सब सुनना और उनके पीछे दौड़ना ।

कंचननगर-प्रवेश—

२०५-राजकुँवरका मार्ग पाना और एक बगीचेमें पहुँचना; २०६-२०८-बगीचेका वर्णन; २०९-नगर जाननेकी जिज्ञासा; २१०-पनिहारियोंसे कंचनपुर होनेका ज्ञान; २११-नगरमें प्रवेश; २१२-राजद्वार; २१३-भीतर प्रवेशकी चिन्ता और वियोगालाप; २१४-मिरगावतीको योगीके आनेकी सूचना और उसको बुलानेका आदेश ।

राजदरवार—

२१५-राजदरवारमें प्रवेश और मिरगावतीको देखकर मूर्च्छा; २१६-मिरगावतीका सशंक होना और दासियोंसे उसकी मूर्च्छा दूर करनेको कहना; २१७-दासियोंका मूर्च्छाका कारण पूछना; २१८-राजकुँवरका उत्तर; २१९-दासियोंका राजकुमारकी भर्त्सना; २२०-राजकुँवरका उत्तर; २२१-दासियोंका परस्पर विचार विमर्श; २२२-मिरगावतीको राजकुँवरके होनेका निश्चय और पास बुलाकर पूछना; २२३-राजकुँवरका उत्तर; २२४-मिरगावतीका सहेलियोंको राजकुँवर होनेकी बात बताना; २२५-मिरगावती द्वारा राजकुँवरकी परीक्षाके निमित्त प्रदन; २२६-राजकुँवरका उत्तर; २२७-मिरगावतीका क्रोध दिखाना; २२८-मिरगावतीको दया आना; २२९-राजकुँवरका उत्तर; २३०-मिरगावतीका डिठाई देखकर जानेको कहना और राजकुँवरका उत्तर; २३१-दासियोंको बुलाकर राजकुँवर को नहलानेका आदेश ।

राजकुँवर-मिरगावती मिलन—

२३२-मिरगावतीका शृंगार; २३३-शृंगारकर राजकुँवरको बुलानेका आदेश; २३४-राजकुँवरका स्वागत; २३५-मिरगावतीका उसकी अवस्था पूछना; २३६-राजकुँवरका अपनी विरह अवस्था बताना; २३७-सर्पवाली घटना बताना; २३८-राक्षस मारनेकी घटना सुनाना; २३९-चरवाहेवाली घटना कहना; २४०-ऑख फोड़कर निकल भागनेकी बात बताना; २४१-मिरगावतीका यह सब सुनकर धरना और गले लगाना; २४२-२४४ रति वर्णन ।

राजकुँवरका दरवार—

२४५-प्रातःकाल लोगोंका राजकुँवरको भेंट; २४६-मिरगावतीका सभा आयोजन करनेको कहना; २४७-राजकुँवरका लोगोंको भेंट देना; २४८-राजकुँवरका पान भेंट करना; २४९-सभाका वर्णन; २५०-नृत्य-संगीतका आयोजन; २५१-२५४-संगीत वर्णन; २५५-२५६-नृत्य वर्णन; २५७ नर्तकीको भेंट ।

सहेलियोंके बीच मिरगावती—

२५८—सहेलियोंका आगमन; २५९—सहेलियोंका पूछना और मिरगावतीका बताना; २६०—मिरगावतीका राजकुँवरकी प्रशंसा; २६१—सखियोंका न्योछावर लाना ।

राजकुँवरका अपहरण—

२६२—मिरगावतीको सखीका निमन्त्रण; २६३—मिरगावतीको राजकुँवरकी अनुमति प्राप्ति; २६४—मिरगावतीका राजकुँवरसे ओबरी खोलनेका निषेध; २६५—मिरगावतीका सखीके घर जाना; २६६—जिशासावश राजकुँवरका ओबरी खोलना और कटघरेमें बन्द व्यक्तिकी गुहार; २६७—राजकुँवरका उससे बन्दी होनेका कारण पूछना और उसका बताना; २६८—कुँवरका कटघरा खोल देना और उसमेंसे राक्षसका निकलकर कुँवरको कंधेपर रख आकाशमें उड़ जाना; २६९—कुँवरका पश्चाताप; २७०—ईश्वरसे प्रार्थना; २७१—राक्षसका अपहरणका कारण बताना; २७२—कुँवरका राक्षससे कहना; २७३—राक्षसका कुँवरसे पूछना किस ढंगसे तुम्हें मारूँ; २७४—राक्षसका राजकुँवरको समुद्रमें फेंकना; २७५—राजकुँवरका थोड़े पानीवाले स्थानमें गिरना; २७६—राजकुँवरका भयभीत होना ।

राजकुँवरकी खोज—

२७७—सखीके घरपर मिरगावतिके मनमें शंका उठना; २७८—चेरीका आकर राजकुँवरके अपहरणका सूचना देना; २७९—२८०—मिरगावतीका विलाप; २८१—राजकुँवरके अपहरणके समाचारसे नगरमें खलबली; २८२—सखीका मिरगावतीको समझाना; २८३—रानीका राजकुँवरके ढूँढनेका यत्न करना; २८४—एक व्यक्तिका आकर राक्षसके पकड़े जानेकी सूचना देना; २८५—२८९—राक्षसको यातना देकर राजकुँवरका पता पूछना; २९०—मिरगावतीका विलाप ।

पवन-सन्देश—

२९१—मिरगावतीका पवन द्वारा सन्देश भेजना; २९२—पवनका सन्देश लेकर जाना; २९३—राजकुँवरको ढूँढकर सन्देश कहना; २९४—सन्देश सुनकर राजकुँवरका अपनी अवस्था कहना; २९५—पवनका लौटकर मिरगावतीको सूचित करना; २९६—पवनका मिरगावतीको साथ लेकर जाना; २९७—दोनोंका घर लौटना; २९८—नगरमें आनन्द ।

मान-भाव—

२९९—मिरगावतीका कथन; ३००—राजकुँवरका उत्तर; ३०१—मिरगावतीका प्रत्युत्तर; ३०२—राजकुँवरका रुष्ट होना, मिरगावतीका मनाना; ३०३—मिरगावतीका प्रसन्न होना; ३०४—प्रेमके गाढ़ेपनका वर्णन ।

रूपमणिकी अवस्था—

३०५—रूपमणिका राजकुँवरकी प्रतीक्षामें समय बिताना; ३०६-३१०—सखियोंसे अपनी विरहावस्था कहना; ३११—नित्य बाट जोहना; ३१२-३१३ वियोगका दुःख; ३१७—ऊँचे भवनपर चढ़कर मार्ग देखना—३१८—चाँदको देखना; ३१९—बनजारेका आगमन । ३२०—बनजारेका रूपमणिके पास आना ।

रूपमणिका विरह-विलाप—

३२१—रूपमणिका रुदन और बनजारेसे अपनी अवस्था कहना; ३२२—सावन मासकी अवस्था, ३२३—भादों मासकी अवस्था; ३२४—आश्विन मासकी अवस्था; ३२५—कार्तिक मासकी अवस्था; ३२६—अग्रहन मासकी अवस्था; ३२७—पूस मासकी अवस्था; ३२८—माघ मासकी अवस्था; ३२९—फागुन मासकी अवस्था; ३३०—चैत मासकी अवस्था; ३३१—वैशाख मासकी अवस्था; ३३२—जेठ मासकी अवस्था; ३३३—असाढ़ मासकी अवस्था; ३३४—अपनी अवस्थाकी तुलना बिना खेवकके नावसे करना; ३३५—मिरगावतीको सन्देश; ३३६—अपनी अवस्था दुहराना ।

बनजारेका राजकुँवरसे भेंट—

३३७—बनजारेका प्रस्थान; ३३८—विरहाग्निसे मार्गकी वस्तुओंका जलना; ३३९—गड़ेरियाका अपनी आँख फोड़नेकी बात बताना; ३४०—बनजारेका कंचनपुर पहुँचना; २४१—कंचनपुर पहुँचकर आश्वस्त होना; ३४२—वणिकोंका माल खरीदने आना और बनजारेका केवल राजाके हाथ माल बेचनेकी बात कहना; ३४३—बनजारे की बात फैलते-फैलते राजकुँवरतक पहुँचना; ३४४—राजकुँवरका नायकको बुलवाना; ३४५—राजकुँवरका ब्राह्मणको पहचानना; ३४६—उससे पारिवारिक कुशल पूलना; ३४७-३४८—ब्राह्मणका पिताका सन्देश कहना; ३४९—माताका सन्देश और रूपमणिकी अवस्था कहना; ३५०-३५३—रूपमणिकी अवस्था बताना; ३५४—ब्राह्मणकी बात सुनकर राजकुँवरका धवराना और मिरगावतीसे कहना; ३५५—मिरगावतीका रायभानको राज देनेकी बात कहना ।

प्रस्थान—

३५६—रायभानका राजतिलक; ३५७—सुदिन देखकर प्रस्थान की तैयारी; ३५८—मिरगावतीका सखियोंसे विदा लेना; ३५९—प्रस्थान; ३६०-३६०—कर्मचारियोंको समझाना; ३६१—मार्गकी व्यवस्था; ३६२—गड़ेरियाके घरके पास पड़ाव; ३६३—कुँवरका लोगोंको गड़ेरियाका दुर्गुण बताना; ३६४—कुँवरका जाकर खोह देखना; ३६५—वहाँसे प्रस्थान ।

सुबुध्यामें राजकुँवरका आगमन—

३६६—राजकुँवरको आते देख सुबुध्यामें खलबली; ३६७—रूपमणिके मनमें हलास; ३६८-३६९—रातमें स्वप्न; ३७०—स्वप्न-विचार; ३७१—ब्राह्मणका द्वारपर आना;

३७२-रूपमणिका काग उड़ाना; ३७३-दूलभका आकर रूपमणिको सन्देश कहना; ३७४-दूलभका राजाको सन्देश; ३७५-स्वागतके लिए राजाका जाना; ३७६-राज-कुँवरका आगमन।

रूपमणि-राजकुँवर—

३७७-रूपमणिका कुँवरके पास आना और मान करना; ३७८-कुँवरका रूप-मणिको सेजपर बैठाना; ३७९-३८१-परस्पर मान-भाव; ३८२-संभोग; ३८३-इच्छाकी पूर्ति; ३८४-बीती बात भुलाना।

राजकुँवर-मिरगावती—

३८५-द्वन्द, उद्वेग और उचाटका मिरगावतीके पास जाना; ३८६-सुख आनन्दकी राजकुँवरसे गुहार; ३८७-राजकुँवरको देखकर मिरगावतीका पीठ फेर लेना; ३८८-राजकुँवरका समझाना।

सुबुध्यासे प्रस्थान—

३८९-राजकुँवरका दूलभको राजासे विदा माँगनेके लिए भेजना; ३९०-दूलभका आकर रायसे कहना; ३९१-रूपमणिकी माँका दूलभसे अनुरोध; ३९२-विदाई।

चन्द्रागिरि-आगमन—

३९३-चन्द्रागिरि निकट आनेपर दूलभको पहले भेजना; ३९४-राजाको सूचना; ३९५-राजकुँवरके भाग्योदयका वर्णन; ३९६-पिताका आगमन सुनकर राजकुँवर अपने आदमियोंको आदेश; ३९७-पिता-पुत्रका मिलना; ३९८-दोनों रानियोंका राज-महलमें प्रवेश।

मिरगावती-रूपमणि कलह—

३९९-राजकुँवरकी अनुपस्थितिमें ननदका आकार मिरगावतीसे रूपमणिकी चुगली; ४००-रूपमणिकी चेरीका बात सुनकर जाकर कहना; ४०१-मिरगावतीका रूपमणिकी निन्दा करना; ४०२-रूपमणिका उत्तर; ४०३-लड़ाई सुनकर सासका आना; ४०४-सासका दोनोंकी भर्त्सना करना; ४०५-दोनोंका रूठना और राजकुँवरका परिवारके साथ आकर मनाना; ४०६-मिरगावतीको समझाना; ४०७-मिरगावतीकी सफाई; ४०८-सासका रूपमणिको समझाना; ४०९-दोनोंमें मेल-मिलाप कराना।

राजकुँवरकी मृत्यु—

४१०-पारधीका वनमें सिंहके आनेकी सूचना देना; ४११-सिंह द्वारा गज-मस्तक खानेकी बात कहना; ४१२-राजकुँवरका उसे मारनेका निश्चय करना; ४१३-पारधीके साथ राजकुँवरका वनमें जाना; ४१४-सिंहको सोते देखना; ४१५-सिंहका

जागना और गरजना; ४१६—सिंहका खण्ड-खण्ड होना और बाणका कुँवरके हृदयमें लगना; ४१७—हाथोका राजाको पकड़नेकी चेष्टा और बाण खाकर भागना; ४१८—सिंह और राजकुँवरकी मृत्यु; ४१९—मृत्युकी निश्चिततापर कविकी उक्ति; ४२०—पारधीका पेड़से उतरना; ४२१—जाकर राजाको सूचना देना; ४२२—राजाकी मृत्यु; ४२३—पारधीका करनरायसे गुहार; ४२४—करनरायकी आत्महत्याकी चेष्टा; ४२५—लोगोंका करनरायको समझाना; ४२६—लोगोंका रोते-पीटते जाना; ४२७—मिरगावतीको राजकुँवरके मृत्युकी सूचना; ४२८—मिरगावती और रूपमणिका शवके साथ सती होना; ४२९—सेवकोंका साथमें जल मरना ।

राज्यभिषेक—

४३०—करनरायको राजतिलक ।

उपसंहार—

४३१—रचनाके सम्बन्धमें कवि-वचन; ४३२—ईश्वरोपासनाको प्रेरणा ।

१-३

(एकडला)

[-----] अलख करतारू । रमि कै रहेउ' सवै (सयँसारू) ॥१
[अलख*] निरंजन लखै न (काई) । जोति सरूप जो लखत भुलाई ॥२
[-----] मन्द सिध परमेसा । ना उहि तिरी न (पुरुख) क भेसा ॥३
माता पिता बन्धु नहिं कोई । एक अकेल न (दूसर) होई ॥४
[दोइ*] कहै सो नरकहि जाई । एक एक बिहंगम चिल्लाई ॥५
एक अकेल सो रे वह करता, (दूसर) करै न कोय ॥६
गनि गुन देखा पण्डितहिं, वह सो (आन) न होय ॥७

मूल पाठ—१-रहेव । २-संसारू । ३-कोई । ४-पुरुष । ५-दोसर । ६-दोसर ।
७-चैन ।

४

(दिल्ली)

[-----] । [-----] ॥१
[-----] । [-----] ॥२
[-----] । [-----] ॥३
[-----] । [-----] ॥४
[-----] । [-----] मो लछ देइ सब ठाँई ॥५
कहू विध करै सयानाँ, पंछी विनहि परान ॥६
मन चंचल अस्थिर जनु इहै, निस्चल कै अस जान ॥७

५

(दिल्ली)

[जो यह*] रचि के चरित पसारा । सो घट महिं जो [---] सँहारा ॥१
[चित्र*] देखि के खोज चितेरा । खोज करहु तो मिलै सो नेरा ॥२
[अपनी*] दिस्टि जाइ जिह केरी । सोइ ठँ वह जोत सौतेरी ॥३
[परम*] तत्त सेउ लागै तारी । सहज रहै मन पिरत सँभारी ॥४
[-----] म जब लग दिन धावा । रैन भयँ पाछँ पछतावा ॥५

काँम कोह तिसना मन माया, पंच बियापहि कत ॥६
पावक पवन धूर औ पानी, जवलग हम्ह सँग सत्थ ॥७

टिप्पणी—(२) नेरा-निकट ।

६

(दिल्ली; एकडला)

पहिलें नूर मुहम्मद^१ कीन्हां^२ । पाछे तेहि क (जात)^३ सब (चीन्हा)^४ ॥१
[औ तेहि] लग आपुहि परगटा^५ । सिव सकति^६ कीनसि^७ दोइ^८ घटा ॥२
[जेहि] रसनाँ वहि^९ नाँउं न आवा । पावक जरें मॉख नहिं पावा ॥३
[वहै] नाँउ कै^{१०} बकति सुनावहु । मुकति होइ ईंदरासन^{११} पावहु ॥४
[भ]रम छाड़ि के होहु सयाने । नाँउं भरम कस फिरहु भुलाने ॥५
जिह लग सब सयँसार रचाया^{१२}, बहुत भावना भाउ ।६
पंछी पन्थ पुरान लै, सो राना सो राउ^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-मोहमद । २-कीन्हीं । ३-जत; (दि०) चिन्ता । ४-चीन्ही; (दि०) लीन्हा ।
५-परगटी । ६-सकती । ७-कीतिसि । ८-दुइ । ९-उवहि । १०-हियै नाव लै ।
११-इन्द्रासन । १२-ही लगि ऐ' 'र रचाया । १३-पूरी पंक्ति रिक्त ।

टिप्पणी—(१) नूर-ज्योति । हदीसके अनुसार ईश्वरने सर्वप्रथम नूर अर्थात् ज्योतिको
उत्पन्न किया था । वही ज्योति मुहम्मद साहबके रूपमें प्रकट हुई ।
जात-जाति, वर्ण, रूप । चीन्हा-अंकित किया; चित्रित किया ।

(२) सिव सकति-शिव और शक्ति ।

(३) बकति-उक्ति, बोल, कथन । ईंदरासन-स्वर्ग ।

७

(दिल्ली, एकडला;^१ चौखम्भा)

चार भीत कर^१ सुनहु बखाना । [अवा बकर साँ सुध कै^२ जाना] ॥१
उमर उन्ह सेउं दूसरे^३ ठाँउं । जिहकै^४ अदल क आहै नाऊं ॥२
उसमन बचन^५ दर्ई^६ कै लिखे । जे^७ रे मुहम्मद अरहे^८ सिखे ॥३
अली सिंध बुधि आपुन गहा^९ । दूखम गढ़ इन्ह सेउ न [रहा]^{१०} ॥४
अस्टधानु कै^{११} पँवर उपारे^{१२} । कर सेउ^{१३} उलटि पुहुमि घर^{१४} मारे^{१५} ॥५
चारेउ^{१६} भीत आह बड़ पण्डित^{१७}, औ चारेउ^{१८} समतूल ।६
जिह पन्थ दिखराय दीन्हीं^{१९}, तिह कँह^{२०} जरम न भूल^{२१} ॥७

१. इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ है ।

२. यह पृष्ठ भारत कला भवनमें प्राप्त नहीं है । सम्मेलन संस्करणपर आश्रित ।

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ ।

१-(ए०) ...जोत कै । २-(चौ०) बकर मुधि कै । ३-(ए०) उनसौं दूसर;
(चौ०) उहि सौं दूसरि । ४-(ए०) जेहिके । ५-(चौ०) राजचर्न । ६-(ए०)
दैह्य; (चौ०) दीन । ७-(ए०) जो । ८-(ए०) मोहंमद अधरहु; (चौ०)
महमद अदये । ९-(ए०) अली सिंह विधि आपन कीन्हा; (चौ०) अली सेर
विधि आपन कहा । १०-(ए०) दुगम गढ़ उन्ह सौं नहिं दीन्हा; (चौ०)
अगमगढ़ उन सौं कर रहा । ११-(ए०) असट धातुकी पौरि उपारी; (चौ०)
असत धातुकी पवर उपारे । १२-(ए०) करसौं; (चौ०) गढ़ सौं । १३-(ए०)
पुहुमी धर; (चौ०) पोहमी दै । १४-(ए०, चौ०) मारी । १५-(ए०) × ।
१६-(चौ०) चार मीत बड़ पण्डित चारौ हैं । १७-(ए०) चारौं १८-(ए०) हाथ
देखाये दीन हैं । १९-(ए०) ताकहँ । २०-(चौ०) मानसरोदक अमल,
भरें कवँल कर फूल ।

टिप्पणी—(१) चार मीत—मुहम्मद साहबके पश्चात् होनेवाले चार उत्तराधिकारी
खलीफा—अबूबक्र (६३२-६३४ ई०), उमर (६३४-६४४ ई०), उसमान
(६४४-६५६ ई०), अली (६५६-६६ ई०) । अबा बकर—अबूबक्र । सुध-
शुद्ध (अबूबक्र सिद्दीक कहे जाते हैं और उनकी ख्याति सत्यवादीके
रूपमें है । उसीकी अमिव्यक्ति इस शब्द में है) । कै—कौन ।

- (२) उमर—उमर फारूख कहे जाते हैं; सत्-असत्का विवेक उनका गुण था ।
निष्पक्ष न्यायके लिए इनकी ख्याति है । अदल—न्याय ।
- (३) उसमन—उसमान । इन्होंने कुरानको अन्तिम रूपसे लिखित रूप दिया था ।
अरहे—(क्रि०—अदवना) किसी कामको समझाकर उत्तरदायित्वके साथ
किसीको सौंपना ।
- (४) अली—ये असद अर्थात् सिंह कहे जाते हैं । दूखम गढ़—दुर्गम गढ़; यहाँ
शाम (सीरिया)के निकट खैबर नामक यहूदी राज्यके कामूस नामक किलेसे
तात्पर्य है ।
- (५) अस्तधातुका पँवर—कामूसके किलेका प्रवेश द्वार । (अलीने शाम (सीरिया)के
सीमाके निकट यहूदियोंके राज्य खैबरपर विजय प्राप्त की थी और उसके
दुर्ग कामूसके प्रवेश द्वारको ढाह दिया था) ।

८

(दिल्ली; एकडला; चौखम्भा)

सेख बढ़न' जग साँचा पीर' । नाउँ' लेत सुध होइ [सरीर]' ॥१
कुतुबन नाउँ' लै र' पा धरे । सुहरवर्दी' दुँहु जग निरमरे ॥२

पछिले पाप धोइ सब गये। जो र पुराने औ सब नये ॥३
 नौ के आज भयउ^{१०} अउतारा^{११}। सब सँउ^{१२} बड़ा जो^{१३} पीर हमारा ॥४
 जिह कह^{१४} बाट देखाये^{१५} होई। एक निमिख मँह पहुँचै सोई^{१६} ॥५
 जो यह^{१७} पन्थ दिखाइ^{१८} दीन्हि^{१९} हे, जो चलि जानै कोइ ॥६
 एक निमिख मँह पहुँचै^{२०} तिह ठाँ^{२१}, जो सत भावइ सोइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ ।

१-(ए०, चौ०) बुढ़न । २-(ए०) पीरु । ३-(ए०) नाँव; (चौ०) नाम । ४-
 (ए०) सरीरु । ५-(ए०) नाँव; (चौ०) नाम । ६-(ए०) रे; (चौ०) लेइ ।
 ७-(ए०) सरवरदी; (चौ०) सहरवरद । ८-(चौ०) पछले । ९-(ए०) झरहिं
 पुरान और; (चौ०) झरहिं पुराने और । १०-(ए०) भये । ११-(चौ०) नै के
 भया आज औतारा । १२-(ए०) सौं; (चौ०) सौं । १३-(चौ०) सो ।
 १४-(ए०) जा कहें; (चौ०) जिह को । १५-(ए०) देखाई; (चौ०) दिखाई ।
 १६-(चौ०) पोहचे एक निमक मँह सोई । १७-(ए०) गुरु; (चौ०) जो उन्ह ।
 १८-(ए०, चौ०) देखाय । १९-(चौ०) दीन । २०-(चौ०) निमिक एक मँह
 पोहचे । २१-(ए०, चौ०) × । २२-(ए०) जो सत भाव सै होय; (चौ०) जो
 सत भाव सो होय ।

टिप्पणी—(१)शेख बुढ़न—कवि-परिचय (पृ० १४) में हमने अजौली निवासी मखदूम
 शेख बुढ़नके, जो ईसा ताज जौनपुरीके शिष्य थे, कुतुबनके गुरु होने की
 सम्भावना प्रकट की है; किन्तु किसी सूत्रसे उनके सुहरवदी सम्प्रदायसे
 सम्बद्ध होने की बात शत न होनेके कारण, उसके सम्बन्धमें कोरे अनुमानका
 सहारा लिया है। उक्त अंशके छप जानेके पश्चात् हमें शत हुआ कि सुहरवदी
 सम्प्रदायसे सम्बन्ध रखनेवाले वस्तुतः शेख बुढ़न नामक एक सन्त हुए हैं
 जो जौनपुरसे लगे हुए कस्बे जफरावादके निवासी थे। विगत शताब्दीके
 आरम्भमें वहीके निवासी नूरुद्दीन जैदीने फारसीमें तजल्लिये-नूर नामसे तीन
 भागोंमें जौनपुरका विस्तृत इतिहास लिखा था। उनके हाथ की लिखी इस
 ग्रन्थ की सम्पूर्ण मूल प्रति जौनपुरके खानकाहमें सुरक्षित है। इस ग्रन्थमें
 उन्होंने उक्त शेख बुढ़नका उल्लेख किया है। उसके अनुसार शेख बुढ़नका
 वास्तविक नाम शम्सुद्दीन था, वे रुकुद्दीनके पुत्र और सदरुद्दीन चिरागे-
 हिन्दके पौत्र थे। उसी सूत्रसे यह भी शत होता है कि बिहारके मुक्ती
 (शासक) मलिक इब्राहीम बयाँ उनकी दादीके पिता थे; और उनकी दादी
 उनके पितामह की दूसरी पत्नी थीं। सदरुद्दीनके सम्बन्धमें यह भी बताया
 गया है कि ७९५ हिजरीमें उनकी मृत्यु हुई। ऐतिहासिक सूत्रोंसे मलिक बयाँ
 की निधन तिथि ७५३ हिजरी शत होती है। उनके पुत्र मलिक मुवारिक
 ७८१ हिजरीमें दलमऊके मीर थे; यह मौलाना दाऊद कृत चन्दायनसे शत

होता है। इन तिथियोंके प्रकाशमें कहा जा सकता है कि शेख बुदनकी दादीका जन्म ७५३ हिजरीसे पूर्व और विवाह ७९५ हिजरीसे पूर्व किसी समय हुआ होगा और वे निस्न्देह मलिक मुबारिकसे छोटी रही होंगी। इस प्रकार यदि अनुमान करें कि शेख बुदन की दादी का जन्म अपने पिता की मृत्युसे दो तीन वर्ष पूर्व ७५० हिजरीके आस-पास हुआ तो उनके पिताके सम्बन्धमें कह जा सकता है कि उनका जन्म ७७० हिजरी या उसके बाद, ७९५ हिजरीसे पूर्व, किसी समय हुआ; और इसी प्रकार शेख बुदन का जन्म ७९० हिजरीके बाद ही किसी समय होनेकी बात कही जा सकती है। इन सम्भावनाओंके प्रकाशमें सुगमताके साथ यह भी अनुमान किया जा सकता है कि यही शेख बुदन कुतुबनके पीर रहे होंगे। उनसे कुतुबनने अपनी युवावस्थामें ८५०-६० हिजरीके आस-पास किसी समय दीक्षा ली होगी। अतः अब मखदूम शेख बुदनके कुतुबनके गुरु होनेकी क्लिष्ट कल्पना करनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती। इस नये तथ्यकी जानकारीके प्रकाशमें बुदनके स्थानपर बुदन पाठ को ही, जो बीकानेर और चौखम्भा प्रतियोंका पाठ है, स्वीकार करना उचित होगा। उसे हमने दिल्ली प्रतिमें उकारात्मक चिह्नके अभावमें बुदनके रूपमें स्वीकार किया था। पीर-गुरु।

(२) सुहरवर्दी—एक सूफी सम्प्रदाय जिसे शेख जुनेदके शिष्य शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दीने तेरहवीं शताब्दीमें आरम्भ किया था। इन्होंने मक्कामें अवारिकुल-मारुफ (ईश्वरीय-ज्ञानका प्रसाद) नामक पुस्तक लिखी जो सूफी सम्प्रदायमें प्रमाण-ग्रन्थ माना जाता है। शिहाबुद्दीनके शिष्योंने बगदादसे आकर भारतमें इस सम्प्रदायका प्रचार किया।

(३) निमिख-निमिष; क्षण; पल।

(४) तिह-उस। ठाँ-स्थान।

९

(दिल्ली; एकडला; चौखम्भा)

साह हुसैन आह वड़ राजा। छात सिंघासन उन्ह पैं छा[जा] ॥१
पण्डित औ बुधवन्त सयानाँ। पोथा बाँच^१ अरथ सब जानाँ ॥२
धरम दुधिस्टिल उँह कहँ^१ छाजा। हम सिर छाँह जियउ^१ जुग राजा ॥३
दान देइ^१ बहु गिनति^१ न आवा^१। बलि औ करन न सरवरि पावा^१ ॥४
राइ^१ जहाँ लहि^{१०} गँधरप अहइ^{११}। सेवा करहि^{१२} वारि^{१३} सब चहइ^{१४} ॥५

१. यह पृष्ठ भारत कला भवनमें नहीं है। सम्मेलन संस्करणपर आश्रित।

चतुर सुजानाँ^{११} भाखाँ^{१२} सब जानाँ^{१३}, अइस न देखेंउ^{१४} कोइ ॥६
सभाँ^{१५} सुनउ^{१६} सब कान दइ^{१७}, फुनि र बखानों^{१८} सोइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ ।

१-(ए०) छत पत सब उनहीं पै; (चौ०) छत्र सिंहासन उनको । २-(चौ०) पढ़ै पुरान । ३-(चौ०) उनको । ४-(ए०) जीउ; (चौ०) जियो । ५-(ए०) देय । ६-(ए०) गनत । ७-(ए०) आवै । ८-(ए०) पावै । ९-(ए०) राय । १०-(चौ०) लीं । ११-(ए०) गंध्रप अहही । १२-(ए०, चौ०) बार । १३-(ए०) चहहों; (चौ०) रहहीं । १४-(चौ०) महाजन । १५-(ए०) भाषा । १६-(ए०) जानै । १७-(ए०) ऐस न देखै; (चौ०) ऐस न देखूँ । १८-(चौ०) सवा । १९-(ए०) सुनहु । २०-(ए०) दै । २१-(ए०) रे बखानें; (चौ०) रे दिखावहु ।

टिप्पणी—(१) शाह हुसैन-देखिये परिचय पृ० १८-२५ । छात-छत्र । छाजा- (प्रा० धात्वादेश छज्ज) मुशोभित होना ।

(२) पोथा-ग्रन्थ ।

(३) दुधिस्टिल-युधिष्ठिर ।

(४) बलि-मुप्रसिद्ध पौराणिक दानी जिससे वामन रूप धारणकर विष्णुने तीन पग भूमिकी याचनाकर सारा विश्व नाप लिया था । करन-कर्ण; महाभारतका प्रसिद्ध वीर, कुन्तीका पुत्र, जो अपने दानके लिए प्रख्यात है । रणभूमिमें आहत पड़े रहनेपर भी छद्मवेशधारी कृष्ण और अर्जुनको उसने अपना दाँत तोड़कर उसमें लगे सुवर्णका दान दिया था । सरबरि-सरमरि, बराबरी ।

(५) राइ-राजा । गँधरप-गन्धर्व । अहई-हैं । बारि-अवसर । चहई-चाहते हैं ।

१०

(दिल्ली; एकडला)

अगिनित^१ टाट गिनत^२ न आवा । खरदम खेह गगन सब छावा^३ ॥१
अपुनहि सँझर आनें कर पावा^४ । पाछे परै सो धूरि (फकावा)^५ ॥२
मेघडम्बर छाता बहु^६ तानै । सेवा करहि राउ^७ औ रानें ॥३
तुरिय टाप अस खेह उड़ानी । आथिअम्बर भव पुहुमि जिह जानी^८ ॥४
गज गवन^९ जग साँसो होई । वासुकि इन्द्र दुहौ^{१०} बुधि खोई ॥५
जिय^{११} दान जो चाहै, दिन दस^{१२} सेवा करो^{१३} सौ^{१४} वार ॥६
जाकहँ भौंह होइ चख^{१५} मैली, सो र होइ^{१६} जरि छार ॥७

मूल पाठ—(२) पकावा ।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-अंगत । २-बहु गनत । ३-अमिय सुझर आगे कर पावा । ४-पाछे परै जो बंक बुकावै । ५-घोर महि गगन खेह सब छावै । ६-सव । ७-राव । ८-आँधि-

यसर मै पुहुमी छपानी । ९-राजा गौने १०-दुहँ । ११-जीउ । १२-×।१३-
करै । १४-सो । १५-होय जुख । १६-रे होय ।

टिप्पणी—(१) ठाट-सेना । खरदम-(स० कर्दम); कीचड़, काँदो । खेह-धूल ।

(२) अपुनहि-स्वयं ।

(३) मेघदम्बर छाता-काला रेशमी छत्र ।

(४) तुरिय-बोड़ा ।

११

(दिल्ली)

डाँड़ इन्द्र वासुकि सँउ लेई । अउर डाँड़ लंकेसर देई ॥१
इँह बड़ न कोई गुनी सयानाँ । देवतहिं आयसु इँह कर मानाँ ॥२
जासों हँसि कै वात एक कहिहँ । दुख दारिद औ पाप न रहिहँ ॥३
पिरिथ म अइस भयउ न कोई । सर तो देउँ सुनेउ जो होई ॥४
पाप पुत्र लेउँ जरमहिं काऊ । धरम करत कछु कहि जाऊ ॥५

अधरम कियउ न जग महुँ काउ, धरम कराहिं बहु भाँत ॥६

निस बासर विवि तैसहिं चितहिं, बुधि परसहिं तो साँत ॥७

टिप्पणी—(१) डाँड़-दण्ड, कर ।

(२) आयसु-आदेश ।

(३) जासों-जिससे ।

(४) अइस-ऐसा

(५) निस बासर-दिन-रात । विवि-द्वय, दोनों ।

१२

(दिल्ली; एकडला)

पढ़हिं पुरान कठिन जो होई । अरथ [कहहिं] समुझावइ [सोई] ॥१
एक एक बोल क दस दस भाषा । पंडितहिं अचकर^१ बकति^२ न आषा ॥२
अउर^३ बहुत उन्ह केरि बढ़ाई । हमरें कहे कहाँ कहि जाई ॥३
मुँह महुँ^४ जीम सहस जो होई । तोर^५ बढ़ाई करै जो कोई ॥४
जब^६ लागि अस्थिर^७ रहे सुमेरू । हरि-भारजा वहै जमु नेरू^८ ॥५

सवन^९ सुनहु चित लाइ कर^{१०}, कहों वात हों^{११} एक ॥६

आउ बढ़ौ हुसेनसाह कै^{१२}, आह जगत कै टेक ॥७

पाठन्तर—एकडला प्रति ।

१-कथा । २-पण्डित क । ३-अजगुति । ४-बकत । ५-सीर । ६-× । ७-तौ

रे । ८-× । ९-अस्थिर । १०-जम नीरू । ११-सवन । १२-लाय कै । १३-मैं ।

१४-जाउ बढ़ो जस मैं कही ।

टिप्पणी—(१) पुरान-धर्मग्रन्थ

- (२) अचकर-चकित । वकति-(उक्ति) बोल, वचन ।
 (३) उन्ह केरि-उनकी । हमरें-मेरे ।
 (४) तोर-तुम्हारा ।
 (५) अस्थिर-स्थिर, दृढ़ । सुमेरु-सुमेरु पर्वत । हर-भारजा-गंगा । जसु-यमुना ।
 नेरु-निकट ।
 (६) सवन-श्रवण । हौं-मैं ।
 (७) आउ-आयु ।

१३

(दिल्ली; चौखम्भा)

उन्ह के राज यह र हम कही^१ । नौ सै नौ^२ जौ^३ संवत अही ॥१
 माह मुहर्रम चाँदहि चारी^४ । भई सपूरन कही निवारी^५ ॥२
 गाथा^६ दोहा अरिला रचा^७ । सोरठा चौपाइन्ह^८ के सजा^९ ॥३
 साखी आखर बहु आये^{१०} । औ देसी चुनिचुनि सब^{११} लाये ॥४
 पढ़त सुहावन दे जै^{१२} कानूँ । यहि^{१३} के सुनत न भावइ^{१४} आनू ॥५
 दोइ^{१५} रे माँस दिन दस मँह^{१६}, जोरत यह ओरानेउ जाइ^{१७} ।६
 एक बोल मोति^{१८} जस पिरवा,^{१९} बकता चित मन लाइ^{२०} ॥७

पाठान्तर—चौखम्भा प्रति ।

- १-पूरी पंक्ति अनुपलब्ध । २-नव । ३-जब ४-रे अ मोहर्रम चाँद उजियारी ।
 ५-यह कवि कही पूरी सँवारी । ६-गाथा । ७-अरैल अरज । ८-चौपाई । ९-
 सरज १०-सास्तर अपिर बहुतै आये । ११-कलु । १२-दीजै । १३-इह । १४-
 भावै । १५-दोय । १६-माहीं । १७-यह रे दौराये आये । १८-मोती । १९-
 पुरवा । २०-इकठा मन चित लाये ।

टिप्पणी—(१) जौ-जब । अही-थी ।

- (२) माह-मास, महीना । मुहर्रम-इस्लामी गणनाके अनुसार पहला महोना ।
 चारी-चतुर्थी, चौथ । सपूरन-सपूर्ण ।
 (३) गाथा-प्राकृत और अपभ्रंश साहित्यमें प्रयुक्त विषम छन्द जिसके प्रथम चरण-
 में १२, दूसरेमें १८, तीसरेमें १३ और चौथेमें १५ मात्राएँ होती हैं । दोहा-
 २४ मात्राओंका छन्द जिसमें १३ और ११ पर विराम होता है । यह तुकान्त
 होता है । अरिला-अरिल्ल, १६ मात्राओंका छन्द जिसके अन्तमें यगण(लघु,
 गुरु, गुरु) होता है । सोरठा-२४ मात्राओंका छन्द जो दोहेका ठीक
 उल्टा है अर्थात् ११, १३ मात्राओं पर विराम होता है और इसमें पहले

और तीसरे पदके तुक मिलते हैं। चौपाइन्ह-चौपाई। १६ मात्राओंका छन्द जिसकी अन्तिम मात्राएँ जगण (लघु, गुरु, लघु) होती हैं।

- (४) साखी-शाखीय, यहाँ तात्पर्य संस्कृतसे है। आखर-अक्षर।
 (५) जै-जो। भावइ-भाता है, मुहाता है। आनू-अन्य, दूसरा कुछ।
 (६) दोइ-दो। जोरत-जोड़ते हुए। ओरानेउ-समाप्त हुआ।
 (७) बकता-वचन।

१४

(दिल्ली)

तो हम एक कथा यह कही। जो हमरे सेउ सवनीं आही ॥१
 वात नरिन्द कही अनुसारी। सुनहु कान दै कहीं सँवारी ॥२
 औ सब कथा न आहहि पहिले। कुछर पहिलें कुछ जैसन चले ॥३
 रस क लंक निरमर बड़ आही। दूसर ओर दिखावहु ताही ॥४
 यह कर विलग न मानै कोई। लेहु सँवार को टूटत होई ॥५
 जे करतार बड़कर सरजी, ते र छिपाव न दोख ॥६
 जो न कहा पुरखहँ कर मानै, तिहँ कँह आह न मोख ॥७

टिप्पणी—(१) हमरे सँउ-मुझसे। सवनीं-सुनी। आही-थी।

(२) आहहिं-थे। जैसन-जिस प्रकार।

(७) पुरखहँ-पूर्वज (बहुवचन)। आह-है। मोख-मोक्ष।

१५

(दिल्ली; एकडला)

एक वात अब कहउँ रसाल^१। रतन मोंति^२ आनउँ भरि थाल^३ ॥१
 राजा एक सँवन^४ हम सुना। अतिर दानि^५ लोना बहु गुना ॥२
 बहुत कटक अगनित असवारा। धरम पन्थ वह दई^६ सँवारा ॥३
 एकौ राउ व वहि सों^७ पारइ^८। जो र^९ जूझ सो ततखन^{१०} हारइ^{११} ॥४
 जो कछु चाहे^{१२} सो सब आहा^{१३}। एक न पूत नाँउ जिह^{१४} रहा ॥५
 अरथ दरब हाथी बहु^{१५} घोरा, गिनत न आउ भँडार^{१६} ॥६
 माँगै पूत दुउ^{१७} कर जोरी^{१८}, बेगि देहु^{१९} करतार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

- १-कहाँ रिसाल। २-मोती। ३-थाल। ४-सौन। ५-दानी। ६-उन्ह दैअ।
 ७-सौं। ८-पारहिं। ९-रे। १०-ततखन। ११-हारहि। १२-कुछु चाहिअ।
 १३-अही। १४-नाव जेहि। १५-औ। १६-भँडारा। १७-दुहँ। १८-जोरे।
 १९-देहि।

टिप्पणी—(१) आनउँ—लाऊँ ।

(२) सँवन—श्रवण, कान । लोना—(लवणयुक्त) रूपवान ।

(३) कटक—सेना । दई—ईश्वर । असवारा—सवार ।

(४) वहि सों—उससे । पारई—जीत सकते हैं । जूझ—जूझते हैं । ततखन—तत्क्षण;
तत्काल ।

(६) अरथ—अर्थ, धन । दरब—द्रव्य । घोरा—घोड़ा ।

(७) दुउ—दोनों ।

१६

(दिल्ली, एकडला)

खोलि मँडार देइ^१ सब लागा । जिन्ह^२ पावा तिह^३ दारिद भागा ॥१

भूखहि^४ भुगुति^५ पियासहि^६ पानी । नाँगहि^७ कापर दीन्ही^८ आनी ॥२

मन कामना जो पुरवइ^९ आसा । मरम जानि नहि^{१०} करै निरासा ॥३

जो विधि सों मन ईछा माँगी^{११} । पाइ सबै न ऐको खाँगी ॥४

अस माँगा^{१२} विधि हम कों देह । अरथ दरब धन पूत सनेह ॥५

जो माँगेसि सो पायसि बिधि^{१३} सों^{१४}, आसा^{१५} रही न एकोखाँग ।६

एक न पूत तिह^{१६} आहा घर वहि^{१७} कै, सो विधि सों लइ^{१८} माँग ॥७

पाटान्तर—एकडला प्रति ।

१—देय । २—जे । ३—तेहि । ४—भूखेहि । ५—पियासे । ६—दीतिन्हि । ७—पुरवै ।

८—माँगा । ९—आसा मा । १०—१२× । १३—× । १४—उहि । १५—लीहु ।

टिप्पणी—(१) दारिद—दरिद्रता ।

(२) भुगुति—(भुक्ति) भोजन । नाँगहि—नांगों को । कापर—कपड़ा । आनी—लाकर ।

(३) पुरवइ—पूरा करै । मरम—(मर्म) मन की बात ।

(४) ईछा—इच्छा, मनोकामना । खाँगी—खण्डित, अधूरी; व्यर्थ गयी ।

(६) खाँग—खण्डित ।

१७

(दिल्ली, एकडला)

राजा^१ पूत मँदिर औतारा । अति सरूप धनि [सिरजनहारा] ॥१

ससिहर जनों^२ पूनिउँ कर^३ आहा । भरि उँजियार जगत महँ रहा ॥२

राजें पूत दिस्टि भरि देखा । भा आनन्द अस आउ^४ न लेखा ॥३

करम जोति मनि दिपै लिलारा । लखन बतीसों राजकुवाँरा ॥४

पण्डित औ बुधवन्त हँकारे । रासि गुनहु^५ औ नखत उन्हारे ॥५

गुनि गुनि पतरा देखु^६, कौन गरह दहिनो^७ सुद्ध^८ ।६

नाउ^९ धरहु निरमल उत्तिम^{१०} कै, लखन देखि सब बुद्ध^{११} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-जामा दिन पृत औतारा । २-जनि । ३-कै । ४-आव । ५-राजकुमार ।
६-गनहु । ७-गनि गुनि देखहु पंडितहु । ८-दहु । ९-सुध । १०-नाव ।
११-× । १२-औ बुध ।

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा—सृष्टिकर्ता, ईश्वर ।

(२) ससिहर (शशधर) चन्द्रमा । पूनिउँ—पूर्णिमा । कर-का ।

(३) दिस्टि—दृष्टि ।

(४) मनि—मणि । दिपै—दीप्तिमान, हो ।

(५) हँकारे—बुला भेजा । उन्हारे—उच्च ।

(६) पतरा—पत्र, ज्योतिष ग्रन्थ । गरह—ग्रह ।

(७) नाँउ—नाम । धरहु—रखो । लखन—लक्षण ।

१८

(दिल्ली; एकडला)

बाँभन वैठि गुनै^१ सब लागे । रासि गुनहिं^२ (उन्ह)^३ करम सुभागे^४ ॥१
गुनी^५ रासि बड़ राजा^६ होई । यहि^७ सरि अउर^८ न पूजै कोई ॥२
तुला^९ रासि गुनि^{१०} नाउ^{११} सो राखा । राजकुँवर सब पंडितहि सुभागा^{१२} ॥३
बहुत गरह उन्ह उत्तम गुने^{१३} । कलु रे गरह आहहिं [सामने] ॥४
तिहि^{१४} गुनि गुनि पडितहि कहि^{१५} सोई । तिय बियोग^{१६} कर^{१७} कलु दुख^{१८} होई ॥५
दइ र^{१९} असीस जोतिखी^{२०} बहुरे, पायँहि बहुत विसाउ^{२१} ॥६
धन परिवार कुटुँब सेउँ समेत^{२२}, जुग जुग जीवउ^{२३} राउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-गनै । २-गनहिं । ३-(दि०) दुहुँउं । ४-सभागे । ५-सनि । ६-राज जो ।
७-एहि । ८-और । ९-मुला । १०-गनि । ११-नाव । १२-पण्डितन्ह भाखा ।
१३-गने । १४-× । १५-कहा पुनि । १६-बिउग । १७-आगे । १८-× ।
१९-× । २०-जोतिपी । २१-पसाउ । २२-कुटुँब सौ । २३-जीऔ ।

टिप्पणी—(१) बाँभन—ब्राह्मण ।

(२) सरि—समान ।

(६) जोतिखी—ज्योतिपी । बहुरे—लौटे; वापस गये । विसाउ—सामग्री ।

१९

(दिल्ली; एकडला)

राजें धाईहि आयसु दीन्हा^१ । पालहु वेग जो हमकहँ चीन्हा^२ ॥१
धाइहि अस कै खीर पियावा । बरिस देवस मँह बचन सुनावा ॥२

१. इस प्रति में पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ हैं ।

[वरिस] पाँच मँह भयउ^३ सवाई । राजें पँडितहिं कहा बुलाई^३ ॥३
 तुम्ह^३ सब यह^३ कँह गुनसिखरावहु । पढ़ ओराइ तो वान बुझावहु^३ ॥४
 पंडित आइ^३ पढ़ावइ लागे । जो कछु गुन तेहि^३ चित मँह जागे ॥५
 दस रे वरिस मँह पण्डित^३ अस भा, पोथा बाँच पुरान ॥६
 हँगुरि खेल वेझ भल मारै, नागर चतुर सुजान ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—दीन्ही । २—हमकहु चीन्ही । ३—भयेव । ४—बोलाई । ५—एह । ६—उन्ह ।
 ७—भेजावहु । ८—उन्हहि । ९—ये । १०—X ।

टिप्पणी—(१) आयसु—आदेश । हमकहँ—हमको, मुझको । चीन्हाँ—पहचाने ।

(२) खीर—(क्षीर) दूध ।

(३) ओराइ—समाप्त कर चुके । वान—वाण । बुझावहु—शिक्षा दो ।

(७) हँगुरि—चौगान; आधुनिक पोलो से मिलता-जुलता खेल है जिसमें अनेक
 बुढ़सवार खिलाड़ी मैदान में गेंद डालकर मुड़ी हुई छड़ी से खेलते हैं । वामु-
 देवशरण अग्रवाल का अनुमान है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति हय + अर्गल
 (घोड़े पर चढ़कर खेलने का डण्डा) से होगी । वेझ—(सं० वेध्य) निशाना,
 लक्ष्य । नागर—नगरनिवासी, सभ्य ।

२०

(दिल्ली; एकडला)

अति बुधवन्त अथा^१ भल नाऊँ । सब देखहि^१ आवाहिं वहि^१ ठाऊँ ॥१
 करै अहेरा^१ साउज मार । रात देवस वहि यहँ^१ धमार ॥२
 एक दे[व]स जो अहेरँ^१ जाई । जन राउत संग लिहसि तुलाई^१ ॥३
 सब कहँ बेरहन दीनिहि^१ आनी । पीठ घालि पाखर सुनवानी^१ ॥४
 चढ़^१ असवार साथ सब चले । राजपूत रूपवन्त^१ जो भले ॥५
 रहसत चले जो साथ कुँवर के, खेलै लाग अहेर ॥६
 साउज बहुत अहे तिह^१ वन मँह, होइ लाग भट भेर ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—उठा । २—देखै । ३—उहि । ४—अहेर । ५—उहाँ ओहि । ६—अहेर ।
 ७—लीन्हि बोलाई । ८—दीतन्हि । ९—सोनवानी । १०—भै । ११—रूपवन्त ।
 १२—सावज उठै बहुत तेहि ।

टिप्पणी—(१) ठाँऊ—स्थान ।

(२) अहेरा—आखेट, मृगया, शिकार । साउज—(सं० श्वापद > साउज्ज >
 साउज) जंगली जानवर ।

- (३) राउत—(सं० राजपुत्र > राअउत्त > राउत)—सामन्त, सरदार । तुलाई—निकट बुलाया ।
 (४) बेरहन (?) सवारी । घालि—रखकर । पाखर—पक्खर; अश्व कवच; जीन । सुनवानी—(स्वर्णवर्णा) सुनहला ।
 (६) रहसत—हर्षित होकर ।
 (७) अहे—ये ।

२१

(दिल्ली)

बेगर बेगर सउजँहि साथ । सारि क वान फोंक लै हाथ ॥१
 राजकुँवर फुनि बेगर परा । निरखसि साउज जेर जिय घिरा ॥२
 बरन सात एक मिरगी देखी । अपनै जरम न कहियउ पेखी ॥३
 कहसि कुरंगिन जरम न होई । [चूरा नेउर पहिरी सोई*] ॥४
 जो सब अभरन पहिरे सामाँ । [रंगत चली*] जानाँ भल रामाँ ॥५
 देख अचम्भो राउ रहि, फुनि र चलानसि घोर ।६
 कहसि वान हाँ का यह मारो, उतर धरों हथजोर ॥७

टिप्पणी—(१) बेगर बेगर—अलग-अलग । फोंक—नुकीला ।

(२) फुनि—पुनः । बेगर—अकेला । निरखसि—देखा ।

(३) बरन—वर्ण, रंग । जरम—जन्म । कहियउ—कमी । पेखी—देखा ।

(४) कुरंगिन—हिरगी । जरम—जन्म । चूरा—चूड़ा, पैर का आभूषण । नेउर—पायजेव ।

(५) चलानसि—चलाया । घोर—घोड़ा ।

(७) वान—बाण । हो—मैं । का—क्या । धरों—पकड़ें ।

२२

(दिल्ली)

छाड़सि घोड़ धरै वहि चहा । देखत रूप पेम चित गहा ॥१
 मन महुँ कहिसि नियर होइ धरों । हाथ न आउ तोहि पै मरों ॥२
 कहि धरों नियर अब आई । तरक कुरंगिनि चली पराई ॥३
 हाथ मलै औ जिय पछताई । चली कुरंगिनि चित एक लाई ॥४
 चढ़ा तुरंग साथ वह लागे । केसर रूप मिरिगि फुनि भागा ॥५
 जोजन सात मिरिग के पछयें, परा जाई जो अकेल ॥६
 बेगर परा साथ सेउँ कुँवर, लोग जान सब खेल ॥७

- टिप्पणी—(१) धरै—पकड़ना । वहि—उसको । पेम—प्रेम । गहा—धारण किया ।
 (२) महेँ—में । नियर—निकट । धरौँ—पकड़ें ।
 (३) तरक—तड़क, छिटककर । पराई—भाग ।
 (४) तुरंग—घोड़ा ।
 (५) जोजन—योजन । पछयें—पीछे ।

२३

(दिल्ली; एकडला)

राउ^१ अकेल मिरिगि^२ है जहाँ । तीसर अउर^३ न अहै^४ तहाँ ॥१
 लुबुधा पेम कुरंगिनि केरा^५ । बुधि विसरी सुधि गई सवेरा^६ ॥२
 हरियर^७ विरिख दीख एक महा । मानसरोदक तिहि तर बहा^८ ॥३
 कुँवर संगति^९ कुरंगिनि डरी । मानसरोदक भीतर परी ॥४
 तेहि मँह मिरिगी छपानेउ^{१०} आई । बहुरि न निकसा गयउ हिराई^{११} ॥५
 नुरिय बाँधि तरुवरि सँउ^{१२}, ततखन^{१३} कापर धरसि^{१४} उतारि ।६
 बेगि पइठ^{१५} सरवर महेँ, डुवि डुवि^{१६} हँडे लागि निहारि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

- १—राव । २—मिरिग । ३—तेसर और । ४—कोई । ५—केरी । ६—सवेरी । ७—
 हरिनी । ८—देख । ९—तेहितर मानसरोदक व[हा] । १०—संगीत ११—
 छपानेव । १२—निकसी गई हेराई । १३—सौं । १४—X । १५—धरिसि ।
 १६—पैस । १७—X ।

टिप्पणी—(१) अउर—और । अहै—था । तहाँ—उस जगह ।

- (२) लुबुधा—लोभी । केरा—का ।
 (३) हरियर—हरा । विरिख—वृक्ष । मानसरोदक—मानसरोवर ।
 (४) छपानेउ—छिपी । बहुरि—लौटकर; फिर । निकसा—निकला । हिराई—खो ।
 (५) पइठ—धुसकर । निहारि—(क्रि० निहारना) देखकर ।

२४

(दिल्ली; एकडला)

हँडे^१ लागि न पायसु चाहा । विसरा सवै जो मन महेँ आहा ॥१
 जब लागि हौं न कुरंगिनि पावँउं^२ । मरौं न जीवन इहँ जिउ ला[वँउं]^३ ॥२
 सुधि विसरी बुधि गई हेरानी । चित महेँ गड़ी सो^४ पिरमकहा[नी] ॥३
 विसरि न जाइ^५ चित्र चित लहई^६ । पाथर माँझ कीर जनु गहई^७ ॥४
 खिन खिन^८ पेम अधिक चित चढ़ा । दुइज चन्द्रमाँ जनु गहन सौं कढ़ा^९ ॥५
 चाहिसि बहुत न पाइसि वह^{१०} कहँ^{११} निकसि ठाढ़ भा तीर ।६
 रोवई^{१२} बहुत आँसु पर आँसू, कुछउ^{१३} न सँमुझ सरीर ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—आपु । २—पावों । ३—मरों इहा पै चित न डोलावों । ४—जो । ५—जापे । ६—
चित र चित लीही । ७—जनि कीसी । ८—खन खन । ९—दूज चन्द्र मान सो
गदा । १०—११—X । १२—रोवै । १३—कुछौ ।

टिप्पणी—(३) हेरानी—खो ।

(४) माझ—मध्य, बीच । कीर—कील । गहई—गड़ी हो ।

(५) गहन—ग्रहण । कड़ा—निकला ।

(६) भा—हुआ ।

२५

(दिल्ली; एकडला)

पेम चखाइ' गई तिह जोवइ' । लंक टेकि कर ठाढ़ बहु रोवइ' ॥१
जस' भादों बरिसै अतिवानी । सब जग भरा नैन कै पानी ॥२
सलिला सबै सरग कै बहई' । लघु दीरघ जहवाँ लह अहई' ॥३
जस पावस बरिसै गरलाई' । खिनखिन' अधिक न उघरहि' जाई ॥४
कहै पंखि विधि देइ उड़ावों' । सवन सुनो हौं तिह ठाँ जावों' ॥५
झुरवइ बैठि ठाढ़ [होय, कडु न आउ विचार] ॥६
लोग कुटुँब घरवार तिह' लग, बिसरा [सब संयसार] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—सिखाइ । २—तेहि जोवों । ३—ठाढ़ रोवै । ४—अस । ५—सरिल गै भई ।
६—लघु दीरिघ जग मह भरि गई । ७—घहराई । ८—खन खन । ९—उघरै । १०—
देहि उड़ाऊँ । ११—सौन सुनौ जाव तेहि ठाऊँ । १२—तोह ।

टिप्पणी—(१) जोवइ—प्रतीक्षा करता है । लंक—कमर । ढाढ़—खड़ा ।

(२) अतिवानी—अत्यधिक ।

(३) सलिला—सरिता, नदी । सबै—सभी । जहवाँ—जहाँ । लह—तक ।

(४) झुरवइ—(सं० स्मृधातुका प्रा० धात्वादेश झुरई) याद करना, चिन्तन करना ।
ठाढ़—खड़ा ।

२६

(दिल्ली; एकडला)

खेलत सबै अहेरा जहाँ । राजकुँवर न देखाहिं तहाँ ॥१
एक एक कहँ पूछइ' बात । काहँ देखा' जोजन सात ॥२
कहिलि भिरगि कँ पाछे जाई । तुम तिह चलहु' जनि परै भुलाई ॥३
हूँ डत चला साथ' सब कोई । राजकुँवर दुहुँ किह' ठाँ होई ॥४
दीखि' एक विरिख अति हरा । मानसरोदक तिहि [तर' भरा ॥५

परस घाट सब बाँधे^{१०} रचि रचि,^{११} ईशुर बहुत क रसाइ^{१२} । ६
कौसीसा रावटि फुनि लागा,^{१३} देखि^{१४} पाप झरि जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-कुवरा सबौ । २-नहिं देख । ३-पूछहिं । ४-देखी । ५-तोहहु जाहु । ६-
साथ चला । ७-केहि । ८-देखिन्हि विरिख एक । ९-तिहि तर मानसरोदक ।
१०-कनक घाट सब विधि । ११-× । १२-जरी रतन बहुलाय । १३-सरवर
विरिख बखानौं । १४-मुनत ।

टिप्पणी—(२) कहँ-से । काहँ-कोई । जोजन-योजन ।

(४) दहुँ-न जाने; कदाचित् ।

(५) तर-नीचे ।

(६) परस-पारस पत्थर । ईशुर-सिन्दूर से बना लाल रंग ।

(७) कौसीसा-(कपि-शीर्ष) कँगूरा । रावटि-छोटा मण्डप; लाजवर्द पत्थर ।

२७

(दिल्ली; एकडला)

सुझर पानि दीखत^१ अति चोखा । पियत जो^२ रहै न^३ एको दोखा ॥१
बेना वास पियत अति मीठा । अँवरत अइस नजग महँ दीठा^४ ॥२
सीतल सेत अम्भु^५ कर रूपा^६ । पंक^७ कपूर सुनहु सो अनूपा ॥३
फूले बहुत^८ कँवल तिंह आहा^९ । लुबुधा भँवर पेम कर गहा^{१०} ॥४
फूली कुमुदिनी^{११} सघन सोहाई । ससि पुरइन जासों गर^{१२} लाई ॥५
चकई चकवा हँस केलि कर, देखत अति रे सुहाउ^{१३} ॥६
विरिख अपूरव कहा^{१४} सराहों, कै भगवन्त सो लाउ^{१५} ॥७

पाठान्तर—एकडल प्रति ।

१-पानी देखत । २-× । ३-नहिं । ४-अत्रित औस तै चमकै दीठा । ५-अम्भु ।
६-रूप । ७-ऐक । ८-जो सुनहु अनूप । ९-पुहुप । १०-तहँ अही । ११-
गही । १२-मोदिनी । १३-ससि पिपीति जासों गहि । १४-सुहाव । १५-काह ।
१६-लाव ।

टिप्पणी—(१) सुझर (शुद्ध > सुज्झ > सुझ > सुझर) निर्मल । चोखा-उत्तम, श्रेष्ठ,
खरा । दोखा-(दूखा) कष्ट, रोग ।

(२) बेना-(सं० वीरण) खस । अँवरित-अमृत । दीठा-देखा ।

(३) सेत-(श्वेत) सफेद । अम्भु-जल, पानी । पंक-क्रीचड़ ।

(४) कँवल-कमल ।

(५) पुरइन-(सं० पुटकिनी) कमलकी बेल । जासों-जिससे । गर लाई-
गले लगाया ।

२८

(दिल्ली; एकडला)

कदलि' पेड़ डारै छतनारी'। अँबरित सींचि' के र' सवारी ॥१
हरे पात सब कौपल नयै। अति चिकने आरसी सौ भयै ॥२
जनु' राजा पर डम्बर तानाँ। तिह' तर बैठि देखि' उन्ह रानाँ ॥३
उतरि' सबै नियर चलि आये। कै जुहार' सिर भुँइ लै लाये ॥४
आइ बैठि सब पूछहिं बाता। साँवर बरन भयउ किह' राता ॥५
कँवल भाँति दिन बिगसत, जस निसि उवइ^{१०} मयंक ॥६
रोवइ चेत न चीतै तन^{११} सुधि,^{१२} द्रव्य गयै^{१३} जिमि रंक ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

- १—कदली । २—डारि छतनारी । ३—अँब्रित सींचे के रे । ४—जनि । ५—तेहि ।
६—बैठ देख । ७—उतरे । ८—जोहारि । ९—भयव कहा । १०—उवै । ११—१२—X ।
१३—द्रव गये ।

टिप्पणी—(१) कदलि—कदली, केला । डारै—डालें । छतनारी—पैली हुई । अँबरित—
अमृत । सवारी—सजायी ।

- (२) आरसी—दर्पण ।
(३) डम्बर—छत्र । उन्ह—उन्होंने ।
(४) निधर—निकट । जुहार—अभिवादन, प्रणाम । भुँइ—भूमि ।
(५) साँवर—श्यामल । बरन—वर्ण, रंग । राता—(रक्त) अनुरक्त ।
(६) बिगसत—विकसित होता है । उवइ—उगता है । मयंक—चन्द्रमा ।
(७) चेत—स्मृति । चीतै—धारण करे । द्रव्य—(द्रव्य) धन । रंक—निर्धन ।

२९

(दिल्ली; एकडला)

उतर' न देख' पेम गढ़' लीता । स्रवन' न सुनै नेह पर चीता ॥१
फुनिर कहहि ह्रम आयसु' होई । जो मनसा चित पुरवाहिं सोई ॥२
कहिसि मिरगि' ह्रम आगै आवा । बरन सात इक भाइ' देखावा ॥३
सींग जरी का' कहौ सवाँगा । गले द्वार गजमोतिह माँगा ॥४
[निर पाउँ*] घुँघरू आहै' । नैन सरूप जाँहि नहि कहे ॥५
चंचल चपल चलत खिन, [जानहु चलै उड़ाइ^{१०}] ॥६
देखत (बिनु वह)^{११} कहै न आवै, ईह^{१२} महुँ गई विलाइ^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

- १—कुँवर । २—देअ । ३—गहि । ४—सौ । ५—आऐस । ६—मिरग । ७—मिरग ।
८—मिरगि जरे का । ९—चुरचुरा घुँघरू अहे । १०—उड़ाय । ११—वैवन (दिल्ली

प्रति में भी 'पैवन' पाठ है; किन्तु वहाँ 'पै' काट दिया गया है और 'वन' के बाद 'वह' लिखा गया है। साथ ही मार्जिन में एक इतर पाठ भी है जो 'पर वै' पढ़ा जा सकता है। १२—ओहि। १३—हेराय।

टिप्पणी—(२) मनसा—मनोकामना। पुरबहिं—पूरा करेंगे। सोई—उसे।

(४) सर्वांग—सर्वांग। माँगा—माँग; केश के बीच विभाजक पतली रेखा जिसमें स्त्रियाँ सिन्दूर भरती हैं। इस स्थान पर स्त्रियाँ मोतियों का बना आभूषण-विशेष भी पहनती रही हैं।

(५) जाँहि—जाय।

(७) बिलाइ—लुप्त।

३०

(दिल्ली)

किहिस सिंगार सपूरन गही। बहुतै छवि रूप बहु लही ॥१
 बारह अबरन पहिर सँवारी। अति सरूप भर जोवन वारी ॥२
 सो हम देखत यहि कहँ गयी। अइस न जाने वँह का भयी ॥३
 यह अस बात जाइ न कही। वह अपछरा इन्द्र कै अही ॥४
 उठहु चलहु घर खेलत जाहीं। पिता पाछु तुम्ह जीयहि नाहीं ॥५
 कहा तुम्हार न वारों मन्तै, जो घट मँह जिउ होय ॥६
 जिउ लै गई क्या पै देखी, नैन रहे पँथ जोय ॥७

टिप्पणी—(१) अबरन—आभरण, जेवर, गहना, आभूषण।

(३) अइस—ऐसा। का—क्या। भयी—हुई।

(४) अपछरा—अप्सरा।

(५) पाछु—परोक्ष।

(६) वारों—वर्जित करूँ; टालूँ। मन्तै—मन्त्रणा देनेवाले लोग; मित्र।

(७) जोय—जोह, प्रतीक्षा।

३१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर बात उन्ह सों अस कही। सकलहिँ कै जियँ चिन्ता गही ॥१
 सब आपुन मँह मँता कराहीं। कुँवरहिँ छाड़ि कहाँ हम जाहीं ॥२
 कुँवरहिँ बहुरि लागि समुझावइ। पेम गहा वहिँ चित न हुलावइ ॥३
 कहसि चाउ जो तुम्ह हिय मोरी। पँठहु दूँढइ कापर छोरी ॥४
 दूँढइ पइठ कुँवर जो कहा। निकस वइठ कुछउ न अहा ॥५
 बहुरि लागि समुझावइ, सब मिलि वैठि कुँवर के पास ॥६
 कउनउ भौंति न समुझइ लुबुधा, लै उपर कै साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) सै । २—(ए०) सगलेन्ह; (बी०) सगलेहु । ३—(ए०) आपन । ४—(ए०) कुँअरहि । ५—(ए०) लाग; (बी०) लाग बहुरि । (६) (ए०) समुझावै । ७—(बी०) पैम । ८—(ए०) उवह; (बी०) पै । ९—(ए०) डोलावै; (बी०) डुलावै । १०—(ए०) चाँड़ि; (बी०) चाँड । ११—(ए०) तोहि है; (बी०) तोहि आहे । १२—(बी०) पैसहु । १३—(ए०) हूँदै; (बी०) हूँदहु एहि महि । १४—(ए०) कपरा । १५—(ए०) हूँदै पैठि; (बी०) हूँदै पैसि । १६—(बी०) निसे । १७—(ए०, बी०) हूँड़ि । १८—(ए०) कुछु; (बी०) किछु । १९—(ए०) नहीं । २०—(ए०, बी०) लगे समुझावै । २१—(ए०) × । २२—(ए०) कौनउ; (बी०) कौनहु । २३—(ए०, बी०) समुझै । २४—(ए०) × । २५—(ए०) लेय; (बी०) लेइ । २६—ऊमि ।

टिप्पणी—(१) सकलहि—सब लोगोंको ।

- (२) आपुन—अपनेमें । मैंता—सलाह, परामर्श । छड़ि—छोड़कर । जाहीं—जायँ ।
 (३) बहुरि—पुनः ।
 (४) चाउ—चाव, स्नेह । हिय—हृदय । पैठहु—धुसो । कापर—कपड़ा । छोरी—छोड़कर, उतार कर ।
 (५) कउनउ—किसी भी ।

३२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहा तिहार आह अनभला ।^१ [धिनु] जिउ^२ कहहु जाइ^३ केउँ^४ चला ॥१
 रोवइ बहुत सरिल^५ सब लोहू । जो र^६ देखहि तिह^७ उठै मरोहू^८ ॥२
 जब लगि चाह न वहि कै पावउँ^९ । मरौँ इँहाँ पै चित न हुलावउँ^{१०} ॥३
 कहहि^{११} काह कम^{१२} कीजइ^{१३} तासू^{१४} । धावन पठये^{१५} राजा पासू^{१६} ॥४
 कागल लिहि^{१७} दर्ई^{१८} बातो^{१९} औ^{२०} कही । जो सब बात इँहा कै^{२१} अही ॥५
 चला^{२२} बेगि^{२३} तिह जाइ^{२४} तुलाना, कहि^{२५} राजा सोँ^{२६} बात ।६
 कहहु^{२७} कहाँ अहे^{२८} कहि^{२९} टाँई^{३०}; उँह हुत^{३१} जोजन सात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) कहतु तुम्हारा न अहै भला; (बी०) कहा तोहार तो अहै भला ।
 २—(बी०) जिव । ३—(ए०) जो जाय । ४—(ए०) कँव; (बी०) किमि । ५—(ए०) सलिल । ६—(बी०) जो रे; (ए०) जो । ७—(ए०) देखै तोहि । ८—(ए०) मरोहू ।
 ९—(ए०) उहि की पावों; (बी०) वोही की पाऊँ । १०—(ए०) डुलावौं; (बी०) डुलाऊँ । ११—(ए०) कहिसि; (बी०) कहिन्हि । १२—(बी०) × । १३—(ए०, बी०) कीजै । १४—(बी०) तासौ । १५—(ए०) पठइय । १६—(बी०) पासु । १७—(बी०) लिखि । १८—(ए०) दै; (बी०) दुइ । १९—(ए०)

वातें; (बी०) वात जु । २०-(ए० बी०) × । २१-(ए०) की । २२-(बी०) चलेउ । २३-(ए०) बेगी; (बी०) × । २४-(ए०) तहँ जाय । २५-(ए०) कह; (बी०) कही । २६-(ए०) सौं; (बी०) सउँ । २७-(बी०) कहिन्हि । ३८-(ए०) × ; (बी०) हँ । २९-(ए०, बी०) केहि । ३०-(बी०) ठाउँ । ३१-(ए०) हुतै; (बी०) हतै ।

टिप्पणी—(१) तिहार-तुम्हारा । अनभला-अहितकर ।

(२) सरिल-सलिल, जल । मरोह-करुणा; दुःखी के प्रति आत्मीय सहानुभूति ।

(४) धावन-सन्देशवाहक । पठये-भेजे ।

(५) कागल-कागज । लिहि-लिखकर ।

(६) तुलाना-निकट पहुँचना ।

(७) हुत-से ।

३३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनी बात दुख भा सुख^१ भागा । राजें^२ तुरय^३ बेगि के माँगा ॥१
नगर जहाँ लहि^४ मानस^५ आहा । चला^६ सबै एको नहिं रहा ॥२
भये असवार राउ^७ औ राना । पहर एक माहिं आई तुलाना ॥३
राजा देखि अचम्भो रहा । बदन चाँद जनुं^८ गहन जो^९ गहा ॥४
मूरत भरम^{१०} छया^{११} पै रही । कया अनल^{१२} बिरहानल^{१३} दही^{१४} ॥५
कइहि^{१५} काह कस देखु^{१६} अपूरब^{१७}, जो चित रहा न जाइ^{१८} । ६
रोवइ^{१९} बहुत बात न आवइ^{२०}, सँवरि सँवार पछताइ^{२१} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) सख । २-(बी०) त्रिया । ३-(बी०) लहु । ४-(बी०) मानस । ५-(ए०, बी०) अहा । ६-(बी०) चलेउ । ७-(ए०) राव; (बी०) राइ । ८-(ए०) जाय । ९-(बी०) जनौ । १०-(ए०) गहनै । ११-(ए०) भरत भुवन; (बी०) मूरति भरम । १२-(ए०) छाय; (बी०) छाया । १३-(बी०) अनिल । १४-(ए०) बिरहे तन । १५-(ए०, बी०) डही । १६-(ए०) कहिसि; (बी०) कहहु । १७-(ए०) देखे । १८-ए० × । १९-(ए०) जाय । २०-(ए०) रोवै । २१-(ए०) नहि आवै । २२-(ए०) सौरि सौरि । २३-(ए०) पछताय ।

टिप्पणी—(७) सँवरि सँवरि-स्मरण कर करके ।

३४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

[राजा पू]छहि^१ कहहु^२ हम^३ वाता । देखहु^४ काह काहु^५ जिउ^६ राता ॥१
देखेउ सोइ जाइ न^७ कही । उहै^८ बात गहि^९ चित मँह^{१०} रही ॥२

देखउँ एक कुरंगिनि म[ह्री]^{११} । [सवन न सुनउ^{१२} कहों दहुँ कही] ॥३
जो जिउ^{१३} लेगई कया भुलानी । अन^{१४} न रूच^{१५} भावइ^{१६} नहिं पानी ॥४
दिस्टि रही तिह^{१७} मारग लागी । जिह^{१८} मारग वह^{१९} गयी सुभागी^{२०} ॥५

पन्थ निहारत तिहि^{२१} कर, लोयन^{२२} खीने^{२३} जोति । ६
जेउँ^{२४} जल चाहै स्वाँति को^{२५}, सायर^{२६} सीपिंह^{२७} मोँति ॥७

पाठान्तर—एकडल और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) पूछ; (बी०) पूछै । २-(ए०) कहउ । ३-४-(बी०) न । (ए०) देखेहु;
(बी०) देखिहु । ५-(बी०) काहि । ६-(ए०; बी०) चित । ७-(ए०) नहिं ।
८-(बी०) येहइ । ९-(ए०) गड़ि । १०-(बी०) चित महँ गड़ि । ११-(बी०)
माह । १२-(ए०) सौनन सुनेव; (बी०) सर्वनन सुनौ । १३-(बी०) जो जी ।
१४-(ए०) अन्न । १५-(ए०) रुच; (बी०) रुचै । १६-(ए०) भावै । १७-
(ए०) तेहि । १८-(ए०) जहि । १९-(ए०) उवह । २०-(ए०) सभागी ।
२१-(ए०) तह; (बी०) ताहि । २२-(ए०) लेयेन; (बी०) लोइन । २३-(ए०)
खीन भै; (बी०) खीनी । २४-(ए०) जेंव, (बी०) ज्यों । २५-(ए०) स्वातिक ।
(बी०) स्वाती । २६-(ए०) सायेर; (बी०) साइर । २७-(ए०) सीपन्ह; (बी०)
सीपन्हि ।

टिप्पणी—(६) निहारत—देखते-देखते ।

(७) सायर—सागर ।

३५

(बीकानेर; दिल्ली)

राजें कहाँ बात सुनु मोरी । यहि र^१ बात अहै बुधि थोरी ॥१
मिरिग^२ न पानी माँझ^३ हेराई । सपन क सौतुक देखिह^४ आई ॥२
उठि घर चलहु^५ साथ होइ मोर^६ । नाहुत^७ हमहुँ मरव संग तोर^८ ॥३
कहा तुम्हार कहु^९ सो मानउँ । जो कछु^{१०} कहहु सो सब परवानउँ ॥४
[दिस कोस औ (विरथ*)^{११} भँडारा । सब बिसरौ घर भा अँधियारा ॥५
(सवन*)^{१२} नहिं सुनैकहा नहिं मानै, धरसि तासों चित लाइ । ६
पाइ लागि कै राजा, कुँवरहिं रहा मनाइ] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-राजा कहै । २-यह रे । ३-भिगा । ४-माँहि । ५-सपने कै सौतुक
देखेहु । ६-उठहु चलहु घर । ७-मोरे । ८-नहिं तो । ९-तोरे । १०-कहौ ।
११-जो किछु कहौ । १२-वर्थ । १३-सर्वन ।

१. दिल्ली प्रति में पंक्ति ५, ६, ७ के स्थान पर कड़क ३६ की पंक्ति ५, ६, ७ है ।

टिप्पणी—(२) माँझ—मध्य, बीच । क—का । सौतुक—साक्षात् घटना; प्रत्यक्ष ।

(३) मोरे—मेरे । नाहुत—नहीं तो । हमहुँ—मैं भी । मरब—मरूँगा ।

(४) परवानों—प्रमाणित करूँ; पूरा करूँ ।

(५) देस—देश, राज्य । कोस—कोष । विरथ—व्यर्थ ।

३६

(बीकानेर; दिल्ली)

[(चरन)^१ लागि (माँगउँ)^२ कर जोरी । सुनहु पिता यह बिनती मोरी ॥१
बिनु(जिउ)^३ कहहु कया (किह)^४ जाई । जिउ तेहि पहुँ गयउ(जु गई लुकाई)^५ ॥२
साथ गये तुम्हरे दुख पइहों । (हिउ)^६ फाटी ततखन मरि जइहों ॥३
छाड़ि देहु हों रहों (उहि)^७ आसा । घट महुँ जीउ रहै(उहि)^८ आसा] ॥४
हम बिनु खाँग न राज तुम्हारें^९ । जुग राजा सिर छाँह हमारें^{१०} ॥५
अति बुधवन्त सभै गुन जानहु, तुम्ह अस पिता न आन ।६
सो उपकार कहों हों तुमहि सेंउ^{११}, जिह^{१२} घट रहे परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१—चर्न । २—माँगों । ३—जिव । ४—कहँ । ५—गयो गई लखाई । ६—हिव ।
७—वोहि । ८—वोहि । ९—हम बिनु राज न खँगे तुम्हारा । १०—हमारा । ११—
कहों तुम सेती । १२—जिहि ।

टिप्पणी—(२) लुकाई—छिप ।

(३) हिउ—हृदय । फाटी—फट जायेगा । ततखन—तत्क्षण ।

(४) खाँग—खण्डित ।

३७

(दिल्ली; एकडला)

माँगों यहै वात सुनि लेहू । मंदिर उचाइ मान पर देहू ॥१
कहहुँ भाँति अस मंदिर उचावइ^१ । मानसरोदक जिह^२ मँह आवइ ॥२
राजा^३ नेगिन्हि कहा बुलाई^४ । भवन^५ अपूरव देहु [उचाई] ॥३
यहै रजायसु^६ कुँवरहि केरा । जो र कहँहु तिह लागि^७ न बेरा ॥४
जिह^८ लग हम आयसु^९ परवानाँ । पाती लिखी देस भुइ जानाँ^{१०} ॥५
वार बूढ़ सव आयसु^{११} लीन्हें, रहि न कोई जाइ^{१२} ।६
राजा चला नगर कहँ बहुरि^{१३} कै^{१४}, नेगिन्हि चिन्ता लाइ ॥७

१. दिल्ली प्रति में केवल पंक्ति ५, ६, ७ है, जो कड़वक ३५ के प्रथम चार पंक्तियों के साथ है ।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-यह रे । २-उचावै । ३-जेहि । ४-राजें । ५-बोलाई । ६-भौन । ७-किही
रजाऐस । ८-तेहि लाग । ९-जह । १०-आयसु हम । ११-देस होई आना ।
१२-× । १३-रहे न कोई सब जाइ । १४-१५ × ।

टिप्पणी—(१) उचाइ-उठाकर, निर्माण कराकर ।

(२) नेगिन्ह-दास; कर्मचारी ।

(४) केरा-का । बेरा-देर ।

(५) जिह लग-जहाँ तक । आयसु-आदेश । परवाना-प्रमाण । पाती-पत्र ।
भुइ-भूमि ।

(६) बार-युवक ।

(७) बहुरि-लौटकर ।

३८

(दिल्ली; एकडला)

देस' लोग कहँ पठये' पाती । बेगि आउ' कोउ रहै न राती ॥१
बार बूढ़ जेहवाँ लहि आहा । बेगि आउ' घर कोउ' न रहा ॥२
थवई बढई अउर' लोहारू' । आई' पथेरिया' औ चुनहारू' ॥३
आये सुनार जो ढारइ' पानी । चतुर चितेरा अतिर बिनानी' ॥४
करवतिया बहु आये कुँदेरा । मँदिर उचावत लाग न बेरा ॥५
सतयें पवन खाल दिखराई', मँदिर उठये' बहु भाँत ॥६
आपुन आपुन' काज सँवारहि, बइठ' पाँतहि पाँत ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-सी । २-पठई । ३-आव । ४-आव । ५-कोइ । ६-और । ७-लोहारा ।
८-आव । ९-पथरिया । १०-चुनहारा । ११-ढारहि । १२-रे । १३-सोनहि
नेउ देखाए दै । १४-उठे । १५-आपन आपन । १६-बैसे ।

टिप्पणी—(१) पठये-भेजा ।

(२) जेहवाँ-जहाँ । लहि-तक ।

(३) थवई-(स० स्थपित), भवन बनानेवाला कारीगर ।

(४) पथेरिया-पत्थर का काम करनेवाले । चुनहारू-चूना तैयार करने वाले ।

(५) ढारइ-ढालते हैं । चितेरा-चित्रकार । बिनानी-(विज्ञानी) कुशल ।

(६) करवतिया-(करपात्र = आरा) लकड़ी चीरनेवाले ।

(७) कुँदेरा-कुन्दकार; खरादनेवाला ।

(८)-बेरा-विलम्ब, देर ।

३९

(दिल्ली; एकडला)

खँड' ऊपर खँड सात उचाई । धरे झरोखा अति र सोहाई ॥१
 चार पँवरि' चतुरंग सँवारी । जानु' चहँ दिसि सर्जी अटारी ॥२
 तिहि' ऊपर चौखण्डी सँवारी । कनक पानि औ इंगुर डारी' ॥३
 भारत' राम रमायन चीता । रावन हरी राम घर सीता ॥४
 कन्ह' (सहित) सोलह सौ' गोपी । अंगद जाँघ लंका महँ रोपी ॥५
 कथा इँह' सब झा[रि उरेही'^{१०}], एक एक आनों' [भाँत] ॥६
 सिंघ घ्रिग कस्तूरी उरेहे, साउज पातहिं पाँत'^{११} ॥७

मूल पाठ—५—(दोनों प्रतियों में) सहस ।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—मंड । २—कोठरी पौरी । ३—मान । ४—गढ़ि । ५—कनक पानि तेहि ऊपर डारी । ६—अरथ । ७—लीहिन्हि । ८—से । ९—नेह । १०—उरेहिन्हि । ११—अनवन भाँति । १२—भातिन्ह भाँति ।

टिप्पणी—(१) खँड—खण्ड; मंजिल । झरोखा—गवाक्ष; खिड़की ।

(२) पँवरि—प्रवेश द्वार । अटारी—अट्टालिका ।

(३) चौखण्डी—चार खण्ड की बुर्जी । कनकपानि—सोने के पानी की स्याही । हस्तलिखित मुवर्णाक्षरी जैन ग्रन्थोंके देखनेसे पता लगता है कि इसका प्रचलन पन्द्रहवीं शतीमें हो गया था ।

(४) भारत—महाभारत । चीता—चित्रित किया ।

(५) कन्ह—कृष्ण ।

(६) आनों—अनेक, अन्यान्य । भाँत—भाँति, प्रकार ।

(७) सिंघ—सिंह ।

४०

(दिल्ली; एकडला)

भाँउ' उरेहा कीचक मार' । लिहा दुसासन भुएँ उपार' ॥१
 लिहा भरथरी औ पिंगला । जिह वियोग जोगी संग चला ॥२
 अरजुन राहु बेध जस कीता । कौरों मारि दुरपदी' जीता ॥३
 रिग जुग साम अथरवन आना । पण्डित सहदेव लिहा सयाना ॥४
 जिह' लहि नाँच पेखना अही' । धिनु देखँ मुँहि जाँहि' न कही' ॥५
 उहै कुरंगिनि चित्र उरेही, जै' अति किय अपकार' ॥६
 देखि देखि तिह रोचइ संभरे, जीवन उहै अहार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-मीम । २-मारा । ३-भुजा उपारा । ४-दुरपती । ५-कह । ६-आही ।
७-मोहि जाए । ८-जेंहि एत किअ । ९-उपकार ।

टिप्पणी—(१) भींड-भीम, पंच-पाण्डवमेंसे एक । उरेहा-(सं० उल्लेखन) चित्र बनाया । लिहा-लिखा । भुएँ-भुजाएँ । उपार-उखाड़ा ।

(२) भरधरी-भर्तृहरि । उज्जैननरेश जो अपनी रानी के कारण बैरागी हो गये थे । पिंगला-भर्तृहरि की पत्नी ।

(३) अर्जुन-पंच-पाण्डवमेंसे एक जो अपने अचूक बाणके लिए प्रसिद्ध थे । राहु-रोहू मछली । बेष-निशाना । कीता-किया । (यहाँ द्रौपदीके स्वयंवरमें मत्स्य-वेषकी ओर संकेत है ।

(४) कौरों-कौरव । दुरपदी-द्रौपदी ।

(५) रिग-ऋगवेद । जुग-यजुर्वेद । साम-सामवेद । अथरवन-अथर्ववेद । सहदेव-पंच-पाण्डवमेंसे एक जो अपने पाण्डित्यके लिए विख्यात थे ।

(५) पेखना-(सं० प्रेक्षण) तमाशा, नाटक । मुँहि-मुझे । जाहिं-जाय ।

४१

(दिल्ली; एकडला)

सँवरे^१ ताहि जो देखसि^२ अहा । रोउ बहुत संग कोउ^३ न रहा ॥१
धाइ^४ एक आछी तिह^५ ठाँई । खीर मोह कछु कहै बुझाइ ॥२
खिन^६ एक धाइ बात चुप^७ लावइ । फुनि जिउ जाइ जहाँ वहि पावइ^८ ॥३
सूनी कया न जीउ घट तहाँ^९ । पौन कुरंगिनि देखसि^{१०} जहाँ ॥४
काम बान बेधाँ न सँभारे । जपै कुरंगिनि खिन^{११}[न बिसारे] ॥५
निलि वासर बिव तैसहिं^{१२}, खिन एक^{१३} दूसर चित न कराइ ॥६
चतुर (महावत^{१४}) गयन्द जिउ^{१५}, कैसेहु उतरि न जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडल प्रति ।

१-सारे । २-देखिसि । ३-कोइ । ४-धाए । ५-आछे तेहि । ६-खन । ७-चित लावै । ८-पूनि जिउ जाही उही पावै । ९-यहाँ । १०-देखिसि । ११-खिनु । १२-तैसे । १३-X । १४-चित महत (दि०) महत । १५-जँव ।

टिप्पणी—(१) आछी-थी । खीर-(स० क्षीर) दूध । बुझाई-समझकर ।

(६) बिव-दो, दोनों ।

(७) महाउत-महावत । गयन्द-हाथी । जँडें-जिस प्रकार ।

४२

(दिल्ली; एकडला^१)

भादों^१ मेघा नैन बरिसाई। विनु^२ जलहर भरि पूर^३ रहाई ॥१
 निसि अंधियारी तेहि विनु लागै। तेज न भाउ^४ रैनि सब जागै ॥२
 दामिनि छया रैन तर आवइ^५। धरै चाह धौं कहु कित पावइ^६ ॥३
 मँदिर सूत संगि साथि^७ न कोई। दादुर संख ररहँ^८ पै सोई ॥४
 चातक^९ पिउ पिउ चलहि पुकारी^{१०}। वह^{११} वियोग विधा^{१२} न सभारी^{१३} ॥५
 लाइ^{१४} नैन दोइ^{१५} बरखा, अखरहि^{१६} बरिसै गहर^{१७} गँभीर। ६
 नैन सलिल मन डुबोवइ^{१८}; दई लावइ तीर^{१९} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-भौदों । २-वन । ३-पूरि । ४-भावै । ५-आवै । ६-धोखे कत पावै ।
 ७-संग साथ । ८-सघन ररै । ९-चातिक । १०-जलहि पुकारै । ११-तेहि ।
 १२-विउग वेधा । १३-सँभारे । १४-लाए । १५-दुइ । १६-X । १७-गहिल ।
 १८-नेह सलिल मस डुबो । १९- दैअ लाव पै तीर ।

टिप्पणी—(१) जलहर—जलाशय ।

(२) दामिनि—बिजली । छया—कौंधा । धरै—पकड़ना । धौं—किन्तु ।

(४) दादुर—मेदक ।

४३

(दिल्ली; एकडला^१)

माँह तुसार^१ न लागै देहा। विरह आगि जर भयउ^२ सो खेहा ॥१
 निसि नरिन्द सब ठाढि पुकारै। लोयन लाउ^३ न रसना हारै ॥२
 काम आगि उपजै^४ तन सेती। कहँ तुसार किंहु चूकत^५ एती ॥३
 कोस वीस^६ एक तहि सौं भागै। रहँ त जरै भसम होइ लागै ॥४
 विरह आग ऐसी परजरै^७। सीउ^८ परान पुहुमि सब हरै^९ ॥५
 रावन लंका जरि बुझी, यह कैसँहि^{१०} न बुझाइ। ६
 जिह^{११} कारन यह लागी सीसीवा^{१२}, तिहि^{१३} भेटें तो जाइ ॥७

१. सम्मेलन संस्करण में इस कड़वकका उल्लेख कड़वक ३२३ (सं० सं० २७९) के पाठान्तरके रूपमें पादटिप्पणीमें हुआ है ।

१. सम्मेलन संस्करणमें इस कड़वकका उल्लेख कड़वक ३२८ (सं० सं० २८४) के पाठान्तरके रूपमें पाद टिप्पणीमें हुआ है ।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—तोसार । २—भएव । ३—लवै । ४—उपजी । ५—तोसार केहि जोगत । ६—कस तीस । ७—भागै । ८—ऐसो ही परजरी । ९—सेत । १०—हरी । ११—अहे कैसोहूँ । १२—जेहि । १३—X । १४—तेहि ।

टिप्पणी—(१) माँह—माघ । तुसार—(तुषार) शीत । खेहा—राख ।

(२) ठाढि—खड़ा । लोयन—लोचन । रसना—जीभ ।

(५) परजरे—(सं० प्रज्वल > प्रा० पञ्जल > पर्जल > पर्जर > परजरना) जलती है । सीउ—शीत । परान—भागा । पुहुमि—पृथिवी । (७) भँटै—भेंट हो; मिलै ।

४४

(दिल्ली)

[तन*] तपै जनु बरसि अंगारा । चन्दन देह न लाउ न संभारा ॥१
कै खँडवानि न काउ पिया । दई जानि कैसहिँ कै जिया ॥२
लोयन लौटहि बहु कामिनि वानी । नैन लाइ बहु ठाँउँ हिरानी ॥३
जाइ धूप तिह लागै देहा । जाकर होइ सरीर एहाँ ॥४
सिसिर उखम तो लागै कोई । जो सरीर भीतर जिउ होई ॥५
जिउ लै गई गहि कै आगें, कया न आह परान ॥६
खटरितु बारह मास बरस दिन, यहो आइ ओरान ॥७

टिप्पणी—(२) खँडवानि—खाँडका पानी, शरबत ।

(४) जाकर—जिसका । एहाँ—यहाँ ।

(५) उखम—(ऊष्म) गर्मी ।

(६) परान—प्राण ।

(७) खटरितु—पट् ऋतु । यहो—यह भी । ओरान—समाप्त हुआ ।

४५

(दिल्ली)

सरवर तीर बरस दिन रहा । चाह कुरंगिन मग को गहा ॥१
सिसिर हँव औ सरद बसन्ता । ग्रिहम उखम न जानै मन्ता ॥२
खटरितु देखत अइस गई । बहु अपकार कथा बहु भई ॥३
दिन एक मारग जुवत अहा । उठा बवंडरा देखत रहा ॥४
फुनि आँखिँह तर अस कलु आवा । आइ इन्द्र अपछरहिँ दिखरावा ॥५
देखत परा मुरशि कै उन्ह कहँ, फुनि उठि पन्थ संभार ॥६
कोइ करहिँ रहसहिँ सरवर महँ, खेलइ सबै धमार ॥७

टिप्पणी—(२) सिसिर—शिशिर; माघ और फाल्गुन का महीना । हँव—हेमन्त; अगहन और पौषका महीना । सरद—शरद; आश्विन और कार्तिकका महीना । बसन्ता—बसन्त; चैत्र और वैशाखका महीना । ग्रिहम—ग्रीष्म; ज्येष्ठ और असाढ़का महीना । उखम (ऊष्म) गर्मी ।

(३) अइस—इस प्रकार ।

(४) जुवत—(जोवत) प्रतीक्षा करते । बवँडरा—बगूला, अन्धड़ ।

(५) तर—नीचे, सामने । अस—ऐसा । कहु—कुल ।

(७) क्रोड—क्रौतुक; खेल । रहसहि—आनन्दित होती हैं । धमार—धमाचौकड़ी ।

४६

(दिल्ली)

सात जर्नी सातो अति लोनी । चाँद चौदस आइ सपूनी ॥१
 साताँ एक पिता कै जरमी । रंग एक सेंउ [लावहिं मरमी*] ॥२
 उन्ह महुँ एक अपूरव अही । कहा वरन कौ जाइ [न कही*] ॥३
 जानु अकास चाँद परगसा । वे सब नखत चहुँ दिसि [रसा*] ॥४
 राजकुँवर मन अस होइ लागा । कण्ठन लाग सेत रंग भागा ॥५
 मन उनिया निसि सौतुख सर लागेउ, कहव वह मुहाइ ॥६
 जो साँकहि कढ़ै, कैसहि कड़ि न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) जर्नी—व्यक्ति (स्त्री भावमें) । लोनी—लावण्यमयी । सपूनी—सम्पूर्ण हुई ।
 (२) जरमी—जर्मी ।

४७

(दिल्ली)

सबे सहेलीं खेलत आहीं । देखतहि मँदिर अचम्भो रहीं ॥१
 उन महुँ एक सयानी अही । मन सँकाइ वै घात जो कही ॥२
 वरिस देवस एक वार हम आवहिं । कवहुँ चाह न मनुसैं पावहिं ॥३
 अबलहि अइस न सो यह काही । हमलग चरित कीन्ह कहु आही ॥४
 सजग होहु छाड़हु बौराई । जो कहु होइ घात रुक जाई ॥५
 कै गियान मन बूझहु सँभलहु, उठहु चलहु संग साथ ।६
 जो कहु होइ कहा तो कीजइ, कुछइ न लागै हाथ ॥७

टिप्पणी—(१) आहीं—याँ ।

(२) सयानी—चतुर । सँकाइ—शंकित होकर ।

(४) अबलहि—अब तक । अइस—ऐसा । सो—वह ।

(५) बौराई—पागलपन ।

४८

(दिल्ली; एकडला)

तारहिं^१ माँझ चाँद जो आही। तें एक बात आपु सों कही ॥१
 मानुस हमहिं पाउ^२ दहुँ कहाँ। जाहहिं उड़ि चाहिं चित जहाँ ॥२
 मनुसै सेउँ^३ अस होइ^४ न काऊ। उत्तिम जाति जग^५ आह सुभाऊ ॥३
 ये^६ सब चरित हमहिं पै आवाहिं। खिन^७ विलाइ खिन उड़ाहिं^८ दिखावहिं^९ ॥४
 औ फुनि भेस घरहिं जस भावइ^{१०}। चाह त हमहिं कहाँ कोइ पावइ^{११} ॥५
 अस बर आहे आपुन^{१२}, चाह त^{१३} जाहिं विलाइ^{१४} ॥६
 लाग विवान सरग धरि^{१५} आई^{१६}, चाह त^{१७} जाहिं उड़ाइ^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-तारेन्हि । २-पाव । ३-चाहहि उड़हि जाहि । ४-सों । ५-आह । ६-कुल ।
 ७-ए । ८-खन । ९-खन । १०-देखावहिं । ११-भावे । १२-चाह तौ हमहिं
 कहीं कोइ पावै । १३-हम कहँ अस बर आहे । १४-तौ । १५-विलाए । १६-
 धर । १७-X । १८-तौ । १९-उड़ाए ।

टिप्पणी—(१) माँझ-मध्य । आही-थी ।

(४) विलाइ-छुत ।

(५) फुनि-पुनः । भावइ-अच्छा लगे ।

(६) अस-ऐसा ।

(७) विवान-विमान । धरि-धरती ।

४९

(दिल्ली; एकडला)

कहत^१ बात सब बाहर भई^२। चीर सँवारि^३ पहिरिं^४ लई ॥१
 राजकुँवर वहिं देखत [खाँगा^५]। पहिरहिं चीर सँवारहिं माँगा ॥२
 कँवल बदन अब अहीं सोनारी। रूप सरूप सोहाग सँवारी ॥३
 अमिय सिराइ^६ बदन जो अही। राइ^७ देखि चित चेत न रही ॥४
 जिहके^८ नेह लागि^९ अति कया। देखसि वहै चाह तिह लिया^{१०} ॥५
 चला धाइ तिह ठाँई^{११}, मन महुँ^{१२} कहिसि परों लै पाइ^{१३} ॥६
 राजकुँवर कहँ आवत देखत^{१४}, सातों चलीं उड़ाइ^{१५} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-कहहि । २-सँवारि सो । ३-पहिरन (?) ४-राजकुँवर उठि देखै लागी । ५-
 अमिय सरा । ६-राए । ७-जेहिके । ८-लाग । ९-देखसि सोए ताहि चित

लिया । १०-चला पाए तजइ । ११-X । १२-पाए । १३-देखिन्ह । १४-
उड़ाए ।

टिप्पणी—(३) कँवल-कमल ।

५०

(दिल्ली)

तव लग वैं देखीं अपछरा । [- -] नत परान मुरझि कै परा ॥१
भौं धनुक गुन वान विसारीं । चतुर सयानीं हनां कटारीं ॥२
[परि*] हरन्हि औ परगट घाऊ । हियैं साल सुधि गये अगाऊ ॥३
डसत वान न चूकै जानी । जस र बरस पारधी विनानी ॥४
चखत वान चूक न आहा । हियैं लाग निकसि न चाहा ॥५
जस मेंघा उठै कहँ दीजइ, औ हनैं खर जिउ जात ।६
छाड़ चलैं धरा दहन्त, पारुधि हनै सो घात ॥७

टिप्पणी—(२) भौं-भौंह । धनुक-धनुष । गुन-रस्सी; तन्तु । विसारी-विषयुक्त ।
हनां-हनन किया ।

(५) चखत-नयन ।

५१

(दिल्ली; एकडला)

संगि' न साथी मीत न आहा । को र' संदेस पिता सँउ' कहा ॥१
तिह टाइ न' आह सयाँना' । को र सींच को पानि जो आना ॥२
को उचाइ' रस वचन सुनावइ' । पेम कथा कहि को र जगावइ' ॥३
घाइ आइ' जो देखी'० पास । मुख फेंफर' तन आह न साँसा ॥४
अमिय'१ सींच बैठार'२ सँभारी । काह देखि 'तूँ गा बिसभारी ॥५
कै सपना कै सैतुख,'३ कै शँरका तूँ'४ आहि ।६
रोगिया वेदन कहै वैद सो, औखद लावइ'५ ताहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-संग । २-रे । ३-साँ । ४-नहीं । ५-सेआना । ६-उचाए । ७-सुनावै ।
८-रे जगावै । ९-धाए आए । १०-देखै । ११-मेभर । १२-अमिअ ।
१३-बैठाल । १४-तैं । १५-सैतुख । १६-कै तै छेरगा । १७-लावइ ।

टिप्पणी (२) आनाँ-लाये ।

(३) उचाइ-उठाकर ।

(४) फेंफर-सूखा हुआ ।

(५) बिसभारी-बदहोश ।

- (६) सौतुख-प्रत्यक्ष । झँरका-भूत-प्रेतसे अभिभूत ।
 (७) वेदन-वेदना ।

५२

(दिल्ली; एकडला)

माई मोरि तुम्ह धाई न होह । तुम्ह छाड़ें किह उटै मरोहूँ ॥१
 देखों सोइ जाइ न कही । चित चिन्ता मन भीतर रही ॥२
 सात जनीं आई अपछरा । तिहँ महुँ एक सहस दस करौं ॥३
 ताकर रूप कहों हों तोही । बैठों समुझ टेक दई मोही ॥४
 भानु उदय उदयागिरि कीन्ह ॥ झार लागि सिर पाउ न चीन्ह ॥५
 बीजु चमक बड़ चमकी चौदों, तेहीं हों गा विसँभार ॥६
 माँग पयोहर गर पा कर नख, एक एक कहउँ सिंगार ॥७

पठान्तर—एकडला प्रति ।

१-तोहि धाप । २-तोहि छाड़ि एहि उटे मोरोहू । ३-सोए जाए नहि । ४-चित ।
 ५-X । ६-खनी । ७-तिन्हि । ८-मैं । ९-बैठे । १०-देहु । ११-भानु उदै
 उदयाकर कोन्ह । १२-चोन्ह । १३-चमकी पर । १४-X । १५-बेसभार ।
 १६-कर । १७-पाए । १८-X । १९-X । २०-कहीं ।

टिप्पणी—(१) माई-माँ, माता । धाई-दूध पिलाकर शिशुका लालन पालन करने-
 वाली । किन्ह-किसको । मरोहू-छोह, आत्मिक स्नेह ।

(२) सहस दस करौं-दसहजार किरण अथवा कलाएँ ।

(४) ताकर-उसका । तोही-तुझसे । टेक-सहारा ।

(५) उदयागिरि-पुराणोंके अनुसार पूर्व दिशाका एक पर्वत जहाँसे सूर्य उदय
 होते हैं । झार-अग्निकी लपट ।

(६) गा-गया ।

(७) पयोहर-पयोधर । गर-गला । पा-पैर ।

५३

(दिल्ली; एकडला)

कर सों कुरिल सवारसि वारा । देखेउ माँग बहुत जिय मारा ॥१
 माँग सेत चन्दन जस भरे । कै र पाँति माँतिह कै धरे ॥२
 [वग क] पाँति जस आह सुहाई । बादर घन कारे महुँ आई ॥३
 माँग जोति अस भौ अजियारा । निसि अंधियार टूटि जस तारा ॥४
 खरगधार भर माँग सराहे । लागहि दुइ र दूक होइ चाहे ॥५
 हम सिर लाग भयउ दस खाँडा, कर बेगर सर पाउ । ६
 हों जिय डर भय कर सेऊँ, कहउँ पावक सुभाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-सँवारिसि । २-देखै माँग पुहुप जस । ३-धस भरी । ४-रे । ५-धरी । ६-बगै । ७-अस आह अपारा । ८-जनि । ९-जस । १०-लागै । ११-रे । १२-होए । १३-भएव । १४-जीठी । १५-पाव । १६-(दि० मार्जिन) अत्रित सीचि उचायहु धाई । १७-अत्रित सीचि जिआए, तोहि हौं कहो सो भाव ।

टिप्पणी—(१) कुरिल-कुटिल, घुँघराले । बारा-बाल, केश ।

(२) सेत-श्वेत ।

(३) बग-बक; बगुला । बादर-बादल । कारे-काले ।

५४

(दिल्ली)

भँवर वरन अति जिह र सुहाई । चन्दन वास कैं नाक रिसाई ॥१
जोर छोर मुकरावइ सोई । [वैसहि छवि न पायेउँ कोई*] ॥२
लट जो लटक गाल पर परै । जस र पदम नागिन बस निकरै ॥३
जो र देख विस लागै ताही । औखद मूर न कारा आही ॥४
सर बालहि आइ घुँघरार । लहर न लहरै भुअंगम कारे ॥५
सो विस ह्रमको चढ़ि गा, सरलहि परेउ लहर मुरझाइ । ६
परन बोल तुम नहि वृछा, कौन निरत लिखाइ ॥७

५५

(दिल्ली; एकडला)

दीख' ललाट' दुइज' सलि रेखा । उयेउ' मयंक मैं न जग देखा ॥१
देखत नैनहिं दिस्टि घटाई' । भानु सरग' जनु उदिनल आई ॥२
बदन पसीज वूद जनु' तारा । चाँद नखत लै उयेउ' अंगारा' ॥३
मनु'^{१०} दामिनि कोंधा लौकाई । चलेउ'^{११} धाई हौं परेउ'^{१२} भुलाई ॥४
जोति लिलार भयउ'^{१३} उजियारा । चाँधि परेउं हौं कहु'^{१४} न सँभारा ॥५
देखि लिलार विमोहेउ'^{१५}, कहु न समझेउ'^{१६} धाई । ६
टूटि करेज लोहु भा पानी'^{१७}, औखद कहु कहु पाइ'^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-बिबु । २-लिलार । ३-दूज । ४-उयेव । ५-खुटाई । ६-सरग भानु ।
७-जनि । ८-उएव । ९-अकारा । १०-मन । ११-चलेव । १२-परेंव ।
१३-भएव । १४-परेंव मैं । १५-विमोहेवों । १६-समझेव । १७-X । १८-कह
कुछु माए ।

टिप्पणी—(१) मयंक-चन्द्रमा ।

(२) उदिनल-उदित ।

५६

(दिल्ली; एकडला)

भौंह धनुक जनु^१ अरजुन केरा । वान मार जासों फिरि हेरा ॥१
काल कस्ट गुन देंउ^२ विसेखा । पंचवान^३ लागत खर देखा ॥२
करन वान इहँ कहि^४ सों पाये । विसहिं बुझाये सान खर^५ लाये ॥३
भौंह फिराइ^६ मार सर जाही । तन्त न मन्त न औखद आही ॥४
हौं रे मिरिग^७ वह पारुधि^८ भई । वान विसार मारि हन गयी ॥५
पारुधि^९ परसुराम^{१०} कलिजुग महेँ, कामिनि भौंह गुनीज^{११} ॥६
रुहिर न ऊपर पेखी^{१२}, हिये साल जो कौज^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—जस । २—काल कुष्ट कंडो । ३—पनच नाहिं । ४—अं केहि । ५—(दि०) खर
सान । ६—विसार । ७—मिरगा । ८—उवह पारुध । ९—पारुध । १०—परसराम ।
११—X । १२—गनीज । १३—रुधिर न आव घाव नहिं पेखी । १४—गनीज ।

टिप्पणी—(१) पंचवान—कामदेव ।

(२) करन—कर्ण; महाभारत का एक वीर । खर—तेज ।

(५) पारुधि—शिकारी । विसार—विपैल । हन—मार ।

(७) रुहिर—रुधिर । पेखी—देखी ।

५७

(दिल्ली)

बरुनि बात कहां सुनु भई । देखत तन छहर कै गई ॥१
रौम रौम वेधा न सँभारों । इह कहां औ कही न पारों ॥२
बरुनि सघन न पारों [सेजी*] । भारत जीत करन सर भेजी ॥३
करन अरजुन में जल खेता । हौं वह करन वह रोवहु वैठा ॥४
सहज बरुनि जनु काजर दिया । यहै सिंगार पिउ आरस किया ॥५
चौदह भुवन प्रियमी आहै, सात दीप नौ खण्ड ।६
सरग पतार बरुनि सर वेधा, जियउ पाहन गण्ड ॥७

टिप्पणी—(१) बरुनि—भौंह ।

(३) भारत—महाभारत । करन—कर्ण; महाभारतका एक वीर ।

(५) खेता—युद्ध ।

५८

(दिल्ली)

लोन सेत वरन रतनारी । कँवलपत्र पर भँवर सँवारी ॥१
चपल बलोल ते थिर न रहाहीं । जनों गजमोती थाल भराहीं ॥२

बाँती बरहि अइस मैं देखी। उलटि रहे तिह सँमुद विसेखी ॥३
मदन-दीप पटुमनि चख बागी। कहो मैं सहज पवन अधारी ॥४
गये संग बहिर कुरंगिन परी। भूले पन्थ न हारी घरी ॥५

आइ तखै मैं दप्प घन, चंचल चपल बिसाल ॥६

धाइ त चुकत अनुल बल, भये हम तन काल ॥७

टिप्पणी—(१) लोयन-लोचन, नेत्र। सेत-श्वेत। बरन-वर्ण। रतनारी-लाल।

(२) बाँती-बत्ती; दीपक।

५९

(दिल्ली)

चुगत सवन माँझ तिल भया। विध सर कमल भुजंग निरमया ॥१
बास लुबुध तिह उड़त न देखा। पेम गहा का करहि सरेखा ॥२
जस मोइ बिरह टूटि तिल परा। जग मोहै कारन जस धरा ॥३
सो तिल मुँह क भयउ सिंगारू। मुँह नखोर न खेलो सँयसारू ॥४
तिह तिल साथ लागि जिउ गया। देखहु धाइ सवन हिय किया ॥५

तिल र सुहाउ न कहि सकौं, राखौं अपूरन छाइ ॥६

कनक सपन जम हिय खरग, सो महिं कहीं न जाइ ॥७

६०

(दिल्ली)

सवन सोमेल छोट न लाँबी। साँप सँवार कंचन जस आँपी ॥१
झरकहिं दुहु दिसि दामिनि लवई। कै र अगिनमुख कुन्दन तवई ॥२
ओ तर तपा खूहीं सुहानी। दुइ उगसत ससि साथ जो आनी ॥३
एक उगसत जो सरग उआई। दूसर ईहाँ कहा सों आई ॥४
एकहिं कहतैं आवैं चुक वानी। इहै र समुंद सूख पलानी ॥५

बरजत दिस्टि परी हौं सो कहौ, रकत न रहा सरीर ॥६

दिनयर दहा कँवल जेउँ, विनीत न पल न घटै नीर ॥७

टिप्पणी—(१) सवन-(श्रवण) कान। सोमेल-सन्तुलित।

(२) लवई-कौंधती है। कुन्दन-विशुद्ध सोना। तवई-तपै।

(३) खूहीं-(खूँटी) कानमें पहननेका एक आभूषण। उगसत-उगता हुआ।

(४) उआई-उगती है।

(५) बरजत-मना करते हुए।

६१

(दिल्ली)

गाल सुभर पातर न मोटी । जानु कपोल कनक दइ घोटी ॥१
 जनु गौरा पावसि चिकनाई । कै र काज गालहिं लै आई ॥२
 कै घट पड़ पाहन वैसावा । धाई रूप सुन वकति न आवा ॥३
 हों कपोल धर रहेऊँ तवाई । घूम परेउ ताँवर न जाई ॥४
 विरह कपोल पर धरव कपोला । सुर नर नाग सेस फुनि डोला ॥५
 जोगी जंगम तपसी, जती सन्यासी सब । ६
 देखि कपोल नारि कै, एकहु रहा न कव ॥७

टिप्पणी—(१) पातर—पतली ।

६२

(दिल्ली)

नाँक सोमेल सुनहु यह बानी । इसवर कर कहँ धरेउ विनानी ॥१
 कै पथ और दुहों धर रहा । सपूती सपनैँ मँहँ कहा ॥२
 कहँ न ऊँच भौ बहु मुँह जोरी । देव सराहहिं तँसो गोरी ॥३
 कों कह अँमरित सान सँवारी । तिह न सराहहिं जिनेँ औतारी ॥४
 तिलक फूल जस ऊपम दीजै । और क जग मँहँ शोभह कीजइ ॥५
 पुहुप समै परिमल कै लेई, वास परसि सब खान । ६
 परिमल लीन्ह हमारेउ, दीखत विन परिमल कै जान' ॥७

पाठान्तर—मार्जिन में—

१—परिमल वास लेइ वह जाई, खटरस बन्द गुनार ।
 करहि चन्दन सोंहागी मत सो, दै दीजै जो सँवार ॥

६३

(दिल्ली)

अधर सुरंगी पान जनु खाई । कै र घोर ईगुर कै लाई ॥१
 हाट चीर निहसत सों कीन्हा । अमिय आन तिह ऊपर दीन्हा ॥२
 कुहकन लीकें अधर मुहाई । चाँट जानु अमिय रस आई ॥३
 यह रंग अधर न देखेउ धाई । सँरग पँवार आन धर लाई ॥४
 रक्त हमार अधर सँउ पिया । जासँउ वकत सो कइसइ जिया ॥५
 असकै जो हँस अधर सँउ, पियर भयउ जस आँव । ६
 झँकि विरह पौन मिस, रस हमारे लाँव ॥७

टिप्पणी—(१) धोर-घोल ।

(२) चाँट-चींटा ।

(६) आँव-आम ।

६४

(दिल्ली; एकडला')

चौक जोत' बैरागर हीरा । दामिनि चमके रैन गँभीरा ॥१
अन्त न देख रहे चख भामिनि' । जनु' काजर चख' देउ' सो' कामिनि ॥२
कंचन गौर' भँवर भर' राखै' । दारिउ' दन्त काहुँ' नहि चाखै' ॥३
दसन मकोइ तँवोलहिँ' पाके । हँसत सहेलिह सेउ' हम ताके ॥४
ऊँच न नीच बरावर' पाँती । देखत दसन होइ' मन साँती ॥५
चौक चंचल बरु चमकत देखेउ', चुगत भुलाएउ जोति' ॥६
कह वियोग धाई सेउ आपन', नैन बरलि गजमोंति ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-दाँत क जोत । २-अति रेख देख रही चखु भामिनी । ३-जनि । ४-चखु ।
५-६-X । ७-कोर । ८-भर । ९-राखो । १०-दारिब । ११-काहु । १२-
चाखो । १३-मकोउ बोलह । १४-साँ । १५-बरावरि । १६-होय । १७-चंचल
पर चमकत देखौं । १८-चखु भुलाने जोति । १९-कहै वियोग धाईसाँ ।

टिप्पणी—(१) चौक-दाँतोंकी पंक्ति । बैरागर-मध्यकालीन हीरेकी प्रसिद्ध खान ।
हीरेके खान के रूपमें इसका उल्लेख सोमेश्वर देव (बारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध)
ने मानसोल्लासके रत्न-प्रकरणमें किया है । इस नामके मूलमें संस्कृत वज्राकर
(हीरेकी खान) शब्द जान पड़ता है । प्राचीन और मध्यकालीन साहित्यमें उल्लिखित
हीरेकी खानोंकी पहचान कर सकना आज सुगम नहीं है, क्योंकि बहुत ही कम
ऐसे प्राचीन खान बच रहे हैं जहाँसे हीरे निकाले जाते हों । फिर भी मोतीचन्द्र-
का अनुमान है कि चाँदा (मध्य-प्रदेश) जिलेमें बेनगंगाके तटपर स्थित
बैरागढ़का ही प्राचीन नाम बैरागर है । वहाँ आज भी हीरे प्राप्त होते हैं । उनके
इस अनुमानके मूलमें नाम साम्यके अतिरिक्त यह तथ्य भी है कि हीरेकी खानों-
की सूचीमें बुद्धभट्टने वैष्णातट, बराह-मिहिरने वेणातट और अगस्तमतने वेणु-
का उल्लेख किया है और वेण अथवा वेणु आधुनिक बेनगंगाका प्राचीन नाम है ।
दामिनि-विजली ।

(२) भामिनि-नारी ।

(३) मकोइ-एक फल, खुशबरी ।

६५

(दिल्ली)

अति रसाल रसना मुख ताही । बोलत बोल लाग चित जाही ॥१
 बोल सुहाउ सो कोकिल बानी । काकल माँझ लख साँ आनी ॥२
 कुरला रितु बोलै भिनुसारी । पेम खटारस कहै सँभारी ॥३
 अर्मिय बचन वासुकि सन पाई । सीतल चन्दन साल सुहाई ॥४
 जीभ जानु मुख कँवल अमोला । फूल झँरहि जो हँस हँस बोला ॥५
 वह र हँसत हम देखी, हौं रोवइ तिह लाग ।६
 अस धनि जाइ हाथ मिलाइ, इह लिलार नहिं भाग ॥७

टिप्पणी—(३) कुरला—एक पक्षी; कुररी, टिटिहरी ।

(७) लिलार—ललाट ।

६६

(दिल्ली)

गिय अनूप कहाँ सुनु धाई । जानु कुँदेरें कुन्द भवाई ॥१
 गिय मजूरि कै धिरत परेवा । कहिसैं कै आह सहज वह मेवा ॥२
 गिय न लाँव न पातर छोट । गढी बनाई अधिक न मोट ॥३
 देखत भूल रहेउँ मुरझाई । टग लाइ महुँ दिहसि लखाई ॥४
 तीन रेख जाँह कँठमाला । वह अभरन माँ किहसि जिय लाला ॥५
 फाँस भई वहि रेखें, परी हम आइ ।६
 सरभहि खाल तिह गोरी, जीउ ले गई सो धाई ॥७

टिप्पणी—(१) गिय—गला । कुँदेरें—कुन्दीगर, खरादनेवाला । कुन्द—खराद । भवाई—
 धुमाया ।

(२) मजूरि—मयूर, मोर । परेवा—कबूतर ।

(५) जिय लाला—जीनेमें कठिनाई ।

६७

(दिल्ली)

भूपर आन मरताल सँवारी । सुभर पेइ पालो टटकारी ॥१
 अइस न देखेउ काहु कलाई । विरियाँ चरचर चरहिं सुहाई ॥२
 तो वह जान रकत का आही । कै मँहदी र सुहागिन लाई ॥३
 करपालो जनु मूँग क छही । नखँ जोत सत अधिक न कही ॥४
 छीता निहसत लोग सराहा । करवारी नख और न बराहा ॥५
 हमें लाग वह निहसत चूकै, भल होइ न घाव ।६
 हरक घाव जस उपजै सरभहि, दन्द न होइ पियाव ॥७

टिप्पणी—

(१) मरताल—मृणाल, कमलनाल ।

(४) करपालो—कर-पल्लव, हथेली । भूँगा—मूँगा । छही—छवि, छाया ।

६८

(दिल्ली)

साँख घोटि कै पीठ सँवारी । कै र मै न साँचे मँह डारी ॥१
 साँचहि अइसी डार न जाई । विध अपनै उर चित उपनाई ॥२
 पीठ दीपै जानु झरकै दहा । देखेउ पीठ जहाँ लय रहा ॥३
 वासुकि पूर गाँठि तर देखा । कै बोलिन गुन सरग बिसेखा ॥४
 बिखम भुअंगम बेनी भये । मारग वहै सीस केर गहै ॥५

चतुर सुजान का कहउँ सोई, जै पीठ रची सँयसार' ।६

नख सिख बनै निपट निरासी, सिरजन हार मुरारि ॥७

पाठान्तर—मार्जिन में—

१—जै य रची सवॉर ।

टिप्पणी—(१) साँख—संख ।

(५) भुअंगम—सर्प ।

६९

(दिल्ली)

लंक चहँ किह लाओं जोरी । जनु केहरि सेउ किहिसि उ चोरी ॥१
 चलत डोल जनु बेगर अहा । लागत पवन दूट न रहा ॥२
 कर कर बारक मूठ समाई । विसा लंक किहिसि बौराई ॥३
 भरम चीर मँह बार बिसेखी । अमर ऊपनह सुँरग न देखी ॥४
 देखत लंक विमोहहि देवा । गन गन्धरप औ नर महदेवा ॥५

उतर न देइ न लहकँह, किहँ पँह हों बैरागू आह ।६

लंक टेक कर रोवइ, यह दुख बकतँउ काह ॥७

टिप्पणी—(१) केहरि—केसरी; सिंह । किहिसि—किया । उ—वह; उसने ।

७०

(दिल्ली)

गहन कटोर पयोहर नारी । जनु कुँभस्थल सरल सुहारी ॥१
 कँवल वरन कुच उठै अमोला । तिह पर वइठ भँवर एक भूला ॥२
 तरल तीख उर लागहिं जाके । छाती फूट पीठ मँह ताकै ॥३
 तिह डर नियर न आवइ कोई । देखत मरै बेर न होई ॥४
 भूल परै चख जाइ समानी । सर धुन मरौं न आवै तानी ॥५

कनक कलस उर कामिनि, रस भर धरे अनन्त ।६
देखै छुवै न पाईह, कुँभस्तल मैमन्त ॥७

टिप्पणी—(१) पयोहर—पयोधर, स्नान । कुँभस्थल—हाथीका गण्डस्थल । (कवियों-
ने प्रायः स्तनोंकी उपमा कुँभस्थल से दी है) ।

(४) बेर—देर ।

(७) मैमन्त—मदमस्त हाथी ।

७१

(दिल्ली)

स्याही काली रोमावली । कै कालिन्दी विरहैं जली ॥१
कनक सिखर दुँह बीच बहाई । नाभी माँग चलि कहैं आई ॥२
तिह ठाँ तीरथ भयउ पयागू । बेनी झार जिय कर लागू ॥३
मन कामना जो कन्त को कीन्हा । औ बहुतहि करवत सर दीन्हा ॥४
ऊ कहैं करसि अगिन जो खाई । कया काटि के नुरत विलाई ॥५
मन कामनाँ न पूजै काहु क, बहुतै किय निरास ।६
करवत देत सरहिँ मैं अपनै, धाई सुनहु वह आस ॥७

टिप्पणी—(१) कालिन्दी—यमुना ।

(३) पयागू—प्रयाग । बेनी—त्रिवेणी ।

(४) करवत—(करपात्र) आरा ।

७२

(दिल्ली)

नैनुँ मथि कै पेट कमावा । कै जनु पाट पछिउँ सेंउ आवा ॥१
आँठ काढ़ि कै जान पियावइ । सेतहि चार कै जीँउ बहावइ ॥२
पातर पेट कहौं बिछराई । पूरी जानु गुनवार पकाई ॥३
नाभी देखत जाइ न छाड़ी । कनक काँह जनु आँगुरि काढ़ी ॥४
कै र भँवर जस नीर बहिराई । जो र परै उठि निकसि न जाई ॥५
इवि रहा जिउ नाभी कुण्ड, र गयेउ निकसि न धाई ।६
जाकर नाभि देख जिउ दीने, और वात कहि जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) नैनु—मक्खन ।

७३

(दिल्ली)

कदलि खम्भ दोइ जगत सुहाई । दखिन क चीर आन पहिराई ॥१
देखेउ जंघ पार न पावा । कनक हीर सँदुर जनु लावा ॥२
कै मलयागिर केर सँवारी । सुहर पेड़ पालो सतकारी ॥३

चलत अन्त तरुवह कै पावा। जानहु घोर महावर लावा ॥४
 मन मँह अस भा सर भुईं लागेउ। पाउ धरै सिंह रंग चाखों ॥५
 कहों सिंगार सहज कै सोलह, रहों न कितहुँ भुलाइ ॥६
 सरसेउ लखन सपूरन दरद देखा वहि पाइ ॥७

टिप्पणी—(३) केर-का। सुहर-सुघर। पेड़-पालो-पल्लवयुक्त वृक्ष। भोजपुरी में पेड़-पालो मुहावरे के रूप में पेड़-पौधों के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

(४) तरुवह-तालुओंका।

७४

(दिल्ली)

वरन सुनहु औ कहउँ गुनाई। कुंदन कै जनु देय झरकाई ॥१
 कौख वरन चिनिया कै कली। अछर आउ ईंदरासन चली ॥२
 काँचे कँवल कंकर रस पिया। अइस वरन बिध वहि कहँ दिया ॥३
 पुहुप जहाँ लह अँग गंधाई। कँवल कहाँ मुख सपूरन चाहीं ॥४
 बड़ हन लोन वरन कों काहा। अति सरूप तिहु भुवनों आहा ॥५
 ससहर जस र सरद रिनु नरमै, सोरह करौ मयंक ॥६
 वहि क करन अमिय न पियइ कहँ, हौं चकोर जस रंक ॥७

७५

(दिल्ली)

सकलेउ गात लाँब न छोटी। पातर तन न अधिक न मोटी ॥१
 मेल सोमेल वरन को काहा। जस जिय चाहै तस तिह आहा ॥२
 नौ व सात जो कहिउ सिंगारा। ते वहिकँह दीन्हेउ करतारा ॥३
 सेत चार कीसन चारी। खीन चार औ चार जो भारी ॥४
 सेत माँग चख चौक जो नखा। कुच औ दसन केस औ चखा ॥५
 नाँक अधर कटि कहौं, करपल्लो सब खीन ॥६
 गाल कलाई भौं कुच, कदलि पेड़ नहिं छीन ॥७

टिप्पणी—(३) नौ व सात—सोलह

(४) सेत—श्वेत। कीसन—कृष्ण; काला। खीन—क्षीण। सोलह शृंगारके रूपमें कुतुबनने शरीरके अवयवोंका वर्गीकरण चार श्वेत, चार कृष्ण, चार पृथुल और चार क्षीणके रूपमें किया है। जायसीने भी पदमावत-में इसी प्रकारका वर्गीकरण किया है किन्तु उन्होंने श्वेत और कृष्णके स्थानपर लघु और दीर्घका उल्लेख किया है।

(५) श्वेतके रूपमें यहाँ माँग, चख (नेत्र), चौक (दाँत) और नखका और कृष्णके रूपमें कुच, दसन (दाँत), केश और चख (नेत्र) का उल्लेख है।

इसमें दाँत और नेत्रको दोनों वर्गोंमें गिनाया गया है। जायसीने दीर्घ के रूपमें केश, अँगुली, नयन और ग्रीवा तथा लघुके रूपमें दशन, कुच, ललाट और नाभिको बताया है।

- (६) क्षीणके रूपमें नाक, अधर, कटि और करपल्लव (हथेली) का उल्लेख यहाँ है। जायसीने इस वर्गमें करपल्लवके स्थानपर पेटको रखा है।
 (७) पृथुलके रूपमें गाल, बलाई, भों और कुचका यहाँ उल्लेख है। गाल और कलाईका उल्लेख जायसीने भी किया है। उनके अनुसार अन्य दो नितम्ब और जाँघ हैं।

७६

(दिल्ली)

बारह अभरन जग मँह कहे। एक एक कहउँ संभ जे आहे ॥१
 पहिरसि दखिन क चीर सँवारी। तरुनी जनमों अपछारी ॥२
 कै माँजन सर सँदुर दीन्हा। मुख तँवोल चख काजर कीन्हा ॥३
 कुसुंभ पहिर के चन्दन घोला। रितु बसन्त विदराई बोला ॥४
 जो डर नाँ कहै कर सोई। विन्व वरावर और न होई ॥५
 सीस कण्ठ कर लंका, जोपैं वाँच सुनहु अइ धाइ ॥६
 सात पाँच ई अभरन बारह, एक एक कहिउ बुझाइ ॥७

टिप्पणी—(१) माँजन—मंजन।

७७

(दिल्ली)

दइ सिंगार ईह अभरन राती। एक हनुवन्त औ पौन संघाती ॥१
 कली बीरा अतै सुहाई। बीरी पान खाँड कै खाई ॥२
 पान खाइ जो घोंटसि पीका। गिय आगें अरु देखेउ लीका ॥३
 गवन करै जनु समुँद हिलोरे। गज मराल सँउ लिहिसि अजोरे ॥४
 अति सुबुधि गुन गरव कै माँती। मिरगि सुरंगिन पाँतहि पाँती ॥५
 पाँव परै कहँ धायेउँ वहिकै, देखत चली उड़ाइ ॥६
 भा झनकार चमक कै गवनै, तिह परेउ मुरझाइ ॥७

७८

(दिल्ली एकडला)

धाई कहा यह कार न बहूता। समुझ कुँवर सुनु [राजें के पूत] ॥१
 यह र वात कै चिन्ता न कीजई। हों बुधि कहों च[वन] सुनि लीजई ॥२
 अहा एक बुधवन्त जो गुनी। यह र वात हम वहि साँ सुनी ॥३

तो हम बात सीख कै लिही^{११} । हौं बुधि कहों जाइ^{१२} जो कही ॥४
 मिरगावति रानी है भावा । करै एकादसि निरजल आवा ॥५
 वह लुकाई^{१३} तिह ठाई, जिह^{१४} ठाँ^{१५} फुनि^{१६} परब कहँ आउ^{१७} । ६
 तिह कहँ^{१८} हाथ आउ वह, ^{१९} कैसहिं^{२०} चीर लै^{२१} जो पाउ^{२२} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-यहि कारन भूता । २-सुन । ३-रान । ४-एहि रे । ५-चिन्त । ६-कीजै ।
 ७-सौं । ८-लीजै । ९-आह । १०-हमरे बात उहि सों अस मुनी । ११-तो हम
 सौन सीखि कै दिही । १२-जाय । १३-लुकाए । १४-१५-X । १६-फुनि रे ।
 १७-आए । १८-तेहि के । १९-वह आवै । २०-X ; (दि० मार्जिन) तोरें ।
 २१-लिए । २२-पाए ।

टिप्पणी—(१) कार-कार्य । बहुत-बहुत बड़ा । पूता-पुत्र ।

(२) वहि सों-उससे ।

(४) लिही-लिया ।

(६) लुकाई-छिपी । ठाई-स्थान । ठाँ-स्थान । फुनि-पुनः । परब-पर्व ।

(७) आउ-आयेगी । कैसहिं-किसी प्रकार । पाउ-पावे ।

७२

(दिल्ली; एकडला)

घाइ क मन्त्र स्रवन^१ चित छावा । सरवर तीरहिं कूप रिसावा^२ ॥१
 जो निरजला एकादसि^३ आई । तिह^४ ठाँ छुपि^५ के रहा लुकाई ॥२
 मिरगावति^६ सब सखीं बुलाई^७ । अहीं सहेलीं तैं सब आई ॥३
 आपुन^८ बात सखिन्ह^९ सों कहा । अउर^{१०} बात जहवाँ^{११} लहि अहा ॥४
 यह^{१२} पै एक न बकती^{१३} वाता । जो जिउ राजकुँवर सों राता ॥५
 सेज गवँझ^{१४} चटपटी^{१५} लागी, ^{१६} कहि^{१७} न काहु^{१८} सों बात । ६
 यही बात पै माँगहि विधि सों, ^{१९} जो र^{२०} कुँवर चित रात ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-सौन । २-गोंफा सरवर तीर रसावा । ३-एकादसी । ४-तेहि । ५. छपि ।
 ६-मिरगावती । ७-बोलाई । ८-अपनी । ९-सखिन्हि । १०-और । ११-जहमा ।
 १२-एह । १३-बकतै । १४-कवेळ । १५-X । १६-कह । १७-काफू । १८-
 एहरे बात न कहै काह सों । १९-रे ।

टिप्पणी—(१) रिसावा-खुदवाया ।

(३) अहीं-थीं ।

(४) आपुन-अपनी । अउर-और । जहवाँ लहि-जहाँतक ।

(५) पै-किन्तु । बकती-कहा ।

(६) गवँझ-आकुलता । चटपटी-छटपटी ।

८०

(दिल्ली; एकडला)

जिय कै वात न आपुन कहा^१ । जानु^२ गूंग खाइ^३ मिटाई रह्या^४ ॥१
 कहिसि विहान चले नहाई । करै एकादसि^५ निरजला आई ॥२
 सब सिंगार कै गोहन भई । चन्दन शिरकि फूल बहु लई^६ ॥३
 रूप सरूप सुभाग सँवारी^७ । झमकि चलीं सब जोवन वारीं ॥४
 कोड^८ करहि वै^९ सबद सोहाई । सरवर तीर निमिख महँ आई ॥५
 अभरन चीर उतारि धरि,^{१०} पैठी सबै अन्हाइ^{११} ।६
 ससि र^{१२} नखन लै तारे,^{१३} सरवर खेलै आइ^{१४} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-अपनी कही । २-जनि । ३-खाए । ४-रही । ५-कहै एकादसी । ६-फूल
 सब गई । ७-सोहाग सोनारी । ८-गवन । ९-उवै । १०-उतारि जो रखिन्ह ।
 ११-नहाए । १२-रे । १३-तारा । १४-जाए; (दि० मार्जिन) चाँद नखत ले
 तारा, सरवर आइ नहाइ ।

टिप्पणी—(१) जानु-मानों । गूंग-गूंगा ।

(२) विहान-प्रातःकाल ।

(३) गोहन-साथ ।

(४) कोड-क्रीड़ा । निमिख-क्षणभर ।

(६) अभरन-आभरण, आभूषण । धरि-रखकर । पैठी-पानी में घुसीं । अन्हाइ-
 लानके निमित्त ।

८१

(दिल्ली; एकडला)

चंचल चपल सुजान सुनारी^१ । मिलि सहेलिन्हि खेलि धमारी^२ ॥१
 कोड^३ करहि कुमुदिनि सब तोरहि । बिहँसहि हँसहि कँवलघट तोरहि^४ ॥२
 राजकुँवर जिह हतो^५ लुकानाँ । देखिसि कँवल भाँति विगसाना ॥३
 जँउ^६ ससि देखि कुमुद विगसाई । पावस चन्द चकोर भिलाई ॥४
 जिह लग ईत किहौ अपकारा^७ । सो अब आइ मिलेउ^८ करतारा ॥५
 जिय धुकचुकी आउ^९ मन भीतर, कहिसि^{१०} चीर अब लेउँ^{११} ।६
 चीर न आउ^{१२} हाथ जो मोरें, तो इहँ ठाँउ मरेउँ^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-सोजान सोनारी । २-मिली सहेली खेल धमारी । ३-कौल गहि मोरहि; (दि०
 मार्जिन) कँवल मुख मोरहि । ४-जहँ हुता । ५-जँव । ६-जेहि लगी एत किएव
 उपकारा । ७-आए मेरवो । ८-जिअ धुकचुकी और । ९-कहै । १०-लेंव ।
 ११-आव । १२-तो एहि ठाँव जिउ देव ।

टिप्पणी—(२) कँवलघट—कमलगट्टेका छत्ता ।

(३) हतो—था । लुकाना—छिपा । बिगसाना—विकसित हुआ ।

(५) इंत—इतना । किहौं—किया ।

(६) धुकधुकी—धड़कन ।

(७) टाँउ—जगह ।

८२

(दिल्ली; एकडला)

दई^१ सँभरि कै निकसा धाई । चीर ताहि कर लीनसि^२ जाई ॥१
सँवरसि^३ सो बुधि धाई जो कही । चीर लिहसि^४ मिरगावत र^५ गही^६ ॥२
उन्ह आरो मनुसहिं कर^७ पावा । चीर लये कौं मकु कोउ^८ आवा ॥३
सब आपुन आपुन कौं धाई । चीर लये कौं^९ वाहर आई ॥४
आपुन आपुन लीन्ही^{१०} चीरू । मिरगावत कर कहुँ रहहिं न खीरू^{११} ॥५
हम जो कहा तुम्ह सँउ^{१२} तिह^{१३} दिन^{१४} तुम्ह^{१५} जो कहा कोउ^{१६} नाहिं ।
ईत बोलि कह उन्ह सौं^{१७} तुर^{१८} गई^{१९} उड़ र पवन^{२०} पर जाहिं ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-दैय । २-लीतिसि । ३-सँरिसि । ४-लिहिसि । ५-X । ६-रही । ७-उन्ह
मनुसे कर आरो । ८-चीर लेय कहँ मकु कोइ । ९-आपन आपन कहँ । १०-
लेय कहँ । ११-आपन आपन लीनिन्हि । १२-मिरगावती कै गहेव उन्ह खीरू ।
१३-तोह सेती । १४-१५-X । १६-तोह । १७-कोई । १८-एता बोल का कहि
उहि सौं । १९-२०-X । २१-रे पौन ।

टिप्पणी—(१) दई—ईश्वर । सँभरि—स्मरण करके । धाई—दौड़कर । लीनसि—लिया ।

(२) गही—पकड़ ।

(३) उन्ह—उन लोगोंने । आरो—आहट । लये कौं—लेनेके लिए । मकु—कदाचित् ।
कोउ—कोई ।

(५) कहुँ—कही ।

(७) इंत—इतना । तुर—तत्काल ।

८३

(दिल्ली; एकडला)

मिरगावति^१ नहिं सारी पाई । धाई^२ बहुरि पानी मँह आई ॥१
देखिसि कुँवर तीर हँ टाड़ा । मिरगावती वचन^३ मुँह काड़ा ॥२
कहिसि^४ कुँवर तुम्ह^५ नीक न कीन्हा । हमहिं बिछोह सखीं सौं दीन्हा ॥३
कुँवर कहा सुन वातिक मोरी । दूसरि^६ बरिस चाह मुहिं^७ तोरी ॥४
वहिं^८ दिन सँवरि^९ मिरिगिं^{१०} होइ^{११} आई । चित हमार लीन्हि^{१२} वउराई ॥५

१. इस कड़वकके पृष्ठका फोटो हमें उपलब्ध न हो सका । सम्मेलन-संस्करणपर आश्रित ।

वह^{१३} दिन हुतै^{१४} भई^{१५} जिउ^{१६} मोरा, चित मन लागेउ^{१७} तोहि । ६
दूसर^{१८} बरिस समो यह तीसर^{१९}, येहि ठाँ भयउ^{२०} जो मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

- १-मिरगावती । २-धाए । ३-बकत । ४-कहेसि । ५-तुह । ६-दोसर । ७-
मोहि । ८-उवह । ९-सौर । १०-मिरिग । ११-मै । १२-लीन्हेव । १३-तेहि ।
१४-उते । १५-भएव । १६-जिअ । १७-लागा । १८-दोसर । १९-एह तेसर ।
२०-भएव ।

टिप्पणी—(१) सारी—साड़ी । धाइ—दौड़कर । बहुरि—लौटकर ।

- (२) ठाढा—खड़ा । काढा—निकाला ।
(३) नीक—अच्छा । कीन्हा—किया । दीन्हा—दिया ।
(४) बातिक—बात इक । मोरी—मेरी ।
(५) मिरिगि—मृगी । हमार—मेरा । बउराई—पागल ।
(६) हुतै—से । तोहि—तुमको; तुममें ।
(७) समो—समाप्त हुआ ।

८४

(दिल्ली; एकडला)

अउर^१ बहुत दुख तो लगि देखेउ^२ । कहीं^३ न जाइ^४ अधिक अति लेखेउ^५ ॥१
जो तुम्ह सुनहु^६ तो सब दुख कहउ^७ । हियें पीर कैसें कै रहउ^८ ॥२
जिह^९ दिन मिरिगि छया दिखराई^{१०} । पैम फाँद पाछें^{११} संग आई ॥३
तू तो यहि मँह^{१२} गइसि बिलाई^{१३} । हाँ यहि ठाउँ परेउ^{१४} मुरुझाई ॥४
हाथ पाँउ में^{१५} सिर न संभारा । अउर^{१६} बहुत दुख गहेउ^{१७} अपारा ॥५
पितें आइ समुझायेउ^{१८} बहु बिध,^{१९} गयेउ न तिह लग^{२०} साथ । ६
मँदिर उचाइ रहेउ^{२१} यहि^{२२} ठाँई, कैसाहि आउ^{२३} हाथ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

- १-और । २-तोहि लगि देखौ । ३-गनै । ४-जाए । ५-पेखौ । ६-जो रे
उनउ । ७-सहँउ । ८-जेहि । ९-देखराई । १०-आदँ वाछें । ११-तोहि तौ
उन्ह संग । १२-एहि ठावों परेंव । १३-पान हम । १४-और । १५-कहाँ ।
१६-आए समोझाएव । १७-X । १८-गएव न तेहि के । १९-उचाए रहे व
एहि । २०-कैसे आवहु ।

टिप्पणी—(३) छया—छाया; रूप । पैम—प्रेम । फाँद—फन्दा । पाछें—पीछे ।

- (४) गइसि—गयी । बिलाई—लुप्त । हाँ—मैं ।
(५) गहेउ—ग्रहण किया ।
(७) मँदिर—भवन । उचाइ—उठाकर; निर्माण कराकर । आउ—आओ ।

८५

(दिल्ली)

पुनि तैं दुसर दीन्हि दिखाई । सखिह साथ लै सरवर आई ॥१
 देखँउ तोहि दौरि कै आयउँ । जिय सँउ पाउ परै कहँ धायउ ॥२
 हम देखत तूँ गई बिलाई । हों खसि परेउँ भुईँ मुरझाई ॥३
 धाई अँबरित सींचि जियायउँ । जियउ पाछु जिय विसरायउँ ॥४
 परिमल फूल तँबोल विसारा । माता-पिता कुटुँब सँयसारा ॥५

अन न खायेउ तिह दिन सेउ; (पियेउ न जल)^१ पानि ।६

अउर बहुत दुख आहहि मर्हि, बहुतै कहे सो जानि ॥७

मूलपाठ—६—परेउ जस ।

टिप्पणी—(१) दुसरैं—दूसरी बार; दुबारा ।

(२) दौरि—दौड़कर । पाउ—पैर । परै—पड़ना । कहँ—के लिए । धायउ—दौड़ा ।

(३) बिलाई—लुप्त । खसि—गिर । भुईँ—भूमि ।

(४) धाई—सेविका; दूध पिलानेवाली । अँबरित—अमृत । पाछु—पीछे । विस-
 रायउँ—भुलाया ।

(५) परिमल—सुगन्धि । तँबोल—पान ।

(६) अन—अन्न ।

८६

(दिल्ली; बीकानेर)

मिरगावती कहा सुनु राया^१ । तुम्ह लग^२ मिरग धरी [हम] छाया ॥१
 दुसरैं^३ ताहि लागि हों आयउँ^४ । सखी सहेलिह बात लगायेउँ^५ ॥२
 पुनि मिस किहेउ^६ एकादसि^७ केरा । आयउ^८ बेगि न लायउँ^९ बेरा ॥३
 किह^{१०} कारन कहु चीर लुकायहु^{११} । सखी सहेली^{१२} साथ छुड़ावहु^{१३} ॥४
 चीर हमार देहु तुम्ह^{१४} आनीं । जिह आयसु तिह को तूँ सामी^{१५} ॥५

तोर चीर हों देइ न पारों, कही धाई हम बात ।६

तन मन जीउ हमारेउ,^{१६} अरु पै दँउ चीर^{१७} सै सात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—राजा । २—तुम लगि । ३—हों पुनि । ४—आई । ५—सखी सहेलि हों साथ

लगाई । ६—[•••] स धरउँ । ७—एकादसी । ८—आवउँ । ९—लावउँ । १०—x ।

११—लुकावहु । १२—सहेलिहु । १३—छुड़ावहु । १४—तुम । १५—जहँ आइस तहँ

गव न मानी । १६—हमारा । १७—और चीर देउँ ।

टिप्पणी—(१) राया—राजा । लग—लिए । छाया—छद्मरूप ।

(३) मिस—बहाना । बेरा—विलम्ब; देर ।

- (४) लुकायहु-छिपाया ।
 (५) हमार-मेरा । आनी-लाकर । आयसु-आदेश ।
 (६) तोर-तुम्हारा । हौं-मैं ।

८७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चीर हमार देहु^१ कस नाहीं^२ । अउर^३ चीर हमार पहिरि न चाहीं^४ ॥१
 तोर चीर सों^५ उत्तम^६ चीरू^७ । आनि देउ^८ तिह आपन खीरू^९ ॥२
 मरो सोइ जें तिह^{१०} सिखरावा^{११} । इह^{१०} गियान तें^{१२} जिह सों^{१३} पावा ॥३
 कहसि देइ आपुन अब^{१४} आनीं^{१५} । मन महुँ कहसि^{१६} भलै बुधि^{१७} जानी ॥४
 कुँवर चीर भल^{१८} दीन्हे^{१९} ऊन्हीं^{२०} । निकसी पहिरि चौदस^{२१} जोन्ही^{२२} ॥५
 निकसत यहि र^{२३} कुमुँद जस विगसा, ससिबदनी^{२४} मुख देखि^{२५} ।६
 दिनयर उदो^{२६} कीन्हि परभातहिं, कँवल दिगस उहि^{२७} देखि^{२८} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए) देउ । २-(ए०, बी०) और । ३-(ए०) पहिरि न जाही; (बी०) पहिरहिं
 नाहीं । ४-(बी०) से । ५-(ए०) उत्तम । ६-(बी०) चीरा । ७-(ए०) आपन
 आनि देव एक खीरू; (बी०) अनि देहुँ अब आपन खीरा । ८-(ए०) सोए जे
 तोहि; (बी०) जिहि तोहिं । ९-(बी०) सीखाव । १०-(ए०) एह गोआन; (बी०)
 यह गोआन । ११-(ए०) तोह । १२-(ए०) जासों; (बी०) जेहि से । १३-(ए०,
 बी०) कहसि देहु अब आपन । १४-(ए०) कहेसि; (बी०) कहसि । १५-(ए०,
 बी०) भली । १६-(ए०) एक । १७-(ए०) दीन्हेव । १८-(बी०) उन्हीं ।
 १९-(ए०) चौदसि । २०-(बी०) जोन्ही । २१-(ए०) अहरे; (बी०) एहरे ।
 २२-(बी०) बँदन । २३-(बी०) पेखि । २४-(ए०) उदै । २५-(ए०) वै; (बी०)
 तेहि । २६-(ए०) पेखि ।

टिप्पणी—(१) कस-कैसे ।

(२) सिखरावा-सीख दिया; सिखाया । गियान-ज्ञान । सों-से ।

(५) चौदस-चतुर्दशीका चन्द्रमा । चतुर्दशीतक चौदह कलाओंसे चन्द्रमाका
 स्वरूप बनता है । इस्लामकी धारणाके अनुसार चौदसको चाँद अपनी
 समग्र पूर्णताको प्राप्त होता है । अतः उनके यहाँ चौदसके चाँदकी ही
 उपमा दी जाती है । जोन्ही-प्रकाशमान हुई ।

(६) निकसत-निकलते ही । विगसा-विकसित हुआ ।

(७) दिनयर-दिनकर; सूर्य । उदो-उदय । परभातहिं-प्रभातके समय । कँवल-
 कमल ।

८८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आगें कुँवर चली उहि' पाछें । गजमैमत आवइ जनु' काछें ॥१
 हँस रँग परसत जग मेखा' । कै सुकुवार मेघ जनु पेंखा' ॥२
 तुला' रासि ससि जनम जो आवइ' । बहु परकार' कहि ताप बहावइ' ॥३
 रहसत कुँवर मँदिर मँह पैठा । सोन सिधासन ऊपर' बैठा ॥४
 धाइहि कहसि' देखु इह ओही' । जिहि' क पेम' चित छायउ' मोही ॥५
 बैठि सिधासन ऊपर' दोउ' जनु' सारद' संग साथ ।६
 मिरगावति गिय हार,' कुँवर मेलि उर' हाथ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) उवह; (बी०) है । २-(ए०) जनि; (बी०) बन । ३-(ए०) बरिसत जल
 मेघा; (बी०) रंगै जस बरिसत मेघा । ४-(ए०) पेंच जनु पेंघा; (बी०) कैसु कुँवर
 पाँघ जनों पाँघा । ५-(ए०) तोला । ६-(ए०) आवै; (बी०) आवा । ७-(बी०)
 परिकर । ८-(ए०) जीअ बहु भावै; (बी०) जीवन बहु भावा । ९-(बी०) परगै ।
 १०-(ए०) कहिसि; (बी०) कहा । ११-(ए०) उही; (बी०) वोही । १२-(ए०,
 बी०) जेहि १३-(बी०) के । १४-(ए०) छायेव; (बी०) छायेउ । १५-(बी०)
 पर । १६-(ए०) दुइ जन । १७-(ए०) जनि; (बी०) जनौ । १८-(बी०) सार ।
 १९-(ए०, बी०) के हार मँह (महिं) । २०-(ए०) मेल उर; (बी०) उर मेलेउ ।

टिप्पणी—(१) पाछे-पोछे । गजमैमत-मदमत्त हाथी ।

(५) ओही-वही ।

(७) गिय-गला, कण्ठ । मेलि-डाला । उर-छाती ।

८९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति' कहि' कुँवर सँभारहु । कहों बात' एक जो पतिपारहु' ॥१
 तू र' पूत राजा का' आही । हों कुलवन्ति' आहि' तिह' चाही ॥२
 हों तुम्ह' कहों सोन' सुनि लेहू । आवइ' हमरी' सहेलिह' देहू ॥३
 वर न होइ' रस सँउ' रस' कीजइ' । तौ र' चहू' जग पिरत' कीजइ' ॥४
 रस कै' बात बिरसों' न' होई । रस जो आह रस सेउ भल सोई' ॥५
 मैं रस बात कही रस तोसों,' जो रस कीजइ बात ।६
 सो रस रहै दुहूँ जग' ताकर,' जो रस सौ' रंगरात' ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) मिरगावती; (बी०) मिरगावती । २-(ए०) कह । ३-(बी०) बोल । ४-
 (बी०) प्रतिपारहु । ५-(ए०) तोहरे; (बी०) तुम्हरे । ६-(ए०) कर; (बी०) के ।

७-(बी०) हों रे । ८-(ए०) कलवन्ती; (बी०) कुलवन्ती । ९-(बी०) अही । १०-(ए०, बी०) तोहि । ११-(ए०) तोहि; (बी०) तुम । १२-(बी०) खवन । १३-(ए०, बी०) आवै । १४-(बी०) हमरि । १५-(बी०) सहेलिहु । १६-(ए०) होए । १७-(ए०) सौ; (बी०) मेंड । १८-१९-(ए०, बी०) नहिं होई । २०-(ए०) × । २१-(बी०) दुहँ । २२-२३-(बी०) रहै रस लीजै; (ए०) रस रह रस लीजै । २४-(ए०) क । २५-(ए०) बरसौं; (बी०) बर मेंड । २६-नहिं । २७-(ए०, बी०) रस सों रस होई । २८-(बी०) तोही । २९-३०-(बी०) जगत कर । ३०-(ए०) × । ३१-(बी०) सै । ३२-(बी०) रस रात ।

टिप्पणी—(१) पति पारहु-विश्वास करो ।

(२) हों-मैं । कुलवन्ति-कुलवती ।

(३) सौन-श्रवण । हमरीं-मेरी ।

(६) तोसों-तुमसैं ।

(७) ताकर-उसका ।

९०

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

कुँवर कहा^१ कस तोर न मानों । तोह जीउ हों आपुन^२ जानों^३ ॥१
तूँ^४ जिय मोर^५ कया हों आही । जो जिउ^६ कहै कया कै^७ जाही^८ ॥२
जिउ^९ प्रभुता^{१०} कया है नेगी^{११} । ठाकुर अढ़उँ^{१२} करै वह^{१३} बेगी^{१४} ॥३
नेगिन्ह^{१५} आयुस^{१६} मनतैं^{१७} पारा^{१८} । कहि^{१९} प्रभुता सो^{२०} धाइ^{२१} सँवारा^{२२} ॥४
वैद क कहा^{२३} न मानै रोगी । गोरखपन्थ रँग वहि^{२४} जोगी ॥५
तूँ^{२५} र^{२६} वैद हों रोगिया, तूँ^{२७} गोरख हों चेल^{२८} ॥६
सो रोगिया दुख^{२९} पावइ, वैद क कहा^{३०} जो^{३१} बेल^{३२} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) कुँअरि कही; (बी०) कुँवर कहा कह । २-(ए०, बी०) तोर जीअ आपन कै । ३-(ए०) मानों । ४-(ए०) तोह । ५-(ए०) मोरी । ६-(ए०) जीअ; (बी०) जिय । ७-(ए०) कर; (बी०) करै । ८-(बी०) जाही । ९-(ए०) जिअ; (बी०) जी । १०-(ए०) परभता; (बी०) परभुता । ११-(ए०) बेगी । १२-(ए०) अढ़ौ; (बी०) अढ़वै । १३-(ए०) उवह । १४-(ए०) नेगी । १५-(ए०) नेगिन । १६-(ए०) आएस । १७-(ए०) मँटै । १८-(ए०) बारा, (बी०) पारे । १९-(ए०, बी०) कह । २०-(ए०) तौ । २१-(ए०) धाए । २२-(बी०) सँवारे । २३-(ए०) कही । २४-(ए०) रँगसि; (बी०) रँग वह । २५-(ए०) तोह । २६-(ए०, बी०) रे । २७-(बी०) रोगिअ असधि । २८-(ए०) तोह । २९-(ए०, बी०) चेल । ३०-(बी०) दुखु । ३१-(ए०, बी०) पावै । ३२-(ए०) कहीअ । ३३-(ए०) × । ३४-(ए०)-बेला, (बी०) ठेला ।

टिप्पणी—(१) कस—कैसे ।

(३) जिउ—जीव । प्रभुता—स्वामी । कया—काया, शरीर । नेगी—सेवक । ठाकुर—स्वामी । अड़उ—काम करने का आदेश । बेगी—शीघ्रता से ।

(४) पारा—(पार) सकना; करने में समर्थ होना ।

९१

(दिल्ली; बीकानेर)

जो तैं वात सुनैं यह मोरी^१ । सेवा करउँ दासि होइ तोरी^२ ॥१
[जो] न सुनउँ सुनतहि^३ ह्रम कहा । जीभ दसन सैंउ खाँडेउ^४ अहा ॥२
तुम्ह र^५ वात जो सुनी^६ हमारी । तूँ र^७ पुरुख हौं नारि तुम्हारी ॥३
ब्रह्मा रुद्र औ सिउ कै^८ वाचा । मोर जिउ^९ आहै तिह पै^{१०} राचा ॥४
तौलहि^{११} तुम्ह^{१२} रे सभारहु^{१३} नाहाँ । अइहहिं^{१४} सखीं अल्प दिन माँहाँ^{१५} ॥५
अउर^{१६} भाउ^{१७} सब मानहु मोसों^{१८} एक भाउ न^{१९} होइ ॥६
आवइ^{२०} देहु सहेलिहि^{२१} जो जिउ मानो करहु^{२२} सोइ ॥७
पाटान्तर—बीकानेर प्रति ।

१—सुनसि हमारी । २—करोँ मै दासि तुम्हारी । ३—जौ न सुवन सुन तेहु । ४—से खंडित । ५—तुम्हरे । ६—सुनिसि । ७—रे । ८—की । ९—जीय । १०—तुम । ११—तौ लगि । १२—तुह । १३—सँहारहु । १४—आइहिं । १५—अवर । १६—भाव । १७—मोहिं से । १८—एक सुरति नहिं । १९—आवै । २०—सेहेलिहु । २१—जो मन कीरहहु ।

टिप्पणी—(४) वाचा—वचन ।

(५) तौलहि—तबतक । नाहाँ—नाथ; स्वामो; पति । अइहहि—आयेंगे । अल्प—अल्प; थोड़ा । माँहा—में ।

(६) भाउ—भाव । मोसों—मुससे ।

(७) मानों—स्वीकार करे ।

९२

(दिल्ली; एकडला)

वाचा आवधि^१ दुहँ सेउँ^२ भई । पाती लिखी पिता कहँ गई^३ ॥१
राजा^४ देखि^५ कुँवर कै^६ पाती । बाँचे लाग उधार जो^७ छाती ॥२
पाती बाँच^८ सभा सैंउँ^९ कहा । पाती माँझ लिखा अस अहा ॥३
पिता मोर तुम^{१०} जुग जुग राजा । धरम दुदिस्टिल तुम्ह^{११} कहँ छाजा ॥४
वरिस सँहस दस तुम^{१२} कहँ आऊ । सेवा बहुत लिखी बहु भाऊ ॥५
धरम लाग मैं तुमरें^{१३} पूतैं^{१४} पायउँ चाहिउँ^{१५} जाहि ॥६
मन मनसा चित पूजी मोरी^{१६} पुन तुम्हारे^{१७} आहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-औधि । २-सौं । ३-दर्ई । ४-राजै । ५-देखिसि । ६-की । ७-× । ८-वाचै
लाग । ९-सौं । १०-तोह । ११-तोह । १२-तोह । १३-धरम तोहारे राजा ।
१४-पाएव चाहेव । १५-× । १६-तोहरे ।

टिप्पणी—(१) बाचा-वचन; प्रतिज्ञा । आवधि-आवद्ध । हुहूँ-दोनों । सेउँ-से ।
भई-हुई । पाती-पत्र ।

(२) बाँचै-पढ़ने । लाग-लगा । उघार-खोलकर ।

(३) माँझ-मध्य; में । अस-ऐसा ।

(४) मोर-मेरा । दुदिस्टिल-युधिष्ठिर ।

(५) आऊ-आयु ।

(७) पुन-पुण्य ।

९३

(दिल्ली; एकडला)

पाती सबकहँ^१ बाँचि सुनाई । रहसा राउ^२ न अंग अमाई ॥१
कुँवरहिं कहा^३ होहु असवारू^४ । राउत पाइक^५ सब परिवारू^६ ॥२
पाँयड छूट^७ तुरंगम आये । देखत हरे सुवर्न^८ सुहाये ॥३
हँसला^९ कार कयाह^{१०} पलाने । साँवरकरन औ महोजू^{११} आने ॥४
आये गर्गया औ सरवाहा^{१२} । पँचकल्यान सराहों काहा^{१३} ॥५
उन्दिर^{१४} बुलाह^{१५} ककाह^{१६} संमुद, भल भल आप तुखार ॥६
वरन कही तुरिंह कै^{१७} अब इह^{१८} सुनहु विचार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-सब क । २-राव । ३-कुवरन कहै । ४-असवारा । ५-पायेक । ६-परिवारा । ७-
पाएउ छोरि । ८-तेवरान । ९-हंसा । १०-केआहु; (दि० मार्जिन) हंसकया
कुमेत । ११-सावकरन ते अच्छे १२-गररिया और सराही; (दि० मार्जिन) और
सराहा । १३-कहे । १४-इन्द्र । १५-बलाह । १६-गोगह । १७-कहे तुरियनके
जानत । १८-(ए०, दि० मार्जिन) गुन ।

टिप्पणी—(१) रहसा-हर्षित हुआ । अमाई-समायी ।

(२) होहु-हो । असवारू-सवार । राउत-(स० राजपुत्र>राउउत्त>राउत्त>
राउत) यहाँ तात्पर्य सामन्तोंसे है । पाइक-(सं० पदातिक) पैदल सैनिक ।

(३) पाँयड-घोड़े के पिछले पैरमें बाँधनेकी रस्सी; पिछाड़ी । तुरंगम-घोड़े ।
हरे-हरे रंगका घोड़ा; सन्जा । सुवर्न-सुवर्ण; सुनहले रंगका घोड़ा; इसे जर्दा,
समन्द और शतुरी भी कहते हैं ।

(४) हँसला-ऐसा घोड़ा जिसका शरीर मेंहदीके रंगका और चारों पैर कुल
कालापन लिये हो; कुम्भैत हिनाई । कार-काले रंगका घोड़ा । कयाह-पके

ताड़के फलके रंगका घोड़ा (पक्वतालनिभो बाजी कयाह परिकीर्तितः—जयदत्त कृत अश्ववैद्यक) । पलाने—जीन कसे हुए । साँवरकरन—श्यामकर्ण । महोजू—अश्वोंकी सूचीमें यह नाम हमें नहीं मिला । हो सकता है यह वही हो जिसे जायसीने महुअ लिखा है (पदमाचत ४६।३) । वासुदेव शरण अग्रवालने महुअ को महुए के रंगका हलका पीला घोड़ा बताया है ।

- (५) गरैया—(गर, गरा) श्वेत और लाल रंगकी खिचड़ी बालोंवाला घोड़ा । सरवाहा—अश्वोंकी सूचीमें यह नाम हमें नहीं मिला । एकडला प्रतिमें सराही पाठ है जो सेराह के अत्यन्त निकट है । हेमचन्द्रने पीयूष या दूधके रंगके घोड़ेको सेराह कहा है (अभिधान चिन्तामणि ४।३०४) । सोमेश्वर ने काँचनाभ रंगके घोड़ेको सेराह कहा है (केशैस्तनुस्वैर्वालेः कांचनाभैस्तुरंगमः । सेराह इति विख्यातः वैश्यजाति समुद्भवः—मानसोल्लास ४।६८७) । यह नाम फारसकी खाड़ीके सेराफ बन्दरके नामपर पड़ा है । पंचकल्याण—वह घोड़ा जिसके घुटनोंतक चारों पैरोंपर और मुखपर सफेदी हो, शरीरका रंग चाहे जो भी हो (येन केनापि वर्णेन मुखे पादेषु पाण्डरः । पंचकल्याण नामायं भाषितः सोमभूभुजा—मानसोल्लास ४।६९५) । सराहों—सराहना करूँ । काहा-क्या ।

- (६) उन्दिर—(उन्दीर) जंगली चूहे और लोमड़ीके रंगसे मिलता हुआ घोड़ा (उन्दुरेण समच्छायः सतिरुन्दीर उच्यते—मानसोल्लास ४।६९२) । इसे संजाव भी कहते हैं । बुलाह—(बोल्लाह) वह घोड़ा जिसके गर्दन और पूँछ के बाल पीले रंगके होते हैं । इस नामका प्रयोग फारसकी खाड़ीमें तिग्रा नदीके मुहानेपर स्थित उबुल्लाह नामक बन्दगाहसे आनेवाले घोड़ोंके लिए किया जाता था । ककाह—(कोकाह) सफेद रंगका घोड़ा (श्वेतः कोकाह इत्युक्तः—जयदित्य कृत अश्ववैद्यक) । सम्भवतः इसे शीराजी भी कहते थे । सँमुद—(समन्द) बादामी रंगका घोड़ा; वह घोड़ा जिसका रंग सोनेके रंगके समान हो (फरहंग इस्तहालात पृ० २३); इसे शुतुरी भी कहते हैं । तुखार—(सं० तुपार) मध्येशियामें शकोंके एक कबीले और उनके मूल निवास स्थानकी संज्ञा थी । कुपाण और गुत काल (२री-६ठी ई०) में आनेवाले घोड़े तुपार कहलाते थे ।

- (७) वरन—वर्ण; जात । तुरिंह—घोड़ोंके ।

९४

(दिल्ली; एकडला)

चंचल चपल मिरघ' सँह सीखे । बहु भोजन देखत अति तीखे ॥१
लेत साँस औ ससथ' ते कानाँ । दहा ताड़ जग जित हो रानाँ ॥२
पौन पाइ' साँ आहि' पिरीती । ताजन देखि उड़हि वह' रीती ॥३

भाँजत^० पूँछ चँवर जनु^१ आही । चँवरधार जनु धारहि^१ ताही ॥४
 कान ककनिया अहहि^{१०} सुहानीं । जानु^{११} कतरनी कतरि विनानी^{१२} ॥५
 चाकर खुर अरु मोंट, तज ताजी कुँडवानी^{१३} ।
 आनि ठाढ़ि कै^{१४} घालि, पीठि पाखर सुनवानी^{१५} ॥६

पाठान्तर—प्रति—

१—सरो । २—उ ससही । ३—ठाढ़ा हुजग जनेव कर जाना । ४—पाव । ५—आह ।
 ६—उन्ह । ७—भाँजहि । ८—चौर जनि । ९—चौरकार जनि दारहि । १०—कान क
 गोपी कियाह सोहाये । ११—जानि । १२—जो लाये । १३—पूरी पंक्ति का अभाव ।
 १४—ठाढ़ किय । १५—वाखर सोनवानी ।

टिप्पणी—(१) मिरघ-मृग । सँह-समान

(३) पाइ-पाँव, पैर । आहि-है । पिरीती-प्रीति । ताजन-(फा० ताजियानः)
 चाबुक, कोड़ा ।

(४) भाँजत-हिलते हैं । चँवर-चामर । जनु-मानो । चँवरधार-चमर हुलाने-
 वाले सेवक ।

(५) कतरनी-कैंची । विनानी-विज्ञानी; कारीगर ।

(६) चाकर-चौड़ा । मोंट-मोटा । ताजी-अरबदेशका प्राचीन कालमें प्रचलित
 नाम ताजिक था । इस कारण अरबी घोड़ोंको ताजी कहते थे । शाहनामें
 (दसवीं शती) में ताजी अस्य (अश्व) का अनेक स्थलोंपर उल्लेख है ।
 ग्यारहवीं शतीमें रचित भोजकृत युक्तिकल्पतरुमें भी ताजिक घोड़ोंका उल्लेख है ।

(७) आनि-लाकर । ठाढ़ि-खड़ा । कै-कर । घालि-डालकर । पीठि-पीठ ।
 पाखर-(स० पक्खर) जीन; अश्व-कवच । सुनवानी-(स० स्वर्णवर्णा) सोने-
 के वर्णवाला, सुनहला ।

९५

(दिल्ली; एकडला)

राजा बीरहि पाती^१ देई । आपुन आपुन^१ सब कोउ^१ लेई ॥१
 भये^१ असवार राउ^१ औ राने । छाता मेघडम्बर बहु ताने ॥२
 वाजन अहे जहाँ लहि तूरा । वाजत चले^१ सबद सब पूरा ॥३
 दरव कोरि^१ एक साथ लिवावा^१ । करै पतोहु^१ निछावरि आवा ॥४
 राजा आवत कुँवर जो सुनाँ । भा असवार आइ अगुमना ॥५
 उतरा कुँवर जुहारी राजा, राइ उतरि गिय लाइ^{१०} ॥६
 भये^{११} अँसवार दोउ^{११} जन, हसत मँदिर महुँ आइ^{१२} ॥७

१. सम्मेलन संस्करणमें इस कवचका उल्लेख कवचक ३९६ (सं० स० ३५४) के पाठान्तरके-
 रूपमें पादटिप्पणीमें हुआ है ।

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-बेरहन वारे । २-आपन आपन । ३-कोइ । ४-भै । ५-राए । ६-चला ।
७-कोटि । ८-लेवावा । ९-पुतोह । १०-उतरा कुँवर तोरै सै, राजा कुँवरहि
गिय लाए । ११-भै । १२-दुऔ । १३-आए ।

टिप्पणी—(३) बाजन-बाजा । अहे-थे । लहि-तक । त्रा-त्र, मुँहसे फूँककर
बजाये जानेवाले वाद्य ।

(४) दरब-(द्रव्य) सिक्का, धन । कोरि-कोटि, करोड़ । पतोहु-पुत्र-वधू ।
निछावर-न्योछावर ।

(५) असवार-सवार । अगुमना-स्वागत के निमित्त आगे पहुँचा ।

९६

(दिल्ली; एकडला)

राजें अधिक निछावर किहीं^१ । बहू बधाइ भेंट कै लिहीं^२ ॥१
दिन दोइ^३ चारि रहेउ^४ इहँ आई । नगर कै अग्या कै घर^५ जाई ॥२
राजकुँवर मिरगावति रानी । सारस जोरी दयी जो आनी^६ ॥३
खेलतहि हँसत^७ रहहि एक टाई । दिन दिन अवधि आउ नियराई ॥४
मिरगावति मन महुँ अस कहा^८ । इह कँह चाह मोर चाह जो अहा^९ ॥५
जो रे मोइ यहि^{१०} चाहा, आई हमरहि गाँउ^{११} । ६
कहसि चीर कैसहु^{१२} कै पाओं, उड़ि रे इहाँ हुत जाउ^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-नेवछावरि दीही । २-बहू बधाई बहुत कै कीही । ३-दुइ । ४-भए; (दि०
मार्जिन) भयेउ । ५-अग्या के के । ६-दिन दिन औषी आए निरानी । ७-
खेलहि हँसहि । ८-सारस जोरी देअ मिललाई । ९-मिरगावती चित अपने कहा ।
१०-ऐहि कह चाडि मोरि जौ अहा । ११-जो रे मोरी होइ एहि । १२-आइह
हमरे गाँव । १३-कैसेहु । १४-इहँ सौं जावँ ।

टिप्पणी—(१) किहीं-किया । लिहीं-लिया ।

(२) कै-को । अग्या-आज्ञा । कै-करके ।

(४) आउ-आया । नियराई-निकट ।

(५) अस-ऐसा । मोर-मेरा ।

(६) मोइ-मुझे । आई-आवेगा । हमरहि-मेरे । गाँउ-गाँव ।

(७) कैसहु-किस प्रकार ।

९७

(दिल्ली; एकडला)

दिन एक राइ^१ मोह मन आवा । मानुस कुँवर के टाँउ^२ पठावा ॥१
कुँवर राइ तौ राइ हँकारेउ^३ । कहहि मोह तुम्ह^४ नाँहि हमारेउ^५ ॥२

बहु दिन भये न भेटइ^१ आवा । तुम्ह^२ जिउ मिरगावति कहँ लावा ॥३
इहइ^३ बोल कुँवर जो सुनाँ । तुरिय पलान^४ माँग बहु गुना ॥४
कहसि जोहारि पिता कँ जाऊँ । धाइ^५ रहहु मिरगावति ठाँऊँ ॥५
स्रवन^६ लागि क^७ धाइहि हरवै,^८ रहहु सजग^९ भलि भाँति^{१०} ।६
चीर लुकाइ^{११} धरहु तिह^{१२} ठाई, जिह^{१३} न पावइ रात^{१४} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-राए । २-पास । ३-राए तोह बेगि हकारेव । ४-तोहि । ५-हमारेव । ६-भँटे ।
७-तो हौं जीउ । ८-X । ९-एहइ । १०-तुरीअ पलानि । ११-धाए । १२-
सौन । १३-कह । १४-X । १५-सुजग । १६-भाँति । १७-लुकाए । १८-तेहि ।
१९-जहाँ । २०-पावै राति ।

टिप्पणी—(१) राइ-राज ।

- (२) हँकारे-पुकारा है; बुलाया है । मोह-भमता । हमारेउ-हमारा; मेरा ।
(३) भेटइ-मिलने । आवा-आया ।
(४) इहइ-यही । बोल-वात । तुरिय-घोड़ा । पलान-जीन कसा हुआ ।
(५) जोहारि-अभ्यर्थना ।
(६) हरवै-चेतावनी देता है ।
(७) लुकाइ-छिपाकर ।

९८

(दिल्ली; बीकानेर)

ईत बोलि कह तुरिय चलावा । भा अपमंगल सगुन न पावा^१ ॥१
लोगहि^२ कहा कुँवरहुँ न जाई^३ । बैठि कहीं एक दिनहि गँवाई^४ ॥२
कहिसि पिता कर मानुस आवा । कइसैं^५ रहौं जाइ जो पावा ॥३
जो विधि लिखा होइ पै सोइ । असगुन सगुन काह कर होई^६ ॥४
चला बेगि तिह जाइ^७ तुलाई । राजैं देखि कुँवर गा आई ॥५
रहसि उठा बहु राजा देखत,^८ बैठि दुवउ इक^९ ठाई^{१०} ।६
राजकुँवर धर इहँवा,^{११} जिउ मिरगावत ठाई^{१२} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-मिगा नाँधि पुनि पंथ फिराई । दहिनै तै बाई दिसि जाई । २-लोगहु । ३-
कुँवर नहिं जइयै । ४-बहुरियै दिना दुइ फिरि अइयै । ५-कैसे । ६-का करै
कोई । ७-तहँ आइ । ८-राजा । ९-X । १०-दुवौ एक । ११-धरा इहँ माटी ।
१२-जीउ मिगावती ठाऊँ ।

टिप्पणी—(१) ईत-इतना । बोलिकै-कहकर । अपमंगल-अशुभ ।

- (२) कहीं-कहीं पर ।
(३) कइसैं-कैसे । रहौं-रहूँ ।
(४) धर-धड़, शरीर । इहँवा-यहाँ ।

९९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति^१ घर बैठी आही^२ । धाइ सँउ^३ रस बात जो कही ॥१
 धाइहि^४ रस^५ बातहि^६ बोरायसि^७ । काज करै को^८ अनत पठायसि^९ ॥२
 जौलहि^{१०} धाइ काज कै आई । सारी ढूँढ़ि लइ जिह र लुकाई^{११} ॥३
 चीर पहिरि कै वह रे उड़ानी^{१२} । धाइहि अचकर^{१३} कित गइ^{१४} रानी ॥४
 कहिसि^{१५} काह में मुख^{१६} देखराउव । खिन^{१७} एक माँझ^{१८} कुँवर अव^{१९} आउव ॥५
 रोवइ^{२०} धाइ चहूँ दिसि ढूँढै, कतहू वह न पाउ^{२१} ॥६
 काह कहौं किह^{२२} आगे यह दुख, कुछउ^{२३} न बकतै आउ^{२४} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०, बी०) मिरगावती । २—(ए०, बी०) अही । ३—(ए०) सँ; (बी०) सँ । ४—
 (ए०) धाइ कहँ । ५—(ए०) × । ६—(ए०) बातन; (बी०) बातन्ह । ७—(ए०, बी०)
 बोराइसि । ८—(ए०, बी०) कहँ । ९—(बी०) पइसि । १०—(ए०) जौलै । ११—
 (ए०) सारी ढूँढलै जहाँ छपाई; (बी०) सारी ढूँढ लिही जहाँ छपाई । १२—(बी०)
 चीर लेइकै पहिरि उड़ानी । १३—(ए०) अजगुत; (बी०) अचंभौ । १४—(ए०)
 कतगै । १५—(ए०) कहै । १६—(बी०) मह । १७—(ए०) खन । १८—(ए०)
 माँह । १९—(बी०) जो । २०—(ए०) रोवै । २१—(ए०) कतहू न वहि कहँ पाव;
 (बी०) कतहू न वहि कहँ पावै । २२—(बी०) केहि । २३—(बी०, ए०) काह कहौं
 कहिये तो । २४—(ए०) कुछौ; (बी०) × । २५—(ए०) आव; (बी०) बकत न आवै ।

टिप्पणी—(१) आही—थी ।

(२) बोरायसि—भुलावा दिया । काज—काम । करै को—करनेके लिए । अनत—
 अन्यत्र । पठायसि—भेजा ।

(३) जौलहि—जब तक । काज—कार्य । कै—करके ।

(४) अचकर—चकित । कित—किधर, कहाँ ।

(५) काह—क्या । देखराउ—दिखाऊँगी । खिन—क्षण । माँझ—में । आउव—आवेगा ।

(६) कतहू—कहाँ भी ।

(७) बकतै—बचन ।

१००

(दिल्ली; बीकानेर)

मँदिर ढूँढ़ि जो बाहर आई । धाइ क' दिस्टि भवन^१ पर जाई ॥१
 देखिसि बैठि^२ मँदिर पर आहा^३ । मिरगावति^४ यह कीनहु काहा^५ ॥२
 हम सँउ कइ^६ मँदाई जानहु । तोर पलक^७ अपनै जियँ मानहु ॥३

१. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५ की अर्धालिखी परस्पर स्थानान्तरित है ।

हम सँउ कछु न आह मँदाई^{१०} । किह^{११} कारन तुम्ह चलहु^{१२} कुद्दाई^{१३} ॥४
का उतर हम कुँवरहि देवा^{१४} । सुनतहि मरिह काह तू लेवा^{१५} ॥५
आवहु उतर सुद्दागिन^{१६} तै पत^{१७}, होइ हमरै^{१८} मन साँत ।
तोह^{१९} न मोह मन आवइ, ^{२०} जियत^{२१} कुँवर जिय^{२२} किह^{२३} भाँत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-×। २-मँदिर। ३-बैठी। ४-अहा। ५-भ्रिगावती। ६-कीने कडा। ७-से
किल्लु। ८-तो रे विलग। ९-×। १०-हम सै किल्लु मँदाइन अहई। ११-किहि।
१२-तुम चली। १३-×। १४-×। १५-सुनते हि मरव कह तो लावा। १६-
सोद्दागिनि। १७-पियवती। १८-हो मो। १९-तुम्ह। २०-आवै। २१-जिय
विनु। २२-जिये। २३-केहि।

टिप्पणी—(१) दिस्टि-दृष्टि।

(२) कीनहु-किया। काहा-क्या।

(४) कुद्दाई-रुठकर।

(५) का-क्या। देवा-दूंगी। लेवा-लोगी, पावोगी।

१०१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

धार्ई न दोखँ^१ आहै^२ तोरा। कहहु जोद्दार^३ कुँवर सँउ^४ मोरा ॥१
औ अस कहहु^५ कुँवर सों^६ बाता। मोर जीउ^७ आहै^८ तिह^९ राता ॥२
सँतौ^{१०} जो पावइ^{११} सोन कहै^{१२} मोला। ताकर मोल^{१३} न जानै भोला ॥३
इह^{१४} कारन हों जाउँ उद्दाई^{१५}। कहहु^{१६} कुँवर सों^{१७} आवइ धार्ई^{१८} ॥४
कंचननगर हमारो^{१९} ठाऊँ। रूपमुरारि पिता कर^{२०} नाँऊँ ॥५
यह र^{२१} बात कह धार्ई^{२२} आपुन, फुन^{२३} वह^{२४} चली उद्दाई^{२५} ।
धार्ई रोइ पुकारा, ^{२६} वह^{२७} रे इहाँहुत^{२८} जाइ^{२९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) दोखन। २-(ए०) अहै, (बी०) अहै किल्लु। ३-(ए०, बी०)
कहेहु। ४-(ए०) जोद्दारि; (बी०) जहार। ५-(ए०) सै; (बी०) से। ६-(ए०,
बी०) कहेहु। ७-(ए०) सै; (बी०) से। ८-(बी०) जीव। ९-(बी०) है। १०-
(ए०, बी०) तोहि। ११-(बी०) बस्त। १२-(ए०) पावै; (बी०) पाईए। १३-
(ए०) सौधे। १४-(बी०) मर्म। १५-(ए०, बी०) एहि। १६-(बी०) कहेउ।
१७-(बी०) सँउ। १८-(ए०) आवै धार्ई; (बी०) जब आवै ठाई। १९-(ए०)
हमारव; (बी०) हमारा। २०-(बी०) का। २१-(ए०) एह रे; (बी०) येहि रे।
२२-(ए०) कहि धार्ईहि; (बी०) कहि धार्ई सेउँ। २३-(ए०)×। २४-(ए०,
बी०)×। २५-उद्दाए। २६-(ए०) रोव पुकारे; (बी०) पुकारि कै। २७-(बी०)
यह। २८-(बी०) हुतै। २९-(ए०) कर मलि मलि पछिताइ।

टिप्पणी—(३) सैंतीं-बिना मूल्य; मुफ्त । मोला-मूल्य । ताकर-उसका ।
(७) इहाँहुत-यहाँसे ।

१०२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसत कुँवर कँह भयउ^१ अगाहू^२ । खरभरि परेउ^३ हिये उर दाहू^४ ॥१
कहसि पिता सँउ^५ हों घर जाऊँ । धाइ अकेलि आह^६ वहि^७ ठाऊँ ॥२
राजै^८ बान^९ दीन्हि^{१०} पहिराई^{११} । पितहिं^{१२} जुहारि^{१३} मँदिर कहँ आई^{१४} ॥३
धाई देखि^{१५} कुँवर जो आवा । हाक^{१६} डफार रोउ^{१७} गुहरावा^{१८} ॥४
कुँवर कहा कहु^{१९} आह^{२०} मँदाई । रावन सिय^{२१} हरी (जनु)^{२२} आई ॥५
कहसि^{२३} काह किहि^{२४} कारन रोवहु^{२५}, सों कहु^{२६} हम बात । ६
राम वियोग^{२७} भयउ^{२८} जिहि^{२९} कारन, सो हमकों सँसात^{३०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) भव । २-(बी०) अगाहा । ३-(बी०) परी; (ए०) परेव । ४-(ए०)
डाहू; (बी०) डाहा । ५-(ए०) सों । ६-(बी०) अहै । ७-(ए०) उहि । ८-
(बी०) राजा । ९-(ए०, बी०) पान । १०-(ए०) दीन्ह; (बी०) दीन्हें । ११-
(ए०) बरहे; (बी०) बहुराई । १२-(ए०, बी०) पिता । १३-(ए०, बी०) जोहारि ।
१४-(ए०) आए; (बी०) जाई । १५-(ए०) देख; (बी०) देखा । १६-(ए०,
बी०) घालि । १७-(ए०) रोव; (बी०) रोइ । १८-(ए०) गोहरावा । १९-
(ए०) कुहु; (बी०) किहु । २०-(बी०) आहि । २१-(ए०) सीअ; (बी०) सीय ।
२२-(ए०) जनि; (बी०) जनों; (दि०) जो; (दि०) मार्जिन) जनु । २३-(ए०,
बी०) कहसि । २४-(ए०) केहि । २५-(ए०) × । २६-(ए०, बी०) सो न
कहहु । २७-(बी०) वियोग; (ए०) विऊग । २८-(ए०) भये; (बी०) भयेउ ।
२९-(ए०) जेहि । ३०-(ए०) सो तोह क सीअ सात; (बी०) सो तुम कहु
सै सात ।

टिप्पणी—(१) अगाहू-(अगाह; फा० आगाह) चेतावनी; यहाँ तात्पर्य अचानक
मनमें उठनेवाली आशंकासे है । खरभरि-हल-चल । दाहू-(दाह) जलन ।

(३) बान-वस्त्र ।

(४) हाक-जोर-जोरसे पुकारका । डफार-(क्रि० डफारना) दहाड़ मारना; चीख
मारना । गुहरावा-पुकार लगायी ।

१०३

(दिल्ली; एकडला)

सुवन^१ बोल ईह परेउ^२ जो धाई । कुँवर पछार तुरियँ सँउ^३ खाई ॥१
पाग मार भुईं कापर फारा । उर मारै कहुँ लिहिसि^४ कटारा ॥२

लोगहि^१ करहुत लीन्हि अजोरी । मरै देहु गइ^२ सारस जोरी ॥३
 कहै देहु विस खाँवँ अघाई । मरउँ वेगि मोहि जिय^३ न जाई ॥४
 जिय विनु जिय^४ न जाई^५ अकेलें । जीउ जम लेउ कया^६ पर हेलें ॥५
 मरै देहु मोहि लोगहि^७ विस भखि, जीउ^८ न केउनहि^९ भाँत । ६
 जिउ^{१०} विन कया काह ले कीजै, तिह^{११} विनु होइ न साँत ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-सौन । २-उन परेव । ३-सौ । ४-लोन । ५-लोगन्ह । ६-कै । ७-जिए । ८-
 जैए । ९-जहे । १०-जीउत जि गपेव कये (?) । ११-X । १२-जिअन । १३-
 कौनौ । १४-जिअ । १५-तेहि ।

टिप्पणी—(१) सुवन-श्रवण, कान । पछार-पछाड़ । तुरियाँ-घोड़ा ।

(२) पाग-पगड़ी; यह तात्पर्य सिरसे है । भुईँ-पृथ्वी । कापर-कपड़ा । फारा-
 फाड़ा । उर-छाती । कटारा-कटार ।

(३) करहु-हाथसे । देहु-दो । सारस जोरी-सारसकी जोड़ेके सम्बन्धमें प्रवाद
 है कि एकके अभावमें दूसरा जीवित नहीं रहता ।

(४) विस-विष । अघाई-तृप्त होकर । मोहि-मुझे ।

(५) जम-यमराज । हेलै-टेलना; डालना ।

(६) भखि-खाकर । केउनहिं-किसी भी ।

(७) काह-क्या । साँत-शान्त ।

१०४

(दिल्ली; एकडला)

सान्ति गई मन परेउ^१ खभारू । दंद उदेग उचाट अधारू^२ ॥१
 दई^३ काह मैं अउगुन कीन्हा । जिन्ह र^४ सँताप विरह फुनि^५ दीन्हा ॥२
 पेम घाइ दुख कै सिर हाई^६ । फुनि^७ विस वान हियेँ महुँ खाई ॥३
 अव न मोर अ(ो)खद^८ कै आसा । अति र^९ कठिन घट जो रहे^{१०} साँसा ॥४
 जे जन जिये वियोग कै मारी^{११} । ते तन काल पाँच सर पारी^{१२} ॥५
 सँवर सँवर^{१३} मन झुरवइ^{१४} रोइ रोइ मिलै धाहि । ६
 सो उपकार करौँ अपनैँ जिय, जिह पायउँ^{१५} वहि चाहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-सती गे हम परेव । २-अहारू । ३-दैअ । ४-जेहि रे । ५-दुख । ६-आई ।
 ७-सुनी । ८-बोखदि । ९-अव रे । १०-घट रहै न । ११-मारे । १२-कला पंच
 बस मरे; (दि० मार्जिन) मारी । १३-सौरि सौरि । १४-झुरव । १५-जे पावौ ।

टिप्पणी—(१) सान्ति-शान्ति । खभारू-खलबली । दन्द-द्वन्द । उदेग-उद्वेग ।
 उचाट-खिन्नता । अघारू-आधार ।

- (२) काह-क्या । अउगुन-अवगुण; बुरा कार्य । सँताप-सन्ताप ।
 (३) घाइ-घाव । हाई-आई । बिस बान-विष बाण । हियेँ-हृदय । महेँ-में ।

१०५

(दिल्ली; एकडला')

जो कोइ चाह कहै धस लेऊँ । जो जिउ माँग' काहि कै देऊँ ॥१
 राम सेतु बाँधेउ' सिय' लागी । हौँ वहि' लागि परौँ मँझ आगी ॥२
 हनिवैत सिय' लगी जारसि' लंका । हौँ र' विधाँसौँ जाइ' पलंका ॥३
 सात सरग चढ़ धाँवौँ जाऊँ । जहाँ सुनौँ हौँ मिरगावति नाऊँ ॥४
 निसिरह'° सिय लगी मारि विधाँसा । हौँ वहि'' लगी जारौँ कविलासा ॥५
 जस भरथरी'३ भयउ'३ पँथ जोगी, रस पिंगला वियोग ।६
 रोइ'४ लंक दुहूँ कर टेकै, कहै हौँ'५ पँथ जोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-चाह । २-बंधौ । ३-सीअ । ४-उहि । ५-सीअ । ६-जाए । ७-रे । ८-
 जाए । ९-X । १०-निसिअर । ११-उहि । १२-भरथहरी । १३-भये । १४-
 रोवै । १५-होउँ ।

टिप्पणी—(१) धस-धुसकर । काहि-निकालकर ।

- (२) सेतु-पुल । सिय-सीता । लागी-निमित्त । मँझ-मध्य । आगी-अग्नि ।
 (३) हँनिवैत-हनुमान । जारसि-जलाया । विधाँसौ-विध्वंस करूँ । पलंका-
 (सं० पाताल लंका > पायाल लंका > पाया लंका > पालंका > पलंका) इस
 नामसे ऐसा ध्वनित होता है कि लंका की तरह यह कोई अति दूरवर्ती द्वीप
 था । हो सकता है द्वीपान्तर (हिन्द-एशियाके द्वीप समूहों)के किसी द्वीपको
 पलंका कहते रहे हों । मलय स्थिति पेनांगका भी नाम पलंका हो सकता है ।
 मौलाना दाऊदने चन्द्रायनमें (३५१।५) और जायसीने पद्मावतमें
 (२०६।३; ३५५।३) में 'लंका छाड़ि पलंका' जानेकी बात कही है । यह
 प्रयोग मुहावरे जैसा है । इससे जान पड़ता है कि लंका जाना तो सुगम था ही
 नहीं; पलंका कोई ऐसी जगह थी जहाँ पहुँचना सामान्यतः असम्भव समझा
 जाता था । जायसीने पलंका में शिवका निवास बताया है (पद्मावत
 २०६।३-४) । सम्भव है शिवके निवास स्थान कैलासको पलंका कहते रहे
 हों । इस सम्बन्धमें द्रष्टव्य है कि एलोराके कैलास मंदिरके दोनों ओर जो
 गुफा मण्डप हैं, उनमें से एकको लंका और दूसरेको पलंका कहते हैं ।
 (४) धावौँ-दौड़ूँ ।

- (५) निसिरह-निशचर; राक्षस । विघाँसा-विध्वंस किया । कविलासा-(कैलास > कइलास>कविलास> (वकारका प्रश्लेष > कविलास) स्वर्ग ।
 (६) भरथरी-भर्तृहरि; उज्जैन नरेश ।

१०६

(दिल्ली; एकडला)

रोवइ^१ सँभरे कहै विधाता । काहे बरजा^२ मोर संघाता ॥१
 मैं तो वहि^३ लगी बहु दुख देखा । औ [अ]पनै जिय कुछउ^४ न लेखा ॥२
 धाइहि पूछि^५ विरह दुख माँता । चलत^६ कहसि तुम्हसँउ^७ कछु बाता ॥३
 धा[इ] कहा तुम्ह कहसि^८ जुहारू । भेंटघाँट कहँ बहुत^९ अपारू ॥४
 और नगर कर लीहिसि^{१०} नाऊँ । कंचननगर हमारेउ^{११} टाऊँ ॥५
 कहिसि सँदेस कहु जो कुँवर सो,^{१२} बिलम्ब न लावइ आउ^{१३} ॥६
 बहुत देखि दुख आवै मारग^{१४}, तो हमकहँ वह^{१५} पाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

- १-रोवै । २-विरुजा । ३-उहि । ४-कुछौ । ५-पूछ । ६-जात । ७-तोह सै ।
 ८-तोह कहै जोहारू । ९-आव । १०-लीन्हिसि । ११-हमारेव । १२-कहेसि
 सँदेसा कुँवर सो । १३-आव । १४-X । १५-सो ।

टिप्पणी—(१) सँभरे-सँभले । विधाता-ईश्वर । बरजा-वर्जित किया । संघाता-
 साथी ।

(२) लेखा-लिखा; समझा ।

(३) माँता-ग्रस्त ।

(४) भेंट-घाँट-मिलना-जुलना । भोजपुरी में यह सामान्य रूपसे प्रयोगमें आता है ।

(५) हमकहँ-मुझको ।

१०७

(दिल्ली; एकडला)

सुनि सँदेस सिर भुँइ धर^१ मारा । धरा न रहे तोरै^२ कर बारा ॥१
 लोग धाइ सब कोउ समुझावइ^३ । कुँवर समुँझि पुनि देइ मरावइ^४ ॥२
 जो अँजुरी पानीं विन मराई । मुए सो गागरि सो का^५ कराई ॥३
 कोउ^६ पिसुन मिस होइ कर^७ आवा । कै सुरजन^८ रिपु होइ बउरावा^९ ॥४
 को र दूत^{१०} मिस बैठउ आई । पवन पैठि^{११} वादर बहिराई ॥५
 कै सुरजन^{१२} कै दुरजन^{१३}, कै^{१४} हम दियउ वियोग ॥६
 को अरि भयउ हमारेउ^{१५}, जिह बरजेउ हम^{१६} जोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-दै । २-तोर । ३-कोइ समुआवै । ४-फुनि दैव मेरावइ । ५-× । ६-कोरे ।
७-हो कै । ८-दुरजन । ९-हौ बौरावा । १०-को रे रावन । ११-पंथ । १२-
सुरजनि । १३-दुरजनि । १४-को । १५-भएउ हमारो । १६-जो उपजो एह ।

टिप्पणी—(१) धरा-पकड़ने पर । तोरै-तोड़े । कर-हाथ । बारा-वाल; केश ।

(२) अँजुरी-अँजलि । मराई-मरे । गागरि-घड़ा ।

(४) पिसुन (पिशुन)-छिपे छिपे दो व्यक्तियों में विरोध उत्पन्न करनेवाला
व्यक्ति । मिसि-बहाना; व्याज । सुरजन-देवता । बउराना-पागल बनाना ।

(७) अरि-शत्रु । बरजेउ-वर्जित किया । जोग-योग; मिलन ।

१०८

(दिल्ली; एकडला)

लोगहि^१ वैठि कुँवर समुझावा । मन समुझा लोगहि बउरावा^२ ॥१
बिरह^३ लागि भरथरी^४ वियोगी । हों वहि लागि होउँ^५ अब जोगी ॥२
चिन्ता^६ जोग तन्त कैं^७ लागा । सुनि कै भोग जो आगैं भागा^८ ॥३
माता पिता कोउ न^९ जानाँ । जोगी [के]र साज सब आनाँ ॥४
छाड़सि लोग कुटुब घर वारू । छाड़सि पिता मोह सँयसारू^{१०} ॥५
मिरगावति^{११} कैं पेम रस बिंधा^{१२} कैंसहि उतरि^{१३} न जाइ ।६
चित गयन्दैहि पंक जैउ, खिन खिन अधिक समाय^{१४} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-लोगन । २-लोगन बौरावा । ३-जुध । ४-भरथहरी । ५-होंउ । ६-चितु ।
७-के । ८-सुनि के जोग भूख जनि भागा । ९-कोई नहि । १०-संसारू । ११-
मिरगावती । १२-बंधा । १३-कैसेउ निकसि । १४-सोहाइ ।

टिप्पणी—(३) तन्त-तन्त्र ।

(४) साज-वेश-भूषा । आनाँ-ले आया ।

(५) छाड़सि-छोड़ा । घरवारू-घर-द्वार । सँयसारू-संसार ।

(७) गयन्दैहि-हाथी । पंक-कीचड़ । जैउ-जिस प्रकार ।

१०९

(दिल्ली; एकडला; वीकानेर)

केस उदिआनी^१ गोरखपन्था । पाँय^२ पाँवरी मेखलि^३ कंथा ॥१
जटा चक्र मुद्रा^४ जपमाला । डण्डा खपर केसरि^५ छाला ॥२
जोगौटा^६ रुदराख^७ अधारी । भसम लेउ^८ तिरसूल सँवारी ॥३

सिंगी पूरै पन्थ सँभारा^{१०} । जपै सुरंगिनि^{११} भई अधारा^{१२} ॥४
 कर किंगरी घँडोर^{१३} मन मेला । तार^{१४} बजावइ^{१५} रैन अकेला ॥५
 जोग जुगुति होइ^{१६} खेलेउ^{१७} मारग^{१८} सिध^{१९} होइ कह जाइ । ६
 भुगुति मोर^{२०} मिरगावति^{२१} जीउ^{२२}, भीख देइ को^{२३} राइ^{२४} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) कसि उडियानी; (बी०) कसि उडानी । २—(ए०) पाये; (बी०) पावँ ।
 ३—(ए०) मेखरी; (बी०) मेखली । ४—(बी०) × । ५—(ए०) केसरी; (बी०)
 केहरी । ६—(बी०) जोगटा । ७—(ए०) रुद्राख; (बी०) रुद्राक्ष औ । ८—(ए०)
 किएव; (बी०) किहेसि । ९—(ए०, बी०) नेह । १०—(बी०) संभारै । ११—(बी०)
 कुरंगिनि । १२—(ए०) खन न विसारा; (बी०) खिन न विसारै । १३—(ए०)
 ठिठोर; (बी०) घँधरी । १४—(ए०, बी०) वार । १५—(ए०) बजावै । १६—(ए०)
 मै । १७—(ए०) खेलेसि; (बी०) खेलें । १८—(ए०) × । १९—(बी०) सिधि ।
 २०—(ए०) मूर । २१—(ए०) मिरगावती । २२—(ए०) ×; (बी०) जाँचों ।
 २३—(ए०) कोइ । २४—(बी०) आय ।

टिप्पणी—(१) उडियानी—बिखराये । पाँव—पाँव, पैर । पाँवरी—(सं० पादपट्ट) पा०
 पाय वह > पावड़ > पावड़ा > पावड़ा > पाँवरि) खड़ाऊँ । मेखलि—मेखला ।
 कंधा—कथरी; गुदड़ी; फटे पुराने कपड़ोंसे बनाया गया वस्त्र ।

(२) बक्र—सम्भवतः छोटी गोल अँगूठी जिसे पवित्री कहते हैं (वासुदेव शरण
 अग्रवाल) । मुद्रा—कानमें पहननेका कुण्डल । जपमाला—जाप करनेकी
 माला । खपर—खपर; भिक्षा पात्र । केसरि छाला—वाचम्बर ।

(३) जोगौटा—(सं० योगपट्ट) वह वस्त्र जिसे जोगी ध्यान करते समय सिरसे
 पैरोंतक डाल लेते हैं । अन्य अवस्थामें यह कन्धेपर रहता है । रुद्राख—
 रुद्राक्षकी माला । अधारी—वासुदेव शरण अग्रवालने पदमावत (१२६।४)
 में लकड़ीका बना सहारा बताया है जिसको टेककर योगी बैठते और सोते
 हैं । किन्तु इस ग्रन्थ (१६४।१) के अन्यत्र उल्लेखसे ज्ञात होता है कि
 उनका यह अनुमान ठीक नहीं है । इसका तात्पर्य शोलीसे है । भसम—भस्म;
 भभूत । तिरसुल—त्रिशूल ।

(४) सिंगी—सीधका बना मुँहसे फूँककर बजानेका बाजा । पूरै—बजाये । सुरंगिनि—
 सुन्दर रंगवाली ।

(५) किंगरी—छोटा चिकारा या सारंगी, जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं ।
 घँडोर—घँधारी; गोरखाधन्धा; तारके छल्लोंका बना उल्लशन जिसे जोगी
 लोग सुलझाते हैं । मेला—लगाया ।

(६) जुगुति—युक्ति । सिध—सिद्धि ।

(७) भुगुति—भोजन । राइ—राजा ।

११०

(दिल्ली; बीकानेर)

निकसि कुँवर जोगी मिस चला । राजें सुनाँ आगि उर जरा' ॥१
 सुत वियोग' दसरथ' अस कीन्हा । राइ' चाहि ततखन जिउ दीन्हा ॥२
 जस' अरजुन' अहिबर्न कै मारे । तस राजा बहु' रोड' पुकारे ॥३
 सिर धुन धुन' कै कारुन करई' ॥ आउ घटे' विनु जाइ' न मरई' ॥४
 पाछो कोइ न देखै आगे । मरै न जाइ जियव' किंह' लागे ॥५
 जस अन्धा अन्धी विनु सरवन', फेकरि' मुए चिल्लाइ' ॥६
 मुयहु सरग' पछिताव न जहिये', जो न' जियत मिलाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-जला । २-वियोग । ३-जसरथ । ४-येहउ । ५-जसरे । ६-अर्जुन । ७-बहु-
 राजा । ८-रोवै । ९-धुनि-धुनि । १०-कर मलई । ११-आव घटई । १२-कोउ ।
 १३-X । १४-जिए । १५-केहि । १६-जस अन्धी अन्धा सर्वन विनु । १७-
 फिकरि । १८-चितलाइ । १९-मुयेहु पाछु । २०-जाइहि । २१-जौ नहिं ।

टिप्पणी—(१) मिस—बहाना; रूपमें ।

(२) ततखन—तत्क्षण ।

(३) अहिबर्न—अभिमन्यु । तस—तैसा ।

(४) कारुन—करुणा । आउ—आयु ।

(५) पाछो—पीछे । जियव—जीऊंगा । किंह लागे—किसके लिए ।

(६) सरवन—श्रवण । फेकरि—दहाड़ मारकर रोना ।

१११

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

चला कुँवर मिरगावति जहाँ । सींघ सँदूर' अगम बन तहाँ ॥१
 डर भौ एको' आह न करई' । किंगरी पेम बजावइ झुरई' ॥२
 मग अमग' न जाने भोला । विरह भाक' पै अउर' न बोला ॥३
 तव' लग मग अमग' गुनीजइ' । जब' लग मोह मया मन' कीजइ' ॥४
 ताम लगन कुल मेल रहे जे' । बन क पंखी पर न परिचै' ॥५
 ताम सेयाँप' ताम गुन', जप तप संजम ताग' ॥६
 बंक घटे लोयना', पर न पूजै जाम' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) सीह सेदुर; (बी०) सिंह सँदूर । २-(बी०) एक । ३-(ए०) तेही; (बी०)
 न लागै तेही । ४-(ए०) बस भौ नेही; (बी०) बजावै नेही । ५-(बी०) मगु औ
 अमगु । ६-(ए०, बी०) भाख । ७-(बी०) और । ८-(बी०) तव । ९-(बी०,

ए०) मगु अमगु । १०-(बी०) न गनीजे । ११-(बी०) तव । १२-(बी०) नहिं ।
 १३-(बी०, ए०) कीजे । १४-(बी०) तव लगि कुल सील रहीजे; (ए०) उत्तम
 लगे कुल सील रहीजे । १५-(ए०) बंक कह खे पीर न परीजे; (बी०) बांके
 कटाखे पीर न परिजे । १६-(ए०) सेआनप । १७-(बी०) ताम समनपता गुन ।
 १८-(बी०) जपत सपत जम ताम । २९-(ए०) बंक कटखे लोएना (बी०) बांके
 कटखे लोयन्ह । २०-(ए०) परीजे जाम; (बी०) पीर न परीजे जाम ।

टिप्पणी—(१) **सींघ सिंदूर**—इस शब्द-युग्म का प्रयोग मौलाना दाऊद ने चन्दायन
 में तीन स्थलों (१२८।५; १९६।३; २९५।६) पर किया है । जायसी के पदमावतमें
 यह दो बार आया है (१४४।६; ६३६।९) । वहाँ माताप्रसाद गुप्तका पाठ है—
 सिंघ सदूरा और सिंह सदूरहि । वामुदेव शरण अग्रवालने भी यह पाठ स्वीकार
 किया है । मधुमालती में भी यह शब्द-युग्म आया है । वहाँ माताप्रसाद गुप्तने
 सींह सेदूर (१००।२; १८१।२) पाठ दिया है । वामुदेव शरण अग्रवाल ने इसका
 अर्थ सिंह और शार्दूल किया है । यही अर्थ माताप्रसाद गुप्तने भी मधुमालतीमें
 स्वीकार किया है । सदूर पाठ से शार्दूल (सदूर < सादूर < सारदूल < शार्दूल) की
 कल्पना की जा सकती है । किन्तु चन्दायनके फारसी प्रतिमें यह शब्द सर्वत्र सीन,
 नून, दाल, वाव, रे बहुत स्पष्ट रूपसे लिखा है । अतः इसका पाठ सन्दूर, सेंदूर,
 सिन्दूर ही हो सकता है । मिरगावतीके फारसी प्रतिमें सीनके बाद ये है और वहाँ
 पाठ सेदूर या सीदूर होगा । इसके प्रकाशमें सदूर अपपाठ जान पड़ता है । इस
 कारण चन्दायनमें हमने इसका वास्तविक पाठ सिंदूर अथवा सेंदुर माना था
 और उसके मूलमें सिन्धुर शब्द स्वीकार किया था जिसका अर्थ हाथी होता है ।
 मध्यकालीन कलामें सिंह-हस्ति एक प्रसिद्ध अभिप्रायः रहा भी है । किन्तु पदमावत
 के कड़वक ६३६ की पंक्ति ९ को उसी कड़वककी पंक्ति २ के प्रकाशमें देखनेसे
 इस शब्दके मूलमें शार्दूल ही होनेका भान होता है । और मिरगावतीकी पंक्ति—
 सींह सेदूर चिंघरहि हाथी—से स्पष्ट है कि सेंदूरका तात्पर्य हाथीसे भिन्न है । ऐसी
 अवस्थामें सेंदूरसे शार्दूल अर्थात् वाघका ही तात्पर्य ग्रहण करना उचित होगा । शेर-
 वाघका युग्म बोलचालमें प्रचलित भी है । **अगम**—(सं० अगम्य) दुर्गम, जहाँ
 प्रवेश सुगम न हो ।

(२) भौ-भय । एकौ-एक भी ।

(३) भोला-अज्ञान, सरल । भाक-भाषा, बोली । पै-पर; किन्तु । अउर-और ।

(४) लग-तक । गुनीजइ-तर्क-वितर्कके भाव उठते हैं । मया-ममता । कीजइ-करे ।

(५) पंखी-पक्षी । परिचै-नैकट्य अथवा आत्मीयता प्राप्त करता है ।

११२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एक वन छाड़ि आन वन जाई । आगे चाह नगर कै पाई ॥१

नगर सुहावन उत्तम^१ टाँऊ । धरमसाल^२ बहु धरम कै^३ नाँऊ ॥२
 कहिसि आजु यहि नगर गवाँवउँ^४ । मकुहिं^५ बाह मिरगावति पावउँ^६ ॥३
 भिखा^७ माँगै जाइ^८ न आवइ^९ । रोवइ किंगरी नँह^{१०} वजावइ^{११} ॥४
 लोगहिं राजहिं जाइ जनावा । कुँवर एक जोगी जस आवा ॥५
 अति रुपवन्त सुलाखन,^{१२} मुखहिं बतीसी भीन ।६
 करम जोति मनि माँथें चमकै,^{१३} एको लखन न खीन ॥७

पाठान्तर—एकडला और वीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) की । २—(बी०) उत्तम । ३—(ए०) धरमसार । ४—(बी०) क । ५—
 (ए०, बी०) गँवावाँ । ६—(बी०) मकहुँ । ७—(ए०, बी०) पावों । ८—(ए०)
 भिखेया; (बी०) भिछ्या । ९—(ए०, बी०) जाय । १०—(ए०, बी०) आवै ।
 ११—(ए०) पेम । १२—(ए०) वजावै; (बी०) रोइ रोइ किंगरी वियोग वजावै ।
 १३—(ए०) सुलखन; (बी०) सुलच्छिन । १४—(ए०) × ।

टिप्पणी—(१) छाडि-छोड़कर । आन-अन्य, दूसरा । चाह-आहट ।

- (२) धरमसाल-धर्मशाला । यात्रियोंके ठहरनेका स्थान ।
 (३) गवाँवउँ-बिताऊँ । मकुहिं-कदाचित् ।
 (४) जनावा-सूचित किया ।
 (५) सुलाखन-सुलक्षण ।
 (६) करम-भाग्य । जोति-ज्योति । मनि-मणि । माँथें-सिरपर । लखन-लक्षण ।
 खीन-क्षीण ।

११३

(दिल्ली; वीकानेर')

लखन बतीसो आहै भोगी । जानि न जाइ कवन गुन जोगी ॥१
 सीस ललाट^१ उर चाकर ताही^२ । राजवंसी बिनु अउर^३ न आही ॥२
 अउर^४ लिलार तीनि हँहि^५ रेखा । अस भगवन्त जोगी न^६ देखा ॥३
 औ^७ तिरमूल आहै^८ रुदरेखा । तुरिय नहीं पा चलि कवन बिसेखा^९ ॥४
 राजा देखु आन^{१०} बुलाई । कलजुग आउ ते उलटी^{११} रीति चलाई ॥५
 देखि सुबुद्ध्येहि^{१२} अइस मन दरसा^{१३}, संग समोइ^{१४} मिलाउ ।६
 जिह जिह^{१५} मारग पग धरै^{१६}, तिह तिह^{१७} सीस धराउ ॥७

पाठान्तर : वीकानेर प्रति—

१-लिलाट । २-चक्र जाही । ३-और । ४-औ । ५-हँ । ६-नहिं । ७-कर ।
 ८-अहै, -तुरियन अहि पाँ चल किहे बिसेखा । ९-देखिये आनन । ११-कल-

१. इस प्रतिमें यह दो कड़वकोंमें बँटा है । प्रथम दो पंक्तियाँ ५ अन्य पंक्तियोंके साथ एक कड़वकमें और शेष पंक्तियाँ २ अन्य पंक्तियोंके साथ दूसरे कड़वकमें हैं । ये पंक्तियाँ हमारी दृष्टिमें प्रक्षिप्त हैं अतः परिशिष्ट १ में दी गयी हैं ।

जुग उलटी । १२-सुबुद्ध्या । १३-दरस । १४-मुँह । १५-जेहि जेहि । १६-धरा ।
१७-तेहि तेहि ।

टिप्पणी—(१) लखन-लक्षण । भोगी-भोग करनेवाला; ऐश्वर्यवान । जानि-जाना ।

कवन-किस । गुन-गुण; कारण ।

(२) चाकर-चौड़ा । ताही-उसका ।

(३) लिलार-ललाट । हँहि-हँ ।

(४) रुदरेखा-रुद्राक्षकी माला । पा-पाव; पैदल ।

(५) आन-लाकर । कलजुग-कलियुग । ते-इस कारण ।

११४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राजै^१ कहा चलहु^२ हौं जाँऊं^३ । पूछउं जाइ^४ मरम^५ वहि^६ ठाँऊं ॥१
राजा आई^७ जो देखी ताही । अति रुपवन्त सुलाखन^८ आही ॥२
पूँछी^९ जोग^{१०} कौन गुन बाढ़ा^{११} । उतर न^{१२} देइ^{१३} पेम^{१४} दुख डाढ़ा^{१५} ॥३
कहहु नकिह^{१६} कारनतुम्ह^{१७} जोगी^{१८} । किह^{१९} र^{२०}लागित्^{२१} भयसि^{२२} बियोगी^{२३} ॥४
तिह^{२४} कह जोग न आहै सोभा । कउन^{२५} कुँवरि जिउ^{२६} किह सँउ^{२७} लोभा ॥५
यह अस^{२८} बात न जाइ^{२९} कहि^{३०}, (जनि)^{३१} पूछहु हम राइ^{३२} ॥६
यह दुख कहाँ न काहु सँउ^{३३}, कहत सुनत जरि जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) राजा । २-(बी०) चला । ३-(ए०, बी०) पूछीं जाय । ४-(बी०)
मर्म । ५-(ए०) उहि; (बी०) वोहि । ६-(ए०) आये; (बी०) आय । ७-(ए०,
बी०) देखै । ८-(बी०) सुलखन । ९-(ए०) पूछै; (बी०) पूछिसि । १०-(बी०)
जोगु । ११-(ए०, बी०) साधा । १२-(ए०) × । १३-(ए०) देये; (बी०)
देय । १४-(ए०) जेम । १५-(ए०, बी०) दाधा । १६-(बी०) वोहि । १७-
(बी०) तैं । १८-(ए०) केहि कारन तोह भयेसि जो जोगी । १९-(ए०, बी०)
केहि । २०-(बी०) × । २१-(ए०) तोह; (बी०) तैं । २२-(ए०) भयेहु; (बी०)
भयेसि । २३-(ए०) बीऊगी; (बी०) बियोगी । २४-(ए०) तोहि; (बी०) तुम्ह ।
२५-(ए०, बी०) कौन । २६-(बी०) जिय । २७-(ए०) जहि सँ; (बी०) केहि
सैं । २८-(बी०) असि । २९-(ए०) न जाये; (बी०) जाइ नहि । ३०-(बी०)
कही । ३१ (दि०) जैं । ३२-(ए०) राये; (बी०) राय । ३३-(ए०) सँ ।

टिप्पणी—(१) मरम-मर्म; भेद ।

(२) ताही-उसको ।

(३) बाढ़ा-बढ़ा, उत्पन्न हुआ । डाढ़ा-जला हुआ ।

(७) जरि-जल ।

११५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बिरह बियोग^१ पेम दुख कहई । जो रं सुनै तिह^२ चेत न रहई ॥१
 बकती^३ पेम रसाल कहानी । सुनत राउ^४ चित चेत भुलानी^५ ॥२
 कहत बिरह जै सुना सो रोवा । नैन सलिल (मुख)^६ मलि मलि धोवा ॥३
 दन्द उदेग उचाट विरोधा^७ । जै र सुनाँ सो सुनत लुबोधा^८ ॥४
 अउर^९ कथा वहि कहै न जानाँ । मिरगावति^{१०} कर^{११} पेम बखाना ॥५
 कुतुबन सात समुँद दधि^{१२}, अउर^{१३} सलिल को जान ॥६
 धार सिवाती^{१४} मन^{१५} बसे^{१६}, चातक^{१७} चीत^{१८} नदान^{१९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०) बिऊग; (बी०) बियोग । २—(ए०, बी०) रे । ३—(ए०, बी०) तेहि ।
 ४—(ए०, बी०) बकतै । ५—(ए०) राये; (बी०) राय । ६—(ए०) गवाँनी । ७—
 (बी०, दि०) कर । ८—(ए०, बी०) बिरुधा । ९—(ए०) जै रे; (बी०) जो रे ।
 १०—(ए०, बी०) लुबुधा । ११—(ए०, बी०) और । १२—(ए०, बी०) मिरगावती ।
 १३—(बी०) का । १४—(ए०, बी०) हहिं । १५—(ए०, बी०) उदधि । १६—(ए०, बी०)
 सेवाती । १७—(बी०) जो मन । १८—(बी०) बसी । १९—(ए०) चातिक; (बी०)
 चातिग । २०—(ए०, बी०) चित । २१—(ए०) न आन; (बी०) निदान ।

टिप्पणी—(१) चेत—होश; स्मृति ।

(२) बकती—कहा । रसाल—सरस ।

(७) सिवाती—स्वाती । चीत—चित्त । नदान—मूर्ख ।

११६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुना राइ^१ बहु^२ उठा मरोह^३ । रोवइ^४ लाग भयउ^५ मन छोह ॥१
 कहिसि देउँ^६ पदुमिनी अमोला । बहु परसाद राइ^७ मुँह^८ बोला ॥२
 कहिसि राइ^९ हम अउर^{१०} न काजा । माँगिउँ इहै भीखि^{११} तुम्ह^{१२} राजा ॥३
 कंचनपुर कै वाट जो^{१३} जानै^{१४} । नगर दुँडाइ कहहु तिह^{१५} आनै^{१६} ॥४
 जंगम एक आह^{१७} हम गाऊँ । देखिसि^{१८} बहुत फिरा बहु ठाँऊँ^{१९} ॥५
 राजै^{२०} जन दौराए ततखन^{२१}, जंगम आनहु धाइ^{२२} ॥६
 कंचननगर कहाँ है कह^{२३} तहाँ^{२४}, जानत कहु किह जाइ^{२५} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) राए । २—(ए०) एंह । ३—(ए०) मुरोह । ४—(ए०, बी०) रोवै । ५—
 (ए०) भएव; (बी०) भवा । ६—(ए०) देवों; (बी०) देउं तोहि । ७—(ए०) राए ।
 ८—(बी०) मोंह । ९—(ए०) राए; (बी०) राउ । १०—(ए०) आव; (बी०) आवै ।

११-(ए०) अहै; (बी०) यहइ । १२-(ए०) तोह । १३-(ए०) कोइ । १४-(बी०) जाना । १५-(ए०) ताहि कह; (बी०) देहु तुम । १६-(बी०) आना । १७-(बी०) अहै । १८-(बी०) देखत । १९-(ए०) गाँऊ । २०-(बी०) राजा । २१-(ए०) ततखन जन दौराए । २२-(ए०) आनिन्हि राअे; (बी०) आन हँकराइ । २३-(बी०) केहि ठाऊँ । २४-(ए०) × । २५-(ए०) बाट देखावहु जाए; (बी०) चाह कहसि यह जाइ; (दि० मार्जिन) चाह ओंहर कह जाय ।

टिप्पणी—(१) मरोहू-मरोह; करुणा; दुःख जनित ममता । लाग-लगा । छोहू-स्नेह; आत्मीयता ।

(२) पदुमिनी-पद्मिनी जातिकी नारी । अमोला-अमूल्य । परसाद-(स० प्रसाद) अनुग्रह; प्रसन्नतापूर्वक दी गयी वस्तु ।

(३) काजा-कार्य ।

(४) बाट-मार्ग ।

(५) जंगम-वसव द्वारा स्थापित लिंगायत शैव-सम्प्रदाय । यहाँ उसके माननेवाले-से तात्पर्य है ।

(६) दौराए-दौड़ाये । ततखन-तत्क्षण । आनहु-लाओ । धाइ-दौड़कर ।

११७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

धाइ^१ जन जंगम लइ^२ आये । कुँवर नैन जंगम मुख^३ लाये ॥१
पूछै लाग कहहु हम चाहा । कंचनपुर तुम्ह^४ देखी^५ आहा ॥२
नगर बहुत देखेहु^६ बहु^७ गाऊँ^८ । राजस्थान^९ औ आनों^{१०} ठाऊँ ॥३
कंचननगर उहो^{११} हम देखा । मारग कठिन न ओकै^{१२} लेखा ॥४
परवत^{१३} समुन्द अगम^{१४} बन भूता । मानुस भेस^{१५} जो राकस वृता^{१६} ॥५

भूत परेत^{१७} भुअंगम, मारग पैग^{१८} जै तर^{१९} जाइ ॥६

अति^{२०} दुख बहुत^{२१} पन्थ भँह दूगम^{२२}; तो रे^{२३} कंचनपुर जाइ^{२४} ॥७

पाटान्तर-एकडला और बीकानेर प्रतियौं-

१-(ए०, बी०) धाये । २-(ए०, बी०) लै । ३-(ए०) मुहँ । ४-(ए०) तोह । ५-(ए०, बी०) देखेहु । ६-(ए०) देखीं । ७-(बी०) बहु देखेऊँ । ८-(बी०) ठाऊँ । ९-(ए०, बी०) राजअस्थान । १०-(ए०) अनवन; (बी०) अनिर्वाण । ११-(ए०) वहै; (बी०) वह । १२-(ए०) आव, (बी०) आवँ । १३-(बी०) सायर । १४-(बी०) अम । १५-(बी०, ए०) भखहिं । १६-(ए०) घृता । १७-(बी०) परीत । १८-(बी०, ए०) पैग । १९-(ए०) न हीटै; (बी०) न हेटै । २०-(ए०) एत । २१-(ए०) अगम । २२-(ए०, बी०) × । २३-(ए०) तेहि; (बी०) तौ । २४-(ए०) राइ ।

टिप्पणी—(३) आनों-अन्यान्य ।

(४) उहो-वह भी । ओकै-उसका । लेखा-गणना, गिनती ।

- (५) परवत-पर्वत । समुन्द-समुद्र ।
 (६) भुअंगम-भुजंगम; सर्प ।
 (७) दूगम-दुर्गम ।

११८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूत^१ भुअंगम हों न डरावों^२ । कया होइ^३ जिउ तो भरमावों^४ ॥१
 राकस भूत जो र मँहि^५ खाही । तो मारग सिध नीक^६ लगाही ॥२
 बस्ती^७ वन प्रीतम विनु लागे^८ । भाव पन्थ वन रहे तिह आगे^९ ॥३
 प्रीतम लागे^{१०} बहुत^{११} दुख सहई^{१२} । दुख के मिले तो र^{१३} सुख रहई^{१४} ॥४
 दस नख कुँवर दसन^{१५} मँह^{१६} मेला । उहै^{१७} पन्थ दिखराउ^{१८} दुहेला ॥५
 वह^{१९} लग^{२०} जीउ सँकलपेउँ आपन^{२१}, जो भावइ सो होइ^{२२} । ६
 जो जिउ दुख ना दीजइ काहू^{२३}, ताकर^{२४} कौन मरोह^{२५} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) धूत; (बी०) भूत । २-(ए०, बी०) डराऊँ । ३-(बी०) होय । ४-(
 ए०) भरमाऊँ । ५-(ए० बी०) रे मोहिं । ६-(ए०) सुध नेग; (बी०) सिर नेग ।
 ७-(ए०) वासते; (बी०) बसतै । ८-(ए०) लागी । ९-(ए०) भाव पंथ विन रहै न
 मागी; (बी०) भव पंथ रहै नाव न लागे । १०-(ए०) लागि । ११-(ए०, बी०)
 जोरि । १२-(बी०) प्रीतम पंथ सहा होई । १३-(ए०) रे; (बी०) × । १४-(ए०)
 लहई; (बी०) होई । १५-(बी०) दसों । १६-(ए०) मुँह; (बी०) मुख । १७-
 (ए०) वोहै; (बी०) वहइ । १८-(ए०) देखराउ; (बी०) दिखावहु । १९-(ए०)
 तेहि; (बी०) वोहि । २०-(ए०, बी०) लगि । २१-(ए०) × । २२-(ए०, बी०)
 जो भावै सो होउ । २३-(ए०) जो जिउ दीजा दखि न; (बी०) पोजि दखिना
 दै पै कहूँ । २४-(बी०) कह ताकर । २५-(ए०, बी०) मुरोउ ।

टिप्पणी—(१)भरमाओं—भ्रमित होऊँ ।

- (२) मँहि—मुझको । खाही—खायेगा । मारक सिध—सिद्धि-मार्ग । नीक—अच्छा;
 भला ।
 (३) बस्ती—नगर ।
 (५) उहै—वही । दिखराउ—दिखलाओ । दुहेला—कठिनकार्य; कष्ट साध्य; दुखपूर्ण ।
 वामुदेव शरण अग्रवालने इसकी तुलना सुखकेलि > सुहेल्लि (देशीनाम गाला
 ८।३६; पाइसद् महार्णव ११।६५) से करके इसके मूल में दुःखकेलि-
 (दुःख केलि > दुहेल्लि) अनुमान किया है और अर्थ कठिन खेल, कठिन
 व्रीडा बताया है ।
 (६) सँकलपेउँ—संकल्प कर दिया । आपन—अपना । भावइ—अच्छा लगे ।

११९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राजा यहि^१ रे चलै न^२ देई। बहु समुझाउ^३ कान न सेई^४ ॥१
 राइ^५ न घट मँह आहे जीऊ। विनु^६ जिउ^७ डर भौ कित कर^८ सीऊ ॥२
 जीउ मिरगावति हरि लै गयी। विनु जीउ कया रकत विनु^९ भयी ॥३
 विसमौ लाज हरख नहिं रहा। पेम आइ^{१०} चित चिन्ता^{११} दहा^{१२} ॥४
 दौरि जो^{१३} जंगम पाँयहि^{१४} लागा। हम कहि^{१५} पंथ दिखाउ^{१६} सुभागा^{१७} ॥५
 पेम सुरा जिन्ह अँचयेउ^{१८}, तिहाँ^{१९} कुछौ न^{२०} सुधि। ६
 चित चिन्ता लज्या न भौ^{२१}, विसमौ हरख न बुधि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) एहि; (बी०) वोहि। २-(ए०) नहि; (बी०) ना। ३-(ए०) समुझाव;
 (बी०) समुझाव। ४-(ए०) मान नहिं सेई; (बी०) न मानै सेई। ५-(ए०)
 राए; (बी०) राय। ६-(बी०) ×। ७-(ए०) जिअ। ८-(बी०) काकर।
 ९-(ए०) सुनि हम। १०-(ए०) आए; (बी०) आय। ११-(बी०) चंपित।
 १२-(ए०, बी०) गहा। १३-(ए०, बी०) ×। १४-(बी०) पाँइ। १५-
 (बी०) बहई। १६-(ए०, बी०) देखाव। १७-(बी०) सभागा; (ए०) सभाखा।
 १८-(बी०) जिन अँचइय। १९-(बी०) तिन्है। २०-(बी०) ना। २१-(बी०)
 ना चित चिन्त न लाज भौ।

टिप्पणी—(१) सेई—वह।

(२) विसमौ—विस्मय।

(३) दौरि—दौड़कर।

(४) अँचयेउ—आचमन किया; पिया। तिहाँ—उसको। कुछौ—कुछ भी।

(५) भौ—भय।

१२०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जंगम मोह मया मन आई। मगु देखावइ^१ कँह लेजाई ॥१
 जंगम साथ लिहा यह^२ लाई^३। सायर नियर^४ ठाढ़ भा^५ जाई ॥२
 कंचननगर कै^६ इहवै^७ घाटा। यहि र^८ समुन्द कै^९ इहवै^{१०} घाटा ॥३
 दर्ई^{११} विधाता सँवरत^{१२} जाहू। तो सिध पावहु जो न डराहू^{१३} ॥४
 सायर तीर अहा एक डेंगा^{१४}। वहि चढ़ा आपुन^{१५} घर रेंगा ॥५
 कहिया प्रीतम पेखिहौं, दुहु लोयन विहसन्त^{१६}। ६
 कंज सरोवर नीर जिमि^{१७}, सर पंकहि^{१८} पसरन्त^{१९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) देखावै; (बी०) दिखावै । २-(ए०) लिहा ओहि; (बी०) लीन्हिसि ।
 ३-(बी०) लाइ । ४-(ए०, बी०) तीर । ५-(बी०) भवा । ६-(ए०) क; (बी०)
 कर । ७-(ए०) एहइ; (बी०) यह है । ८-(ए०, बी०) रे । ९-(बी०) कर ।
 १०-(ए०) एहवै; (बी०) यहवै । ११-(ए०) दैअ; (बी०) दइव । १२-(ए०,
 बी०) सौरत । १३-(ए०, बी०) डराहू । १४-(बी०) डोंगा । १५-(ए०) एह रे
 चढाए आपन; (बी०) वोहि चढाय आपु । १६-(बी०) विहसन्ति । १७-(ए०)
 कंच सरेवा तीर जेव; (बी०) कंच सरवर निरज्यौ । १८-(ए०) सर बंगह; (बी०)
 सरब आगे । १९-(बी०) पसरन्ति ।

टिप्पणी—(१) मगु-मार्ग ।

- (२) लिहा-लिया । सायर-सागर । नियर-निकट । ठाढ-खड़ा । भा-हुआ ।
 (३) इहवै-यही । बाटा-घाट, मार्ग । समुन्द-समुद्र । घाटा-घाट ।
 (४) सँवरत-स्मरण करते हुए ।
 (५) डेंगा-नाव । रेंगा (क्रि० रेंगना) गया ।
 (६) कहिया-कव । पेखिहौं-देखूंगा ।
 (७) कंज-कमल । पंकहि-कीचड़में । पसरन्त-फैलता है ।

१२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बोहित बहा चला वह जाई^१ । परा जाई^२ जिह^३ लहर^४ उठाई ॥१
 लहर आइ यह^५ देखत भूला । जानु^६ हिलोरें^७ पर^८ सेंउ^९ झूला ॥२
 तर उपर आवइ^{१०} औ जाई^{११} । बोहित^{१२} चारेउ^{१३} दिसि बउराई^{१४} ॥३
 कवहूँ पुरुब पछिउँ^{१५} कँह आवइ^{१६} । कवहूँ उतर दखिन कँह धावइ^{१७} ॥४
 हौं अपने^{१८} जियें डर न^{१९} डेराऊँ । जो र^{२०} मरों तो वहि न^{२१} मिलाऊँ ॥५
 कुतुबन प्रीतम अगम भुई, तिह वै^{२२} बसहि निचिंत । ६
 हम बीलोचन^{२३} डार जिमि, हियें खुरकहि^{२४} नित ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) बोहितो बहुरि चाह वह पाई । २-(ए०) जाए; (बी०) जाय । ३-
 (ए०) जह; (बी०) जहाँ । ४-(ए०, बी०) लहरि । ५-(ए०) लहरि आये अस;
 (बी०) लहरि अडावहिं । ६-(बी०) जानौ । ७-(ए०, बी०) हिलोलैं । ८-(बी०)
 बन । ९-(ए०, बी०) सौं । १०-(ए०, बी०) धावै । ११-(बी०) औमाई ।
 १२-बोहित । १३-(ए०) चारौं; (बी०) चारिहूँ । १४-(ए०, बी०) बौराई ।
 १५-(ए०) पछुँ; (बी०) पछिम । १६-(बी०) कहुँ धावै । १७-(बी०) फिर
 आवै । १८-(ए०) जिअ; (बी०) जिव कै । १९-(ए०) अव । २०-(ए०, बी०)

२। २१-(ए०) उहि, (बी०) वोहि । २२-(ए०) उए उहँ, (बी०) वै उहँ ।
२३-(ए०) बैलोचन; (बी०) वए लोचन । २४-(ए०) खुरुकहि; (बी०) खरकहि ।

टिप्पणी—(१) बोहित-नाव ।

(२) तर-नीचे ।

(४) पछिउँ-पच्छिम ।

(६) निचिंत-निश्चिन्त ।

(७) बीलोचन-वैरोचन; नन्द नामक राजाका अमात्य । खुरुकहि-खटकता है ।

यह पंक्ति जैन साहित्यमें वर्णित इस कथाकी और संकेत करती है—नन्द नामक राजा वैरोचन नामक एक अमात्य था । वैरोचनकी पत्नी पद्मिनी जातिकी थी जिसके कारण उसके वस्त्र पद्म गन्धसे सुवासित रहते थे । एक दिन राजा नगर-भ्रमणके लिए निकला तो एक जगह सूखते हुए धुले कपड़ों-से उसे पद्मकी गन्ध मिली । धोबीसे पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे वस्त्र वैरोचनकी पत्नीके हैं । राजा उससे मिलनेको उत्सुक हो उठा । उसने किसी बहाने वैरोचनको बाहर भेज दिया और स्वयं वैरोचनके घर पहुँचकर उसकी पत्नीसे काम-प्रस्ताव किया । स्त्रीने राजाको समझाया कि वह उसके पिताके समान है अतः इस प्रकारके भाव उचित नहीं है । राजाकी बुद्धिमें बात आ गयी और वह लौट गया । जल्दीमें वह अपने जूते वैरोचनके घर ही छोड़ आया ।

जब वैरोचन लौटकर आया तो द्वार पर उसे राजाके जूते दिखाई पड़े । वह बात ताड़ गया और राजाके वध करनेका निश्चय किया । एक दिन वह राजाको आखेटके बहाने नगरसे दूर ले गया और जब वह थककर पेड़के नीचे सो गया तो उसका वध कर डाला । और नगर लौटकर प्रसिद्ध कर दिया कि जंगलमें राजाको जन्तुओंने खा डाला ।

जिस समय वैरोचन राजाकी हत्या कर रहा था उसी समय पासके पेड़की डालसे कुछ खटका हुआ । वैरोचनको सन्देह हो गया कि किसीने उसे कुकृत्य करते हुए देख लिया है । और यह बात उसे सदैव खटकती रही । वस्तुतः उस समय राजकीय उपवनका माली वहाँ काम कर रहा था । उसने अमात्यकी कुचेष्टाएँ भाँप लीं और छिपकर एक पेड़पर जा बैठा । उसके पेड़की डाली खटक उठी । इससे माली भयभीत हुआ और नगर छोड़कर भाग गया । कुछ दिनों बाद जब वह घर लौटकर आया तो उसकी पत्नीने उससे गायब रहनेका कारण पूछा । एकान्तमें मालीने उसे सारी बात बता दी । राजाके गुप्तचरोंने यह बात सुन ली और नये राजाको इसकी सूचना दे दी । राजाने वैरोचनको बुला भेजा । जब उसे ज्ञात हो गया कि अब उसके प्राण नहीं बचेंगे तो उसने अपने पुत्र द्वारा अपनी हत्या करा ली । (हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १०, अंक २ में माताप्रसाद गुप्त लिखित नन्द-वतीसी शीर्षक लेख)

१२२

(दिल्ली; बीकानेर)

एक माँस लहरहिँ मँह रहा । भँवइ लागि दइ सँउ कहा ॥१
 विवि कर बन्दों तोसँउ माँगों । मोंख देहु हों लहरहिँ खाँगों ॥२
 लहरें नरिन्दें रहीं गँभीरा । दइय मया करि पायसु तीरा ॥३
 गिरि परबत एक देखिसि तहाँ । दोइ जन आई जुहारे जहाँ ॥४
 पूछसि कवन रहहु तुम्ह कहाँ । यह ठाँ और न कोई जहाँ ॥५
 जिहँ र बाट तुम आयउ भूली, हम आये तिहँ बाट ॥६
 परबत देख तीर हम जाना, इहाँ न आहै घाट ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-लहरि । २-बिनवै लग दइय । ३-जोर । ४-दइय सै । ५-लहरिहु । ६-लहरि
 नरिंद उठी । ७-पाव किहि । ८-पाइसि । ९-X । १०-दुइ । ११-आये । १२-
 जोहारे । १३-कहाँ । १४-पूछी । १५-तुम । १६-तेहि ठाँकँ रहै न मानुस जहाँ ।
 १७-जेहि रे । १८-तुम । १९-आयेहु भूले । २०-हमहु । २१-तेहि ।

टिपणी—(१) भँवइ-चक्कर लगाते ।

(२) विवि-दोनों । मोंख-मोक्ष ।

(३) मया-दया ।

१२३

(दिल्ली; एकडला)

बोहित बहुत हमरि संग आवा । बूड़े सवै खोज न पावा ॥१
 अउर एक जो अचम्भो देखा । इहाँ भुअंगम विपिरित पेखा ॥२
 एक एक मानुस दिन दिन लेई । लेतै खाइ न हाड़ो देई ॥३
 माँनुस बहुतै बोहित आहै । लइ कै खायसि हम दोइ रहे ॥४
 अबँहि क घरी हमहि लै जायसि । लइके फारि तोरि कै खायसि ॥५
 निघटै बात न पाइ उन्हकै, ततखन विसँहर आई ॥६
 ईहँ मँह एक लेतसि धरिके, लै अपना कहँ जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१- हमरे संग आये । २-नहि पाये । ३-और । ४-लैइ कै । ५-बोहित म अहे ।
 ६-लैइ । ७-दुइ । ८-अवही घरी हमें ले जाइह । ९-लै के फारि । १०-खाइह ।
 ११-उनकी । १२-आए । १३-दुहुँ । १४-एकै । १५-लीतिसि । १६-X ।
 १७-लै इहवाँ हुते जाए ।

टिपणी—(२) भुअंगम-सर्प । विपिरित-विपरीत; असाधारण (३) लेई-लेता है ।
 हाड़ो-हाड़ भी; हड्डी भी । देई-देता है; छोड़ता है ।

- (५) अबहिँ-इस । घरी-घड़ी । फारि-फाड़ । तोरि-तोड़ ।
 (६) निघटै-समाप्त । बिसँहर-विपधर; सर्प ।
 (७) धरिक्के-पकड़कर । कहँ-के पास ।

१२४

(दिल्ली; एकडला)

पुनि' जो उहै भुअंगम आवा । दुसरहि लइगा^१ खोज न पावा ॥१
 देखि कुँवर यहि रोवइ^२ लागा । करम हमार बाउ^३ हम भागा ॥२
 संगी साथ न कोऊ^४ कीन्हैउँ^५ । वनखँड सायर मँह धँस लीन्हैउँ^६ ॥३
 हम डर अपनै जिय क न आही । को सुधि कहइ हमरेउ^७ ताही ॥४
 जो रे भुअंगम हम कहँ खाई । मिरगावति सेउँ^८ को कहि^९ जाई ॥५
 यह चिन्ता चित सालै मोरे^{१०}, वह न जान^{११} हम सुख । ६
 को र^{१२} सुनै किह पठवउँ^{१३} यह^{१४}, को र^{१५} कहै हम दुख ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

- १-कुनि । २-दोसरेहि लैगा । ३-अह रोवै । ४-बाँव । ५-कोई । ६-कीन्हेव ।
 ७-दीन्हेव । ८-कहै हमारी । ९-मिरगावती सों । १०-कह । ११-मोरेउ ।
 १२-उह जानै । १३-रे । १४-केहि पठवौ । १५-X । १६-रे ।

टिप्पणी—(२) करम-कर्म, भाग्य । हमार-मेरा । बाउ-बाम । भागा-भाग्य ।

(३) धँस-बुस पैठ ।

(६) सालै-(क्रि० सालना) काँटेकी तरह चुभना ।

१२५

(दिल्ली; एकडला)

दई^१ विधाता तूँ पै आही । तोहि छाड़ि कै विनवो काही ॥१
 तोहि छाड़ि जो औरहि धावइ^२ । करमहीन मग^३ जनम न पावइ^४ ॥२
 फुन र^५ भुअंगम आयउ ओही^६ । घन गज घटा उठे लग तोही^७ ॥३
 आयउ^८ मीचु जाइ नहिँ फेरी । कुँवर आस छाड़ी जिय केरी ॥४
 जो पै आउ घटी हुत मोरी । जो घर मरतेउँ^९ लागत खोरी ॥५
 यहि^{१०} अनन्द जिय^{११} मोरें वारे^{१२}, मुयेउ पेम उहि लागि । ६
 जो पै काल घट न हुत मोरा, ना र उवरतेउ^{१३} भागि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

- १-दैअ । २-मगु धावै । ३-मगु । ४-पावै । ५-बहुरि । ६-आए उही । ७-
 मोही । ८-आई । ९-मरतेंव । १०-ओहि । ११-जिअ । १२-नाहि उवरतेंव ।

टिप्पणी—(१) विनवो-विनय करूँ ।

(३) ओही-वही ।

- (४) मीचु-मृत्यु । फेरी-लौटाई । आस-आशा । छाड़ी-छोड़ी । केरी-का ।
 (५) आउ-आयु ।
 (६) बारे-लेकिन । मुयेउ-मरा । उहि-उसके । लागि-के लिए ।
 (७) काल-मृत्यु । घट-घटा; कम हुआ । ना-नहीं । उबरतेउ-उद्धार पाता ।

१२६

(दिल्ली; एकडला)

फुनि जो सरप नियर वहि^१ आवा । राजकुँवर कँह चाहसि^२ खावा ॥१
 दई^३ क मया कुँवर कँह आई । दूसर^४ भुअंगम दीन्हि दिखाई ॥२
 दूनो^५ आपुन^६ मँह अस लरे । भा अकूत^७ सायर मँह परे ॥३
 दोऊ लहर परे पराई^८ । लहर^९ साथ बोहित^{१०} बहिराई^{११} ॥४
 बोहित^{१२} आइ तीर होइ^{१३} परा । कुसल भई^{१४} कुँवर उवरा ॥५
 रहसा पायउ^{१५} तीर देखि कै, घट मँह आई साँस ।६
 जो उवरेंउ^{१६} यह काल जम सेउं^{१७}, अहै^{१८} मिले कै^{१९} आस ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

- १-मैं । २-चाहै । ३-दैअ । ४-दोसर । ५-दोनों । ६-आपु । ७-भै अकृति ।
 ८-दुहुँ क परत लहरि बड़ि आई । ९-लहरि । १०-बोहिय । ११-विहराई ।
 १२-बोहिय । १३-होए । १४-भएव । १५-पाइसि । १६-उवरेव । १७-सों ।
 १८-आहि । १९-की ।

टिप्पणी—(१) सरप-सर्प । चाहसि-चाहा ।

- (२) दूनो-दोनों । अस-ऐसा । लरे-लड़े । अकूत-पाठ अकूट है या अकृत यह स्वतः निश्चय करना कठिन है । किन्तु पदमावत-(वाजन वाजहिं होइ अकूता । दुओ कन्त लै चाहहिं सुता ॥ ४९५।५) और चितरावली (गेरुआ वल्ल चढ़ाइ विभृता । शिव शिव बोलहिं उटै अकूता ॥ २७०।३)से निश्चित हो जाता है कि शब्द अकूत है । वासुदेव शरण अग्रवालने इसका अर्थ दिया है दिव्य ध्वनि । किन्तु यह अनुमान मात्र और कल्पना जनित है । इसका अर्थ है—शोरगुल; हल्ला; असाधारण ध्वनि ।
 (४) पराई-भाग । बहिराई-बाहर हुई । उवरा-उद्धार हुआ ।
 (६) रहसा-हर्षित हुआ । घट-शरीर ।
 (७) जम-यम । अहै-है । मिले कै-मिलनेका । आस-आशा ।

१२७

(दिल्ली; एकडला)

बोहित^१ छाड़ि चला^२ जो^३ जाई । देखिसि^४ एक अँवराउं सुहाई^५ ॥१
 कहसि^६ पैठि देखै^७ अँवराई । वइठों जहाँ^८ निमिख एक जाई^९ ॥२
 आइ बैठि^{१०} जो देखी काहा^{११} । बहु फुलघारि अमिय फर आहा^{१२} ॥३

जानहु यह कबिलास कै^१ वारी। कै र^२ इन्द्र आपु लागि^५ सँवारी ॥४
फिरि कै नगर क पूछउँ^५ नाऊँ। कउन नाउँ^५ आहै यह^{१०} गाँऊँ ॥५
फुनि जो देखसि फिरि कै चलि कै^५, भवन^५ अपूरव^{१०} एक।६
कहिसि जाइ यहि^{११} भीतर देखउँ^{१३}, दँहुँ का आहै नेक ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-बोहिय। २-चल। ३-X। ४-देखै। ५-अवरॉव सोहाई। ६-देखौं।
६-बैठौं जाए। ८-छाई। ९-आए बैठ। १०-देखै अँवराई। ११-आही।
१२-क। १३-रे। १४-लगि। १५-पूछौं। १६-कौन नाव। १७-एहि। १८-
X। १९-भौन। २०-अपुरुव। २१-जाए एहि। २२-देखौं।

टिप्पणी—(१) अँवराउँ—(सं० आम्राराम) आमका बगीचा।

(२) अँवराइ—(सं० आम्राराम) आमका बगीचा। बइठौं-बैठौं।

(३) कहा-क्या। अमिय-अमृत। फर-फल।

(४) कबिलास-कैलास; स्वर्ग। वारी-वाटिका; बगीचा। लागि-के लिए; निमित्त।

(५) फिरिकै-घूमकर।

(७) नेक-अच्छा।

१२८

(दिल्ली; एकडला)

पँवरि नाँघि जो भीतर आवा। कलु आरो मनुसै कै पावा ॥१
आगँ आइ^५ जो देखी भोला। कुँवरि सेज एक बैठि अमोला ॥२
फुनि^३ जो^३ अचम्भो देखी काहा। बदन चाँद जनु^५ उदिनल आहा ॥३
एकसर चाँद कवन^५ गुन आही। नखत न आवइ^५ बारँहि ताही ॥४
कँवल अमोलक इकसर काहा। भँवर आइ कै कीन्ह न चाहा^५ ॥५
अमिय सरै अथ कँवल गहि, जिमि पावस धन मेह।६
अबला सरल^५ जो सलिल भई^५, किमि कारन किंह एह^{१०} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-जाइ। २-पेसै। ३-बहुरि। ३-X। ४-जनि। ५-कौन। ६-उपे न। ७-
मौर न आये काह नहि चाहा। ८-सलिल। ९-भै। १०-कह एह।

टिप्पणी—पँवरि-झोड़ी; प्रवेश द्वार। नाँघि-लौघकर; पार करके। आरो-आहट।

(३) अचम्भो-आश्चर्य। बदन-मुख। उदिनल-उदित।

(४) एकसर-अकेला। कवन-किस। गुन-गुण; कारण। नखत-नक्षत्र; तारे।
बारँहि-निकट।

(५) अमोलक-अमूल्य।

(७) किमि-किस। किंह-क्यों। एह-यहाँ।

१२९

(दिल्ली)

सूर पूछ ससि किह गुन रोवा । गहन लाग कै र कछु खोवा ॥१
 खोयउँ कछु न हों जिय खोई । लागहि [गहन कहसि मैं सोई ॥२
 गहन लाग फुनि छाड़ी जानाँ । यह राकस कैसहिं न मानाँ ॥३
 हमकहँ दई लिखा सो होई । तौ र चाह फुनि आयहु सोई ॥४
 राकस कहँ हों दुख ना दीन्ही । माटीं तैं मोह न कीन्ही ॥५
 तौ र जाहु यहि ठाँउ जरी सँउ, मोहि आवइ तुर मोह ॥६
 केदा देख रूप तरुनापा, हम आवइ जिय मोह ॥७

टिप्पणी—(१) सूर—सूर्य । गहन—ग्रहण ।

(२) राकस—राक्षस ।

(५) माटीं—मिट्टी; शरीर ।

(६) जरी—जल्दी । मोहि—मुझे । तुर—(तोर) तुम्हारा ।

(७) तरुनापा—तरुगाई ।

१३०

(दिल्ली; एकडला)

तूँ र तिरि आछहि^१ यहि^२ ठाऊँ । छाड़ों तोहि भागि कँह^३ जाऊँ ॥१
 यह र^४ बात पूछउँ^५ कहु^६ मोही । राकस कहुँ^७ कस दीठि न^८ तोही ॥२
 तोरहि पितहि नाँउ^९ है काहा । नगर कवन तहाँ पति आहा^{१०} ॥३
 देवराइ पति नगर सुबुध्या^{११} । राघोबंस जो आहै अजोध्या^{१२} ॥४
 पिता हमार हों र तिह^{१३} धिया । नाँव हमार रुपमनि उन्ह^{१४} किया ॥५
 राकस एक रहत है पंथा^{१५}, वरिस देवस एक लेइ^{१६} ॥६
 यहि र^{१७} वरिस ओसरी^{१८} हम आई, तो उन्ह हम कँह देइ^{१९} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—आछति । २—एहि । ३—के । ४—रे । ५—पूछौ । ६—X । ७—कह । ८—दीन्हि
 नहि । ९—नाव । १०—नगर कौन अहेको पति आहा । ११—सुबुधेया । १२—आह
 अलोधेया । १३—रे उन्ह । १४—नाँव मोर उन्ह रुपमनि । १५—रहत यहि ठाई ।
 १६—लेए । १७—एहि रे । १८—उसरी । १९—देए ।

टिप्पणी—(१) तिरि—(त्रिया) स्त्री । आछहि—हो । छाड़ों—छोड़ूँ ।

(४) देवराइ—देवराय । पति नगर—नगर पति । राघोबंस—राघव वंश ।

(५) धिया—पुत्री । नाँव—नाम ।

(७) ओसरी—बारी ।

१३१

(दिल्ली; एकडला)

जो तिह' वाट सो मोरिउ आई। तोहि छाड़ि मोहि जाइ न जाई ॥१
तोहि छाड़ि कै जो हौं जाओं। वरिस लाख दस' हौं न जियाओं ॥२
मारों आजु विधाँसों सोई। राकस छाड़ि जो भोकस होई ॥३
कुँवर वात निरभौ अनुसारी। खतरी कुँवर' कहा मन नारी ॥४
कुँवरि कहा जो जातसि' नाहीं। वैठु आई मोरी परछाहीं ॥५
कहसि^{१०} औधि अहै मोहि^{११} जब^{१२} सेउँ^{१३}, वैठउँ^{१४} तिरी न पास ।६
औधि वचा पतिपारों, जब लगि है तन साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-तोरी । २-जाऊँ । ३-एक । ४-जिअउँ । ५-छोड़ि । ६-खतिरि । ७-कोइ ।
८-जातेसि । ९-आए । १०-कहिसि । ११-हम आहे । १२-१३-× । १४-वैठों ।

टिप्पणी—(१) तिह-तुम्हारी । मोरिउ-मेरी भी ।

(३) विधाँसों-विधिसे, तरकीबसे; अथवा विधाँसों-विध्वंस करूँ । सोई-उसे ।
भोकस-(सं० पुल्कस > पुक्कस > पोक्कस > भोकस) भूत ।

(४) निरभौ-निर्भय होकर । अनुसारी-कही । खतरी-क्षत्रिय ।

(५) जातसि-जाते हो । परछाहीं-छाया; यह निकट से तात्पर्य है ।

(६) औधि-प्रतिज्ञा । तिरी-स्त्री ।

(७) वचा-वचन । पतिपारों-(सं० प्रतिपालन) रक्षण; पालन ।

१३२

(दिल्ली; एकडला)

वात कहत हा' सो न घटानी^१। वह^२ आयउ जाकहि^३ यह आनी ॥१
सात सीस चउदह^४ भूदण्डा। जनु^५ रावन आयउ^६ वरिवण्डा ॥२
रुपमनि^७ कहि यह राकस सोई। लेइ आउ घवरि^८ कै रोई ॥३
कुँवर कहा सरन गहु^{१०} मोरी। हौं मारों यहि मस्तक तोरी ॥४
कुँवर फिराइ चक्र सेउँ^{११} मारा। सीस टूटि एक^{१२} बहुरि सँभारा ॥५
सात सीस साँ आयउ विपरित^{१३}, उन्हें र^{१४} हनेउ सत वार ।६
जनु सुमेरु गिरि फाटेउ^{१५} पिरथी^{१६}, खरभर परेउ अकार^{१७} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-ए । २-खुरानी । ३-उवह । ४-जेहि कह । ५-चौदह । ६-जनि । ७-
अहेउ । ८-रुपिमिनि । ९-लए आवा गहवरिके रोई; (दि० मार्जिन)-ले उसास
हिए भर रोई । १०-कहा तू सरनहि । ११-साँ । १२-फुनि । १३-× । १४-ए
रे । १५-फूटेव । १६-× । १७-(दि० मार्जिन) हकार ।

टिप्पणी—(१) घटानी—समाप्त हुई ।

- (२) चउदह—चौदह । भूदण्डा—भूदण्ड; हाथ । रावन—रावण । बखिण्डा—(अप० बलिवण्ड; सं० बलिवृन्द) बलवान ।
 (३) घवरि—घबड़ा ।
 (४) सरन—शरण । गहु—पकड़ो ।
 (५) फिराइ—घुमाकर । बहुरि—पुनः ।
 (६) हनेउ—हनन किया; मारा । सत—सात ।
 (७) फाटेउ—फाड़ा । पिरर्यी—पृथ्वी । खरभर—हल चल । परेउ—पड़ा । अकार—आकाश ।

१३३

(दिल्ली; एकडला)

कुँवरि देखि वह गइ विसँभारा^१ । जानहु फूल मुरझि^२ गै^३ मारा ॥१
 कुँवर सींचि कै पानि जियाई^४ । कहिसि देखु^५ मारेउँ सकताई^६ ॥२
 चाँद गहत मारेउँ (भल^७) जानौं । नखत मोंति उर तिय कँह^८ आनाँ ॥३
 बहुते मोंति निछावरि कीनसि^९ । राकस मारि हमार जिउ^{१०} दीनसि^{११} ॥४
 जस दंगवै भीम परगाही^{१२} । वै^{१३} साहस तै^{१४} अउर^{१५} निवाही ॥५
 तू हमार वीर मोह जो पायसु^{१६}, अब मानौं गुन सोइ^{१७} ।६
 हौं बलि बलि बल^{१८} तिहकै^{१९}, जिह^{२०} पीर पराई होइ^{२१} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

- १—बेसँभारा । २—मुरुझ । ३—गिय । ४—जगाई । ५—कहेसि देखु । ६—सुकुताई । ७—
 फुर । ८—नेकँह । ९—कीतिसि । १०—हमहिं । ११—दीतिसि । १२—परिगाही; (दि०
 मार्जिन) जैस भीम कीचक परगाही । १३—तस । १४—X । १५—एंउर । १६—
 जस पाएस । १७—सोए । १८—X । १९—तोहि कह । २०—जेहि । २१—होए ।

टिप्पणी—(१) विसँभारा—बेहोश; बदहवास । गै—गया ।

- (२) सकताई—शक्तिवाला; बलवान ।
 (४) दीनसि—दिया ।
 (५) दंगवै—पुरपट्टन (सम्भवतः अणहिलपट्टन) का राजा । भीम—पाँच पाण्डवोंमें-
 से एक । परगाही—(धा० परिगाहना) परिग्रह बनाना; अपना कुटुम्बी बना
 लेना; सहायता करना । इस पंक्तिका संकेत उस लोक कथाकी ओर है, जो
 इस प्रकार है—एक समय दुर्वासा ऋषि इन्द्रलोक पहुँचे । उनके सम्मानमें
 इन्द्रने तिलोत्तमा नामक अप्सराके नृत्यका आयोजन किया । नृत्य करते
 समय तिलोत्तमाको ऋषि नृत्य-संगीतके प्रति अरसिक जान पड़े । अतः उसने
 नृत्य बन्द कर दिया और इन्द्रसे विदा माँगने लगी । यह देखकर दुर्वासा
 ऋषि अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने शाप दिया कि पृथ्वीपर अवतरित हो

कर दिनमें घोड़ी और रातमें नारीका रूप धारण करे। शाप सुनकर तिलो-
त्तमा अनुनय विनय करने लगी। तब ऋषिने शाप मोचनकी व्यवस्था दी।

शापवश तिलोत्तमा पृथ्वीपर घोड़ीके रूपमें अवतरित हुई और उसे पुरपत्तनके
राजा दंगवैने अपने पास रख लिया। नारदको अपनी विचरण-यात्रामें इस
विचित्र घोड़ीकी बात मालूम हुई और उन्होंने जाकर यह बात द्वारिका नरेश
कृष्णसे कही। कृष्णने तत्काल दंगवैसे उस घोड़ीकी माँग की। दंगवैने जब
देनेसे इनकार किया तो कृष्णने उसपर आक्रमण कर दिया। दंगवैने जाकर
सुभद्रासे फरियाद की। सुभद्राने उसे भीमके पास भेज दिया। वे ही न्यायका
पक्ष लेकर कृष्णका सामना करनेमें समर्थ थे।

दंगवै भीमकी शरणमें गया। भीमने उसे अभयदान दिया। फल स्वरूप
कृष्ण और भीममें घोर युद्ध हुआ। युद्ध हो ही रहा था कि दुर्वासा ऋषिकी
व्यवस्थाके अनुसार अप्सरा शापमुक्त होकर इन्द्रलोकको चली गयी।

वासुदेव शरण अग्रवालकी धारणा है कि इस लोककथाके मूलमें ऐति-
हासिक घटना है। उनका अनुमान है कि इस लोककथाके भीम गुजरात
नरेश चालुक्य भीम द्वितीय हैं। उनकी ख्याति भोलो भीमके नामसे है।
दंगवैसे तात्पर्य चित्तौर नरेशसे है जिसकी सहायता भीमने की थी। भीमकी
राजधानी अणहिलपट्टनको दंगवैकी उक्त कथाका लीलास्थल बनाना इस
बातका संकेत करता है कि इस लोककथाके मूलमें ऐतिहासिक तथ्य है।
उस ऐतिहासिक तथ्यको भीम और कृष्णके साथ जोड़ दिया गया है।

दंगवै भीमकी इस कथाके आधारपर दंगवै पुराण और डंगवपर्व नामक
काव्य लिखे गये हैं। और पदमावतमें जायसीमें इसकी चर्चा कई स्थलोंपर
की है। (२६११२; ५०८१९; ५२६१८; ६२९१६)। कुतुबनके उल्लेखसे ऐसा
जान पड़ता है कि इन रचनाओंसे भी पहले यह कथा लोक-प्रचलित थी।
निवाही-निर्वाह किया; पालन किया।

(७) बलि बलि-निष्ठावर। पीर-दर्द। पराई-दूसरोंका।

१३४

(दिल्ली; एकडला)

जो गुन काहू कै' मानैं नाहीं। सो कुलवन्त होय जग काहीं ॥१
चाँद कहा अब सूरज आवउ^३। एकहि रासि बैठि नित धावउ^३ ॥२
सूर न आवइ चाँद कै' रासी। चाँद गवन तो सूरज^३ पासी ॥३
दिन दोइ आउ दुहु रहहिं इक^३ ठाँई। तुम र^३ विरिख^३ हों र^३ तुम्ह^३ छाहीं ॥४
रुपमनि^३ बहु विनती जो कही^३। उनके^३ मोह कुँवर चित भई ॥५

यहिक दोख कछु नाहीं आहै^{१५}, जो ई होय मन^{१६} सुद्ध ॥६
कुँवर बात यह गुनि कै जिय मँह^{१७}, सेज वैठि वह मद्ध ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-काहे क । २-सुरुज आवहु । ३-भावहु । ४-चाँद न आवइ सुर क । ५-
सुरुज । ६-दिन दुइ आए रहहु एक । ७-तोहरे । ८-पुरुख । ९-X । १०-
तोहरी । ११-रूपमिनि । १२-कई । १३-उन्ह कै । १४-X । १५-जो पै मन
है । १६-X । १७-मुध ।

टिप्पणी—(६) यहिक-इसका । दोख-दोष । ई-यदि । होय-हो ।

(७) गुनिकै-विचार कर । मद्ध-मध्य ।

१३५

(दिल्ली; एकडला)

कुँवरि कहा तूँ जोगि न होही । पूछों बात सपत दइ^१ तोही ॥१
कवन नाँउ^२ घर कहाँ तुम्हारा । किह^३ कारन तुम्ह^४ जोग सँवारा ॥२
हौं जोगी जरमाँसों केरा । सिध होइ^५ कँह फिरि फिरि हेरा ॥३
मनछया बोलहु^६ कहहु^७ न साँचा । सपत^८ ताहि कै^९ जिह कँह^{१०} राँचा ॥४
जरम न कहतों^{११} जोग क^{१२} बाता । तिह कह^{१३} सपत दीह^{१४} जिह जिउ^{१५} राता ॥५
अब फुर कहों न बोलों मनछया^{१६}, जो र^{१७} सपत तुम्ह दीन्ह^{१८} ॥६
जिउ लागेउ एक ठाँई^{१९}, तेहि लग जोगि कया हम कोन्ह^{२०} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-दै । २-कौन ठाँव । ३-केहि । ४-तोह । ५-होय । ६-मीथ बोल । ७-
सपति । ८-X । ९-जासों चित । १०-कहतेंउ । ११-की । १२-तेहिकी ।
१३-दियेहु । १४-X । १५-मीथ । १६-रे । १७-तोह दीन । १८-जिउ
लगाए काटेइ । १९-कौन ।

टिप्पणी—(१) कुँवरि-कुमारी; राजकुमारी । पूछों-पूछती हूँ । सपत-शपथ । दइ-
देकर । तोही-तुमको ।

(३) जरमाँसों-जन्मजात । केरा-का ।

(४) मनछया-कपट । राँचा-अनुरक्त ।

(५) जरम-जन्म । कहतों-कहता ।

(६) फुर-शीघ्र ।

१३६

(दिल्ली; एकडला)

जो वह^१ सपत न देतसि मोही । मरम न जरमहि कहतेउ^२ तोही ॥१
अब सुनु^३ जो पूछइ^४ है बाता । कहों मरम जा सेउँ^५ चित राता ॥२

पिता मोर राजा बड़वारू । गढ़ चन्द्रगिरि उतंग अपारू ॥३
गनपति देव पिता कर^१ नाऊँ । सुरुजवंस सिध हम ठाऊँ ॥४
कंचनपुर मिरगावति रानी । सो हम देखत^२ दिस्टि भुलानी ॥५
पूछहु कहुँ कइसैं तुम्ह^३ देखी, नियर न तुम सों^४ आहि । ६
सपनै^५ देखि न राचै कोई^६, सो त किह देखहु ताहि^७ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-एह । २-जरमहु मरम न कहतेंव । ३-सुन । ४-पूछै । ५-सों । ६-के ।
७-देखी । ८-हैं पूछों कैसे तोहि । ९-तोह सै । १०-X । ११-सोतुख देखे
चाहि ।

टिप्पणी—(३) बड़वारू—बहुत बड़े । उतंग—ऊँचा ।

(४) दिष्टि—दृष्टि ।

(५) नियर—निकट ।

(७) राचै—अनुरक्त होता है । सो त—अतः ।

१३७

(दिल्ली; एकडला)

दिन एक खेलइ गयउँ^१ अहेरा । हिरनी होइ^२ हम दिहसि^३ अमेरा ॥१
वरन सात होइ दिहसि दिखाई^४ । भूलेउ चित लागेउ तिह धाई^५ ॥२
धायउँ^६ धरे न पायउँ^७ ओही । पैठेंउ^८ सरवर जिउ लै मोही ॥३
सरवर तीर बरिस दिन सेवा । रिखि गन गन्ध्रप परसेउ^९ देवा ॥४
परसन देउ भये तो^{१०} आई । आइ सखिन सेउ लागि अन्हाई^{११} ॥५
चली नहाइ^{१२} परेउँ^{१३} खसि तिह ठाँ^{१४}, आइ उचायो^{१५} धाई । ६
दूसरि^{१६} बार आइ^{१७} फुनि^{१८} सरवर^{१९}, चीर लियो^{२०} तो जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-खेलै गउ । २-मै । ३-दीसि । ४-मै दीसि दिखाई । ५-तहँ जाई । ६-
धायेंव । ७-पायेंउ । ८-पैठेंव । ९-रेसेव । १०-भये देव तव । ११-सैं लगी न-
हाई । १२-नहाय । १३-परें । १४-X । १५-आए उठाए । १६-दुसरे ।
१७-जो आई । १८-१९-X । २०-लेयेंव ।

टिप्पणी—(१) अमेरा—मुठभेड़; आमने सामने होना ।

(३) धरै—पकड़नेके लिए । ओही—उसे ।

(४) रिखि—ऋषि । परसेउ—(स० स्पर्श) स्पर्श किया; द्युआ ।

(५) परसन—प्रसन्न । भये—हुए । अन्हाई—स्नान ।

(६) खसि—गिर । उचायो—उठाया ।

१३८

(दिल्ली)

चीर लिहों तो आई हाथा । माँस पाँच आहे एक साथी ॥१
 औधि किहिसि हुत रही न बाचा । गयी उड़ाइ देखि चित राचा ॥२
 वहि कारन हम जोग सँचारा । जीवन भोजन उहै अधारा ॥३
 रुपमनि मन यह बात समानः । सुनि जो सुख कै परम कहानी ॥४
 अस कुलवन्त न आहे केऊ । नेह लाग जियँ कै परखेऊ ॥५
 माँता पिता लोग जन छाड़सि, चढ़ धँस लिहसि अँगार ॥६
 चार पहर निसि बार्तिह गवईह, फुन र भयउ भिनुसार ॥७

टिप्पणी—(५) केऊ-कोई । नेह-प्रेम ।

(७) भिनुसार-प्रातःकाल ।

१३९

(दिल्ली; एकडला)

उदिनल भानु भयउ^१ उजियारा । रुपमनि^२ खोज चलेउ संयसारा^३ ॥१
 रोवत राजा भा असवारा । चन्दन काठ संग लिहसि^४ अपारा ॥२
 कहति जाइ वहि^५ हाड़ो लेऊँ । जारों लइ क^६ मोंख वहि^७ देऊँ ॥३
 भा निरास आवत हुत राजा । दर्ई क कोउ न जानै^८ काजा ॥४
 निमिख एक मँह जियतहिं मारे । चाह त माटी लै रू(प)^९ सँवारे ॥५
 आवत अहा निरास भा राजा^{१०}, पायसु^{११} जियत क^{१२} चाह ॥६
 कुँवरि जियत कहि लोगहिं^{१३}, औ दूसर कोउ^{१४} आह ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-भएव । २-रुपिमनि । ३-चला संसारा । ४-लीन्ह । ५-कहिसि जाए अब ।
 ६-लै रे । ७-उहि । ८-दैअ क गरव न जानी । ९-तौ । १०-रे । ११-× ।
 १२-पाइसि । १३-कै । १४-कह लोगन्ह । १५-दोसर कोइ ।

टिप्पणी—(२) काठ-लकड़ी ।

(३) जारों-जलाऊँ । लइ क-ले करके । मोंख-मोक्ष ।

(५) माटी-मिट्टी ।

(६) पायसु-पाया ।

१४०

(दिल्ली; एकडला)

राजें सुनाँ धाइ^१ कै आवा । राकस हना देखी कै भावा ॥१
 फुनि आगें जो देखी^२ सोई । दूसर^३ फुरहिं वइठ^४ है कोई ॥२

राजहि देखि कुँवरि घभरी^१। ततखन^२ कुँवरि सेज परिहरी ॥३
 राजें कुँवरि गिय लै लाये। जानु^३ आजु जननि यहि जाये ॥४
 जानहु नौ कै भा औतारा। फिरै^४ काज सोइ दई^५ सँवारा ॥५
 फुनि र^६ पृच्छि रुपमनि^७ कँह राजा^८, कइसे उबरहु^९ धिय।६
 को र^{१०} राम जैं रावन मारा, सिय लाग^{११} हन जिय ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-धाय। २-उबह। ३-देखै। ४-दोसर। ५-बैठा। ६-गहवरी। ७-तेतिखन।
 ८-जानहु। ९-जाई। १०-विहरा। ११-जो दैअ। १२-रे। १३-रुपिमिनि।
 १४-X। १५-कैसे उवरी। १६-रे। १७-सीय लागि।

टिप्पणी—(१) धाइ-दौड़कर। हना-मारा।

(२) फुरहीं-निकट। बइठ-बैठा।

(३) घभरी-(घबड़ी) घबड़ायी। ततखन-तत्क्षण। परिहरी-छोड़ा; त्यागा।

(४) गिय-कण्ठ। लै लाये-लगाया। जननि-माता। जाये-जन्म दिया।

(५) नौ-नया। फिरै-बिगड़ा हुआ। काज-कार्य।

(६) उबरहु-उद्धार हुआ।

(७) जैं-जिसने।

१४१

(दिल्ली; एकडला)

कहसि राम यह देखहु आही। मारिसि दइत विधौंससि^१ ताही ॥१
 राजें गिय लाइ दइ पाना। देखसि खतरी सूर^२ कराँना ॥२
 राजा कुँवरिहि पृछइ^३ चाहा। जानहु कुँवरि^४ कउन यह^५ (आहा) ॥३
 कुँवरि कहा हम सँउ^६ बड़वारू। सूरजवंस^७ परस^८ सँयसारू ॥४
 यहि^९ कर पिता राउ^{१०} बड़ आही। चन्द्रागिरिपति बोलहिं ताही ॥५
 देवराइ^{११} मन अस कहा अपुनै^{१२}, अब यहि जाइ^{१३} न देंउ।६
 पूत नाहीं घर मोरें सन्तति^{१४}, (धिय)^{१५} पलटि कै लेंउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-दवित विधौंससि। २-लाय दै। ३-देखिसि खत्री। ४-पृछै। ५-कोरे। ६-
 कउन एह। ७-सौं। ८-सुरुजवंस। ९-संसारु। १०-एहि। ११-राव। १२-
 देवराए। १३-X। १४-जाए। १५-X। १६-(दि०) जिउ।

टिप्पणी—(१) विधौंससि-विध्वंस किया। पाना-पान। सूर-वीर।

(७) पूत-पुत्र।

१४२

(दिल्ली; एकडला)

कहसि कुँवर तुम्ह^१ जोग उतारहु। जोग तन्त वैसन्दर जारहु ॥१
 आधा राजपाट तोहि^२ देऊं। जगत जोति पलटि कै लेऊं ॥२

तूँ राजा राजन्हि बड़ आही। हौँ जोगी मोंकह का चाही ॥३
 जोगी राजपाट का करई। कड़े भोग भोग मन धरही ॥४
 जोगी जबलगि सिध न होई। आसन मारि ना बइठै सोई ॥५
 गोरखपन्थ न पावों जब लगि, जोग न मोको काउ।६
 जोगी जंगम बापुरा, ना हम लाउ नसाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-कहिसि। २-तोह। ३-तोह। ४-हाही। ५-गाड़े होए जोग। ६-बैस नहि।
 ७-मुकौ। ८-लाव नसाव।

टिप्पणी—(१) जोग तन्त-योग साधना। बैसन्दर—(सं० वैश्वानर > प्रा० बइसाणर,
 बइसाणर > वैसाँदर) अग्नि; आग। जारहु—जलाओ।

(७) बापुरा—दीन; असहाय।

१४३

(दिल्ली; एकडला)

राजें जोगी बहु फुसलावा। कैसहिँ मान न वह बउरावा ॥१
 तो राजहिँ रिस मन मँह लागी। बाहों भकसी जाहु न भागी ॥२
 अस कै तिह रखवारी लाऊँ। जाहि न निकस जहाँ वं ठाऊँ ॥३
 कुँवर कहा यह भई मँदाई। जो अस करै काह कै जाई ॥४
 अब सो मन्त्र करों जिय अपनैँ। तिह रिस जानों न देखी सपनैँ ॥५
 अब तो हाथ परा पाथर तर, कर कर काड़े जाइ ॥६
 मन्त्र इहै अब मोरें जिय, मानों कहै जो यह राइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-उसलावा। २-कैसेहु। ३-बौरावा। ४-रिसि। ५-भसकी। ६-तोह। ७-रख-
 वारे लावों। ८-चाहन सुनसि। ९-उहि। १०-एह भएव। ११-कहा। १२-
 तेहि रस जाव। १३-देखिअ। १४-कादीअ जाए। १५-यहै। १६-X। १७-
 X। १८-राए।

टिप्पणी (१) फुसलावा—बहकाया।

(२) रिस—गुस्ता; क्रोध। बाहों—जकड़ दूँ। भकसी—कारागार, जेल।

(३) मँदाई—बुरी बात। काह—क्या। कै—किया। जाई—जायेगा।

(६) पाथर—पत्थर। तर—नीचे।

१४४

(दिल्ली; एकडला)

अब जो यहि कर कहा न मानों। मूरख कहइओं मन्त्र न जानों ॥१
 दिन दस रहउँ चाह फिरि लेऊँ। लइँ कै चाह बाट पगु देऊँ ॥२

कहिसि राई तुम आयसु^१ जोई । जो मानसा चित पुरवहु सोई^२ ॥३
मुहि^३ का जो गति^४ मेटै पावौं । कहैं तुम्हार^५ जोग उतारौं ॥४
जोग क साज आहा^६ सो उतारा । जोग तन्त वैसन्दर जारा ॥५

कापर सेत आन पहिरायहि^७, निकसेउ^८ रूप अपार । ६
[बाहि के]^९ हाथी अंबारी, कुँवर कान्ह असवार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-एकर । २-कहिओं । ३-रहौं । ४-लै । ५-जगु । ६-कहिसि राए तोह आएस ।
७-जो आयेस हौं मानौं सोई । ८-मोहि । ९-गत । १०-तोहारे । ११-अहा ।
१२-पहिरावा । १३-निकसा । १४-हाथी वाही ।

टिप्पणी—(१) कहइओं—कहलाउंगा ।

(२) मनसा—इच्छा; विचार । पुरवहु—पूर्ण करो ।

(६) कापर—कपड़ा । सेत—स्वेत ।

(७) अंबारी—हौदा; हाथीपर बैठनेकी व्यवस्था; असवार—सवार ।

१४५

(दिल्ली)

लोग नगर सब देखै धावा । रावन मार सिय लै आवा ॥१
यहै राम जैं मारेउ बारी । इहै कन्ह जैं नाँथसि कारी ॥२
इहै राम जैं रावन मारा । इहै कन्ह जैं कंस वितारा ॥३
इहै भीम कर कीचक मारी । इहै दुसासन भुजा उपारी ॥४
इहै सिंह हरनाकुस हनाँ । धन सो जननी जैं यह जनाँ ॥५

लोग फूल भू पर ऊपर पूजैं कुँवर कै, अखत फूल तँबोल । ६

धन धन जननी रात सपूरन, जिह यह भयउ अमोल ॥७

टिप्पणी—(२) बारी—वाली; सुग्रीवका भाई । कन्ह—कृष्ण । नाँथसि—नाथा; रस्ती
लगाकर बाँधा । कारी—कालिया नाग ।

(३) वितारा—फाड़ा ।

(४) दुसासन—दुःशासन, जिसने द्रौपदीका चीर खींचनेका प्रयत्न किया था ।

(५) सिंह—नृसिंह । हरनाकुस—हिरण्यकश्यप । जनाँ—जन्म दिया ।

(६) अखत—अक्षत ।

१४६

(दिल्ली; एकडला)

चाँद अमावसु के घर बसा । सुरज साथ आइ^१ परगसा ॥१
लोग कुटुँब सब आगें आये । देखहि^२ चाँद अंकों ले^३ लाये ॥२
लोग^४ कुटुँब गा मँदिर^५ भरी । रुपमनि^६ जानु आजु औतारी ॥३

बहुत बधाई दसगुन कीही । बहुत निछावर^१ दुहुँ लग दीही^२ ॥४
घोर^३ पटोर सोन बहु रूपा । दाम दीन्हि अगिनित^४ भरि कृपा ॥५
जस निरास आवत हा^५ राजा, अस न हो^६ जग कोउ ।
जइस^७ आस उन्ह^८ पूजी जियकै^९ अस^{१०} जो होउ^{११} तो होउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-आए । २-देवी । ३-आँकौ गिय । ४-लोगन्ह । ५-मँदिर गा । ६-रुपिमिनी
७-निछावरि । ८-(दि०) कीही; (दि० मार्जिन) दीही । ९-राज । १०-अंगत ।
११-हुत । १२-होए । १३-जैस । १४-उहि । १५-X । १६-अँस । १७-होए ।

टिप्पणी—(२) अँकौं-अंकमें ।

(५) घोर-घोड़ा । पटोर-पटोल अथवा पाटोला नामक वस्त्र; यहाँ सामान्य रूपसे वस्त्रके अर्थमें प्रयुक्त हुआ है । सोन-सोना । रूपा-चाँदी । दाम-ताँबेका सिक्का । सिक्केके इस नामके सम्बन्धमें सामान्य धारणा रही है कि उसे पहले पहल अकबरने प्रचलित किया था । इस कारण अमीर खुसरोके खालिक बारीमें 'दाम' के उल्लेखके प्रमाणसे विद्वानोंने उसे अकबर काल अथवा उसके पश्चात्की रचना सिद्ध करनेकी चेष्टा की है । किन्तु यह नाम अकबरसे पूर्व भी प्रचलित था यह इस उल्लेखसे तो स्पष्ट है ही । इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजीके टकसालके टकसाली ठक्कुर फेरुने अपने द्रव्य परीक्षा-में और मौलाना दाउदने अपने चन्दायनमें इसका उल्लेख किया है । द्रव्य परीक्षाके अनुसार चाँदीका एक टंक ६० दामके बराबर होता था । अकबरके समयमें रुपयेका मूल्य ४० दाम था । आइने-अकबरीसे ज्ञात होता है कि उस समय चाँदी-सोनेके सिक्कोंके बावजूद राज्यका सारा हिसाब-किताब दामोंमें ही रखा जाता था । चन्दायन तथा प्रस्तुत उल्लेखसे यह झलकता है कि दिल्ली मुलतानोंके समयमें भी लेन-देन और व्यवहारमें दामका ही अधिक प्रचलन था । कृपा-कुप्पा; चमड़ेका बना पात्र ।

१४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राजै^१ कै जिय अनन्द बधाई । कुँवर कै जिय^२ वह^३ चिन्त^४ न जाई ॥१
मनमहँ डरै हँसै औ^५ बोला । हियेँ आगि जनु^६ परिह^७ भँभूला^८ ॥२
आगि क^९ औखद^{१०} सबको^{११} जाना । यह न मूर औखद कछु माना^{१२} ॥३
अउर^{१३} आगि जल सींचि बुझाई । यह न बुझाई समुँद^{१४} लै जाई ॥४
सँमुदौ^{१५} जरै^{१६} गगन सब जरा । औ वासुकि^{१७} जरत ऊवरा^{१८} ॥५
भावता^{१९} नहि मँटी^{२०}, उठी^{२१} जो नख नख^{२२} आग ।
वसुधा जरै^{२३} न उवरै, आगि विरह कै^{२४} लाग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) राजा । २-(बी०) चित । ३-(ए०) उवह; (बी०) × । ४-(ए०) चीत; (बी) चिता । ५-(ए०) मोहि तो डर हँसि; (बी०) मुँह तो डरहि हँसे और । ६-(ए०) जनि; (बी०) जरि । ७-(ए०, बी०) परहि । ८-(ए०, बी०) मभोला । ९-(ए०) कै । १०-(ए०) औखध; (बी०) ओषद । ११-(ए०, बी०) कोइ । १२-(ए०) एह न को रे औखध कै माना; (बी०) यह रे मूरि ओषद न माना । १३-(ए०, बी०) और । १४-(बी०) जौ समंद । १५-समंद । १६-(ए०) जरी; (बी०) जरा । १७-(बी०) वासुक । १८-(ए०, बी०) उवारा । १९-(ए०, बी०) भावन्ता । २०-(ए०, बी०) मेंटिए । २१-(बी०) उठइ । २२-(ए०, बी०) २३-(बी०) वासुक सिख । जरा । २४-(ए०) की; (बी०) जो ।

टिप्पणी—(१) चिन्त-चिन्ता ।

- (२) परिह-पड़ा । भभूला-राख ।
 (३) औखद-औषधि । मूर-जड़ी ।
 (४) वासुकि-सर्प । ऊवरा-निकला; वचा ।
 (६) भावता-भवितव्य; भावी ।

१४८

(दिल्ली; बीकानेर)

राजा कहि यह गुन परिताऊँ । गुन परिताइ मरम तो पाऊँ ॥१
 राजपूत जो साँचहि होई । लखन बतीसों होईहि सोई ॥२
 बड़ निहोरों र सतुर उदारी । तेवरी खेलें बहुत जुवारी ॥३
 चौपर दाम तेवर भल खेला । नकटा सोरही बृझइ मेला ॥४
 बुधि सागर खेलै चौपखी । औ खेल जानै दोपखी ॥५
 खेलसि खेल सपूरन कुँवरहि, देखी सवै खेलाइ ॥६
 राजें कहा और गुन बृझउँ, तो हम जिउ पतियाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-कहा २-अव । ३-परताऊँ । ४-परताइ । ५-सव । ६-गुन संपूरन । ७-
 तिवरी आनि दूसरी डारी । ८-चौपरि राखि तिवरी । ९-सुकटा । १०-बृझै ।
 ११-सगर । १२-चौबधी । १३-और । १४-खैलै । १५-दुवधी । १६-× ।
 १७-देखसि । १८-खिलाइ । २९-पूछों ।

टिप्पणी—(१) गुन-गुण । परिताऊँ-परीक्षा लें; जाँच करँ । परिताइ-जाँचकर ।

मरम-मर्म; भेद ।

- (३) बड़-बहुत । निहोरों-उपकार; एहसान । सतुर-शत्रु । उदारी-फाड़ डाला ।
 तेवरी-जुआ ।

- (४) चौपड़-चौसर; पाँसोंसे खेला जानेवाला जुआ । दाम-सम्भवतः जुएका कोई रूप । तेवर-जुआ । नकटा-जुएका सम्भवतः कोई भेद । यह नाम हमारे सुनने-में नहीं आया है । सोरही-सोलह कौड़ियोंसे खेला जानेवाला प्रसिद्ध जुआ ।
 (५) चौपखी-चौपड़ खेलनेका एक ढंग ।^१ दोपखी-चौपड़ खेलनेका एक ढंग ।^१
 (७) पत्तियाइ-विश्वास आये ।

१४९

(दिल्ली; बीकानेर)

हेंगुरि^१ खेलै भये^२ असवारा । हाल गहसि^३ गोटा^४ भल मारा ॥१
 रोपहिं^५ बेंझ अँबिलि कर पानाँ । मारसि^६ पहिलहिं चूक न^७ जाना ॥२
 राजा कहा^{१०} अहेरें जाई । साउज^{११} मारि खेल फुर^{१२} आई ॥३
 साउज उठे लोग सब धावा । कुँवरहि बहुत कर पावा^{१३} ॥४
 पुनि केसरि एक उठेउ अहेरें । मारसि वान राख मूँठ बहुतेरे^{१५} ॥५
 राजा मनहि मन रसहा अपने, दई दीन्ह हम^{१६} पूत ।६
 जस चाहेउ^{१७} तस पायेउं वारक^{१८}, यह उत्तिम जम जूत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-हेंगुरी । २-भा । ३-किहेसि । ४-गोई । ५-रोप । ६-अँबिली । ७-मारिसि ।
 ८-पहलै । ९-चूकि नहिं । १०-कहा अब । ११-सावज । १२-घर । १३-जाइ
 अहेरें खेलै कहा । कुँवर वान गुन पारधी अहा ॥ १४-पुनि केहरि उठेउ तेहि
 वन हीं । मारिसि वान राखि मूँड माँही । १५-दइव दिहा मोहि । १६-जसरे
 चहेउं । १७-बर । १८ काह और ।

टिप्पणी—(१) हेंगुरि-चौगान । हाल-चौगानके मैदानके अन्तमें बने हुए गुमटी-
 नुमा दो खम्भे जिनके बीचसे गेंद निकाली जाती है । खेलोंके आधुनिक
 शब्दावलीमें गोल । गोटा-गोला; गेंद ।

(२) बेंझ-(सं० वेध्य) लक्ष्य । अँबिली-इमली । पानाँ-पत्ती ।

(५) केसरि-(केसरी) सिंह ।

(७) वारक-वालक ।

१५०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पूछसि^१ पढ़ै गुने कछु^२ जाना । खट भाखा जो सपूरन माना^३ ॥१
 सहस पढ़ा औ अरथ पचास क^४ । सूर सरन माकर चौरास क^५ ॥२
 भारथ पिंगल^६ अमरु^७ जानाँ^८ । अरथ कहै^९ संगीत वखाना^{१०} ॥३
 सालहुत्र^{११} औ कोक पढ़ाई । पाठक पढ़ै^{१२} न एकौ जाई ॥४
 घरी धरै फल^{१३} सगुन विचारा । कहि^{१४} कथा^{१५} आरचा अपारा ॥५

१. श्री रामचन्द्र वर्मासे प्राप्त सूचनाके अनुसार ।

तिरिया चरित वेद(१)गम^{११} जाने, औ अति सरबंग जान^{१०} ॥६
गुन गन्ध्रप जानै बहु^{१८} विद्या, दस और चारि निदान ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए० बी०) पृच्छिसि । २—(बी०) तुम । ३—(बी०) आना । ४—(ए०) सहस
पदा औ आह वजासक; (बी०) सहस परकीरती आठ पाँच सक । ५—(ए०)
सुरसर नाम कली चौरासक; (बी०) सुरसर नीर माँधक चौर संक । ६—(बी०)
खांगल । ७—(ए०) अमरौ; (बी०) अमरौती । ८—(ए०) जाने । ९—(बी०) कहै
अरथ औ । १०—(ए०) बखाने । ११—(ए०) साधोतर, (बी०) सालहोत्र । १२—
(बी०) पदइ । १३—(ए०, बी०) भल । १४—(बी०) कहै । १५—(ए०) कासथा ।
१६—(बी०) वैद गुन । १७—(बी०) औ संगीत सर्वगुन जान । १८—(ए०) सब ।
१९—(बी०) विधि ।

टिप्पणी—(१) खट भाखा—पट् भाषा । भिखारीदासने पट्भाषाका उल्लेख इस प्रकार
किया है—ब्रज मागधी मिलै अमर नाग, यवन भाखानि । सहज पारसीहू
मिले षठ विधि कहत बखानि ॥ इसके अनुसार (१) ब्रज (२) मागधी (३)
अमर (४) नागर (५) यवन और (६) पारसी की गणना पट्भाषा में होती
थी । यहाँ अमर से सम्भवतः संस्कृत का, नागर से अपभ्रंश का और यवन से
अरबी का तात्पर्य है ।

(३) भारत—महाभारत । पिंगल—छन्दशास्त्र । अमरू—अमरूशतक; संस्कृतका
एक प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ ।

(४) सालहुत्र—(शालहोत्र) अश्वशास्त्र । कोक—कोकशास्त्र; कामशास्त्र ।

१५१

(दिल्ली; बीकानेर)

राजै^१ बूझि देखि मन मँतरी^१ । एक कुल सुद्ध^१ रूपवन्त जो खतरी ॥१
साचहि^१ राजवंस^१ है कोई । विन सुवंस कुलवन्त^१ न होई ॥२
राजा कहहि^१ अब करों वियाह^१ । जाति न पूछहु कहो कछु^१ काह ॥३
राजा चीत^{१०} वियाह क^{११} लागा । कुँवर हूँदि पँथ चाहै^{११} भागा ॥४
मनकै^{११} बात न काह कहरई । जोगी जंगम पूछत रहई ॥५

अहिनिंसि झुरवइ साँस लइ^{११}, दर्ई^{११} सनाँ^{१०} अस माँग ॥६

क्रितघन कोउ न जिह कहै^{१८} वाचा मोर न^{११} खाँग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—राजा । २—मंत्रा । ३—एक सुवेध । ४—साँचेहु । ५—राजवंसी । ६—विनु सुवास
गुन बात । ७—कहै । ८—वियाहा । ९—पूछों है दहु । १०—चित । ११—कै ।
१२—हूँदै । १३—चहै । १४—मन की । १५—लेर । १६—दइव । १७—से । १८—
क्रितघन कोई कहई । १९—न मोरि ।

टिप्पणी—(१) मँतरी—विचार किया ।

- (३) बियाहू-विवाह ।
 (४) चीत-चिन्ता । लागा-लगा ।
 (६) अहिनिसि-(अहर्निशि) रातदिन । सनाँ-से ।

१५२

(दिल्ली; बीकानेर)

पसरा काज' बियाहू काँ आवा' । नेउता लोग देस सब आवा' ॥१
 जाचक जन मँगता बहु आये । भाट कपरिया सुन के धाये' ॥२
 होइ लाग जेउनार अपारा । जेवन कहँ सब लोग हँकारा' ॥३
 छीपर नेत पटोर विछाई' । पातिह पाँति जोरि' बैठाई' ॥४
 जेवन जीह' भई जेवनारा' ॥५ । करु खट पँचाविरित अहारा' ॥५
 फीका मीठा लोन कर खट्टा, अहा कसैला ईत' ॥६
 खीर दहिऊँ घिउ माँस और अन्न, आप पाँचों अँब्रीत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

- १-काजु । २-गनावै । ३-देसकर आवै । ४-होई लगी ज्योनार अपारा । विजन चारि छतीसौ परकारा ॥ ५-बावन पूरि हौंड़ी चौरासी । बहु संधान पकवान गरासी ॥ ६-ओबरी लीपि पटोर विछाये । ७-लोग । ८-बैसाये । ९-जेवहिं । १०-ज्योनारा । ११-खटरस पंचम अँब्रित परकारा; (दि० मारिजिन) खटरस अँब्रित मये अहारा । १२-मीठा, फीका लोना, खटा, कसैला, तीत । १३-खीर दही पसमसौर, औ सब पंच अँब्रीत ।

टिप्पणी—(१) पसरा-फैला । नेउता-निमन्त्रण ।

- (२) जाचक-याचक; याचना करनेवाले । मँगता-भीख माँगनेवाले ।
 (३) जेउनार-ज्योनार; दावत । जेवन-भोजन ।
 (४) छीपर-छपा हुआ । नेत-(सं० नेत्र) बटे हुए सूतका बना वस्त्र । खीरस्वामी के कथनानुसार यह जटांशुक है । महीन रेशमी वस्त्र भी नेत्र कहा जाता था पर यहाँ उससे तात्पर्य नहीं है । पटोर-एक प्रकारका वस्त्र; पटोल अथवा पटोला ।
 (५) करु-कटु । खट-खट्टा । पँचाविरित-पंचामृत ।
 (६) लोन-नमक ।
 (७) दहिऊँ-दही । घीउ-घी । अँब्रीत-अमृत ।

१५३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जेइ भौंजि के' खरीका लेई' । हाथ पखारि पान फुनि देई' ॥१
 लोग बहोरा' बाँभन आये । लइके' मँडये तर बैठाये ॥२
 जो कछु' राजन्हि' केँ चलि आई । लागि करै सब जनै बधाई' ॥३

सोन सिंघासन छात^१ सँवारा । मुकट^२ बाँधि^३ कुँवर बैठारा ॥४
रुपमनि^४ कर^५ जैमारा^६ गही^७ । आनि कुँवर सिर ऊपर दिही ॥५
बाँभन वेद भनहि जो^{१०} कुँवर कँह^{११}; बारी^{१२} रुपमनि^{१३} लाइ^{१४} । ६
पत्री^{१५} जनम देखि गुन^{१६} बोलहि^{१७}, सौति साथ जम जाइ^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) कर । २-(ए०) किए; (बी०) लिये । ३-(बी०) दिये; (ए०) पानि पियावा ।
४-(बी०) बहोहे । ५-(ए०; बी०) लैके । ६-जे किछु । ७-राजहु । ८-(ए०) लागे
करै सब जेत बड़ाई; (बी०) लगे करै सब रीति बड़ाई । ९-(बी०) छत्र । १०-
(ए०) मटुक । ११-(बी०) बाँधि कै । १२-(ए०, बी०) बैसारा । १३-(ए०)
रुपमनि; (बी०) रुकमिनि । १४-(ए०) के । १५-(बी०) जै माला; (ए०) जपमाला ।
१६-(ए०) किही । १७-(ए) × । १८-(ए०) कुँवरहि । १९-(ए०) बारहि; (बी०)
बरी । २०-(ए०) रुपिमनि; (बी०) रुकमिनि । २१-(ए०) लाए; (बी०) लाय ।
२२-(ए०) पतरी । २३-(ए०) गनि । २४-(ए०) × २५-(ए०) जाए ।

टिप्पणी—(१) जंइ भोजि-खापीकर । खरिका-दाँत साफ करनेका तिनका ।
पखारि-धोकर ।

(२) बहोरा-गाये । बाँभन-ब्राह्मण । लइके-लाकर । मँइये-मण्डप । तर-नीचे ।
(५) जैमारा-जयमाल । आनि-लाकर ।

१५४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कोई^१ अस कहा कुँवर ह्य राँधा । गाँठि बोल बाँभन कर^२ बाँधा ॥१
भाखा काम कुराल^३ कै^४ लीजै । जामघर कूचा जो कीजै^५ ॥२
यह तो पण्डित आह सयानाँ । पोथा अरथ बाँच सब^६ जानाँ ॥३
मकु साखा^७ पुरवइ^८ करतारा । कथा^९ पेम^{१०} रहै सँयसारा^{११} ॥४
गाँठि^{१२} जोरि कै भँवरी^{१३} दीही । रीत-चार कुल अही^{१४} सो^{१५} कीही ॥५
दाइज अस कै दीन्ह^{१६}, जग^{१७} अइस^{१८} न दीनहि^{१९} काहु । ६
आधा राजपाट भँडारो^{२०}, वरिस सहस दस खाहु^{२१} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) एअ; (बी०) येइ । २-(ए०) कै । ३-(बी०) करील । ४-(ए०) क;
(बी०) की । ५-(ए०) जानो घर कुजा जो कीजै; (बी०) जयुक ओखर कुच जो गनी-
जै । ६-(ए०) पोथी माझ देख तो जाना; (बी०) पोथी बाँच देख भल जाना ।
७-(ए०) मकु साका; (बी०) जाकहु अस । ८-(ए०, बी०) पुरवै । ९-एक सथा ।
१०-(बी०) नेह । ११-(ए०) संसार; (बी०) सँसारा । १२-(ए०, बी०) गाँठी ।
१३-(ए०) अवरी; (बी०) भँवर । १४-(बी०) आहि । १५-(बी०) सू । १६-

(ए०) दीन्हीं; (बी०) दीतसि । १७-ए० ×; (बी०) जग मँह । १८-(ए०) ऐस;
(बी०) अस । १९-(ए०) दीन्हेध । २०-(ए०,बी०) मंडार । २१-(ए०) खाहि ।
टिप्पणी—(५) भँवरी-भँवरी;फेरा ।

(६) दाइज-दहेज ।

१५५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मँदिर सँवारि^१ सेज बिछाई^२ । दूनों जनें^३ बइठे (तिहँ^४) जाई^५ ॥१
कुँवर न रावइ^६ मनमँह रोवसि^७ । सँवरै^८ तिहँ^९ जो^{१०} हाथसै^{११} खोयसि^{१२} ॥२
कुँवर कहा यह बुधि कछु^{१३} नाही । बार्तिह^{१४} भुरउ जिहँ^{१५} पतियाही^{१६} ॥३
वात जो कर कर कीजइ^{१७} सोई । वरु सेउ^{१८} कीजइ^{१९} नेह न होई ॥४
हों तो बरिसिक^{२०} बातहि^{२१} राखों । तिरिया चरित^{२२} सखिन^{२३} सेउ^{२४} भाखों ॥५
असकै यह बार्तिहँ^{२५} बोरावों, यह जानै मोहि^{२६} चाह ॥६
कँवल जान रस बिधा^{२७} भँवरा^{२८}, भँवर चलै^{२९} उड़ि ताह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) सँवारि जो; (बी०) सँवरिके । २-(बी०) × । ३-(ए०) जन । ४-(ए०)
तहँ । ५-(बी०) दुवौ सेज पर बैसे जाई । ६-(ए०) रावै; (बी०) × । ७-
(ए०,बी०) रोइसि । ८-(ए०) सौरि; (बी०) सौरिसि । ९-(ए०,बी०) तेहि । १०-
(ए० बी०) जेहि । ११-(बी०) सों । १२-(ए०,बी०) खोइसि । १३-(ए०) कुछु,
(बी०) किछु । १४-(ए०) वातन्ह भोरवों जें; (बी०) वातन भोरँऊ जेहि । १५-
पतियाई । १६-(ए०) कीजै । (बी०) करियै । १७-(ए०,बी०) वर सों । १८-
(ए०) कीजै; (बी०) किये जो । १९-(ए०,बी०) बरिस एक । २०-(ए०) वातन्ह;
(बी०) वातन । २१-(बी०) चत्र । २२-(ए०) कहहु; (बी०) सिखै । २३-(ए०)
सो; (बी०) से । २४-(ए०) वातन्ह; (बी०) वातन । २५-(बी०) हम । २६-
(ए०; बी०) वेधा । २७-(ए०,बी०) × । २८-(ए०) भौर जाय; (बी०) जाय भौर ।

टिप्पणी—(१) दूनों-दोनों । जनै-व्यक्ति ।

(३) भुरउ-भुलवा दूँ ।

(५) बरिसिक-(बरिस इक) एक वर्ष ।

१५६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर रसारस वात सँचारी^१ । कहसि^२ सुनहु तुम^३ प्रानअधारी ॥१
वहि^४ सों मैं^५ तों^६ दसगुन^७ पाई । अब चितमन लागेउ तिहँ^८ धाई ॥२

१. एकडला और बीकानेर प्रतिमें पंक्ति ४,५ क्रमशः ५ और ४ है ।

अंबली दूँदत हों [इन्ह] आवाँ । पायउँ आँव जइस'० मन भावा ॥३
 चाहत भर'१ अहारै'२ पायउँ । भाग हमार जो ईहाँ'३ आयउँ ॥४
 तिह'४ अस तिरि'५ न देखेउ काऊ । जिउ'६ आपु'७ लागि करौं बहु चाऊ ॥५
 वार्तिह'८ अस बोरायसि'९ भोरयसि'१० कुँवरि जानु कहि'११ साच । ६
 मन कपठी मुँह भीतर भोरा'१२, चित र'१३ तहाँ जिह राच ॥७

पाठान्तर—एकडला, और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) सभारा । २—(ए०, बी०) कहिसि । ३—(ए०) तोह । ४—(ए०) उहि ।
 ५—(बी०) × । ६—(ए०) तुह; (बी०) तुमैं । ७—दस गुनी । ८—(ए०) तोहि
 लागेव; (बी०) लागेव तोहि । ९—(बी०) अंबिली दूँदत में इह ठाँ आयेउँ । १०—
 (ए०; बी०) जैस । ११—(ए०) फुर रे; (बी०) फर । १२—(ए०, बी०) सोहारी ।
 १३—(ए०, बी०) एहि ठाँ । १४—(ए०, बी०) तोहि । (बी०) त्रिया । १६—(बी०)
 जी । १७—(ए० बी०) अव । १८—(बी०) वातन; (ए०) वातन्ह । १९—(ए०,
 बी०) बोराइसि । २०—(ए०, बी०) × । २१—(ए०) जान कह; (बी०) जान
 कहत है । २२—(बी०) सूधा । २३—(ए०, बी०) रे ।

टिप्पणी—(३) अंबली—इमली । आँव—आम ।

(६) बोरायसि—बहकाया । भोरयसि—मुलावा दिया ।

१५७

(दिल्ली; बीकानेर)

खेलि गई निसि भा भिनुसारा' । कुँवर करै असनान सिधारा ॥१
 कइ असना[न] पहिराइहँ बागा । पान हाथ लै चला (सुभागा') ॥२
 सभा जाइ कै बइठ सुजानाँ । जस' उजिआर चाँद' जग मानाँ ॥३
 कुँवर गैं बैठे सभा सँवारी । राजपूत भल रूप मुरारी' ॥४
 धरमसाल' एक कहसि'० उचावहु । पन्थी आवत'१ पानि पियावहु ॥५
 जोगी जंगम तपसी जती'२ सन्यासी [जो] आउ'३ । ६
 जो र आउ इँह ठाँई'४, भोजन सब कोउ पाउ'५ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—भुनिसारा । २—फिराइसि । ३—सभागा । ४—जस रे । ५—चदँ ६—माना । ७—
 के । ८—मुरारी । ९—धर्मसाल । १०—कहिसि । ११—आवन्हि तिन्ह । १२—जोगी
 जगी तपसी जंगम । १३—आव । १४—जो रे आवै इहि ठाँव । १५—केउ पाव ।

टिप्पणी—(१) असनान—स्नान ।

(२) बागा—वख्र ।

(४) गैं—जाकर ।

१५८

(दिल्ली; बीकानेर)

धरमसार' एक नीक उचावा । जोगी जंगम पन्थी' आवा ॥१
 पुन्न धरमसारे कर लेई । बहु भोजन' सब कहँ वह' देई ॥२
 जोगी जती सन्यासी' आवा । देस देस कर' पूछै भावा ॥३
 गोंठ करै उँह वैठा टाँऊ' । कनकनगर कै पूछै नाऊँ ॥४
 निहचों' चाहि' न कोई' कहई । पीर हियें कहँ चित मँह रहई' ॥५
 धरम मानते रुपमनि कै टाँई, मँहि उँहँ कहि बोराउ' ॥६
 चित मुरकाइ' पौन सँग देतेसि, चाँद लीन्ह उड़ाउ ॥७

पटान्तर—बीकानेर प्रति—

१-धर्मसाल । २-पन्थी जो । ३-सब । ४-भोजन पाव । ५-× । ६-सन्यासी जो । ७-के । ८-गोस्टी कै बैठे उहि ठाँऊ । ९-कर पूछै । १०-निस्चै । ११-चाह । १२-कोऊ । १३-पीर हियें गहि कैसे रहई । १४-धर माँटी रुकुमिनिके ठाँऊ, मुँह बातनि बोराइ । १५-मुकरावै । १६-× । १७-दिस्टि चन्द पंथ जाइ ।

टिप्पणी—(१) नीक-अच्छा ।

(२) पुन्न-पुण्य ।

(४) गोंठ-गोष्ठी । कनकनगर-कंचनपुर ।

(५) निहचों-निश्चय । चाहि-जानकारी ।

१५९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कै गियान' रुपमनि' चित गुना' । कुँवर क' मन नाहीं' हम सना ॥१
 मुँह बातहिँ' हमकहँ बोरावइ' । चित अनतें' अधरन' फुसलावइ' ॥२
 लइ खटवाटि परी वहि' रानी । कुँवर सुनाँ वहि जिय' सुखानी ॥३
 सभा बटोरि' मंदिर' मँह आवा । देखत फिरकै' अनों चलावा ॥४
 औ खटवाटि पाटि' लै परी । कुँवर देखि चिर मँह रिस चढ़ी ॥५
 तपसप सै' रुपमनि' रोई', घर' कुँवर' गहा जो' चीर । ६
 उर फाटै कँह' चाहै, खिनक न बाँधे धीर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) गोआन । २-(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि । ३-(बी०) अपना । ४-(बी०) कर । ५-(बी०) नहीं । ६-(बी०) बातन; (ए०) बातन्ह । ७-बौरावै । ८-(बी०) अनत । ९-(ए०) धर इह; (बी०) धर हम । १०-(बी०) फुसलावै; (ए०) फुसलावै । ११-(ए०) उवह; (बी०) वह । १२-(ए०, बी०) मुँह जीम । १३-(ए०, बी०) बहौरि । १४-(बी०) महल । १५-(बी०) कुँवर कहँ । १६-

(ए०, बी०) पाटी । १७-(ए०, बी०) निससै । १८-(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि । १९-(ए०, बी०) रोवै । २०-(ए०, बी०) × । २१-(ए०) कुँवर क । २२-(बी०) जो खोंचा । २३-(बी०) चहे बरि ।

टिप्पणी—(१) गियान-ज्ञान । नहिं-नहीं । सना-अनुरक्त ।

(२) बनतै-अन्यत्र ।

(३) खटवाटि-(सं० खट्वपट्टिका > खटपट्टिआ > खटपाटी > खटवाटी) मान करके बिना कुछ खाये-पीये खाटकी पट्टी पकड़कर पड़े रहना ।

(४) बटोरि-विस्तृत करके ।

(५) रिस-क्रोध ।

१६०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा कस रोवहु नारी । तुम्ह हौ मोरी प्राण अधारी ॥१
मैं अपनै जिउ तुम्ह कह लावा । तुम्ह छाड़ै मुहि और न भावा ॥२
तुम्ह लाग मैं जिउ बरछेवा । भंवर मरै पै छाड़ि न केवा ॥३
हौ परदेसी आह भिखारी । तुम्ह न करहु मुहि पर जिउभारी ॥४
कहिसि कुँवरि हम सँउ चतुराई । जो र चरायहु तै हम काई ॥५
धूतचार हौ बूझौ, औ कछु कछु चतुराइ ॥६
धर तुम्हार यहि ठाँई आहँ, चित मन अन्त उड़ाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) बारी । २-(दि०) मोपत; (ए०) तोह हुत मोरी; (दि० मज्जिन) तुम हो । ३-(ए०) मैं अब चितमन तोह कह लावा; (बी०) अब चित मन मैं तोहि मिलावा । ४-(ए०, बी०) तोहि छाड़ि । ५-(ए०, बी०) मोहि । ६-(ए०) तोहहीं; (बी०) तोहि । ७-(ए०, बी०) लागि । ८-(बी०) जी । ९-(ए०, बी०) परछेवा । १०-(ए०, बी०) दैअ दीही सिध मारेव देवा; (दि० मज्जिन) दीन दई सिध मारों देवा । ११-(बी०) अहाँ । १२-(ए०) तोहि । १३-(ए०) मोह; (बी०) मोहि । १४-(ए०, बी०) सौं । १५-(ए०) चराएहु; (बी०) परायेहु । १६-(बी०) सो । १७-(ए०, बी०) खाई । १८-(बी०) दूत चरित हौं जानों । १९-(ए०) कुछु कुछु; (बी०) किछु किछु । २०-(बी०) धरा । २१-(ए०) तोहार । २२-(ए०, बी०) × । २३-(ए०) अनतै; (बी०) अनतेहि । २४-(बी०) जाइ ।

टिप्पणी—(३) बरछेवा-अर्पण कर दिया । केवा-कमल ।

(५) चरायहु-बहकाया । काई-को ।

(६) धूतचार-धूर्ताचार ।

१६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहहुँ तो दीप^२ हाथ कर^३ लेऊँ। कै र^४ जगाइ साँप उर^५ देऊँ ॥१
 कहहु तो डाँप^६ कुँवाँ मँह^७ मेलों। तयेंउ^८ जरत पर पाँवहि^९ बेलों^{१०} ॥२
 रुपमनि^{११} मन बहु^{१२} भाँति मनावा। खर उचारि^{१३} कै पान खियावा ॥३
 पान खियाइ^{१४} लै र^{१५} उर लाई। मैं वहि सेउँ^{१६} दसगुन तों^{१७} पाई ॥४
 आप थाप^{१८} कर बाहर आवा। आयसु^{१९} बार बैठि^{२०} इक^{२१} पावा ॥५
 पूछसि कवन देस सों आयहु^{२२}, को^{२३} गोरख को^{२४} खेल^{२५} ॥६
 पुरुखनाथ^{२६} गुरु आह हमारेउ^{२७}; गोरखपुर सेउँ^{२८} खेल^{२९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) कहों। २-(बी०) दीवा। ३-(बी०) कै। ४-(ए०, बी०) रे। ५-(बी०, ए०) कर। ६-(बी०) लेऊँ। ७-(ए०, बी०) डम। ८-(ए०) कुआँ म; (बी०) कुँवर महि। ९-(ए०) मैलौउ। १०-(ए०) तपों; (बी०) चीड ११-(ए०) पाँवन; (बी०) बावन पर। १२-(ए०) मेलोंउ; (बी०) पेलों। १३-(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि। १४-(बी०) एहि। १५-(ए०) घरी चारि; (बी०) घरा चारि। १६-(ए०) खवाइ; (बी०) खियाय। १७-(ए०, बी०) रे। १८-(ए०, बी०) मैं। १९-(ए०) तू; (बी०) तू दसगुनी। २०-(ए०, बी०) कै। २१-(ए०) आएस; (बी०) आयस। २२-(ए०) बैठे कै। २३-(ए०) आएहु; (बी०) से आवा। २४-(बी०) केहि। २५-(बी०) का। २६-(बी०) चेला। २७-(बी०) त्रिखनाथ। २८-(ए०, बी०) हमारे। २९-(ए०, बी०) सों। ३०-(बी०) खेला।

टिप्पणी—(२) मेलों-डालें। तयेंउ-तवा। जरत-जलता हुआ। बेलों-रखें।

(३) खर-खरिका, पानमें खोंसा गया तिनका। उचारि-(क्रि० उचारना) हटाकर।

(५) जाप थाप कर-तुष्ट कर। आयसु-आगन्तुक। बार-द्वार।

(७) खेल-चले।

१६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एह संगाइ^१ जोगिंह^२ कै आई। छाला उठै^३ गुदावरि^४ जाई ॥१
 हों जानों^५ गोरख सँग लगा। को^६ विधि^७ होइ^८ काहकँह^९ भागा ॥२
 कुँवर गोस्टि^{१०} कै पूछी^{११} वाता। कंचनपुर जोजन सै साता ॥३
 यह^{१२} ठाँ^{१३} हुतै अलप^{१४} कछु होई। अन्तर सँमुद एक^{१५} आहे^{१६} कोई ॥४
 तिह सेउ^{१७} कजली वन एक^{१८} आही। अन्धकूप औ^{१९} पन्थ न^{२०} ताही ॥५

चलत चलत पन्थ पैहसि^३, जोहत^४ जो सत सैं जाव^५ ॥६
सत सेउं^६ सतै^७ सँघाती होइह^८, बाघ सिंघ नहिं खाव ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०, बी०) [ब]हु संगधी । २—(ए०, बी०) जोगिन्ह । ३—(ए०) बैठ; (बी०) उठाइ; (दि० मार्जिन) उत्तम । ४—(ए०) गोदावरी; (बी०) गोदावरिन्हि । ५—(दि० मार्जिन) छाई । ६—(ए०) × । ७—(बी०) केहि । ८—(बी०, ए०) सुधि । ९—(ए०) होए; (बी०) होय । १०—(ए०) कह किह; (बी०) कहे को । ११—(ए०, बी०) गोस्टी । १२—(ए०, बी०) पूछै । १३—(ए०) ×; (बी०) एहु । १४—(ए०) ठाहुँ; (बी०) ठाँव । १५—(ए०) ते अधिक; (बी०) से अधिक । १६—(बी०) एक सँमुद । १७—(ए०, बी०) है । १८—(बी०) सोई । १९—(ए०) [-]हि से; (बी०) केहि ठाँव से । २०—(बी०) × । २१—(बी०) और । २२—(बी०) नहिं । २३—(बी०) पायेसि । २३—(ए०, बी०) × । २४—(ए०) जो तैं सत सैं लाव; (बी०) जो तैं सत सैं जाव । २५—(ए०, बी०) सैं । २६—(बी०) सत । २७—(ए०) ×; (बी०) होइहि ।

टिप्पणी—(१) पृह—यहाँ । संगढ—संघटन; समूह । गुदावरि—गोदावरी ।

(२) गोस्टि—गोष्ठि; वार्तालाप । कै—करके ।

(४) ठाँ—स्थान । हुतै—से । अलप—अल्प; थोड़ा । अन्तर—बीचमें ।

(५) कजली बन—वामुदेवशरण अप्रवालका कहना है कि कदलीवनका ही लोकमें कजरीवन हो गया है । महाभारतमें ऋषिकेशसे बद्रिकाश्रमतक का बन प्रदेश कदलीवन कहा गया है (वनपर्व १४६।७५-७९) । किन्तु यहाँ यह किसी वन्यप्रदेश विशेषके लिए प्रयुक्त नहीं जान पड़ता । इसका तात्पर्य ऐसे सघन वनसे है जिसमें प्रकाश कठिनतासे पहुँच पाता है या बिल्कुल नहीं पहुँच पाता । अन्धकूप—घोर अन्धकार ।

(६) पैहसि—पाओगे । जोहत—टटोलते हुए । जाव—जाओगे ।

(७) सतै—सत ही । सँघाती—साथी । होइह—होयेगा । सिंघ—सिंह । खाव—खायेगा ।

१६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा हम कन्या देह । जो कछु^१ चाहहु^२ हम सेउं^३ लेह ॥१
कुँवर आन बहु भिखा देही^४ । जोगी सनाँ^५ साज सब लेही^६ ॥२
कै मिस घर सैं चला अहेरें^७ । खेलै जाइ^८ आन बन मेरें^९ ॥३
खेलत सब सेउं^{१०} बेगर होई । संग मँह मानुस^{११} रहा न कोई ॥४
तुरिय^{१२} छाड़ि कै कापर^{१३} काड़िसि । जोगी भयउं^{१४} भोग फुनि^{१५} छाड़िसी ॥५

आगें^१ जाइ^२ पाहु^३ फिरि देखै, जनि^४ कोउ मानुस^५ आउ । ६
पहुँचा जाइ तीर सायर के, घाट चलै इक^६ नाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) कुछ; (बी०) किछु। २-(बी०) चही। ३-(ए०, बी०) सैं। ४-(ए०, बी०)
भिखेआ दीही। ५-(ए०) सन; (बी०) सैन। ६-(ए०) लीही; (बी०) लिही। ७-
(ए०) जास; (बी०) जाय। ८-(ए०) सैं; (बी०) से। ९-(बी०) मानस।
१०-(ए०) तुरी। ११-(बी०) कपरा। १२-(ए०) भएव; (बी०) भवा।
१४-(ए०) मन; (बी०) पुनि। १५-(ए०, बी०) छाँड़िसि। १६-(बी०) आगू।
१७-(ए०, बी०) चलै। १८-(बी०) पाछे। १९-(ए०, बी०) जनु। २०-(ए०)
मानुस कोइ; (बी०) पाछे कोइ। २१-(ए०) एक।

टिप्पणी—(१) कन्धा—चीथड़ोंसे बना वस्त्र।

(२) भिखा—भिक्षा। सनाँ—से।

(३) मिस—बहाना।

१६४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

साँठ अधारी^१ सेंउं^२ कछु^३ काढ़सि^४ । दइ^५ खेवट कहँ^६ फाँड़^७ जो^८ बाँधसि^९ ॥१
काहिसि^{१०} मोख भल पायउं^{११} जाई^{१२} । अरुझ^{१३} बाँध^{१४} हुत^{१५} दई^{१६} छुड़ाई^{१७} ॥२
पैले पार नाव नै^{१८} लागी^{१९} । मन मँह^{२०} काहि^{२१} भल आयउं^{२२} भागी ॥३
चलत चलत रवि अस्त जो^{२३} होई^{२४} । घन^{२५} कै^{२६} निसि^{२७} भादों छट होई ॥४
पंखि जो^{२८} लघु दीरघ जग^{२९} आहै^{३०} । लइकै^{३१} कोर^{३२} बइठ^{३३} घर रहे ॥५
यहि^{३४} न कोर^{३५} न बैठक^{३६} ; नहि तिल एक जिय^{३७} सुक्ख ॥६
विरह सँताप आगि जरि^{३८} ; नख सिख गहेउ पेम^{३९} कै^{४०} दुक्ख ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) धारी। २-(ए०, बी०) सैं। ३-(ए०, बी०) कुछु। ४-(ए०, बी०)
काहिसि। ५-(ए०, बी०) दे। ६-(ए०) फाँड़ा; (बी०) फेंडए। ७-(बी०) X।
८-(ए०, बी०) बाँधिसि। ९-(बी०) कहेसि। १०-(ए०) पाएव; (बी०) भाव। ११-
(बी०) गुसाई। १२-(बी०) अरुझा। १३-(ए०) छाड़; (बी०) फाँद। १४-(ए०)
हुती; (बी०) हुतै। १५-(ए०) दैअ; (बी०) दैव। १६-(ए०) कह; (बी०) काहिसि।
१७-(ए०) आएव; बी० आयेव। १८-(बी०) थल। १९-(ए०) कहँकै; (बी०)
खन खन। २०-(ए०) पंक जो; (बी०) जो पंक। २१-(बी०) X। २२-(बी०)
रहे। २३-(ए०, बी०) लैके। २४-(बी०) कूर। २५-(ए०) बैठि। २६-(ए०,
बी०) ओहि। २७-(ए०) कोरि। २८-(ए०) नहिं बैसे। २९-(बी०) जिउ।
३०-(ए०) जरी; (बी०) परा। ३१-(बी०) खन खन।

टिप्पणी—(१) साँठ—सुरक्षित धन । अधारी—शोली । काड़सि—निकाला । खेवट—
केवट, मल्लाह, नाविक । फाँड़—कमरमें बँधे वस्त्रका वह भाग जिसमें लोग
रूपया-यैसा रखते हैं ।

(२) मोख—(मोक्ष) छुटकारा । अरुझ—उलझा हुआ । बाँध—बन्धन ।

(३) पैले—परले, दूसरे । गै—गई ।

(५) कोर—(क्रोड) गोद । यहाँ तात्पर्य घोंसलेसे जान पड़ता है ।

१६५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

लोग कुँवर के साथ' जो आहे । कहहिं कुँवर साउज' संग रहे ॥१
पूछत चलहु हम' तिह' जाहीं । कुवरहिं बिलम्ब लागि दहुँ कार्हीं ॥२
दूँदत आए तुरिय' पै पावा । कहहिं कुँवर बाघ' [लै'] खावा ॥३
बाघ सिंघ जो खायेउ होई । चीन्ह न' जाइ पाउ' ये' कोई ॥४
दूँदत' चहु दिशि फिरि के आये । लाग' तँवाये कुँवर नहि पाये ॥५
झुरवत चले सबै' जन, कहहि काह कै लेव' ॥६
देउराइ' जो पूछै' हमको', कवन' उतर हम' देव ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) संग । २—(ए०) सावज । ३—(ए०) हमहिं; (बी०) हमहुँ । ४—(ए०)
तोह; (बी०) तँह । ५—(ए०) तुरी । ६—(ए०) सिंह । ७—(दि०) पाठ स्पष्ट नहीं है;
(बी०) नहीं । ८—(बी०) नहिं । ९—(ए०, बी०) पाव । १०—(ए०, बी०) पै ।
११—(ए०, बी०) दूँदि । १२—(बी०) लोग । १३—(बी०) सब । १४—(ए०) काह गै;
(बी०) कहाँ गै । १५—(ए०) देवराए; (बी०) देवराय । १६—(ए०) पूछिह; (बी०)
पूछिहिं । १७—(ए०) ×; (बी०) हम कहँ । १८—(ए०) काह । १९—(ए०) तो ।

टिप्पणी—(४) चीन्ह—पहचान ।

(५) लाग—लगे । तँवाये—चिन्तित होने ।

१६६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

लोगहिं' बात आइ' अस कही । रानी' सुनाँ रुपमनि' तिह' अही ॥१
राजहिं अजगुत' बकति न आवा । गा सुख' बह' जो परा हुत पावा' ॥२
रुपमनि' सुनि तुसार जुनु' मारी । जन' पुरइन हँवत रिनु' जारी ॥३
के जुनु' घाम फूल कँह' लाग । सूखि कुई' परिमल सब' भागा ॥४
जस' पानी विनु कँवल सुखाई । सुनतहि' रुपमनि' गै' कुँबलाई' ॥५

मालति^{११} परिहरि^{१२} भँवरा^{१३}, गयड^{१४} बेलि^{१५} अवरॉह^{१६} ॥६
दोखन आह न लागेउ^{१७}, काहे तजहु^{१८} हमाँह^{१९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) लोगन्ह; (बी०) लोगन । २-(ए०, बी०) आय बात । ३-(ए०) राउ;
(बी०) राजा । ४-(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि । ५-(ए०, बी०) तँह । ६-
(बी०) अचंभो । ७-(ए०) सो । ८-(ए०) उवह । ९-(बी०) गा सुख जो होत
परावा । १०-(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि । ११-(ए०) जनि; (बी०)
जनौ । १२-(बी०) जनौ । १३-(ए०) हेमंत रवि; (बी०) हेत रवि । १४-(ए०)
कै रे; (बी०) जानौ । १५-(बी०) कहूँ । १६-(ए०) गई; (बी०) गएउ । १७-
(बी०) × । १८-(ए०) × ; (बी०) जनि । १९-(ए०, बी०) मुनितेहि । २०-(ए०)
रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि । २१-(बी०) गई । २२-(बी०) कुँभिलाई । २३-
(ए०) कही; (बी०) मालती । २४-(ए०) परिहरी । २५-(ए०, बी०) भौरा ।
२६-(बी०) जाइ; (ए०) केहि गुन । २७-(ए०) बेइल । २८-(ए०, बी०)
औराह । २९-(ए०) रुपमिनि कहि लागेव; (बी०) दोखन आहि न लागेउ
परगट । ३०-(ए०, बी०) तजिसि ।

टिप्पणी—(२) अजगुत-(सं० अयुक्त) अनहोनी । परा-पड़ा ।

(३) तुसार-तुपार; शीत; पाला । पुरइन-पुटिकिनी, कमल-बेल । हेवँत-हेमन्त ।
रितु-ऋतु ।

(४) घाम-धूप । कुई-कुमुदिनी । परिमल-सुगन्धि ।

(५) कँवल-कमल । कुँबलाई-कुँभलाई ।

(६) परिहरि-त्यागकर । भँवरा-भ्रमर । अवरॉह-अन्यत्र; दूसरेके पास ।

(७) काहे-क्यों । हमाँह-हमको; मुझको ।

१६७

(दिल्ली; एकडला^१; बीकानेर^२)

जोगी भँवरा थिर न रहाई । यह^१ सँउ जरम न करहु^२ मिताई ॥१
भँवर फिरि^३ परिमल कँह रहई । जोगी जोग तन्त मँह^४ अहई^५ ॥२
ई र^६ क्तिघ्न जग मँह गुने^७ । ईह न मोह काह कर भनै^८ ॥३
कहै कौन मत^९ पितें जो कीन्ही । बरबस टेलि कुँआँ मँह दीन्ही^{१०} ॥४
परेउँ कुण्ड धरै मुँहिं आई^{११} । कछु हो आपु^{१२} हम सिर आई^{१३} ॥५
हौं जिउ देउँ लागि पिय कारन, जो भावइ^{१४} सो होउ ॥६
अव जरिहौं जिउ घट मँह, फुन सीचो जल कोउ^{१५} ॥७

१. एकडला प्रति में पंक्ति ३ नहीं है और पंक्ति ४-५ क्रमशः ३-४ है । पाँचवीं पंक्ति के रूप में बीकानेर प्रति की पंक्ति ४ है जो दिल्ली प्रति में नहीं है ।

२. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५-७ सर्वथा नवीन प्रक्षिप्त पंक्तियाँ हैं ।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) इन्ह; (बी०) इन । २-(ए०) करिय; (बी०) कीजै । ३-(ए०, बी०) फिरत । ४-(बी०) रहै । ५-(ए०) मन । ६-(बी०) रहई । ७-(बी०) ए । ८-(बी०) दुवौ जग गने । ९-(बी०) माना; (ए०) पूरी पंक्ति नहीं है । १०-(ए०) मति । ११-(बी०) तरुवर मीचु गिरही होई । जोगी सीस सँकलपो कोई ॥ १२-(ए०) परी कुँवा अब निकसि न जाई । १३-(ए०) अब । १४-(ए०) ता करि मंळ कीर रहि होई । जो कर सिर कर पी कोई । १५-(ए०) भावै । १६-(ए०) हों जरिहों घट माँह, जल सँचौ फुनि कोउ ।

टिप्पणी—(१) धिर-स्थिर । मिताइ-मित्रता ।

(२) जोगतन्त्र-योग-साधना ।

(४) बरबस-जवदस्ती । ठेलि-ढकेलकर ।

१६८

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन^१ काल कै^२ भेस भरावा^३ । भैरों^४ काल रूप रवि आवा ॥१
दिनयर पै^५ संग अउर^६ न कोई । वात कहै जो मानुस^७ होई ॥२
घट मँह विरह भयउ^८ जर छारा । ऊपर भानु अधिक यह^९ जारा ॥३
संग^{१०} जो आह^{११} सुख कँह सँग लीजै । साथी दगध^{१२} सो का लै कीजै ॥४
काल क गहन^{१३} फुनि^{१४} आगै^{१५} आवा । कुँवर वैठि^{१६} सूरज मुँह नावा^{१७} ॥५
पन्थी सिरज लिहा^{१८} संग साथी, सोउ रहा संग^{१९} छाड़ि ॥६
हाथहिं हाथ मारग न^{२०} सूझै बन मँह, रह अँधियार जो^{२१} गाढ़^{२२} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-रैन । २-कर । ३-फिरावा । ४-भोर । ५-X । ६-और । ७-मनसा ।
८-भवा । ९-कै । १०-संगी । ११-आहि । १२-दगधि । १३-कर घर ।
१४-X । १५-आगे बन । १६-पैठि । १७-बहुरावा । १८-पंथी आहि सुरज ।
१९-सेउ रहा पंथ छाड़ि । २०-(दि० मार्जिन) मारग न । २१-अँधियारा ।
२२-गाडि ।

टिप्पणी—(२) दिनयर-दिनकर; सूर्य ।

(६) सोउ-वह भी ।

१६९

(दिल्ली; बीकानेर)

पन्थ न सूझै किंह खँ^१ जाई । फिरि फिरि बन लागेउ^२ बउरई ॥१
बाघ सिंघ हाथी बन रोझा । तिंह सँउ^३ मारग पूछै सोझा ॥२

१. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५ की अर्धालिवाँ परस्पर स्वानान्तरित है ।

कोउ न मारग देइ देखाई। औ कोउ न हियार जो कहाई ॥३
 पेम भुअंगम है विस भरा। करमहिं पै अँकुर नीसरा ॥४
 बाउर ॥ पै अँगुरि मुँह हेला ॥ सोइ सरेख ॥ जो ॥ पेम न खेला ॥५
 पेम किये दुख पाइ ॥ पेम न करियउ ॥ कोइ ॥६
 जै सुख चाहहि ॥ पेम कै ॥ मूरख ॥ कहाहि ॥ सोइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-केहि दिसि । २-लगा । ३-तेन्हसे । ४-न कोई । ५-फर तोरि कै खाई ।
 ६-अँगुरिन सरा । ७-बावर । ८-अंगुरी । ९-भेला । १०-सयान । ११-× ।
 १२-पाइयै । १३-करियो । १४-चाहै । १५-कर । १६-मूरिख । १७-कहिये ।

टिप्पणी—(१) खँ-ओर ।

(२) रोझा-(सं० ऋश्य > प्रा० रोञ्ज)-नील गाय । सोझा-सीधा, भोला ।

(३) हियार-हृदय की बात ।

(५) हेला-टूँसा; डाला । सरेख-चतुर ।

१७०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

अब जो दर्ई करै सो होई। चला जाँउं पूछें नहिं कोई ॥१
 पेग न वन मँह हेठे जाई। घन अँधियार रहै बहु छाई ॥२
 निसि बासर कछु चीन्हें नाँही ॥ चाँद सुरज जो देखै ताही ॥३
 वन मँह तीस देवस दुख किये ॥ ई ॥ दुख जग मँह काहु ॥ न भये ॥४
 नल हूँ अइसी परी न अवस्था ॥ औ न सुनी सो भरथरि कस्था ॥५
 रचन सबै अयान बैन, विरंचै सो लाहु ॥६
 करम पुसैं सैं निकसै, अँगुरि संप गयाहु ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) दैअ; (बी०) दइय । २-(ए०) नहि पूछै । ३-ए० ×; (बी०) पैग ।
 ४-(ए०) हीठे; (बी०) हाडे । ५-(ए०) रह; (बी०) रहा । ६-(ए०) वन;
 (बी०) तहँ । ७-(ए०) निसि बासर तँह चीन्हिय नाहीं; (बी०) निसि बासर किछु
 चीन्ह न जाई । ८-(बी०) चन्द सुरज सौं देखि न जाई । ९-(ए०) भए; (बी०)
 गये । १०-(ए०) अस; (बी०) ए । ११-(ए०, बी०) काहु । १२-(ए०) [न]लहि
 औस न परी; (बी०) नलहु न ऐसी परी । १३-(ए०, बी०) × । १४-(ए०)
 कासया; (बी०) कया । १५-(ए०) दोनों पंक्तियाँ रिक्त; (बी०) रचना सबै
 अयनपन, विरंच न सो लही । करम विस सैनिक सै, अँगुरी साँप क एहि ॥

टिप्पणी—(२) पेग-पग । हेठे-नोचे ।

(३) नाँही-नहीं ।

(५) कस्या-कष्ट ।

(७) पुसें-पुष्ट । गयाहु-गया हुआ ।

१७१

(दिल्ली; बीकानेर)

चलत चलत बन गये^१ ओरानाँ^२ । भा उजियार देस जस जानाँ^३ ॥१
मेढ़ा छाँगर देखिसि आगें^४ । कहिसि कोउ^५ होइहि ईह लागे ॥२
आगे आइ जो देखी^६ काहा । एक गड़रिया है^७ चरवाहा ॥३
मन मँह कहि^८ भल भयउ^९ गुसाँई^{१०} । रहों^{११} दिन एक^{१२} माँनुस^{१३} ठाँई ॥४
पहिले सुख पाछें दुख होई^{१४} । दुख किये सुख पाछे सोई^{१५} ॥५
देखिसि फिरि कै जो गड़रिया^{१६}, मानुस कोउ^{१७} एक आउ^{१८} । ६
दौरि आउ^{१९} आगें कै^{२०} कपटी, पाहुन कह र^{२१} बुलाउ^{२२} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर—

१-गै । २-ऐना । ३-जग बना । ४-कोई । ५-देखिसि । ६-आहै । ७-
कहिसि । ८-भवा । ९-रहिहों । १०-दोइ । ११-मनसे । १२-पूछि कंचनपुर
मारग लेऊँ । जेहि रे दीप तेही पगु देऊँ । १३-बहुरि जो देख गड़रिया फिरि कै ।
१४-X । १५-आव । १६-आव । १७-कह । १८-कै । १९-बुलाव ।

टिप्पणी—(१) ओरानाँ-समाप्त ।

(२) मेढ़ा-मेप । छाँगर-बकरी । लागे--पास; निकट ।

(७) पाहुन-अतिथि ।

१७२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहसि आजु तुम्ह^१ पाहुन मोरें^२ । भुगुति देउँ पाँ लागों तोरे ॥१
बहु दिन ऊपर जोगो आयउ^३ । करम मोरें आयसु मैं पायउ ॥२
आजु बसे^४ घर आइ^५ हमारे । काल्हि कहहु^६ जो जियें तुम्हारे^७ ॥३
जो पंथ चहहु दिहों दिखाई^८ । अगुवा देव तहाँ^९ लेजाई ॥४
पंथ क^{१०} नाँव कुँवर जो सुनाँ । भा अनन्द मन मँह दस गुना ॥५
चला लिवाइ^{११} साथ^{१२} अपनै, आगें भा^{१३} वह जाइ^{१४} । ६
जिय^{१५} विस्वास करै किह^{१६} ताकर^{१७}, बातहि लेतस लाइ^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) तोहि; (बी०) तुम । २-(ए०) बहु दिन ऊपर पाहुन आवा; (बी०)
बहुत दिना पर पाहुन आवा । ३-(ए०) हमार । ४-(ए०) जो आयस; (बी०)
आइस पै । ५-(ए०) बसहु; (बी०) बसउ । ६-(ए०) आप; (बी०) आव ।

७-(ए०) कहेहु; (बी०) कहेउ । ८-(ए०) जीअ; (बी०) जीउ । ९-(ए०) तोह[रि] । १०-(ए०) जो चहिहहु देहौं देखाई; (बी०) जेहि पथ जाहु सै दैउं दिखाई । ११-(ए०) नहीं । १२-(बी०) कर । १३-(ए०) लेवाए; (बी०) लेवाय । १४-(ए०) साथ लै; (बी०) साथकै । १५-(बी०) आगु भवा । १६-(ए०) जाए । (बी०) जाय । १७-(ए०) कीव; (बी०) जिव । १८-(ए०, बी०) कहँ । १९-(ए०, बी०) तकिसी । २०-(ए०) बातन्ह लीतीन्हि लाए; (बी०) बातन्ह लिहिस संग लाय ।

टिप्पणी—(१) भुगुति-भोजन । पाँ-पैर । लागों-लॉं ।

(२) आयसु-आगनुक ।

(४) अगुवा-पथप्रदर्शक । देव-दूँगा । लेजाई-ले जायेगा ।

१७३

(दिल्ली; बीकानेर)

आगे जाइ दूत कै कला । पाछें निभरम जोगी चला ॥१
 लइके खोह एक मँह पइठा । देई पिहान वाहर होइ बैठा ॥२
 कुँवरहि अचकर का यह कीतसि । काहे कहँ र चाक मुँह दीतसि ॥३
 लौटि देखि जो मानुस तहाँ । पूँछसि कौन इहाँ तुम्ह कहाँ ॥४
 विपरित मोंट न रेगै जाई । काहँ खाइ तुम्ह रहहु मुँटाई ॥५
 पूछहु काह मुँटाई हम कहँ, लै आयउ बोराई ॥६
 औखद एक खियाइसि मूरी, तिह रेगै न जाइ ॥७

पाटान्तर—बीकानेर प्रति—

१-की । २-जोगी निभर्म । ३-लै कै । ४-मँ । ५-पिहना । ६-कुँवरहि अचंभो केहि किहा । ७-काहे कहँ पिहना मुँह दिहा । ८-जो देखे । ९-मानुस है । १०-पूँछसि कौन रहहु तुम कहाँ । ११-विपरित । १२-रेंगा । १३-कहा । १४-खाइके । १५-X । १६-रहेहु । १७-मुरि । १८-तेहिसे रेंग ।

टिप्पणी—(१) दूत-(धूत) धूर्त । कला-कुशल । निभरम-निभ्रम; निःशंक ।

(२) खोह-गुफा । पिहान-ढक्कन; अवरोध ।

(३) अचकर-आश्चर्य चकित । का-क्या । कीतसि-किया ।

(४) चाक-ढक्कन ।

(५) विपरित-असाधारण । मोंट-मोटा । रेगै-चल । काह-क्या ।

(७) मूरी-जड़ी ।

१७४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनतहि रुधिर कुँवर का सूखा । सुख कहँ आप पड़ा वड़ दूखा ॥१
 भल पहुनाई कहँ लै आवा । भुगुति न देतसि चाहँ खावा ॥२

अस पहुनाई नित नित जाई। गाँठी कर^१ जीउ उहो^२ गँवाई ॥३
जिह^३ कँह साध होइ^४ पहुनाई। सो रे^५ गडरिया के घर जाई ॥४
खाइ न देइ^६ चाहि^७ तिह^८ खावा। सरग जाइ^९ कँह पन्थ दिखावा ॥५

अस^{१०} यह कँ जिय अरकहुँ^{११} आगे^{१२}, आवइ^{१३} यहि^{१४} विस्वास^{१५} ॥६

जस यह पन्थिह^{१६} पन्थ दिखावइ^{१७}, तस यह^{१८} जाइ^{१९} अकास ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०, बी०) मुनतेहि। २—(ए०, बी०) रहिर। ३—(ए०) कै; (बी०) का।
४—(बी०) आयेउ। ५—(ए) दीतसि; (बी०) दीहिसि। ६—(बी०) चाहिसि; ७—
(ए०) गाँठी कै; (बी०) गाँठिहु करे। ८—(ए०) सोउ; (बी०) ×। ९—(ए०)
जा; (बी०) जेहि। १०—(ए०) होए; (बी०) होय। ११—(ए०, बी०) रे। १२—
(ए०) देए; (बी०) देय। १३—(ए०) चाह; (बी०) चहै। १४—(ए०) तेहि; (बी०)
पै। १५—(ए०) जाए; (बी०) जायँ। १६—(बी०) यह। १७—(ए०, बी०) ×।
१८—(ए०, बी०) आगे आवों। १९-२०—(बी०) ×। २१—(ए०) जस से किय
विस्वास। २२—(ए०) ×। २३—(ए०) देखाइसि; (बी०) देखावै। २४—(बी०)
या। २५—(ए०, बी०) जाव।

टिप्पणी—(२) पहुनाई—आतिथ्य।

(३) गाँठी—गाँठका; पासका। उहो—वह भी।

(४) साध—इच्छा; अभिलाषा।

(५) अरकहुँ—रोक लगाऊँ।

(७) अकास—आकाश; स्वर्ग।

१७५

(दिहरी; एकडला; बीकानेर)

कहि के यह^१ झुरवइ^२ मन^३ लागा। एको मन्त्र न^४ चित मँह जागा ॥१

सँमुद लहर^५ सँउ^६ दई^७ उवारा। साँप मोख दीन्हेउँ करतारा ॥२

दई^८ दिही सिधि राकस मारेउँ^९। राजपाट छाड़^{१०} सब जारेंउँ^{११} ॥३

फुनि अँधियारी^{१२} वन मँह आयउँ^{१३}। मानुस देखि कहेउँ^{१४} जिय^{१५} पायउँ^{१६} ॥४

तँ मानुस अस किय विस्वास^{१७}। मूँदसि^{१८} तहाँ न आवइ साँस^{१९} ॥५

ते^{२०} जिउ^{२१} लियेउ^{२२} आइ^{२३} सो^{२४} बेरा^{२५}, उवरै कै नहिँ आस ॥६

जम साँ भेंट भई अब, यहि^{२६} ठाँ, कहा न मानै कास^{२७} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) तौ यह। २—(ए०, बी०) झुरवै। ३—(बी०) ×। ४—(बी०) नहिँ। ५—
(ए०, बी०) लहरि। ६—(ए०, बी०) साँ। ७—(ए०) दैअ; (बी०) दइव। ८—
(ए०) दैअ; (बी०) दइव। ९—(बी०) मारा। १०—(ए०) छोड़व; (बी०) छोड़वै।
११—(बी०) जारा। १२—(१२) अँधियारे; (बी०) कदली। १३—(ए०) आवा;

(बी०) आयेंउ । १४-(ए०,बी०) कहेव । १५-(ए०) जिउ; (बी०) जिव । १६-(ए०) पावा; (बी०) पायेंव । १७-(ए०) ते; (बी०) अब तेइ । १८-(ए०) कै; (बी०) कियेउ । १९-(ए०,बी०) विसवासा । २०-(ए०, बी०) मूँदिसि । २१-(ए०, बी०) साँसा । २२-(ए०) अँ; (बी०) हँ । २३-(बी०) जिव । २४-(ए०) लिओव; (बी०) लियेव । २५-(ए०) आय; (बी०) X । २६-(बी०) X । २७-(बी०) एह वार । २८-(बी०) एहि; (ए०) तेहि । २९-(ए०, बी०) कस ।

टिप्पणी—(१) मन्त्र-उपाय ।

(३) जारेंउँ-जलाया ।

(५) विसवासू-(अरबी बसवास, विसवास) विश्वासघात; छल । (यह संस्कृत के 'विश्वास' शब्द का अपभ्रंश रूप नहीं है ।

(६) बेरा-बेला; घड़ी । उबरैकै-निकलनेका । आस-आशा ।

(७) जम-यम; काल; मृत्यु ।

१७६

(दिल्ली; बीकानेर^१)

दुख के गाँग तैरि हों^१ आवा । मैं जानेंउ^२ अब तीर^३ जो^४ पावा ॥१
 परेउँ कुण्ड गहरे मँह आई । भँवर बहुत^५ अब^६ निकसि न जाई ॥२
 यह बड़ मँगर न छाड़ै^७ मोहीं । मूँदि दुआर बैठि है रोहीं ॥३
 वाट न आहै कै खँ जाऊँ । राम लखन जस सीता ठाऊँ^८ ॥४
 सिय रावन जो^९ [लइगा]^{१०} हरी । वहइ अवस्था यह^{११} हम^{१२} परी ॥५
 वें जमकातर काढ़ी मार क^{१३}, इन दीन्हों^{१४} बड़ चाक ।६
 वै हनिवन्त लुड़ाए कर पर^{१५}, हम्ह आपु सो भाग^{१६} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-गांग पैरिकै । २-जानों । ३-तीर अब । ४-X । ५-बहुत भँवर । ६-तहँ ।
 ७-छोड़हि । ८-अवरोही । ९-किर्ध । १०-राम लखन कहँ जैसे ठाऊँ । ११-
 X । १२-लैगा; (दि०) लंका । १३-X । १४-हम कहँ । १५-बोहि जमकत
 गबरिया । १६-इन्ह दीन्हा । १७-वार कै । १८-हम नहिं सेवक एक ।

टिप्पणी—(१) गांग-गंगा ।

(३) रोही-(स० रोध) रोककर ।

(४) कै खँ-किस रास्ते ।

(५) लइगा-ले गया । वहइ-वही ।

(६) जमकातर-यमकी कटारी या तलवार ।

(७) हनिवन्त-हनुमान ।

१७७

(दिल्ली; बीकानेर)

कौरा' दानौ पण्डो हरी' । उनकहँ' जाइ भीउँ उपकरी' ॥१
सेवक द[।*]स' बन्धु नहि मोरें । सँतुरों जिह' आवहि' कर जोरें ॥२
हौं र'° विनती दइ सँउ करँउ' । दई छाड़ि' न अउरहि' सँवरउँ' ॥३
दइयहि' सँवरत' होइ स होई' । और न सँवरों' का करि कोई' ॥४
कै सँवरों मिरगावति नेहाँ । जिह'° दुख' लग सहेउ सिर मेहाँ ॥५
जिय महँ सदन' समाधि कै, लागेउ अहा जो' चित्त ।६
जो जिउ दीजै मिन्त'° लगि, सेउ'° जिउ'° आह'° पविच ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-कवीर । २-पाण्डो । ३-हरेउ । ४-उन्ह । ५-उपकारेउ । ६-अस । ७-
मुमिरों । ८-तोहि । ९-दुवो । १०-X । ११-दइव से करऊँ । १२-दइव
छोड़ि । १३-और न । १४-सँभरँऊँ । १५-दइवहि । १६-मुमिरत । १७-होउ क
जोऊ । १८-मुमिरों । १९-कह कोऊ । २०-जेहि । २१-दगाध । २२-मुदिन ।
२३-जो अस । २४-मीन । २५-से । २६-जीअ । २७-हो ।

टिप्पणी—(१) कौरा-कौरव । पण्डो-पाण्डव । भीउ-भीम । उपकरी-उद्धार किया ।
(५) नेहाँ-स्नेह ।
(७) मिन्त-मित्र । पविच-पवित्र ।

१७८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मरै क डर' महँ कछू' न लागै । नेह' पन्थ मुँप पाप सब भागै ॥१
यहि' पंथ' लाग' जोर जिउ देई । दुहुँ' जग धरम मोल सो' लेई ॥२
वहि' सब कँह रखें'° सुर देवा । जो जिउ भीत लागि बरछेवा' ॥३
जो पै सत है तो सिधि होई । दुरजन' दूत'° काह'° करि'° कोई ॥४
संग' सँगाधि'° साथ हो'° जाही । सत संघाति'° साथी'° [वड़ आही'°] ॥५
सतकै'° संग'° साथ जो'° आयउँ'°, सतसँउ'° लिह'° लुड़ाइ'° यदि टाउँ'° ।६
सो'° सत आह साथ बड़ मोरे, जपो'° ताहि कर नाउँ'° ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) मेरे किये । २-(ए०, बी०) मोहि कुछु । ३-(ए०) अहि; (बी०) येहि ।
४-(ए०, बी०) नँह लागि । ५-(ए०, बी०) X । ६-(ए०, बी०) लागि । ७-
(बी०) दुवो । ८-(बी०) से । ९-(ए०) उहि । १०-(ए०) राखे; (बी०) देखहि ।
११-(ए०, बी०) परछेवा । १२-(बी०) दुरिजन । १३-(ए०) दवन; (बी०) दुवा ।
१४-(ए०) कह; (बी०) कहा । १५-(बी०) करै । १६-(ए०) सत; (बी०) संत ।

१७-(ए०) संघती; (बी०) संघाती । १८-(ए०) होए; (बी०) होय । १९-(ए०) संघती; (बी०) संघाती । २०-(ए०, बी०) साथ । २१-(दि०) भल होई । २२-(ए०) क; (बी०) के । २३-(ए०, बी) × । २४-(ए०, बी०) हैं । २५-(ए०) आएँव; (बी०) आयँव । २६-(ए०) × ; (बी०) सतौ । २७-(ए०) लेहु; (बी०) लीन्ह । २८-(ए०) छोडए; (बी०) छोडाय । २९-(बी०) अवहु सो । ३०-(बी०) जपत ।

टिप्पणी—(३) बरछेवा-परित्याग कर दिया; अर्पण कर दिया ।

(४) दूत-(धूत) धूर्त ।

(५) सँगाधि-साथी ।

१७९

(दिल्ली; वीकानेर)

मानुस बैठ जो भीतर आहे^१ । राजकुँवर कहँ देखत रहे^२ ॥१
कहँहि^३ एक बुधि सुनहु हमारी । जियँ^४ यह कैसे जाइ न मारी ॥२
जौ लहि नाहिं खियायसि मूरी । जोगी सीख गहउ बुधि मोरी ॥३
आइ^५ कै अवाहिं एक कँह लेइह^६ । खाई भूँज न काहँ देइह ॥४
खाइ अघाइ फिर^७ परि सोवा^८ । विधि^९ सेउ^{१०} जाइ वह कै^{११} जिउ खोवा^{१२} ॥५
सोवत जो वहि^{१३} पावसु^{१४} देखसि, लै सँडसी^{१५} दगधाउ ।६
हरुवै^{१६} हरुवै जाइ कै, वहँ आखिन महुँ लाउ ॥७

पाठान्तर—वीकानेर प्रति—

१-मानुस भीतर जो बैठा अहा । २-रहा । ३-कहिनि । ४-जो । ५-कैसेहु ।
६-जोगी सिखहु कहँ बुधि पूरी । ७-आइहि । ८-लेई । ९-(बी०; दि० मार्जिन)
हाडो । १०-बहुरि । ११-सोवै । १२-बुधि । १३-× । १४-बोहिकर । १५-
खोवै । १६-बोहि । १७-× । १९-सँडसी लै । १९-दुहुँ ।

टिप्पणी—(२) जियँ-जीवित ।

(४) भूँज-भूनकर ।

(५) अघाइ-तृप्त होकर । परि-पड़कर । विधि-तरकीब ।

(६) दगधाउ-गर्म करो ।

(७) हरुवै हरुवै-(सं० लघुक > लहुअ > लहुव > हलुव > हरुव) धीरे धीरे ।

१८०

(दिल्ली; एकडला; वीकानेर)

यह^१ बुधि कुँवर कै^२ मन मँह^३ छाई^४ । बात कहत हा^५ वह^६ गा^७ आई ॥१
एक जनहि^८ धरि पटकसि^९ पुहुमाँ । कुँवर देखि यह बैठउ^{१०} सहमी ॥२
आगि लाइ^{११} जारसि^{१२} वहि^{१३} काँठी^{१४} । माँस भोजि^{१५} औ चावै काँठी ॥३

हाड गोड औ खायसु माँसू। कुँवर देखि भरि आये आँसू ॥४
दिन एक हमहूँ खाइहि भूँजी। जो आगों के निघटिह पूँजी ॥५
खाइ अघाइ पेट भरि डकरै^{१०}, फुनि सोए^{११} परि लाग ॥६
ताहि^{१२} आगि मँह सँडसी दगधी^{१३}, कुँवर बैठ तिह^{१४} जाग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(बी०) यह रे। २-(ए०) क; (बी०) के। ३-(बी०) जिय। ४-(ए०, बी०)
भाई। ५-(ए०, बी०) खुटानी। ६-(ए०) वह रे। ७-(बी०) रेंगा। ८-(ए०)
जबेहि; (बी०) जना। ९-(ए०) पटकिसि; (बी०) पटकिसि। १०-(ए०) जीउ
आहे। ११-(ए०) लाए; (बी०) जारि। १२-(ए०) औ जारिसि; (बी०) औ
जोरसि। १३-×। १४-(बी०) काठा। १५-(ए०) भूँजि; (बी०) खाइ। १६-
(ए०) चापिसि; (बी०) चाविसि। १७-(ए०) ×; (बी०) डिकरा। १८-(ए०,
बी०) सोवै। १९-(बी०) वाहि। २०-×। २१-(ए०) तब; (बी०) तहँ।

टिप्पणी—(१) गा-गया।

(२) जनहि-व्यक्तिको। पुहुमी-पृथ्वी।

(३) काँठी-शरीर।

(४) हाड-हड्डी। गोड-पैर।

(५) निघटिह-समाप्त।

१८१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सँडसी^१ दगधि आग जस^२ भई। लइकै दुहँ आँखि^३ मँह दर्ई ॥१
लोयन^४ फूट टपक^५ दइ^६ सुनाँ^७। जानु आगि मँह^८ पतिरा^९ भुनाँ^{१०} ॥२
उठा कोप कर^{११} चाहिसि धरा। तौलहि कुँवर भागि कै परा ॥३
दूँदुँ^{१२} फिरि फिरि धापै^{१३} देई। कुँवर क नाउं न पाथर^{१४} लेई ॥४
फिरि फिरि चारेउ^{१५} कोन डँढोरा। अति कै रिस^{१६} दाँत^{१७} कर तोरा ॥५
जो जस करै सो तइसै पावइ^{१८}, बुरहा बुरहीं बात^{१९} ॥६
जस बिसवास किये^{२०} मनुसँ कर^{२१}, तस कै होउ^{२२} निरजात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०) चँडसी। २-(बी०) अस। ३-(ए०, बी०) लैके। ४-(बी०) आँखिन्ह।
५-(ए०, बी०) लौतहिं। ६-(ए०, बी०) पटक। ७-(ए०, बी०) दै। ८-(बी०)
सुनाँ। ९-(बी०) आगी मँह जानौ; (ए०) जनु आगी मँह। १०-(बी०) बडुरा।
११-(ए०, बी०) भूना। १२-(ए०, बी०) कै। १३-(ए०) चढै। १४-(ए०)
ठापा, (बी०) दापा। १५-(ए०) आगि नहि; (बी०) पयर नै। १६-(ए०;
बी०) चारों। १७-(ए०) रोस। १८-(ए०) दाँतेन्ह; (बी०) दसन। १९-(ए०,

बी०) तस पावै । २०-(ए०) बुरहे बुरही वाट; (बी०) बुरहि बुराही वाट । २१-
(बी०) किये विसुवास । २२-(ए०, बी०) कहँ । २३-(ए०) तै होहि ।

टिप्पणी—(२) लोयन-लोचन; आँख ।

(४) हँडोरा-टटोला । रिस-क्रोध ।

(७) विसवास-(अरबी-बसवास) छल; कपट ।

१८२

(दिल्ली; बीकानेर)

चारेउ^१ कोन ठूँढ़ि कै आवा । बौरी^२ जानु^३ धतूरा खावा ॥१
कै वाउर जस बिच्छी^४ मारा । चढ़े देहि^५ विस जै कोउ झारा ॥२
कुँवर कहा कहु^६ खायहु^७ मिन्ता^८ । पहुनें कै^९ कस करहु न चिन्ता ॥३
भलि^{१०} कै भूखहि^{११} पाहुन मारा । अब तुम्हरे कोउ आउ न^{१२} बारा ॥४
पाहुन आन देहु छुटकाई^{१३} । पहुनहि कियत तोर^{१४} पहुनाई ॥५
पहिले^{१५} जो पाहुन आनहु^{१६}, पै राखहु मोंटाई^{१७} ।
हमहि आनि के भूखेहि मारेहु^{१८}, कहुँ^{१९} न दीनहु^{२०} खाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-चारिउ । २-बाउर । ३-जनौ । ४-जानौ बीछू । ५-देहु । ६-जनि । ७-
किछु । ८-खोइहु । ९-मीता १०-पाहुनै की । ११-भल । १२-भूखन । १३-
अब न कोइ तुम्हरे आवै । १४-आन दीन्ह छिटकाइ । १५-पाहुने की तोरी ।
१६-पहिले पाहुन जे आनेहु धरिके । १७-ते राखेहु मुटाइ । १८-मारेहु । १९-
किछुवै । २०-दीन्हेउ ।

टिप्पणी—(१) बौरी-बावला; पागल ।

(२) बाउर-बावला । बिच्छी-बिच्छू ।

(३) मिन्ता-मित्र ।

(४) बारा-घर ।

१८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बोलि क^१ सबद कुँवर तन धावा^२ । कुँवर भागि उहि पाछें आवा^३ ॥१
घरै न पाइसि^४ हाथ मरोरा । का अब करों करम जो तोरा ॥२
लै दुआरि आपु बैठेउ^५ जाई । जइहइ^६ कउने^७ वाट पराई ॥३
भितरहि सारि^८ जो मारों^९ तोही । लै दुआर अब बैठों रोही ॥४
जाइ दुआर सजग होइ^{१०} बइठा^{११} । अस कै मूँदसि^{१२} चाँट^{१३} न पइठा ॥५
जाहु पुरुख जो आहहु जोधा^{१४}, कँवन^{१५} वाट तैं^{१६} जाव ।
छाड़ों तोहि न जियत^{१७} निगलों^{१८}, काँचे^{१९} में तिह^{२०} खाव ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) कै । २-(बी) घावै । ३-(बी०) आवै । ४-(बी०) पावै । ५-(ए०) अब बैठेव; (बी०) बैठों । ६-(ए०) जैहहु । ७-(ए०, बी०) कौने । ८-(ए०) सही । ९-(बी०, ए०) × । १०-(बी०) मारों मैं । ११-(ए०) मै । १२-(ए०, बी०) बैठा । १३-(ए०, बी०) मूँदिसि । १४-(बी०) चाँटि । १५-(ए०, बी०) × । १६-(ए०, बी०) कौन । १७-(बी०) तुम; (ए०) दहुँ । १८-(ए०) जियतै । १९-(बी०) धरै पाउँ नहिं छाड़ों । २०-(बी०) काँचा । २१-(ए०, बी०) तोही ।

टिप्पणी—(३) दुआरि—द्वार । जइहइ—जायेगा । कउने—किस । बाट—रास्ता । पराई—भाग ।

(४) भितरहिं—भीतर ही ।

(५) चाँट—चींटा ।

(६) जोधा—योद्धा; वीर ।

(७) काँचै—कच्चा ही ।

१८४

(दिल्ली; बीकानेर)

नाँउ हमारे आग' न खाई^२ । अब अस मारों जियें न जाई^१ ॥१
पुरुख सेंउ^५ तिह^६ काज न परा । मेहरीं संउ^१ तैं खेलै खरा^१ ॥२
अब पुरुख सेंउ^५ परेउ^१ जो काजू । मारों तोहि न छाड़ों आजू ॥३
मारें हों तो^{१०} मरों न तोर । कपट किहे^{११} अनजानत मोरे ॥४
छाड़ों तौही न जियत^{१२} खाचों^{१३} । तब लग कितहु^{१४} न आओं जाओं^{१५} ॥५
कुँवर कहा फिर इहै^{१६} जिय^{१७} मँह^{१८}, कवन बाट हम जाव । ६
धरै पाउ न छाड़े जियत, अलख निकर न जाव^{१९} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-पथर । २-(बी०; दि० माजिन) खाहू । ३-जी पै जाहू । ४-पुरिखन्ह सैं । ५-तौहि । ६-मिहरिन्ह से । ७-से कीन्हें खिड़करा । ८-पुरिखन्ह सैं । ९-परा । ते हों । ११-किहेसि । १२-जियत घै । १३-खाऊँ । १४-कतहु । १५-आऊँ जाऊँ । १६-यह फुर । १७-१८ × । १९-धरै पावै नहिं छाड़िहि, जियतिहिं हम धरि खाव ।

टिप्पणी—(२) मेहरीं—स्त्री ।

(४) अनजानत—अनजान में ।

(७) अलख—(अलक्ष्य); बिना देखे । निकर—निकला ।

१८५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

देवस' तीनि' एक बड़ै^३ रहा^५ । फुनि अपुनैं^१ जिय महँ अस कहा ॥१

छागरि^१ काढ़ि देंउं^२ चरि आवँहिं । हम सेंउ^३ जाइ^४ कहाँ यहि^५ पावँहि ॥२
 चाक उसास^६ जाँघ^७ दइ बइटा^८ । एक एक छागरि काढ़े पइटा^९ ॥३
 कुँवर कहा यह आहे दाऊं । अइस^{१०} दाउ न पइहो^{११} काऊ ॥४
 छागरि^{१२} मारि चाम बड़ काढ़ा । ऐंचसि^{१३} बहुत जो वानन्ह^{१४} बाढ़ा ॥५
 पहिरि चाम मिलि छेरिंहि आवां^{१५}, कहिसि निकसि अब जाँउं । ६
 दइ^{१६} करिह^{१७} सो होइह^{१८} निहचो^{१९}, अबका जियहिं डराउं^{२०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) देवस । २-(बी०) तीन । ३-(ए०) बैठ; (बी०) बैठा । ४-(बी०)
 अहा । ५-(ए०, बी०) अपने । (बी०) छेगरि । ७-(ए०, बी०) देंव । ८-(ए०)
 मोहि सों; (बी०) हम से । ९-(ए०, बी०) जाय । १०-(ए०, बी०) ये । ११-(ए०)
 उसासि; (बी०) उठाइ । १२-(ए०) जंघा । १३-(ए०, बी०) दै बैठा । १४-(ए०)
 ऐंटा; (बी०) बैठा । १५-(ए०) अँस; (बी०) पुनि अस । १६-(ए०) नहिं पैहों;
 (बी०) न पैहै । १७-(बी०) छेरी । १८-(ए० बी०) ईंचिसि । १९-(ए०) पालहि;
 (बी०) पाँव लहु । २०-(ए०, बी०) × । २१-(ए०) दैअ; (बी०) दइव । २२-
 (बी०) करिहि । २३-(बी०) होइहि । २४-(ए०, बी०) × । २५-(बी०) डेराउं ।

टिप्पणी—(२) छागरि—बकरी ।

(३) उसास—खोलकर ।

(५) ऐंचसि—खींचा ।

(७) निहचों—निश्चय ही ।

१८६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दई^१ गुसाँई^२ सिरजनहारा । येहि सेउं मोख देहु करतारा ॥१
 मिलि कै छेरिंहि^३ वहिं टाँ आवा । निकसै चाह हाथ वैं लावा ॥२
 टोइसि कहिसि छेरिं^४ न होई । चाहिसि धरै निकसि गाँ सोई ॥३
 कहिसि जाहु भल^५ भाग तुम्हारी^६ । पउतेउ तैं धरै तो खातेउ सारी^७ ॥४
 घर सेंउ^८ सगुनहि आहहु^९ चला । कोड किन्हि^{१०} भल लानै^{११} कला ॥५
 कुँवर कहा अब वैसहु^{१२} थाकिह^{१३}, जस र वुयउ^{१४} तस खाहु । ६
 जस र कीह^{१५} तस पायहु^{१६}, कलजुग^{१७} घर घर भीख मँगाहु ॥७

पाठान्तर—एकडला ओर बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) दैअ; (बी०) दइव । २-(ए०, बी०) गोसाईं । ३-(ए०) अहिसों;
 (बी०) एहिसों । ४-(ए०) छेरिअन्ह; (बी०) छेरिह । ५-(ए०, बी०) उहि । ६-
 (ए०) उए; (बी०) उह । ७-(बी०) छेगरि । ८-(ए०, बी०) नहिं । ९-(बी०)
 गवा । १०-(बी०) बड़ । ११-(ए०) तोहारे; (बी०) तुम्हारा । १२-(बी०)
 पौतेंव धरै न छड़तेंव बारा; (ए०) पौतेव धरै तो जीअतेव वारे । १३-(बी०) सों ।

१४-(ए०) आहै; (बी०) सगुन अहा तैं । १५-(बी०) किहेसि; (ए०) कुसल भअव । १६-(बी०) भलि लागी; (ए०) भल लागेव । १७-(ए०) बैठहु; (बी०) बैठे । १८-(ए०) ×; (बी०) थाकहु । १९-(ए०, बी०) जस बोयेहु । २०-(ए०, बी०) रे किअहु । २१-(ए०, बी०) पायेहु । २२-(ए०) × ।

टिप्पणी—(२) छेरिह-बकरी ।

(३) टोइसि-टटोला । छेरि-बकरी ।

(४) पउतेउ-पाता । तैं-नुशको ।

(६) हुयउ-बोआ ।

१८७

(दिल्ली; एकडला^१; बीकानेर^१)

इहैं^१ बोल कुँवर कहि चला । मगु अमगु न पूछै भला ॥१
मानुस देखत^२ नियर न^३ जाई । ओहट ओहट^४ लागि पराई ॥२
मही न पीयइ^५ खीर जो जरा । फूँकै पाछहिं^६ अधरहिं^६ घरा ॥३
जस यह मोख दयी^७ करतारा । तस अब मिरवउ^८ पेम पियारा ॥४
यह^९ बड़ कुसल दर्ई^{१०} हम^{११} किही^{१२} । नौ कै आउ दर्ई हम^{१३} दिही^{१४} ॥५
विवि कर बन्दों^{१५} जोरि कै^{१६}, हों^{१७} विधि मंगों^{१८} तोहि^{१९} । ६
जिह^{२०} कारन यह दुख सहे, सो सेइ^{२१} मिरवहु^{२२} मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) अहइ; (बी०) यहइ । २-(बी०) देख । ३-(बी०) नहिं । ४-(ए०) उहरोहि उहर; (बी०) ओहरे ओहरे । ५-(ए०, बी०) लाग । ६-(ए०) पीअै; (बी०) पीवै । ७-(ए०) बाछु; (बी०) बाझ । ८-(ए०, बी०) अधर नहिं । ९-(ए०) दिहे; (बी०) दियेहु । १०-(ए०) मेरवहु; (बी०) मिरवहु । ११-(ए०) येह । १२-(ए०) दैअ; बी० दइव । १३-(ए०) मोहि; (बी०) जो । १४-ए० किहे । १५-(ए०) आजु मोहि; (बी०) बहुरि हम । १६-(ए०) दिहे । १७-(बी०) × । १८-(बी०) × । १९-(बी०) × । २०-(ए०) मांगो विधि; (बी०) माँगों मैं । २१-(बी०) तोही । २२-(ए०, बी०) जेहि । २३-(बी०) सहा । २४-(ए०, बी०) × । २५-(ए०) मेरवहु अव; (बी०) रे मिलावहु ।

टिप्पणी—(१) मगु अमगु-मार्ग कुमार्ग ।

(२) नियर-निकट । ओहट ओहट-बच बचकर; दूर-दूर रहकर । पराई-भागना ।

(३) मही-छाछ; दही ।

(४) मिरवहु-मिलाओ; मिलाप कराओ ।

(५) नौ-नया । आउ-आयु ।

१. एकडला प्रति में यह कड़वक दो बार अंकित है । एकडला और बीकानेर प्रतियों में पंक्ति ४-५ क्रमशः ५ और ४ है ।

१८८

(दिल्ली; एकडला; वीकानेर)

करसायल^१ जनु^२ केसरि^३ पेखा । आगों^४ भाग^५ पाळों^६ फिरि देखा ॥१
 कै र^७ कुरंगिन संग सेउं^८ चौकी^९ । कै र^{१०} फँद^{११} पारध^{१२} कर^{१३} मोंकी^{१४} ॥२
 सजग भयउ^{१५} खिन^{१६} थिर न रहाई । मानुस देखत^{१७} नियर न^{१८} जाई ॥३
 चला जाइ^{१९} सँवगत^{२०} मन भावा । आगों भवन^{२१} दिस्टि एक आवा ॥४
 दिनियर सघन अस्त फुनि^{२२} कीन्हा । चाँद^{२३} परेउ^{२४} उदवै^{२५} मन दीन्हा^{२६} ॥५
 देखिसि रात सुहावन^{२७} सीतल^{२८}, कहिसि^{२९} रहों इँह^{३०} टाँउ । ६
 चारि पहर दुख सुख निसिकै^{३१}, ओखों^{३२} पंथ चलाउं^{३३} ॥७

पाठान्तर—एकडला और वीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) करसकेल; (बी०) करसाएल । २-(ए०) जनि; (बी०) जनौ । ३-
 (बी०) केहरि । ४-(ए०) अगे; (बी०) आगू । ५-(बी०) जाइ । ६-(ए०, बी०)
 पाछु । ७-(ए०, बी०) रे । ८-(ए०, बी०) सै । ९-(ए०, बी०) चूकी । १०-(ए०, बी०)
 रे । ११-(ए०, बी०) फँद । १२-(बी०) पारधी । १३-(बी०) ×; (ए०) कै ।
 १४-(ए०, बी०) मूँकी । १५-(ए०) महेव; (बी०) भा । १६-(ए०, बी०)
 खन । १७-(बी०) देख । १८-(बी०) न । १९-(ए०) चलत हे । २०-(बी०)
 मुमिरत । २१-(ए) आगु भौन; (बी०) आगे भुअन । २२-(बी०) अख बन;
 (ए०) दीठि फुनि । २३-(ए०) चारि । २४-(बी०) परगास; (ए०) परेवा ।
 २५-(ए०) उदै । २६-(ए०) कीन्हा । २७-(बी०) सोहावन; (ए०) अँवेरी ।
 २८-(ए०) × । २९-(बी०) कहिसि । ३०-(ए०) येह; (बी०) यहि । ३१-
 (बी०) रात विरम पवरी परतु । ३२-(ए०) उख; (बी०) खसख । ३३-(ए०, बी०)
 मिलाव ।

टिप्पणी—(१) करसायल—मृग । केसरि—सिंह । पेखा—देखा । आगों—आगे । पाळों—
 पीछे । फिरि—धूमकर ।

(२) कुरंगिन—हिरणी । फँद—जाल । पारध—शिकारी । मोंकी—खोली ।

(४) दिस्टि—दृष्टि ।

(५) दिनियर—दिनकर; सूर्य ।

१८९

(दिल्ली; एकडला; वीकानेर)

इँहवा^१ आइ^२ जो देखी^३ काहा । मानुस पंखि^४ न एको^५ आहा ॥१
 कहिसि अचम्भो यह^६ कछु^७ आही । बइठों^८ लुपि^९ कै देखउं^{१०} ताही ॥२
 काकर घर आहै इँह^{११} कोई^{१२} । वैठि^{१३} लुकाइ^{१४} रहों फुन^{१५} सोई ॥३

चरचै लाग खोज यह^१ पाये^१ । चार परेवा अपुरुब आये^१ ॥४
 चहूँ लोटि^१ कै भेस फिरावा । रूप इस्तिरी^१ धरहिं^१ सुहावा^१ ॥५
 पुनि र^१ मन्त्र^१ बोल^१ दोइ^१ बोला, सेज सौर भल आई^१ । ६
 अइस न^१ जानी^१ को^१ लइ^१ आवा, दहुँ को^१ गयउ विछाइ^१ ॥७

पाटान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) भौन; (बी०) भुअन । २-(ए०) आअे; (बी०) आय । ३-(ए०, बी०) देखै । ४-(ए०, बी०) पंखी । ५-(बी०) कोई । ६-(बी०) × । ७-(ए०, बी०) कुछु । ८-(ए०) बैठों; (बी०) देखों । ९-(ए०, बी०) छपि । १०-(ए०, बी०) देखों । ११-(ए०) अेह; (बी०) इह है । १२-(ए०) कोऊ । १३-(ए०) लुकाए; (बी०) लुकाय । १४-(ए०) पुनि; (बी०) पुनि । १५-(ए०) अेह; (बी०) नहिं । १६-(ए०) पाई; (बी०) पावा । १७-(बी०) आवा । १८-(ए०, बी०) लौटि । १९-(ए०, बी०) असतिरी । २०-(ए०, बी०) धरिन्हि । २१-(ए०, बी०) सुभावा । २२-(ए०) भर; (बी०) बहुरि । २३-(ए०) मता । २४-(बी०) बोलिन्हि । २५-(ए०, बी०) दुइ । २६-(ए०) आए; (बी०) आय । २७-(ए०) अैसन; (बी०) आसन । २८-(बी०) जान । २९-(ए०, बी०) को रे । ३०-(ए०, बी०) लै । ३१-(ए०) को दहुँ । ३२-(बी०) गयेव विछाय ।

टिप्पणी—(१) इहवा—यहाँ । काहा—क्या । मानुस—मनुष्य । पंखि—पंखी । एको—एक भी ।

(३) काकर—किसका ।

(४) परेवा—कबूतर । अपुरुब—अपूर्व ।

(५) लोटि—भूमिपर लेट इधर उधर घूमकर । फिरावा—बदला । इस्तिरी—स्त्री ।

(६) सेज-सौर—गद्देदार शय्या । भल—सुन्दर ।

(७) अइस—ऐसा । जानी—जान पड़ा । लइ—ले ।

१९०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मन्त्र बोल सुनकारि^१ बोलाये । चारि मोर नाचत भल^१ आये ॥१
 चारों लोटि भये मनसेरू । सेज बैठि अधरन^१ गिय^१ मेरू ॥२
 उर^१ कुच लाइ भुअन सेउ^१ गहहीं । आलिगन अलवहन रहहीं ॥३
 खेलहिं^१ कुरलहिं हँसहिं हँसावँहि । चारि पहर सुख रैन^१ विहावँहि^१ ॥४
 खेलत^१ हँसत रैन^१ वँह^१ गई । कुँवरहिं सब निसि डर मँह गई^१ ॥५
 भोर भये उँह धावन आवा^१, कहिसि^१ बैठि तुम^१ काह । ६
 वह^१ जो^१ गड़रिया छेरि^१ चरवाहा, आँधर किये केहुँह^१ आह ॥७

पाठान्तर—

१-(ए०) सिंगा जो; (दि० मार्जिन) हंकार । २-(ए०) फुनि; (बी०) पुनि नाचत । ३-(ए०) अघ्नन; (बी०) अघरन्ह । ४-(ए०) कै । ५-(ए०) औ । ६-(बी०) से; (ए०) भुव दुहुँ सैं । ७-(ए०) दै आलिंगन बीरी खँडही; (बी०) आलिंगन अलौ दलमलर्ही । ८-(ए०) फूदहिं; (बी०) खाडहिं । ९-(बी०) निसि रंग । १०-(बी०) पोहावहिं । ११-(बी०) बोलत; (ए०) तलत (?) । १२-(ए०) उन्हि; (बी०) उन्ह । १३-(बी०; दि० मार्जिन) भई । १४-(ए०, बी०) आए । १५-(ए०) कह; (बी०) कहेन्हि । १६-(ए०) बैठे तोह; (बी०) तुम बैठे । १७-(ए०) उवह । १८-(बी०) रे । १९-(ए०) है; (बी०) होत छेरी । २०-(ए०) कै कहै; (बी०) कियेहु काहू ।

टिप्पणी—

- (१) सुनकारि-संकेत द्वारा ।
- (२) मनसेरू-पुरुष । गिय-कण्ठ ।
- (४) कुरलहिं-मनोविनोद करते हैं ।
- (६) धावन-दूत ।
- (७) आँधर-अन्धा । केहुँह-कोई । आह-है ।

१९१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनिकै यहि र' उड़िह' वै जाहीं' । राजकुँवर यहि' सुनत डराहीं' ॥१
 वहि ठाँउ सेउँ कियउ पयाना' । राजकुँवर जिउ लै र' परानाँ' ॥२
 फुनि वैसहिं वह' भागै लागा । जस र'^{२०} गडरिया कँ डर भागा ॥३
 आगों'^{११} पाछें देखत जाई । बहुरि न आवहिं'^{१३} लग पराई ॥४
 बहुत दूरि जो आयउ'^{१३} भागा'^{१४} । सूरज'^{१५} तपा'^{१५} घाम बहु लागा'^{१७} ॥५
 तरुवर'^{१६} एक सुहावन'^{१६} देखिसि, बैठउँ'^{१७} खिन'^{१८} एक'^{१९} छाँह । ६
 छाँह वैठि तरुवर कैं'^{१९}, पवन झरकि'^{१९} फुनि'^{१९} ताँह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) अहेरे । २-(ए०) उड़िहिं । ३-(बी०) देखि उत सै कीजे खाई । ४-(ए०) अह । ५-(बी०) कुँवरहिं अधिक वात मन भाई । ६-(ए०) उहि ठाँ सैं उन्ह किअेव पयानाँ; (बी०) निमख एक मँह किछु न जाना । ७-(ए०) रे । ८-(बी०) मर्म ठाँउ वह छाँड़ि पराना । ९-(बी०) वैसे ही । १०-(ए०, बी०) रे । ११-(ए०, बी०) आगे । १२-(बी०) आवै । १३-(ए०) आअेव; (बी०) आवा । १४-(बी०) भागी । १५-(बी०) सूर्ज । १६-(बी०) ताप । १७-(ए०) तापक हाथ यहि लागा; (वि०) लागी । १८-(ए०, बी०) तरवर । १९-(ए०, बी०) सोहावन ।

२०-(ए०) कह वैठों । २१-(ए०) खन । २२-(ए०) X । २३-(ए०) तरवर के;
(बी०) तरवर की । २४-ए० पौन शरक; (बी०) पौन छुरकै । २५-बी० X ।

टिप्पणी—(२) पयानाँ-प्रयाण । परानाँ-भागा ।

(५) धाम-धूप ।

(६) तरुवर-वृक्ष ।

(७) ताँह-वहाँ ।

१९२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति' जो उहाँ^१ सेउ^२ आई । सखी सहेली पूछै^३ धाई ॥१
पूछत^४ सखी कवन^५ वहि^६ आही । जैं र^७ चीर^८ तुम्ह^९ लेंउ^{१०} जाही^{११} ॥२
किह^{१२} कारन कहुँ^{१३} लेतसि^{१४} चीरू । विनु संबन्ध^{१५} कोइ गहै न खीरू ॥३
किहै^{१६} खोज^{१७} हम सेउँ^{१८} तुम रहेउ^{१९} । सपत आह^{२०} जो फुर न^{२१} कहेउ^{२२} ॥४
हँसि कै^{२३} कहिसि सुनहु यह^{२४} बाता । अब न छुपाओं^{२५} कहउँ^{२६} निराता ॥५
जिह^{२७} दिन तुम्हरे^{२८} साथ होइ^{२९}, सरवर गइउँ^{३०} नहाय^{३१} ।
तिह^{३२} अगुमन^{३३} घर आयँहु^{३४} महि^{३५} तज^{३६}, हौँ उँहि^{३७} परेउ^{३८} भुलाय^{३९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) मिरगावती । २-(ए०) इहाँ । ३-(ए०) सौं; (बी०) तैं । ४-(ए०)
पूछहि । ५-(ए०) पूछहि; (बी०) पूछै । ६-(ए०, बी०) कौन । ७-(ए०) उवह; (बी०)
वह । ८-(ए०) रे; (बी०) जेइ रे । ९-(बी०) खीरू । १०-(ए०, बी०) तोह । ११-
(ए०) लीन्हेव; (बी०) लिहेसि । १२-(ए०, बी०) चाही । १३-(ए०, बी०) केहि ।
१४-(ए०, बी०) कह । १५-(ए०, बी०) लीतिसि । १६-(ए०, बी०) सनमंघ । १७-
(ए०) किहि । १८-(ए०) कौँछ; (बी०) ओझ । १९-(ए०) तोह हम सौ रहहु;
(बी०) हमसे तुम रहहु । २०-(बी०) आहि । २१-(ए०, बी०) नहिं । २२-
(ए०, बी०) कहहु । २३-बी० X । २४-(ए०) अह; (बी०) हम । २५-(ए०, बी०)
छपावों । २६-(ए०, बी०) कहों । २७-(ए०, बी०) जेहिं । २८-(ए०, बी०)
तोहरे । २९-(ए०, बी०) हौँ । ३०-(ए०) खोरँ गइउँ । ३१-(बी०) अन्हाइ ।
३२-(ए०, बी०) तोह । ३३-ए० अगमनि; (बी०) अगमनहिं । ३४-(ए०)
आइहुँ; (बी०) आयेहु । ३५-३६-(ए०, बी०) X । ३७-(ए०, बी०) उँह । ३८-
(ए०, बी०) परिउँ । ३९-(ए०) भुलाए; (बी०) भुलाइ ।

टिप्पणी—(५) निराता-सविस्तार ।

(७) अगुमन-पहले । हौँ-मैं । उँहि-वहाँ ।

१९३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आवत उहेंउ^१ कुँवर एक देखा । जिउ वहि^२ लाग चित्र चित रेखा^३ ॥१
 मिरगि छया धरि देखै लागेउ^४ । वहि^५ देखाइ^६ आगें होइ^७ भागेउ^८ ॥२
 वैं^९ मुहि^{१०} देखि^{११} कियउ^{१२} गुहनारा^{१३} । धरै न दियेउँ^{१४} बियोग सँचारा^{१५} ॥३
 वहि र^{१६} मान हों गयउँ^{१७} बिलाई^{१८} । जिह^{१९} सरवर तुम्ह^{२०} गँइह^{२१} नहाई^{२२} ॥४
 जिउ न रहै लुवधी हों^{२३} भई । कै मिस^{२४} तुम्ह^{२५} साथ लइ^{२६} गई ॥५
 खोरत तुम्ह^{२७} जो कहा मुहि^{२८} आगै, मँदिर आह यह काह^{२९} । ६
 उहै^{३०} मँदिर उन्ह साजा^{३१}, निसि दिन बैठ पन्थ ह्म^{३२} चाह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) अहिउँ; (बी०) ही । २-(ए०) उहि; (बी०) ही । ३-(ए०) चित
 चितरेखा; (बी०) चित चिन्ता राखा । ४-(ए०) लागेव; (बी०) लागिव । ५-
 (ए०, बी०) अहि । ६-(ए०) देखाए; (बी०) देखाय । ७-(ए०, बी०) भै ।
 ८-(ए०, बी०) भागिव । ९-(ए०) उए; (बी०) वहि । १०-(ए०, बी०) मोहि ।
 ११-(बी०) देख । १२-(ए०) कीन्ह; (बी०) कीहि । १३-(ए०) गोहनारा;
 (बी०) गोहारी । १४-(ए०) देउ । १५-(बी०) संचारी । १६-(ए०, बी०)
 उहि रे । १७-(ए०) गइउँ; (बी०) गई । १८-(ए०, बी०) जेहि । १९-(ए०, बी०)
 तोह । २०-(ए०) गइहु; (बी०) गई । २१-(बी०) अन्हाई । २२-(ए०, बी०)
 लुवधी । २३-(ए०) मिसि; (बी०) मिसु । २४-(ए०) तोहहि; (बी०) तुम्हहि ।
 २५-(ए०, बी०) लै । २६-(ए०) तोहि; (बी०) तो तुम । २७-(ए०) मोहि;
 (बी०) ह्म । २८-(बी०) मँदिर जो वह आह । २९-(बी०) वहरे । ३०-(बी०)
 रचाया । ३१-(ए०) मम ।

टिप्पणी—(१) उहेंउ—वहीं ।

(२) छया—छद्मवेश । धरि—धारण कर ।

(३) गुहनारा—साथ । धरै—पकड़ने । सँचारा—संचार किया ।

(४) बिलाई—लुप्त । गँइह—गयी थीं । नहाई—स्नानार्थ ।

(५) मिस—बहाना ।

१९४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हम नहाइ^१ [उठि घर^२] कहँ आई । वहि^३ कहँ मन्त्र दीन्हि^४ यह^५ धाई ॥१
 जो र^६ गगन चढ़ि सातों धावहु^७ । चीर लिहैं विनु^८ वहँ नहिँ^९ पावहु ॥२
 वहि कै मन्त्र गहसि^{१०} हम चीरू^{११} । आपुन^{१२} आनि दिहसि^{१३} हम^{१४} खीरू^{१५} ॥३
 लइके^{१६} चीर छुपायसि^{१७} तहाँ । ठाँव न देखों^{१८} पावों^{१९} जहाँ ॥४

पुनि रस बात किहिसि^{११} रंग^{१२} कीजे। नारंग^{१३} बेठ^{१४} बास^{१५} रस लीजे ॥१॥
 में^{१६} वहि^{१७} सों अस बोला^{१८} यह^{१९} कहै^{२०}, जीह^{२१} खाँडि मरि जाउँ^{२२} ॥६॥
 जो यह^{२३} बात सँचारहु^{२४} परसेउ^{२५}, तो हों खिन न जिआउँ ॥७॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) अन्हाइ। २-(दि०) घर उठि। ३-(ए०) बोहि; (बी०) उह। ४-
 (बी०) कहँ। ५-(ए०) दीन; (बी०) दीन्हेउ। ६-(ए०) अक, (बी०) X।
 ७-(ए०, बी०) रे। ८-(बी०) धावा। ९-(बी०) धावसि। १०-(बी०) बाजु।
 ११-(ए०) उनहि न; (बी०) वहिन। १२-(बी०) लिहिसि। १३-(बी०) चीरा।
 १४-(ए०, बी०) आपन। १५-(ए०) दिहिसि। १६-(ए०) एक। १७-(बी०)
 आनि दिहिसि मोहि आपन खीरा। १८-(ए०, बी०) लेके। १९-(ए०, बी०)
 छपाइस। २०-(बी०) देखै। २१-(बी०) जाई। २२-(ए०) विन। २३-(ए०)
 कहेसि। २४-(बी०) रस। २५-(बी०) नार। २६-(ए०) बेइल; (बी०) बेलि।
 २७-(बी०) बासु। २८-(ए०) मइ। २९-(ए०) बोहि; (बी०) उन्ह। ३०-
 (ए०) बोल; (बी०) बोली। ३१-(ए०) X, (बी०) एहि। ३२-(ए०) X;
 (बी०) खन। ३३-(ए०) जीम; (बी०) जीमि। ३४-(बी०) जाँव। ३५-(ए०)
 असि। ३६-(ए०, बी०) सँचारसि। ३७-(ए०) X; (बी०) बरसे। ३८-(बी०)
 जियाँव।

टिप्पणी—(१) मन्न-सलाह।

१९५

(दिल्ली; बीकानेर)

पुनि में एक^१ बात^२ वहि^३ कही। तैं अवहीं बिरसेउँ हों^४ वही ॥१॥
 [जो] पर^५ करसु^६ तो र^७ जीउ दिवाऊँ^८। रस पिय मिलों^९ हों र^{१०} तुम्ह^{११} सँऊँ ॥२॥
 कहिसि कहा न मेटों^{१२} तोरा। यह र कहसि^{१३} ओं हाथ सँकोरा ॥३॥
 तो मैं कहा सुनहु एक^{१४} वाता। आवइ^{१५} देहु हमार सँघाता ॥४॥
 उन्ह सेउ^{१६} माँग लेहु तो पावहु। तो^{१७} हम सेज खन^{१८} रस रावहु ॥५॥
 जो मैं कहा सो मानसि^{१९} हरका^{२०}, फिर^{२१} न माँगसि^{२२} सेज ॥६॥
 माँस पाँव एक ठाँइ^{२३} अहै^{२४}, जस सूरज दर पेज^{२५} ॥७॥

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-पुनि। २-X। ३-बात तो। ४-बोहि से। ५-तौ। ६-हों बर सँउ। ७-
 बर। ८-करहु। ९-रे। १०-देऊँ। ११-रस पेमी लो। १२-X। १३-तुम।
 १४-मेटों नहि। १५-यहै कहिसि। १६-यह। १७-आवै। १८-उन। १९-
 तोरे। २०-खनि। २१-मानिसि। २२-X। २३-बहुरि। २४-माँगिसि।
 २५-ठाउँ आये हैं। २६-जस मन दिया तेल।

टिप्पणी—(३) मेटों-मिटाऊँ । सँकोरा-संकुचित कर लिया; खाँच लिया ।

(४) सँघाता-साथी ।

(५) रवन-रमण ।

(६) हरका-पीछे हटा ।

१९६

(दिल्ली)

फुनि बैठि कहँ बतैं बढावा । गयउ छाड़ि छिन एक पावा ॥१
 धाइ एक हम राखसि राँधा । मैं उहिँ सों बातहिँ जिउ बाँधा ॥२
 बातहिँ लाइ मैं र बोराई । काज करै कै अन्त पठाई ॥३
 तौलहि चीर हूँढ़ मैं लिया । पहिर चीर धारेउ नौ तिया ॥४
 नाउँ धाइ सों पिता क लीन्हों । अउर चिन्ह कंचनपुर दीन्हों ॥५

औ अस कहेउँ जो कुँवर सँउ, जो लुवधी हम पेम ॥६

कंचनपुर आवइ हम लग, उहै औधि इह नेम ॥७

टिप्पणी—(१) बतैं-बातैं ।

(२) राँधा-पहरेदार ।

(३) अन्त-अन्यत्र । पठाई-भेजा ।

(४) तौलहि-तवतक ।

(७) नेम-संकल्प ।

१९७

(दिल्ली)

जो कुछ अहा मरम सो कहा । लुबुधा जिउ अब जाइ न रहा ॥१
 जेहि का मरम कहेउँ तुम्ह आगे । आइहि इहाँ हमरेउ लागे ॥२
 कहा सहेलिह जो अस आहा । तवहीं काह न हम सेउ कहा ॥३
 उन्ह मँह एक जो अही सयानाँ । खेलसि पेम कहै भल जानाँ ॥४
 कहिसि पेम का जानसि भोली । हौँ तिह कहीं पेम रस घोली ॥५

घिरत खाँड सेउ करहु मेरावा, अमिय महारस लेहि ॥६

पेम भुअंगम कसि हिय कह, गई छाड़ न देहि ॥७

टिप्पणी—(२) हमरेउ-मेरे । लागे-निकट ।

१९८

(दिल्ली)

जो तुम्ह आह पेम कै साधा । आपु खाँड करहु दोइ आधा ॥१
 पेम सवाद सोइ लै वृझा । आपु मीत अहै ये सूझा ॥२

वहँ हरख वस पेम न होई। जिउ जो देइ पावइ सोई ॥३
पेम उतंग ऊँच कर आहा। वाउर सोइ जो विनु दुख चाहा ॥४
पेम खेल जो चाहै खेला। सर सँउ खेल जिउ पर हेला ॥५
कुतुवन कंगूरा पेम का, ऊँचा अति र उतंग ॥६
सीस न दीजै पाउ तर, कर न पहुँचै खंग ॥७

टिप्पणी—(१) साधा-इच्छा।

(३) उतंग-उत्तंग, ऊँचा।

१९९

(दिल्ली; बीकानेर)

पिरिति^१ किही तिह^२ करै न जानीं। पेम लाइ कस भयसि^३ अयानी ॥१
जो र मिरग^४ वाउर^५ पर^६ फाँदै। छाड़ि बहेलिया^७ विनु वह वाँधै ॥२
वाउर सोइ जो द्वाथ^८ से छाड़ा^९। पेम भँवर^{१०} धिर रहै न गाढ़ा^{११} ॥३
पेम जो आह बहुत दुख पाई। दुख कै मिलै सो संपत उड़ाई^{१२} ॥४
अबहूँ खोज परहुँ^{१३} वह करै^{१४}। जिय न^{१५} जाइ सो^{१६} मिलै^{१७} सोवेरै^{१८} ॥५
ऐसहि आगि जरत हूँ^{१९} उर मँह^{२०}, मै मेलेउ घिउ तेल^{२१} ॥६
पेम गहँन^{२२} सब खेल सँउ, जो र सँभारै^{२३} खेल ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-प्रीति। २-तुम। ३-भइहु। ४-मिगा। ५-वाव। ६-परै। ७-बहेली। ८-
तेहि विनु छाँडे। ९-हाथै। १०-छाँडै। ११-भाव १२-गाड़े। १३-पूरी पंक्ति नहीं
है। १४-करहु। १५-बोहि केरा। १६-जीवन। १७-फुनि। १८-मेलै।
१९-सवैराँ। २०-अही। २१-महि। २२-तुम्ह मेलेउ दिया तेल। २३-कठिन।
२४-सँभारै।

टिप्पणी—(१) अयानी-अज्ञानी।

२००

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पेम आइ किह^१ रहै सँभारा^२। गहे नेह आपु नाँहि सँहारा^३ ॥१
कै^४ उपकार करहु^५ जो पारहु। प्राण पयान करत र^६ सँभारहु ॥२
भई^७ असाध जो र^८ उपचारा^९। रुगिया तिह र^{१०} वैद का करा^{११} ॥३
मिरगावत सेउँ^{१२} कहहि सहेलीं। देवस चार एक रहहु दुहेलीं ॥४
भूखै अम्ब^{१३} न पाकै बारा। दिन दस वृक्षि^{१४} करहु सहारा^{१५} ॥५

१-सम्मेलन संस्करणमें इस पंक्तिके छुप्त होने की बात कही गयी है। किन्तु माताप्रसाद गुप्त-
का कहना है कि बीकानेर प्रति में यह पंक्ति है। (भारतीय साहित्य, वर्ष ८ अंक ३, पृ० ९०)

दिन दस तुम र^१ सहारहु^२ हम उटवहि^३ उपकार ॥६
हंस दमावति सेउँ नल^४ मिरवहि^५ करकर होइ^६ उजियार^७ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) प्रेम आय कहँ । २—(बी०) पेम आय मन परेउ खभारा । ३—(ए०) किहे नेह अव नाहि सहारा; (बी०) यह जिउ मैं अव तुम्हहि उभारा । ४—(ए०, बी०) कुछु । ५—(बी०) करै । ६—(ए०) जो; (बी०) × । ७—(ए०) मैअ; (बी०) मुये । ८—(ए०, बी०) रे । ९—(ए०, बी०) उपचारा । १०—(ए०) रोगिया तेहि रे; (बी०) सो रोगिया । ११—(बी०) करई । १२—(ए०, बी०) भिरगावती सौं । १३—(ए०) आँव; (बी०) अव । १४—(ए०) बृशहु । १५—(ए०) सभौरा; (बी०) अहारा । १६—(ए०, बी०) तोह रे । १७—(बी०) सहरहु । १८—(ए०) सौं नल; (बी०) नल जेउँ । १९—(ए०, बी०) मेरवहि । २०—(ए०) होए; (बी०) होय । २१—(ए०, बी०, दि०) मार्जिन) अधार ।

टिप्पणी—(३) असाध—असाध्य ।

(३) दुहेलीं—दुःखी ।

(५) अम्ब—आम । पाकै—पके । बारा—बाग । बृश—समझकर ।

२०१

(दिल्ली; बीकानेर)

रूप मुरारि^१ भइ पुरि^२ आसा । कीत^३ पयान गये कविलासा ॥१
वै तो सुरपति सभा सिंधारे । मंती^४ लोग मतैं वैठारे^५ ॥२
पूत नाहि^६ जिह^७ राज उभारी । कहहु काह^८ किह^९ तिलक सँवारी^{१०} ॥३
मंती^{११} लोग मतैं^{१२} अस आवा । मिरगावतिह^{१३} राज वैठावा^{१४} ॥४
तिलक सारि^{१५} कै कियउ जुहारू^{१६} । मिरगावतिह^{१७} राज दइ भारू^{१८} ॥५
आन^{१९} भई सव देस नगर^{२०} मँह, मिरगावति कर^{२१} राज ।६
महतैं नेगी आइ^{२२} जहवाँ लहि^{२३}, लागि सँवारे^{२४} काज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—रूपमुरारिह । २—पुरि । ३—किता । ४—महते । ५—वैसारे । ६—न आहि । ७—जेहि । ८—केहि । ९—कँह । १०—सारी । ११—महतै । १२—मता । १३—भिरगावती कह । १४—वैसावा । १५—साजि । १६—कियेउ जुहारा । १७—भिरगावती । १८—दिय भारा । १९—आनि । २० × । २१—भिरगावती का । २२—अहे । २३—जहाँ लहु । २४—लगे चलावै ।

टिप्पणी—(१) भइ—हुई । पुरि—पूरि । कीत—किया । पयान—प्रयाण । कविलासा—स्वर्ग ।

(२) वै—वे । सुरपति—इन्द्र । मंती—मन्त्री ।

- (३) उभारी—ऊपर उठायेगा ।
 (५) सारि—सजाकर । जुहारू—अभिवादन ।
 (६) आन—ख्याति, प्रसिद्धि ।
 (७) महतै—(महत्) बड़ा, श्रेष्ठ । माताप्रसाद गुप्तने मधुमालतीमें इसको महा-
 मात्य (महँत > महँता > महामात्य) बताया है और शिवगोपाल मिश्रने इसका
 अर्थ प्रधान मंत्री किया है । किन्तु इसका तात्पर्य किसी पद विशेषसे न होकर
 राज्यके उच्च कर्मचारियोंसे है । नेगी—साधारण कर्मचारी । जहवाँ लहि—
 जहाँ तक ।

२०२

(दिल्ली; बीकानेर)

पुन धरम सब देस चलावा । धरमसार^१ बहु नगर^२ उचावा ॥१
 अग्या पौ भोजन कै भई । जोगी जंगम जो आवई ॥२
 पन्थी जो ईह पंथ चल आई^३ । हम कहँ गुदर^४ देह तो जाई ॥३
 जती सन्यासी जो कोउ^५ आवइ । बात सुने कहँ पास^६ बुलावइ ॥४
 पहिलै पूछहि अउर कछु^७ वाता । पुनि^{१०} चन्द्रागिरि^{११} कुसल नवाता^{१२} ॥५
 दुनि^{१३} कै चाह लेत दिन कहँ^{१४}, पूछै^{१५} कोइ^{१६} आइ को जाइ । ६
 आसा^{१७} लुबुर्धा पूछइ सो वहँ^{१८}, मकुँह मिलै वह आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

- १—धर्मसार । २—एक नीक । ३—अन भोजन पौ की । ४—जती सन्यासी जोगी जो
 आवइ । ५—गूदर । ६—जावइ । ७—जोगी जो । ८—कहुँ राध । ९—और किलु ।
 १०—पुनि । ११—चंदागिरि । १२—कुसलता । १३—दिन । १४—रहई । १५—X ।
 १६—को । १७—अस । १८—पूछै पंथ कहँ । १९—मकहुँ ।
 टिप्पणी(१) पुन—(पुन) पुण्य । धरमसार—धर्मशाला । उचावा—निर्माण कराया ।
 (२) अग्या—आज्ञा । पौ—पय, पानी । भई—हुई ।
 (३) गुदर—सूचना ।
 (६) दुनि—दुनिया । चाह—जानकारी ।
 (७) मकुँह—कदाचित् ।

२०३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर जो छाँह विरिख तर^१ आहा । कहसि जाँउं^२ बैठों अब^३ कहाँ ॥१
 उठत दीठि^४ ऊपर कहँ गई^५ । डालिह पंखि दोइ बोलई^६ ॥२
 पेम कथा उन्ह सुरस^७ सँचारी । कुँवर कान दई^८ बात उन्हारी ॥३
 दोउ^९ आपु मँह बकतहिं वाता । कुँवर एक मिरगावति राता ॥४

अबलहिं वैं र^० बहुत दुख देखी^१। गागर^२ मसि न जाहिं लेखी^३ ॥५
 अब र^१ अलप दिन आहहि^४ दुखकै^५, सुख देखिह^६ बहु भाँत^७ ॥६
 बहुरे विवि घर^८ चलि गये^९, अब होइहि मन साँत^{१०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

२-(बी०) की। २-(ए०, बी०) चलें। ३-(ए०, बी०) अब बैठों। ४-डीठि।
 ५-(बी०) चलै जो ऊपर परि गई डीठी। ६-(ए०) डारी पंखी दुइ बोलै लई;
 (बी०) डारि पंखि दुइ बोलें बैठी। ७-(ए०) उन्हि सुरस; (बी०) रसारस। ८-
 (ए०, बी०) दै। ९-(ए०, बी०) दुवौ। १०-(ए०) उए रे; (बी०) उई रे। ११-
 (ए०) देखे; (बी०) देखा। १२-(बी०) कागर। १३-(बी०) जाइ नहिं लेखा;
 (ए०) पैहे पेंम प्रान सरेखे। १४-(ए०, बी०) रे। १५-(बी०) अहहिं। १६-
 (ए०) ×। १७-(बी०) देखी। १८-(ए०, बी०) भाँति। १९-(बी०) बहुत विव
 खर; २०-(ए०) बहुत दुख उन्ह देखे। २१-(ए०, बी०) साँति।

टिप्पणी—(१) बिरिख-वृक्ष। तर-नीचे।

(२) दीठि-दृष्टि। डालिह-डालीपर। बोलई-बोलते हुए।

(५) गागर-घड़ा। मसि-स्याही।

(६) अलप-(अल्प) थोड़ा।

२०४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर बात यह सुनी सुहाई^१। भा अनन्द अस कही^२ न जाई ॥१
 मरत पियास पानि जनु^३ आवा^४। पेम घाइ^५ उन्ह औखद^६ पावा^७ ॥२
 जनु^८ दालदि^९ लछ^{१०} बहु पाई। खिन खिन^{११} रहसै अंग न समाई ॥३
 फुनि^{१२} तरुवर सेउँ पंखि^{१३} उड़ानी। कुँवर कहा अपनै मन जानी ॥४
 अब^{१४} जिह^{१५} दिसि ये^{१६} जाहिं उड़ाई। हमहु पाछु^{१७} उन्ह लागहु^{१८} घाई ॥५
 चला पाछु^{१९} उन्ह^{२०} केरे धावत^{२१}, सरग नैन दोइ^{२२} लाइ ॥६
 काम दगध^{२३} साँचे^{२४} जन भौ^{२५}, तिह^{२६} गये^{२७} सो पन्थ दिखाई^{२८} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) सोहाई। २-(ए०, बी०) कहा। ३-(ए०) जनि; (बी०) जनौ।
 ४-(ए०, बी०) पाव। ५-(ए०) घाव। ६-(ए०) उन्हि औखद; (बी०) औखद
 जनौ। ७-(ए०, बी०) लावा। ८-(बी०) जानहु। ९-(ए०) दारिद्री; (बी०)
 दलिद्री। १०-(बी०) लछ। ११-(ए०, बी०) खन खन। १२-(ए०) अमी;
 (बी०) पुनि। १३-(ए०, बी०) साँ पंखी। १४-(ए०) जोव अे। १५-(ए०, बी०)
 जेहि। १६-(ए०) ×। १७-(बी०) पाछु। १८-(ए०) लागहि। १९-(बी०)
 पाछु। २०-(बी०) उन्हि। २१-(ए०, बी०) ×। २२-(ए०, बी०) दुई। २३-

(ए०, बी०) दगधि । २४-(ए०) साचहि; (बी०) जरि । २५-(ए०) जन गये;
(बी०) फूटहिं । २६-(ए०, बी०) × । २७-(बी०) गई । २८-(ए०, बी०)
देखाय ।

टिप्पणी—(३) दालदि-दरिद्र । लछ-लक्ष; लाख ।

(५) हमहु-मैं भी । पाछु-पीछे ।

(६) धावत-दौड़ते हुए । सरग-स्वर्ग; यहाँ तात्पर्य है—ऊपर ।

२०५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चला जाइ मारग इक^१ पावा । कहिसि जाँउ यँहि मारग धावा ॥१
आगों^२ दिस्टि परी लखराऊँ । कहिसि गाँउ^३ होइहि यहि ठाँउँ ॥२
गहगहाइ खिन खिन जिउ रहई^४ । कहिसि कंचनपुर इहवै अहई ॥३
पैठि देखि लखराऊँ सुहाई^५ । पाँत^६ बराबर चहुँ दिसि लाई ॥४
पात घास^७ कै चिन्ह^८ न पाई^९ । भात बखीर^{१०} जानु तिह^{११} खाई^{१२} ॥५
रूपा^{१३} ढारि जानु^{१४} भुइ राखी, ऊँच न कितहू^{१५} खाल ।६
एक एक रूख सँवारहि बैटे^{१६} चँर-चँर^{१७} पँच-पँच माल ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) एक । २-(ए०) आगू; (बी०) आगे । ३-(बी०) गाँऊँ । ४-
(ए०, बी०) उठई । ५-(ए०, बी०) सोहाई । ६-(ए०, बी०) पाँति । ७-(ए०,
बी०) घास पात । ८-(ए०, बी०) चिन्ह । ९-(ए०) पाइय । १०-(ए०, बी०)
बखेरि । ११-(बी०) तहाँ जनौ । १२-(ए०) खाइय । १३-(ए०, बी०) रूप ।
१४-(ए०) जनु; (बी०) जनौ । १५-(ए०, बी०) कतहू । १६-(बी०) × ।
१७-(ए०) चरि चरि; (बी०) चारि चारि ।

टिप्पणी—(२) लखराऊँ-लक्षाराम; ऐसा बगीचा जिसमें लाख वृक्ष हो ।

(३) गहगहाइ-गद्गद् । खिन खिन-क्षण-क्षण । इहवै-यही । अहई-है ।

(५) भात-चावल । बखीर-खीर ।

(६) रूपा-चाँदी । ढारि-ढालकर । खाल-नीचा ।

(७) रूख-वृक्ष । चँर-चँर-चार-चार । पँच पँच-पाँच-पाँच । माल-माली ।

२०६

(दिल्ली; बीकानेर)

जँह लग विरिख^१ जगत मँह आहै^२ । देखी समै जाइ न^३ कहे ॥१
जो हम सवन^४ सुने न^५ काऊ । नाँउ कहाँ लहि^६ कहाँ सुभाऊ ॥२

१. इस प्रतिमें आरम्भकी तीन पंक्तियोंके साथ चार सर्वथा भिन्न पंक्तियाँ हैं जो हमारी दृष्टिमें प्रक्षिप्त हैं । इस प्रतिका पाठ दिल्ली प्रतिके मॉडिनमें भी है ।

फुनि° मालीं फुलवारि सँवारी । बहुत फूल फूलीं फुलवारी ॥३
 भँवर कुसुमँ पर केलि कराहीं । मालति बेलि नेवारिन जाई° ॥४
 कुन्द सेवती जूही रावइ । वाला चम्पा वारि मनावइ° ॥५
 सिरखँड सरवत बनो पकारू, मो इत दौनहि लाउ° ॥६
 मारो झरै हँसाइ हिय, नाँहुत मनहि सराउ° ॥७

पाटान्तर—बीकानेर प्रति—

१-द्विख । २-अहे । ३-नहिं । ४-सवन । ५-नहिं । ६-लहु । ७-पुनि । ८-
 मालिहु । ९-फूले । १०-परिशिष्ट १ में देखिये ।

टिप्पणी—(१) विरख-वृक्ष । सभै-सभी ।

(२) सवन-श्रवण । काऊ-कोई । नाँउ-नाम । सुभाऊ-स्वभाव ।

(४) कुसुमँ-कुसुम । मालती-सफेद रंगका फूल । बेलि-(बेइल-बेला) सफेद
 रंगका सुगन्धयुक्त फूल जो गरमीमें फूलता है । इसकी अनेक किस्म
 होती हैं—मोतिया, मोगरा, रामबेल । मोतियाको माधवी भी कहते हैं ।
 इसकी वाला लोगोंको विशेष प्रिय हैं । बेलिका तात्पर्य बेलीसे भी हो
 सकता है जो लाल फूलोंवाली एक लताका नाम है । नेवारन-(नेवारी)
 श्वेत फूल जो चैत्रमें फूलता है । सम्भवतः यह बेलका एक किस्म है ।

(५) कुन्द-सफेद रंगका छोटा सुगन्धयुक्त फूल जो अगहन-पूसमें फूलता है ।
 कवियोंने प्रायः दाँतोंके उपमानके रूपमें इसका उल्लेख किया है !
 इसका झाड़ होता है । सेवती-(सं० सेमन्ती अथवा शतपत्रिका > सय-
 वत्तिया > सहउत्तिया > सेउत्तिया > सेवती) सफेद गुलाब । अबुलफज्ज-
 ने इसे रायबेलसे मिलता-जुलता एक पत्तेका फूल बताया है । इसके पौधे-
 में एक साथ इतने फूल आते हैं कि वह टँक जाता है । जूही-(स० यूथिका;
 यूथी) यह भी सफेद रंगका फूल है । अबुलफज्जका कहना है कि यह तीन
 सालपर फूलती है । यह पेड़से लिपटकर बढ़नेवाली लता है । चम्पा—
 सुनहले रंगका तेज सुगन्धवाला फूल जो चैत्रमें फूलता है । इसका १०-
 १२ फुट ऊँचा वृक्ष होता है । कवियोंने नारी शरीरके रंगके उपमानके
 रूपमें प्रायः इसका उल्लेख किया है । कवि प्रसिद्धि है कि भौरा इस फूल-
 पर नहीं बैठता । यह भी कवि प्रसिद्धि है कि यह स्त्रियोंके हाथसे पुष्पित
 होता है ।

(७) दौनहि—(दौना) तुलसीकी जातिका पौधा जिसकी पत्तियोंमें सुगन्धि
 होती है ।

(७) नाहुँत—नहीं तो; अन्यथा । मनहि-मनमें ।

२०७

(दिल्ली; बीकानेर)

चुनहिं^१ केतकी पाँडर^२ करनाँ^३। केवइ हेत^४ वाजहिं^५ जनु वरनाँ^६ ॥१
 कहै चँवेली भँवरहिं^७ पाऊँ^८। नागेसर पर फूल चढ़ाऊँ^९ ॥२
 भुइँचम्पा^{१०} भुँइ रहा लजाई। जो गुलाल को जाकी^{११} आई ॥३
 पाँच वान कामथ कर तहाँ^{१२}। कनकबेल^{१३} फूली है जहाँ^{१४} ॥४
 कुसुम^{१५} फूल कहँ^{१६} कोइ न मानै^{१७}। भसल कीर सोर तिह सानै^{१८} ॥५
 कौतुक देखि भुलानेउ कुँवरा^{१९}, नित बहार^{२०} फुलवारि ॥६
 घनि जिउ मधुकर कै^{२१}, बिरसै वास माँत बिकरार^{२२} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-जहाँ। २-पंडर। ३-कर्ता। ४-केवहिं हेतु। ५-वाजु। ६-जेहमनाँ। ७-
 राऊ। ८-चम्पक। ९-कुंजल। १०-चम्प नगर मधुकर है जहाँ। ११-कनिक
 पियरि। १२-तहाँ। १३-कुसुमी। १४-कर। १५-जाना। १६-भसल कीरत
 रहा जो माना। १७-कुँवर। १८-अस्तल भइ। १९-कर। २०-वासु मालती
 करारि।

टिप्पणी—(१) केतकी—सफेद रंगका भीनी सुगन्धि वाला फूल जो आश्विनमें
 फूलता है। यह तलवारकी आकृतिका मोटा और नुकीला होता है। भ्रमरका
 केतकीके काँटेमें पँसना कवि-समय रहा है। पाँडर—(पाँडल) यह कोई अप्रसिद्ध
 फूल है। यद्यपि इसका उल्लेख सुरसागरमें मिलता है (३५२१)। अबुलफजल-
 के कथनानुसार यह पाँच-छ लम्बी पंखुड़ियोंवाला फूल है जिससे जलको
 सुगन्धित करते हैं। यह हर मौसममें फूलता है। करनाँ—हिन्दी शब्दसागरके
 अनुसार सफेद फूलोंवाला पौधा जिसके पत्ते केवड़ेकी तरह लम्बे किन्तु बिना
 काँटोंके होते हैं; सुदर्शन। आइने अकबरीमें इसे बसन्तमें फूलनेवाला सफेद
 फूल बताया गया है।

(२) चँवेली—चमेली। सफेद रंगका फूल। इसे संस्कृत में जाती अथवा मालती
 कहते हैं। नागेसर—(सं० नागकेसर) बसन्तमें फूलनेवाला लाल फूल जिनमें
 पाँच पंखुड़ियाँ होती हैं।

(३) गुलाल—अबुलफजलके कथनानुसार बसन्तमें फूलनेवाला फूल।

(४) पाँचवान—पंचवाण; कामदेवका अस्त्र। कामथ—कामदेव।

(५) मधुकर—भ्रमर। बिकरार—(फा० वेकरार) विकल।

२०८

(दिल्ली; बीकानेर)

पेसी^१ फुलवारी आह^२ सुहाई^३ देखत रहा^४ कहै^५ न^६ जाई ॥१
 सबै फूल परिमल^७ कै^८ कहै^९। औ परिमल बिनु ते सब अहै^{१०} ॥२

सदल^१ सरूप फूल^२ बहु^३ फूले । भँसल वास रस जिह कँह^४ भूले ॥३
 बहुत पुहुप को जानै नाऊँ । देखत रहा अपूरव ठाऊँ ॥४
 जे र^५ फूल देखे औ सुने । कवि जो सुहानी^६ ते सब कहे ॥५
 जे^७ कवि आइ समानी जातो^८, सरबस कहेउँ विरवान^९ ॥६
 और फूल बहु आहहि^{१०} जग महुँ, तिह क^{११} नाँउ को जान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-अस । २-अही । ३-रहै । ४-कहै । ५-ना । ६-अमिय । ७-कर अहै ।
 ८-कहे । ९-सुदल । १०-फूल सरूप । ११-सब । १२-जेही । १३-जोरे ।
 १४-समाने । १५-जो । १६-समाने जाने । १७-(दि० मार्जिन) सरबस बरन
 के ते विरवान; (बी०) सो सराहे परवान । १८-अहे । १९-तिन्ह कर ।

टिप्पणी—(२) परिमल-सुगन्ध ।

(३) भँसल-बसा हुआ । वास-गन्ध ।

(६) सरबस-सभी । विरवान-पौधे ।

२०९

(दिल्ली; बीकानेर)

आगों^१ आइ जो देखी^२ बाई^३ । रहँट चलहिं सींचहिं अँबराई^४ ॥१
 कुँआ पानि गुन वाच^५ न देहीं । जिह कर गुन ते भरि भरि लेहीं ॥२
 सरब सुनै कर देखिसि कोटा । कहिसि कंचनपुर इहवै^६ खोंटा ॥३
 चित कै^७ चोर आहँहि^८ यहिं^९ गाँऊँ । पायँउ खोज सोइ^{१०} यहिं^{११} ठाऊँ ॥४
 पूछउँ लोगहिं दइ^{१२} पहुँनाई^{१३} । धरों जाइ जैसहिं नियराई^{१४} ॥५
 कहिसि पूछि कै^{१५} लोगहिं देखउँ^{१६}, नगर कउन इह आह^{१७} ॥६
 जो हो यह कंचनपुर को काँटा, फिरउँ लेउँ वह चाह^{१८} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-आगे । २-देखै । ३-बाजु । ४-यहवै । ५-का । ६-अहै । ७-इहि । ८-सो
 रे । ९-X । १०-देस पताई । ११-जैसे न पराई । १२-X । १३-देखउँ
 लोगन्ह कहँ । १४-कवन नाउँ एहि गाँउ । १५-जो इह होइहिं कंचनपुर साँचेहु,
 खोज लेउँ उहि जाइ ।

टिप्पणी—(१) आगों-आगे । बाई-वापी; कुआँ । रहँट-पानी निकालनेका यन्त्र ।
 अँबराई-आम्राराम; आमका बगीचा ।

(३) सरब-सर्व; सभी । सुनै-सोना । कर-का । कोटा-कोट । खोंटा-दुर्गुणी ।

२१०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँआ तीर आही^१ पनिहारी । पूछों नगर को र पतिभारी ॥१
 कुँआ तीर आयउ र^२ सुजाना । पनिहारिह^३ कँह देखि भुलाना^४ ॥२

जिह र गाँउ मँह^१ अइस^२ पनिहारीं । राजकुँवरि कस^३ होहिह^४ बारीं ॥३
 सिघल दीप इहँहि^५ जनु^६ आवा^७ । पदुमिनि रूप विसेखहिं^८ भावा ॥४
 पूँछिसि कवन नगर इह^९ आही । राजपति^{१०} यहि^{११} बोलहिं काही ॥५
 कहहिं^{१२} राज मिरगावति कर^{१३}, औ^{१४} कंचनपुर जग भान ॥६
 जोगी जती संन्यासी^{१५} आवइं^{१६}, तिहि क^{१७} इहाँ बड़ मान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) अही । २-(ए०) आयेव रे; (बी०) आयेव । ३-(ए०) पनिहारिन्ह ।
 ४-(ए०) लोमाना । ५-(ए०) जेहि रे गाँव हहि अस; (बी०) जेहि रे गाँव महि
 ऐसी । ६-(बी०) कसि । ७-(ए०) होइ; (बी०) होइहि । ८-कुआरी ।
 ९-जनु इहँवै । १०-(ए०, बी०) छावा । ११-(ए०) विसेखी; (बी०) विसेखै ।
 १२-(ए०) कौन नगर यह; (बी०) नगर कौन वह । १३-(बी०) राजपति ।
 १४-यह । १५-(ए०, बी०) कहिन्हि । १६-(ए०) केर; (बी०) केरा । १७-X ।
 १८-(बी०) सन्यासी जो । १९-(ए०) आवैं; (बी०) आवहिं । २०-(ए०)
 तेहि क; (बी०) तिन्ह कर ।

टिप्पणी—(१) पति—स्वामी ।

(२) बारीं—बाला ।

(४) सिघल दीप—सिंहल द्वीप । पदुमिनी—पद्मिनी जाति की स्त्री । विसेखहिं—
 विशेष; अधिक ।

(५) राजपति—राजा ।

(६) भान—प्रकाशमान ।

२११

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

मिरगावँति सुनि जिउ^१ रहसाई । काँमा जनु^२ माधोनल^३ आई^४ ॥१
 विहसा^५ नाँ^६ सुनत मिरगावति^७ । नल^८ जानो^९ भँटी र^{१०} दमावति^{११} ॥२
 कहिसि^{१२} जाउँ अब नगर मझारीं । मकुहि^{१३} चाह कोउ^{१४} कहै हमारीं^{१५} ॥३
 चलिके कुँवर पँवरि नाँधि^{१६} जो आवा । कनकपात^{१७} सब रतन^{१८} जड़ावा^{१९} ॥४
 फुनि जो आयउ^{२०} नगर मँझारी । वैठि^{२१} नरिन्द महाजन भारी^{२२} ॥५
 छतीस कुरी बनजार खुदाई, औ छाई वैपारि^{२३} ॥६
 मण्डप^{२४} देखि धौराहर देउर^{२५}, पाप झरैं सब छारि^{२६} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(का०) जिअ । २-(बी०) जनौ । ३-(का०) माधवानल । ४-(का०, बी०)
 पाई । ५-(का०) विहँसि । ६-(का०) नाम । ७-(बी०, का०) सुनि मिरगावती ।
 ८-(का०, बी०) नल । ९-(का०) जनु । १०-(का०, बी०) X । ११-(का०,
 बी०) दमावती । १२-(का०, बी०) कहेसि । १३-(बी०) मकहु । १४-(बी०)

कोई । १५—(का०) वैसे नरिंद महाजन भारी । १६—(का०, बी०) × । १७—(बी०) कनिक ईट; (का०) कनक पत्र । १८—(का०) जनु । १९—(बी०, का०) जरावा । २०—(बी०) आवै । २१—(बी०) बैठे । २२—(का०) पूरी पंक्ति का अभाव । २३—(बी०) बहु बनिजारे खौंघइ छाये, छत्तीसौ कुरी व्यौपारि; (का०) छत्तिस कुलि बनिजारा, वैसे करहिं वैपार । २४—(का०, बी०) मंदिर । २५—(बी०) देव; (का०) × । २६—(बी०) देखत पाप झरि जाइ; (का०) पाप हरइ सब शार ।

टिप्पणी—(१) काँमा—कामकन्दला । माधोनल—माधवानल । कामकन्दला—माधवानल एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा है । यह कथा इस प्रकार है—पुष्पावती नगरमें कामसेन (गोपीचन्द)के राज्यकालमें माधव नामक एक सुन्दर ब्राह्मण रहता था । उनके रूप सौन्दर्यपर वहाँकी सभी नारियाँ मुग्ध र्था । इस कारण राजाने उसे अपने राज्यसे निकाल दिया । वह घूमता-घामता अमरावती (कामावती) पहुँचा । वहाँ वह प्रवेश द्वारपर ही रोक दिया गया । द्वारपर ही खड़ा-खड़ा भीतर बजनेवाले मृदंगमें दोष निकालने लगा । तब राजा उसके गुणोंके प्रति आकृष्ट हुआ और उसे अपने दरवारमें रख लिया । एक दिन सुप्रसिद्ध वेदया कामकन्दला राज-दरवारमें नृत्य करने आयी । कामकन्दलाके नृत्यपर मुग्ध होकर माधवानलने उसे राजासे प्राप्त पानका बीड़ा दे दिया । कामकन्दला माधवके प्रति आकृष्ट हुई और दोनों एक-दूसरेपर अनुरक्त हो गये । राजाने इससे अपमानित अनुभव किया और उसे अपने राजदरवारसे निकाल दिया । माधव वहाँसे निकाले जानेके बाद उज्जैन पहुँचा और अपनी प्रेम-कहानी एक मन्दिरके दीवालपर लिख दिया । राजा विक्रमने उसे देखा और पढ़ा और उसके लेखकको ढूँढ़ निकाला । माधव-कामकन्दलाके प्रेमकी बात जानकर विक्रमने कामसेन (गोपीचन्द) को कामकन्दलाको माधवको दे देनेके लिए लिखा । जब उसने देनेसे इनकार किया तो उसके विरुद्ध युद्ध ठान दिया । पश्चात् उन्होंने दोनोंके प्रेमकी परीक्षा ली । कामकन्दलासे कहा कि माधव मर गया और इसी प्रकार माधवसे कामकन्दलाके मृत्युकी बात कही । दोनों अपने प्रेमीकी मृत्यु सुनकर चेतनाहीन हो गये । वैतालने आकर उन्हें जिलाया और उन दोनोंका विवाह करा दिया ।

इस कथाके आधारपर १३०० ई० में आनन्दधरने कामकन्दला नाटक लिखा । पश्चात् १५२८ ई० में गुजरातीमें माधवानलदोग्धक प्रबन्ध लिखा गया । तदनन्तर कुशलाभने माधवकामकन्दला-रास और शालिकविने माधवानल नामसे काव्यकी रचना की । १६६० ई० में आलम कविने इस कथाके आधारपर हिन्दीमें एक काव्य लिखा । इस कथापर आश्रित हरनारायण और बोधा नामक कवियोंने भी काव्य रचे हैं ।

(२) नल—निषध देशका राजा । दमावती—दमयन्ती; विदर्भ नगरकी राजकुमारी । नल-दमयन्तीकी कथा नलोपाख्यान नामसे महाभारतके वनपर्वमें पायी जाती

है। कथा इस प्रकार है—प्राचीन समयमें निषध देशका राजा नल था। एक दिन जब वह सरोवरमें स्नान कर रहा था तो उसे एक हंस दिखायी पड़ा जिसे उसने पकड़ लिया। हंसने नलसे विदर्भ नगरके राजा भीमसेनकी पुत्री दमयन्तीके सौन्दर्यकी प्रशंसा की। सौन्दर्य सुनकर नल दमयन्तीके प्रति आकृष्ट हुआ। हंसने जाकर दमयन्तीसे नलकी प्रशंसा कर उसके प्रति अनुराग उत्पन्न कर दिया। इस प्रकार दोनों एक दूसरेको प्रेम करने लगे। भीमने जब दमयन्तीके स्वयंवरका आयोजन किया तो नल उसमें सम्मिलित हुआ। मार्गमें नलको इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम मिले और उन्होंने उसे (नलको) दमयन्तीके पास दूत बनाकर भेजा कि वह उनमेंसे ही किसीका वरण करे। नल दूतके रूपमें दमयन्तीसे मिला और उनका सन्देश उससे कहा। किन्तु स्वयंवरके अवसर पर दमयन्तीने नलका रूप धारण किये हुए उन चारों देवोंको छोड़कर वास्तविक नलका ही वरण किया। पश्चात् नल दमयन्तीका विधिवत विवाद सम्पन्न हुआ और वह बारह वर्ष तक सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहे।

तदन्तर नलके हृदयमें कलने प्रवेश किया और उसकी मति भ्रष्ट हो गयी। वह अपने भाईके साथ जुआ खेलते हुए अपना सारा सर्वस्व खो बैठा। इस दयनीय अवस्थाको देखकर दमयन्ती ने अपने बच्चों को नानिहाल भेज दिया। नल और दमयन्ती घर छोड़कर जंगलकी ओर चल पड़े। रास्तेमें नलने चिड़ियोंको पकड़ने के लिए अपना एकमात्र वस्त्र फेंका। उसे लेकर चिड़ियाँ उड़ गयीं। तब छद्मवेशमें एक दिन नल दमयन्तीको जंगलमें सोता हुआ छोड़कर भाग गया और जाकर राजा ऋतुपर्णके यहाँ रसोइयेके रूपमें नौकरी करने लगा।

दमयन्ती जब जगी तो नलको न पाकर वह रोती बिलखती किसी प्रकार पिताके घर विदर्भ पहुँची। उसके पिताको जब सारी दुखस्था शत हुई तो उसने नलका पता लगानेके लिए गुप्तचर भेजे। उन्होंने आकर नलके राजा ऋतुपर्णके यहाँ होनेकी सूचना दी। तब दमयन्तीके पिताने कुछ सोच-समझकर ऋतुपर्णको अगले ही दिन दमयन्तीके पुनस्वयंवरमें आनेके लिए निमन्त्रण भेजा। इतने शीघ्र विदर्भनगर पहुँचा देनेकी क्षमता नलके अतिरिक्त किसीमें न थी। अतः ऋतुपर्णका सारथी बनकर नल विदर्भ आया।

वहाँ नल और दमयन्ती पुनः मिले। कुछ दिनों तक विदर्भ रहकर नल सपत्नीक अपने देशको लौटा और भाईके साथ पुनः जुआ खेलकर अपना राज्य वापस ले लिया।

(३) मंझारी—मध्य। मकुहि—कदाचित्।

(४) पैवर—ढोदी; प्रवेशद्वार। कनकपात—कनकपत्र, सोनेकी पत्ती।

(६) कुरी-कुल ; बनजार-(स० वाणिज्यकारक > वाणिज्यारक > बनिजारक > बनजार)-प्राचीन सार्थवाहके लिए यह मध्यकालीन-पारिभाषिक शब्द था; व्यापारी समूह, जो व्यापारके निमित्त अपने नगरसे बाहर जाते थे, बनजार कहे जाते थे ।

(७) देउर-देवल; मन्दिर । छारि-छार; क्षार; भस्म ।

२१२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

फुनि' जो राजदुआरिन्ह' जाई । कुँवरहिं' के भल' पन्थ' अथाई ॥१
सुरपति सभा सौन' जो' सुनी' । सोइ' विसेख'° वैठे' बहु गुनी ॥२
पण्डित औ बुधवन्त सरूपा । फूलि रही फुलवारि अनूपा ॥३
पण्डुर' पान अदा' कर' खाहहिं' । खानि' सुगन्ध सबै' मँहकाहहिं' ॥४
भोग वात' पै' सभा चलाई' । दुख कै' वात न सँचराई' ॥५
एक एक देस कै' ठाकुर [वैसे'], आयसु' जोवहि वार' । ६
प्रतिहारि सौं' गुजरहिं', तिल एक' छाड़' करहुँ जुहार' ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(का०, बी०) पुनि । २-(ए०, बी०) दुवारेहिं; (का०) दुआरे । ३-(बी०, का०) कुवरन्ह; (ए०) कुवरन्हि । ४-(ए०, बी०) भलि; (का०) जहँ । (ए०, बी०) वैठ; (का०) वैसु । ६-(बी०, का०) खवन । ७-(ए०, बी०) हम; (का०) पें । ८-(का०) सुने । ९-(का०, ए०) सो; (बी०) तेहु । १०-(ए०, बी०) सरेख; (का०) सेइ । ११-(बी०) विसेखे । १२-(ए०, बी०) पंडर । १३-(ए०, बी०) आड; (का०) सबै । १४-(का०) कोइ । १५-(ए०, बी०, का०) खाहीं । १६-(ए०, का०) खानि । १७-(का०) समै । १८-(ए०, का०) महकाही; (बी०) अंग वास बहु महकाहीं । १९-(ए०) भोग पान; (बी०, का०) भोग कै वात । २०-(बी०, का०) × । २१-(बी०, का०) चलाई । २२-(ए०, बी०, का०) की । २३-(ए०, बी०) सँचरे आई; (का०) नहीं सँचरई । २४-(ए०) दीप क । २५-(दि०, का०) × । २६-(ए०) आऐस; (बी०) आयेस । २७-(का०) आइह जोहारेहिं पार । २८-(बी०) कहँ । २९-(ए०, बी०, का०) गोचरहिं । ३०-(ए०) × । ३१-(बी०) छाड़हु तिलक एक । ३२-(ए०, बी०, का०) जोहार ।

टिप्पणी—(१) राज दुआरिन्ह—राज द्वारपर । भल-अच्छा । अथाई—समाप्त हुआ; अन्त हुआ ।

(२) सुरपति—इन्द्र । सौन-श्रवण । विसेख-विशेष ।

(४) पण्डुर—पीला ।

(७) प्रतिहारि—द्वारपाल । गुजरहिं—निवेदन करते हैं । तिल एक छाड़—तनिक देरके लिए जाने दो । जुहार—अभिवादन ।

२१३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

कुंवर देखि यह चिन्ता गहई^१। मोरि चाह कैसैं पहुँचई^२ ॥१
 राजा राई^३ जुहार^४ न^५ पावहिं। हमरि गिनति^६ केहिके^७ मन आवहिं ॥२
 बहुरि वियोग भयउ^८ सिर सेती। कही^९ जो^{१०} बातें^{११} अही जो पेटी^{१२} ॥३
 किंगरी लिहिसि^{१३} वियोग बजावा^{१४}। सबैं^{१५} सुनाँ देखे^{१६} तिह^{१७} आवा^{१८} ॥४
 सुनत^{१९} वियोग सब रहे^{२०} अबोला^{२१}। इहैं^{२२} राग आसन हर^{२३} डोला ॥५
 जैं र^{२४} सुना सो^{२५} भूलेउ^{२६}, देखत^{२७} चिंता रही^{२८} न काहि ॥६
 बज्र करेज^{२९} हिया^{३०} जिह केरा^{३१}, भया^{३२} वियोग उर^{३३} ताहि^{३४} ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(का०) कै । २-(ए०, का०) भई; (बी०) मन भई । ३-(का०) पहुँचै जाई ।
 ४-(ए०) राय; (का०) राउ । ५-(ए०, बी०, का०) जोहारि । ६-(बी०) नहीं ।
 ७-(बी०, का०) गनती; (ए०) गनत । ८-(का०) केकरे; (ए०) केहि लेखे । १०-
 (ए०, बी०, का०) भयो । ११-(का०) कहेसि । १२ (ए०) × । १२-१३ (बी०)
 बात जो; (का०) नहि आवै । १४-(ए०, बी०, का०) जेती । १५-(का०) तिहे ।
 १६-(का०) बजावइ । १६-(ए०, बी०, का०) जेरे । १७-(ए०, बी०, का०)
 सो देखै । १८-(ए०, बी०, का०) × । १९-(का०, बी०) धावा । २०-(ए०, बी०,
 का०) मुनि । २१-(का०) हिये न । २२-(का०) बोला । २३-(ए०) यही;
 (बी०) इहइ; (का०) माइहु । २४-(ए०) हरि आसन; (का०) हरि; (बी०) अम
 हरिना । २५-(ए०, बी०) जो रे; (का०) जेइ रे । २६-(का०) से । २७-(ए०)
 भूला । २८-(ए०, का०) ×; (बी०) रहेउ । २९. (बी०) रहेउ । ३०-(बी०,
 ए०, का०) करेजा । ३१-(बी०) आह; (का०) × । ३२-(ए०) जेहि केरा;
 (बी०) जिन कर; (का०) जाहि कर । ३३-(ए०, का०) भा; (बी०) भयेउ ।
 ३४-(बी०, का०) मुनि । ३५-(बी०) ताहु ।

टिप्पणी—(१) मोरि—मेरी ।

(२) केहिके—किसके ।

(५) अबोल—अवाक् ।

(७) केरा—का ।

२१४

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

नगरी सबैं वियोग सताई^१। घर घर यहि^२ बात चल^३ आई^४ ॥१
 जोगी एक किंतहुँत^५ आवा । विरह वियोग सँताप बजावा ॥२
 यही^६ बात मिरगावति सुनी । आयसु^७ एक आउ^८ बहु गुनी ॥३

अग्या भई बुलावहु^{१०} ताही। पूछों^{११} कवन देस कर आही ॥४
 जनै तीस^{१२} एक आगै धायें^{१३}। आयसु^{१४} वार बुलावइ आयें^{१५} ॥५
 अग्या भई राज^{१६} कै आयसु^{१७}, चलहु बुलायहि^{१८} धाइ।६
 एत^{१९} बोल सुन रहसा मन महुँ^{२०}, कन्था मँह न समाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(का०) सगरी। २-(का०) सतावइ। ३-(का०, बी०) यहइ। ४-(बी०, का०)
 फिरि। ५-(का०) जनावइ। ६-(बी०) कतहु से; (का०) कतहुते। ७-(का०, बी०)
 यहरे। ८-(बी०) आइसु; (का०) आयेसु। ९-(का०, बी०) आव। १०-(का०,
 बी०) बोलावहु। ११-(का०) पूछहु; (बी०) पूछउ। १२-(का०) चेरी तीस;
 (बी०) जनी वीस। १३-(का०, बी०) उठि धाई। १४-(बी०) आइस; (का०)
 आयेसु। १५-(बी०) बोलावैं आई; (का०) बोलवन आई। १६-(का०, बी०)
 राजा। १७-(बी०) आइसु; (का०) आयेसु। १८-(का०, बी०) बोलाये। १७-
 (का०) एतनी। २०-(बी०) जिय महुँ; (का०) जोगी रहसा; (दि० मारिजिन)
 रहसा जोगी।

टिप्पणी—(२) कितहुँत-कहाँ से।

(३) आयसु-आगन्तुक।

(४) अग्या-आज्ञा।

२१५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

करम आजु^१ महु आह^२ हमारैउ^३। लिध होइ कँह^४ गुरु हँकारेउ^५ ॥१
 ससि र सरद मुख देखै पायों। जरे नैन वहि अभिय सिरायों ॥२
 सातों पँवरि^६ नाँधि^७ जो^८ आवा। बेकर बेकर सातउ^९ भावा ॥३
 आगों^{१०} आइ^{११} जो देखी^{१२} ताही। चाँद वैठि तारे सब आही^{१३} ॥४
 के जनु^{१४} सरग [कचपची^{१५}] उई^{१६}। ताल माँझ फूलसि जनु^{१७} कुई^{१८} ॥५
 सोन सिघासन ऊपर^{१९} आछत^{२०}, तिहा^{२१} वैठि ओ^{२२} देखि।६
 झार लग^{२३} जइस कहुँ, एको भरिसि^{२४} न पेखि ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(बी०) आज; (ए०) आह; (का०) अहइ। २-(ए०) आज। ३-(ए०)
 हमारैव; (का०, बी०) हमारा। ४-(ए०, का०) कै; (बी०) कहुँ। ५-(ए०)
 हंकारेव; (का०, बी०) हँकारा। ६-(ए०) दुइ। ७-(बी०) जरे नैन वोहि दरस
 बुशावों; (का०) जरे पेम वोहि आरि सिराऊँ। ८-(बी०, का०) पँवरी; (ए०)
 पौरी। ९-(का०) लॉधि। १०-(बी०) कै। ११-(बी०) सातों; (ए०) सातहुँ।
 १२-(का०, बी०, ए०) आगु। १३-(का०) जाइ। १४-(बी०) देखिसि; (ए०,

का०) देखै । १५—(का०) तारन माँझ चाँद जनु आही । १६—(ए०) जनि; (बी०) जनौ; (का०) रे । १७—(दि०) कचकर्ची; (का०, ए०, बी०) कचपचि । १८—(ए०) फूली जनि; (बी०) फूली जनौ; (का०) फूली जस । १९—(बी०) पर । २०—(ए०, बी०, का०) × । २१—(का०, ए०, बी०) भान । २२—(बी०) उन्हि; (का०) मै; (ए०) उइ । २३—(ए०) भा आसेस । २४—(का०) परग; (बी०) पैग भरि ।

टिप्पणी—(१) हँकारेउ—बुलाया ।

(५) कचपची—कृतिका नक्षत्र । उई—उर्गी । माँझ—मध्य । कुई—कुमुदिनी ।

(६) आछत—होते हुए । ओं—उसे ।

(७) आर—अग्निकी लपट ।

२१६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मुरछ देखत अइस कहँ आई । मिरगावति मन माँझ सँकाई ॥१
कहसि जोगि यह जनम न होई । राजकुँवर यह आहै सोई ॥२
देखत मुरछा वहि पै आवइ । विरह बियोग लाग हम गावइ ॥३
तारहि कहसि उचावहु जोगी । मुरझि परेउ कह आहँहि रोगी ॥४
तारहि आयसु धाइ उचावा । सीचि नीर जीउ घट महँ आवा ॥५
साँप डसा जस समुझि न समुझै, लहर आउ विकरार । ६
खिन अचेत खिन चेत, विसँभर गौ न सँभार ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१—(ए०, बी०, का०) गति । २—(बी०) आइस; (ए०, का०) आयेसु । ३—(ए०, बी०, का०) मिरगावती । ४—(का०) माँह; (ए०) मँह; (बी०) माँहिं । ५—(ए०, बी०, का०) मुगाई । ६—(ए०, बी०) कहिसि; (का०) कहेसि । ७—(ए०, का०, बी०) जोगी । ८—(का०) जन्म; (ए०, बी०) जरम । ९—(ए०, बी०, का०) वोहि । १०—(ए०, बी०, का०) आवै । ११—(ए०, बी०, का०) गावै । १२—(बी०, का०) तारेन्हि; (ए०) तारिनि । १३—(ए०, का०) कहिसि; (बी०) कहा । १४—(का०) उठावहु । १५—(ए०, का०, बी०) परा । १६—(बी०) कस आहै; (ए०) कस आह न; (का०) कस अहइ निरोगी । १७—(ए०) तारिनि; (बी०, का०) तारेन्हि । १८—ए० आयेसु; (बी०, का०) आइस । १९—(बी०) धाय; (का०) जाइ । २०—(ए०) सीचेन; (बी०) सीचा; (का०) सीचिन्हि । २१—(ए०) अमिय । २२—(ए०, बी०, का०) × । २३—(बी०) समुझाये । २४—(ए०, बी०) लहरि । २५—(ए०, बी०) आव; (का०) आवइ लहरि । २६—(ए०, बी०, का०) खन । २७—(दी०, मार्जिन) चेत कछु; (ए०) खन अचेत खन चेत न चेतै; (बी०) खन चेतौ खन अचेतै; (का०) खन अचेत खन चेतै । २८—(ए०, बी०, का०) कुछु ।

टिप्पणी—(१) सँकाई—शंकित हुई।

(२) लाग—के लिए; निमित्त।

२१७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

भा [सनिपात*] के मिरगी यहि आई। तिरदोखा ऊदक बौराई ॥१
 के र देउ दानो यहि छरा। कै र चक्र जोगिन्ह मँह परा ॥२
 कै यहि राकस भूत सतावा। भरम न जाइ साथ जनु आवा ॥३
 कै देवी कालिका तपाई। सुरा पान बिनु चेत न जाई ॥४
 मरम जानि कै औखद कहहीं। वेद सयान जहाँ लह अहहीं ॥५
 पूँछहि नारी आयसु कँह, कस मुरछा तुम्ह आइ।६
 कै जर जाइ कै रँई आई, तिह र परहु मुरुझाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१—(दि०, बी०) भा सन; (ए०) रा सन; (का०) भा सन्यपात। २—(ए०) अहि मिरिगी; (बी०, का०) यहि मिरिगी। ३—(बी०, का०) तिरदोषा। ४—(बी०) ओद कै। ५—(बी०, का०) के रे; (ए०) म ?। ६—(ए०) देवो; (बी०, का०) देव। ७—(ए०, बी०, का०) एहि। ८—(का०) लाग। ९—(ए०, बी०, का०) रे। १०—(ए०) जोगिनी; (बी०, का०) जोगिनि। ११—(बी०, का०) कै। १२—(का०) भागा। १३—(ए०) ×। १४—(ए०) अहि; (का०) रे। १५—(बी०) जनौ; १६—(का०) भर्म न जाइ साथ जनु खावा। १७—(ए०) ×; (बी०) कै एहि; (का०) कै इन। १८—(का०) कालिका देवी। १९—(बी०) सताई। २०—(ए०) कर। २१—(बी०, का०) औखद। २२—(बी०) देहीं। २३—(ए०, बी०, का०) गुनी बहु। २४—(बी०) अही। २५—(ए०, का०) पूँछहु तारे आपेस; (बी०) पूँछहि तूरे आइस। २६—(ए०) तो; (का०) तोर; (बी०) तोहि। २७—(ए०) ×; (का०) की। २८—(का०) जूड़ी। २९—(ए०) रे; (बी०, का०) री। ३०—(ए०) रँई; (बी०, का०) इइ। ३१—(ए०) तेहि रे; (बी०, का०) तिहि रे। ३२—(ए०, बी०, का०) परेहु।

टिप्पणी—(१) सनिपात (सन्निपात) शीत प्रधान एक रोग। मिरगी—मूच्छाँके प्रकारका रोग। तिरदोखा—(त्रिदोष) वात, पित्त और कफका विकार।

(२) देउ-दानो—देव-दानव। छरा—छला। जोगिन्ह—जोगियोंके।

(३) राकस—राक्षस।

(५) सयान—झाड़ फूँक करनेवाले; ओझा।

(६) आयसु—आगन्तुक।

(७) जर—(ज्वर) बुखार। जाइ—जाड़ा। कै—का। रँई—सिरमें चक्कर आना। परहु—पड़े।

२१८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मुरुछ क' वात कहै नहिं पारों^१ । सो देखो जिह^२ कहत^३ न सँभारों^४ ॥१
भौंह धनुख^५ नैन सर साँधी^६ । लागीं विखम हियें^७ विस^८ बाँधी^९ ॥२
गुन विनु धनुक^{१०} कहाँ ईह^{११} साधा । हों भिरगा जस हनेउ^{१२} वियाधा ॥३
जहिया^{१३} हनिवैत^{१४} लंक^{१५} गढ़ दहा^{१६} । यहै^{१७} धनुक राघो^{१८} पँह^{१९} [अहा^{२०}] ॥४
जो पण्डो कौरो दर^{२१} जीता । यहै धनुक अरजुन कर लीता ॥५

सोइ जावस^{२२} परसुराम कर^{२३}, सोइ^{२४} पारुध^{२५} सोइ वान । ६
यह^{२६} रे कहत महि^{२७} दूभर लागै^{२८}, तुम्ह^{२९} पति हनी^{३०} परान ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१—(बी०, का०) की । २—(का०) जाई । ३—(ए०, बी०, का०) जो । ४—(ए०, बी०, का०) घट । ५—(का०) समाई । ६—(ए०) धनुक; (बी०, का०) धनुप । ७—(बी०, ए०, का०) साँधे । ८—(बी०, ए०, का०) लागे । ९—(का०) हिषे विषम । १०—(बी०, का०) विप । ११—(ए०, बी०, का०) बाँधे । १२—(बी०, का०) धनुप । १३—(ए०) अं; (का०) यह । १४—(ए०, बी०) हनेव; (का०) हना । १५—(ए०) कहिया । १६—(बी०) हनेउ । १७—(बी०, का०) लंका । १८—(ए०, बी०, का०) डहा । १९—(ए०) अहै; (बी०, का०) एहे । २०—(बी०, का०) राघव । २१—(का०) कर । २२—(दि०) आहा । २३—(बी०, का०, दि०) मार्जिन दल । २४—(ए०) चाउस । २५—(बी०, का०) यहै धनुक परसुराम कै । २६—(का०) सो । २७—(बी०, का०) पारधी । २८—(का०) इहइ । २९—(ए०, बी०, का०) मोहि । ३०—(बी०) लाग; (ए०, का०) × । ३१—(बी०) तुम । ३२—(ए०, का०) हनेव; (बी०) हने ।

टिप्पणी—(१) पारों—(क्रि० पारना) जीतू ।

(२) सर—(शर) बाण ।

(३) गुन—रस्ती; प्रत्यंचा । हनेउ—हत्या की । वियाधा—व्याध; शिकारी ।

(४) जहिया—जव । हनिवैत—हनुमान । राघो—राघव, राम । पँह—पास ।

(५) पण्डो—पाण्डव । कौरो—कौरव । दर—दल ।

(६) दूभर—कठिन । हनी—हनन किया ! परान—प्राण ।

२१९

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

तारहिं^१ कहा जोगि^२ मति हीनी^३ । अइस बोल तिह सोह न कहनी^४ ॥१
गन गन्धरप सुर नर औ^५ नागा । वार वैठि सब अहि निसि जागा^६ ॥२

जिह्वकै^१ भाग औ करम लिलारा । तिनकँह^२ होइ निमिख इक^३ वारा^४ ॥३
 तूँ र^५ नीच जो बोलइसि^६ पासा^७ । काहँहि^८ विगनसि^९ ऊँच अकासा ॥४
 तूँ भुँइ सरग कै^{१०} वार्ते कइही^{११} । जरत आग करपालों^{१२} गइही^{१३} ॥५

मान बिहूनै हेतु बिन, रोघइ जिय राजन्त^{१४} ।
 मूरख दिया पतंग जेउँ^{१५}, फिरि फिरि ते [दगधन्त*] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

- १-(बी०) तारेहु; (का०) तारेन्ह । २-(बी०, का०) जोगी । ३-(का०, बी०) हीना ।
 ४-(बी०) अस बोलत तोहि सोभा न दीना; (का०) ऐसी बोल तोहि केउ न चीन्हा ।
 ५-(का०) औ सुर नर; (बी०) सुर औ । ६-(बी०) बार बैठ अहनिसि सब
 जागा; (का०) बार बैस बैठ सभ द्रिज जागा; (दि० मार्जिन) बार बैठ सब आयसु
 चाहा । ७-(बी०, का०) जेहि कर । ८-(बी०) तेहि कर । ९-(बी०) एक । १०-
 (का०) यह पंक्ति नहीं है । ११-(बी०) रे । १२-(बी०) बोलायेसि । १३-यह
 पंक्ति नहीं है । १४-(बी०, का०) कहेन । १५-(बी०, का०) बकनसि । १६-(बी०,
 का०) की । १७-(बी०) कहसि । १८-(बी०, का०) पल्लौ । १९-(बी०) गइसि ।
 २०-(बी०) रूपहि जे रचंति; (बी०) रूपहि जो रचंति । २१-(बी०) जेंव; (का०)
 जिमि । २२-(दि०) दधन्त; (बी०, का०) दगधंति ।

टिप्पणी—(१) सोह-शोभा देती है ।

(२) गन गन्धरप-गन्धर्व गण । नागा-नाग । बार-द्वार ।

(३) बोलइसि-बुलाया । पासा-पास; निकट । विगनसि-(क्रि० बीगना-फँकना)
 फँकते हो; यहाँ तात्पर्य आसमान पर चढ़नेसे है ।

(५) भुँइ-भूमि; पृथ्वी । करपालों-(कर-पल्लव) हथेली ।

(६) बिहूनै-परित्याग करे । हेतु-उद्देश्य ।

२२०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

हँसा कहिसि^१ तुम्ह^२ पेम न खेला । जुआ पैत तुम्ह^३ बूझि न^४ मेला ॥१
 जो^५ वह^६ जोति^७ नहिं^८ देखि^९ भुलाई । ताकर माँस^{१०} काग नहिं खाई ॥२
 दाया^{११} होइ^{१२} सो जानै पीरा । दिया जान^{१३} कै^{१४} दगध सरीरा ॥३
 जरि जरि^{१५} मरे^{१६} सो^{१७} मरि मरि जीयै^{१८} । सोइ^{१९} पेम सुरा रस पीयै^{२०} ॥४
 विरला^{२१} यह रस पावइ^{२२} कोई । जो यह राउ^{२३} अमर होइ सोई ॥५
 समुँद तरत^{२४} [चढ़त*]^{२५} गिर, झम्प^{२६} हुतासन लिहन्त^{२७} ।
 पेम सुरा^{२८} जिह^{२९} अचयेउ^{३०}, सो^{३१} किय किय न^{३२} करन्त^{३३} ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(बी०) हँसा कहेसि; (का०) विहँसि कहेसि; (ए०) दे उधरी । २-(ए०) तोह;

(बी०) तुम; (का०) तैं। ३-(बी०, का०) तै; (ए०) ×। ४-(ए०) नहिं। ५-(ए०) ×। ६-(ए०) उवह; (बी०) वोहि; (का०) रे एह। ७-(का०) जोतिहि। ८-(ए०) न; (का०) ×। ९-(बी०) देखिन। १०-(ए०, बी०, का०) मासु। ११-(ए०, बी०) दाध; (का०) देखा। १२-(बी०, का०) होय। १३-(बी०, का०) जानै १४-(ए०, बी०, का०) जेहि। १५-(ए०) पापी। १६-(बी०) मरइ; (का०) ×। १७-(ए०) जो। १८-(ए०) जीअइ; (बी०) जियई; (का०) जाई। १९-(ए०, का०, बी०) सो पै। २०-(ए०, बी०, का०) पीयई। (२१)-ए०(- -) ल्य; (बी०, का०, विरुल्य। २२-(ए०, बी०, का०) पावै। २३-(ए०, बी०, का०) पाव। २४-(बी०) तरंगित; (ए०) तरथि, (का०) तीर। २५-(दि०) परंत; (ए०) चढीय; (बी०) चढति; (का०) चहुत। २६-(ए०) अरु शम्प। २७-(ए०, बी०) लीथि; (का०) लेत। २८-(का०) मुरंग। २९-(बी०) जिनि; (ए०, का०) जिन्हि। ३०-(ए०, का०) अँचयो; (बी०) मुचिया। ३१-(ए०, का०) ते। ३२-(बी०, ए०, का०) ×। ३३-(ए०, बी०, का०) करथि।

टिप्पणी—(३) दाधा-दग्ध।

(५) हुतासन-अग्नि।

(७) अचयेड-आचमन किया; पिया। किय किय—क्या क्या।

२२१

(दिल्ली; एकडल; बीकानेर; काशी)

सुध' धातें उन सेतें' कहीं। ये र खाइ' ठग लाइ' रहीं ॥१
फुनि आपुन' मँह कहहिं' बिचारी। जोगिह भोगिह काह' दोवारी ॥२
जाकर' बात कहत दिन रानीं। मकु वह कुँवर आह' यँहि' बानी' ॥३
आइ' कहहिं' अस बकत भिखारी'। हम बत' पूछँहि' कहहिं' हियारी ॥४
अँव्रित कुण्ड लुबुकि' भर राखी'। सो र' काग चाहसि' रस चाखी' ॥५
सिधर ऊँव बहु तरुवर, औ फर' लाग अकास।
करह' करील न पहुँचै मनसा', वै' फर' चाह बेरास' ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(ए०) सीधी; (दि०) मार्जिन) सबही। २-(ए०) अँस वहि; (का०) बात उइ सम; (बी०) वै निजु। ३-(ए०, बी०, का०) एइ रे खाय। ४-(ए०) दक लाइ; (का०) दक मूरी। ५-(का०) आपुस। ६-(बी०) करहिं; (का०) कहेन्हि। ७-(बी०) कहा; (ए०) कौन। ८-(बी०) दवारी; (ए०) कवारी; (का०) इस उत्तरार्धके स्थान पर पंक्ति ४ का उत्तरार्ध है। ९-(ए०) डेकरी; (बी०) जाकरि। १०-(बी०) ×; (ए०) आव। ११-(बी०) येहि; (ए०) अँहि। १२-(का०) पूरी पंक्ति नहीं है। १३-(ए०) आए; (बी०) आय। १४-(बी०) कहन्हि। १५-

(का०) पूरी पंक्ति नहीं है। १६-(बी०) पति; (ए०) वाति। १७-(ए०, बी०) ब्रह्महु; (का०) पूछहिं। १८-(ए०, बी०) कहत; (का०) कहा। १९-(ए०) चुमुकि; (बी०) चमक; (का०) भरि। २०-(ए०, बी०, का०) राखा। २१-(ए०) सो रे; (बी०, का०) से। २२-(ए०, बी०, का०) चहै। २३-(ए०, बी०, का०) चाखा। २४-(का०) फल। २५-(ए०) क[- -]। २६-(ए०, बी०) ×। २७-(बी०, का०) से; (ए०) उह। २८-(का०) फल। २९-(ए०, बी०) चहै विरास; (का०) चहै बेलास।

टिप्पणी—(१) सुध-शुद्ध; स्पष्ट। सेतै-से। ठग लाहू-आश्चर्य चकित।

(२) आपुन मैंह-आपसमें। काह-क्या।

(३) जाकर-जिसकी। बानी-वेश।

(४) अस-ऐसा। बत-बात। हियारी-पहेली।

(५) छुबुकि-लबालब

(७) बेरास-विलास; भोग।

२२२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मिरगावति निहचौं कै जानाँ। वहाँ कुँवर जा मन कर भानाँ ॥१
मन रहसी आपु आयउ सोई। भुगुति देउँ जइसेँ सिधि होई ॥२
फुनि मिरगावति नियर^१ बुलावा^२। पूँछिसि कउन^३ देस सँउ^४ आवा ॥३
आपुनि^५ बात कहसु^६ दहुँ^७ मोही। जोगी रूप न देखौ तोही ॥४
कहसि जीउ हम^८ काँहु चुरावा^९। तिह^{१०} हूँडे कँह भेस भरावा^{११} ॥५
खोज करत हाँ आयउँ, हूँडत^{१२} सो र^{१३} चोर ईह^{१४} गाँउ ॥६
औ^{१५} बहुतहि^{१६} कह^{१७} चुराइसि^{१८} पायसु^{१९}, लँउ तिह क^{२०} हाँ^{२१} नाँउ ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(बी०, का०) निचै। २-(ए०) उहइ; (बी०) यहइ। ३-(ए०) मुनि; (बी०) राजमनि। ४-(ए०) माना। ५-(बी०) रहस। ६-(ए०, बी०, का०) अब। ७-(ए०, का०) आवेब; (बी०) आवा। ८-(ए०, का०) जैसे; (बी०) जो पै। ९-(ए०, बी०, का०) मिरगावती। १०-(बी०, का०) नियरे। ११-(ए०, बी०, का०) बोलावा। १२-(ए०, बी०, का०) कौन। १३-(ए०, बी०) सों; (का०) ते। १४-(ए०, बी०, का०) आपन। १५-(ए०, बी०, का०) कहसि। १६-(बी०) नहिं; (का०) जै। १७-(का०) हमार। १८-(ए०, बी०, का०) चोरावा। १९-(का०) तेहि; (बी०) ताहि। २०-(बी०, का०) फिरावा; (ए०) पूरी पंक्ति नहीं है। २१-(बी०) आयेंव एहि ठाँव; (ए०, का०) ×। २२-(का०, ए०, बी०) रे। २३-(ए०, बी०, का०) येहि। २४-(बी०, का०) और; (ए०) रे।

२४-(ए०) बहुनन्ह; (बी०, का०) बहुतन्ह । २५-(ए०) क; (बी०, का०) केर ।
 २६-(ए०, बी०, का०) चोराइसि । २७-(ए०, बी०, का०) × । २८-(ए०)
 तिन्ह; (का०) ताकर; (बी०) तिन्हकर । २९-(बी०) ×; (का०) अब ।

टिप्पणी—(१) निहचौं-निदिचत रूपसे । भानाँ-(भानु) सूर्य ।

(५) भेस भरावा-रूप धारण किया । छद्मवेश धारण करनेके सम्बन्धमें यह प्रसिद्ध मुहावरा है ।

२२३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

नैन' कुरंगिनि केर चुराई' । औ फुनि पंचम बैन गँवाई' ॥१
 लंक सिंघ कै' लिहिसि' चुराई' । उहो' खोज ईह' नगर बुझाई' ॥२
 चाल गयन्द मराल'० कै' लीन्ही । खोजत आइ'२ नगर मँह'३ चीन्ही ॥३
 उहै'४ चोर हम जीउ चुरावा'५ । जै एतहि'६ कर'७ लीन्हि सुभावा'८ ॥४
 खोज'९ आइ ईह'१० नगर बुझानेउ'११ । देखेउँ'१२ चोर तवहि'१३ पहिचानेउ'१४ ॥५
 चोर बरे'१५ अति आहै दारुन'१६, लिहिसि जो चाह न देइ'१७ ।६
 एक हाथै'१८ उवारहु'१९ हरहा, जो र'२० गहे सो लेइ ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(ए०) ×; (का०) रैन । २-(ए०, बी०) चोराए; (का०) चोरावा । ३-(ए०,
 बी०) गँवाये; (का०) गँवावा । ४-(ए०, बी०) कर । ५-(ए०, का०) लीन्ह ।
 ६-(ए०, का०, बी०) चोराई । ७-(ए०, बी०) वहइ; (का०) उहइ । ८-(ए०)
 येहि; (बी०) यहि । ९-(का०) बताई । १०-(बी०, का०) मळार । ११-(ए०,
 बी०, का०) क । १२-(ए०, बी०, का०) आय । १३-(बी०) हम । १४-(ए०)
 उही; (बी०) वोही; (का०) वहिरे । १५-(ए०, का०) बुझानेव; (बी०) बुझाना ।
 १६-(ए०, का०) देखैव; (बी०) दारुन । १७-(ए०, बी०, का०) तवहि । १८-
 (ए०) पहिचानेव । (बी०, का०) पहिचानेव । १९-(ए०) बरिअ; (का०) बरी;
 (बी०) बरिय । २०-(ए०, बी०, का०) × । २१-(ए०) लैके चाह न देय;
 (बी०) लिहिए चहै न देय; (का०) लिहिस जाइ नहि देय । २२-(ए०, बी०,
 का०) हाथी । २३-(ए०, बी०, का०) औ । २४-(ए०, बी०, का०) रे ।

टिप्पणी—(१) कुरंगिनि-हिरणी । केर-का । पंचम-कोयल । बैन-वाणी ।

(२) लंक-कमर; कटि । सिंघ-सिंह ।

(३) गयन्द-हाथी । मराल-मयूर ।

(४) एतहि-इतनोंका । सुभावा-स्वभाव ।

(६) बरे-किन्तु ।

२२४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

सरजन' सूर आइ' परगासा । मिरगावति' मन कँवल विगासा ॥१
 मुसुकुराइ' सहेलिहिं' कहा' । देखहु इहै' कुँवर बहि' आहा' ॥२
 हौं जो कहति तुम्ह सँउ' दिन वाता । इहै' कुँवर हमरें मदमाता ॥३
 इहै' चीर हम लीन्हेउ आहा' । हम लग' यै' अगिनित' दुख सहा ॥४
 जिह लग' परसँउ' गंधरप' देवा । सो' अब आइ' करों बड़ सेवा ॥५
 कहा सहेलिहिं' सो' यह, जोगि मया' तुम्ह' लाग ॥६
 हम तो कहा सोइ' आपुन मँह, दिप' लिलार' बहु' भाग ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०, का०) मुरजन । २-(ए०, बी०, का०) आय । ३-(ए०, बी०, का०) मिरगावती । ४-(का०) मुसुकिआय । ५-(ए०, का०) सहेलिन्ह । ६-(का०) कहई; (बी०) अधरन्ह अल्प हँसी अस कहा । ७-(ए०) अहै; (बी०, का०) एहै । ८-(ए०) उवह; (बी०, का०) वह । ९-(बी०, का०) अहई । १०-(ए०, बी०, का०) तोह सैं । ११-(ए०) एहै; (बी०, का०) एहै । १२-(ए०) अही; (बी०, का०) यहै । १३-(दि०) आहा । १४-(ए०, का०) लगि; (बी०) निति । १५-(ए०, का०) अरे; (बी०) एइ । १६-(ए०) अंगन; (बी०) अगनिति; (का०) बड़ा । १७-(ए०, बी०, का०) जेहि लगि । १८-(ए०, बी०, का०) परसेव । १९-(ए०, बी०, का०) गंध्रप । २०-(बी०) से । २१-(ए०) आए; (बी०, का०) आय । २२-(ए०, बी०, का०) सहेलिन्ह । २३-(ए०, का०) सोइ । २४-(ए०, बी०, का०) जोगी भयेव । २५-(ए०, बी०) तोह; (का०) हम । २६-ए० X; (बी०) तवही; (का०) सो । २७-(ए०, बी०, का०) दिपै । २८-(ए०) लिलारहि; (बी०) लिलारहु ।

टिप्पणी—(१) बिगासा-विकसित हुआ; विकसित किया ।

(२) परसँउ-स्पर्श किया ।

(७) लिलार-ललाट ।

२२५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

हम आपुन' मँह तवहीं' कहा । जो' उठाइ' बैठारेउ' आहा' ॥१
 कुँवर आह यह जोगि' न होई । लखन बतीसो उत्तिम' कोई ॥२
 कहहि' सहेली' मरम यहि' लेहू । कै निरास असरो फुनि' देहू ॥३
 काह कहै कस ऊतर देई' । कहा सहेलिह' बोली' सेई' ॥४
 मिरगावती' बचन मुँह' खोला । कहिसि जोगि' तैं समुझि न बोला ॥५

जस आपुन तस बात न बोलै^१, धाय चढ़स र^२ अकास । ६
हत्या क^३ डर आहै चित मँद, ^४ नाँही^५ करतेंऊँ^६ नास ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१—(का०) आपुस । २—(बी०) तहिया; (का०) तहियै । ३—(बी०, का०) जब रे ।
४—(ए०) उठाए; (बी०) उचाय; (का०) उऐउ । ५—(ए०, का०) बैसारेव ।
६—(दि०) आहा । ७—(ए०, बी०, का०) जोगी । ८—(ए०) उत्तम । ९—(ए०)
कहा; (का०) कहइ । १०—(बी०) सहेलिहु । ११—(ए०) अह; (बी०) येहि;
(का०) अब । १२—(ए०) फुनि आसरो; (बी०, ए०) आस पुनि । १३—(बी०)
देऊ । १४—(ए०) सहेलिनह; (बी०) सहेलिहु; (का०) सहेली । १५—(ए०, बी०)
बोलै; (का०) बोलावह । १६—(बी०, का०) सोई । १७—(ए०, बी०) मुख । १८—
(ए०, बी०, का०) जागी । १९—(बी०) बोलिसि; (का०) जस आपुन तस बोल ।
२०—(ए०) चढ़ेहु; (बी०) चढ़िसि; (का०) चाहेसि । २१—(ए०, बी०, का०) कै ।
२२—(ए०, का०) × । २३—(ए०) नाहीं तौ; (का०) नाहि त; (बी०) नतरक ।
२४—(बी०) करतिउ; (का०) करति जिव कर ।

टिप्पणी—(३) असते—आशा ।

(७) नाहीं—नाहीं तो । करतेंऊँ—करती ।

२२६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

नास क^१ डर जो पै चित होई । आरन^२ बनलँड आउ^३ न कोई ॥१
जो को^४ मार^५ तो मोंख^६ पावों । पेम पिरीति^७ लै सरि^८ पहुँचाओं ॥२
मुहि^९ अपने जिय कर^{१०} आइ न^{११} छोहू । जो जीवइ तो करै^{१२} मरोहू^{१३} ॥३
मैं आपुन^{१४} जिउ तवहीं^{१५} काढ़ा । पिरित पेम^{१६} रस^{१७} जिह^{१८} दिन बाढ़ा ॥४
पेम लागि मैं जिउ बरछेवा^{१९} । भँवर^{२०} मरे पै छाड़^{२१} न केवा^{२२} ॥५
कै^{२३} वह काँटें जीउ^{२४} गँवावइ, कै र^{२५} वास रस लेइ^{२६} । ६
केवइ^{२७} [भँवर]^{२८} न^{२९} परिहरै, [वास]^{३०} लुबुधि जिउ देइ^{३१} ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१—(का०) की । २—(बी०) अरन; (का०) दारन । ३—(का०) आवै । ४—(ए०,
बी०, का०) कोई । ५—(बी०, का०) मारै । ६—(ए०, बी०, का०) मोखै । ७—
(ए०, बी०, का०) प्रीति । ८—(ए०, बी०) सिर; (का०) सिरह । ९—(ए०, बी०, का०)
मोहि । १०—(ए०) केर । ११—(बी०, का०) नहीं । १२—(ए०) जो जिउ होए तो
करौं । १३—(ए०) मरोहू; (का०) मरोहा; (बी०) अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित
हैं । १४—(ए०, बी०, का०) आपन । १५—(ए०) तैहइ; (बी०) तइहइ; (का०)
तेहि दिन । १६—(ए०) प्रीति पेम; (बी०, का०) प्रेम प्रीति । १७—(का०) × ।

१८-(ए०, बी०, का०) जेहि । १९-(ए०, बी०, का०) परछेवा । २०-(ए०, बी०) भौर । २१-(बी०) छाडै नहिं । २२-(का०) भँवरा मरइ छाडै नहिं सेवा । २३-(ए०, का०) उहि; (बी०) वहि । २४-(बी०, का०) जिव । २५-(ए०) रे । २६-(ए०, बी०, का०) लेय । २७-(ए०) केव; (बी०, का०) कवहिं । २८-(दि०) कँवल; (ए०, बी०, का०) भौर । २९-(का०) भँवरा कँवल; (ए०, बी०) नहिं । ३०-(दि०) कहाँ; (ए०) घानि । ३१-(ए०, बी०, का०) देय ।

टिप्पणी—(१) भारन-अरण्य, जंगल ।

(२) मॉख-मोक्ष । सरि-चिता ।

(३) मरोहू-ममता; मोह ।

२२७

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

मिरगावति^१ कहि^२ देखहु^३ रोती । दीपक^४ पतंगहिं^५ कवन^६ परीती^७ ॥१
नीच जो^८ ऊँचै^९ सेउ^{१०} संग करई^{११} । सूर क^{१२} पेम कँवल जेउ^{१३} मरई^{१४} ॥२
तोहि मरै कै^{१५} लागी^{१६} साधा । पंखि^{१७} दिया जेउ^{१८} आपुहि दाधा^{१९} ॥३
यह^{२०} हमसेउ^{२१} कस नेह क दाई^{२२} । तिह^{२३} अस जोगी लाख दस छाई^{२४} ॥४
भीख माँग कछु [भुगति]^{२५} दिवावों^{२६} । पुन होइ परतर कहूँ पावों^{२७} ॥५
तू^{२८} सो बात कहत^{२९} हँसि^{३०} मूरख, जिहि रिस लागे मोहि । ६
पाप किहँ^{३१} पुन^{३२} जाइहि हँम क^{३३}, तिह न^{३४} मारों^{३५} तोहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(बी०, का०) मिरगावती । २-(का०) कहा; (बी०) कहै । ३-(का०) दीवा । ४-(बी०) पाँखिहि । ५-(बी०) कौन; (का०) कवनी । ६-(का०) प्रीती । ७-(बी०, का०) से । ८-(बी०) करै । ९-(का०) ऊँच जाइ नीच संग करई । १०-(बी०, का०) के । ११-(बी०, का०) ज्यों । १२-(बी०) मरै । १३-(का०) तुह भैअ मखे कै । १४-(बी०) पंखी । १५-(बी०) जिमि । १६-(का०) तोहि हमहिं कस स्नेह कै हाथा । १७-(बी०) तोह । १८-(बी०) हम सन । १९-(बी०) कहाये; (का०) तोहि अस जोगी लाख दुइ छावा । २०-(बी०) तोहि । २१-(बी०) आये; (का०) भीखि माँगु किल्लु भुगति दियावा । २२-(दि०) जुगत; (बी०) किल्लु भुगति । २३-(बी०) दियाऊँ; (का०) कानि होइ परतर के पावउँ । २४-(बी०) पावों; (का०) जस लाइक तस बात कहावउ । २५-(बी०) तैं; (का०) तुम । २६-(बी०) कहसि; (का०) का । २७-(बी०) × । २८-(बी०, का०) होइ । २९-(का०) कन्या । ३०-(बी०, का०) × । ३१-(बी०) तेहि न; (का०) नाहि त । ३२-(बी०) मारउँ; (का०) मरवती ।

टिप्पणी—(४) दाई—भागीदार ।

(७) पुन-पुन; पुण्य । तिह-इस कारण ।

२२८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर, काशी)

राजा मुयहिं न मारै काऊं । मुयं के मारै कछु न पाऊं ॥१
 तिहि दिन मुयउं पेम जिह खेलेउं । साँप के मुँह जो अंगुरी मेलेउं ॥२
 जो जिउ होइ तो मरै डराऊं । साँस जीह लहि कुहुक भराऊं ॥३
 नैन रहे जिह कर उपकारा । अघर साँस तिल रहेउ अघारा ॥४
 उठा मरोहु हँसत ये बोला । मिरगावती वचन रस घोला ॥५
 पूछसि को र कउन तू देस क, नाँउ तोर का आह ॥६
 भुगुति देउं बहु भीखा भोजन, ले र अब जाह ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०, का०) भुयेहिं । २-(बी०, ए०) मारिय । ३-(का०) कोई । ४-
 (ए०) क । ५-(ए०) न नसाऊ; (बी०) नहिं साऊ; (का०) नहिं होई । ६-(बी०,
 ए०, का०) तेहि । ७-(ए०, बी०, का०) मुयेंव । ८-(ए०, बी०) जो । ९-(बी०,
 ए०, का०) खेलेव । १०-(ए०) क । ११-(ए०) अंगुरी जब; (बी०) अंगुरी जो ।
 १२-(बी०, का०) जिय । १३-(ए०) होए; (बी०) होय । १४-(बी०, का०)
 मरैहि । १५-(ए०) जीभि; (बी०, का०) जीभ । १६-(ए०, का०) लगि; (बी०)
 लै । १७-(ए०) खनक; (बी०) खिनक; (का०) खन एक । १८-(बी०) रहाऊं;
 (का०) मारूँ । १९-(ए०) जेहि कै; (बी०) जेहि क्रिय; (का०) जे करै । २०-(का०)
 अपकारू । २१-(ए०) रहेव; (बी०) रही । २२-(का०) आघर सासाटे केर
 अघटोला । २३-(ए०) मरोहु; (बी०) मरोह । २४-(बी०) इन्हहि नति; (का०)
 X । २५-(का०) यह; (बी०, ए०) X । २६-(ए०) मुँह खोला; (बी०)
 मुख खोला; (का०) पूरी अर्धाली नहीं है । २७-(ए०) पूछसि को रे; (बी०) पूछसि
 के तू । २८-(ए०) कौन तै; (बी०) कवन देस कर । २९-(बी०) आहि । ३०-
 (का०) तोहि । ३१-(ए०) मिखेया; (बी०) मिछया; (का०) मिछ्या । ३२-
 (ए०, का०) X । ३३-(ए०) लै रे इहाँ साँ जाह; (बी०) लै रे इहँ ते जाहु ।

२२९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

जो पै भुगुति भीख तुम्ह देह । जरमहुँ और न माँगो केह ॥१
 इहे भीख कहँ ईह टाँ आयउं । बहुतँहि दिही भुगुति न खायउं ॥२
 भँवर करीलहिं जरम न खाई । अधिक वास रस मालति जाई ॥३
 चातक अउर पानि न पीया । बूँद सवाती पाउ त जीआ ॥४
 केहरि भूँखें तिन न चराई । पाउ गयन्द तवहि पै खाई ॥५

हम बाचा वहँ आइ पुरी^{१५}, औधि किये तिंह देस^{१६} ।६
हम आपुन पतिपारी^{१६}, दुख सुख^{१७} आइ आन कै भेस^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(ए०) X । २-(बी०, का०) रे । ३-(का०) भिछा भुगुति । ४-(का०) मोहि; (ए०) तोह । ५-(बी०) जरमहिं । ६-(का०) जन्म न माँगउँ अवरउ केहू । ७-(ए०) ही । ८-(ए०) ओही मैं । (ए०, बी०, का०) आयेंव । १०-(बी०, ए०) बहुतन्ह । ११-(बी०) भुगुति दिहि न । १२-(ए०, बी०) नहिं । १३-(ए०, बी०) खायेंव; (का०) बहुत दिन भा भुगुति न पायेंउ । १४-(ए०, बी०, का०) भौर । १५-(का०) कली । १६-(का०) जन्म । १७-(बी०) बामु । १८-(बी०) मन । १९-(ए०, बी०) मालती भाई । २०-(ए०) चातिक; (बी०) चात्रिग । २१-(ए०, बी०, का०) और । २२-(ए०, बी०, का०) पानो नहिं । २३-(बी०) पियई । २४-(ए०) सेवाती । २५-(बी०) पाव जा; (ए०) पाव तो । २६-(बी०) जिअई; (का०) पूरी पंक्ति नहीं है । २७-(ए०, बी०) तिनु । २८-(बी०) ना । २९-(ए०) राई; (बी०, का०) चरई । ३०-(ए०) पाव; (बी०) पावै । ३१-(बी०) गयंदम । ३२-(बी०) लै । ३३-(का०) भरई । ३४-(ए०) हमही बाचा उह आइ परी; (बी०) हमरे बाचा पुरई; (का०) हम बाचा उन्ह कीन्ही । ३५-(ए०) आधि देहि देस; (बी०) अवाधि किही जेहि देस; (का०) जेहि रे देस । ३६-(ए०) अपनो पति पारी; (बी०) हम आपनि प्रति पाली । ३७-(ए०, का०, बी०) X । ३८-(ए०) आए आनि किय मे ; (बी०, का०) आये आन के भेस ।

टिप्पणी—(१) जरमहुँ—आजन्म । केहू—किसीसे ।

(२) ठाँ—जगह ।

(३) करील—रेतीली भूमिमें उत्पन्न होनेवाली झाड़ी; टेंटी ।

(४) चातिक—पपीहा । सवाती—स्वाती नक्षत्र ।

(५) केहरि—सिंह । तिन—तृण; घास ।

(७) पतिपारी—प्रतिपालन किया ।

२३०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

अवहँ ढीठ बात^१ तू^२ कहई^३ । अवँक^४ होइ^५ न चुप कै^६ रहई^७ ॥१
अस मैं ढीठ न देखि^८ भिखारी । मारि नै जाई^९ न दीनहि^{१०} मारी ॥२
जोगी न होइ मनचल^{११} है कोई । हत्या दइ^{१२} बइठा^{१३} जिउ खोई ॥३
दोखँ मोर जो इहाँ बुलायउ^{१४} । उठि कै^{१५} जाहु बहुत संझायउ^{१६} ॥४
कहिसि जाउँ जो तन जिउ होई । भाटी^{१७} लै र^{१८} आडरो^{१९} कोई ॥५
मिरगावती कहा अपनै जिय^{२०} महुँ^{२१}, बहुतै कियउ^{२२} निरास ॥६
जो फुरहिं^{२३} मरि जाइ^{२४} निरासा^{२५}, तोर दिहेउँ यहि आस^{२६} ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(बी०, का०) बाँते । २-(ए०, बी०, का०) तैं । ३-(ए०) कहही; (का०) कहसी ।
 ४-(ए०) उवंग होए; (बी०) अवंग होय । ५-(बी०) कै चुप नहि । ६-(ए०
 बी०) रहही; (का०) औगुन होसि चुप भै रहसी । ८-(ए०, बी०, का०) देख ।
 ८-(ए०) मारि न जाय; (बी०) मारे जाहि । ९-(ए०, बी०, का०) दीन्हें । १०-
 (ए०) होए मचल; (बी०) भा मचला । ११-(ए०, बी०, का०) दै । १२-(ए०,
 बी०) बैठा; (का०) बैसा । १३-(ए०) बोलापेंव; (बी०) बोलावा । १४-(बी०)
 तै । १५-(ए०) समुझायेंव; (बी०) समुझावा । १६-(का०) माटा । १७-(ए०,
 बी०, का०) रे । १८-(का०) लँडावहु; (बी०, ए०) अडारो । १९-(बी०) जिय
 अपने; (का०) अपने जीव । २०-(ए०, बी०, का०) × । २१-(ए०, बी०,
 का०) कियोँ । २२-(बी०, का०) जो फुरहुँ । २३-(ए०) जाइह; (बी०) जाही
 निस्चै; (का०) जाई । २४-(ए०, बी०, का०) × । २५-(ए०) तौ का दिहे
 एहि आस; (बी०) तौ देहीं एहि आस; (का०) तव को देवेउ आस ।

टिप्पणी—(१) अबँक—अवाक; मूक ।

(२) नै—न; नहीं । गारी—गाली ।

(३) मनचल—मनचला ।

(४) दोखन—दोष । जाहु—जाओ ।

(७) तोर—तोड़ । आस—आशा ।

२३१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

कहिसि कुँवर मैं तबही जाना । परेसि मुरझि जो उठेसि भुलाना ॥१
 मरम लेइ कँह कियेउँ निरासा । जोग उतारु पुजै मन आसा ॥२
 चेरिहि आयेसु रानि जो दीन्हा । जोगी क भेस उतारी लीन्हा ॥३
 कहिसि नहाइ पहिरावहु बागा । साथ लाइ कै चली सुभागा ॥४
 जोग उतारि नहावहि चेरि । मिरगावती कहीं जिय केरी ॥५

बलम विरंच परखहि, आतम जनाँ जे हन्त ॥६

तेता राजे नाँ करहि, जेता विरंचि करन्त ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(बी०) औ; (का०) जब । २-(का०) उयेसि । ३-(ए०, का०, बी०) लेय ।
 ४-(का०) कै । ५-(बी०, ए०) किएव; (का०) कियेहु । ६-(बी०) उतारहु ।
 ७-(ए०) पूज; (बी०, का०) पूजि । ८-(का०) तोरि । ९-(ए०, बी०, का०)
 चेरिन्ह । १०-(ए०) आएस; (बी०) आयेस; (का०) आइसु । ११-(ए०, बी०,
 का०) रानी । १२-(ए०) जोग क साज । १३-(ए०, बी०, का०) उतारै ।
 १४-(ए०) नहाहु; (का०) नहाइ; (बी०) अन्हाय । १५-(ए०, का०, बी०)
 फिरावहु । १६-(का०) खंथा । १७-(ए०, बी०, का०) लाय । १८-(ए०, बी०,

का०) सभागा । १९-(बी०, का०) अन्हवावहिं । २०-(ए०, बी०, का०) कहा । २१-(बी०) म्रिगावती मनभावते केरी । २२-(बी०, का०) बालम । २३-(ए०, बी०, का०) विरंच । २४-(ए०) परिखिअहिं; (बी०) परखिये । २५-(ए०, बी०, का०) उत्तिम । २६-(ए०, बी०, का०) जन । २७-(ए०, बी०) जो हंथि; (का०) जे होन । २८-(ए०) जेता । २९-(ए०, बी०) राचे; (का०) राये । ३०-(ए०) तेता; ३१-(ए०, बी०, का०) विरंथि । ३२-(ए०) करन्थि; (बी०) करन्ति ।

टिप्पणी—(४) नहाइ—नहलाकर । बागा—वल्ग ।

२३२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

सुनके सूर मढ़ी तव जाई^१ । पारवती ससि रति कँह आई^२ ॥१
मिरगावती सिंगार जो भयई^३ । बारह अभरन पहिरिसि तिहई^४ ॥२
धौराहर बहु भांत सँवारा^५ । रतन मनि दीपक उजियारा^६ ॥३
अगर चन्दन बेना कस्तूरी । मलयागिरि कचोरन्ह^७ भरी ॥४
कुँकु^८ मेद^९ अरगजा किया^{१०} । ठाँव ठाँव लौ^{११} बरै^{१२} तेलिया^{१३} ॥५
चोवा मेद^{१४} सिलार^{१५} रस^{१६}, फुलेल^{१७} भीवसेनी^{१८} बहु तूल । ६
सवै वास^{१९} बहु^{२०} विरसै^{२१}, परिमल फूल^{२२} तँबोल ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(बी०) संकर सूर मढ़पती जाई; (ए०) पतियर अपने मँदिर सँचारा; (का०) दिनियर अपने मँदिर सिंधारा । २-(बी०) राति कराई; (ए०) रैन सेत आइ पहुँचारा (का०) सुरज साथ जाइ उघारे । ३-(बी०) भई; (ए०) जो ठये; (का०) जे ठयेउ । ४-(ए०) नये; (का०) सोलह आभरन पहिरै लयेऊ; (बी०) बारह आभरन कहियहि सोई । ५-(बी०) सँवारे । ६-(का०) महि । ७-(ए०, का०) दीप । ८-(बी०) उजियारे । ९-(ए०) मलयागिरि जो । १०-(ए०) कचोरिन्ह । ११-(ए०, बी०) कुँकुह; (का०) कुँकुम । १२-(बी०) मेलि । १३-(का०) करीवा । १४-(ए०, बी०, का०) × । १५-(बी०) बरै खर; १६-(दि० मार्जिन) बरै बहु दिया; (का०) बरै बहुतै दीवा । १७-(का०) अगर । १८-(बी०) सील । १९-(का०) सिर भरि । २०-(ए०, का०) × । २१-(ए०, बी०, का०) भीमसेनि । २२-(बी०) वासु । २३-(ए०, बी०, का०) × । २४-(बी०) बिलसहि; (का०) बेलसइ । २५-(ए०) बहुल ।

टिप्पणी—(४) बेना—(स० वीरण) खस । कचोरन्ह—कटोरोंमें ।

(५) कुँकु—कुँकुम; केसर । मेद—आइने-अकवरीके अनुसार एक प्रकारकी सुगन्धि जो किसी पशुके नाभिसे बनायी जाती है । अरगजा—केसर, चन्दन, कपूर आदिके मिश्रणसे बनी सुगन्धि । लौ—दीपक । बरै—जैरे ।

(६) चोवा—एक प्रकारकी सुगन्धि। इसके तैयार करनेकी विधिका आइने-
अकबरीमें उल्लेख है। सिलार—शिलाजीत। भीवसेनी—भीमसेनी कपूर।

२३३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

चन्दन दिया जारहिं बहु^१ चेरिं^२। बाती मीन^३ जरें बहुतेरीं ॥१
बासर निसि न जाइ^४ बराई^५। देवस कहै^६ को^७ राति कहाई ॥२
तिह ठाँ पलंग^८ सेज सँवारीं^९। मिरगावती वैठी^{१०} धनवारी ॥३
सखी^{११} सहेलिनह^{१२} कहिमि बुलाई^{१३}। कुँवर हँकारु^{१४} दइ र^{१५} बड़ाई ॥४
सब उठि धाइ^{१६} कुँवर पँह गई^{१७}। जाइ ठाढ़ि आगों वै^{१८} भई ॥५
मया करहु^{१९} पग^{२०} धारहु^{२१} राजा^{२२}, पदुमिनि तुम्ह र बुलाउ^{२३}।६
उठा तँबोल^{२४} हाथ लै रहँसत^{२५}, हँसत^{२६} मँदिर मँह^{२७} आउ^{२८} ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१—(ए०) सब; (का०) चहुँ। २—(का०) फेरी। ३—(बी०) मैन। ४—(ए०)
नहिं जाय; (बी०) जाइ न। ५—(ए०) बिराई; (बी०) बेराई; (का०) पराई।
६—(का०) कोइ देवस। ७—(ए०) कोउ; (बी०) कोइ। ८—(बी०) ठाँव। ९—(ए०)
पालक। १०—(बी०) बिछाई; (का०) तेहि भीतर लेइ पलंग बिछाई। ११—(ए०)
बैठ; (का०) बैसी। १२—(बी०) सखिनह। १३—(का०) सहेली। १४—(ए०, बी०,
का०) बोलाई। १५—(ए०, बी०, का०) हँकारहु। १६—(ए० बी०) रे; (का०)
देहु। १७—(ए०) कै। १८—(का०) जे ठाढ़ी आगे भई जाई। १९—(ए०)
आगु होए; (बी०) वोहि आये; (का०) सेवा करत साथ भई आई। २०—(बी०)
करिये। २१—(ए०, बी०, का०) पगु। २२—(ए०) दारहु; (का०) धारिये; (बी०)
दारि। २३—(ए०, का०) ×। २४—(ए०) तोहरे बोलाए; (बी०, का०)
तुम्हहिं बोलाव। २५—(का०) तँबोर। २६—(ए०, का०) ×। २७—(बी०) ×।
२८—(बी०) कहँ। २९—(ए०) जाए; (बी०) आव।

टिप्पणी—(१) जारहिं—जलाती हैं। बाती—बत्ती।

(२) बासर—दिन। बराई—बिलग; अलग। देवस—दिवस।

(४) हँकारु—बुलाओ। बड़ाई—सम्मान।

२३४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

रानी देखि कुँवर गा आई। उतरी सेज साँ ठाढ़ सोहाई ॥१
पेग^२ चारि चलि किहिसि जुहारु^३। आवहु^४ सामी^५ करहु अहारु ॥२
तहिया भुगुति न दीन्हैउ^६ तोही। सेज बइठि^७ बिरसहु^८ अब मोही ॥३

हम लागि गंजन मरन^१ तुम्ह^२ सहा । हौं कस मानों तोर न^३ कहा ॥४
जो कोउ^४ काहु लागि दुख देखै । मिलै सोइ^५ अगिनत^६ सुख पेखै^७ ॥५
राज पाट जहवाँ लहि^८ सामी, औ^९ हौं^{१०} दासि^{११} तुम्हारि^{१२} ।
चलहु [सेज] पसवहुँ बैठहु^{१३}, तूँ र^{१४} पुरुख हौं^{१५} नारि^{१६} ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१-(का०) देखु । २-(का०) सइ पर सोहराई । ३-(ए०) पग । ४-(का०)
किहेसि; (बी०) कियेउ । ५-(ए०, बी०, का०) जोहारु । ६-(ए०, बी०)
आव । ७-(बी०) सामि अब; (ए०) सामी अब । ८-(ए०) दीनेव । ९-(ए०,
बी०, का०) बैठि । १०-(ए०) अब विरसहु; (बी०) अब विलसहु; (का०) अब
भुगतहु । ११-(ए०, बी०) मरन गंजन; (का०) × । १२-(बी०) तुम; (ए०) जो;
(का०) जग । १३-(ए०) तोर न मानों । १४-(ए०, बी०, का०) कोइ । १५-
(ए०, बी०, का०) सोव । १६-(ए०) अंगत; (बी०, का०) अगनित । १७-
(ए०) ऐखै । १८-(बी०) लागि है; (का०) लागि । १९-(ए०, का०) × ।
२०-(का०) अरु २१-(ए०, बी०, का०) दासी । २२-(ए०) तोहारि । २३-
(बी०, का०) चलहु सेज पर बैसहु; (ए०) कुवरहु सेज पर बैठहु । २४-(ए०,
बी०) रे; (का०) तुम्ह । २५-(का०) मैं । २६-(बी०) नारि तुम्हारि ।

टिप्पणी—(२) सामी—स्वामी ।

(३) तहिया—उस दिन । विरसहु—विलास करो ।

(४) कस—कैसे ।

(६) जहँवा लहि—जहाँ तक ।

(७) पसवहुँ—लेयो ।

२३५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

दुवउं सेज पर बइठे जाई । मिरगावति^१ फुनि^२ बात चलाई ॥१
आपन विरित^३ कहौं तिह आगे । आयेउ तो चित कै रिस लागे ॥२
आवत आयउ भाँ पछतावा । कैसहुँ रहै न जिउ^४ बउरावा^५ ॥३
निसि वासर तिह^६ सँवरत^७ रहेउँ^८ । खिन^९ न विसारों अब सत^{१०} हौं^{११} कहेउँ^{१२} ॥४
तो^{१३} गुन हियें^{१४} [अइस^{१५}] कै छाई^{१६} । चित्र लिखी^{१७} पुनि उतर^{१८} न जाई^{१९} ॥५
मजा न विसरी तो गुन, कीन्हि गूथिम माला^{२०} ।
तो नाम मो भजैं, वासर रैन [होइ उजाला^{२१}] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०, का०) दुऔ । २-(ए०) बैठे; (बी०, का०) बैसे । ३-(ए०, बी०
का०) मिरगावती । ४-(बी०) फिरि । ५-(ए०, बी०, का०) निरति । ६-(ए०)

हों ताके; (बी०) तुम आगे; (का०) कहु मोहि आगे। ७-(का०) आयेहु। ८-
भवा। ९-(ए०, बी०, का०) जीउ न रहै। १०-(ए०, बी० का०) बौरावा।
११-(ए०, बी०, का०) तोहि। १२-(ए०, का०) सौरत; (बी०) सुमिरत।
१३-(ए०, का०) रहऊँ; (बी०) रहौं। १४-(ए०) खन। १५-(का०) फुर।
१६-(ए०, बी०, का०) ×। १७-(ए०) कहउ; (बी०) कहौं। १८-(ए०, बी०)
तुव; (का०) तोर। १९-(ए०) हम हिय; (बी०) हम कहँ; (का०) हम। २०-
(दि०) आइस; (बी०, ए०, का०) अस। २१-(ए०, बी०) छाऐ; (का०)
छावा। २२-(ए०) लिही; (बी०, का०) लिखे। २३-(ए०, बी०, का०) फुनि।
२४-(ए०) मँट। २५-(ए०, बी०, का०) जाये। २७-(ए०) मजा नहु बिसरी
औ तुव गुन, गुन गाथिम माला; (बी०) मम जनि बिसरिय आह तुव गुन, गनि
गूथी जिय माला; (का०) मंझन यह बिसरिय कँव गुन, गांथिम पुहुप कै माल।
२६-(ए०) तुव नाम मनि जवौ, जपन वासुर रैन हो बाला; (बी०) तुव नाम
निज मंत्र किय, जपत रैन वासुराय; (का०) तुम नाम निजु मंत्रेन, जपत नयन
विसाल।

टिप्पणी—(१) हुवउ—दोनों।

(२) आपन—अपना। बिरित—(वृत्त) समाचार। रिस—क्रोध।

(३) भा—हुआ।

२३६

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवर कहा अब हम दुख सुनहूँ। हों रे कहौं तुम्ह' चित मँह' गुनहूँ ॥१
तू र' छाँड़ि जिह' दिन मुँहि' आई। तिह' दिन सेउ' मैं भुगुति न खाई ॥२
जोग' पन्थ होइ भेस भरायेउ'। आरन' बनखँड माँझ' घसायेउँ' ॥३
फुन र' समुँद मँह परेउ' जो आई। लहरि उठै कछु' कही' न जाई ॥३
माँस देवस वँह डर' मँह' रहा। फुनि' लहरहि' सेउ जो तिर बहा' ॥५

आइ परेउ तिह ठाँई' औघट', जहाँ न आहै घाट ॥६

सिखर ऊँच न मारग पेखँ', चाँटहि चढ़ै न पाँत' ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-तुम। २-महि। ३-रे। ४-जेहि। ५-सै। ६-तेहि। ७-छिनसे। ८-जोगी।
९-फिरायेंउ। १०-अँरन। ११-महँ। १२-घस खायेंउँ। १३-पुनि। १४-
परा। १५-कछु। १६-कहै। १७-बोहि। १८-महि। १९-पुनि। २०-
लहरि। २१-दइव निरबहा। २२-तेहि ठाउँ। २३-×। २४-नहि मार्ग जाइ
कहँ। २५-चढ़ी चढ़ै नहि वाट।

टिप्पणी—(३) घसावेडें—घुसा ।

(५) तिर—तीर; किनारे ।

(६) औघट—बेराह, बिना रास्ता ।

(७) चाँटहि—चाँटा ।

२३७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

फुनि रे^१ साँप एक विपरित^२ आवा । जिय मँह^३ कहेउ^४ ये र^५ हों^६ खावा ॥१
एक और सठ^७ आयउ^८ भारी । दुहँ^९ आपु^{१०} मँह जूझ^{११} पसारी ॥२
दुँहु सायर^{१२} मँह खाँइ पछाड़ा । तो हम कहँ दइ^{१३} जीउ उवारा ॥३
उन्हिकें परें^{१४} तरंग जो आई^{१५} । सिखर नाँधि बोहित बहिराई^{१६} ॥४
भागेंउ उतर सुबुध्या आयेउँ । अचरज^{१७} सुनेउ^{१८} सो देखै धायेउँ ॥५

सुवन^{१९} अचम्मो सुनि के अचरज^{२०}, धायों देखी सेइ^{२१} ।६

कुँवरि सेज एक^{२२} बैठी^{२३} अपछरि^{२४}, राकस आयउ लेइ^{२५} ॥७

पाटान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) पुनि । २-(ए०, बी०) विपरीत । ३-(बी०) मैं । ४-(ए०) कहँव ।

५-ए०) ये रे; (बी०) × । ६-(बी०) हौ एहि । ७-(ए०) सुठि । ८-(बी०)

आयउ सुठि । ९-(बी०) आपुस । १०-(ए०, बी०) जूझि । ११-(बी०) दुवउ

आपु । १२-(बी०) विधि हम कहँ; (ए०) सिउ हम कहँ । १३-(ए०) परत;

१४-(ए०, बी०) लहरि बड़ि आई । १५-(ए०) बोहिअ बिहराई; (बी०) बोहित

बहराई । १६-(बी०) अचरिज । १७-(ए०, बी०) सुना । १८-(ए०) सोन;

(बी०) सवन । १९-(ए०, बी०) × । २०-(ए०) देखै धायेउँ सोए; (बी०)

धायेउँ देखै सोय । २१-(ए०, बी०) × । २२-(ए०) बैठे; (बी०) बैठ ।

२३-(बी०) अपछरा । २४-(बी०) लेय ।

टिप्पणी—(१) विपरित—असाधारण ।

(२) जूझ—युद्ध । पसारी—फैलाया ।

(३) सायर—सागर ।

(४) तरंग—लहर । सिखर—शिखर । बोहित—नाव ।

२३८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राकस अधिक^१ अहा वरिघण्डा । मारेउँ^२ चक्र किहेउँ^३ नौखण्डा^४ ॥१

राजा सुनि विधि^५ देखै आवा । नगर मोख राकस सेंउ^६ पावा ॥२

राजा कहीं^७ बियाहिय^८ सेई^९ । आधा राजपाट हम देई ॥३

[वरज]^{१०} करों तो नीक^{११} न होई । कर कर निकसेउँ^{१२} छाड़ेउ सोई ॥४

आइ परेउँ कजलीवन^{१३} महॉ^{१४} । सिंघ सिंदूर छिकारहँ^{१५} तहाँ ॥५

वन अंधियार न सूझे मारग^१, भूलेउँ कें खैं^{१०} जाउँ । ६
वैसहुँ महुँ न विसारैउँ^{१६} कैसहुँ^{१९}, जपत^{१०} तुम्हारेउ^{३१} नाँउ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) अति रे । २-(ए०, बी०) मारेंव । ३-(ए०, बी०) किहेंव । ४-
(ए०, बी०) दस खण्डा । ५-(ए०) एह; (बी०) वह । ६-(ए०) सै; (बी०) सौं ।
७-(ए०) कहै; (बी०) कहा । ८-(बी०) बियाहौं । ९-(ए०, बी०) सोई । १०-
(बी०, ए०) जो वर; (दि० मारिजिन) वरजो । ११-(बी०) नर्क । १२-(बी०)
निसरेउँ । १३-(बी०) कदलीबन । १४-(ए०, बी०) माँहॉ । १५-(ए०) शिक-
रहि, (बी०) चिधारहिं । १६-(ए०) × । १७-(ए०) किधी; (बी०) केहि दिसि ।
१८-(ए०) उइ सो हम्ह न विसरेउ । १९-(ए०, बी०) × । २०-(ए०) हिय;
(बी०) चिहिं । २१-(ए०) तोहारहि; (बी०) तुम्हारा ।

टिप्पणी—(१) वरिवण्डा—बलवान ।

(२) बियाहिय—ब्याहूँ । सेई—उसे ।

(५) छिकारहँ—चिग्घाड़ करते हैं ।

(६) कें खैं—किस ओर ।

२३९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

नाँउँ लेत एक मारग पावा । वन ओरान' हों बाहर आवा ॥१
बाहर' मिलेउ' जो' छेरि' चरवाहा । बहु अलाप कीतसि बहु चाहा ॥२
पाहुन क'ह' ले गयउ हुलाई' । भुगति न देतसि' चाहिमि खाई ॥३
चरि' भागी' एक तिह' लै पैठा' । पाट दिहिसि' बाहर होइ' बैठा' ॥४
चरि' भीतर मानुस बहु आहे' । वै' हमकँह सिख बुधि दइ' रहे ॥५
पुनि वहि भीतर आयेउ' चढ़ी', उन्ह मँह मारिसि एक । ६
तोरि कै भूँजसि' खाइसि, वार न लागेउ' नेक ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।

१-(ए०) उरान । २-(बी०) बहुरि । ३-(ए०, बी०) मिलेव । ४-(ए०, बी०)
× । ५-(ए०, बी०) छेरी । ६-(बी०) कै । ७-(ए०, बी०) गयेव बोलाई ।
८-(बी०) देतिसि; (ए०) दीतिसि । ९-(ए०, बी०) चूर । १०-(बी०) × ।
११-(ए०) तँह; (बी०) तहाँ । १२-(ए०) बैठा । १३-(बी०) दिहेसि । १४-
(ए०) मै । १५-(बी०) बैसा । १६-(बी०) तेहि । १७-(दि०) आहे । १८-
(ए०) उए । १९-(ए०, बी०) दै । २०-(ए०, बी०) आएव । २१-(ए०)
चरपट (?); (बी०) चोरटा । २२-(ए०, बी०) × । २३-(ए०, बी०) लागी ।

टिप्पणी—(१) ओरान—समाप्त हुआ ।

(२) छेरि—बकरो ।

(४) चरि—गुफा । पैठा—घुसा । पाट—पट्ट; दरवाजा ।

(७) वार—देरी । नेक—तनिक भी ।

२४०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मानुस खाइ बहिरि^१ परि सोवा । यह र^२ देखि मैं जिय^३ मँह रोवा ॥१
 औ जिय के मैं डर न^४ रोवा । जिय मँह सँवरेउँ^५ तोर बिछोवा ॥२
 फुनि उन्दि कै बुधि जिय^६ मँह आई । सँडसी दगाधि^७ आँख मँह^८ लाई ॥३
 फोरेउँ आँख निकसि के भागेउँ । बहिरि^९ परेउ^{१०} दुख सब निसि जागेउँ ॥४
 तिह^{११} ठाँ^{१२} कैर सुनहु दुख भारी । वैसहुँ मँह मैं तों^{१३} न विसारी ॥५
 पँदमपत्र^{१४} विसालाछी^{१५}, गजकुम्भ पयोहरी^{१६} ।
 हिरदै^{१७} वससि मों तिह, साखा^{१८} बीलोचन^{१९} जथा ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०, बी०) बहुरि । २—(ए०) अह रे; (बी०) वह रे । ३—(ए०) जिउ ;
 (बी०) चित । ४—(ए०) औ मैं जिअ; (बी०) औ मैं जिउ । ५—(बी०) के डर नहि ।
 ६—(ए०, बी०) सुमरेंव । ७—(ए०, बी०) की । (ए०) जिअ; (बी०) जिउ । ८—(बी०)
 सँडसी दगाध । ९—(बी०) आँखिहु; (ए०) आगी । ११—(ए०) बहुरि; (बी०)
 पुनि रे । १२—(ए०) बरा । १३—(ए०, बी०) तेहि । १४—(बी०) ठाँव । १५—
 (ए०, बी०) तू । १६—(ए०) पदुम पुत्रि; (बी०) कँवल पत्र । १७—(ए०, बी०)
 विसाल किये । १८—(ए०) पयोहरे; (बी०) पयोहरि भरि । १९—(ए०) हिरदै वास
 काँती साखा; (बी०) हृदै वास कन्या साख; (दि० मर्जिन) हिरदै वसति कामनी
 साखा । २० (ए०, दि० मर्जिन) वैलोचन; (बी०) सवै लोचन ।

टिप्पणी—(१) परि—पड़कर ।

(२) बिछोवा—बिछोह; वियोग ।

(६) विशालाछी—(विशालाक्षी) बड़े नेत्रोंवाली । गजकुम्भ—हाथीका गण्डस्थल;
 स्तनकी उपमाके निमित्त कवि प्रायः इस शब्दका प्रयोग करते रहे हैं ।
 पयोहरी—पयोधरी; स्तनवाली ।

(७) मों—मैंरे । तिह—तुम । साखा—डाल । बीलोचन—देखिये पीछे १२१।७ ।

२४१

(दिल्ली; बीकानेर)

इत^१ दुख सुनि जिउ^२ घबरावा^३ । भिरगावती^४ गिय भरि कै लावा^५ ॥१
 हम लग^६ अति^७ दुख देखिहु^८ नाहाँ । विरसु^९ सिरफल^{१०} राखेउँ^{११} छाँहाँ ॥२

पवन न लागि^१ सूर पँह राखी^{१०} । वास नाँउ भँवर न चाखी^{११} ॥३
 दारिँउँ दाख असक जँभीरी^{१२} । विरसहुँ तुम्ह आगँ हम^{१३} नेरी^{१४} ॥४
 आलिगन आलो^{१५} कुच धरई । कर कुच गहे सहत^{१६} रस बढई^{१७} ॥५
 उरहिं लागि^{१८} कै दलमले, अधर घूँट रस लेई^{१९} ।६
 कन्दै हँसै मान कर बाला^{२०}, अधर अलिगन देई ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-एत । २-जिव । ३-गहवरि आवा । ४-भरि गीव लगावा । ५-लगि । ६-
 एत । ७-सहेहु । ८-विरहसहु सो फल राखे । ९-लागेउ । १०-राखेउ । ११-
 वासु न अवर भँवर चाखेउ । १२-दारिब नारंग दाख जँभीरा । १३-X ।
 १४-नीरा । १५-अलौ । १६-सुरति । १७-करै । १८-लाइ । १९-दलि कै रैन
 सेज रस लेइ । २०-हँसइ मान करै बालम ।

टिप्पणी—(१) इत-इतना । गिय-गले । नाहाँ-पति ।

(२) सिरफल-श्रीफल; बेल ।

(४) दारिउ-दाड़िम; अनार । दाख-अंगूर । जँभीरी-गोंबू । विरसउ-विलास
 करो । नेरी-निकट ।

२४२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

भँवर^१ वास परिमल सब^२ लिया^३ । औ सब अमिय महारस पिया^४ ॥१
 तिस्नाँ काम सान्त मन भई । दुख बेदन^५ उर कै^६ सब गई ॥२
 पाँचभूत^७ कया जो आही^८ । ते र^९ सिरान^{१०} अक्क^{११} होइ रही^{१२} ॥३
 कँवल किहाँ^{१३} भँवर^{१४} निसि रहा । जाय न जाइ^{१५} पेम रस गहा ॥४
 चित चिहटेव^{१६} निकसि^{१७} न जाई । पंकहि जिमि^{१८} गयन्द मिलाई ॥५
 हिया सरोवर^{१९} मन कँवल, सज्जन बहुल^{२०} वईठ ॥६
 वास लुबुधेउ पेम को^{२१}, भीतर न आवइ दीठ^{२२} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) भौरा; (बी०) भौर । २-(ए०) रस । ३-(बी०) लेई । ४-(बी०) पिवई ।
 ५-(बी०) बेदना । ६-(ए०, बी०) की । ७-(ए०, बी०) पाँचो भूत । ८-(ए०,
 बी०) अहे । ९-(ए०) तेरे; (बी०) ते । १०-(ए०) सेरान । ११-(ए०) उवंग;
 (बी०) अवाग । १२-(ए०, बी०) होय रहे । १३-(ए०, बी०) धानि ।
 १४-(ए०, बी०) भौरा । १५-(ए०, बी०) जाय । १६-(बी०) उलझा ।
 १७-(बी०) निकेसि । १८-(ए०) जिमि रे; (बी०) जेउँ । १९-(बी०) सरवर ।
 २०-(ए०) भेसल । २१-(ए०, बी०) के । २२-(ए०, बी०) बहुत उडंत न दीठ ।

२४३

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन सवै [विगरह^१] मँह गई। धरहर^२ करै सूर उवई^५ ॥१
 धरहर करै^३ सूर दुहुँ मानै। मोर भयउ [विगरह^१] विहराने ॥२
 जामिनि [विगरह^१] भयउ अपारा। कुंजर साजे^{१०} और तुखारा ॥३
 तातर^{११} कुरिल कराणउ^{१२} केसा। कंचुकी पहिरि सनाह^{१३} के भेसा ॥४
 पहिन जो विरिया^{१४} कंगन कलाई। सारी कलिसि रकावल टाई^{१५} ॥५
 रिपु सत वान जो लोइनहि^{१६}, भौंह धनुक बैटांह ॥६
 चक्र पयोधर कीन्ह गिय^{१७}, तिह^{१८} वर जीतेउ^{१९} नाँह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) विग्रह; (दि०) परिगह । २-मै। ३-धरहरि । ४-गा उगई । ५-धरहर
 किही । ६-मानी । ७-भयेउ । ८-(दि०) परिगह; (बी०) विग्रह । ९-(दि०)
 परिगह; (बी०) विग्रह । १०-साजेउ । ११-टाटर । १२-कराये । १३-सनेह ।
 १४-बाँह जो बरया । १५-सारी कस रंगावली थाई । १६-रविमुत बाहन जो
 लोइनहु । १७-कान्ह कै । १८-तेहि । १९-जेतेउ ।

टिप्पणी—(१) विगरह—(विग्रह) युद्ध । धरहर—रोक-थाम । उवई—उगा ।

(२) दुहुँ—दोनों । विहरनि—समाप्त ।

(३) जामिनि—(यामिनी) रात्रि । कुंजर—हाथी । तुखारा—घोड़ा ।

(४) तातर—तातारी तलवार । कुरिल—कुटिल; टेढ़ा । सनाह—कवच ।

२४४

(दिल्ली; बीकानेर)

तिलक [खड्ग*]^१ तातर तिंह माँगा^२ । कुरिल [वार]^३ उधियानेउ^४ माँगा ॥१
 नह सत साँग सनाह कै^५ लागी । कँचुकी तार तार^६ होइ भागी ॥२
 विरी^७ फूटि कर गही जो नाहाँ । पहुँचो^८ जो टूटि उपरि^९ गइ बाहाँ ॥३
 कसी रकावल^{१०} अही^{११} जो सारी । मैमन्त भिरे^{१२} उहो धरि फारी ॥४
 दूनो उनै^{१३} माँझ रन रहे । [दिनियर आइ बीच होइ गहे^{१४}] ॥५
 जो न^{१५} आवत सूरज^{१६} धरहर^{१७} को, को जानै कस होत ॥६
 दुहु^{१८} मैमत कर [विग्रह]^{१९} दलमलि, निकसेउ धरहुत सोत^{२०} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-(वि०) कुहका । २-तिलक जो लिखाट टाटर मँह लगा । ३-(दि०) हर ।
 ४-उधसी । ५-नहसुती संगी सनाहु । ६-तर तर । ७-बरया । ८-बाँह । ९-
 उवरि । १०-रंगावली । ११-हुती । १२-मैमत भिरेउ । १३-दुचौ आइ । १४-१-

(दि०) दिनियर आइ बीच होई । १५-नहि । १६-सुजं । १७-घरहरि । १८-
दुवौ । १९-(दि०) बरकर । २०-निकसे धार हुतै सोत ।

टिप्पणी—(२) नह-नल । सत-शत । साँग-लोहेका छोटा भाला । सनाह-कवच ।

(३) विरी-चूड़ी । पहुँचो-पहुँची; एक आभूषण । उपरि-उखड़ ।

२४५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

भोर भयउ^१ दिनकर^२ उजियारा । चेरी पानि^३ लै आयउ^४ वारा ॥१
बदन पखारहि^५ पान चवाहीं । हँसहि^६ सेज पर केलि कराहीं ॥२
महतै^७ [नेगी^८] सुनी यह वाता । वह आयउ^९ ज^{१०} सुना हुत^{११} राता ॥३
जै^{१२} को नेहा^{१३} राखी^{१४} अही^{१५} । आयउ^{१६} सोइ कुँवरि जै^{१७} चही ॥४
उत्तम^{१८} उतंग राजपुत आही^{१९} । सूरुजवंसी^{२०} ऊँच इन्ह चाही^{२१} ॥५
मिरगावती राज उन्ह^{२२} दीन्हो^{२३}, औ आपुन सब^{२४} जीउ ॥६
चलहु जोहारै जाहि भेंट^{२५} लै^{२६}, मिरगावती कर^{२७} पीउ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) भयेव । २-(बी०) दिनियर । ३-(ए०) चेरी पानी; (बी०) चेरी
पानी । ४-(बी०) आई; (ए०) आयेव । ५-(बी०) हँसि हँसि । ६-(ए०)
महथे । ७-(दि०) नगर । ८-(ए०, बी०) आयेव । ९-(ए०, बी०) जो । १०-
(बी०) होत । ११-(बी०) जेइ, (ए०) जे । १२-(ए०, बी०) गहि तहिया ।
१३-(ए०, बी०) राखेव । १४-(दि०) आही । १५-(ए०, बी०) आयेव । १६-
(ए०) जो; (बी०) वोहि । १७-(बी०) अति । १८-(ए०, बी०) आही । १९-
(ए०) सुरुज बस; (बी०) सूर्य बंस । २०-(बी०) इन्हि चही । २१-(बी०) उन;
(ए०) सब । २२-(ए०, बी०) दीन्हेव । २३-(ए०) आपन उन्ह । २४-(बी०)
जाहि भेटेल । २५-(बी०) X ।

टिप्पणी—(१) दिनकर-सूर्य । चेरी-दासी ।

(२) बदन-मुँह । पखारहि-(स० प्रच्छालन) धोते हैं । केलि-क्रीड़ा ।

(३) महतै-श्रेष्ठ जन; उच्च कर्मचारी । माताप्रसाद गुप्तने मधुमालतीमें इसे
महामाल्य बताया है । नेगी-सामान्य कर्मचारी ।

(४) जै-जिसका । नेहा-स्नेह; प्रेम ।

(५) उतंग-(स० उत्तुंग) अत्यन्त ऊँचा ।

१. इस प्रतिमें यह कड़वक दो कड़वकोंमें बँटा है । पहले कड़वकमें प्रथम दो पंक्तियोंके साथ
पाँच अन्य पंक्तियाँ हैं । दूसरे कड़वकमें मध्यकी तीन पंक्तियाँ और उनके बाद दो पंक्ति
रिक्त और तब अन्तकी दो पंक्तियाँ हैं ।

२४६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

भिरगावती कहाँ सुनु राया । नगर लोग कँहँ बोलहु माया ॥१
 सभा बैठि परधान हँकारहु । कापर दइके देस अभारहु ॥२
 नेगी अउर अहाँहि बहुतेरे । सभै बुलावहु पठवहु चेरे ॥३
 आन होइ सव देश मझारी । तुम्हँ राजा हँ नारि तुम्हारी ॥४
 सभा जाइके बैठेउ सयाना । भा उजियार नगर सब जानाँ ॥५
 महता तुरिय भेंट लै आवाँ, औ नेगी सब आय ॥६
 दण्डवत भेंट कीनिह जो कुँवर कँहँ, घाइ लागि फुनि पाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) कहै । २-(बी०) कहुँ । ३-(बी०) कपरा । ४-(ए०, बी०) दैके ।
 ५-(बी०) उभारहु । ६-(ए०, बी०) और । ६-(ए०) सबही; (बी०) सवै ।
 ८-(ए०, बी०) बोलावहु । ७-(ए०) होहि; (बी०) होय । १०-(ए०) तोह ।
 ११-(बी०) जाय कै । १२-(बी०) बैठ; (दि०) बैठउ । १३-(बी०) मुजाना; (ए०)
 माना । १४-(बी०) राजनीति चरचै । १५-(बी०) महथे; (ए०) महथ । १६-(बी०)
 आये । १७-(ए०) औव; (दि०) × । १८-(ए०, बी०) डण्डवत १९-(ए०) जो
 कीन; (बी०) जो कोन्ह । २०-(ए०) से; (बी०) कै २१-(बी०) घाय । २२-
 (ए०) लागहु; (बी०) लगे । २३-(ए०) सुनि ।

टिप्पणी—(१) राया—राजा । माया—मया; प्रेम ।

- (२) परधान—प्रधान । हँकारहु—बुलाओ । कापर—कपड़ा; वस्त्र । दइके—देकर ।
 अभारहु—आभारी बनाओ ।
 (३) सभै—सभीको । चेरे—दास ।
 (४) आन—ख्याति । मझारी—मध्य ।
 (५) सयाना—चतुर ।
 (७) दण्डवत—अभिवादन । पाय—पैर ।

२४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मया बोलि कै कुँवर उवाये । नेगी कै कापर नेगिहँ पाये ॥१
 औ परसाद बहुत कै दीन्हँ । सीस चढ़ाइ सो रानहिँ लीन्हँ ॥२
 राइ राउ उरगान जो अहे । आयसु भयउ बुलावइ कहै ॥३
 प्रतिहार कहँ अज्ञा भई । देउ जोहारी जो आवई ॥४
 नीचहिँ कोउ न छेई आजू । देखइ देहु हमारेउ साजू ॥५

कुंडर^१ कान मुकुट^१ सिर सोहै, कर कटार सोन सन^१ मूँटि ।
प्रीति [इ]नहिं साँची कै जानहु^१, अउर^१ प्रीति सब झूटि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०, बी०) क । २—(बी०) कपरा । ३—(ए०) नेगिन्ह; (बी०) नेगिहु । ४—
(ए०) चढ़ाए; (बी०) चढ़ाय । ५—(बी०) सो रे उन्ह ; (ए०) जो रानहिं । ६—
(ए०) राए रान उरगान; (बी०) राय रान ओरगान । ७—(दि०) आहे । ८—(ए०)
आऐस भई बोलावै कहे; (बी०) आये सवै जो बोलावन कहे । ९—(ए०, बी०)
जोहारै । १०—(बी०) नीचेहु; (ए०) काहू । ११—(ए०, बी०) कोइ । १२—
(ए०) छेरै; (बी०) छेकै । १३—(ए०, बी०) देखै । १४—(ए०, बी०) हमारेव ।
१५—(ए०) कोंडर; (बी०) कुण्डल । १६—(ए०) मटुक । १७—(ए०, बी०) × ।
१८—(ए०) प्रीति इन्हहि की साची; (बी०) प्रीति इन्ह की गनियै साँची । १९—
(ए०, बी०) और ।

टिप्पणी—(२) परसाद—(प्रसाद) अनुग्रह; कृपा ।

(३) राइ राउ—राजा लोग । उरगान—जायसीके पदमावतमें यह शब्द ओरगानके रूपमें प्रयुक्त हुआ है (९९।९; १२८।२) । वासुदेवशरण अग्रवालने इन स्थलोंपर अरबी शब्द रुकन (=खम्भ)के बहुवचन अरकानको मूलमें मानकर अमीर-उमरा, प्रधान, सामन्त, माण्डलिक (पृ० १४५), मुख्य, प्रधान व्यक्ति (पृ० ११३) आदि अर्थ किये हैं । किन्तु इसके मूलमें न तो अरबी शब्द है और न इसका वह अर्थ है जो अग्रवालजीने अनुमान किया है । सम्भवतः यह संस्कृतका उरुगाय है । वेदोंमें सूर्यकी गतिशीलताके लिए अनेक स्थलोंपर इस शब्दका प्रयोग हुआ है । उरगानके मूलमें उरुगाय होनेका सम्भावना नरपतिके वीसलदेव-रासमें प्रयुक्त उल्लिगण, उल्लिगणा, उल्लिगणा शब्दोंसे प्रकट होता है—

हस-वाहन भिग लोचन नारि ।

सीस समारइ दिन गिणइ ॥

जिन सिरजइ उल्लिगण धर नारि ।

जाइ दिहाडाउ झरित ॥

(हंस जैसी चालवाली मृगलोचनी नारि बाल सँवारते हुए वियोगके दिन गिनते हुए कहती है—भगवान् किसीको उल्लिगानेकी पत्नी न बनाये जिसका जीवन ही बिसूरते बीतता है ।

इणी भव उल्लिगणौ हुवौ ।

आवतइ भव होइ कालो हो साँप ॥

इस जन्ममें उल्लिगाना हुआ; अगले जन्ममें वह काला सर्प (अर्थात् घरवार हीन प्रवासी) होगा । इनसे ऐसा जान पड़ता है कि उरगानका प्रयोग ऐसे

व्यक्ति या समाजके लिए होता था जो जीविकोपार्जनकी दृष्टिसे स्थिर नहीं रहते थे। इसी अर्थमें उरगिया शब्द आज भी बुन्देलखण्डीमें प्रचलित है—

सबरे उरगिया उरग जात हैं।

हमहूँ उरग खों जाएँ।

भैया मोरी लगी है उरगकी चाकरी।

गुजरातीमें आज भी ओलग शब्द सेवाके अर्थमें प्रयोग होता है और वहाँ कुछ जगहोंपर भंगीको ओलगाणा कहते हैं। इनके प्रकाशमें देखनेपर उरगान या ओरगानका तात्पर्य या तो सार्थवाह (बनजारों) से है जो व्यापारके निमित्त सदैव घरसे बाहर रहते थे; या फिर उन लोगोंसे है जो अन्यत्रसे आकर सेना आदिमें चाकरी करते थे। प्राचीन कालमें शासन-व्यवस्थामें वणिक् समाजका काफी हाथ रहता था और वे राज-दरवारमें प्रतिष्ठित होते थे। सम्भवतः उन्हींकी ओर यहाँ संकेत है। किन्तु पदमावतमें इस शब्दका उपयोग सैनिकोंके प्रसंगमें हुआ है।

(५) नीचहिं—निम्न वर्गके व्यक्ति। साजू—ठाटबाट।

(६) कुंडर—कुण्डल, कानमें पहननेका आभूषण। सन—समान।

२४८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राने राई^१ कुँवर जो बुलाये^२। बनि बनि सबै जोहारे आये ॥१
माँडखण्डो^३ जगती^४ के नाँऊँ। वैठी सभा अपूरव टाँऊँ ॥२
कुँवर थवैतहिं^५ दीन्हें^६ सानाँ। आइ थवाइत आफुहिं पानाँ ॥३
तिस तिस^७ पान कह आफुहिं^८ बीरा^९। पान^{१०} कपूर गुना मँह नीरा ॥४
खैर^{११} माँझ^{१२} कस्तुरी^{१३} मेराई। मोति क चून सभा सब खाई ॥५
राइ^{१४} नरिन्द नर^{१५} नरवई^{१६}, सेवा समै^{१७} कराँहि ॥६
आयसु^{१८} जोवँहि खिन खिन^{१९}, अझा होइ त जाँहि^{२०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१—(ए०) राए; (बी०) राय। २—(ए०, बी०) बोलाये। ३—(ए०) मानखण्डी; (बी०) तरमंडर। ४—(बी०) भुअन। ५—(ए०) धवैतन्ह; (बी०) थवतन्ह। ६—(ए०) दीन्हैव; (बी०) दीन्ही। ७—(ए०) आए थवादेर आछहिं पानी; (बी०) आइ थवई तव दीन्हा पाना। ८—(बी०) सठि सठि। ९—(बी०) आफैं। १०—(ए०) सब कहँ आफुहि पान क बीरा। ११—(ए०, बी०) पानी। १२—(ए०)

१. इस प्रतिमें यह कड़वक दो कड़वकोंमें बँटा है। आरम्भकी तीन पंक्तियोंके साथ चार अन्य पंक्तियाँ हैं। दूसरे कड़वकमें तीसरी-चौथी पंक्तियाँ प्रथम दो पंक्तियोंके रूपमें और अन्तिम दो पंक्तियाँ अन्तमें हैं। बीचमें तीन नयी पंक्तियाँ हैं। ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त स्वीकार कर अन्यत्र दी गयी हैं।

खीर । १३-(बी०) माँह । १४-(ए०) कसतुरी; (बी०) कसतूरी । १५-(ए०) रास । १६-(ए०) कुवर नभ (?) । १७-(ए०) नखै; (बी०) राउ राना राउत । १८-(ए०, बी०) सबै । १९-(ए०) आजेस; (बी०) आयेस । २०-(ए०, बी०) खन खन । २१-(ए०, बी०) विनु अग्या नहिं जाहिं ।

टिप्पणी—बनि बनि—बन टनकर; साज-सँवर कर ।

(३) थवैतहि, थवाइत—पनवाड़ी; बरई; पान लगानेवाले । साँना—संकेत । आफुहिं—तैशर करते हैं । पानाँ—पान ।

(४) तिस तिस—तीस तीस । गुवा—सुपारी ।

(५) मेराई—मिल्लाई । माँति क चून—सीपीका बना चूना ।

(७) जोधैहि—जोहते हैं; प्रतीक्षा करते हैं ।

२४९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सभा जानु' फूली' फुलचारी । कुँवर बैठै' खाँडै रन' भारी ॥१
सुन्दर खतरी' वीर अपारा । गजपति बैठे' माँह निहारा ॥२
हँवरपति बैठे' बहु भारी' । नरपति गिनत न' आउ' उन्हारी ॥३
औ भूपति' बहु बैठे' तार्ही'० । आपु आपु मँह वाद करार्ही'० ॥४
झगराह नरपति' पाँयहि लागे'३ । कहहिं न काहू भागहिं'० आगे'० ॥५
कुँवर चक्कवइ खतरी' जोधा'०, सूरन'० मँह बड़ सूर ।६
पँवरी बारि'० तिंह'० वाजै अहिनिस्सि'०, दान जूझ कर तूर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) जनु; (बी०) जानहु । २-(ए०, बी०) बैठ । ३-(ए०) पति । ४-(ए०, बी०) खत्री । ५-(दि०) माँती । ६-(बी०) गनत न; (ए०) गनपति । ७-(ए०, बी०) आव । ८-(ए०, बी०) भुवपति । ९-(बी०) बैठे हैं । १०-(बी०) तहाँ । ११-(बी०) आपु आपु कहँ वादै कहा । १२-(ए०, बी०) नै पति । १३-(ए०) पतन्ह लागे; (बी०) बानैत बान लगी । १४-(बी०) भाजहिं । १५-(ए०, बी०) आगी । १६-(ए०, बी०) खत्री । १७-(ए०, बी०) × । १८-(ए०, बी०) सूरह । १९-(ए०, बी०) पँवरी बार । २०-(ए०) उठि; (बी०) । उन्ह । २१-(ए०) × ।

टिप्पणी—(२) गजपति—मध्यकालीन, राजाओंकी एक उपाधि (देखिये नीचे ३) ।

(३) हँवरपति—अश्वपति । अश्वपति, गजपति, नरपति, इन उपाधियोंका उल्लेख प्रायः मध्यकालीन शिलालेखों और ताम्रपत्रोंमें मिलता है । यथा—परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर परममाहेश्वर-त्रिकलिगाधिपति निजभुजो-पार्जिताश्वपति गजपति नरपति राजत्रयाधिपति कर्णदेव (चेदिनरेश कर्णका

१०४७ ई० का गुहरवा लेख)। इन उपाधियोंका प्रयोग चन्देल, गहड़वाल, हैहय और सेनवशी राजाओंके लेखोंमें भी मिलता है। किन्तु इनका मूल तात्पर्य क्या था इसपर किसीने अबतक प्रकाश डालनेका प्रयास नहीं किया है।

(४) वाद-विवाद; बहस।

(५) झगरहि-लड़ते हैं। पाँयहि लागे-पैर छूनेके लिए।

(६) चक्रवद्-चक्रवर्ती। खतरी-क्षत्रिय। जोधा-योद्धा। सूरन मँह-शूरोंमें।

(७) पँवरि बारि-प्रवेश द्वार। अहि-निसि-दिनरात। तूर-एक प्रकार का उद्घोषक वाद्य; तुरही।

२५०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर पान दै सभा बहोरी। चुनि चुनि राखिसि आपन जोरी ॥१
कँहाहँ नाच तुम्हँ देखहु आजू। माँगिसि सब नटसार काँ साजू ॥२
नटुवा पतुरीं नायकँ आयँ। आयँ पखाउजिँ सबद सुहायेँ ॥३
आयँ उपांगी नाद जो दँहाँ। ताल गंभीर नाँउँ सोँ लहीं ॥४
जन्त्रकारँ गर सुरँ जो गाँवाँह। ब्रह्मदीनँ सुरदीनँ बजावाँह ॥५
सबदसुरा सुरमण्डलँ ओधूतीँ, रुद्रदीनँ लँ आइँ ॥६
बाँस पिनोकँ सारंगीँ, मोंदरँ काहल सबद सुहाइँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) कहिसि। २-(ए०) तोह। ३-(बी०) माँगहि ४-(ए०) क; (बी०) के।
५-(ए०) पतरै; (बी०) पत्रै। ६-(बी०) कछिके। ७-(बी०) आय। ८-(ए०)
पखाउज; (बी०) पखाउजी ९-(ए०, बी०) सोहाये। १०-(बी०) आय। ११-
(बी०) ताउ। १२-(बी०) सँउ; (ए०) सिउ। १३-(ए०) जंत्रकाल। १४-
(ए०) कर सुसर; (बी०) औ सुसर। १५-(ए०, बी०) बर्मवेनु। १६-(बी०) सर
वैनु; (ए०) सर बीनु। १७-(ए०) सरासर मण्डल; (बी०) सरिसर मन्द्र। १८-
(ए०) अधूती; (बी०) अधौटी। १९-(ए०) रुद्रवेनु; (बी०) रुद्रवैन। २०-
(ए०) आए; (बी०) टंकारि। २१-(ए०) उपांग। २२-(ए०) सरंगी। २३-
(ए०) X; गहुली बाँस पिनकि सरंगी। २४-(ए०) काह लगा सोहाय; (बी०)
औ सब बाजन शारि।

टिप्पणी—(१) बहोरी-विसर्जित किया। जोरी-जोड़ी; साथी।

(२) माँगिसि-माँगा। नटसार-नाट्यशाला। साजू-सज्जा।

(३) नटुवा-नट; अभिनेता। पतुरीं-वेश्या। नायक-नाट्य-नृत्यके प्रधान।
पखाउजि-पखावज बजानेवाले। पखावज मृदंगका एक रूप है जो आकृतियोंमें
उससे कुछ लम्बा होता है। इसका चलन उत्तर भारतमें है। मृदंगका
प्रचार दक्षिणमें है।

- (४) **उपांगी**—उपांग बजानेवाले। उपांग नभतरंगका नाम है। यह तुरहीके आकारका होता था और गलेपर लगा कर नसोंको फुलाकर बजाया जाता था। मथुरा-चृन्दावनकी ओर इसका विशेष प्रचार था। (टी० ए० मुखर्जी, आर्ट मैन्यूफैक्चरर्स आव इण्डिया, पृ० ९५)।
- (५) **जन्त्रकार**—जन्त्र नामक वाद्य बजानेवाले। जन्त्र नामक वाद्यमें गज भर लम्बी लकड़ीकी खोखली नलीके दोनों सिरोंपर तूँबेके अधकटे भाग लगे होते हैं और गर्दनपर सोलह खूंटियाँ होती हैं जिनमें लोहेके पाँच तार लगे होते हैं। खूंटियों द्वारा स्वरोका उतार-चढ़ाव किया जाता है। **गर**—गला। **ब्रह्मवीन**—वीणाका एक प्रकार। **सुरवीन**—वीणाका प्रकार।
- (६) **सबदसुरा**—कोई वाद्य। **सुरमण्डल**—(स० स्वरमण्डल) यह प्राचीन कात्यायनी वीणा या शततन्त्री वीणाका रूप है। कल्लिनाथके कथनानुसार स्वरमण्डल मत्तकोकिला वीणाका नाम है। संगीत-रत्नाकरमें २१ तारोंवाली वीणाको मत्तकोकिला कहा गया है। पोपलीकी धारणा है कि कानून नामक ईरानी वाद्य, जिसमें ३७ तार होते हैं, स्वरमण्डलका ही रूप है। वे अंगरेजी पियानोंको भी स्वरमण्डलका ही विकसित रूप मानते हैं। (म्यूजिक आव इण्डिया, पृ० ११६)। चित्रावलीमें सुरमण्डलमें बत्तीस तार बहे गये हैं (सुरमण्डल तहँ अपुरुब दीसा। एक सरासन पइँच बतीसा ॥ ७२।५)। यह मिजराव द्वारा बजाया जाता है। **औधूती**—कोई वाद्य। **रुद्रवीन**—प्राचीन रुद्रवीनका आधुनिक नाम रवाव है। (मुखर्जी, आर्ट मैन्यूफैक्चर्स आव इण्डिया, पृ० ८२) जो स्टेनमें रेवेक कहलाता है। वायलिनका विकास भी इसीसे हुआ है। रुद्रवीणामें सात तार तथा बाइस पर्दे होते हैं; यह दो तूँबीवाली वीणा है। इसमें किनारेकी ओर मयूरकी आकृति होती है।
- (७) **बाँव**—बाँसुरी। **पिनाँक**—यह अत्यन्त प्राचीन वाद्य है। कहा जाता है कि इसका आविष्कार शिवने किया था। यह तारोंवाला बाजा है जो चाप या धनुहीसे बजाया जाता है। **सारंगी**—लोक-प्रसिद्ध वाद्य जो धनुष द्वारा बजाया जाता है। **माँदर**—एक प्रकारका मृदंग। **काहल**—वाद्य विशेष।

२५१

(दिल्ली; वीकानेर)

बाजे साज' सबद सब^१ थापे। छवो सपूरन राग अलापे ॥१
 औ [जो तीसो]^२ भारजा अर्ही^३। एक एक रागहि^४ पँच पँच^५ गर्ही ॥२
 प्रथम^६ नाद एक उन्ह^७ किया। भैरों बहुरि अलापे^८ लिया ॥३
 मधुमाधो^९ मँधुरा^{१०} अलापी। बंगला वैराटिक^{११} थापी ॥४
 औ गुनकरी सँपूरन गाई^{१२}। यहि^{१३} भारजा भैरों आई^{१४} ॥५

भैरो पंच वरंका^{१५}, गायहि^{१६} सबै सपूर^{१७} ।
फिर^{१८} मालबोस क अलापहिं, जिह क नाँव^{१९} [बड़ि दूर^{२०}] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-× । २-जहाँ लहु । ३-(दि०) छत्तीस । ४-(दि०) आहीं । ५-राग । ६-पाँच पाँच । ७-प्रथमहिं । ८-उन । ९-मधुमाधवी । १०-ऐसोधरी, ११-बंगाल वर त्रोटक । १२-भई । १३-यहै । १४-अई । १५-भैरौ पाँच बार गन । १६-गाइन्हि । १७-संपूरी । १८-बहुरि । १९-अलापिन्ही सुधिसै । २०-जिन्ह कान है । २१-(दि०) बड़वार ।

टिप्पणी—(१) साज—वाद्य । सबद—नाद । थापे—चोट किया । सपूरन—सम्पूर्ण ।

छवो राग—छ राग । भारतीय संगीत शास्त्रमें रागोंका सर्वप्रथम उल्लेख मातंगमुनि कृत बृहद्देशीमें मिलता है । इसकी रचना कालके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ कहा नहीं जा सकता । कुछ विद्वानोंका अनुमान है कि यह चौथी और सातवीं शताब्दीके बीच किसी समय लिखा गया; पर कुछ लोग उसे नवीं शताब्दीसे पूर्वकी रचना नहीं मानते । इस ग्रन्थमें सात प्रकारके गीतोंका उल्लेख है और उनमें एक प्रकारके गीतका नाम राग-गीत बताया गया है । बारहवीं शताब्दीमें मानसोल्लासके सुविख्यात रचयिता सोमेश्वरने संगीत-रत्नावली नामसे एक संगीत-ग्रन्थ लिखा था । उसमें आठ रागोंका उल्लेख है । इनमें इन रागोंके अतिरिक्त संगीतके अन्य बहुतसे रूपोंकी चर्चा है जो आगे चलकर रागिनियों अथवा रागोंके भार्यायोंके नामसे पुकारी गयीं । राग-रागिनियों सूरिखा भेद सर्वप्रथम संगीत-मकरन्दमें प्रकट होता है । इसे नारद रचित कहा जाता है । अनुमान है कि यह सातवीं और ग्यारहवीं शतीके बीच किसी समयकी रचना है । इस ग्रन्थमें रागोंके तीन भेद कहे गये हैं—पुलिंग-राग, स्त्री-राग और नपुंसक-राग । बताया गया है कि रौद्र, अद्भुत और वीर रसके उद्बोधनके लिए पुलिंग-राग, शृंगार, हास्य और करुण रसके उद्बोधनके लिए स्त्री-रागका और भयानक, बीभत्स तथा शान्त रसके उद्बोधनके लिए नपुंसक-रागका उपयोग किया जाना चाहिए । इस भेदके साथ इस ग्रन्थमें २० पुलिंग, २४ स्त्री और १३ नपुंसक रागोंकी सूची दी गयी है । इनके अतिरिक्त, संगीत-मकरन्दमें राग-रागिनियोंकी उस परिपाटीकी भी चर्चा है जिसमें छ राग माने गये हैं । इनके सम्बन्धमें कहा गया है कि इनकी उत्पत्ति शिव और शक्तिसे हुई है । शिवके पाँच मुखोंसे श्रीराग, बसन्तराग, भैरवराग, पंचमराग, और मेघरागकी तथा पार्वतीके मुखसे नटनारायण-रागकी उत्पत्ति हुई । रागोंकी यह नामावली सोमेश्वर देवके राग-दर्पण (बारहवीं शताब्दी) में भी उपलब्ध है । किन्तु इसके बादके संगीत-ग्रन्थोंमें रागोंकी नामावलियोंमें काफी भेद पाया जाता है । उदाहरणतः चौदहवीं शतीमें रचित रागार्णवमें छ रागोंके नाम हैं—भैरव, पंचम, नट,

मलार, गौड़मालव और देशास्व । पन्द्रहवीं शतीके पूर्वाद्धमें रचित नारद कृत पंचम-संहितामें इनके नाम मालव, मल्लार, श्रीराग, वसन्त, हिंडोल, और कर्णाट बताये गये हैं । उसी शतीके उत्तरार्धमें हुए संगीत-शास्त्री कल्लीनाथके अनुसार रागोंके नाम हैं—श्रीराग, पंचम; भैरव, मेघ, नटनारायण और वसन्त । सोलहवीं शतीके आरम्भकी रचना मेघकर्ण कृत रागमाल्यमें रागोंकी नामावली इस प्रकार है—भैरव, मालकौशिक, हिंडोल, दीपक, श्रीराग और मेघराग । कुतुबनने रागोंके नामके लिए मेघकर्ण की सूची अपनायी है और उसीके क्रमसे रागोंकी इस तथा आगेके कड़वकोंमें उल्लेख किया है ।

(२) तीस भारजा (भार्या)—उपर्युक्त प्रत्येक रागकी पाँच-पाँच भार्याओं, इस प्रकार तीस रागिनियोंका भी उल्लेख कुतुबनने किया है । उन्हींकी तरह अधिकांश संगीत-ग्रन्थोंमें तीस रागिनियोंका उल्लेख मिलता है पर कहीं-कहीं छत्तीस रागिनियोंकी भी चर्चा पायी जाती है । संगीत ग्रन्थोंमें रागोंकी तरह ही रागोंके साथ रागिनियोंके भार्या-सम्बन्धमें भी काफी मतभेद पाया जाता है । एक ही रागिनीको लोगोंने एक दूसरेसे भिन्न राग की भार्या बताया है । कुतुबनने संगीत-शास्त्रकी किस परम्पराके अनुसार अपनी भार्या-सूची प्रस्तुतकी की है, नहीं कहा जा सकता । उनकी सूची संगीत-शास्त्रोंकी किसी शत सूचीसे मेल नहीं खाती । यही नहीं, उनके कहे भार्या सम्बन्धमेंसे अनेकका किसी सूत्रसे समर्थन भी नहीं होता । इस प्रकार उन्होंने किसी अज्ञात परम्पराकी नयी सूची प्रस्तुत की है ।

(३) भैरों (भैरव)—इस रागका सम्बन्ध शैव सम्प्रदायसे माना जाता है । ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह मूलतः आश्विन मासमें शैव सम्प्रदायके किसी विशेष उत्सवके अवसरपर गाया जानेवाला संगीत था । संगीतज्ञ अब इसे शरद ऋतुका संगीत मानते हैं । रागोंका सम्बन्ध ऋतुके साथ तो माना ही जाता है; साथ ही उनका सम्बन्ध समयके साथ भी जोड़ा गया है । तदनुसार भैरव राग ब्राह्म सुहूर्त (सूर्योदयसे पूर्व) का राग है । किन्तु कुतुबनके उल्लेखसे इस प्रकारकी कोई बात प्रकट नहीं होती ।

(४) मधुमाधो (मधु-माधवी)—भैरवकी भार्याके रूपमें मधुमाधवीका उल्लेख अन्यत्र हमें सर्वप्रथम राधाकृष्ण कवि रचित रागकूटहल (१८५३ वि०-१७:१ ई०) में प्राप्त होता है । इससे पूर्व किसीने इसे भैरवकी भार्या बताया है, हमें ज्ञात नहीं । यों इस रागिनीका सर्वप्रथम उल्लेख सोमेश्वरदेव कृत रागदर्पण (११३१ ई० के लगभग) में मिलता है । वहाँ इसे श्रीरागकी भार्या कहा गया है । यह रागिनी सूर्योदयके उपरान्त प्रारम्भिक तीन पहलोंमें गेय कही गयी है । मधुरा (मधुरा)—इस नामकी रागिनीका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमें हमें कहीं प्राप्त न हो सका । मधुराका उल्लेख कल्ली-

नाथ (१४६० ई०) ने मेघरागकी भार्याके रूपमें किया है। यह रागिनी किस समय गायी जाती है, इसका उल्लेख भी हमें कहीं नहीं मिला। बंगला—अधिकांश संगीतशास्त्रियोंने इसका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमें किया है; और इस आशयका प्राचीनतम उल्लेख सोमेश्वरदेवके रागदर्पणमें है। किन्तु कल्लीनाथने इसे मेघरागकी भार्या कहा है। यह प्रातःकालीन रागिनी है। बैराटिक—इसका उल्लेख बराटी अथवा बैराटीके रूपमें संगीतशास्त्रमें मिलता है। भैरवकी भार्याके रूपमें बैराटीका उल्लेख हनुमानसम्प्रदायके संगीतकारोंने किया है। हनुमानके समयके सम्बन्धमें कुछ कहा नहीं जा सकता। आंजनेय (हनुमान) नामक संगीतशास्त्रीका उल्लेख अभिनवगुप्त (१०३० ई०), सारंगदेव (११४७ ई०), शारदा-तनय (१२५० ई०) और कल्लीनाथ (१४६० ई०) ने किया है; किन्तु इनका कोई ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। सम्भव है कुतुबनने इसी सम्प्रदायका अनुकरण करते हुए इसे भैरवकी भार्या कहा हो। अन्यथा बैराटीका उल्लेख आचार्य मम्मट (सम्भवतः ग्यारहवीं शतीके प्रख्यात काव्यमर्मज्ञ काव्यप्रकाशके रचयिता) के संगीतरत्नमालामें देशाशकी, सोमेश्वरदेवके रागदर्पणमें वसन्तरागकी, रागार्णवके साक्ष्यसे शारंगधर-पद्धति (१३६३ ई०) में पंचमकी और मेघकर्ण कृत रागमाला (१७६१ ई०) में श्रीरागकी भार्याके रूपमें मिलता है। पुण्डरीक विट्टलने अपनी रागमालामें इसे सदा गेय बताया है।

- (५) गुनकरी—भैरवकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख संगीतशास्त्रोंमें बारहवीं शताब्दीसे ही पाया जाता है। किन्तु सर्वत्र इसका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमें ही हो, ऐसा नहीं है। पुण्डरीक विट्टलने इसको श्रीरागकी भार्या कहा है। यह प्रातःकालीन (प्रथम पहर) की रागिनी है।
- (७) मालकोस—यह राग है और इसका प्राचीन नाम मालव-कौशिक है। इसका सम्बन्ध मालव देशसे समझा जाता है। यह किस ऋतु अथवा किस समयका राग है इसका स्पष्ट उल्लेख किसी संगीत ग्रन्थमें मुझे प्राप्त न हो सका। मातंग (५-७ शताब्दी ई०) ने बृहद्देशीमें इसका उल्लेख मालव-कौशिक नामसे भाषा गीतके रूपमें किया है। मालव रागका उल्लेख मम्मटने संगीतरत्नमाला, नारद और दत्तिलने रागसागर, नारदने पंचमसंहितामें और कौशिक नामक रागका उल्लेख नारदने चत्वारिंशत् रागिनिरूपणमें किया है। सम्भवतः इन सबका तात्पर्य मालकोससे ही है। मालकौशिक नामसे इस रागका उल्लेख सर्वप्रथम मेघकर्णकी रागमालामें है जो सोलहवीं शतीके आरम्भकी रचना है। इनके अनन्तर परवर्ती संगीत शास्त्रोंमें इसकी प्रायः चर्चा है पर कुछ ही ने इसकी गणना छ रागोंमें की है।

२५२

(दिल्ली; बीकानेर)

[वहि*^१] अलाप भारजा अलापी^२ । वड^३ पाँचो^४ सुद्ध सेउँ^५ थापी^६ ॥१
गौरी देवकली^७ औ टोड़ी । कंकुभ^८ खंभावती^९ न^{१०} छोड़ी ॥२
फिर^{११} हिंडोल क^{१२} आयउ वारा^{१३} । पाँच भारजा साथ उभारा^{१४} ॥३
वैरारी विचित्र अलापी । औ देसाख नाँटाँ वै^{१५} थापी ॥४
सहजकथा औ देसी^{१६} जो गाई । पाँचहु साथ हिंडोल^{१७} कराई ॥५
एक न दीपक^{१८} गायहि^{१९} जानत^{२०}, जिह^{२१} गाये है दोख । ६
गायहि^{२२} पाँच^{२३} वरंका^{२४} जिह कहँ आहे^{२५} मोंख ॥७

पाटान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-वाहि । २-अलापिन्हि । ३-औ । ४-पाँचो ऊ । ५-सुधि सै । ६-थापिन्हि ।
७-गुन करी । ८-गुनकह । ९-(दि०) कंभावती । १०-नहि । ११-बहुरि ।
१२-कर । १३-आयेउ पारा । १४-उचारा । १५-नटी क । १६-साजक तार
नट । १७-हिंदोल । १८-दीपग । १९-गाइन्हि । २०-जन तेहि । २१-जेहि ।
२२-गाइन्ह । २३-पाँच । २४-भारजा । २५-जेहि गाये है ।

टिप्पणी—(२) गौरी—सम्भवतः यह गौड़ीका रूप है और इसका सम्बन्ध गौड़े देशसे है ।
आरम्भकालिक प्रायः सभी संगीत शास्त्रियोंने इसे श्रीरागकी भार्या बताया है ।
मालकोशकी भार्याके रूपमें गौरीका सर्वप्रथम उल्लेख भावभट्ट (१९७४ वि—
१७०१ ई०) के अनूपसंगीतकुशमें मिलता है । परवती संगीत ग्रन्थोंमें प्रायः
मालकोशके भार्याके रूपमें ही इसका उल्लेख हुआ है । किन्तु पुरुषोत्तम
मिश्र (१७३० ई०) ने संगीतनारायणमें इसे मेघरागकी भार्या बताया
है । यह सन्ध्याकालीन रागिनी कही गयी है । देवकली—संगीतशास्त्रोंमें
सम्भवतः इसके ही देवगिरि, देवक्रिया, देवव्री रूप पाये जाते हैं । भैरव,
मेघ, वसन्त, हिण्डोल, अथवा शुद्धनाटकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख
विभिन्न संगीत शास्त्रोंमें पाया जाता है । इसे कहीं भी मालकोशकी भार्या नहीं
कहा गया है । अतः इसके अपाठ होनेका अनुमान किया जा सकता है ।
बीकानेर प्रतिमें इसके स्थानपर गुनकरीका नाम दिया हुआ है और कुछ
परवती ग्रन्थमें गुनकलीका नाम मालकोशकी भार्याके रूपमें आया है । इससे
इस धारणाकी पुष्टि भी होती है । किन्तु गुनकरीका नाम कुतुबनने भैरवकी
भार्याके रूपमें पहले ही किया है । अतः इस पाटान्तरको स्वीकार करना
कठिन है । ऐसी अवस्थामें यही मानना होगा कि देवकली ही कुतुबनका
मूल पाठ है । वे देवकलीको मालकोशकी भार्या कहनेवाले एकाकी
है । टोड़ी—इसके टुण्डी, टुडिका, टोड़िका, टुड़ी आदि अनेक नाम देखनेमें

आते हैं। मालकोशकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख सर्वप्रथम नारद कृत चत्वारिंशत्तरागनिरूपणम् (१५२५-१५५० ई०) में मिलता है। इससे पूर्वके संगीतग्रन्थोंमें यह विविध रागों, यथा—पटमंजरी, नाट, बसन्त, दीपक, हिंडोलकी भार्या बतायी गयी है। इसकी गणना प्रातः कालीन रागिनियोंमें की जाती है। कँकुभ (ककुभ)—ओ० सी० गांगुली का अनुमान है कि इस रागिनीके नामके मूलमें ककुभ नामक वह ग्राम है, जो देवरिया (उत्तरप्रदेश) में सलेमपुर-मझौलीके निकट स्थित था और आज कल कहाँ कहलाता है। वहाँसे सम्राट् स्कन्दगुप्तका एक स्तम्भ-लेख प्राप्त हुआ है जिसमें इस ग्रामको “ख्यातेस्मिन् ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैः साधु संसर्ग पूते” कहा गया है। इससे अनुमान होता है कि गुप्त-काल में यह ग्राम अवश्य ही महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र रहा होगा। यदि उस कालमें वहाँ इस रागिनीका विकास हुआ हो तो कोई आश्चर्यकी बात न होगी। यों भी, यह रागिनी काफी प्राचीन है, यह मातंग (५-७ शती ई० के बीच) कृत बृहद्देशीसे सिद्ध है। उसमें ककुभका उल्लेख साधारण गीतिके रूपमें किया गया है। तदनन्तर ककुभा नामसे इसका उल्लेख सन्धिरागके रूपमें नाट्यलोचन (८५०-१००० ई०) में हुआ है। सारंगदेव (१२१०-१२४७ ई०) ने संगीतरत्नाकरमें इसकी गणना साधारित रागोंमें की है और इसका सम्बन्ध षड्ज और मध्यम दोनों ग्रामोंसे बताया है। राग-भार्याके रूपमें इसका सर्वप्रथम उल्लेख कल्लिनाथ (१४६० ई०) ने किया है। उन्होंने इसे पंचम रागकी भार्या बताया है। इसे मालकोशकी भार्या माननेवाले संगीत-शास्त्री एक-आध ही हैं। इस रूपमें इसका प्राचीनतम उल्लेख भावभट्ट (१६७४-१७०१ ई०) के अनूपसंगीतांकुशमें जान प्रड़ता है। खम्भावती—इस नामके मूलमें सम्भवतः गुजरातका खम्भात नामक नगर है जो अपनी सन्तुद्धि और व्यवसायके लिए चिरकालसे प्रसिद्ध रहा है। इस रागिनीका सर्वप्रथम उल्लेख नाट्यलोचनमें, सन्धिरागके रूपमें हुआ है। तदनन्तर पार्वदेव (१२५० ई०) कृत समयसारमें उपांगोंकी सूचीमें पाडवके अन्तर्गत इसका नाम आया है। लोचन-कवि (१३७५ ई०) ने अपने रागतरंगिणीमें १२ मेलो (मूल रागों) की जो चर्चा की है, उसमें केदारके अन्तर्गत जन्यरागके रूपमें खम्भावतीका उल्लेख किया है। राग-भार्या के रूपमें इसका सर्वप्रथम उल्लेख चतुर्विंशच्छत्तरागनिरूपणम् में मिलता है। वहाँ उसे पंचमरागकी भार्या कहा गया है। मालकौशिककी भार्याके रूपमें पहला उल्लेख भावभट्टके अनूपसंगीतांकुशमें है।

- (३) हिंडोल—राग-गीतिके रूपमें हिंडोलकी चर्चा सर्वप्रथम मातंग कृत बृहद्देशी-में, जो ४थी ७वीं शताब्दीके बीचकी रचना है, प्राप्त है। तदनन्तर सोमेश्वर कृत मानसोल्लासमें रागोंकी जो सूची है, उसमें आठ रागोंमें हिंडोलका भी

उल्लेख है। इस प्रकार यह प्राचीन रागोंमें है; फिर भी छ रागोंकी जो सूची विभिन्न संगीत-ग्रन्थोंमें मिलती है, उसमेंसे कुछमें ही इसका उल्लेख है। इसके सम्बन्धमें धारणा है कि आरम्भमें यह आदिम अनायोंके श्लेसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी आनन्दोत्सवका संगीत रहा होगा। पीछे चलकर लोगोंने इसका सम्बन्ध दोलोत्सव अथवा डोल-यात्रा तथा राधा-कृष्ण सम्बन्धी श्लेके उत्सवसे, जो श्रावणके महीनेमें होता है और उत्तर भारतमें अति प्रचलित है, जोड़ लिया।

- (४) बैरारी—(बैराटी) सम्भवतः इसका सम्बन्ध बरार अथवा प्राचीन विराट्-राज्य से है, जिसका उल्लेख महाभारतमें हुआ है। बराटी नामसे इसका सर्व प्रथम उल्लेख मम्मट कृत संगीत-रत्नमालामें है। वहाँ इसे देशाखकी भार्या कहा गया है। सोमेश्वरदेवने रागदर्पणमें बराटीको बसन्त रागकी भार्या बताया है। तेरहवीं शती रचित रागार्णवके आधारपर उससे कुछ पीछेकी रचना शारंगधर-पद्धतिमें बराटीको पंचमकी भार्या कहा गया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें सर्वप्रथम उल्लेख बराड़ी नाम से नारद कृत पंचमसंहिता (१४४० ई०) में हुआ है। बैरारी नामका सर्वप्रथम उल्लेख कल्लीनाथने पंचमकी भार्याके रूपमें किया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें इसका उल्लेख अन्यत्र कहीं देखनेमें नहीं आया। देसाख—संगीत ग्रन्थोंमें इसका देसाख्य रूप भी देखनेमें आता है। इसके मूलके सम्बन्धमें किसी प्रकारका अनुमान सम्भव नहीं है। देसाग नामसे एक सालंक रागका उल्लेख नाट्यलोचनमें हुआ है। यदि देसाग और देसाख एक ही हैं तो यह इसका प्राचीनतम उल्लेख है। राजा नान्यदेव कृत सरस्वती-हृदयालंकार (१०९७-११५४ ई०) में देशाख्यकी चर्चा मुख्य भाषा-गीतोंमें है। राग-भार्याके रूपमें सर्वप्रथम कल्लीनाथने इसका उल्लेख देवसाग (देवशाख) नामसे किया है और इसे बसन्त रागकी भार्या कहा है। पुण्डरीक विट्टलकी रागमालामें यह देसाक्षी नामसे शुद्धनाटकी भार्या कही गयी है। चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणमें इसका उल्लेख कौशिककी भार्याके रूपमें है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें देशाक्षीका उल्लेख सर्वप्रथम भावभट्टने अनूप-संगीतालंकारमें किया है। इसके अनन्तर ही इस रूपमें इसका उल्लेख कुछ संगीत-ग्रन्थोंमें मिलता है। नाँटा—बोकानेर प्रतिमें पाठ नटी है। नट, नाट, नाटनारायण नामके राग और नट तथा नाटिका नामकी रागिनीका उल्लेख संगीत ग्रन्थोंमें मिलता है। रागिनी रूपमें सम्भवतः यहाँ नट अथवा नाटिकासे ही तात्पर्य है। किन्तु राग-रागिनियोंकी किसी भी सूचीमें इन दोनोंकी चर्चा हिण्डोलकी भार्याके रूपमें नहीं है। उसे सर्वत्र नटनारायण, दीपक अथवा भैरवकी ही भार्या कहा गया है।

- (५) सहजकथा—इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख किसी संगीतग्रन्थमें उपलब्ध

नहीं है। अतः कहना कठिन है कि इस नामकी कोई रागिनी रही है। देसी—यह नाम किसी स्थानिक संगीतके लिए प्रयुक्त होकर ही प्रचलित हुआ होगा; किन्तु इसका अभिप्राय किस स्थानसे है, अनुमान करना कठिन है। इतना ही कहा जा सकता है कि राग-रागिनियोंके प्रसंगमें इस नामका प्रचलन काफी पुराना है। नारद कृत संगीतमकरन्द (७-९ शती ई०) में सर्वप्रथम इसका उल्लेख पटमंजरीके उपरागके रूपमें हुआ है। मम्मटने इसे मलारकी भार्या कहा है। सोमेश्वरदेव इसे वसन्तकी भार्या मानते हैं। रागार्णवके अनुसार यह पंचमकी भार्या है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें देसीका उल्लेख केवल चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणमें है। यह मध्याह्नकी रागिनी है।

- (६) दीपक—दीपक-रागका सर्वप्रथम उल्लेख पार्वदेव कृत संगीत समय-सार (लगभग १२५० ई०) में रागांगोंके रूपमें हुआ है। तदनन्तर नारद कृत पंचम संहिता (१४४० ई०) में हिंडोलकी भार्याके रूपमें दीपिका नामक रागिनीका उल्लेख मिलता है। राग-परिवारमें रागके रूपमें दीपकका उल्लेख सर्वप्रथम मेघकर्णने रागमाला (१५०९ ई०) में किया है। किन्तु सभी राग-सूचीमें इसका नाम नहीं मिलता। कुतुबनने इसके गानेमें दोष माना है। इससे जान पड़ता है कि इस कालतक यह निषिद्ध राग था। पीछे सम्भवतः यह बात नहीं रही। तानसेन द्वारा इसके गाये जानेका उल्लेख मिलता है।

२५३

(दिल्ली; बीकानेर)

परसिचन्द^१ कामोदक^२ देसी । पटमंजरी करकेसी^३ ॥१
 यै^४ दीपक भारजा बखानी । मेघराग से चौकर^५ आनी ॥२
 मालसिरी सारंग वरारी^६ । घनासिरी औ कही गंधारी^७ ॥३
 मेघराग उन्ह^८ पाँचहि माँथा^९ । कीन्ह अलाप^{१०} एकहि साथ ॥४
 खस्टम स्त्रीराग उन्ह किया । ऊँच अलापहि सुध सेउ^{११} लिया ॥५
 हेमकली^{१२} मलार गूँजरी, भीउपलासी^{१३} कीन्ह ।६
 स्त्रीराग कै यै भारजा, कहीं राग कै^{१४} चीन्ह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-नीरस चींद । २-कमोदकर । ३-को रे कहेसी । ४-ए । ५-से एकरि । ६-वैरारी । ७-(दि०) आउ यै अंधियारी । ८-उनि । ९-पंचम थापा । १०-गहि अलापिन्ह । ११-अलापै उनि सुधि सै । १२-हेमकरी । १३-भीमपाली । १४-जो कहि तू गहि ।

टिप्पणी—(१) परसिचन्द—इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख संगीतग्रन्थोंमें उपलब्ध नहीं है। सम्भव है यह अपपाठ हो। कामोदक—इस रागिनीका

नामकरण कुमुद नामक पुष्पपर हुआ जान पड़ता है। इसकी गणना प्रातःकालीन रागिनियोंमें की जाती है। नाट्यलोचनमें इसे सन्धि राग कहा गया है। भार्या-परम्परामें इसका उल्लेख सर्वप्रथम नारद कृत संगीत-मकरन्दमें है। वहाँ इसे पंचम रागकी भार्या कहा गया है। रागदर्पणमें सोमेश्वरदेवने नटनारायणको, रागार्णवमें देसायकी, नारदने पंच संहितामें कर्णाटकी, कल्लिनाथने मेघकी भार्या कहा है। दीपककी भार्याके रूपमें सर्वप्रथम उल्लेख मेघकर्णकी रागमालामें प्राप्त है। किन्तु छ रागोंके अन्तर्गत दीपककी गणना करनेवाले संगीतग्रन्थोंमेंसे अधिकांशमें कामोदकका उल्लेख उसको भार्याके रूपमें नहीं मिलता। देसी-इसका उल्लेख पूर्ववर्ती कड़वकमें हिण्डोलकी भार्याके रूपमें हा चुका है। यहाँ दीपकरागकी भार्याके रूपमें पुनः उल्लेख सन्देह उत्पन्न करता है। कुतुबनने कदापि एक ही रागिनीका दो रागोंकी भार्याके रूपमें उल्लेख न किया होगा। किन्तु उन्होंने इसका उल्लेख वस्तुतः किस रागके साथ किया है और कौनसा पाठ दोषजानत उल्लेख है, कहना सुगम नहीं है। दीपककी भार्याके रूपमें देसीका उल्लेख हनुमानके अनुयायी संगीतज्ञोंने किया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमें बांकानेर प्रातमें देसीके स्थानपर नट पाठ है। और नटाका भी वहाँ पूर्वोक्तमें उल्लेख है। इस कारण नट पाठ यहाँ ग्राह्य न होगा। इस बातकी सम्भावना हो सकती है कि वहाँ कोई भिन्न नाम रहा हो। कराकेसाके साथ देसी का ही तुक होनेसे यहाँ किसी अन्य नामका कल्पना भी नहीं की जा सकती। किन्तु कराकेसी पाठ भी संदिग्ध है। पटमंजरी-इस नामके सम्बन्धमें धारणा है कि इसका मूल नाम प्रथम-मंजरी था और वसन्त ऋतुके साथ इसका सम्बन्ध था। यह किसी भी समय गेय है। मातंगके बृहद्देशीमें इसकी गणना भाषा गीतोंमें की गयी है और इसका सम्बन्ध हिण्डोलक रागसे बताया गया है। नारदने संगीतमकरन्दमें पटमंजरी नामसे रागके रूपमें इसका उल्लेख किया है। रागिनीके रूपमें पटमंजरी नामसे सर्वप्रथम उल्लेख मम्मटने संगीतरत्नमाला में किया है। उसका सम्बन्ध उन्होंने मलारसे माना है। सोमेश्वरने इसे पंचमकी, पंचमसंहितामें नारदने वसन्तकी, पुण्डरीक विट्टलने हिण्डोलकी भार्या माना है। ब्रिटिश संग्रहालय, लन्दनकी रागमाला चित्रावलीमें इसका अंकन भैरवकी भार्याके रूपमें हुआ है। केवल मेघकर्ण कृत रागमालामें इसकी चर्चा दीपककी भार्याके रूपमें प्राप्त है। कराकेसी-इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं है। सम्भवतः यह भ्रष्ट पाठ है।

(२) मेघराग-जैसा कि यह नामसे ही स्पष्ट है यह वर्षाऋतु का राग है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख सोमेश्वरदेव कृत रागदर्पणमें है।

(३) मालसिरी (मालश्री)-सम्भवतः इसका मूलरूप मालवश्री है। इस रूपमें

यह मम्मट कृत संगीतरत्नमालामें कर्णाटकी रागिनी कही गयी है। सोमेश्वरदेवने मालश्रीका उल्लेख श्रीरागकी भार्याके रूपमें किया है। नारद (पंचमसंहिता) ने इसको मालवकी, मेघकर्णने मालकोशकी, पुण्डरीक विट्ठलने शुद्धनाटकी और चत्वारिंशच्छत्-राग-निरूपणमूने हंसककी भार्या बताया है। ब्रिटिश संग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमें इसका भैरवकी भार्याके रूपमें अंकन है। इस प्रकार किसी भी संगीत ग्रन्थमें इसका सम्बन्ध मेघरागसे नहीं जोड़ा गया है। पुरुषोत्तम मिश्रने, जो गजपति वंशीय नारायणदेव (१७३० ई०) के राजकवि थे, संगीतनारायण नामक ग्रन्थ लिखा है। इसकी जो उपलब्ध प्रति बंगालके एशियाटिक सोसाइटीमें है, वह काफी भ्रष्ट और अपाठ्य है। इसमें मालवश्री और मालसी नामक दो रागिनियोंका उल्लेख है। उसमें मालवश्रीको श्रीरागकी और मालसीको मेघरागकी भार्या बताया गया है। यदि मालसी मालश्रीका अपपाठ हो तो यही मेघरागकी भार्याका एकमात्र उल्लेख है। पर यह काफी पीछेकी रचना है। सर्वप्रथम कुतुबनने ही इसे मेघरागकी भार्या कहा है। यह सर्व समयमें गेय रागिनी है। सारंग-अनेक राग-रागिनियोंका नाम पशु-पक्षियोंपर हुआ है। सम्भवतः उन्हींमेंसे यह भी एक है। यह एक प्राचीन रागिनी है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख नारद कृत संगीतमकरन्दमें नाटकी रागिनीके रूपमें हुआ है। और इसी रूपमें इसका उल्लेख अधिकांश ग्रन्थोंमें मिलता है : मेघकर्णको रागमालामें दीपककी भार्याके रूपमें सारंगी (कहेली) का उल्लेख है। उसका तात्पर्य इसी रागिनीसे है अथवा किसी अन्यसे है, कहना कठिन है। मेघरागकी भार्याके रूपमें सारंगका उल्लेख राधामोहन सेन ने अपने संगीत-तरंग (१८१८ ई०) में भरत के उल्लेखसे किया है। यह भरत निस्सन्देह नाट्यशास्त्रके रचयिता भरत नहीं हैं; क्योंकि उनके समयमें रागोंके इस रूपका विकास नहीं हुआ था। अतः कहना कठिन है कि इस परम्पराकी प्राचीनता कितनी है। जो भी हो, जहाँतक सारंगका सम्बन्ध है, कुतुबन उस परम्परासे परिचित थे जिसमें यह मेघरागकी भार्या मानी जाती थी। बरारी—वैरारी नामसे इसका उल्लेख हिण्डोलकी भार्याके रूपमें पहले हो चुका है। साथ ही यह भी द्रष्टव्य है कि किसी भी परम्परामें वैरारी या बरारी मेघरागकी भार्या नहीं कही गयी है। अतः निस्सन्देह यहाँ इसका उल्लेख भ्रष्ट-पाठ मात्र है। सम्भवतः मूल पाठ मलारी रहा होगा। मलारी का उल्लेख अधिकांश संगीत-शास्त्रियों ने मेघरागकी भार्याके रूपमें किया है। यह प्रातःकालीन रागिनी है। धनासिरी (धनाश्री)—इसका उल्लेख धनासिका रूपमें भी पाया जाता है। अनुमान किया जाता है कि इस नामके मूलमें कोई विदेशी नाम है जिसका निरर्थक परिष्करण कर लिया गया है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख

मम्मट कृत संगीत-रत्नमालामें देशाखकी रागिनियोंमें धानसी नामसे हुआ है। इसे रागार्णवमें भैरवकी, नारद कृत पंचम संहितामें मालवकी, मेघकर्ण कृत रागमालामें मालकौशिककी, चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणमें वसन्तकी, भावभट्ट कृत अनूप-संगीतांकुशमें श्रीरागकी, ब्रिटिश संग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमें दीपककी भार्या कहा गया है। अकेले कल्लीनाथने इसे मेघरागकी भार्या बताया है। यह प्रातःकालीन रागिनी मानी जाती है। गन्धारी-गन्धार देशके नामपर इसका नामकरण हुआ जान पड़ता है। यह प्राचीन रागिनी है। इसका उल्लेख मातंग कृत बृहद्देशीमें भाषा गीतोंके अन्तर्गत सौवीरक रागकी रागिनीके रूपमें हुआ है। नारद कृत संगीत-मकरन्दमें इसे बंगाल रागकी, उसी ग्रन्थमें अन्यत्र देवगन्धारी नामसे श्रीरागको, मेघकर्ण कृत रागमालामें मालकौशिकको, ब्रिटिश म्यूजियमकी रागमाला चित्रावलीमें हिण्डोलकी भार्या कहा है। किन्तु मेघरागकी भार्या माननेवाली परम्परा काफी प्राचीन जान पड़ती है। इस रूपमें उसका उल्लेख सोमेश्वरदेवने किया है। यह सम्भवतः प्रातःकालीन रागिनी है।

(५) श्रीराग (श्रीराग,—श्रीके लक्ष्मी, सौन्दर्य, समृद्धि आदि अर्थके आधारपर अनुमान किया जाता है कि इसका सम्बन्ध अन्रोत्पत्ति सम्बन्धित किसी उत्सवसे है। उत्तर भारतमें श्री (लक्ष्मी) की पूजा जाड़ेमें हुआ करती है जब कि खेतोंसे कट, दौं-ओसा कर अन्न घरमें आ जाता है। इस प्रकार इसका सम्बन्ध जाड़ेसे है और ऋतुओं पर आश्रित प्राचीन मूल रागोंमें से यह एक है। कुतुबनने सब रागोंकी पाँचों भार्याओंका उल्लेख किया है, किन्तु इसकी केवल चार भार्याओंका ही नाम उन्होंने दिया है; एक नाम छोड़ गये हैं।

(६) हेमकली (हेमकरी < हेमक्री < हेमक्रिया)—कतिपय प्राचीन संगीत शास्त्रोंमें रागोंके वर्गीकरणमें क्रियांग रागोंकी चर्चा है। अतः समझा जाता है कि क्रिया, क्री, करी, कली नामान्त रागिनियाँ, तत्कालीन रागरूपोंके क्रममें हैं। हेमकली भी उसमेंसे एक है। सन्धिरागोंके रूपमें इसका सर्वप्रथम उल्लेख नाट्यलोचनमें प्राप्त होता है। राग-भार्याके रूपमें इसका उल्लेख अठारहवीं शतीसे पूर्वके किसी संगीतग्रन्थमें यहाँ मिलता है। महाराज सर्वाई प्रतापसिंह देवने संगीत-सार नामसे जो ग्रन्थ प्रस्तुत किया है, उसमें उन्होंने हेमकलीका उल्लेख दीपककी भार्याके रूपमें किया है। श्रीरागकी भार्याके रूपमें हेमकलीका उल्लेख कुतुबनके प्रस्तुत उल्लेखके अतिरिक्त कहीं अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। मलार-मलार नामक रागका उल्लेख प्रायः संगीत ग्रन्थोंमें मिलता है और लोग प्रायः मेघमलारके नामसे उल्लेख किया करते हैं। पर मलार नामक रागिनीका उल्लेख नहीं कहीं मिलता। मल्लारी नामक एक रागिनी अवश्य है, जिसके पंक्ति ३ के मूल पाठमें होनेकी सम्भावना हमने

प्रकट की है। यदि उसीका उल्लेख यहाँ हो तो पंक्ति ३ के मूल पाठके रूपमें किसी अन्य रागिनीको ढूँढ़ना होगा। कुतुबनके पूर्ववर्ती अथवा समकालिक किसी संगीत ग्रन्थमें मलार अथवा मलारीका नाम श्रीरागकी भार्याके रूपमें प्राप्त नहीं। ब्रिटिश संग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमें सेतमलार नामकी रागिनी श्रीरागकी भार्याके रूपमें अंकित है। अतः हो सकता है कि मलारको श्रीरागकी भार्या माननेवाली कोई परम्परा रही हो और उसका अनुसरण कुतुबनने किया हो। पर पंक्ति ३ को ध्यानमें रखते हुए यह पाठ सन्दिग्ध ही जान पड़ता है। गूँजरी(गुर्जरी)—यह गुजरात प्रदेशके नामपर आधारित काफी प्राचीन रागिनी है। मातंग कृत बृहदेशी-में इसका उल्लेख टक्क और पंचम रागोंके अन्तर्गत भाषा गीतोंके रूपमें हुआ है। संगीत रत्नमालामें मम्मटने इसकी गणना सालंक रागोंमें की है। राग-परिवारमें गूँजरीका उल्लेख सोमेश्वरदेवने भैरवकी, नारद-दत्तिलने राग-सागरमें धुर्जरी नामसे मालवकी, रागार्णवने पंचमकी, नारदने पंचमसंहितामें वसन्तकी, मेघकर्णने दीपककी, पुण्डरीक विट्टल-ने देशकारकी, भावभट्टने मेघरागकी और पुरुषोत्तम मिश्रने संगीत-नारायणमें नटनारायणकी भार्याके रूपमें किया है। किसी भी संगीत ग्रन्थ में गूँजरी का उल्लेख श्रीरागकी भार्याके रूपमें उपलब्ध नहीं है। भीमपलासी (भीमपलासी)—आधुनिक संगीतशास्त्री भातखण्डेने भीम-पलासीको काफीका जन्यराग कहा है। इनसे पूर्व केवल लोचन कविने अपनी रागतरंगिणी (१३७५ ई०) में और हृदयनारायण देव (१६६४ ई०) ने अपने हृदय-कौतूहलमें इसकी चर्चा की थी। दोनों ही संगीत-शास्त्रियोंने इसे केदारका जन्य राग कहा है। राग-परिवारमें इसका उल्लेख एकमात्र राधामोहन सेन कृत संगीत तरंग (१८१८ ई०) में उपलब्ध है। उन्होंने भरत नामक किसी परवर्ती संगीतशास्त्रीके प्रमाणसे इसे हिण्डोलकी भार्या कहा है। अतः कुतुबनका यह उल्लेख रागपरिवारमें सबसे प्राचीन है और किसी अज्ञात परम्परापर आधारित है।

(७) कै—को। चीन्ह—पहचान कर।

२५४

(दिल्ली; बीकानेर)

खस्टम राग भारजा' थार्या। तीसों' रागिनी साथ अलार्याँ ॥१
बाजै सबद जहाँ लहिँ आहै'। भा शंकार मोहि सब रहै ॥२
फुनि' पतुरीं कछनी कै' आई। मान बहुत लावहिँ' बहु भाई ॥३
कंबल बदन' भ्रिगनैनि' सुहाई। वरें' लंक जानु'० उन्ह' लाई ॥४
हिया' सुभर जनु'१ कुन्द सँवारी। कदलि'२ खम्भ पेड़ न सँभारी' ॥५

चम्पा बरन सुहानी^१ तरुनी, जो^२ देखत^३ सो मोह । ६
वेगर वेगर भाँ^४ तिह कै^५, कै आई छोह^६ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-भाजी । २-छतीस । ३-लहकहे । ४-पुनि । ५-जो पतरा एक कछि । ६-
लावै । ७-बदनी । ८-मिगनैनी । ९-बरलै । १०-जनौ । ११-उनि । १२-
हिय । १३-जनौ । १४-कदली । १५-सुभरारी । १६-सोहावनि । १७-सुन्दरि
जो । १८-देखा । १९-भाव । २०-तिन्हिकर । २१-बहु जोह ।

टिप्पणी—(२) सबद-वाद्य ।

(३) पतुरीं-नर्तकी । कछनी-घुटनोंतक कसा हुआ अधोवस्त्र । भाईं-भाव ।

(५) कुन्द-खराद ।

२५५

(दिल्ली; बीकानेर)

कछनी दखिन क चीर कै गहीं^१ । चँदर चोलि उर लेइ रहीं^२ ॥१
अभरन समै^३ कपूर क कीन्हा । घाँघरि^४ बाँधि आइ पग^५ दीन्हा ॥२
चीहुर गूँद बेनी उरवाई^६ । चन्दन रूख पर^७ विसहर छाईं^८ ॥३
देखत मोहि सभा सब रही । काम चेष्टा तन मन गहीं^९ ॥४
कै जुहार उन्ह आयसु^{१०} लीन्हा । कुँवर नाँच कँह आयसु^{११} दीन्हा ॥५
गायन^{१२} गावहिं काढ़ि^{१३} सुधांग^{१४}, नाच होइ^{१५} तिह^{१६} लाग । ६
माँथा धौरा झूमरा परिवन्ध^{१७}, यइ र गीत^{१८} वै राग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-कछनी दखिन कर चीर लै कीना । २-चन्दन चोलि उर लेपन दीन्हा । ३-
सवै । ४-घाँघर । ५-पगु । ६-उरवाई । ७-पर जनौ । ८-जाई । ९-काम
चेष्टन सब कछु जिय गही । १०-इन्ह आइस । ११-आइस । १२-गाइन ।
१३-गाढ़े । १४-सुध । १५-होन । १६-तहँ । १७-मठधुव झूमर परिवन्ध गीत ।
१८-एइ रागिनी ।

टिप्पणी—(१) कछनी-साड़ी अथवा धोतीको काष्ठ लगाकर पहननेकी विधि; इसमें
घुटनोंतक ही वस्त्र होता है और दोनों लॉंग पीछे खोंस ली जाती है ।
दखिन क चीर-दक्षिणी वस्त्र । चन्दर चोलि-(चन्दन चोली) चँदनके रंगकी
वनी हुई कंचुकी ।

(२) घाँघरि-धुँधुरू ।

(३) चीकुर-चिकुर, केश । रूख-वृक्ष । विसहर-सर्प ।

(५) सुधांग-शुद्ध अंग ।

(७) माथा, धौरा, झूमरा, परिवन्ध-ये नृत्यके विभिन्न प्रकार जान पड़ते हैं जो
कदाचित् अब प्रचलित नहीं हैं ।

२५६

(दिल्ली; बीकानेर)

सरब नील रूपक चन्द औ चाली^१। देसी जित पँवर^२ इकताली ॥१
 अठतालो पटतालो नार्ची^३। ताल देन्दि^४ जानहु धर तार्ची^५ ॥२
 फुनि^६ नाचइ^७ धर पला^८ सँचारा। नार्चहिं गीत होइ इनकारा ॥३
 सीस नियर^९ कूदहिं^{१०} मँह^{११} मोती। दहा दिहिंह चक्र भँवहि उरधूती^{१२} ॥४
 सरो अकाँच खरगै धारा^{१३}। मान लेहिं^{१४} पर ताल निपारा^{१५} ॥५
 नाचै ताल सवै उन्ह, कँटमारग^{१६} जहाँ लहि राग।६
 सुरपति सुरहिं^{१७} साथ लै, [कौतुक]^{१८} अवसर^{१९} देखै लाग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१—सर्वन नील रूपक औ चाली। २—देसी जाति तेवरी। ३—अठतल पटतल ऊ
 नाची। ४—देहि। ५—ठाँची। ६—पुनि। ७—नाचै। ८—धुरपद। ९—नीर।
 १०—गूदहिं। ११—मुँह। १२—हाथहि चक्र भँवहि अघौती। १३—संख चक्र खरग
 कै धारा। १४—देइ। १५—निवारा। १६—मार्ग गीत। १७—सुरन्ह। १८—(दि०)
 कौकत। १९—अखर।

टिप्पणी—(१) सरब नील, रूपक, चन्द, चाली, देसी, जित पँवर (?), इक-
 ताली—ये नृत्यों के विभिन्न रूप जान पड़ते हैं। चेष्टा करनेपर भी इनके
 सम्बन्धमें कोई जानकारी उपलब्ध न हो सकी।

(२) अठताल, पटताल—पखावज और मृदंग बजानेके अनेक तालोंमें मुख्य
 ताल हैं। इन तालोंपर गायन-वादन तो होते ही हैं, विशुद्ध नृत्य भी इन
 तालोंपर होते हैं। धर—धड़। तार्ची—खाँचा।

(३) धर पला—धड़ और पल्लव (हथेली) (अनुमान मात्र)।

(४) दहा—दस। दिहिंह—दिशाओंमें। भँवहि—घूमती हैं।

(५) खरगै धारा—खड़ अथवा तलवारकी धारपर नाचनेका संकेत यहाँ जान
 पड़ता है। इस प्रकारका नाच काफी प्राचीन है और आज भी कथक-शैली-
 में प्रचलित है।

२५७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

उत्तिम नाच कुँवर मन भावा। नीक महन्दरी^१ नाच दिखावा^२ ॥१
 परसन भये^३ मया मन आयी। बहु^४ परसाद महन्दरी^५ पाई ॥२
 तुरिय सहस कर^६ पायँइ^७ पावा। मुँदरी^८ टोडर गिनति^९ न आवत ॥३
 पाट पटोर चीर बहु पाई^{१०}। टाँका कोरि एक^{११} रोक देवाई^{१२} ॥४
 कर नौकड़ी^{१३} दीन्दि^{१४} उतारी। सीस^{१५} मुकुट^{१६} औ^{१७} गिय कँठहारी^{१८} ॥५

१. यह सूचना हमें श्री रामचन्द्र वर्मासे प्राप्त हुई है।

अलंकरण दई^१ कुँवर आपुन^२, पहिरे आहे^३ जो आँग^४ ।
पतुरिंह^५ अभरन पायउ^६, पा लहि नेउर लग सर माँग^७ ॥७

पाटान्तर—एकडला, वीकानेर ।

१-(ए०, वी०) महेंदरे । २-(ए०, वी०) नचावा । ३-(वी०) भवा । ४-(वी०) बहुर । ५-(ए०, वी०) महेंदरे । ६-(ए०) कै; (वी०) का । ७-(ए०) पायड; (वी०) पायेंड । ८-(वी०) मुंदर । ९-(वी०) गनती । १०-(ए०, वी०) पाए । ११-(ए०) कोरिक् । १२-(ए०, वी०) देवाए । १३-(ए०) कर तौ करही; (वी०) कर नौ ग्रिह । १४-(वी०) दिहिस । १५-(ए०) सीस क; (वी०) सीसकर । १६-(ए०) मटुक; (वी०) मुकट । १७-(ए०, वी०) × । १८-(ए०, वी०) कँठ-मारी । १९-(ए०) आलंकरण दै; (वी०) ते सव दीन्ह । २०-(ए०, वी०) आपन । २१-(ए०) अहा; (वी०) अहे । २२-(ए०, वी०) अंग । २३-(ए०, वी०) पतरन्ह । २४-(ए०) पाएव; (वी०) पायेन्हि । २५-(ए०) मंग; (वी०) पाँव लहि सिर मंग ।

टिप्पणी—(१) नीक—अच्छा; सुन्दर ।

(२) परसन—प्रसन्न ।

(३) पायेंड—मार्ग की सुविधा । मुँदरी—अँगूठी ।

(४) पाट-पटोर—सूती-रेशमी वस्त्र । चीर-वस्त्र । टाँक-टंक; चाँदीका सिक्का दिल्ली मुल्तानोंके समयमें उत्तर भारतमें प्रचलित था । उसका वजन १६७-१७० ग्रेन था और मूल्यमें रुपये के बराबर था । रोक—पारिश्रमिक ।

(५) नौकड़ी—सम्भवतः हाथका कोई आभूषण । गिय-कण्ठ । कँठहार-कण्ठा; गलेका हार ।

(६) अलंकरण—अलंकरण । आँग-अंग; शरीर ।

(७) अभरन—आभरण; आभूषण । पा-पैर । लहि—तक । नेउर—नूपुर । माँग-सिरपर केशोंके बीच पहना जानेवाला आभूषण ।

२५८

(दिल्ली; एकडला; वीकानेर)

कुँवर ता र' समा कहँ जाई । मिरगावती एक चेरी बुलाई ॥१
कदिसि बुलावहु जाई सहेली । मिरगावति हँहि मंदिर अहली ॥२
चेरी जाई सखिन सेउ' कहा । चलहु तुमहि मिरगावति चहा ॥३
सुना सहेलिह' सब उठि चली । इन्द्र अपउरन सेउ' वै' भली ॥४
पान खात आई सब सली । मिरगावती हँसत वै' लली ॥५

१. इस प्रतिमें यह दो कड़वकोमें बँटा है । पहिले कड़वकोमें प्रथम चार पंक्तियाँ अन्य तीन पंक्तियोंके साथ हैं । इसके बाद एक सर्वथा नवीन कड़वक है । तदनन्तर शेष तीन पंक्तियाँ एक तीसरे कड़वक की पंक्ति २, ६, ७, के रूप में हैं ।

वैठी^{१२} आइ सहेली^{१३} सब, मिलि^{१४} पूछहिं निसि कै^{१५} बात । ६
कहहु कौन विधि रावई^{१६} साई^{१७} मान किहहु र^{१८} मिलात^{१९} ॥७
पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) तोरे; (बी०) बहुरि । २-(ए०, बी०) चेरी बोलाई । ३-(ए०, बी०) बोलावहु
जाय । ४-(ए०, बी०) मिरगावती । ५-(ए०, बी०) जाय ६-(ए०, बी०) सखिन्ह सों ।
७-(ए०, बी०) तुम्हहिं । ८-(ए०, बी०) सहेलिन्हि । ९-(ए०, बी०) अपछरन्ह सों १०-
(ए०) उए; (बी०) उइ । ११-(ए०) उए; (बी०) हँसतै वै । १२-(बी०) वैसी ।
१३-(बी०) × । १४-(ए०) × । १५-(ए०) की । १६ (ए०) रावै; (बी०)
रायेहु । १७-(बी०) × । १८-(ए०) कीन्ह रे । १९-(बी०) पूछेहि सबै संघात ।
टिप्पणी—(२) हँहि-है ।

(३) रावई-रमण करता है । साई-स्वामी । किहहु-किया । मिलात-मिलने-
के समय ।

२५९

(दिल्ली; बीकानेर)

हँस मिरगावति^१ चुपकै रही । कहीं न जाइ लाज मँह^२ गही ॥१
पूछहिं फिर^३ सपत दई^४ वाता । फुर न कहहु तिह^५ सपत सै साता ॥२
आपुन मँह कहु^६ आहि न लाजा । हम जो कहहिं तुम्ह सेउ^७ सब काजा ॥३
कहहु कवन^८ विधि भुखवइ खाई^९ । सपत आहि जो फुर न कहाई^{१०} ॥४
छैल^{११} आहि वह की र^{१२} गँवारू । [सेज कर]^{१३} भाउ^{१४} बूझहिं कै खारू^{१५} ॥५
हँसि र कहा मिरगावति^{१६} उँहि^{१७} सों,^{१८} सुघर आहि नहिं खार^{१९} । ६
चतुर सुजान छैल हिय^{२०} ताकर,^{२१} बूझे भाउ^{२२} अपार ॥७
पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-हँसो मिरगावती । २-कहै । ३-भन । ४-सवै । ५-दै । ६-× ।
७-किछु । ८-तुमसे । ९-न कवन । १०-भोगयेहु । ११-कहहु । १२-
छैल । १३-दहु कैरे । १४-(दि०) सजग; (बी०) सेजकर । १५-भाव । १६-बूझे
दहु घरू । १७-रे कहिसी मिरगावती । १८-१९-× । २०-घारू । २१-२२
है रसिया । २३-भाव ।

टिप्पणी—४-भुखवइ-भूखा ।

(५) खारू-मूर्ख; अज्ञान ।

(७) हिय-हृदय । ताकर-उसका ।

२६०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर;)

कोकसाख^१ केर^२ जो भावा । वइ^३ सब जान^४ अउर^५ बहु आवा^६ ॥१

१. इस प्रति में पंक्ति १ और २ परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

हमहिं^१ कोक बाँचे फुनि आवै । उह^२ र^३ भाउ हम सेउँ^४ बहु लावै ॥२
मीन काँम^५ जिह टाउ^६ सो जानै । एक एक आखर कोक बखानै ॥३
नागर छैल सुभागै^७ भरा । बहु गुनवन्त भोज कै^८ करा ॥४
जस चाहेउँ^९ तस दयी^{१०} मिरावा^{११} । अँवरित^{१२} कुण्ड सपूरन पावा^{१३} ॥५
मन मनसा चित पूजी मोरे,^{१४} मिलेउ^{१५} सुघर हम जोग । ६
जोगहिं जोग मिरायउ विधि,^{१६} अब माँनों^{१७} रस भोग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०, बी०) कोक सासतर । २—(बी०) रे । ३—(ए०) उये; (बी०) वै ।
४—(बी०) जानै; ५—(ए०, बी०) और । ६—(बी०) भावा । ७—(ए०) हमहु; (बी०)
हम कहँ । ८—(ए०) उवह । ९—(ए०, बी०) रे । १०—(ए०) हमसौं; (बी०) हमसँ ।
११—(बी०) मनक मन । १२—(ए०, बी०) जेहि टाँ । १३—(ए०) सभागै; (बी०)
सुभागहिं । १४—(बी०) कर । १५—(ए०) चाहेव । १६—(ए०) दैअ । १७—(ए०)
मेरावा । १८—(ए०) अग्रीत । १९—(बी०) पूरी पंक्ति लुप्त । २०—(ए०) ×; (बी०)
मोरी । २१—(ए०, बी०) मिलेव । २२—(ए०) मेराएव विधनै; (बी०) मिलायेउ
विधनै । २२—(बी०) नौ ।

टिप्पणी—(४) भोज कै करा—भोग की कला ।

२६१

(दिल्ली; एकडल; बीकानेर)

सुनिके सखी^१ वात यह भाई । घर घर सेउँ^२ निछावरि^३ आई ॥१
मिरगावती निछावरि लिही^४ । बहु पहिराउ^५ सखिह^६ कर^७ दिही ॥२
फुनि नहाइ^८ कै चीर पहिरावा^९ । सब अभरन^{१०} [पहिरै^{११}] कह आवा ॥३
अभरन पहिरि बैठि फुनि वारी । चतुर सुजान विचाखन^{१२} नारी ॥४
अउसा नाच कुँवर^{१३} घर आवा । मिरगावति अमिय रस^{१४} पावा ॥५
सखी बहुरि^{१५} कै आई घर कहँ^{१६}, वे^{१७} रस केलि कराँहि । ६
भोग कराँहि पँचाँत्रित^{१८} पियहिं^{१९}, मधुर^{२०} [खजहजा]^{२१} खाँहि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०) सखिन्ह; (बी०) सखिहु । २—(ए०) सौं रे; (बी०) सौं । ३—(बी०)
न्योछावरि । ४—(ए०) लीही । ५—(ए०) पहिरौन; (बी०) पहिरावनि । ६—(ए०, बी०)
सखिन्ह । ७—(ए०, बी०) कहँ । ८—(ए०) नहाए; (बी०) नहाय । ९—(बी०)
फिरावा । १०—(ए०, बी०) अभरन उत्तिम । ११—(ए०) पहिरन;

१—सम्मेलन संस्करण में यह पंक्ति नहीं दी गयी है । अतः ऐसा अनुमान होता है कि एकडला और बीकानेर दोनों प्रतियों में यह नहीं है । पर यह वस्तुतः छूट है । एकडला प्रति हमें उपलब्ध है इससे उसके पाठान्तर दिये गये हैं । बीकानेर प्रति में भी यह पंक्ति है, यह माता प्रसाद गुप्त के कथन से ज्ञात होता है (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ९०) ।

(दि०) × । १२-(बी०) चत्रु सयान विचछिन; (ए०) विजखन । १३ (ए०) अरसा कुवर; (बी०) उठा सो नौच कुँवर । १४-(ए०, बी०) जस; (दि०) जस रस १५-(ए०) पहिरि । १६-(ए०, बी०) घर घर आई । १७-(ए०) उइ । १८-(ए०) पंच अत्रीत । १९-(ए०, बी०) × । २०-(बी०) मधुकर । २१-(ए०) खजहँजो; (दि०) खाजा; (बी०) व्याजहिं ।

टिप्पणी—(४) विचाखन—विलक्षण ।

(५) अउसा—(अवसान) समाप्त हुआ ।

(७) खजहजा—उत्तम फल; मेवा ।

२६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सखी एक घर कछु र^१ बधाई । उह चलि मिरगावति पँह आई ॥१
कहिसि हमरें घर मंगलचारा^२ । तुम^३ आवहु तो जाइ^४ सँवारा ॥२
को आदर दिया जिन्ह तुम देइ^५ । को र^६ सँवारि वाति हम लेई ॥३
पगु ढारियहु^७ हम होइ बड़ाई । सासु ननद मँह पत^८ जो रह्याई ॥४
मिरगावति^९ कहि^{१०} सुनहु सहेली । मों तू तो हों^{११} एक अकेली ॥५
हम तुम्ह^{१२} नार्ही बिच^{१३} सखी^{१४} कछु^{१५}, जिउ एक^{१६} दुन्हु गात^{१७} । ६
राजकुँवर कँह पूँछउं^{१८} पहिलें, ^{१९}फुन र^{२०} चलउं तुम्ह^{२१} साथ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) कुछु रे । २-(बी०) मंगरचारा । ३-(ए०, बी०) तोह । ४-(ए०, बी०) जाए । ५-(ए०) को आदरो बाझ तोह देई; (बी०) को आदर बाज तोह देई । ६-(ए०, बी०) रे । ७-(ए०) ढारिय; (बी०) ढारहु । ८-(ए०) पति । ९-(बी०) जो पति पाई । १०-(ए०, बी०) मिरगावती । ११-(बी०) कहै । १२-(ए०) हों तू तो हों; (बी०) तुम हम हैं एक । १३-(ए०) तोह । १४-(ए०, बी०) बीच । १५-(ए०, बी०) × । १६-(ए०, बी०) कुछु । १७-(ए०, बी०) एकै । १८-(ए०) दुई गात; (बी०) दुहुँ गाथ । १९-(ए०, बी०) पूछौं । २०-(ए०, बी०) × । २१-(ए०) तोरे; (बी०) अज्ञा जाउं । २२-(ए०) चलौं तोह; (बी०) चलौं तुम्हरे ।

टिप्पणी—(४) ढारियहु—डालोगी । पत—इज्जत ।

२६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति कुँवर पँह आई । आइ^१ ठाड़ि^२ भई^३ लाग कहाई ॥१
कहिसि वात एक सुनहु न राजा । सखी एक कछु^४ उटयेउ^५ काजा ॥२
सो हम कँह र^६ बुलावइ^७ आई । आयसु^८ होई^९ जाइ^{१०} तो^{११} जाई ॥३
कुँवर कहा अस^{१२} पेम^{१३} पियारी । मो जिय विनु जियत परान अधारी^{१४} ॥४

बरजों तो अपमंगल^१ होई । गवन^२ कहउं^३ तो प्रीति न होई^४ ॥५
 मन भावन्ता सो करहु^५, यह मुहिं^६ कही^७ न जाय । ६
 विरत^८ पेम न सहि सकों मै, मानों कहेउं^९ सत भाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) आए; (बी०) आय । २-(बी०) ठाढ़ । ३-(ए०) मै; (बी०) होइ ।
 ४-(ए०) कुल; (बी०) घर । ५-(बी०) उटयेहु; (ए०) उटयेव । ६-(ए०, बी०)
 रे । ७-(ए०, बी०) बोलावै । ८-(ए०) आएस; (बी०) आइस । ९-(ए०) होय;
 (बी०) होइतो । १०-(ए०, बी०) जाय । ११-(बी०) × । १२-(ए०) सुनु; (बी०)
 सुन । १३-(बी०) प्रान । १४-(ए०) मो जिउ जिउ पति प्रान अघारी । १५-(बी०)
 अपमंर । १६-(ए०, बी०) गौन । १७-(ए०, बी०) रहों । १८-(बी०) नहिं सोई ।
 १९-(बी०) करु । २०-(ए०, बी०) मोहि । २१ (ए०, बी०) कहै । २२-(ए०, बी०)
 विहरत । २३-(ए०) ×; (बी०) जो कहा; (ए०) कभि कहों ।

टिप्पणी—(१) ठाढ़-खड़ी ।

(२) उटयेउ-आयोजित किया ।

(३) जाइ-जाओ । जाई-जाऊँ ।

(६) भावन्ता-अच्छा लगे ।

(७) विरत-विरह ।

२६४

(दिल्ली; बीकानेर)

मिरगावति कहिं सुनहु विनाती^१ । बरजा करै न^२ पुरुख कै जाती ॥१
 हों तुम्ह कहँ अस बरजों नाँहाँ । ओबरी यह जो अहै घर माँहाँ ॥२
 पुरुखा^३ सात गये न^४ डोली । तुम्ह यह जनिं देखहु खोली ॥३
 यहि कर^५ मरम^६ न जानें कोई । कै भल मन्द कछु तिंह मँह होई ॥४
 वरिज बहुत^७ कै चली सोनारी^८ । चढ़ी जाइ हुत^९ डाँडि^{१०} सँवारी ॥५
 खात तँबोल अदाकर^{११} पण्डुर, कोड़ करत वै जाँहि । ६
 खेलत हँसत आपु मँह मिलीं, जिउ^{१२} अंग अंग न समाहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-मिरगावती कहै । २-विनती । ३-न करै । ४-पुरुखा । ५-नहिं । ६-जनि
 यहि । ७-जेहिका । ८-मर्म । ९-भला मन्द एहि मँह किछु होई । १०-बहु भाँति ।
 ११-सुनारी । १२-होति । १३-डाँडी । १४-आड़ करि । १५-× । १६-× ।

टिप्पणी—(१) पुरुख-पुरुष ।

(२) बरजों-बर्जित करूँ; मना करती हूँ । नाँहाँ-पति । ओबरी-गर्भांगार;
 एकान्त कमरा ।

- (३) पुरुखा-पूर्व पुरुष । जनि-मत ।
 (५) डाँडि-डण्डी; एक प्रकारकी पालकी ।
 (६) पण्हर-पीला । कोड़-झीडा ।

२६५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसत सखी घर पैठी आई। जानु चाँद चौदस आई ॥१
 उदिनल चाँद नखत कै जोती। मोंति माँझ जानहु गज मोती ॥२
 सोरह करौ जो सुरुज बखानी। यह त सँहस ईंदरासन मानी ॥३
 तेहि ऊपर कड्डु वचन सुहाई। खेलत हँसत रैन दिन जाई ॥४
 यह तो उहाँ कोड़ लपटानी। उँहा कुँवर बरजा किय जानी ॥५
 जिय भरम मन अस कहि, इह मँह आहे काह । ६
 जाइ उघारौ उबरी, भीतर देखौ वँह का आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

- १-(ए०) आइ सखी घर कीत उँजोरा। चाँद चहु दिसि भयउ न भोरा ॥
 (बी०) आय सखी घर कियेउ अँजोरा ॥ चाँद चौदस भयेव न मोरा । २-
 (ए०, बी०) घर आँगन भरि रही अँजोरी। दिन कै (कर) काज करहि निसि भोरो ॥
 ३-(ए०) ससि रे बरन कै उजोर पावै। जो रे परगट मिरगावति आवै ॥ (बी०)
 ससि तरइनु के जोर न पावै। जोरे परगट मिरगावती आवै ॥ ४-
 (ए०) मुख; (बी०) जो मुख । ५-(ए०, बी०) सोहाई। ६-(ए०, बी०) रैन।
 ७-(ए०) ऐतो इहाँ। ८-(बी०) अनवरन। ९-(ए०, बी०) कै। १०-(ए०)
 भरमाना; (बी०) चित। ११-१२-(ए०) दहु एहि; (बी०) एहि। १३-(ए०) मन।
 १४-(बी०) का। १५-(ए०, बी०) जाय। १६-(ए०, बी०) ओवरी। १७-
 (ए०) ×। १८-(ए०) दहुँ का, (बी०) का दहुँ ।

२६६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

उबरी जाइ उघारे काहा। एक खटहरा उहि मँह आहा ॥१
 तिह मँह भा कोउ करै गुहारी। को पुनवन्त देइ निस्तारी ॥२
 जो कोउ खोल देइ वँद मोरी। सेउँ कुटुंब सेउँ कर जोरी ॥३
 को र बैठि मीज कर मोरी। चेर हौँ सेवौँ कर जोरी ॥४
 जस हनिवन्त सामि कै काजा। वस हौँ करौँ छाँड़ मुहि राजा ॥५
 जइसे सेउ विक्रम कै, जिय संभु किय बैताल ॥६
 वइसै हौँ फुन करिहौँ ताकर, जो र मोख दइ घाल ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) ओबरी । २-(ए०) जाए; (बी०) जाय । ३-(दि०) कहा । ४-(ए०) कटहरा; (बी०) कटेरा । ५-(बी०) तेहि भीतर । ६-(ए०) भागै । ७-(ए०, बी०) गोहारी । ८-(बी०) पुनिवन्त । ९-(ए०) देए; (बी०) देय । १०-(ए०, बी०) निसतारी । ११-(ए०, बी०) रे । १२-(ए०) देय खोलि; (बी०) खोल देय । १३-(ए०, बी०) बन्दी । १४-(ए०) सेवों । १५-(ए०) सेव; (बी०) सेवा करौं कटभ सै । १६-(ए०, बी०) कोरे पीठि । १७-(बी०) मीडे । १८-(ए०, बी०) गुरु । १९-(ए०) मोरे । २०-(बी०) चेरा । २१-(ए०) होउ; (बी०) होइ । २२-(ए०) सौरो; (बी०) सेऊँ । २३-(बी०) राम । २४-(ए०) तस मैं । २५-(ए०) छाड़ मोहि । २६-(ए०) जैसे सेव विक्रम कै जिअ सै कै अगिअ; पतिपाल; (बी०) जस सेवक विक्रम जिय सेऊँ अगिया बैताल । २७-(ए०) उइसी सेव हौं करिहौं; (बी०) वस सेवा हौं करिहौं । २८-(ए०, बी०) रे । २९-(ए०) दै; (बी०) मोहि ।

टिप्पणी—(१) खटहरा-कटघरा । उहि-उस ।

(२) गुहारी-पुकारा । पुनवन्त-पुण्यवान् । निस्तारी-छुटकारा ।

२६७

(दिल्ली; बीकानेर)

पूछइ कुँवर को रं तू आही^१ । किह^२ औगुन तिह राखिन^३ साही^४ ॥१
फुर कहु तिह र छुड़ावउ^५ बेगी । कहिसि इन्हकै हौं पिता कह^६ नेगी ॥२
देस [कोस]^७ औ अरथ भंडारु^८ । सवै हैतो^९ मोरे^{१०} सर भारु^{११} ॥३
सामि^{१२} काज दुरजन^{१३} सब केरा । काहू केर^{१४} न मैं मुँह^{१५} हेरा ॥४
ठाकुर जाकहँ मया कराहीं^{१६} । ताकर सत्रु मीत^{१७} औ^{१८} भाई ॥५

रूपमरारि मरत सत्रुरहि^{१९}, लाइ बँधायेउ मोहि^{२०} । ६

काज सामि कै सँवारों^{२१}, कहाँ साच यह दोह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-पूछै । २-रे । ३-अही । ४-केहि । ५-तोहि राखनि । ६-सही । ७-तोहीं छाड़ो । ८-X । ९-कर । १०-(दि०) लोग । ११-बर्थ भंडारा । १२-सब होत । १३-मोरेहिं । १४-मारा । १५-सामी । १६-दुरिजन । १७-कर । १८-मैं मुँह नहिं । १९-करई । २०-मित्र । २१-X । २२-सत्रन । २३-लई बँध इन्हि मोहि । २४-सँवारेउँ । २५-(बी०) कियेव न काहू दोह; (दि०मार्जिन) न काहू सन दोह ।

टिप्पणी—(१) औगुन-अपराध । राखिन-रक्खा । साहि-बन्दी ।

(२) कोस-कोष । हैतो-था । मोरे-मेरे ।

(४) केर-का । हेरा-देखा; जोहा ।

(५) ठाकुर-स्वामी । मया-स्नेह । मीत-मित्र ।

(७) दोह-द्रोह; अपराध ।

२६८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

अउर बात बहुत कहिसि^१ सुहाई^२ । कुँवरहि मोह मया मन आई ॥१
 कहसि उघारि देउं^३ यह मौखू । काज सामि^४ कलु^५ लाग न^६ दोखू ॥२
 कुँवर कटहरा^७ दीन्हि^८ उघारी । निकसि ठाढ़ भौ^९ विपरित^{१०} भारी ॥३
 पाउ रहा धरती उहि^{११} केरा । सीस जाइ भयउ^{१२} सरग अमेरा ॥४
 विपरित^{१३} रूप सराहौं काहा^{१४} । किसन^{१५} वरन रीछ जनु आहा^{१६} ॥५
 दाँत^{१७} बड़े बड़^{१८} सुटि भारी,^{१९} कहँ दुख कहौं मँडाई^{२०} ।६
 ले र^{२१} कुँवर कहँ काँधे ऊपर,^{२२} लइ गै सरग चढ़ाई^{२३} ॥७

पाठान्तर-एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) कही । २-(बी०) सोहाई; (ए०) सुनाई । ३-(ए०, बी०) देव । ४-(
 म०) सामि काज; (बी०, ए०) सामी काज । ५-(ए०) कुलु; (बी०) × । ६-(बी०)
 न लागै; (म०) हरख न । ७-(म०) कोटहरा; (ए०) केठहरा; (बी०) कठहरा ।
 ८-(बी०) दिहेउ । ९-(ए०, बी०) भा । १०-(ए०, बी०) विपरोति । ११-(बी०)
 वोहि । १२-(ए०, बी०) भाउ; (म०) भिर । १३-(म०) इत; (बी०) अति बिटार ।
 १४-(ए०) साहस बढ़ा भो पर मारा । १५-(बी०) केस । १६-(ए०) रकत बीज
 कलंकी संधारा । १७-(बी०) दसन; (म०) दन्त । १८-(ए०, बी०, म०) × । १९-
 (ए०) भयावन; (बी०) भुअन । २०-(ए०) कहँ लगि कहौं मँझाय; (म०)
 कहँ धरि कहौं मन लाय; (बी०) कहँ लगि कहौं बढ़ाई । २१-(म०, बी०) रे ।
 २२-(बी०) धरि; (ए०) वोहि कुँवर के काँधे । २३-(म०) सरग लग लाइ;
 (ए०, बी०) लागा सरग चढ़ाई ।

टिप्पणी—(२) उघारि-खोलकर ।

(३) ठाढ़-खड़ा । भो-हुआ ।

(४) किसन-कृष्ण । वरन-वर्ण; रंग ।

२६९

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवर कहा यह परी^१ बलाई । वरजन किहेउं^२ लागि पछताई ॥१
 जस र जलमदेव^३ वरज न कीन्हा । वस^४ पछताव दई मँह^५ दीन्हा ॥२
 सुवा मारि राजा पछताना^६ । तस भा^७ पछताव निदाना ॥३
 जस^८ भोज विक्रम पछताना^९ । औ भैरौनन्द हुत^{१०} सयाना ॥४
 वइस^{११} पछताव भयउ यह^{१२} आई । जिउ^{१३} पछताव एक^{१४} संग जाई ॥५

[कन्तें^{१५}] वचन साल^{१६} उर मोरें, जिमि सालै कर रुख । ६
एक^{१७} सालै अरु^{१८} पलुहै, यह रे घनेरा दुख ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) बड़ेउ । २-(म०) किहों; (ए०, बी०) किया । ३-(म०) जगमदेव; ४-(म०, ए०, बी०) तस । ५-(ए०) देअ हम; (म०) दई हम; (बी०) दैव हम । ६-(बी०) पछिताव; (म०) पछताई । ७-(म०) इह भा; (बी०) यह भवा; (ए०) अई हम । ८-(म०) जस र; (ए०, बी०) जस रे । ९-(बी०) पछिताना । १०-(ए०) हुते जो; (बी०) जो होत । ११-(म०, बी०) वस; (ए०) तस । १२-(म०) भई मोहि; (ए०) भअेव अेहि; (बी०) भवा हम । १३-(बी०) जिव । १४-(म०) यक । १५-(ए०) कन्ति; (बी०) कन्त; (दि०) कीन । १६-(बी०) सालहि । १७-(म०) यक; (बी०) इक । १८-(ए०, बी०) और ।

टिप्पणी—(१) बलाइँ-बला । बरजन-वर्जित कार्य ।

(२) जलमदेव-जनमेजय ।

(३) सुवा-तोता ।

(६) साल-कचोटता है; टीसता है ।

(७) पलुहै-(क्रि० पलुहना) फलवित होता है । घनेरा-घना; अत्यन्त ।

२७०

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहिसि^१ दधी^२ विधि^३ सिरजनद्वारा । बहुतै कठिन तैं र^४ निस्तारा ॥१
यह तो घण्ट^५ पड़ा^६ बड़ मोही । हाथ जोरि के सँवरों^७ तोही ॥२
तोहि छाड़ किह करउँ^८ पुकारा । माँगों विधि यहि सों^९ निस्तारा ॥३
जोजन सौं^{१०} ले गयउ^{११} उड़ाई । तहाँ कुँवर सों^{१२} यह र^{१३} कहाई ॥४
प्रीतम मोर तुम रे^{१४} सुखरावहु^{१५} । भोग करहु नित^{१६} माँहे^{१७} [सतावहु]^{१८} ॥५
मोर जीउ वहि^{१९} लुबुधा^{२०}, वह^{२१} गइ लुबुधी^{२२} तोहि । ६
अब रे पुहुमि तोहि^{२३} पटका^{२४} धरि कौ, ^{२५} रहै^{२६} पछताव न मोहि ॥८

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) कहेसि । २-(ए०) दैय; (बी०) दइव । ३-(बी०) विहाता । ४-(म०, ए०) तैं रे; (बी०) तेहि । ५-(म०, ए०, बी०) कठिन । ६-(बी०, म०) परी । ७-(म०) विनवैउँ; (ए०, बी०) विनवों । ८-(ए०, बी०) केहि करों । ९-(म०, बी०) सेंउ । १०-(बी०) सेउ । ११-(ए०, बी०) गयेउ । १२-(बी०) से । १३-(ए०) अेह रे; (बी०) लाग । १४-(म०, बी०) तुम्हरे; (ए०) तोह । १५-(म०) सुखलावहु । १६- बी० X । १७-(बी०) मोहि रे । १८-(बी०) तरसावहु; (दि०) तयावहु । १९-(ए०) जीउहि; (बी०) जीउ वोहि । (२०) (बी०) लुबुध

होत । २१-(ए०, बी०) उहि । २२-(बी०) गै लुबुधि; (ए०) लुबुधि गै; (म०) लुबुध गइ । २३-(म०) दह; (ए०) दै । २४-२५-(बी०) कहाँ कह धरि पटकों । २५-(म०, ए०) × । २६-(म०) रहँहि; (ए०) रह ।

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा-सृष्टिकर्ता; ईश्वर । निस्तारा-छुटकारा । (५) सुखरावहु-आनन्द मनाओ ।

(७) पुहुमि-पृथ्वी ।

२७१

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पण्डों तू र' महन्दरी' रावसि । अब न जियत वहि' देखै पावसि ॥१
माधोनल' तों' रावसि कामाँ । जस पिंगला भरथरि' कह' रामाँ ॥२
अंगवास बहु' कहाँ' गँधार्ई'० । भँवरा लुवर्धा; कितहु' न' जाई ॥३
पवन लागि जिह'११ दिसि कँह'१४ जाई । कोस बीस परिमल रहि'१५ छाई ॥४
तू'१ रावसि हौं' कर मलऊँ । उठे आग'१६ सिर पा [लहि]'१५ जरऊँ ॥५
बरिस गये वहि'१७ कारन'१; अभिय न आयउ'१८ हाथ । ६
सो र'१९ सँत'१५ तुम्ह'१५ पायउ'१५ अरकत, सुख भोजहु'१९ संग साथ'२० ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियों ।

१-(म०, ए०) न; (बी०) नहिं । २-(म०, बी०) महन्दरिहि; (ए०) मेहदरहि । ३-(ए०, बी०) उहि । ४-(म०, ए०, बी०) माधौ नाहिं । ५-(ए०) तु; (बी०) तू; (म०) जो । ६-(ए०, बी०) भरथरी । ७-(म०, ए०) × । ८-(म०) यह । ९-(ए०, बी०) घानि । १०-(ए०) गँधारी; (म०) देखाई । ११-(ए०, बी०) लुवधै कतहुँ । १२-(बी०) तजि नहिं । १३-(ए०) चहुँ; (बी०) जेहि । १४-(बी०) उड़ि । १५-(बी०) रहै परिमल । १६-(ए०) तू रे । १७-(ए०) हौं उहि । १८-(म०, बी०) आग जर । १९-(बी०) सहिं पा लहि; (दि०) किह । २०-(ए०) उहि । २१-(बी०) कारण जरतेहि । २२-(ए०, बी०) आयेव । २३-(ए०, बी०) रे । २४-(ए०) सेती । २५-(ए०) तोह । २६-(म०) पारि; (ए०) पायेव । २७-(ए०) भूँजहु । (बी०) २८-(बी०) सो रासै तिअ तुम पाइ; सुखसेज संग साथ ।

टिप्पणी—सँत—मुफ्त ।

२७२

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहिसि' कुँवर मुँह काहि' न बोलसि । मरै कै वार' बकत नहिं खोलसि ॥१
हौं' न होउँ' 'घह' राकस भूता । औ जस वहै गड़रिया दूता ॥२
हाथ धोई' जिय छाड़उ आसा । बोलहु कछु जब लग'० तन'१ साँसा ॥३
कहिसि काह बोलउ'१ तोहँ'१ सेती । मौकह लेइ कीन्हँ'१ बुधि जेती'१ ॥४

में तोंकों^{१५} कछु^{१६} कियइ^{१७} न^{१८} मँदाई । नीक कहेउ^{१९} यह तोर^{२०} बड़ाई ॥५
जो र^{२१} करै भल हम कहँ परिके^{२२}, ताकर^{२३} करहुँ^{२४} मँदाई । ६
टेव आह पुरखन^{२५} कर^{२६} जो कछु^{२७}, हमकै मँटि [न]^{२८} जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) कहे; २-(ए०) काहे; (बी०) कहे । ३-(ए०) क बेरि । ४-(बी०) मैं ।
५-(म०, बी०) हँ । ६-(ए०) उवह । ७-(म०)वह र; (ए०) उवह रे; (बी०) वह रे
८-(म०) धोहि; (ए०) धोए; (बी०) धोय । ९-(ए०, बी०) कुछु । १०-(ए०,
बी०) लगि । ११-(ए०) है; (बी०) है तन । १२-(म०) बोलेउँ; (ए०, बी०) बोलीं ।
१२-(म०) तुम्ह । १३-(बी०) मोहके लिएउ किएउ; (ए०) मोह की लिए किये;
(म०) मुहि कँह गिनती कीनें । १४-(बी०) ऐती । १५-(म०) तो कँह; (ए०)
तोहि कँह; (बी०) तोकहुँ । १६-(म०) कही; (ए०) कै; (बी०) कै जै किहु १७-
(बी०) न की । १८-(म०) कहों; (ए०) किहेव; (बी०) कियेउ । १९-(ए०, बी०)
तोहि । २०-(ए०, बी०) रे । २१-(ए०, बी०, म०) × । २२-(ए०, बी०)
ताकरि । २३-(म०) करेहु; (ए०) करहि; (बी०) करहि हम । २४-(ए०, बी०,
म०) पुरखन्ह । २५-(म०) कै । २६-(बी०) जे किछु; (ए०, म०) × । २७-
(म०) हम सों; (ए०) हम कँह; (बी०) हम पहिं । २८-(दि०) × ।

टिप्पणी—(१) बार-समय; वक्त ।

(७) टेव-टेक; आन । मँटि-मिटा ।

२७३

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

तैं न सुनां जो बरिस सेवाती । एक एक वूँद अमिय कै जाती ॥१
जइसैं संग रहै गुन सोई^१ । साँप क' मुँह^२ र' परत' विख' होई ॥२
उहै^३ वूँद सीपां^४ गजमोती । निरमल^५ होई^६ अधिक वह^७ जोती ॥३
उहै कपूर उदैगिरि^८ होई । अधिक वास विरसै सब कोइ ॥४
फुरहिं^९ नीक हमकहँ तुम्ह^{१०} कीन्हा । भल कर^{११} मन्द अगारिंह^{१२} हम चीन्हा ॥५
अव र^{१३} कडो^{१४} मँह सेउँ^{१५} फिरि के^{१६}, किहँ^{१७} धरि मारों तोहि । ६
कै र^{१८} सिखर कै सायर पुहुमी^{१९}, मन रूचत^{२०} कहु मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर, प्रतियाँ ।

१-(बी०) त । २-(ए०, बी०) जैसे । ३-(ए०, बी०) रे होय; (म०) बसै । ४-(म०)
है कोई । ५-(म०, बी०) के । ६-(ए०) मुहँ; (बी०) मुख । ७-(ए०) रे; (म०) × ।
८-(बी०) अंत्रित । ९-(बी०) विप । १०-(ए०) उहाँ; (बी०) वहै । ११-
(ए०, म०) सीप; (बी०) सिपिहँ । १२-(म०) अधिक । १३-(ए०, बी०) होय । १४-
(ए०) सो; (बी०) तेहि; (म०) तिह । १५-(ए०) अदीपर; (बी०) उदयवर;
(म०) चोआदेइ । १६-(बी०) फुरहु । १७-(बी०) तैं हम कहँ; (ए०) मोहि कँह

तोह । १८-(बी०) फुरकै । १९-(म०) करतहि; (बी०) करहि; २०-(म०, बी०) रे ।
 २१-(ए०, बी०) कहहु; (म०) कहु । २२-(म०) दहुँ मोसेउ; (ए०, बी०) दहुँ मोहि
 सौं । २३-(ए०, बी०, म०) × । २४-(ए०) केहि; (बी०) कह । २५-(म०, ए०) रे;
 (बी०) × । २६-(ए०) × । (बी०) तुम्हैं । २७-(ए०) रुचित; (बी०) रुच ।

टिप्पणी—(१) सेवाती—स्वाती नक्षत्र ।

(५) अगर्हिह—आगे ही; पहले ही । चीन्हा-पहचाना ।

(६) धरि—पकड़ कर ।

(७) सिखर—सिखर; पहाड़ीकी चोटी । सायर—सागर । पुहुमी—पृथ्वी;
 धरती । रुचत—पसन्द ।

२७४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कुँवर बूझि अपने मन देखा । उलटा कहहुँ इहसों सो सरेखा ॥१
 पाथर मार वेग जिह मरों । पानी मँदि दुख मरवहि डरों ॥२
 हँसा कहिसि इत काहे न मीता । पाथर हनौ होइ तोर चीता ॥३
 अब तोहि पानी मँझ अडारों । दुख कर मरहुँ येँ र विधि मारों ॥४
 जहाँ मन्ड मँगर घरियारा । तोर खाँहि दुख होहि अपारा ॥५
 लिहिसि उतारि काँध सों बरके, धरि र फिराइसि पाँउ ॥६
 दिहिसि उतार सँमुद खारी मँह, जो भावइ सो खाउ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०, म०) कहों । २-(म०) × । ३-(म०) सोइ सरेखा; (बी०) र हिस
 सुसरेखा । ४-(बी०) जिन्ह मारउँ; (म०) मराओं । ५-(बी०) मरिवेहि डारउँ
 (म०) पान मँदि देखि डराओं । ६-(बी०) अनु । ७-(बी०, म०) काहा । ८-(म०)
 मन्ता । ९-(म०) हनेउँ; (बी०) हन्यो । १०-(म०) तुर; (बी०) तरा । ११-(बी०)
 चिन्ता । १२-(म०, बी०) कै । १३-(बी०) मरहि । १४-(म०) यहि; (बी०)
 इहि रे । १५-(बी०) तोहि रे । १६-(म०) खाहहि । १७-(म०) होइ; (बी०) होय ।
 १८-(म०) सेउ; (बी०) स्यो । १९-(म०) × । २०-(बी०, ए०) × । २१-
 (बी०) पाँव । २२-(म०) जो र भाउ; (बी०) जो भावै । २३-(बी०) खाव ।

टिप्पणी—(१) सरेखा—श्रेष्ठ; उचित ।

(३) चीता—मन चाहा ।

(४) अडारो—(क्रि० अडारना) फेकना; गिराना । हेमचन्द्र (पासद० ४।३१) के
 अनुसार संस्कृत क्षिपका एक धात्वादेश अङ्क है । अतः वासुदेवशरण
 अग्रवालका अनुमान है कि यह उसीसे निकला है (अडार > अडार) ।

(५) मन्ड—मण्डली । घरियारा—घड़ियाल ।

(६) फिराइसि—बुमाया ।

२७५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चला अडाइ' लौटि न हेरा । येँ र' नाँव सँवर' विधि केरा ॥१
 एकंकार' अलख करतारा' । जस तँ विकरम राउ' उवारा' ॥२
 जस र जलन्धर' कुएँ' उडारा । अँतर न रखा' तँ' अधारा' ॥३
 हों सकबन्धहि' पौन अधारी । विनु' अधार विधि लेहु उवारी ॥४
 कहत मया विधि आइ तुलानी' । तिह' ठाँ परेउ' अलप' हुत पानी ॥५
 जें उवर' सिरपाल' कर', मँह' यह' बड़ भयउ' विछोह । ६
 बहु पछताव कियै' कर' वरजा', औ मिरगावति छोह' ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) लड़ाई । २-(म०) कुँवर; (बी०) एहि रे । ३-(म०) सँवरा; (बी०) सौंगा । ४-(म०) एक उँकार; (बी०) एककर । ५-(म०) करतारू । ६-(म०) विकरम राय । ७-(म०) उवारू । ८-(बी०, म०) जलमधर । ९-(बी०, म०) कुवाँ । १०-(ए०) नहिं राखेव । ११-(ए०, म०) तँ । १२-(बी०) अँतरहि गा पवन अधारा । १३-(म०) सकबन्धौं; (बी०) सकबन्धौ न । १४-(ए०) विनहिं; (बी०) मोहि; (म०) मुहि । १५-(बी०) तोलानी । १६-(बी०) तेहि । १७-(बी०) परयो; (म०) परेउँ । १८-(बी०) अलत । १९-(म०) उवरा; (बी०) उवरे । २०-(म०) सिरपालहिं; रस पालहिं । २१-२२-(म०, बी०) × । २३-(बी०, म०) दुख । २४-(बी०) भयो । २५-(बी०, म०) × । २६-(म०) करै । २७-(बी०) वरजा कर । २८-(म०) और मिरगावति कर मोह; (बी०) और मिरगावती मोह ।

टिप्पणी—(१) अडाइ-गिराकर ।

(२) एकंकार-एक ओंकार ।

(३) अख्य अल्य; थोड़ा; हुत-था ।

२७६

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पानी पानी चहुँ दिसि सूझा । मग अमग' न जाई' वूझा ॥१
 सूरज' गिरिवन' होइ' थल' जाई' । सवति' कै' रूप रैन होइ' आई ॥२
 रैन डरावन' चहुँ दिसि पानी । लहर' आउ' डर' जियहि' सुखानी ॥३
 बहु दुख भार परेउ' सिर आई । जीउ र' कठिन अब' निकसि न जाई ॥४
 विधि कर' लिखा न जानै कोई । कै वह सुख कै यह दुख होई ॥५
 रहतहि' एक सथ', बोलत बोल विछोही' । ६
 अब सपनै' भेंट, दई दिखाउ त' देखी' ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०) मगु अमगु । २—(म०)जाइ नहिं; (बी०, ए०) जाय नहिं । ३—(ए०, बी०, म०) सूर । ४—(ए०) कुरुव; (बी०) कर तपत । ५—(म०) X; (ए०) मै रे; (बी०) होय । ६—(म०) अस्थल । ७—(ए०, बी०) सुस । ८—(म०) क । ९—(ए०) रैन होय । १०—(ए०, बी०) डरावनि । ११—(ए०, बी०) लहरि । १२—(ए०, बी०) आव । १३—(ए०) बड़ । १४—(ए०, बी०) जीम । १५—(ए०, बी०) परेव । १६—(ए०, बी०) रे । १७—(बी०) अति । १८—(ए०) कै । १९—(ए०) रहतेहि; (बी०) रहत अहे । २०—(म०, बी०) साथ; (ए०) समीप । २१—(ए०) विछोहिये; (बी०) विछोह दिया । २२—(बी०) सपनै बर; (ए०) अब जौ भेंट; (म०) सपने में । २३—(ए०) देअ देखाव तो; (बी०) देख देखवाव तो । २४—(बी०) देखिये ।

टिप्पणी—(२) सबति—सौत ।

२७७

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवरहिं इहाँ^१ परेउ^२ दुख भारी । उहाँ^३ आगि उर उठी^४ जो नारी^५ ॥ १
कहिसि^६ सखी^७ सेंउ^८ सुनहु न वाता । सुख महँ दुख र^९ उठेउ^{१०} कहु^{११} गाता ॥ २
जो तुम्ह^{१२} कहहु तो र^{१३} घर जाऊँ । भरम उठै^{१४} जिउ आह न टाऊँ ॥ ३
पुरुख जात बरजा न कराई^{१५} । ओवरी^{१६} जनि^{१७} र^{१८} उघारै जाई ॥ ४
जाइ देहु मोर जिउ भरमनाँ । अन्त रहै^{१९} पछताउ निदाना ॥ ५
जाइ देहु र^{२०} सहेलिह^{२१} घर कँह^{२२} मोर जीउ धसि धसि जाइ । ६
ततखन^{२३} चेरी^{२४} पुकारति^{२५} रोवति^{२६} धाई^{२७} विकली^{२८} आइ ॥ ७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(म०) उहाँ; (बी०) उहाँ रे । २—(ए०) परेव । ३—(ए०, बी०, म०) इहाँ ४—(ए०) उठै । ५—(बी०) उठी उर नारी । ६—(बी०) कही । ७—(बी०) सखिन । ८—(म०) सो; (ए०, बी०) सौं । ९—(ए०, बी०) X । १०—(ए०, बी०) उठेव; (म०) उठी । ११—(म०) X; (ए०, बी०) हम । १२—(ए०) तोह । १३—(ए०) रे; (बी०) X । १४—(ए०, बी०) उठा । १५—(बी०) नहिं करै । १६—(म०, ए०) उवरी । १७—(ए०) जनु । १८—(ए०) रे; (बी०) X । १९—(म०, बी०) रहहिं । २०—(ए०, बी०) X । २१—(ए०, बी०) सखि । २२—(म०) X । २३—(बी०) तेहि खन; (ए०) विच खन । २४—(बी०) चेरी; (ए०) चीर । २५—(ए०) विकारत । २६—(ए०) X । २७—(म०) X । २८—(बी०) विलखी ।

टिप्पणी—(३) भरम—भ्रम; सन्देह ।

(५) भरमाना—उद्विग्न । पछताप—पश्चाताप ।

(६) धसि—धसि—वैठा ।

(८) ततखन—तत्काल । धाई—दासी । विकली—पेशान ।

२७८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहसि रानि' तुम्ह बैठहु' काहा । सूरहि' लै' र' उड़ायउ' राहा ॥१
 सुनतहि' यह' वै' चक्रित भूली' । देखत रही आउ' न' बोली ॥२
 घरी एक ऊपर' समुझाई । कहसि चेरि तैं का कहि' आई ॥३
 चेरी कहा दुदिस्टिल हरा । कबिरा दानों के अपकरा' ॥४
 सुनतहि जइस' रे' पिंगलहि' कीन्हा । भयउ' चाह ततखन जिउ दीन्हा ॥५
 हँस रहा किह' कारन घट मँह', पिउ बिहरेउ' सर सुक्ख' ॥६
 हा कुठिल' विरहानल कै' छल', जानहु' पतंग' शरुक्ख' ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) रानी । २-(ए०) बैठेउ; (म०) बैठि । ३-(ए०, बी०) सुरही ।
 ४-(ए०) लेअ । ५-(ए०, बी०, म०) रे । ६-(ए०, बी०) उड़ावेव । ७-(ए०) काहा ।
 ८-(ए०) सुनत । ९-(ए०) बात; (म०) फिरी (अथवा बहुरी) ।
 १०-(ए०) बोह; (म०) × । ११-(बी०) सुन तेहि रही जनौ चक्रित भूली ।
 १२-(ए०) आव; (बी०) और । १३-(बी०) नहि । १४-(बी०) पर । १५-
 (ए०) का कहै । १६-(ए०) उपकरा; (बी०) गै पकरा । १७-(ए०, बी०) सुनतेहि
 जस । १८-(म०, ए०, बी०) × । १९-(ए०) पिंगलै; (बी०) पिंगला । २०-
 (म०) उहो; (ए०, बी०) एहो । २१-(ए०, बी०) केहि । २२-(ए०) मा । २३-
 (ए०, बी०) बिहरा । २४-(ए०, बी०) सरसक्क । २५-(ए०, बी०) हाकल;
 (म०) × । २६-(म०) कठिन; (बी०) × । (ए०) खेलन । २७-(ए०, बी०,
 म०) × । २८-(म०) भानु । २९-(म०) पवन; (ए०) पंक; (बी०) पंख ।

टिप्पणी—(३) समुझाई—समुझ आई । का—क्या ।

(४) अपकरा—अपकार ।

२७९

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

गहि गहि हँस' काढ़ि न जाई । पाँख जरै नहि जाई उड़ाई ॥१
 रोवइ' कहै काह सुख' करों । आनि देहु बिस खात' जो मरों ॥२
 तोरि तोरि केस पलेटै' हाथा । किह' अवगुन' हम बिछरेउ' साथी ॥३
 ऊमै' होइ धरि' लेइ' पछारा । मरै चाह वहि' दर्ई' उवारा ॥४
 सखी सहेली धरहिं कर हाथा । रानि' समुझि विधि मिरियहिं' साथी ॥५
 जस र' सिय' कहँ' दिन दस[दुखपरा]' रँम क' भयउ' बियोग' ॥६
 वस' र' भयउ' तुम्ह' कलजुग, सो' मिरियहिं फुनि जोग' ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

२-(बी०) निकसि । २-(ए०, म०) जरी । ३-(म०) उचाई; (ए०, बी०)

जाय । ४-(ए०) अगाई । ५-(ए०) रोवै; (बी०) रोइ रोइ । ६-(ए०) सुखि; (बी०) सखि । ७-(ए०, बी०) करऊँ । ८-(म०, ए०) खाय । ९-(ए० बी०, म०) फलटै । १०-(ए०, बी०) केहि । ११-(ए० बी०) औगुन । १२-(ए०, बी०) विहरा । १३-(म०) ऊमो; (ए०) ऊमी; (बी०) ऊमि । १४-(म०) होइधन; (बी०) होइधर; (ए०) खरभरि । १५-(बी०) खाइ; (ए०) लेए । १६-(ए०) उहि । १७-(ए०) दैअ; (बी०) दइव । १८-(ए०, बी०) रानी । १९-(बी०) मेरई; (म०) मरिवहि; (ए०) मरवै । २०-(म०, ए०, बी०) रे । २१-(ए०) सीय; (बी०) अर्जुन । २२-(बी०) कै । २३-(दि०, ए०) द्वापर; (म०) × । २४-(बी०) रामहिं; (ए०) × । २५-(ए०, बी०) भयेव । २६-(ए०) उस । २७-(ए०, बी०, म०) रे । २८-(ए०) भयेव; (बी०) भयो । २९-(ए०) आइ तोइ । ३०-(म०) सेउ; (बी०) सिव । ३१-(बी०) मेरवहिं सँजोग; (ए०) मेर-इहि जोग ।

टिप्पणी—(१) पाँख-पंख ।

(३) फलेटे-फेकै । अबगुन-अवगुण; अपराध ।

(४) ऊमै-(श्री० ऊमना) उछलै ।

(५) मिरियहिं-मिलावेंगे ।

२८०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर;)

रोवइ' कर मलि मलि पछताई' । आवइँ' नैन पूरि झरि लाई ॥१
घन वरसाहिं बहु' कही' न जाई । परलो जइस' रहा जग छाई ॥२
गंग तरंग भये' ईह' पानी । और सलिला' र' अल्प बड़वानी ॥३
पावस उघरि उघरि वरसाई । नैन न' उघरहिं झरि न घटाई' ॥४
सूर क' तपै घटै जग पानी । लोथन भरे सुभर अतिवानी ॥५
कुतुबन तू तो गंभीरा'१, अति रस के अतिवन्त' ॥६
सुअर नैन न सूखै'२ जल भरि भरि आवन्त' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) रोवै । २-(ए०, बी०) पछिताई । ३-(ए०, बी०) उनये । ४-(बी०) अति । ५-(ए०, बी०) कहै । ६-(ए०) जैस; (बी०) जस । ७-(ए०) भई । ८-(ए०, बी०) एहि । ९-(ए०) सलिलो से; (बी०) सलोल । १०-(ए०, बी०) × । ११- बी०) नैननि । १२-(ए०) झरहिं घनाई; (बी०) झर न घुटाई । १३-(ए०, बी०) के । (ए०, बी०) तेंव ते गम्भीर । १६-(बी०) सर सूखेउ अनिवन्त (ए०) सर सुकेउ नवन्त । १७-(ए०) सूखहिं नहिं एक खिन; (बी०) सूखहिं । १८-(बी०) उनंत ।

टिप्पणी(१) झरि-झड़ी ।

(२) परलो-प्रलय ।

(३) अल्प-अल्प; थोड़ी । बड़वानी-विशाल ।

(४) उघरि उघरि-रक रककर ।

२८१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यह र^१ बात घर घर^२ बहिराई^३ । उठा अकूत^४ नगर अकुलाई^५ ॥१
 आपुहि आपु न कोउ^६ सँभारा^७ । घर घर नगरी परा खभारा ॥२
 नगर काहु अन पानि न भावा^८ । मिरगावति^९ निसि रोइ^{१०} विहावा^{११} ॥३
 दिन भा रैनि गई अँघियारी । रोवत पचत मरत^{१२} दुख भारी ॥४
 कहिसि कहाँ सुधि पावों^{१३} नाहाँ । को र^{१४} करै^{१५} हम ऊपर छाहाँ ॥५
 पिय^{१६} वियोग भौ^{१७} सकती बान , जो लागेउ^{१८} मुहि^{१९} र^{२०} अपूर ।६
 को आनै हनिवंत^{२१} जिउँ^{२२}, सजन^{२३} सजीवन^{२४} मूर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) रे । २-(ए०) खर । ३-(ए०) भरि आई; (बी०) फिर आई ।
 ४-(ए०) अकोत; (बी०) अकुताइ । ५-(बी०) कुललाई । ६-(ए०) कोई । ७-
 (बी०) बाप पूत धिय मन सँभारा । ८- (ए०, बी०) खावा । ९-(ए०, बी०)
 मिरगावती । १०-(ए०, बी०) राय । ११-(ए०) पोहावा । १२-(ए०) मरना ।
 १३-(बी०) पाऊँ । १४-(ए०, बी०) रे । १५-(बी०) करहि । १६-(बी०) जस ।
 १७-(ए०, बी०) भा । १८-(ए०) लागेव; (बी०) लेइउ । १९-२०-
 (ए०, बी०) × । २१-(ए०, बी०) हनिवंत वीर । २२-(ए०, बी०) जेव । २३-
 (ए०) साजन; (बी०) सजनी । २४-(ए०) साँचेव; (बी०) जीवन ।

टिप्पणी—(१) बहिराई-फैली । अकूत-अपार ।

(२) खभारा-खलवली ।

(३) अन्न पानी-अन्नपानी; खाना-पीना । विहावा-विताया ।

(६) भौ-हुआ । सकती बान-शक्ति बाण; वह बाण जिसके लगनेसे लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे । अपूर-गहरा ।

(७) हनिवंत-हनुमान । सजन-स्वजन; प्रिय । सजीवन मूर-सजीवनी बूटी जिससे लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हुई थी ।

२८२

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

रोवत नैनहि दिस्टि^१ घटानी^२ । को र राम मिरवइ^३ सिय^४ आनी ॥१

को नल आनि दमावति^१ पासा । मरौ वियोग उरध^२ हम साँसा ॥२
 को मिरवइ^३ सारस^४ संग जोरी । कं सराप^५ दै लीन्ह^६ अजोरी ॥३
 सर्खी^७ कहा रानी का रोवहु । मांगि^८ पानि बैसि^९ मुख धोवहु ॥४
 चलउ चहुँ दिसि हूँदहि^{१०} जाई । दानौं कँह^{११} ले जाई^{१२} पराई ॥५
 यह र कहत मिरगावति^{१३} सुनिके^{१४}, वैठी^{१५} समुझि सँभार^{१६} ।
 साहन^{१७} बोलि कीन्हि^{१८} अस^{१९} अझा, चहुँ दिसि लागु गुहार^{२०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) ट्रिस्टि । २-(ए०, बी०) खुटानी । ३-(ए०, बी०) मेरवै । ४-(बी०) सियहिं । ५-(बी०) आनै दमावती; (ए०) को तोलान दमावती । ६-(ए०) आध; (बी०) रामबीग अधिक । ७-(ए०, बी०) मिरवै । ८-(ए०) सारद; (बी०) सारंग । ९-(बी०) लिहा । १०-(ए०, बी०) सखिन्ह । ११-(ए०) मागहु; (बी०) माँगहि । १२-(बी०) बैठि । १३-(ए०) हूँदत । १४-(ए०, बी०) जाय । १५-(ए०, बी०) मिरगावती । १६-(ए०) × । १७-(ए०) बैठेव । १८-(ए०, बी०) सँभारि । १९-(बी०) सानन्ह । २०-(ए०) कीन्है; (बी०) कहिसि । २१-(ए०) उस; (बी०) यह । २२-(ए०, बी०) लाग गोहार ।

टिप्पणी—(२) दमावति—दमयन्ती; राजा नलकी पत्नी । उरध—उर्ध्व; उल्टी साँस ।

(३) सराप—शाप ।

(५) दानौं—दानव ।

(७) साहन—दूत । गुहार—खोज ।

२८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आपु आपु कँह हूँदै^१ धाई^२ । रानी हूँदहि^३ करै उँफाई^४ ॥१
 हूँदहि^५ परवत अउर^६ पहारा । जल थल मइहर^७ बन^८ जो^९ अपारा ॥२
 डंडाकारन^{१०} वीछ^{११} बनाहौं^{१२} । जोगी^{१३} भेस^{१४} हूँद व[हि*]^{१५} नाहौं^{१६} ॥३
 जस र बिहंगम पूछत डोलै^{१७} । पिउ कित^{१८} गेला^{१९} अउर^{२०} न^{२१} बोलै ॥४
 मन दोमन^{२२} झुरवइ^{२३} विकरारा । मुख पण्डर^{२४} कर पा न सँभारा ॥५

विधि ये^{२५} दिन कित^{२६} नियमे^{२७}, जिह^{२८} हम पिउ विहरान । ६

ई विधि आखर^{२९} मेटेंहु^{३०}, नाहुत^{३१} जाहिं^{३२} परान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) जाई । २-(ए०) अभाई; (बी०) अपनाई । ३-(ए०, बी०) हूँदइ ।

४-(बी०) और; (ए०) अरुन । ५-(बी०) महि । ६-(बी०) बनखँड । ७-

(बी०) × । ८-(बी०) डंडकरन । ९-(ए०) वीछ बनाहा; (बी०) विश बनाहू ।

१०-(ए०, बी०) जोगिनि । ११-(ए०) उह; (बी०) तेहि । १२-(ए०, बी०) कते ।
 १३-(ए०, बी०) गा । १४-(ए०, बी०) और । १५-(बी०) नहिं । १६-(ए०, बी०)
 दुमन । १७ (ए०) चेहुरा; (बी०) चिहुर । १८-(ए०, बी०) पण्डर । १९-(ए०)
 ओहि; (बी०) यह । २०-(ए०, बी०) कत । २१-(ए०) निमयेव; (बी०)
 निरमयेव । २२-(बी०) जेहि; (ए०) नेही । २३-(बी०) अबहूँ विवधर
 मेटियो; (ए०) अबहूँ वेखर भीत दै । २४-(ए०, बी०) नहिं तौ । २५-
 (बी०) तजौं ।

टिप्पणी—(१) डँफाई—उपाय ।

(२) पहारा—पहाड़ ।

(३) डंडकारन—दण्डकारण्य । ब्रीछ—बीच ।

(४) जस—की तरह । बिहंगम—पक्षी । डोलै—फिरै । पिउ—पी । कित-
 किधर । गेला—गया ।

(५) कर पा—हाथ-पैर ।

(६) निमये—निर्माण किया । बिहरान—बिछुड़ गया ।

(७) नाहुत—नहीं तो ।

२८४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चले परान टेकि नहिं जाई । को विलँवाउ खिनक^१ बौराई ॥१
 गयेउ^२ सुहाग भयउँ^३ अब राँडा । जाँह^४ दसन सँउ^५ चाहसि^६ खाँडा ॥२
 ततखन धाई^७ जनाँ इक^८ आवा । राकस कहिसि धरै वह पावा ॥३
 जाँह^९ जो खांडे चाहति अहीं । हाथ सँकोरि समुँझ कै रहीं ॥४
 कहिसि काह^{१०} विन पूछै^{११} मराऊँ^{१२} । जो कहु^{१३} भयउ^{१४} तां^{१५} चिय^{१६} रचि^{१७} जराऊँ^{१८} ॥५
 देवहि लागि जनाँ सौ दोइ एक^{१९}, लै आर्यहि^{२०} घिसियाइ । ६
 जस र^{२१} चाँट^{२२} वड़ भुनगा^{२३}, भार उचाइ न जाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) को विलँवावइ; (बी०) कोइल नावै; (ए०) कोइल वाउ । २-(बी०)
 ख्यौं खिन । ३-(बी०) गयो ; ४-(बी०) भयो । ५-(बी०) जीम । ६-(बी०)
 से । ७-(बी०) चाहै । ८-(बी०) धाय । ९-(म०, बी०) यह । १०-(बी०)
 जीम । ११-(बी०) का । १२-(म०, बी०) पूछै विनु । १३-(म०, बी०) मरौं ।
 १४-(बी०) किछु । १५-(म०) होइ; (बी०) भवा । १६-(म०, बी०) X ।
 १७-(म०) चीव । १८-(बी०) रची । १९-(म०, बी०) जरौं । २०-(म०, बी०)
 X । २१-(म०) आवउ; (बी०) आयो । २२-(बी०) रे । २३-(म०) चाँटहि;
 (बी०) चाँदी । २४-(बी०) फँनिगा ऐंचत ।

- टिप्पणी—(१) टेकि—रोक । बिलंबाड—भुलाने की चेष्टा करे । खिनक—क्षणमें ।
 (२) रॉडा—रॉड; विधवा । जीह—जीभ । दसन—दाँत । खाँडा—
 काटना ।
 (३) ततखन—तक्षण । धाइ—दौड़कर । जनाँ—व्यक्ति । धरै—पकड़ा ।
 (४) सँकोर—संकोच; रोक ।
 (५) चिय—चिता ।
 (६) घिसियाइ—घसीटकर ।
 (७) चाँट—चीटा । भुनगा—कीड़ा । भार—वजन । उचाइ—उठा ।

२८५

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पूछैँ लाग न बकतैँ बाता । तेल अवटि' कै छिरकहिँ गाता ॥१
 पौन बाँधि मुँह चुप कै रहा' । जस बनमानुस बकत न कहा' ॥२
 जस गुँगा बाउर' बउराई' । बकत न जाइ' जीह' लपटाई ॥३
 जो कछु बकत तो कहैँ [कुभासा*]' । नाँहुत' मूँद रहैँ मुँह' साँसा ॥४
 बहुत कहहिँ यहि मार पवारी' । बहुतैँ कहहिँ चियँ रचिकैँ जारी' ॥५
 अउरहिँ' कहा न मारैँ' यहकहँ' । भरियेँ' चरी' तिरकूट ॥६
 अवहुत' बजर जो हो' इक ठाँ' । तो न यह' वँदि' लूट ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(ए०, बी०) औटि । २—(म०) छिरकै; (बी०) छिरकावहिँ । ३—(म०) पौन
 बाँधि मुनि होइ के रहा; (ए०) मौन बाँधि मुनि होए के रही; (बी०) मौन बाँधि
 कै मुनि होइ रहा । ४—(ए०) चहो । ५—(बी०) बौरा । ६—(ए०, बी०) बौराई ।
 ७—(म०) आउ; (ए०, बी०) जय । ८—(ए०, बी०) जीभ । ९—(दि०) कुवासा;
 (ए०, बी०) कवासा । १०—(ए०) नाहीं तो; (बी०) नाहिँ न । ११—(ए०, म०, बी०)
 मन । १२—(ए०, बी०) पवारी । १३—(ए०) × । १४—(म०) पूर्वाश की पुनरुक्ति;
 (बी०) बहुतैँ कहैँ चीरि चीरि जारियै । १५—(ए०, बी०) औरन्ह । १६—(ए०, बी०)
 भारी । १७—(ए०, बी०, म०) × । १८—(ए०, बी०) बहुरि । १९—(ए०, बी०)
 चढै । २०—(बी०) अहुट अहुट जउ होइ एक ठाई; (ए०) अहुट वज्र जो होहिँ
 एकठाँ । २२—(म०) तोउ न; (ए०, बी०) तौहु न यहि । २५—(ए०,
 बी०) बन्दी ।

टिप्पणी—(१) अवटि—खौलाकर । छिरकहिँ—छिड़कते हैं । गाता—शरीर ।

(२) पौन—पवन ।

(५) पवारी—(क्रि० पवारना) नष्ट कर दो । चियँ—चिता ।

(६) भरिये—बन्द कीजिये । चरी—गुफा । तिरकूट—त्रिकूट ।

२८६

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

जब बलि बावन बाँधि अडारा । कैसहु छूट' न' रहे पतारा ॥१
मिरगावती कहा' यहि' जारों । यहि कै' जात जहाँ लग' पारों' ॥२
जस र' जलमदेउ साँप' पवारी'० । सबै आन' हुतासन जारी ॥३
बाप क' वैर' जस' र' वै' लीन्हाँ' । तस हों' करों होइ' हम चीन्हा ॥४
बहुरि कइसि ईह' अइसहि' जारों । तुरत न' मरै बहु' दुख सेंउ मारों' ॥५
बाँधन जस चाहहु काठ', सँकती [जरहु]' कर पाउ' ॥६
वजर' काँठ' अस' घालहु, ईह' जग' जैसे' उधर' न काउ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१—(दि०) झौन (ते के स्थान पर स्पष्ट नून है) । २—(बी०) नहि छूटै । ३—(ए०, बी०) कहै ; (म०) कहि । ४—(म०) यहि ऐसैं । ५—(ए०, बी०, म०) की । ६—(म०, ए०) लहि ; (बी०) तहाँ लीं । ७—(म०, बी०) मारों । ८—(बी०) रे ; (म०, ए०) × । ९—(ए०, बी०) जलमदेव । १०—(ए०, बी०) विभारी । ११—(म०) चिउ रचि सबै ; (ए०) जग रचि सबै ; (बी०) जगत जहु रचि सबै । १२—(ए०) पारख ; (बी०) परीखस । १३—(बी०) राजें । १४—(ए०) जैसे । १५—(म०) रे ; (ए०, बी०) × । १६—(ए०) उए ; (बी०) बोहि । १७—(म०, ए०, बी०) कीन्हा । १७—(ए०) मैं । १९—(ए०, बी०) होय । २०—(ए०) ओहि ; (बी०) एहि । २१—(ब०) अइसैं ; (ए०) औ सय ; (बी०) ऐसन । २२—(म०, ए०) × । २३—(म०) ओहि । २४—(ए०) से । २५—(बी०) तुरित न मरौ दुख कै इहि मारों । २६—(म०) बाँधहु जस र कहा तुम्ह ; (ए०) बाँधहु जसरे जानहु करहु तोह ; (बी०) बाँधहु जाइ जसरे तुम्ह जानहु । २७—(दि०) जस ; (ए०) सुगढ़ जरे । २८—(ए०, बी०) पाँव । २९—(बी०) वज्र । ३०—(ए०, बी०) गाँठि । ३१—(बी०) तस । ३२—(बी०) एहि ; (म०) × । ३३—(म०) × । ३४—(ए०) जी ओ । ३५—(बी०) छूट ; (ए०) उधरै ।

टिप्पणी—(१) पतारा—पाताल ।

(२) जारों—जलाऊँ । जात—जाति । पारों—पाऊँ ।

(३) जलमदेउ—जनमेजय । पवारी—विनाश किया । आन—लाकर । हुतासन—अग्नि ।

(७) घालहु—डालो । उधर—निकल ।

(दिल्ली; एकडला; मनेर; वीकानेर)

कर पाछेउँ कर हथकरि वाही । सँकती लाग किह अव जाही ॥१
 सिकरी गेरि पाँव उन्ह बांधे । पाउँ बाँधि मेलहि वह काँधे ॥२
 भैसहि केर चाम जो थानाँ । लाग पलेटै तो अकुताना ॥३
 कहिसि कहों जो छाड़हु मोही । कहहि कहसि तौ छाड़हु तोही ॥४
 उन्ह मँह एक कहा कित जाई । छाड़ि देहु मकुहि कहाई ॥५
 पाव छोर बैसावहि, देवहि फुसलावइ वोराइ ॥६
 जो र साँव फुर बोलसि हमसेउँ, छाड़ देहि बहिराइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और वीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) पाछे; (ए०, वी०) पाछू । २-(म०) लै; (ए०) कै । ३-(म०, ए०)
 हथकरी; (वी०) हथकर । ४-(ए०) सीखै । ५-(वी०) कहै । ६-(वी०) चाही ।
 ७-(वी०) सकरी । ८-(ए०, वी०) लै रे । ९-(म०) पावैहि । १०-(ए०, वी०)
 पाव । ११-(म०, ए०) मेलै; (वी०) मेलिन्ह । १२-(ए०, वी०, म०) उहि ।
 १३-(ए०, वी०) भैसन्ह । १४-(वी०) लागे । १५-(ए०, वी०) छाँडहि । १६-
 (वी०) × । १७-(ए०, वी०) कत । १८-(म०) मकु करै; (ए०) मकुरे; (वी०)
 मकु कुरहि । १९-(ए०, वी०) बैसारिन्हि । २०-(ए०) × । २१-(म०) दूँ; (वी०)
 तै । २२-(ए०) जो तौ साज भोरै निसि । २३-(म०, ए०, वी०) × । २४-(ए०)
 बिहराय; (वी०) बिगराय ।

टिप्पणी—(१) पाछेउँ—पीछे । हथकरि—हथकड़ी । वाही—डाली । सँकती—सखती;
 कठोर व्यवहार ।

(२) सिकरी—जंजीर । गेरि—डालकर ।

(३) केर—का । चाम—चमड़ा । लाग—लागे । अकुताना—व्याकुल हुआ ।

(दिल्ली; मनेर; वीकानेर)

कहसि कुँवर मैं इँहवहि छाड़ा । हौं रे भागि परेउँ इक गाड़ा ॥१
 कुँवर कहुँ र नहि कीन्हि मँदाई । हौं कस उन्ह लै जाँउ वोराइ ॥२
 बहु फुसलावहि ना र पसोजा । पाथर कठिन पानि न भीजा ॥३
 कैसो बरसो हरा न जामाँ । बहु वौराइ रही वह रामाँ ॥४
 बाँधे जो र कहै कँह कहरै । छाड़े तो र अवाँक होइ रहरै ॥५
 ताकर हिरदो [वज्रकै], कैसहुँ छाड़ि न रोस ॥६
 हिरद करेज न जाइ मुँहि, तिह अवगुन न दोस ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) ईहों; (बी०) उँहइ। २-(म०) यक; (बी०) एक। ३-(बी०) खॉडा।
 ४-(म०) कछु; (बी०) दहु किछु। ५-(म०) ×। ६-(बी०) किई। ७-(बी०)
 उन्हहि। ८-(म०, बी०) उड़ाई। ९-(म०) नाहिं; (बी०) नाहिं रे। १० (बी०)
 पथरहु। ११-(बी०) बान। १२-(बी०) बेशा। १३-(ए०) गयो। १४-(म०)
 बरसै। १५-(बी०) कैसे बरीस हरन जाई। १६-(बी०) बहु फुसलाइ रहै बौराई।
 १७-(म०, बी०) बाँधहि। १८-(म०, बी०) रे। १९-(म०) को; (बी०) मकु।
 २०-(म०) हई (?)। २१-(बी०) छाड़ि देहि। २२-(म०, बी०) ×। २३-(बी०)
 अवाग। २४-(बी०) दोइसै (?) (बी०) तीखर दई हिंदै रोइ यह। २५-(बी०)
 छाँडै। २६-(म०) करेस। २७-(म०) जामै; (बी०) हरेउ जो कुलीसन भय मोही।
 २८-(ए०) पिय कँ अवगुन दोस; (बी०) की औगुन दोस।

टिप्पणो—(१) इँहवहि—यहीं। गाढ़ा—गढ़दा।

(२) ना—नहीं। पाथर—पत्थर। भीजा—भीगा।

(३) कैसे—किसी भी प्रकार। बरसो—बरसै। जामाँ—जमै। रामाँ—रमणी।

(४) अवँक—अवाक्; मूक।

२८९

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

चौदह विद्या भोज निदानाँ। बररुचि एक अधिक यह जानाँ ॥१
 राजें हार धरै कहुँ दीन्हा। लै रं छुपायसि दइ न चीन्हा ॥२
 धरसि तहाँ जो रं बखाना। राइ कोप बूझि नहिं मानाँ ॥३
 तस ई धरी न मानै काऊ। अँगइसि सबै जिय कन चाऊ ॥४
 बाँधि बहुरि उन्ह चाम लपेटा। करै गुहार जस सुवारि क घँटा ॥५
 घाल अस कै खलरी भीतर, मूद बजर कै [दीन्हा] ॥६
 दई पुहुमि जो सँतहि आपुन, तौ लोगहि उन्ह कीन्हा ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) नहिं; (बी०) ×। २-(बी०) सयाना। ३-(ए०, बी०, म०) रे।
 (बी०, ए०) छपाइसि। ५-(ए०, बी०) नहिं। ६-(ए०) न चहे (?)। ७-(बी०)
 लै जीव। ८-(दि०) नाँइ (?)। ९-(ए०) न वै एको पूछै भैए माना; (बी०) नैन
 रूप पूछै नहि माना। १०-(ए०) अ; (बी०) यह। ११-(ए०, बी०, म०) धरा।
 १२-(बी०) नहिं। १३-(म०) कै; (बी०) कीनि। १४-(बी०) ×। १५-
 (ए०, बी०) जाऊ। १६-(ए०) उठ। १७-(बी०, म०) कर; (ए०) करा। १८-
 (ए०, बी०) गोहारि। १९-(म०) जैस। २०-(ए०, बी०, म०) कोठी। २१-(ए०,
 म०) ×। २२-(बी०) मूँदिसि। २३-(दि०) लीन्हा। २४-(म०, बी०) देव;

(ए०) दैय । २५-(म०) होहिह । २६-(बी०) पुन; (ए०, म०) × । २७-(म०, ए०, बी०) तौलहिं । २८-(बी०) × ।

टिप्पणी--(१) निदानाँ—निपुण ।

(२) चीन्हा—चिन्ह ।

(५) चाम—चमड़ा । गुहार—पुकार । जस—जैसे । सुवरि क घँटा—सुअर का बच्चा ।

(६) बाल—डालकर । खलरी—चमड़ा ।

(७) सँतहिं—सुपुर्द करते हैं ।

२९०

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

बहि तो बाँधि पठायउ' काँऊँ । ढूँढउ' इहाँ तिह' आनों' ठाऊँ ॥१
मिरगावती' कहे' का' करऊँ । स'ग चाह कोउ' कहे' त' चढ़ऊँ ॥२
जो कोउ' कहे कि' आहि पतारा । हनिवँत जैस करों उपकारा ॥३
लंक' टेक कर' रोवइ' ठाढ़ी । काह करों जिउ जाइ' न काढी ॥४
[सॉक सूखः] सिर धुन रोवइ' । सारंगि-नैन' रुधिर' मुँह' धोवइ ॥५
पिव वियोग धनि' भूली, ईह' बर' चीर सीस न' सँभार । ६
वेनी जानु' उरगहि', कष्ट न' कहे' मँजूर पुकार ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) पठावइ; (ए०, बी०) पठाइन्ह । २-(ए०, बी०) गाऊँ । ३-(ए०, बी०) ढूँढहि । ४-(ए०) तो; (बी०) एहि । ५-(ए०, बी०) अनवन । ६-(म०) मिरगावति । ७-(म०) कहहि । ८-(बी०) सखि । ९-(ए०, बी०, म०) कोइ । १०-(म०) × । ११-(म०) तिह; (ए०, बी०) तो । १२-(म०) चढों । १३-(म०) को । १४-(म०) किह; (ए०, बी०) की । १५-(ए०, म०, बी०) डार । १६-(ए०) कै; (बी०) कर टेकि । १७-(म०) रोये; (ए०, बी०) रोवै । १८-(ए०, बी०) जाय । १९-(बी०) सुसर कंठ सु (?) सर रोवै । २०-(ए०, बी०) सारंग नैन । २१-(ए०) रुधिर; (बी०) रोइ; (म०) रोहि । २२-(ए०) मुख । २३-(ए०, बी०) धन । २४-(ए०, बी०, म०) × । २५-(म०) न सीस; (ए०) सीस चीर न । २७-(ए०, बी०) जानों । २८-(बी०) उरगहिं । २९-(बी०) कीन्ह; (ए०, म०) × । ३०-(बी०) अहि; (म०) कहतैं ।

टिप्पणी--(३) पतारा—पाताल ।

(५) सारंगि-नैन—मृगनयनी ।

(६) धनि—छी ।

(७) उरग—सर्प । मँजूर—मयूर; मोर ।

२९१

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुहुक उठी जनु' पंचम बोली । सुनत' सबद पावस रितु' डोली ॥१
 विहरत अधर भँवर' गँध पाई । कँवल किहाँ' लागेउ' रस आई' ॥२
 धुमकर डसि' विरहिन अकुलानी' । ई'० र' अवस्था' तुरत' भुलानी ॥३
 आइ' अखार' अम्मर गहिराना' । पवन' आहा' उन्ह' आवत' जानाँ ॥४
 पवन सँदेसा लेहि ले चल' भँवर गुन । मालत यह र' अवस्था कहियहु' तुमबिन' ॥५
 जप माला कै नाँउ' जिह' जिउ रहे ॥६
 निसि वासर विव तस', पिउ गुन हिय' दहै ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) जनि; (बी०) जनौ । २-(ए०) संप । ३-(बी०) रित; (ए०) रवि ।
 ४-(ए०) भौर । ५-(ए०) धानि । ६-(ए०) लागेव । ७-(बी०) लागी । ८-
 (बी०) दसन; (म०) दंस; (ए०) डस । ९-(बी०) अकुलानी । १०-(ए०) अेहि;
 (म०, बी०) यहि । ११-(ए०, बी०, म०) × । १२-(ए०) अवसर । १३-(ए०,
 बी०) तरुनि । १४-(बी०) उये; (ए०) उनै । १५-(ए०) अखर; (बी०) अकर ।
 १६-(बी० ए०) घहराना । १७-(ए०, बी०) पौन । १८-(बी०) आइ; (ए०)
 आह; (म०) उटा । १९-(बी०, ए०) उन; (म०) तिह । २०-(ए०, बी०) और
 न । २१-(ए०, म०) लै रे चला; (बी०) सुनसि न मोरा । २२-(ए०) अेहरे ।
 २३-(ए०) कहे न । २४-(म०) यह अर्घाली न हों है; (बी०) बन मालती विरहे
 मोहि तोरा । २५-(ए०, बी०) नाव; (म०) नाँव तुम । २६-(म०) जपथहि; (बी०)
 जपतेहि; (ए०) जावथिर । २७-(म०) तैसहि; (ए०) विन तिसि; (बी०) तीसहु ।
 २८-(बी०) छिदै । २९-(ए०, बी०) डहै ।

टिप्पणी—(२) किहाँ-के पास ।

(३) डसि-दंश ।

(४) अखार-आपाढ़ । अम्मर-अम्बर ।

२९२

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

पवन सँदेसा ले र' उड़ाई । ठुँढि भँवर कहँ लीनसि जाई ॥१
 देखत भँवर विपत बड़ परी । वाँधेउ' भँवर कँवल कै कगी ॥२
 भँवर लुबुध तो' कँवलहि' आवइ' । यह र' अवस्था करम बँधावइ' ॥३
 पवन भँवर सँउ' कहेउ' सँदेसा । जो र' अहा' मालति कर भेसा ॥४
 मालति' नाँउ' सुनत' जिउ' पावा । रोइ दिहिसि मन घबरावा' ॥५

बिबिरेता केउ न जानै", दुहुँ चित एकै रत । ६
मालति मन मधुकर वसै, मधुकर मन मालत ॥७

पाठान्तर—मनेर और वीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०, वी०) रे । २-(बी०) कहु । ३-(बी०) लीतिसि । ४-(म०, वी०) बाँधिसि ।
५-(बी०) × । ६-(म०) कँवल कहँ । ७-(बी०) आवै । ८-(बी०, म०) रे ।
९-(बी०) बँघावै । १०-(म०, वी०) सों । ११-(बी०) कह्यो । १२-(बी०) रे ।
१३-(म०) इहाँ; (दि०) आहा । १४-(बी०) मालती । १५-(बी०) नाव ।
१६-(बी०) सुनी । १७-(बी०) जिव । १८-(बी०) जिउ गहवरि आवा । १९-
(म०) विबि र उज्जाता किमि जानै; (बी०) विबि राते किमि जानि नहि ।

टिप्पणी—(१) लीनसि—लिया ।

(२) करी—कली ।

(६) केउ—कोई ।

२९३

(दिल्ली; वीकानेर)

तुम्ह बिन जियै चैन न' लेखा । भिन्दुर^३ सेत माँग में देखा ॥१
काजल^१ रात चन्दन भौ^२ ताता । सबै अवस्था कहिसि वहि^५ गाता ॥२
अति बियोग विकली^६ बहु दूखी^७ । भँवर पाछ मालति पुनि सूखी^८ ॥३
तौ^९ चाह वहि कोउ न कहई^{१०} । ऊमि सांस^{११} लै मरि मरि रहई^{१२} ॥४
कहिसि देउ^{१३} हौं तहाँ अडारा । कै सायर कै आह^{१४} अकारा ॥५
किह संदेस कहि पठवउँ, को र विपत कहि जाय^{१६} । ६
सायर^{१७} अगम अगोचर, तिह^{१८} [ठाँउ पंखी]^{१९} न आइ ॥७

पाठान्तर—वीकानेर प्रति ।

१-विनु जिउ जीवन नहिं । २-सँदुर । ३-काजर । ४-भव । ५-कियै वोहि ।
६-बरकुली । ७-दुखी । ८-भँवर वाजु मालती बन सूखी । ९-तेहि । १०-
केउ न कहाई । ११-ऊमि ऊमि । १२-जाई । १३-देव । १४-अही । १५-कहै
संदेसा किहि पठऊँ पास न कोई, विपति कहै को जाइ । १६-साइर । १६-तेहि ।
१८-(दि०) ठिक नाँउ ।

टिप्पणी—(१) सेत—श्वेत ।

(२) रात—रक्त; लाल । भौ—हुआ । ताता—गर्म । गाता—शरीर ।

(३) पाछ—पीछे ।

(५) अकारा—आकार ।

२९४

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

आज सुदिन यह आइ तुलाना । करम हमार दर्ई तिह आनाँ ॥१
नाहुत को र कहत सुधि जाई । यहै कहहु जस देखहु आई ॥२
काह संदेस देउं घहि भारी । बरजा कियेउं न रहेउं संभारी ॥३
जाइ कहेहु जस दर्ई कहावा । काह कहौं कछु कह न आवी ॥४
सुनि र पवन यह चलेउ संदेसा । गयउ जहां मालति वह भेसा ॥५
अति र वियोग बियापी रामाँ, विसभर कछु न संभार ॥६
लाइ नैन दुइ मारग राखिसि, भूली पन्थ निहार ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) आजु । २-(बी०) मोर । ३-(ए०) दैअ । ४-(ए०, बी०) तोहि । ५-
(ए०) नाहि तौ; (बी०) नाहिन । ६-(बी०) यहइ । ७-(ए०, बी०) कहेहु । ८-
(ए०, बी०) उहि । ९-(ए०) कियेव; (बी०) कियो । १०-(ए०, बी०) रहेव ।
११-(बी०) किहिसि । १२-(ए०) दैअ; (बी०) दइव । १३-(बी०) कहावै ।
१४-(बी०) आवै । १५-(ए०, बी०) रे । १६-(ए०, बी०) पौन । १७-(बी०)
लै । १८-(बी०) चला । १९-(ए०, बी०) गएव । २०-(ए०) उहि; (बी०) कर ।
२१-(म०, बी०, ए०) रे । २२-(ए०) कुछु । २३-(बी०) अति रे वियोग
व्याकुली पीरम भूली, चीर न सीस संभार । २४-(ए०) × । २५-(म०) राखी;
(बी०) राखिसि मारग ।

टिप्पणी—(१) तुलानाँ—निकट आया । करम—कर्म, भाग्य । हमार—मेरा ।

(२) नाहुत—नहीं तो ।

(३) बरजा—वर्जित कार्य ।

(६) रामाँ—रमणी ।

२९५

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पौन आइ मालति साँ कहा । भँवरहिं विपति कँवल मँह गहा ॥१
सुरजन सूर उदैगिरि आई । दुरजन रैन भँवर दुख जाई ॥२
सुनतहिं चाह विपति मै भागी । सम्पति आइ गात सुख लागी ॥३
कहिसि वेगि चलु पवन सुहाई । देखौं नैनहिं जाहिं सिराई ॥४
(सिरवै) अमिय सान्त होइ गाता । सँदुर सेत भयउ सुनि राता ॥५
आनि सजीवनमूर तुम्ह, महि दीन्हौं अहिवात ॥६
परान घटहिं घट राखहु, नाहुत अय न रहात ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) आए । २-(ए०, बी०) मालती । ३-(ए०) भौरहि; (म०) भौर ।
 ४-(म०) आहा; (बी०) भँवरा कली कँवल की गहा । ५-(ए०, बी०) सुरिजन ।
 ६-(ए०, बी०) उदैकर । ७-(ए०) भौर; (बी०) भौरै । ८-(ए०, बी०) सुनतेहि ।
 ९-(ए०, बी०) आए । १०-(बी०) सख । ११-(ए०) × । १२-(ए०) खन एक ।
 १३-(ए०) चली; (बी०) चल । १४-(ए०) पौन । १५-(ए०, बी०) सोहाई ।
 १६-(म०, ए०, बी०) लोचन । १७-(ए०, बी०) सेराई । १८-(दि०) सनवै ।
 १९-(ए०) भयेव; (बी०) भयो । २०-(ए०) तव । २१-(म०) निराता । २२-
 (बी०) आनिसि । २३-(बी०) तुम; (ए०) अभिय सींचेव मोहि तोह । २४-(ए०)
 तोह; (म०) ×; (बी०) मोहि । २५-(ए०) दीन्हेव; (बी०) दियेहु । २६-(म०)
 परान घट न राखें; (ए०) परान घटत घट जाई; (बी०) प्रान घट घट राखेहु
 निसरता । २७-(ए०) नहीं तौ; (बी०) नाँहि तौ ।

टिप्पणी--(३) नै-गया ।

(४) सिराई-तुत्त ।

(५) सिरवै-सराबोर हो । सेंदुर-सिन्दूर । सेत-श्वेत । राता-रक्त, लाल ।

(६) सजीवन मूर-संजीवन मूल । (यहाँ रामायण-वर्णित हनुमान द्वारा
 संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाने की ओर संकेत है ।)
 महि-मुझे । अहिवात-मुहाग; पति का अस्तित्व ।

(१) रहात-रहत ।

२९६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चला पौन मालति सँग लाई । भँवर आहा जिह तिह लै जाई ॥१
 मालति सूर कियेउ परगासा । भँवर छूट भयउ कँवल विगासा ॥२
 लोचन चार होत मिलि जाहीं । जस पानी मँह वूँद समाँहीं ॥३
 दोइ न रहे एक भो गाता । वहि वह रात वह र वहि राता ॥४
 घरी एक ऊपर बिहराने । तव लगि काहँ न दोइ कर जाने ॥५
 जिउ जिउ एक परान घट, देखौ बूछि समत्त ।
 पसरि पुरई पिरित कै, छाइ रहे दुहँ गत्त ॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) अहा । २-(ए०) जेहि ठाँ; (बी०) तेहि ठाँ; । ३-(ए०, बी०) मालती ।
 ४-(ए०, बी०) कियेव । ५-(ए०, बी०) भौर । ६-(ए०, बी०) भौ । ७-(बी०)
 कमल । ८-(ए०, बी०) दुइ । ९-(बी०) ना । १०-(ए०) एकै । ११-(बी०)
 मै । १२-(ए०) उहि उवह; (बी०) वह वोहि । १३-(बी०) राता । १४-(ए०)

उहि; (बी०) वोह वहि । १५-(बी०) घरी चारि पर । १६-(ए०) तौ । १७-(बी०) नहिं । १८-(ए०, बी०) रे दुइ । १९-(ए०) घट रहै; (बी०) एकै प्रान गति एकै । २०-(ए०) समथ; (बी०) समाँत । २१-(ए०) पुरइनि; (बी०) पुरइन । २२-(ए०) पिरीति की; (बी०) प्रीति की । २३-(ए०) गाथ; (बी०) गात ।

टिप्पणी—(२) बिगासा-विकास ।

(३) लोयन-लोचन ।

(४) भो-हुआ ।

(५) घरी-घड़ी ।

२९७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बहुरि^१ बिपति कै^२ बकतहिं^३ बाता । जो र^४ अवस्था परी हुत^५ गाता ॥१
सुनत नीर लोचन भरि आये । सरिल^६ चुवहिं जस मोंति^७ सुहाये ॥२
बिहरन^८ आखर लिहै^९ न चलहीं^{१०} । तीनि लोक जो र^{११} सब मिलही ॥३
जो कोउ झाँखि^{१२} अवटि^{१३} पवि मरई । विध रूचत^{१४} आपन^{१५} पै करई ॥४
कहहिं^{१६} चलहुआपु घर कँह^{१७} जाहीं । बहुरि जाइ^{१८} रस केलि कराहीं ॥५
चले दोउ^{१९} जन रहसत^{२०} घर^{२१} कँह, नौ र भयउ^{२२} औतार ।६
नगर रहा हुत^{२३} निसि होइ^{२४} कारी, बहुरि^{२५} भयउ^{२६} उजियार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ --

१-(ए०) बउरी । २-(ए०, बी०) की । ३-(ए०, बी०) रे । ४-(ए०, बी०) हुतो ।
५-(ए०) सलिल । ६-(ए०, बी०) मोती । ७-(बी०) फिरना । ८-(बी०) लिख न ।
९-(बी०) चहहि । १०-(ए०, बी०) रे । ११-(ए०, बी०) झाँखि । १२-(ए०,
बी०) औटि । १३-(बी०) रूचता । १४-(ए०) आपन रूचता । १५-(ए०, बी०)
कहिन्हि । १६-(बी०) कहँ । १७-(ए०) जाए; (बी०) जाय । १८-(ए०, बी०)
दुऔ । १९-(बी०) रहसत चले दुवौ जन । २०-(ए०) × । २१-(ए०) रे
भयव; (बी०) रे भयेव । २२-(बी०) जो होत रहा । २२-(बी०) जो होत रहा ।
२३-(ए०, बी०) भै । २४-(बी०) फुनि रे । २५-(ए०, बी०) भएव ।

टिप्पणी—(४) झाँखि-संताप करके । अवटि-अभिलाषा करके; इच्छा करके । पवि-
पदचात्ताप करके । विध-ब्रह्मा; सृष्टि कर्ता । रूचत-अच्छा लगता
है । आपन-अपने को । पै-किन्तु; लेकिन ।

(६) नौ-नया ।

२९८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

नगर : लोग सब आगे^१ आए^२ । बाजन बाजे लाग सोहाए^३ ॥१
 बाजत आई^४ नगर मँह पैठे^५ । नौ के पाट^६ सिंघासन बैठे^७ ॥२
 बैठि^८ सिंघासन दरब लुटावा । राँकहिं^९ न दारिद बहुरि^{१०} सतावा ॥३
 दइके^{११} कुँवर गयउ^{१२} बतसारा^{१३} । मिरगावति गै करी^{१४} सिंगारा ॥४
 कय^{१५} जो^{१६} सिंगार कुँवर पहुँ^{१७} आई । देखि विमोहेउ^{१८} कछु^{१९} न कहाई^{२०} ॥५
 संझा बन्दन निस भरन^{२१} पियहि पलटेउ^{२२} दाउ^{२३} ॥६
 रविसुत सारथि मन बसेउ^{२४}, तब^{२५} बढेउ^{२६} अनुराउ^{२७} ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतिधाँ ।

१—(ए०, म०) आगे सब । २—(बी०) नगर लोग मिलि आगे घावा । ३—(बी०) बधावा । ४—(ए०) आए । ५—(बी०) पैठा । ६—(बी०) राज । ७—(बी०) बैठ । ८—(बी०) बैठ । ९—(ए०) राँक; (बी०) राकन्ह । १०—(ए०, बी०) दारिद बहुरि न । ११—(ए०) अके; (बी०) दै कै । १२—(ए०) गएउ; (बी०) गयो । १३—(ए०, बी०) पटसारा । १४—(बी०) कियेव; (म०) कियेउ; (ए०) करै । १५—(ए०, बी०) कै । १६—(बी०) जु । १७—(म०) गै । १८—(ए०) विमोही; (बी०) विमोह । १९—(ए०, बी०) कुछ । २०—(बी०) कहइ न जाई । २१—(बी०) अभरन । २२—(ए०, बी०) पलटेव । २३—(बी०) दाँव । २४—(म०) बसे; (ए०, बी०) बसेव । २५—(ए०) तुरत; (बी०) त । २६—(ए०) बढे; (बी०) बढेव । २७—(बी०) अनुराव ।

टिप्पणी—(३) दरब—द्रव्य, धन । राँकहिं—रंकों को; दरिद्रों को । दारिद—दरिद्रता ।

(४) बतसारा—बैठक ।

(५) कय—करके ।

(६) संझा—सन्ध्या । पलटेउ—पलट दिया । दाउ—बाजी ।

२९९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अनग कवन गुन आई पिउ आसा^१ । रावन कनक लंका हम बासा ॥१
 लंक सहल^२ बन्धो हम सेती^३ । औ साँभर आहहिं जग जेती^४ ॥२
 (पण्डो पति) सुत देहि न मोही । ऊभि रहीं कहिं जाँउ न छोही^५ ॥३
 मंदिर वेदन सुनहि नहि बाता । बीरा तिह^६ सुत लेहि निराता ॥४
 रविसुत सारथि उर न समाई । जिह^७ औगुन पिय रहेउ^८ लुकाई^९ ॥५
 रावन कनक आह तुम्ह पासहिं, औ साँभर^{१०} नख साँस । ६
 लंक सहल^{११} बन्धो फुनि, आहिं^{१२} पाप देखि तुम्ह पास ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) विवासा । २-(बी०) सो लाइ; (ए०) सैल । ३-(बी०) बन्ध (ए०) बन्धु । ४-(बी०) तेती; (ए०) सुने । ५-(बी०) और । ६-(बी०) जेतने । ७-(बी०) की । ८-(बी०) बिछोही । ९-(बी०) मनु बँदन । १०-(बी०) वैरट ही; (म०) वीरापति । ११-(बी०) तेहि । १२-(बी०) रहेउ; (म०) रहँहि । १३-(म०, बी०) रिसाई । १४-(म०) सँभर; (बी०) सँभरि । १५-(म०, बी०) सैल । १६-(म०, बी०) आहँहि ।

३००

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कूप' नीर जिह' काढी' नारी' । ते तुम्ह सेंउ बहुतै असँभारो ॥१
सरबस दइ तुम्ह' परेउ भुलाई । पिय पति लेहि' वैठि' समुझाई ॥२
मोहन वान काम कर लाग' । औखद मूरि होहि' तो जागा' ॥३
सुर मोहहि' नर आहँहि काहा' । वसीकरन सिर पालहि' आहा' ॥४
हनू [वन्त] मूर सकती कँह आनी' । तुम्ह र' मूर मोहन निज' जानी ॥५
तुम्ह गन्धरवहि' चक्कवइ, तु र भौं मुदिरा सार' । ६
लोचन जिह' दुव दिष्टि होइ', तुम्ह सेउ वरक पुहुमि विकरार' ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) कुआँ । २-(बी०) जेहि । ३-(बी०) कादियै । ४-(बी०) वारी । ५-(बी०) बरबस देखि तुम्हें । ६-(म०) लिह; (बी०) लेहु । ७-(बी०) पियहि । ८-(बी०) कै लागै । ९-(म०) होइ; (बी०) होय । १०-(बी०) जागै । ११-(बी०) कहा । १२-(म०) यह अर्धाली पंक्ति ५ की पहली अर्धाली के रूप में है । १३-(म०) यह अर्धाली पंक्ति ४ की दूसरी अर्धाली के रूप में है । १४-(बी०) रे । १५-(म०) शब्द अस्पष्ट । १६-(म०) गन गन्धरप । १७-(बी०) तुम्ह गंध पहुँच हुक वैसी, भुअन मुंडसार । १८-(म०) जासों । १९-(बी०) लोयन चहँ, दुदिस्टिल । २०-(बी०) औ सुर नर फुनि विकरार; (म०) सुर नर फुनि विकरार ।

टिप्पणी—(२) सरबस—सर्वस्व ।

३०१

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

हँसी कहिसि दीपक' सुनु' याता । गयउ' उचाइ जाइ' जिय माँता' ॥१
रामाँ किंइ बिधि' पियहि उचावइ' । मान भाव कर भाव न' पावइ ॥२
साखि' होहि' इँह' जूझ' उचावउँ' । आप अगरग' सरसती बुलावउँ' ॥३
आइ सुनवाइ' दीपक' गाई । दीया' अगिन' विनु सर' जो' जराई ॥४

यह र^३ काम मुरझागति आई । मन्त्र जपसि अगरख^३ जो बुलाई ॥५
 आई जो दीपक गायसि विध सेंउ,^३ सुनत देह अंगरान^३ ॥६
 दिया पठावइ^३ अस्तुति वहि,^३ धन धन मद्ध^३ सुजान ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१- (बी०) दीपग । २-(बी०) सुन । ३-(बी०) क्यों रे । ४-(बी०) जाय । ५-
 मैमाता । ६-(बी०) केहि भाँति । ७-(बी०) उचाऊ । ८-(बी०) सावन । ९-
 (म०) साखी; (बी०) सखी । १०-(बी०) होइ । ११-(म०) आवहि; (बी०)
 इहि । १२-(म०) जूज (जीम, बाव, जीम); (बी०) चोज । १३-(बी०) उचाऊँ ।
 १४-(बी०) अंक रखि । १५-(बी०) बुलाऊँ । १६-(म०) सुनाइ जो; (बी०)
 सुनाइसि । १७-(बी०) दीपग । १८-(बी०) दीप । १९-(बी०) आगि । २०-
 (बी०) विन जो; (म०) बत (बे, ते) सत (सीन, ते) । २१-(बी०) जोरे । २२-
 (बी०) फिरे; (म०) यह रे । २३-(म०) अगरग । २४-(बी०) सुधि सै । २५-
 (म०) फिरी सुनत अंगरान; (बी०) सुनत इह रे अंगरान । २६-(बी०) पठावै ।
 २७-(म०) अस्त अस्त । २८-(बी०) मुघ ।

३०२

(दिल्ली; एकडला^१; मनेर; बीकानेर)

अंगरानेउं चिन्ता^१ मन^१ आई । उठा कुँवर यह चलेउ^१ कुहाई ॥१
 मान भाव सेउं^१ चली सुनारी^१ । दौरि कुँवर कर गही पियारी^१ ॥२
 कहिसि विरचि^१ कस चलहु^१ कुहाई । सुनतहि^१ निरति मुरछा जिह^१ आई ॥३
 तो देखि जियै रही न पारा^१ । जीउ तो पँह गा हां^१ विसँभारा^१ ॥४
 परेउं जाइ दँहु कठिन मँझारी । अपै र^१ पयोहर अति^१ बल^१ नारी^१ ॥५
 बहुत चरित^१ कै छूटेउ छँद कै^१, तो आयउ^१ मुहि गात । ६
 कहेउं^१ निरत फिर आपुन^१, यह अवगुन^१ यह बात ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) चिन्त; (बी०) चेतना । २-(बी०) ×; (म०) मन मँह । ३ (ए०, बी०)
 चली । ४-(बी०) के; (ए०) से । ५-(म०, ए०, बी०) सोनारी । ६-(बी०)
 सुप्यारा । ७-(बी०) विरचि । ८-(ए०, बी०) चलिहु । ९-(म०, ए०, बी०) सुनहु ।
 १०-(ए०) मन; (बी०, म०) मोहि । ११-(बी०) तोहि देखि मैं रहै न पारों; (ए०)
 तोहि देखि जिउ रहै न पारा; (म०) जोहि देखि जिउ गा विसँभारी । १२-(बी०)
 हाँगा । १३-(म०, बी०) विसँभारी; (ए०) काहू न सँभारी । १४-(ए०) × ।
 १५-(ए०) × । १६-(ए०) बलदै; (म०) भल । १७-(बी०) आप आप जो हारि
 अति छुनाई । १८-(बी०) चरित्र । १९-(म०, ए०, बी०) × । २०-(म०, ए०) हम ।

२१-(ए०, म०) कहों । २२-(म०) सब आपुन; (ए०) तोहसों; (बी०) सुनहु
निरत सब मोरी । २३-(ए०, बी०) औगुन ।

टिप्पणी—(१) कुहाई—रूठकर ।

३०३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर गहँ वहि^१ चाहि^२ छुड़ावा । मान करै नहि नैन मिरावा^१ ॥१
तो यहि बुधि^१ कै कुँवर डराई^१ । कहसि राहु ससि^१ कैं घर आई^१ ॥२
तो र बेगि चलि मँदिर छावाही^१ । ससि^१ कलंक^१ तू निरमर^१ आही ॥३
तिह^१ जो देखि तो^१ वहि^१ न कहाई^१ । वहि र^१ छाँड़ि तिह^१ छाड़ि न जाई ॥४
हँसि^१ कहिसि हम सेंउ^१ चतुराई^१ । कुँवर बूझि मन^१ उर न^१ समाई ॥५
मिरगावति^१ मन ही मन^१ रहसी^१, मिलेउ जो जरम^१ न होइहि भंग ।६
यह मन गाढ़^१ उँहरेउ^१, जो^१ चढ़े न दूसर^१ रंग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) उवह । २-(बी०) चहै । ३-(बी०, ए०) मिलावा । ४-(ए०) विधु ।
५-(ए०, बी०) डेराई । ६-(ए०) सन । ७-(ए०, बी०) जाई । ८-(ए०)
तोरे बेगि जनु मदन छपाई; (बी०) तू रे बेगि चलु मंदिर पाही । ९-(बी०) ससि रे ।
१०-(ए०) तो । ११-(बी०) निर्मल । १२-(ए०) उह । १३-(ए०) तु । १४-
(ए०) उह । १५-(ए०) वहई; (बी०) तोहि देखें तो वहि न गहई । १६-(ए०)
उहरे; (बी०) बोहिरे । १७-(ए०) तु; (बी०) तोहि । १८-(ए०, बी०) हँसी ।
१९-(ए०, बी०) हम से । २०-(ए०) मान । २१-(ए०) उरै; (बी०) उरहिं ।
२२-(ए०, बी०) मिरगावती । २३-(ए०, बी०, दि०) मन मन हों । २४-(ए०,
बी०, दि०) × । २५-(बी०) जरमहिं । २६-(बी०) कलही । २७-(ए०) उन्ह
हरेव; (बी०) उन्हरेउ । २८-(ए०, बी०) × । २९-(ए०) दोसर ।

३०४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

यह रंग जरम कुरंग न होई । सात समुँद जो घोये^१ कोई ॥१
वैसहिं^१ मिली^१ सेज पर आई । ततखन कुँवर गिय लै लाई^१ ॥२
पेम सुरा रस^१ दुउ^१ जन राते । पेम सुरा जुग चार न माते^१ ॥३
इहउ^१ जरम क^१ कवन^१ सँदेह^१ । रचेउ नेह^१ दुहुँ जग कह पइ^१ ॥४
विहार^१ मिले रस केलि कराहीं । अमिय सुफल^१ विरसहिं वई^१ खाहीं ॥५

अमिय पयोहर दलमले^{११}, अधर घूँट रस लेई^{१२} । ६
नौ सता^{१३} ससिबदनी अबला^{१०}, अस^{१४} धन भोग करेई^{१५} ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) धोवै । २-(बी०) वैसेहि । ३-(बी०) मिलि । ४-(म०) ततखन कनक
गियें पहिराई; (बी०) टंक न कनक के रे विहराई । ५-(म०) सँमुद सरित; (बी०)
सुमन सरित । ६-(बी०) दुवौ । ७-(बी०) पेम सुरा दुओ जन माते । ८-(म०)
यहे । ९-(बी०, म०) कर । १०-(बी०) कौन । ११-(बी०) सँदेहा । १२-(म०)
तिह; (बी०) इनहि । १३-(म०) नेहू; (बी०) कर नेहा । १४-(दि०, बी०) सेज ।
१५-(बी०) फल । १६-(म०, बी०) सब । १७-(बी०) दलिके । १८-(बी०)
सेज रस लेई । १९-(बी०) नौ । २०-(म०) × । २१-(म०) अइस । २२-(म०)
कराई; (बी०) कराय ।

टिप्पणी—(५) बिहर-बिछुड़ ।

(६) पयोहर-पयोधर; स्तन ।

(७) नौ सता-(नौ सात) सोलह; तात्पर्य सोलह कलाओं वाली । ससिबदनी-
चन्द्रबदनी । अबला-स्त्री ।

३०५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

यइ^१ र^२ ईहाँ रस भोग कराहीं । रूपमनि^३ कँह दुख महँ दिन जाहीं^४ ॥१
बरिसा सै बरु निमिख गँवावई^५ । वासर निसि क^६ अन्त किमि पावई^७ ॥२
अहि निसि पन्थ निहारै वारी । मकुहि^८ चाह कोउ कहै उन्हारी ॥३
करपाले^९ नित असुवई^{१०} काढ़ै । विरह सँताप कया तन डाढ़ै ॥४
काक उड़ावई^{११} पन्थि^{१२} जो आई । तिमुवन^{१३} कहँ सँदेस लै जाई ॥५
सँदेसा गुन विस्तरौ^{१४}, जो कोउ कहँहि^{१५} समत्थ । ६
कर कौन गढ़ेउ जो मुदरा^{१६}, बिबि र समानै हत्य^{१७} ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०, बी०) ये । २-(बी०) रे । ३-(बी०) रुकमिनि । ४-(म०) रूपमनि
कह दिन दुख बड़ जाही । ५-(बी०) बरिसा सै पर नीमख' । ६-(म०) कँह;
(बी०) कर । ७-(म०) न जाई; (बी०) न पावै । ८-(बी०) मकहुँ । ९-(म०)
करपलो; (बी०) करपल्लो । १०-(बी०) दिन आँमुइ; (म०) असुवइ दिन । ११-
(बी०) उड़ावै । १२-(बी०) पन्थ । १३-(बी०) पन्थी । १४-(म०) विस्तरेउँ;
(बी०) विस्तरयो । १५-(म०, बी०) कहै । १६-(बी०) अँगुरी कहँ मुदरी गद्दी;
(म०) करवारी कहँ तरक महँ । १७-(म०) बिबि समानी हत्य; (बी०) सब
समानेउ हत्य ।

- टिप्पणी—(२) बरिसा सै-सौ बरस । किमि-किस प्रकार ।
 (३) उन्हारी-उनका ।
 (४) असुवइ-आँसू । कया-शरीर । डाढ़ै-जलावै ।

३०६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

सूखि सुपारि^१ भयउ^३ विनु नाहाँ । रंग पिय दिपौ और धनि^३ काहाँ ॥१
 हौं पिय विन डोलौं जस पानू^५ । चून न भयउ चित भाउ न आनू^५ ॥२
 विरिया^४ पहिरि दिखाँआँ^६ काही । चोली गहसि जो खोलहि आही^७ ॥३
 साउ न^८ पायउँ^{१०} वीरि^{११} जो खाई । पिय पखरोटा^{१२} नै^{१३} जो उड़ाई ॥४
 विरह सरौता खाँडै किया^{१४} । माँस^{१५} न रहा सबै लै गया ॥५
 गरह नीक दिन रासिह आवहि^{१६}, जाड़ धूप बहु सीउ ॥६
 जिय न जाइ^{१७} अकेलै^{१८} करहुँज काढ़ौं^{१९} जीउ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

- १-(बी०, म०) सुपारी । २-(बी०) भई । ३-(बी०) धन । ४-(बी०) पान ।
 ५-(बी०) चित मानहि आना । ६-(बी०) बरया । ७-(बी०) दिखँऊँ । ८-
 (म०) चोली कसन जो खोलै नाहीं; (बी०) चोली कसन खोल न जो अहा । ९-
 (म०, बी०) सावन । १०-(बी०) पाय । ११-(म०) वीरी । १२-(बी०) पखरोत ।
 १३-(बी०) गयेउ । १४-(बी०) कवा । १५-(म०) पास; (बी०) बास । १६-
 (म०) X ।; (बी०) गरह बाँके दिन दरसहिं । १६-(बी०) जाय । १७-(बी०)
 अकेलै अबला । १८-(बी०) काढ़ै ।

टिप्पणी—(३) विरिया-चूड़ी ।

(४) पखरोटा-पक्षी ।

(५) गरह-ग्रह । नीक-अच्छा । सीउ-शीत ।

३०७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

पेडहिं छाड़ि कन्त हम गया । बेल हरी सतवाँरि^१ भइ^३ कया ॥१
 काँम केयूर^२ कन्त विनु जरई । भोजौं^५ नाँह जाइ न मरइ ॥२
 नोती^४ ढार कियउ^४ हम नाहाँ । मारौं^६ तन काढौं^६ हिय माहाँ ॥३
 का करिहौं जिय विनु^८ लै कया । जिउ लै कन्त विसारसि मया ॥४
 मया बहुत मर्हि^{१०} बोलत आहा^{११} । जानेउ^{१३} मैं कि^{१३} पेम हम गहा ॥५
 मैं जानेउ पिय^{१४} हुचि रहेउ,^{१५} नेहाँ^{१५} ढब^{१५} दरक्क ॥६
 लिहेउ तरँडा कै,^{१७} तिह चढि गयेउ तरक्क ॥७

पाठान्तर—१-(बी०) सुतर; (म०) सरोता । २-(बी०) भई हम । ३-(बी०, म०) कपूर; (बी०) भूजिउ । ५-(म०) टूटी; (बी०) सूती । ६-(बी०) गयेउ । ७-(म०) कादो; (बी०) गाडेंउ । ८-(म०, बी०) मारों । ९-(बी०) विनु पिय । १०-(बी०) मुँह । ११-(बी०) अहा । १२-(बी०) जान्यों । १३-(बी०) मकु रे; (म०) मैं रे । १४-(दि०) × । १५-(बी०) दुवि रह । १६-(बी०) नेह दहल । १७-(बी०) लहेउ तरेंड कुवैन; (म०) लहो तरेडा को वैन ।

३०८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कया विरिख विरहैं दौं जारा । छाँह' गये जर भयहु अंगारा' ॥१
तिह' लग' पंखि विरिख जो आहे । छाड़ि परान' कोउ न' रहे ॥२
गयउ' अनन्द पुछारि' के भेसा । सुआ हरख जिह' हरियर केसा ॥३
चाउ चित' चतुरोख' उड़ाना । रहति परेवा छाड़ि पराना ॥४
कुरला' कोड वहाँ' नहिं रहा । विरह आगि' तन तरुवर दहा' ॥५
गयउ' अनन्द हरख आहा' जो, चाउ' रहस औ कोड । ६
रहेउ सँताप सेज दुख भारी, विरह वियोग न जोड़' ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(ए०, म०) जहाँ । २-(ए०, बी०, म०) सो कारा । ३-(ए०) तेहि । ४-(बी०) थल कर । ५-(ए०) छाड़ेव । ६-(बी०) न एकौ; (ए०) कोउ नहिं । ७-(ए०) कियेव; (बी०) गयेव । ८-(ए०) बुझार । ९-(म०) जो । १०-(म०) चित्र । ११-(बी०) चितरोख; (ए०) मोरपंखी । १२-(बी०) कील; (ए०) करला । १३-(म०) उहो; (ए०) ओहौ । १४-(बी०) अगिन । १५-(ए०) डहा । १६-(ए०, बी०) गयेव । १७-(ए०, म०, बी०) चित । १८-(म०, बी०) × । १९-(ए०, बी०) चाव । २०-(बी०) भरि; (ए०, म०) × । २१-(ए०) मोड़; (बी०) छोर ।

टिप्पणी—(१) दौं-अग्नि ।

(३) पुछारि-मयूर ।

(४) परेवा-कबूतर ।

३०९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

दुख भुजइल' होइ' रहे न' जाई' । कोयल होइ सँताप जिउ खाई' ॥१
काकरूद विरहा होइ रहा । होइ भिंगराज' वियोग' जो दहा ॥२

ये' क्तिन्न जरत' उड़ाने । वै र'^{१०} करत'^{११} सुधि'^{१२} रहै सयाने ॥३
पंखिम छाड़'^{१३} वहीर हमारी । मया करहु'^{१४} फुनि रूपमरारी ॥४
दिन एक आउ बहहि'^{१५} जो कोई । तरुवर'^{१६} छाँह बहुरि घन होई ॥५
जो तरुवर दौ र'^{१७} दहेउ,^{१८} पंखिम छाड़'^{१९} वहीर ।६
बहहि जो कोई पवन विधि, होइहि छाँह गँभीर ॥७

पाटान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) भुलै लहिं । २-(बी०) X । ३-(बी०) ना । ४-(म०) पेड़हिं छाड़
कन्ता हम गया (कड़वक ३०७ की पंक्ति १ की पुनरुक्ति) । (म०) बेलहरी सो
आना भइ लिया । ६-(म०) भुजंग; (बी०) भगराज । ७-(बी०) वीग । ८-
(म०, ए०) वैरे; (बी०) वै । ९-(बी) दौं जरत । १०-(म०, ए०) ऐ । ११-
(बी०) क्ति । १२-(बी०) सुध जो । १३-(म०) छाड़हि; (बी०) छाड़हु । १४-
(बी०) करहि । १५-(बी०) बाव बहहि; (म०) बहि । १६-(बी०) तरुवन ।
१७-(म०, बी०) X । १८-(बी०) दधिये । १९-(बी०, म०) छाड़हु ।

टिप्पणी—(१) भुजङ्ग-सर्प ।

३१०

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

जो तरुवर फुनि होइहि' छाहीं । लाखकरहु जो बहुरि फल आहीं ॥१
सुनिकै फरा' जो आयहि' चाही । किमिकै मुख दरसाइह' ताही ॥२
बाँके देवस जो छाड़ पराई । सो फुनि मुख दरसाइह' आई ॥३
गयउ निकर' फर खायहि वहि केरा । छायाहि तिह' फुनि करहि'^{१०} बसेरा ॥४
लाज न आवइ पंखि'^{११} उन्हाहीं'^{१२} । बैठि'^{१३} छाँह बहुरि फर खाँहीं ॥५
दवाँ ददेरीं जियकै,^{१४} बडलिया'^{१५} सुनि आवन्त ।६
ते पंखी तिह'^{१६} तरुवरहिं'^{१७}, किमि कर मुख जोवन्त'^{१८} ॥७

पाटान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) फिरि । २-(बी०) लागिहि करह बहुरि फर ताहीं । ३-(बी०, म०)
फर । ४-(बी०) आवहि । ५-(बी०) दरिसावहि । ६-(बी०) दरिसावै । ७-
(म०) कर; (बी०) किमिकर । ८-(बी०) डार बैठि । ९-(म०) फिरि । १०-

१—इस प्रतिके माजिनमें निम्नलिखित चार पंक्तियाँ हैं जो पक्ति ६-७ के क्रममें कुण्डलियाँका रूप धारण करती हैं । स्पष्टतः ये प्रक्षिप्त हैं ।

किमि कर मुख जोवन्त, किमि क भर लोचन देखहिं ।

जो मुक्ती राजन्त बरु जिह, सुनिके ते भजहिं ॥

विपति छाड़ेउ नहीं मैमन्त, सम्पत के बेरी ।

बेगि नहिं फटेउ हिय, कै जिय दवाँ दरेरी ॥

(बी०) करै । ११-(बी०) पाँखिन्ह । १२-(म०) उन्हाँई; (बी०) काही । १३-(बी०) बैठहि । १४-(बी०) दबना डरप रे जिय गये । १५-(बी०) फर । १६-(म०) तस । १७-(बी०) ते तरवर ते पंखी । १८-(म०) दरसावन्त ।

टिप्पणी—(३) बाँके-अच्छे ।

३११

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चाउ तो जाइ हमाँहि सिराई^१ । निसि वासर^२ दुख खिनक न जाई ॥१
 बाँभन पण्डित पूछइ^३ बारी । निलि कनसुई पठावइ^४ नारी ॥२
 नैन बरुनि दिन मारग वाढ़े । एक एक साँस सौ सौ दुख काढ़े ॥३
 हियेँ समुझि समुझावै जीऊ । कया^५ न समुझै चाहे पीऊ ॥४
 मारग पन्थ निहारै टाढ़ी । विरह सँताप हियेँ दौं डाढ़ी ॥५
 ऊमै^६ होइ^७ मग जोवइ^८ वाला, खिनखिन बारम्बार^९ ।
 जिमि जल कूपहि विछुरे, रोवइ धारहि धार^{१०} ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) जाव जु जाई हम सिर आई । २-(बी०) वासुर । ३-(बी०) पूछे ।
 ४-(बी०) पठावै । ५-(बी०) गुन । ६-(बी०) ऊमि । ७-(म०) × । ८-(बी०)
 जोवै । ९-(बी०) बाँह पसार । १०-(बी०) धरनी धार ।

टिप्पणी—(५) डाढ़ी-जली ।

३१२

(दिल्ली; एकडला)

अमरबेल चित भयउ वियोगू । सूख गयउ तरुवर बड़ भोगू^१ ॥१
 माली चाँत मूँगे अँवराई^२ । दिन दिन अमरबेल^३ अधिकाई ॥२
 पसरी बेल रूख कुँवलानों । गयेउ सूख^४ रहेउ न पाना ॥३
 विपति परी जो भयउ विछोहू । जिह दिन पिय छाड़ेंउ मन मोहू ॥४
 सम्पति अहै^५ जो कन्त मिलाई । कै को^६ चाह कहै पिय^७ आई ॥५
 सुखिये^८ सम्पति पिय मिलन, विपत विछुड़न^९ वियोग ।
 सम्पति विपति जो हम कहै^{१०}, अउर कहउ कछु लोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१-सोगू । २-चीत मगु अमराई । ३-अमर । ४-तोरि । ५-यहि । ६-कोइ ।
 ७-लै । ८-सखी अे । ९-विचल । १०-कही ।

३१३

(दिल्ली)

सम्पति विपति उहौ फिर आही । और कहूँ एक वृझहि ताही ॥१
 पूछहि सखी कहहु सो काही । यह सेउ अधिक आह र कछु नाही ॥२
 यह सँउ अधिक गँहन औ आऊ । आउ वहै जो विछुर नहिँ पाऊ ॥३
 कठिन वियोग जिह र दिन होई । हम यह कहा अउर कहो कछु कोई ॥४
 हम चित भये गियान घटाई । अउर खोज काकहि कछु जाई ॥५
 कठिन जीवन पै मिलन, कठिन न चद न वियोग ।६
 हम चित मै गियान है, अउर कहो कछु लोग ॥७

३१४

(दिल्ली)

यह सँउ अउर न आह जो कइई । कहै जाई तो अक्क न रहई ॥१
 तुम्ह पिय बात दुबउ फिर कहही । इन्ह वियोग अधिक अउर न अहही ॥२
 तेवरी फिरी न जिउ आही । सो गयउ जिय बास न जाई ॥ ३
 धार अकार गा तुम्ह पीऊ । पाउ न बैस तिरी यह सेऊ ॥४
 सखी र सगुन ना होइ पिउ आही । रहेउ छाइ पिउ बगतों र काही ॥५
 सारे अंग समाइ न मारे, पंचवान सर लाग ।६
 जग जोवन दोइ पंच वियापहि, दोइ लै अहै जो भाग ॥७
 टिप्पणी—(१) अक्क—अवाक् ।

३१५

(दिल्ली)

जोग जाउ हम पै किंह कीन्हा । सरपसात हिय पिंजर लीन्हा ॥१
 घर कै दिपक उजारेउ नाहाँ । ऊ र बसायसि पिंजर माहाँ ॥२
 पागेउ हिया दोउ दिसि काँची । दोइ पै रहै जो वेदन साँची ॥३
 सूरज तपै कँवल दिन जरै । पति विनु सुरुजरैन जस करै ॥४
 बदन सुख साँवर होइ रहा । दिनयर सब कँवल कर गहा ॥५
 सूर न कँवल निकराई, होइह कुल कर हानि ।६
 जोवन क्या तिह जान दइ, तूँ जनि छाड़हु कानि ॥७
 टिप्पणी—(५) साँवर—साँवला; काला । दिनयर—दिनकर, सूर्य ।

३१६

(दिल्ली)

साई बसत आउ हम पासा । सर दही अब निकसै साँसा ॥१
 जीउ अब आइ अधर होइ रहा । सर निकन्दी दिन र हम दहा ॥२
 करव काह लै मुएँ जो आवइ । जियतँ विलंबहि गिय लै लावइ ॥३
 बरिस नाँह पुरइन कुँबलानी । जियइ न जबलग बरसै पानी ॥४
 गहरें मेघ होइ बरसहु आई । रामाँ अधिक बियोग सताई ॥५
 साँस आइ अधरहि होइ रही, अबहूँ न आवहि साँई ॥६
 पुरइन कुण्ड निकुण्ड कै, फुनि बरसेउ तो काँई ॥७

टिप्पणी—(१) साई—स्वामी ।

(२) करव—करँगी । विलंबहि—विलास करे ।

(५) रामाँ—रमणी ।

३१७

(दिल्ली; मनेर)

ऊँच उतंग भवन एक आहा । रुपमनि तिह चढ़ि मारग चाहा ॥१
 ऊँचै पन्य निहारत अही । मान अहा एक देखत रही ॥२
 वह मँह कँवल मुकुन्द बहु आही । ऊँ संख्या जनु देखत रही ॥३
 कहँहु बचा हम जो केउ अही । रैन आइ ससि थिर होइ रही ॥४
 बिछुरे मिले जो आउत आहै । जीउ भरमानेउ^३ चिन्ता गहै ॥५
 कहहि एक ससि अथयै^४ पिप^५ हिय^६, दूसर कित^७ हँ आइ ।
 जो पिप ससि बाहर होइहि, होइहि नखत सुहाई ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

१—चाहुत अहा । २—भरमान । ३—जो देखत रहा । ४—अथयेउ । ५—६ × ।
 ७—हुत । ८—(दि०) दुहो गह जननि ।

टिप्पणी—(१) उतंग—उत्तुंग; ऊँचा ।

(२) ऊँचै—उचक-उचककर ।

३१८

(दिल्ली; मनेर)

देखत वह^१ जो निरख निहारी । उरहि हार तारे हँहि^२ भारी ।
 [जिय] मँह कहहि विहरहि ससि आही । बिहरे बहुरि मिलत हिय^३ जाही ॥२

कँवल देखि वह संपुट रहा । लइ विकास जो चाहुत रहा ॥३
कुन्दन सम्पुट जो बाँधे चही । देख चाँद किह भूली रही ॥४
अस रूप हम सुनेउ न काऊँ । आछर सम किमि होइ न ताहू ॥५
अस रामाँ पिय मग कौ, कियेउ चाह औराँह ॥६
यह पिय पन्थ निहारे ठाढ़ी, ऊँमै कर कर बाँह ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१—जो वह । २—तारि तिह । ३—मिलिहँ किह । ४—अहा । ५—मुकुन्द । ६—X ।
७—काहू । ८—अस सरूप । ९—पेमै किये । १०—X ।

टिप्पणी—(६) औराँह—दूसरेका ।

(७) ठाढ़ी—खड़ी होकर ।

३१९

(दिल्ली; मनेर)

देखत एक आउ बनजारा । कहा दुकन्त नहिँ आउ उबारा ॥१
उतरेउ आइ सरोदक तीरा । देख सुझर औ निरमर' नीरा ॥२
रुपमनि मानुस पठयो जाई । पूछसि' कवन देस कर आही ॥३
मानुस आयउ नायक ठाऊँ । पूछसि नायक का तुम्ह' नाऊँ ॥४
देस कवन' सँउ लादेउ टाँडा । कवन देस' कँह मारग खाँडा ॥५
चन्द्रगिरि' सँउ लादेउ टाँडा, जइहाँ कंचन देस । ६
गनपत देउ क बाँभन' पुरोहित, लादेउ तिन्ह क सँदेस ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१—निरमळ । २—जाही । ३—पूछो । ४—तिह । ५—कवन देस । ६—दीप ।
७—चन्द्रा गिरि । ८—X ।

टिप्पणी—(२) सरोदक—सरोवर; तालाब ।

(५) टाँडा—व्यापार सामग्रीसे लदा बेलेंका समूह; कारवाँ ।

३२०

(दिल्ली; मनेर)

कंचनपुर का सुनसि जो नाँऊ । कहिसि चलहु रुपमनि कर' टाँऊ ॥१
रुपमनि राजा कै धिय आही । उहाँ सँदेस कहै कुछ चाही ॥२
बाँभन भेंट कुँवरि कै लिही । आइ जुहार अस कहा वही ॥३
रुपमनि नेगिहिँ पूछसि वाता । नाऊँ काह किह' बोलहि माँता ॥४
मानुस कहा आइ हम आगे । जइहँ कंचन नगर सुभागे ॥५

रानी हम कहँ दूँलभ नाँऊँ, लादेउँ बनिज संदेस । ६
 राजकुँवर जिह देस भुलानाँ, हौँ जइहौँ तिह देस ॥ ७
 पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१-के । २-वहो । ३-के ।

३२१

(दिल्ली; मनेर;)

कुँवर नाँउ सुनि रोवइ नारी । जस गजमोति टूँटि गियमारी ॥ १
 कुवाँ सनाँ जस बिछुरै पानी । आँसु' बहु ढारहि रोवहि' रानी ॥ २
 नायक वैठि सुनहु दुख मोरा । दुख दइ गयउ कुँवर मँहि तोरा ॥ ३
 पितैं बियाहि' बारी हौँ वही । छाड़ि गयेउ चित मोह न गही ॥ ४
 दूसर समो आइ अब लगा । हमहि छाड़ि के गयउ सुभागा ॥ ५
 पावस उर' घन गजेउ, हम तन काम सँदेह । ६
 दूँलभ कहियहु कन्त' सँउ, किमि न मुँकै' नेह ॥ ७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१-तस । २-रोए । ३-बियाही । ४-उरद । ५-पिय । ६-मुकेउ ।

टिप्पणी—(१)—गियमारी-गले की माला ।

(२) सनाँ-से ।

(४) बारि-बाला; युवती ।

(५) समो-समय, वर्ष ।

(७) मुँके-(मोकै) मेरा ।

३२२

(दिल्ली; मनेर)

फुनि सावन आयउ हरियारा' । पुहुमि हरे विरहा हम जारा ॥ १
 धरती हरख चीर जनु पहरिा । विरहा सेज हम दुख गहरा ॥ २
 निसि दूभर मुहि' पिय विनु लगै । नारी नैन फुनि' जिउ भागै ॥ ३
 जिउ हिंडोल भयउ तरुनिह केरा । विरह झुलाइ देइ सै बेरा' ॥ ४
 जलहर जगत रहा भर पूरी । दूँलभ मरौँ आस लै झूरी ॥ ५
 पावस काल विदेस पिउ, हौँ तरुनी कुल सुद्ध । ६
 सरंग सिंघ कै' सबद सुनि कहँ, जिउ मरत' हिय मद्ध ॥ ७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१-हरीरा । २-मोहि । ३-नाहँ पिय नैन बहै । ४-महि घेरा । ५-सिंघद । ६-मर ।

टिप्पणी—(३) दूभर—कठिन ।

(४) हिंडोल—झूला । तरुनिह—तरुणीका । सै—सौ । बेरा—वार ।

(५) झूरी—कोरा; छूछा, छटा ।

३२३

(दिल्ली; मनेर)

भादों सघन धार वरसाई । बीजु लवइ आघर' होइ जाई ॥ १
 निसि अँधियारी भरम डर भारो । हिय दरकै हौं कन्त विसारी ॥ २
 पीउ न आह जिह सरन लुकाऊँ । सेज भुअंगम फुरे डराऊँ ॥ ३
 दादुर ररै' औ मोर पुकारा । जिउ निकसै अब खिन न सँभारा ॥ ४
 जीऊ पपीहा चल मघा सरेखा । टूँलभ कहहु जोर तुम्ह देखा ॥ ५
 लोयन गंग तरंग भइ,^१ सेज भई खर नाउ । ६
 करिया गुन बिन डूवाँ,^५ कन्त पहिलै आउ ॥ ७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१—अन्ध फिर । २—ररै । ३—भयउ । ४ डूमों ।

टिप्पणी—(१) बीजु—विजली । लवइ—चमकती है । आघर—अन्धा ।

(२) दरकै—कसक उटै ।

(४) दादुर—मेढक ।

(५) मघा—मघा नक्षत्र । सरेखा—श्रेष्ठ ।

(६) करिया—नाविक । गुन—रस्सी ।

३२४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

आसिन दरस काँस बन फूले । खिंडरिज' आये सारस बोले ॥ १
 उवै अगस्त घटा^१ जग नीरू^१ । हौं भरि गाँग' न पायउँ^१ तीरू ॥ २
 तिह ऊपर विरहा भौ^१ हाथी । करज' झकोर कहाँ पिउ' साथी ॥ ३
 गरजत घन पिउ उरहिं छिपायउँ^१ । सेज सून हौ भरम डरायउँ^{१०} ॥ ४
 जो डर डरेउ'^१ भयेउ'^१ निरजासी । ममँता बिन कया विधाँसी ॥ ५
 कुंजर विरह सरीर बन, दलै विधासै^१ खाइ । ६
 पिय गलगजेउ सिंह होइ, कुंजर विरह पराइ ॥ ७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१—(बी०) खँडरिच । २—(बी०) घटै । ३—(म०) पानी; (बी०) नीरा । ४—(बी०)

गंगा । ५—(बी०) न पाऊँ; (दि०) नेउ नेउ । ६—(बी०) भया । ७—(बी०) गरज ।

८-(बी०) पाऊँ । ९-(म०) छिपावहि; (बी०) छिपाऊँ । १०-(बी०) डराऊँ;
 (म०) सेज भवन किमि फिरी डराऊँ । ११-(बी०) डरी । १२-(म०) होइ;
 (बी०) ऊमि । १३-(बी०) विधंसै । १४-(बी०, म०) गलगजहु ।

टिप्पणी - (१) आसिन-अदिवन, कुँआर । दरस-देखकर ।

- (२) गंग-गंगा ।
 (३) भौ-हुआ ।
 (४) भरम-भ्रम ।
 (५) निरजासी-निराश ।
 (६) कुंजर-हाथी ।

३२५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कातिक सरद रैन' उजियारी । ससि सीतल हौ बिरहै मारी' ॥१
 सेत सुपेती सेज न भावइ । अमिय तेज' ससि विख' वरसा'इ ॥२
 पल दुइ दौ अनन्द' मकु वरसा' । सो हम कँह' दुरजन होइ' दरसा ॥३
 सीतल सेत रैन जग भावइ' । हम्ह' अँघियार पाहु' पिउ' आवइ ॥४
 दुइज पिरिति मुँहि' । हयै समानी । ससि पूनेउ पिय' पिरिति गवानी' ॥५
 मै जानैउ पिउ दुइज' ससि, बढ़हि' पिरिति निमग्ग ॥६
 दूलभ कहहु' कन्त सँउ', पूनेउ' मै हम लग्ग ॥७

पाठान्तर - मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) रैन सरद । २-(म०, बी०) जारी । ३-(म०) तज । ४-(बी०) विष ।
 ५-(म०) अन्ध । ६-(बी०) बलि दै दुवन इन्द मकु रसी । ७-(म०) तिह हम
 लग; (बी०) तेहि लगि हम । ८-(बी०) भै । ९-(बी०) भावै । १०-(बी०, म०)
 हम । ११-(बी०) बाहु । १२ (बी०) पिव । १३-(बी०) द्वैज प्रीति मोहि ।
 १४-(बी०) प्रिय । १५-(म०) घटानी । १६-(बी०) द्वैज । १७-(बी०) बाढ़हि
 प्रीति । १८-(बी०) कहियहु । १९-(बी०) सौं । २०-(बी०) पून्यो ।

टिप्पणी - (२) सेत-श्वेत । सुपेती-विस्तरा । सेज-शय्या ।

- (६) निमग्ग-निमग्न ।
 (७) भै-हो । लग्ग-निकट; पास ।

३२६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अगहन कँहँ जग सीउ जनावा । हँव आइ' पै कन्त न आवा ॥१

दुख बाढ़े उँ निसि सँग किहँ पाई । सुख रँ खीनँ हम दिन बरजाई ॥२
जोवन छाँह निमिख मँह जाइहिँ । गये बार फुनि बहुरि न आइहिँ ॥३
विरहँ तन पण्डुरँ जो हाई । जोगीँ भसम करत है सोई ॥४
आहरँ जरमँ जात है नाँहाँ । विरसु आइ भर जोवन माहाँ ॥५
दूलभ जिमि जल अँजुली, तिमि जोवन कर नेमँ ॥६
खिन खिन गहै जाइ दिन, गहहु नेम क पेमँ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) हँवत आये । २-(बी०) संगत; (म०) संगन । ३-(म०, बी०) रे ।
४-(म०, बी०) खिन । ५-(बी०) जाई । ६-(बी०) आई । ७-(बी०) पंढेरेउ ।
८-(बी०) जोगिनि । ९-(म०) विहर; (बी०) आइर । १०-(बी०) जनम ।
११-(बी०) बरसु आय भर जोबर माहाँ । १२-(म०) जेम; (बी०) जेमु ।
१३-(दि०) गहियइ मुकै नेम कै पेम; (बी०) खन खन खन जाइहि दिन, न कहु
न मुकै पेमु ।

टिप्पणी—(१) सीउ-शीत । हँव-हेमन्त ऋतु ।

(४) पण्डुर-पीला ।

(५) आहर-व्यर्थ । जरम-जन्म । जात है-जा रहा है । विरसु-विलास
करो । जोवन-यौवन । माहाँ-मेरा ।

(६) जिमि-जिस प्रकार । तिमि-तिस प्रकार । नेम-नियम ।

३२७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

दूलभ पूस तुलानेउ आई । पिय वियोग आवसँ र सताँई ॥१
परै तुसार खीर जस जामाँ । सेज हीँउ अरकत है रामाँ ॥२
सेज अकेल कहाँ पिउ पावऊँ । उर कुच भवो पुरुख किह लावऊँ ॥३
जाइ सौर भौ विरह सुपेती । दुहुँ दुरजन बिच भयउँ अचेती ॥४
जीउ अचेत कहु कही न जाई । यहि कहहुँ दूलभ समुझाई ॥५
हारहिँ बीचहिँ सँचरत, अंतर कपट न दियँ ॥६
कर पिय सायर [गहैँ], ते पिय अन्तर किय ॥७

पाठान्तर—१-(म०) औसस; (बी०) असस । २-(बी०) सेज कँवत कर रिहौ रामा ।
३-पाऊँ । ४-(बी०) उर कुच भुव बर गहि गहि लाऊँ । ५-(बी०) मुखहि कहेहु;
(म०) इँह कहँ कहहु । ६-(बी०, म०) हार बीच । ७-(बी०) दीय । ८-(दि०)
गहन; (बी०) गिरि परवत सायर बन धने ।

टिप्पणी—(२) अरकत-कसकता है ।

३२८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अब र माँह^१ आयउ^२ दुख भारी। काह करौं^३ नहिं^४ जाइ सँभारी ॥१
 झरकै पवन मरौं^५ धुधुआई^६। तपौं अकेल^७ जाइ न जाई ॥२
 कपँहि दसन सीउ घन लागै। सूर होइ पिय तपै^८ त^९ भागै ॥३
 तपहु आइ मँहि^{१०} ऊपर नाहाँ। सात पतार जाइ दुख छाँहा^{११} ॥४
 रितु^{१२} बहुरी^{१३} पिय फेरि^{१४} न कीन्हौं। विरह सँताप सेज भरि^{१५} दीन्हौं ॥५
 विरह तुम्हारें^{१६} सुख हरा, जिमि रावन हर सिय। ६
 निसियर पति हनु^{१७} आइ के^{१८}, जस^{१९} रघुनन्दन किय ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) माघ । २-(बी०) आयो । ३-(बी०) करौं । ४-(बी०) दुख नहिं । ५-
 (दि०) धँवाई । ६-(बी०) अकेली; (म०) अकेलें । ७-(बी०) ताप । ८-(म०)
 तबहि; (बी०) तो । ९-(बी०) मोहि । १०-(म०) जहाँ । ११-(म०) पिरित ।
 १२-(बी०) फिरी । १३-(बी०) फेर । १४-(म०) दुख । १५-(बी०) निसि
 हरि हनुपति । १६-(म०) X । १७-(म०) जस कै ।

टिप्पणी—(१) काह—क्या ।

(७) निसियर पति—निशिचर पति; रावण । हनु—हनन करो ।
 रघुनन्दन—राम ।

३२९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

फागुन फाग^१ जगत सब खेला। होरी माँझ मैं र^२ जिउ^३ मेला ॥१
 जरि कै भसम हौं यहि^४ आसा। मकुँहि उड़ाइ^५ जाँउ पिय^६ पासा ॥२
 विरह आइके^७ चाँचरि पारै^८। रकत रोवइ^९ सेदुर रतनारै^{१०} ॥३
 तिह ऊपर सुहि औधि सँतावइ^{११}। आँगन^{१२} सेज मँदिर न भावइ ॥४
 अहर गयेउ^{१३} वसन्त सुहावा। रहेउ छाइ पिउ बिगोतिह काहा^{१४} ॥५
 फाग^{१५} वसन्त सुहावनाँ, यह जोवन मैंमन्त ॥६
 तरुवर पात जो झरि परै, अबहु^{१७} न आयउ^{१८} कन्त ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) फागु । २-(बी०, म०) रे । ३-(बी०) जिव । ४-(म०) नहिं; (बी०)
 होउँ उहि । ५-(बी०) मकहु उड़ाय । ६-(म०) पिउ । ७-(म०, बी०) अस ।
 ८-(बी०) पारी । ९-(म०, बी०) रोई । १०-(बी०) रतनारी । ११-(म०)
 तिह पर और दहि पवन सँताई; (बी०) तेहि ऊपर दहि पौन सतावै । १२-(बी०)

अंगन । १३-(म०) भाई; (बी०) भावै । १४-(बी०) आइ रंग गयो । १५-(म०) रहेउ छाइ पिउ सँवर नहिं आवा; (बी०) रहो छाइ पिउ भयो परावा । १५-(बी०) फगुवा । १७-(बी०) अजहूँ । १८-(बी०) आयो ।

टिप्पणी—(३) औधि—बचन; प्रतिशा ।

(५) बिगोतिह—सौत ।

३३०

(दिल्ली; मनेर;^१ बीकानेर^१)

वैत चहूँ दिसि करहि सँहारा^१ । विरहा ह्रम तन खोइ खोइ^२ जारा ॥१
मौली वनस्पति^३ जग फूला । पिउ मकरन्द और कँह भूला ॥२
काकल^४ फिरि कै पंचम बोला^५ । जावन कली विगस मुँह खोला^६ ॥३
यहौं जरम विरथहिं^७ जाई । आरन^८ जेउँ मालती^९ कुँवलाई ॥४
दरसत परिमल पियै^{१०} विसारी । सदल^{११} सरूप फूली फुलवारी ॥५
भँवर विसार^{१२} न मालती, आँगुन आह न^{१३} कीत । ६
पिय पीरी^{१४} कै बोल रे^{१५}, सौन^{१६} सुनइ^{१७} धरि चीत^{१८} ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) करह सँभारा । २-(बी०) खै खै; (म०) खोर खोर । ३-(बी०) वनस्पती । ४-(म०, बी०) कानन । ५-(बी०) पिक । ६-(बी०) बोली । ७-(बी०) मुख खोली । ८-(म०) एउ । ९-(बी०) निरतहिं । १०-(बी०) अरँन; (म०) अर । ११-(बी०) जँव मालती । १२-(बी०) पियहिं । १३-(बी०) सुदल । १४-(बी०) विहार । १५-(बी०) क । १६-(म०) बौरी; (बी०) बैरी । १७-(बी०) री । १८-(बी०) सुवन । १९-(म०) सुनेउ; (बी०) सुन्यो । २०-(म०, बी०) चीत ।

टिप्पणी—(२) मौली—मुकुलित हुई ।

(३) काकल—कोयल । विगस—विकसित होकर ।

(४) आरन—अरण्य; जंगल ।

(५) कीत—किया ।

३३१

(दिल्ली; बीकानेर)

वैसाखें^१ फर तरुवर लागे । विरसु आइ कन्त सुभागे^२ ॥१
अमिय सुफल^३ राखेउ^४ तुम जोगू^५ । वेग आइ^६ रस मानहु भोगू^७ ॥२

१. इन प्रतियोंमें पंक्ति ४, ५ क्रमशः ५ और ४ हैं ।

अवलँहि मैं राखी अँवराई । अब दुरजन' पँह राखि न जाई ॥३
 विरह सुवा फर चाहै खावा । अब बूतँ नहिं जाइ उड़ावा ॥४
 कव लगे विरह उड़ावों' नाहाँ । अल्प बयस सत रहै नहिं बाहाँ ॥५
 रीस परे वहि नारि लगी, देखि हाथ औराँहि' ।६
 हम पिय' हरख विसारेउ' दीतलि विरह गराहँ' ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-वैसाख । २-सभागे । ३-सुफर । ४-राखे । ५-जोगा । ६-आउ । ७-भोगा ।
 ८-दुरिजन । ९-लगी । १०-उड़ाऊँ । ११-अल्प बयसि सुत रहेउ न बाहाँ ।
 १२-देखिसि बाँह ओरहाइ । १३-पिउ । १४-विसारी । १५-हँकराइ ।

टिप्पणी—(४) सुवा-शुक; तोता । बूतँ-शक्ति ।

३३२

(दिल्ली; बीकानेर)

जेठ मांस सुरज' दौं लाई' । लोवँ लवँहि जनु आग जराई' ।१
 तपै पचास' बरहि' अंगारा । तिह' पर मदन' तवै विकरारा ॥२
 सुरज सनाँ' [कंचु] औ चीरू' । काम दगध अति' विकल सरीरू' ॥३
 पिय सीतल आवहु हम पासा । तपत' जाइ खँडवान पियासा ॥४
 गिर मलया होइ' आवहु नाहाँ । गिरखम' जरत करहु मुहि' छाहाँ ॥५
 दूलभ कहियहु कन्त सँउ, उनै आउ धनयट्ट' ।६
 नाहुत' सूर विरह मुहि', दुरजन' जारि कराहि दहिघट्ट' ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-सुरिज । २-लावै । लोइन लावहि जो आगि जरावै । ४-बज्रसिनि । ५-परै ।
 ६-तेहि । ७-मन्दिर । ८-सनेहा । ९-(दि०) कचू; (वी०) कुचु । १०-चौर ।
 ११-दगधि औ । १२-सरीर । १३-पियत । १४-होइ मलयागिरि । १५-
 ग्रीषम । १६-हम । १७-गजघट्ट । १८ नातर । १९-मोहि जारिहि । २०-X ।
 २१-दहघट्ट ।

टिप्पणी—(५) गिरिमलया-मलयागिरि; चन्दन । गिरखम-ग्रीषम ।

(६) उनै-धिर । घट्ट-समूह ।

(७) नाहुत-नहीं तो ।

३३३

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

[गरजत]' गगन असाढ़ जनावा । कुँजर जूह मेघ होइ आवा ॥१
 चहुँ जग' उनै बीज चमकाई । पिय' सँवरहुँ पावस रितु आई ॥२

ऊखम रितु बन जारेउ आई^१ । हम पिउ फुनि^२ परदेसहिं छाई ॥३
 मारग रहा पन्थ न चलाई^३ । अब जीउ घरी न धीर बंधाई^४ ॥४
 मारग चलत न आयउ^५ नाहौं । अब जलहर छायेउ^६ जग माहौं ॥५
 दूलभ सावन लाग फिर^७, औ^८ जग जलहर भर बाँह^९ ।
 सुरपति-बाहन भानु^{१०}-सुत^{११}, मिल कियेउ रौराँह^{१२} ॥६

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१—(दि०) गजत; (म०) गजम; (बी०) जगमहँ । २—(बी०) दिसि । ३—(बी०)
 पिउ । ४—(बी०) औ खमुरचु बनिजारे आये । ५—(बी०) पुनि पिउ । ६—(म०)
 नहिं पंथ; (बी०) न पंथ । ७—(बी०) धराई । ८—(बी०) आयो । ९—(बी०)
 छायेउ । १०—(म०) फिर लाग; (बी०) फिर लगा । ११—(म०) अरु । १२—(म०)
 आह । १३—(बी०) भान । १४—(म०) पति । १५—(म०) मिलि कपोल अरु
 बाँह; (बी०) मिलि कपोल रु बाँह ।

टिप्पणी—(१) कुंजर जूह—कुंजर जूथ; हाथियों का समूह ।

३३४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

मैं तुम्ह आगं सब दुख टेरा । भरि गंग बूड़ेउ^१ लाउ को तीरा^२ ॥१
 पिये^३ गुनवन्ती^४ गुन दै तोरी^५ । परी नाउ भरि^६ गंग^७ मँह मोरी ॥२
 तीर न लागै बिन गुनधारा^८ । करिया^९ कहाँ जो टेकि सँभारा ॥३
 अब रै कुण्ड गहिरे मँह परी । बेग आउ^{१०} सब जलहर भरी ॥४
 नेह क सायर अति अवगाहा^{११} । बोहित बूड़ न पावहिं^{१२} थाहा ॥५
 यह दुख पेमहिं^{१३} संग रहौं^{१४}, खिन बिन सुख कै^{१५} हानि ।
 सायर नेह अमोघ जल, बड़ पन्थिह तुमहिं जानि^{१६} ॥६

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१—(बी०) बूड़ि । २—(बी०) को लावै तीरा; (म०) न लागेउ तीरा । ३—(बी०)
 जिय । ४—(बी०) गुनवन्तै । ५—(बी०) टोरी । ६—(बी०) गहिरे । ७—(बी०) × ।
 ८—(बी०) कंडहारा । ९—(बी०) करिय । १०—(बी०) आव । ११—(बी०)
 औगाह । १२—(बी०) बूड़े न पावै । १३—(बी०) हम नहिं । १४—(बी०) रख्यो ।
 १५—(बी०) की । १६—(म०) औ बड़ पन्थिह मान; (बी०) विधि मुयेहि पै जानि ।

टिप्पणी—गुनवन्ती—रस्सी धारण करनेवाला नाविक । गुन—रस्सी ।

(३) गुनधारा—रस्सी पकड़नेवाला मल्लाह । करिया—पतवार सभालनेवाला
 नाविक ।

(६) अवगाहा—अगाध । बोहित—नाव ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ३-४ क्रमशः ४ और ३ है ।

३३५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

देख नायक बनिज चलावा । दन्द उदेक उचाट लदावा ॥१
 विरह विऊग संताप जो लीन्हा ॥ दुख रुपमनि खांडो भर दीन्हा ॥२
 औ मिरगावति कंह अस कहा । ताहि वा सरन छाड़ पिउ गहा ॥३
 देखि बूझहु तुम्ह हिय सामा ॥ पीउ न सेज कस बेदन रामा ॥४
 बेदन दीह जाइ नहि सही । कांम दगध चूनां हाइ रही ॥५
 करवट सीस दइ कोउ सहे, यह दुख बहुत हमाँह ॥६
 तिरिया यह नहि सहि सकै, पिय निरखै औराँह ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) संताप वियोग । २-(बी०) दीन्हा । ३-(बी०) रुकमिनि । ४-(बी०)
 लीन्हा । ५-(बी०) सौं । ६-(म०) तो । ७-(बी०) परसन । ८-(बी०) बूझि ।
 ९-(बी०) तुम । १०-(बी०) अहौ । ११-(बी०) समाना; (म०) समान । १२-
 (बी०) पिउ नहिं सेज जीवै न तिमि रामा । १३-(म०) दीस; (बी०) दिहेहु ।
 १४-(म०) चून । १५-(बी०) दही । १६-(म०) देइ जो कोई; (बी०) देइ
 कोई । १७-(बी०) सहिये; (म०)-X । १८-(बी०) हमाँहि; (म०) यह सह
 जाइ हमाँह । १९-(म०, बी०) नहिं यह । २०-(म०) पिउ देखै; (बी०)
 न कहै ।

टिप्पणी—(१) दन्द-द्वन्द । उदेक-उद्रेक । उचाट-खिन्नता ।

(३) वा-है ।

(६) करवट-करपात्र; आरा ।

(७) निरखै-देखै । औराँह-दूसरे को ।

३३६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

सँखा जिह दूभर निसि होई । सेज गवेश नानद न सोई ॥१
 औ चकोर कंह जिउ निकराई । निमिख निमिख जुगजुग वर जाई ॥२
 यह दुख वरसि क आइ तुलानाँ । अब न रहहि घट जाहि पराना ॥३
 नव तिय देखहि आदरस खाई । मरिहों तिह परहत्यै लगगई ॥४
 दई क डर चित करहु विचारी । हत्या निवहें किये हुत भारी ॥५
 हिया न समुझै वाउरेउ, जिह समुझावउं चित ॥६
 देखन चाहों पिय कंह, लोह रोवाँ नित ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) सँखा जन जिह विखुरे होई; (बी०) सखा जन जौ दूभर होई । २-(बी०) सेज के ओछे नींद नहिं खोई; (म०) होई । ३-(म०) जोन कराई; (बी०) जोन्ह कराई । ४-(बी०) निमिख निमिख मँह जुग जुग जाई । ५-(बी०) आय । ६-(बी०) तरुनी देखि । ७-(म०) अदारसि । ८-(बी०) कहई । ९-(बी०) मरिहौं तोहि परहत्या लाई । १०-(बी०) दइव । ११-(म०) विरह किये । १२-(बी०) हत्या चढ़िहि गऊ झुत भारी । १३-(बी०) बाउर । १४-(म०, बी०) जो । १५-(बी०) समझाऊँ । १६-(म०) चाही; (बी०) । चाहै । १७-(बी०) पिउ । १८-(म०) रोवइ; (बी०) रोवैं ।

३३७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

बरद^१ सहस एक^२ भयउ^३ सँदेमा । नायक लादि चलेउ^४ वँह^५ देसा ॥१
राजकुँवर जिह^६ देस लुमाना^७ । तिह र^८ देस कर किहसि^९ पयाना ॥२
मारग पूँछि लिहिमि वह जाई । कुँवर बाट जिह गयेउ^{१०} सो पाई ॥३
वह र^{११} बाट सब हाँकिसि टाँडा । रुपनि^{१२} विरह अगिनि^{१३} कर खाँडा ॥४
आगै भा वह विरह चलाई । पाछै टाँड^{१४} चला सब जाई ॥५
कटक बहुत विरहै संग, बाट न छेडै कोइ^{१५} ।
दानीं दान जो माँगें [आवइ],^{१६} जर भँसमन्त सो होइ^{१७} ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) वरध । २-(म०, बी०) दस । ३-(बी०) भयो । ४-(म०) चला; (बी०) चलेव । ५-(म०) वहि; (बी०) तेहि । ६-(बी०) जेहि । ७-(बी०) लोमाना । ८-(बी०) तेहिरे । ९-(बी०) किहेसि । १०-(बी०) गयेव । ११-(म०, बी०) रे । १२-(बी०) रुकुमनि । १३-(म०, बी०) आग । १४-(बी०) टाँडा । १५-(बी०) छेकै कोय । १६-(दि०) × । १७ (बी०) होय ।

टिप्पणी—(१) बरद—बैल ।

(२) पयाना—प्रयाण; गमन; यात्रा ।

(७) दानीं—दान माँगनेवाले; भिलारी ।

३३८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

घर^१ तन बन सब जारत चला^२ । आगें परे सोइ^३ सब जला ॥१
समुँद एक आयउ बन तीरा^४ । विरह आग वह जनत सरीरा^५ ॥२

फुनि^१ कजली^२ बन आगै^३ आवा । काँम आग^४ सेउँ उहौं जलावा^५ ॥३
 वहै गढ़रिया हुत वहि^६ ठाँऊँ^७ । पूछा उन्ह रे^८ कहा^९ तिह^{१०} नाऊँ ॥४
 गाँव ठाँव आहै^{११} ईह^{१२} कोई । कहाँ रबहु तूँ पूछहुँ कहु सोई^{१३} ॥५
 कंचनपुर^{१४} कै वाट जिह र^{१५} दिसि, ^{१६} तिह^{१७} मारग हम लाउ^{१८} । ६
 कै जोजन आहै^{१९} इहवाँ हुत, पूछौं कहु सु भाउ^{२०} ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१—(म०) गिरि । २—(बी०) घर बन तीर जरत सब चला । ३—(म०, बी०)
 सो रे । ४—(बी०) आये बढ़वानी । ५—(म०) विरह लग दहहि जरत सरीरा;
 (बी०) विरह कि आगि सुखानेउ पानी । ६—(बी०) पुनि । ७—(बी०) कदली ।
 ८—(बी०) अगिनि । ९—(म०, बी०) वहौ जरावा । १०—(बी०) वोहि । ११—
 (दि०) ठाँई । १२—(बी०) इनहि । १३—(म०, बी०) काह । १४—(बी०) तुम्ह ।
 १५—(बी०) × । १६—(बी०) ईहवा नहि; (म०) ईह न । १७—(म०, बी०)
 कहाँ रहहु तूँ इकसर होई । १८—(दि०) कंचपुर । १९—बी० जेहि । २०—(बी०)
 मारग; (म०) कंचनपुर गै जिह दिसि । २१—(बी०) तेहि । २२—(बी०) तेहि
 हम कहँ लाउ । २३—(म०) है । २४—(म०) सत भाउ; (बी०) कै जो अहइ
 जन इहाँ हुतै, तेहि तो पूछौ सति भाउ ।

टिप्पणी—(७) इहवाँ हुत—यहाँ से ।

३३९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कंचनपुर जोजन सौ आही । जोगीउ एक गयेउ वह जाही^१ ॥१
 दिन दुइ तीन आहा^२ घर मोरौं^३ । पहुनाई कोनों कर जोरौं^४ ॥२
 भेंट^५ भुगुति मैं वह कहँ^६ कीती^७ । जोगी केरि यहै^८ मँद रीती ॥३
 एक दिवस हौं सुवत आहा^९ । साँठ लिहिसि औ आँखिउ दहा^{१०} ॥४
 साँठ वस्तु^{११} भल जो कछु पाइसि^{१२} । लइके^{१३} भाग न फेरि^{१४} दिखाइसि^{१५} ॥५
 जोगी जात कितधिन आहै^{१६}, जो बोरे घिउ^{१७} खाँड । ६
 आपुन होय न कैसहुँ^{१८}, ताकर^{१९} मारै विसहँ काँड ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१—(बी०) जोगियो एक गयो वहि चाही । २—(म०, बी०) रहा । ३—(बी०)
 मोरे । ४—(म०) बहु पहुनाइ कियेउ कर जोगे; (बी०) पहुनाई कियोँ दुवौ कर
 जोरे । ५—(बी०) जेत । ६—(म०) कै । ७—(बी०) वोहि की कीतिसि । ८—(म०)
 जोगी जात आह । ९—(बी०) मैं सोवत अहा । १०—(म०) दाहा । ११—(बी०)
 लीन । १२—(बी०) पाइस; (म०) पास । १३—(बी०) लैके । १४—(बी०) बहुर ।

१५-(म०) देखास; (बी०) देखाइस । १६-(बी०) अहै । १७-(बी०) बोरिये
घी । १८-(बी०) कैसेहु । १९-(म०) ताखर; (बी०) X ।

टिप्पणी—(१) जाही-जगह ।

(४) सुवत-सोता । आहा-था ।

(६) बोरे-हुवोये । घिड-घी । खाँड-चीनी ।

(७) ताकर-उसका ।

३४०

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

बात कहिसि फुनि पन्थ देखावा । मारग यहै लोग सब आवा ॥१
वहै बाट बरदै हँकवाई^१ । जो र गड़रिये बाट दिखाई^२ ॥२
माँस यक दूसरे मग घटाना^३ । नगर कंचनपुर आई तुलाना ॥३
उतरेउ^४ आई एक अंबराई^५ । अपुरुब नारा पोखर वाई ॥४
नगर सुहावन देखत भावा । लोग उत्तिउँ^६ मुख बचन सुहावा^७ ॥५
लोगहि^८ पूछसि बात नगर कै, राजा इहाँ^९ को आह ॥६
राजकुँवर अहै^{१०} इँह^{११} राजा, मिरगावति^{१२} धनि ताँह ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) सम । २-(बी०) बोहि बाट सब बरदी हँकरावा । १-(बी०)
देखाये । ४-(म०, बी०) बाट । ५-(म०) घटाई; (बी०) खुटाना । ६-(बी०)
आय । ७-(बी०) उतरेव । ८-(बी०) तारा । ९-(बी०) पाई । १०-(बी०)
उत्तिम । ११-(म०, बी०) सुनावा । १२-(बी०) लोगन । १३-(बी०) इँह
राजा । १४-(म०) है; (बी०) इहाँ । १५-(म०) X; (बी०) आहें । १६-
(बी०) मिरगावती ।

टिप्पणी—(४) नारा-नाला । पोखर-तालाव । बाई-बापी, कुँआ ।

(५) उत्तिउँ-उत्तम ।

(७) धनि-पत्नी । ताँह-उसकी ।

३४१

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

राजकुँवर कर सुनसि जो नाँऊं । औ मिरगावती है वहि ठाँऊं ॥१
कहिसि दर्या^१ भल भयउ गुसाँई^२ । दोउ सुनेउँ वारे^३ एक ठाँई ॥२
जिह लागि आयउ पायउ^४ सोई । मोर जनाउ^५ किह^६ र^७ विधि होई ॥३
मारग कुसल जै विधि कीन्हीं^८ । सो र^९ मिराईहि^{१०} होइहि चीन्हीं^{११} ॥४

भागवन्त अब लग सन्देह^{१४} । जिह घर खाँड सो पाउँ^{१५} मछेह ॥५
 उँहहि^{१६} राजपूत आह सुलाखन,^{१७} इन्ह पँह^{१८} दइ दइ^{१९} राज ॥६
 सिरिवन्त कहँ कोदो^{२०} अबला^{२१}, दिन दस भलहि^{२२} विराज ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) वोहि । २-(बी०) दइव । ३-(बी०) भयेव गोसाईं । ४-(बी०) इनौ
 बर आहै । ५-(बी०) जेहि लगि आयो पायेंव । ६-(म०) जनावन; (बी०)
 चिन्हावन । ७-(बी०) केहि । ८-(बी०) रे; (म०) × । ९-(म०) जिह र; (बी०)
 जेहि रे । १०-(बी०) कीन्हा । ११-(म०, बी०) सोइ । १२-(बी०) मिराय ।
 १३-(बी०) चीन्हा । १४-(बी०) भागवन्त कह अपदस देहू । १५-(बी०)
 पाव । १६-(म०) ईहवहि; (बी०) वहौ । १७-(बी०)-सुलखन । १८-(म०)
 ईहँहि । १९-(बी०) यह फुनि दइव दीन्ह । (म०) करो । २१-(बी०) मिरगावति
 कहँ क्रत अपदस । २२-(बी०) भयेव ।

टिप्पणी—(३) जनाउ-सूचना ।

३४२

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कंचनपुर जो आहे बैपारी^१ । सुनतहि टाँड एक आयउ^२ भारी ॥१
 कहहिं जाके^३ वनिज विसाही^४ । लइके^५ चलहु जो र^६ कछु चाही^७ ॥२
 मिलिके^८ सब आये बैपारी^९ । भेंट घाँट कै बैठि^{१०} जुहारी^{११} ॥३
 फुनि^{१२} कछु^{१३} लइ दइ कै चाली । कहहिं तो कोउ^{१४} करै विस्थाली^{१५} ॥४
 एकहि ठाँइ^{१६} वनिज हम देहू । माझी कहै^{१७} सो हम सेउ^{१८} लेहू ॥५
 हँस बोला अस नायक उन्ह^{१९} सेउ^{२०}, तुम्ह कहँ दई^{२१} न जाइ ।६
 यह र^{२२} वनिज तो पै^{२३} वनिजां, जो आपुहि^{२४} आवइ^{२५} राइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) × । २-(बी०) अहे व्यौपारी । ३-(बी०) सुनिन्ह टाँडा आयेव एक ।
 ४-(म०) जाइके । ५-(बी०) चलहु लेंय जो रे किछु चाहियै । ६-(म०) लेइ ।
 ७-(म०) रे । ८-(बी०) कहिन्हि जायकै वनिज विसहियै । ९-(बी०) मिलकै ।
 १०-(बी०) व्यौपारी । ११-(बी०) बैठ । १२-(म०, बी०) जोहारी । १३-(बी०)
 पुनि । १४-(म०, बी०) उन्ह । १५-(म०) कोई । १६-(बी०) कहिन्हि कोरे
 करै विसठाली । १७-(बी०, म०) टाँउ । १८-(बी०) चाहि १९-(बी०) हमसे ।
 २०-(बी०, म०) × । २१-(बी०) देइ; (म०) देउ । २२-(बी०, म०) रे ।
 २३-(म०, बी०) हौं । २४-(म०, बी०) ईह । २५-(बी०) आवै ।

टिप्पणी—(२) वनिज-व्यापारकी वस्तु । विसाही-खरीद करें ।

- (३) भेंट-घाट—(भोजपुरी मुहावरा) मिलना-जुलना ।
 (४) लइदइ—लेन-देन की बात । कै—का । चाली—बात आरम्भ की ।
 (५) माँझी—मूल्य निर्धारित करनेवाला मध्यस्थ ।
 (७) पै—लेकिन ।

३४३

(दिल्ली; मनेर; एकडला; बीकानेर)

वैपारिहँ^१ रे सुनी यह बाता । नायक वाउर कै मतमाता ॥१
 वाउर नायक राइ^२ बुलावा^३ । ठाकुर तुरिय लै आगे^४ आवा ॥२
 बनजारे सँउ^५ काह दुवारी^६ । राजा जिह लग आवइ^७ भारी ॥३
 यह कहि सब बहुरे^८ वैपारी^९ । आपुन आपुन लागि दुँवारी^{१०} ॥४
 चलत बात^{११} राजा पहुँ गई । बनजार^{१२} एक अइस^{१३} बोलाई ॥५
 ठकुरहि^{१४} कै अस अहै^{१५} कथा^{१६}, अचरज^{१७} सुनहु हँकार^{१८} ।
 वँह रे बनज का आहै^{१९} अपुरुब, जिह^{२०} लग हमहिं दवार^{२१} ॥७

पाठान्तर—मनेर, एकडला और बीकानेर प्रति ।

१—(ए०) [वै] पारिह । २—(ए०) राव; (बी०) राय । ३—(ए०, म०, बी०)
 बोलावा । ४—(म०) लै; (ए०, बी०) लेए पै । ५—(ए०, बी०) सौ । ६—(म०)
 दँवारी; (ए०, बी०) डँवारी । ७—(ए०) जेहि लागि आएव; (बी०) जेहि
 लागि आवै । ८—(ए०) बहुरे सब । ९—(ए०) आपन आपन लग डँवारी; (बी०)
 आपन आपन कहु लगे डँवारी । १०—(ए०) चलत । ११—(म०) बनजारा ।
 १२—(म०) आउ अस है; (बी०, ए०) औस । १३—(ए०, बी०) ठकुरन्ह । १४—
 (म०) आहै । १५—(ए०) कथा । १६—(ए०) अचर; (बी०) अचरज कसथा ।
 १७—(ए०) हँकारि । १८—(म०) अहै । १९—(ए०, बी०) जेहि । २०—(म०)
 दँवार; (ए०) डवारि; (बी०) डँवारि ।

टिप्पणी—(१) वाउर—बावला ।

३४४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर;)

धावन^१ एक जनाँ सो धाये^२ । चलु^३ नायक तुम्ह राय बुलाये^४ ॥१
 कहिसि ठाढ़ तूँ खिन एक होई^५ । भेंट लेव^६ संग आवों तोही ॥२
 जौ लग ई र^७ बार हुत ठाढ़ी^८ । तौलहि तिलक दुआदस काड़ी ॥३
 धोती पहिरि जनेउ जो देई^९ । पतरी पौ काँख पौथी लै सेई^{१०} ॥४
 जिह मँह बारह मास क बाता । छाड़िसि अउर भेस^{११} सै साता ॥५

दन्द उदेक उचाट विरह दुख, बहुत थाल भरि लीन्ह । ६
जिह ठाँ राउ बैठ हुत,^१ इकसर भेंट जाइ कै कीन्ह^१ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१—(बी०, म०) धावत । २—(म०, बी०) धावा । ३—(बी०) चल । ४—(बी०)
तोहि राय बोलावा । ५—(म०, बी०) होही । ६—(म०) लेउँ; (बी०) लेंव । ७—
(बी०) तौ लहि यह रे । ८—(बी०) ठाढ़ा । ९—(बी०) घोती पहिरि पुनि काँध
जनेऊ । १०—(म०) पटली गाँग पोथि लै सेई; (बी०) पहुली काँख पोथी लिहे
सेउ । ११—(म०) सहस । १२—(बी०) जेहि ठाँव राव बैठे हुत । १३—(बी०)
भै इकसर भेंट तहँ जाइ कीन्ह ।

टिप्पणी—(१) धावन—दूत । जनाँ—व्यक्ति ।

(२) ठाढ़—खड़ा ।

(३) तिलक दुआदस—नैष्णव सम्प्रदायके कतिपय लोग बाग्रह तिलक—
मस्तक, नासिका, दोनों कपोल, वक्षस्थल, दोनों भुजा, नाभि, दोनों
जाँघ और पीठके त्रिकूस्थानपर लगते हैं । इस प्रकारके तिलक
लगानेका उल्लेख चन्दायन (४२०।२), पदमावत (४०६।३) और
बीसलदेव रासो (छन्द १०२) में भी हुआ है ।

(४) पतरी—पादत्राण । पौ—पाँव । काँख—बगल ।

(५) इकसर—अकेले ।

३४५

(दिल्ली; बीकानेर)

फुन आसिखा' लागै वह देई । जो कछु बँहभन' बूझी सेई । १
देत आसिख्या' कुँवर जो चीन्हा । घर क पुरोहित चरचै लीन्हा ॥२
कुँवर जो' निरख' नीक कै देखा । दूलभ पण्डित जानु' विसेखा ॥३
फुनि पूछसि पण्डित कर' नाँऊ । नाँव कहउ' औ आपन ठाऊँ ॥४
कहिसि राइ' हम दूलभ' नाऊँ । चन्द्रागिर जो हमारैउ' ठाँऊ ॥५
गनपत देव क'^२ पुरोहित बाँभन,^३ पठयें तुम्हरे पास" । ६
बहु दुख देखत आयउ'^४ मारग, मकु'^५ पूजी मन आस ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१—असीस । २—लागा । ३—बँभनहुँ । ४—असीस । ५—X । ६—नायक । ७—
जनौ । ८—कै । ९—कहौ । १०—राउ । ११—हमारा । १२—कर । १३—X ।
१४—पटपट । १५—बहुत देखि दुख आयँउ । १६—मिलेहु ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ की अर्धालियोंका क्रम १, ४, २, ३ है ।

टिप्पणी — (१) आसिका-आशीर्वचन ।

(२) आसिख्या-आशीर्वचन ।

(३) निरख नीक कै देखा-ध्यानपूर्वक देखा ।

३४६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पिता नाँउ सुनि जिउ घवरावा^१ । फुर कहु दूळंभ^२ पितै^३ पठावा ॥१
अउर^४ इहाँ मुहि काउ न काजा^५ । विनु पठये आँवउँ^६ जिह^७ राजा ॥२
कुसल पिता कै पूछउ^८ तोही । माता कुसल^९ कहहु सब मोही ॥३
अउर^{१०} कुटुंब कै पूछउ^{११} वाता । सब कै कुसल कहहु निरवाता^{१२} ॥४
खेम कुसल सबकै है राया^{१३} । बहुत भेंट तुम्ह कह मन माया^{१४} ॥५
यहि संदेस लिखि पठयै^{१५}, कहहु तो सो सब देंउँ^{१६} ।
जो र कहा उन्ह सो कहु मोसंउ^{१७}, माथ परिछि कै लेउँ^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।

(१) (बी०) गहवरि आवा; (ए०) सीव सुनी गहवरी आवा । २-(ए०) सम ।
३-(बी०) तोहि पिता । ४-(ए०) औरो; (बी०) और । ५-(ए०, बी०) इहाँ
दहु का मोहि काजा । ६-(बी०) जेहि आवों । ७-(ए०, बी०) पूछौं । ८-
(बी०) कुसर । ९-(ए०) दहुँ । १०-(ए०, बी०) और । ११-(ए०, बी०) पूछौं ।
१२-(बी०, ए०) निराता । १३-(ए०) राजा । १४-(ए०) बहुतन्ह वैठि बोलहु
मन माया; (बी०) बहुत तपहिं तुम्ह कहूँ दिन माया । १५-(ए०) ओह संदेस
लिखि पठइन्हि; (बी०) बहु संदेस कहि पठइन्हि । १६-(बी०, ए०) X ।

टिप्पणी — (७) माथ परिछि कै लेउँ—स्नेह की अभिव्यक्तिके निमित्त स्नेहीके सिरपर
विशेष रीतिसे हाथोंकी परिक्रमा ।

३४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पहिले पिता क^१ सुनहु संदेसा । जिह^२ दिन संउ र^३ बलहु^४ परदेसा ॥१
तिह^५ दिन संउ^६ उन्ह^७ छाड़उ राजू । नेगी सबै चलावहिं^८ काजू ॥२
रोवत नैनहिं दिस्टि^९ घटानी^{१०} । अन न खाहि पियहिं नहिं पानी ॥३
औ अस^{११} कहहिं कि कहियहु^{१२} जाई । नदी तीर कर विरिख गिराई^{१३} ॥४
खसैं^{१४} जो आहु^{१५} करिहहु काजा । विरध भयेउँ^{१६} जर छाड़ुं आहा^{१७} ॥५
तुम्ह^{१८} विनु कहहिं^{१९} अस यह आहै^{२०}, जस दिन सूर विहून ।
चाँद तराइन^{२१} विनु निसि^{२२} गहन^{२३}, जगत चहुँ^{२४} दिसि सून ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) कर । २-(ए०, बी०) जेहि । ३-(ए०, बी०) सो रे । ४-(ए०, बी०) चलेहु । ५-(ए०, बी०) तेहि । ६-(ए०, बी०) सैं । ७-(ए०) उन । ८-(ए०, बी०) चलावै । ९-(ए०) आखिनि दीठि; (बी०) आँखिन्ह डीठि । १०-(ए०, बी०) खुटानी । ११-(दि०) आस । १२-(ए०) कहिअवहु; (बी०) कहियौ । १३-(ए०) नदी तीर कै बरगुन आई । १४-(ए०) गये । १५-(ए०) अँहौहु; (बी०) आवहु । १६-(ए०, बी०) भये । १७-(बी०) छाडै चाहा; (ए०) छवौ चाहा । १८-(ए०) तोह; (बी०) तुम । १९-(ए०) कहहि; (बी०) कहेहु । २०-(ए०) अँस मोहि अँहौ; (बी०) अस अँहै मोहि । २१-(ए०, बी०) तरैयन । २२-(ए०) निमु; (बी०) कुल । २३-(ए०, बी०) X । २४-(ए०) चँह ।

टिप्पणी—(५) खसैं-गिरनेपर । आहु-आओ । करिहहु-करोगे । विरध-वृद्ध ।
जर-जड़ ।

(६) बिहुन-बिना ।

३४८

(दिल्ली; एकडला)

जस र' मँदिर चाहै भहराई^१ । वस हों भयउँ देखु मोहि आई ॥१
टेकहु मँदिर खाँभ दइ^२ आई । नाँहुत^३ अबहि परिह भहराई ॥२
चाँद सतायस हों होइ^४ रहा । चाहै खिनक अमावस गहा ॥३
अँजुरि पानि जस^५ जिउँ मोग । बेग आउ मुख देखउँ तोरा ॥४
जियतँ मुख^६ दिखरावहु आई । मुपें रहहि^७ पछताउ^८ न जाई ॥५
यह संदेस तुम्ह दीतन्हि^९, सौँत मन सुन लेहु^{१०} । ६
चित उचाइ^{११} यहि ठाँउँ सँउ^{१२}, सुदिन पयाना देहु^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१-जो रे । २-(दि०) बहराई । ३-मैं भएव । ४-दे । ५-नाहीं तौ । ६-होए मैं ।
७-जैस । ८-देखौं । ९-जियत मोहि । १०-रहे । ११-पछताव । १२-तोह
दीतीन्हि । १३-सौन सुनिअ कै लेहु । १४-उचाव । १५-सैं । १६-पयानेव
देहु ।

टिप्पणी—(१) भहराई-गिरना । वस-वैसी । हों-मैं ।

(२) देवहु-सहारा दो । खाँभ-खम्भा । परिह-पड़ेगा ।

(३) चाँद सतायत-कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीका चाँद ।

(४) अँजुरि-अँजली ।

(६) सौँत-स्थिर ।

३४९

(दिल्ली)

मातें यह सन्देश पठावा । एकहि ठाँउं दुहों गिर आवा ॥१
 अउर सँदेश सुनहु एक भारी । राजकुँअरि जिह विहयहु बारी ॥२
 वहिक सँदेश लेत हिय फाटा । जानु करज कटारिह काटा ॥३
 नगर सुबुध्याँ उतरउँ आई । माँस एक लै गयउ विलाई ॥४
 पूछसि नायक किह हुत आवा । मैं आपुन बोलेउँ सब भावा ॥५
 धाइ पाउ दोइ मोरे धरि क, आइ परी सहराय ॥६
 कहै हियों संग आवाँ तोहे, मोहि ऊपर विस खाइ ॥७

टिप्पणी—(७) हियो—यहाँ भी ।

३५०

(दिल्ली)

गिर परि के राखेउ बोराई । रहहु देवस दस आनों जाई ॥१
 तो यह हम कहँ कहिसि सँदेशा । अइहाँ कार जोगिन कर भेसा ॥२
 विरह वियोग संताप बखानी । पान फूल कछु साथ न मानी ॥३
 दन्द उदेग उचाट सँताई । रोवइ झुरवइ कछु न सुदाई ॥४
 सीस रूख वैं तेल बिसारा । निसि बासर जोवइ तुम्ह बारा ॥५
 जो कोउ पंथी आउ विदेसी, आस लुबुध तिह पूछ ॥६
 माँसा नास रकत न राती, पिंजर रहउ जो छूछ ॥७

टिप्पणी—(५) जोवइ—जोहती है । बारा—रास्ता ।

३५१

(दिल्ली)

सखी सहेलिह बैठहिं आई । बोरावहिं बोराइ न जाई ॥१
 बात कहत तो उतर न देई । खिन खिन मर मर साँसेँ लेई ॥२
 नाच कोड कछु नगर जो होई । सखी मँदिर चढ़ि देखें सोई ॥३
 उवहु बुलावहिं देखहु आई । कहियो देखै तहाँ न जाई ॥४
 पिय बिन अउर न देखों काहू । देखें बोलैं जासँउ लाहू ॥५
 फूटहिं नैन तरक कै, जो देखों औराँह ॥६
 रसना थकेउ है सखी, विनु पिउ बोलाहँ ॥७

टिप्पणी—(४) कहियो—किसी भी दिन ।

३५२

(दिल्ली)

निस वासर यहि भौत गँवावइ । औ बहु दुख मुँह कहत न आवइ ॥१
 दिया भँदिर न जारै काऊ । उजियारै पिय बिन का पाऊ ॥२
 उजियारा कै काह करंजी । पिय बिन जीवन कछु न गुंजी ॥३
 पिय बिन सेज जगत अँधियारा । दिया क जार न होइ उजियारा ॥४
 सखी काउ समुझावइ गई । उतर तिह सहलिह दूरी ॥५

पिय बिन दिया न जारहों, वह अँधियाराहि सुक्ख ॥६
 के उजियार राहै सखी, काकर देखा मुक्ख ॥७
 टिप्पणी—(७) काकर—किसका ।

३५३

(दिल्ली; बाकानेर')

औ बहु दुख कैसहि न घटाहै । देखहु आइ बूझ मन माहीं ॥१
 दौ क मरम पतिह एक जानी । एकाहि देखे सबहि बखानी ॥२
 जो चित होइ सो करै विचारी । तिह सेउ और काउ बुधि भारी ॥३
 कुँवर कहा दूल्भ सुनु बाता । चालहाँ देवस पाँच कै साता ॥४
 इहाँ क' समाँधान^१ कछु कीजै । तो^२ पयान वह देस कहै^३ दीजै ॥५
 महतै लोग बुलाइ^४ कै, करौ इहाँ क समाधान^५ ॥६
 उवइ अगस्त घटै जग पानी, तुरियहि^६ देउँ पलान ॥७
 पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१—औ बहुत दुख मोहि कहै न जाई । २—देखहु बूझि अपने जिय माहीं ।

३—दहु । ४—सुनुहु । ५—देखि । ६—सबै । ७—करहु । ८—तुम्ह । ९—को रे ।

१०—इस पंक्ति का पाठ उपलब्ध नहीं है । १०—इहाँका । ११—समाधान । १३—

तो रे । १४—वहि दिसि दीजै । १५—बोलाइ । १६—समाधान । १७—तुरियन ।

टिप्पणी—(५) समाँधान—व्यवस्था ।

(६) तुरियहि—घोड़ोंको । पलान—जीन ।

३५४

(दिल्ली; बीकानेर)

पी चपटी कछु न सुहाई । बाँभन^१ कहेउ सँदेस जो आई ॥१

१—सम्मेलन संस्करणमें पंक्ति ४ नहीं है । उसमें बीकानेर प्रतिमें केवल ६ पंक्ति होनेकी बात कही गयी है ; किन्तु माताप्रसाद गुप्तका कहना है कि इस प्रतिमें यह पंक्ति है । (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ९०) ।

बहु^१ मरोह मन^२ पिता क^३ आवइ^४ । सुनि^५ सँदेस रुपमनि^६ सत भावइ^७ ॥२
 गयेउ^८ मँदिर मँह पैठेउ जाई^९ । मिरगावति^{१०} सँउ बात चलाई ॥३
 आजु पिता कर मानुस^{११} आवा । कुसल खेम पिताकर^{१२} पावा ॥४
 मातें पितें^{१३} बहुत कै कहा । मी^{१४}बु नियर अब आयउ अहा^{१५} ॥५
 विरध भयहुँ अब आवहु कूसर^{१६}, पँडुर^{१७} भये ते केस । ६
 लोयन दिस्टि घटी न सझै^{१८}, देखु आइ^{१९} हम भेस ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-किल्लु । २-सोहाई । ३-दूलभ । ४-हिये । ५-X । ६-कर । ७-आवे ।
 ८-पुनि । ९-रुकुमिनि । १०-क सतावे । ११-कुँवर । १२-वैठेउ जाई ।
 १४-मिरगावती । १४-बांभन । १५-कुठाव कै । १६-माता पिता । १७-(दि०)
 आहा । १८-त्रिध भयेउ आवहु । १९-पंडर । २०-बुटानी सूझै न । २१-
 आइ देखु ।

टिप्पणी—(२) मरोह-मया, ममता ।

(५) मी^{१४}बु-मृत्यु ।

(६) पँडुर-श्वेत; सफेद ।

३५५

(दिल्ली; बीकानेर)

इह^१ कहि मातें पिते बुलावा^२ । जा तुम्ह कहहु सोइ हम भावा ॥१
 मिरगावती कहा^३ सुनु^४ सामी । तू^५ प्रभुता हो र^६ तुम्ह^७ कामी ॥२
 जो चित मन रुचत^८ तुम्ह^९ द्वाई । जा पिय^{१०} कहहु सर ऊपर साई ॥३
 राइभान कँह^{११} दीजै^{१२} राजू । बिलंब न लाइ कीजै आजू^{१३} ॥४
 सब नेगिह कँह^{१४} कहइ^{१५} बुलाई । जब लगि आउँ ईह^{१६} पितहिं मिली^{१७} ॥५
 काज राज कै सँवारहु^{१८}, जब लग राइभान हँ^{१९} वार । ६
 अलप दिनह^{२०} मँह^{२१} आउब मिलाकै^{२२}, छाड़ि देह जियं धार^{२३} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-यह । २-माता पिता बोलावा । ३-कहै १४-सुनहु तुम । ५-तुम । ६-रे ।
 ७-तुम । ८-चिता । ९-तुम । १०-रे । ११-कहुँ । १२-दीजियै । १३-लाइयै
 गवनियै आजू । १४-कहो । १५-आवहिं । १६-कर सँवरहु । १७-हहि । १८-
 दिवस । १९-महँ फिर । २०-X । २१-छाँड़ि जाहि जीय अधार ।

टिप्पणी (२) प्रभुता-स्वामी । कामी-कर्मि; सेवक; काम करनेवाला ।

१-इस प्रतिमें पंक्ति २-४ क्रमशः ४-३ है ।

(३) रूचत-अच्छा लगता हो ।

(७) अल्प (अल्प)-थोड़ा । भाउब-आऊँगा ।

३५६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चारि वरिस कंचनपुर भये । राजकुँवर कहँ सुख महँ गये ॥१

दोइ पूत मिरगावति जाई ॥ राइभान कह रानि बुलाई ॥२

करनराइ छोटाई कर नाँऊँ । राइभान सेंउ दूसरें टाँऊँ ॥३

राइभान कहँ दीन्हेउँ टीका । आनि भई जस राम कली का ॥४

राघोबंस राम औतरा । जानहु उहै सपूरन करा ॥५

महतै लाग समुँद गै देस क, दाम दई बहु घोर ।

बेगर बेगर सब कहँ कापर, नेत बँधाइ पटोर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।

१-(ए०) सुख सौं राजकुँवर कह गये । २-(ए०, बी०) दुइ रे । ३-(ए०) के

भये; (बी०) जाये । ४-(ए०) रायभान बलराजो ठाये; (बी०) देखत लोयन

जाहि सिराये । ५-(ए०, बी०) छोटे । ६-(ए०, बी०) सौं । ७-(ए०) दूसरी; (बी०)

दूसरी । ८-(बा०) रायभान । ९-(ए०, बी०) दीन्हेव । १०-(बी०) कि लीका ।

११-(ए०) सोन कै करा । १२-(ए०, बी०) समदी कै । १३-(ए०, बी०) × ।

१४-(ए०) दिये; (बी०) दिहे । १५-(ए०) कपरा; (बी०) × । १६-(बी०)

बँधावा; (ए०) बँधाये । १७-(ए०) थोर ।

टिप्पणी—(४) राम कलीका—कलियुगका राम ।

(६) गै-गये । देस क-सारे देशके । दाम-एक सिक्का (देखिये पीछे १४६।५ की टिप्पणी) । घोर-घोड़ा ।

(७) बेगर-बेगर-अलग-अलग । कापर-कपड़ा; वस्त्र । नेत्र-रेशमी वस्त्र । पटोर-सूती वस्त्र ।

३५७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

उवे अगस्त घटा जग पानी । पाखर तुरियाहिं भयउ पलानी ॥१

पँवरि वारि बाहर कै ताना । नगर देस महँ परेउ भँगानाँ ॥२

राजकुँवर चन्द्रगिरि जाई । पूतहि कंचनपुर बैठाई ॥३

आघा राजपाट संग लीन्हा । आघा राइभान कहँ दीन्हा ॥४

१-इन प्रतियोंमें पंक्ति ४-५ क्रमशः ५ और ४ है ।

घाउ^{११} निसान अमर [घहराना*]^{१२} । दर परिगह^{१३} सब साज बुलाना ॥५
सुदिन पूछि बाँभन कहँ, सुघरी^{१४} बाहर मेलेउ^{१५} जाइ ॥६
करनराइ मिरगावति^{१६} रानी^{१७}, ये^{१८} संग लीनहि^{१९} राइ^{२०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति ।

१-ए० X; (बी०) उयेउ । २-(बी०) घटेउ । ३-(ए०) भये; (बी०) भयेव ।
४-(बी०) पवरी; (ए०) X । ५-(ए०) परेव; (बी०) परा । ६-(ए०) X ।
७-(बी०) चन्द्रागिरि । ८-(ए०, बी०) बैसाई । ९-ए० X । १०-(ए०, बी०)
रायभान । ११-(ए०) अ । १२-(दि०) गहराना; (ए०) घरहाना; (बी०) फह-
राना । १३-(ए०) विरगह; (बी०) विग्रह । १४-(ए०) X । १५-(ए०, बी०)
मेलेव । १६-(ए०) मिरगावती । १७-(ए०) X । १८-(ए०) अपने; (बी०) ए ।
१९-(ए०) लीन; (बी०) लिहेसि । २०-(ए०) लाइ; (बी०) लगाई ।

टिप्पणी—(१) उबै-उगे ।

(२) भगाना-भगदड़ ।

(३) घाउ-चोट । निशान-डंका । दर-दल, सेना । परिगह-वासुदेव
शरण अग्रवालने पदमावतमें एक स्थलपर (१२९।८) इसका अर्थ
राजाके ठाट-बाटकी सामग्री—छत्र, चँवर आदि किया है और कहा है
कि इसे परिच्छद भी कहते हैं । अन्यत्र (४९६।८) कहा है कि हिन्दी
परगई (सं० परिग्रह) का एक अर्थ निवास, अन्तःपुर, घर भी है ।
यह अर्थ उनके अनुसार १२९।८ में ठीक बैठता है । किन्तु प्रस्तुत
तथा पदमावतके ४९६।८ के प्रसंगोंको देखते हुए दोनों ही अर्थ संगत
नहीं जान पड़ते । संस्कृत और हिन्दी कोशोंमें परिगह और पतिग्रहका
अर्थ सेनाकी सुरक्षित टुकड़ी अथवा पिछला भाग भी पाया जाता है ।
हमारी समझमें दर-परिगहसे तात्पर्य सेनासे है ।

(६) मेलेउ-निकल पड़ा ।

३५८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति^१ सब सखीं बुलाई^२ । अहीं^३ जहाँ लहि^४ भेटें आई ॥१
भेंटी बहुतें समुंद बहु देई^५ । गिय लाइ कै रोवइ सेई^६ ॥२
दई^७ मिराउ^८ त^९ होइ^{१०} मिरावा^{११} । दूरि देस कहँ चित्त उचावा ॥३
बिछुरीं^{१२} रानी मिलत दुहेला^{१३} । वह^{१४} सुख गा जो एक संग खेला ॥४
जरम सुहागिनि होयहु^{१५} रानी । जब लग गाँग जवन^{१६} मँह^{१७} पानी ॥५
समुँदै सबै सहेली दइके^{१८}, दोमन घर कहँ जाइ^{१९} ॥६
मिरगावति^{२०} अब बिछुरीं हम सँउ^{२१}, मिलहिं कि मिलिहँ नाइ^{२२} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०, बी०) मिरगावती । २-(ए० बी०) बोलाई । ३-(बी०) रही । ४-(बी०) लहु । ५-(ए०) भंटे बेरि समद तेहि देई; (बी०) भंटे जो रे समद तेहि देई । ६-(ए०) सोई; (बी०) गीय लगाय बहु रोवै सोई । ७-(ए०) दैअ; (बी०) दइव जो । ८-(ए०) मेरावै; (बी०) मेरवै । ९-(ए०, बी०) तो । १०-(ए०) होअ । ११-(ए० बी०) मेरावा । १२-(ए० बी०) विदुरत । १३-(ए०) आइ देवस दुहेला । १४-(ए०) उवह । १५-(ए० बी०) सोहागिनी होइहु । १६-(ए०) जौन; (बी०) जमुन । १७-(बी०) × । १८-(ए०) दैके; (बी०) × । १९-(बी०) बहुरि दुमनि मै जाहि; (ए०) है कै बहुरि दुमनि जाहि । २०-(ए०, बी०) मिरगावती । २१-(ए०) हमसे; (बी०) × । २२-(ए०, बी०) नाहि ।

टिप्पणी—(१) भंटे-मिलने ।

(२) संई-वह ।

(३) मिराड-मिलावे । मिरावा-मिलाप ।

(५) गाँग-गंगा । जवन-यमुना ।

(६) दोमन-उदास ।

(७) नाइ-नहीं ।

३५९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा' कछु' साँठो' लेई । बाट घाट कोउ माँग त' देई ॥१
वाँवन कोरि' भँडार लिवावहि' । गाड़िहि' भरि कै साथ चलावहि' ॥२
कंचनपुर सँउ कियउ' पयाना । कोस पाँच एक भयउ' मिलाना ॥३
राइभान' पहुँचावइ' आये । दोउ जनहि' अंको' लै लाये ॥४
कुँवर नैन डवडव' भरि आये । परहि' आँसु जस' मोंति सुहाये ॥५
मिरगावति' रोवइ' गीय लाई', कस कै' जीहो' माइ । ६
राइभान' के विदुरे' खिन एक', मोकँह' जुग वर जाइ' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०) कही । २-(ए०, बी०) कुछु । ३-(बी०) साँठा । ४-(ए०) माँग तो; (बी०) माँगै तेहि । ५-(ए०) कोटि । ६-(ए०) लेवावा; (बी०) लदावा । ७-(बी०) खाडहु । ८-(ए०) माल लेवावा; (बी०) साथ चलावा । ९-(ए०) सौ कीन्ह; (बी०) सौ क्रीय । १०-(ए०) भई; (बी०) भा । ११-(ए०, बी०) राय-भान । १२-(ए०, बी०) पहुँचावै । १३-(ए०, बी०) दुहू जनै आँको । १४-(ए०) डुबिडुबि; (बी०) डवडवाइ । १५-(बी०) चुँवहि । १६-(ए०) जनि । १७-(ए०,

बी०) मिरगावती । १८-(बी०) रोव; (ए०) दुवौ । १९-(ए०, बी०) लाइके ।
२०-(ए०, बी०) कैसे । २१-(बी०) जीऊँ । २२-(ए०) कुँवरान । २३-(ए०)
बिछुरी एक तिल । २४-(ए०, बी०) × । २५-(ए०) पर जाय; (बी०)
भरि जाय ।

टिप्पणी—(१) साँठ-अर्थ, द्रव्य, धन । त-तो ।

(२) कोटि-कोटि, करोड़ ।

(३) मिलाना-पड़ाव ।

३६०

(दिल्ली; बीकानेर')

कुँवर कहा सब लोग बुलाई' । राइभान कै सेउ न चुकाई' ॥१
मोसँउ अधिक ईह कै जानहु' । जो र' कहहि' सो' सब परवानहु' ॥२
महतेँ लोग कँह' कहा गुसाई' । यह तो' रूपमुरारि कै ठाँई ॥३
नेगी हमहिं चलावहिं काजू' । वावन साख' इन्ह कर राजू' ॥४
इनहि के साख पै करहि जुहारू' । इन्ह सेउ' को र और' बड़वारू' ॥५
इहवइ' बात कै चिन्ता' न कीजइ', गवनइ आपुन' देस ।६
ई' राजा हम नेगी जरम क', ई सिर हम ईह केस' ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-बोलाई । २-रायभान कै सेवा न चुकई । ३-मोहि सँउ अधिके जानेहु ।
४-रे । ५-कहै । ६-से । ७-परिवानेहु । ८-महथै लोगन । ९-गोसाई ।
१०-एतौ । ११-काजा । १२-सखा । १३-राजा । १४-औ इन्ह हम करव
जोहारा । १५-सै । १६-और कोरे । १७-बड़वारा । १८-एहि । १९-चिन्ता ।
२०-कीजै । २१-गवनिथै आपने । २२-ए । २३-जनम कै । उन्ह सिर
हम वेस ।

टिप्पणी—(१) सेउ-सेवा । चुकाई-कमी ।

(२) परवानहु-प्रमाणित करना; पूरा करना ।

(६) इहवइ-इस । गवनइ-गमन कीजिये ।

(७) केस-केश; बाल ।

३६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यहि' रे बात कहि वै' बहुरे' । कुँवर पलान माँग' बहु घोरे ॥१
घोरहि' बहुतै चेरि' चढ़ाई । औ बहुतहिं कहँ डाँड फँदाई ॥२
मिरगावति' चौडोल चढ़ाई । फाँद सिंहासन' चढ़ी जो' धाई ॥३

करनराइ^{१०} धाईहि^{११} कै कोरीं^{१२} । दूध पियावत^{१३} चली कचोरीं^{१४} ॥४
 नदी तीर एक^{१५} मेलेउ^{१६} जाई । जाँत पन्थ बहु साथ चलाई^{१७} ॥५
 एक देवस जो^{१८} मेलान कर^{१९} उहैं^{२०} , और^{२१} देवस र^{२२} चलाई^{२३} । ६
 जिह दिन^{२४} राजुकुँवर क[रै*] पयानाँ, ^{२५} गाँव सहस मिलि जाहिं^{२६} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०) येह; (बी०) यह । २-(ए०) ये । ३-(ए०, बी०) बहोरे । ४-(बी०)
 कहे । ५-(बी०) घोरेहि । ६-(ए०) चीरि । ७-(ए०, बी०) मिरगावती । ८-
 (ए०, बी०) सुखासन । ९-(बी०) सो । १०-(ए०, बी०) करनराय । ११-
 (बी०) धाई । १२-(बी०) कोरा । १३-(बी०) पियावति । १४-(बी०) कचोरा ।
 १५-(बी०) गै । १६-(ए०, बी०) मेलेव । १७-(ए०) हाट पटन सब साथ
 चलाई; (बी०) हाट बाटन सब साथहि नाई । १८-(ए०) रे; (बी) X । १९-
 (बी०) करै । २०-(ए०, बी०) X । २१-(ए०, बी०) दोसरे । २२-(ए०, बी०)
 X । २३-(बी०) चल जाइ । २४-(ए०, बी०) जेहि दिन । २५-(बी०) कर
 मिलान; (ए०) कर पंथान । २६-(बी०) मिलै जाइ ।

टिप्पणी—(१) बहुरे-लौटे ।

(२) डाँडि (डाँडी)—डोली; एक आदमीको ढोनेवाली पालकी । फँदाई-
 व्यवस्था की ।

(३) चौडोल—चार कहारों द्वारा ढोई जानेवाली पालकी । सिंघासन—एक
 प्रकारकी पालकी । इसका सुखासन पाठ भी सम्भव है; पदामावत,
 मधुमालती आदि प्रेमाख्यानक काव्योंकी नागरी-कैथी प्रतियोंमें
 सुखासन पाठ ही मिलता है । तदनुसार माताप्रसाद गुप्तने स्व-
 सम्पादित ग्रन्थोंमें सुखासन पाठ ही ग्रहण किया है । किन्तु अन्यत्र
 कहीं भी पालकीके अर्थमें सुखासन शब्द का प्रयोग नहीं मिलता ।
 वासुदेव शरण अग्रवालने स्वसम्पादित पदमावतमें इस बातकी ओर
 ध्यान आकृष्ट किया है कि आइने-अकबरी (ब्लाखमैन कृत अनुवाद,
 पृष्ठ २६४) में अबुलफजलने पालकी, सिंघासन, चौडोल और डोली,
 चार प्रकारके यानोंका उल्लेख किया है जिन्हें कहार (पालकी बर-
 दार) कन्धेपर उठाकर चलते हैं । अतः आइने-अकबरीके अनुसार
 हमने यह पाठ चन्द्रायनमें स्वीकार किया है । यहाँ भी वही पाठ ग्रहण
 किया गया है ।

(४) कोरीं—(स० क्रोड) गोद । कचोरी—कटोरी ।

(५) मेलेउ—ठहरा ।

(६) मेलान—पड़ाव ।

३६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एक मेलान' भयउ' वँह' आई। जहाँ गड़रिये' किय' पहुँनाई' ॥१
 राजकुँवर वहि' चीन्हेउ' ठाउँ। कहिसि गड़रियहि' देखै जाऊँ ॥२
 जाई' गड़रियहि' देखे काहा। आँधर भयउ' बैठि वह' आहा ॥३
 दूबर भा' सठि' मरि कै रहा। कुँवर पूछि' वह' बातें कहा' ॥४
 जे बातें नायक सँउ' कही। कहिसि आँख हम जोगियेउ दही' ॥५
 कुँवर कहा सब लोगहि' आगे, औगुन केरी बात' ॥६
 घाट माँझ कै जादु' पसारिसि, पंथहि रहा लै खात' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(बी०) मिलान। २-(ए०) भयेव; (बी०) भवा। ३-(ए०, बी०) तहँ। ४-
 (बी०) गड़रिया। ५-(बी०) की; (ए०) घाट। ६-(ए०) देखाई। ७-(ए०)
 अेह; (बी०) वह। ८-(ए०) चीन्हेव; (बी०) चीन्हिसि। ९- बी०) गड़रियै।
 १०-(ए०) जाए; (बी०) जाय। ११-(ए०) भएव; (बी०) भवा। १२-(ए०)
 ओह। १३-(बी०) X; (ए०) भवा। १४-(ए०, बी०) सुठि। १५-(बी०)
 कहा। १६-(ए०) उवह। १७-(बी०) कहाँ। १८-(ए०, बी०) सौँ। १९-(ए०,
 बी०) जोगी डही। २०-(ए०, बी०) लोगन्ह। २१-(ए०) जो हुती उकरी बात;
 (बी०) जो होत ऊकरि बात। २२-(ए०, बी०) जाल। २३-(ए०) रोकि रहा लै
 घाट; (बी०) जो बाँझत तेहि खात।

टिप्पणी—(४) दूबर-दुबल; दुबला। सठि-शठ; दुष्ट।

३६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा जो वहि कहँ' पावसि। काह करहु' वहि मार उड़ावसि ॥१
 कहि' मानुस मानुस नहिं खाई। हौँ वहि खावउँ नहिं द्वाडौ जाई' ॥२
 कुँवर कहा तैं बहुते खाये। मरै क मन्द दिन अब तिह आये' ॥३
 छाड़उ वहि' बिसवास कै' बाता। खायउ' बहुते' [कइकै]' घाता ॥४
 हमहु' परे हुत फाँद' तिहारे'। उवरे' तो' विधि केर उवारे ॥५
 हौँ अहाँ उहि' जोगी पाहुन,' जैं लीन्हौ' सब' साँठ। ६
 काह' चले अब' तोरेउ' यदि ठा', मारौँ खाँडें काँठ' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(बी०) का। २-(ए०, बी०) करसि। ३-(ए०, बी०) कह। ४-(ए०, बी०)
 उहि खाँव। ५-(बी०) न। ६-(बी०) देऊँ। ७-(ए०) मरहु भले ही अब मन्द

दिन आये; (बी०) मरबेहु भलेहि मद दिन आये । ८-(ए०) उए; (बी०) अब ।
 ९-(ए०, बी०) की । १०-(ए०) खाये, (बी०) खायेव । ११-(बी०) बहुत ।
 १२-(दि०) लइके; (बी०) जो लै लै; (ए०) किए नि... १३-(बी०) हमहूँ ।
 १४-(बी०) फन्द परे हुते । १५-(ए०) तोहारे; (बी०) तुम्हारे । १६-(बी०)
 उबरेंउ । १७-(ए०) सो । १८-(ए०) उवह; (बी०) वह । १९-(ए०) X ।
 २०-(ए०) लीन्हेव; (बी०) जो तोरतेहेहु । २१-(बी०) X; (ए०) तोर । २२-
 (बी०) कव । २३ (बी०) X । २४-(बी०) तोर; (ए०) तोरा । २५-(ए०) X;
 (बी०) एहि ठाँव । २६-(बी०) काढ़ि ।

टिप्पणी—(४) बिसवास-विश्वासघात ।

(५) फाँद-फन्दा । तिहारे-तुम्हारे । उबरे-निकले । केर-के ।

३६४

(दिल्ली; बीकानेर)

अबहूँ झूठ न बोलव' छाड़सि । पिछली' बात कुदन्तहि काढसि ॥१
 चीन्हसि बोल फुरहि' वह जोगी । सूख गयेउ जनु' बरिस क रोगी ॥२
 हिय मँह कहिसि मीचु अब आई । आँख नाँहि' किहूँ जाउ पराई ॥३
 कुँवर कहा जनि' जिय कहूँ डरही' । वै'° सब छाड़' जो राखी गिरही' ॥४
 कुँवर जो चर देखै जाई' । साथ गड़रिया लीन्हि' घराई ॥५
 चले जो चर देखे कुँवर' , हाड़ रहै लै साँख' ॥६
 खाइसि एक न छाड़सि ईह' मँह' मानुस नाँहि न पाँख ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—बोलिव ना । २—पाछिलि । ३—मडत महि गाडसि । ४—फुरहु । ५—जस ।
 ६—न आहि । ७—कहूँ । ८—जिनि । ९—जियहि डरासी । १०—वैइ । ११—
 छाँडुं । १२—रखे गरासी । १३—कुँवर रहा चूरि गै देखौं जाई । १४—लिहिसि ।
 १५—जाइ चूरि देखै कहा । १६—पै संख । १७—X । १८—नाउँ न पंखि ।

टिप्पणी—(१) बोलव—बोलना ।

(४) गिरही—कैद ।

(७) पाँख—पक्षी ।

३६५

(दिल्ली; बीकानेर')

कुँवर कहा यह बड़ेउ' बलाई । मारी' वाट कै जाइ मँडाई ॥१

१—दोनों प्रतिभोंमें पंक्ति ३-४ परस्पर स्थानान्तरित जान पड़ती है । साथ ही दोनों पंक्तियोंकी उत्तरवर्ती अर्धालिपियाँ प्रायः एक-सी हैं, जिनकी कोई संगति नहीं है । पंक्ति ४ का मूल पाठ निश्चय ही भिन्न रहा होगा ।

दूळभ कहा दयी यह मारा । आँख नाँहि अब कइसेउ पारा ॥२
 चरकै मानुस लै उदराई । बहुरि आपु रे मिलानहि जाई ॥३
 बोलि पथरिया चर उदराई । कुँवर हँसत मिलानहि जाई ॥४
 भिनुसारै फुनि^{१०} कियेउ^{११} पयाना । दिन दिन नगर^{१२} आइ नियराना ॥५
 कोस तीस एक तिह ठाँ^{१३} सँउ, नगर सुबुद्धया आहि । ६
 कुँवर^{१४} दूळभ पठये अगुमन^{१५}, तूँ^{१६} रुपमनि^{१७} ठाँ^{१८} जाहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—बड़ी । २—मारै । ३—यहि दइकै । ४—न आहि । ५—कैसे । ६—चुरि
 पै । ७—लाई । ७—आप बहुरि । ९—चुरि । १०—पुनि । ११—किये ।
 १२—मारग । १३—तेहि ठाऊँ । १४—कुँवर जो । १५—पठावा अगमन ।
 १६—X । १७—रुकुमिनि । १८—पहुँ ।

टिप्पणी—(१) भिनुसारै—प्रातःकाल ।

(५) अगुमन—आगे ।

३६६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

खरभर परेउ सुबुध्या गढ़ा^१ । राजा एक नगर कहँ चढ़ा ॥१
 साजहि कोट सँवारहि लाई । ठाँउ ठाँउ^३ सब मता करार्ही ॥२
 बहुतै लोग निकरि^४ कै भागे । सूर जो आहे^५ सिंघ जिमि^६ गाजे ॥३
 देवराइ^७ सब लोग हँकारे^८ । मन्त्री सबै^९ मते वैसारे^{१०} ॥४
 कीजै कहा^{११} मन्त्र^{१२} सब देहू । भरमै मन्त्र^{१३} न आवइ^{१४} केहू ॥५
 भूपति आहे^{१५} जो खतरी^{१६} उन्ह^{१७} महे^{१८}, बोलहि^{१९} परे अपान^{२०} । ६
 राजा बैठ रहहु तुम्ह^{२१} गढ़^{२२} महे^{२३}, हम जानहि वह^{२४} जान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१—(बी०) परा । २—(ए०) सारि भरी परी सुबुधेया गढ़ा । ३—(ए०, बी०)
 ठाँव-ठाँव । ४—(ए०) सब पौरि बँधाही । ५—(ए०, बी०) निकसि । ६—(ए०, बी०)
 भाजे । ७—(ए०, बी०) अहे । ८—(बी०) होइ । ९—(ए०, बी०) देवराय ।
 १०—(बी०) हँकाराये । ११—(ए०) बुधि । १२—(बी०) वैसाये । १३—(ए०)
 काह । १४—(ए०) मता । १५—(ए०, बी०) आवै । १६—(ए०, बी०) अहे ।
 १७—(ए०, बी०) खत्री । १८—(ए०) X । १९—(बी०) बोलै । २०—(ए०) बरमे
 अपार ; (बी०) बर रे अपान । २१—(बी०) तोह ; (ए०) घर । २२—(ए०) X ।
 २३—(बी०) वै ।

टिप्पणी—(१) खरभर—हलचल ।

(२) ठाँउ ठाँउ—स्थान-स्थानपर । मता—परामर्श ।

- (३) निकरि—निकल । सूर (शूर)—वीर । जिमि—समान । गाजे—गरजे ।
 (४) हँकारे—बुलाया ।

३६७

(दिल्ली; बीकानेर)

भयउ मन्ता^१ सब लोग बहोरा । खरभर गाँव^२ परा अँहडोरा^३ ॥१
 नगर लोग अन पानि न भावइ^४ । रुपमनि^५ कर जीउ गहिगहि आवइ^६ ॥२
 सखी सहेलीं वैठी आही^७ । कहहिं आजु^८ तुम्ह^९ का गहिगही^{१०} ॥३
 जिह दिन सँउ तुम्ह^{११} विछरेउ साँइ^{१२} । कहियेउ^{१३} न देखिहु^{१४} आजुकै^{१५} नाई^{१६} ॥४
 कै र चाह कछु पिय के पाई^{१७} । यह^{१८} अनन्द जिय माँझ न जाई^{१९} ॥५
 सो दिन सखी होई का^{२०}, जिह^{२१} पावउँ^{२२} पिय चाह ॥६
 तन मन जीवन बलि करौ, अउर वस्तु का आह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

- १—भा मन्त । २—नगर । ३—अँदोरा । ४—खावा । ५—रुकुमिनि । ६—
 गहगहाइ आवा । ७—सखि पास उनि वैसी अही । ८—कहिसि । ९—तुम ।
 १०—गहगही । ११—जेहि दिन हुतै तुम । १२—कहियो । देखेंउ । १४—
 आजकी । १५—कै किछु चाह पीय कै आई । १६—तेहि । १७—मँहि चह-
 चहाई । १८—होइहिं कस । १९—जेहि । २०—पाऊँ । २१—और वस्त
 है काह ।

टिप्पणी—(१) बहोरा—लौटे । अँहडोरा—हाहाकार ।

(२) अन पानि—अन्न-पानी । गहिगहि—गद्गद ।

३६८

(दिल्ली, बीकानेर)

बहुत देवस चिन्ता मँह गयई^१ । इह दिन कछु अगुमन भयई^२ ॥१
 सुख निंदरा दुहुँ लोयन लागी^३ । सपनाँ देखै लागि सुभागी^४ ॥२
 जानु चहुँ जग उनै जो आवा^५ । चंचल चमक असाढ़ जनावा ॥३
 बक पाँती^६ वादर मँह आई । सारंग मधुर बैन चलाई^७ ॥४
 दादुर बोलहिं सबद सुहावा^८ । पपीहें^९ चहु दिस पीउ बोलावा^{१०} ॥५
 आई वीरबहूटी वन कचुआ, राता चीर सँवारि^{११} ॥६
 अस सपनाँ रितु बाहर^{१२}, सूत^{१३} देखै लागि सुनारि^{१४} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

- १—चित । २—गयो । ३—किछु आगमन भयो । ४—सुख निद्रा लोइनहु

लागी । ५-सभागी । ६-चहु दिसि उनै मेघ जनौ आवा । ७-बग पाँति । ८-
सारंग मजूर बजन चिललाई । ९-सोहावा । १०-पपिहा । ११-पिउपिउ
लावा । १२-आई वीरबहूटी रतक (?) चुव X X सँवारि । १३-बहार ।
१४-X । १५-लग सोनारि ।

३६९

(दिल्ली; बीकानेर)

फुनि जनु^१ सघन धार^२ बरिसाई । धरती हरियरि भयउ^३ सुहाई ॥१
बोलहिं मोर कोलाहर^४ होई । रितु अनूप विरसै सब कोई ॥२
वनखँड पलुहे सायर भरे । उखठे^५ रूख तेउ ऊभे^६ हरे ॥३
रहस उठा^७ जीउ विहसति जागी । झँरकी^८ सेज दोमन भई^९ लागी ॥४
पूछाहिं सखी कुँवरि कहु^{१०} वाता । रहसति उठी दोमन कस^{११} घाता ॥५
सखी हम इह सपनाँ^{१२} सोवत^{१३}, देखेंउ^{१४} अस र^{१५} अनूप । ६
सेज सूत^{१६} हौं झरकी^{१७} फिर^{१८} मैं^{१९}, तिह रे भरेउं यह^{२०} रूप ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-जो । २-[धार*] सघन । ३-भई । ४-कोराहल । ५-उकठे । ६-सेउ
भये । ७-रहसति उठि । ८-छरगी । ९-दुमनि मुख । १०-कह । ११-उठेउ
दुमनि केह । १२-सखी हे हम सपना । १३-X । १४-देखा । १५-रे ।
१६-सूनी । १७-छरकी । १८-X । १९-तेहिरे फिरेउ हम ।

टिप्पणी—(२) कोलाहर-कोलाहल ।

(३) पलुहे-पल्लवित हुए । सायर-सागर । उखठे-सूखे । रूख-वृक्ष ।
तेउ-वे भी ।

३७०

(दिल्ली; बीकानेर)

कहै विचार सखी एक लागी । सपनाँ अस को पाउ सुभागी^१ ॥१
उनै जानु तुम्ह आयउ साई^२ । चन्दन माँग^३ बक पाँत^४ जो आई^५ ॥२
सारंग पपिहा दादुर मोरा । बाज^६ बधावा मन्दिर तोरा^७ ॥३
वीरबहूटि क^८ सपन अमोला । राता^९ चीर पहिरिहहु^{१०} चोला ॥४
[सघन देखेउ औ भुँइ हरी । सेज पिरम रस तुम कहँ धरी]^{११} ॥५
सूख पलुह^{१२} जस वनखँड बरखा^{१३}, पेस^{१४} सपन जो पाउ^{१५} । ६
बीजु जो देखी^{१६} सपनै, फेरि सौत साथ पिय आउ^{१७} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-कोइ देख सभागी । २-उनै जो आइहि तुम्हार । ३-भग । ४-बग पाँति ।
५-सोहाई । ६-बजै । ७-तुरा । ८-बीरवहूटी कर । ९-रत । १०-पहिरि हौ;
(दि० इतर पाठ) पहिरि तन । ११-(दि०) पंक्ति लुप्त । १२-पलहा । १३-× ।
१४-अस । १५-सपना कोइ पावइ । १६-देखेहु । १७-सौरि साथ लै आवइ ।

३७१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहिसि दई^१ वह^२ देवसो कोई । पिउ आवइ^३ सपना फुर होई ॥१
वहै बात^४ कहत हुत^५ बागी । बाँभन^६ आयउ^७ पँवरि^८ दुवारी ॥२
प्रतिहार कहँ^९ कहिसि जो^{१०} जाई^{११} । कुँवरिहिं जाइ^{१२} सँदेस कहाई^{१३} ॥३
अस^{१४} कहु जाइ कुँवर फुनि आवा । सुना^{१५} पँवरियँ उठि कै धावा ॥४
ततखन^{१६} रुपमनि^{१७} काग उड़ावइ^{१८} । उड़हु काग जो साँई^{१९} आवइ^{२०} ॥५
दूध भात तिह^{२१} देहों^{२२} भोजन^{२३}, औ सोने कै^{२४} पाग । ६
आजु साई^{२५} जो आवइ फुनि जै^{२६}, उड़ि^{२७} र जाहु तुम्ह^{२८} काग^{२९} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) औ दैअ ; (बी०) कहिसि दइव । २-(ए०) उवह । ३-(ए०, बी०)
आवै । ४-(ए०) जो है; (बी०) वह रे । ५-(ए०) कहती है; (बी०) बहुत हुती ।
६-(बी०) दूलभ । ७-(ए०, बी०) आओव । ८-(बी०) पौरि । ९-(बी०) सँ ।
१०-(ए०) तु; (बी०) तू । ११-(ए०, बी०) जाही । १२-(ए०; बी०) जाए ।
१३-(ए०, बी०) कहाही । १४-(ए०)× । १५-(बी०) सुनि । १६-(ए०)
लीखन । १७-(बी०) रुकुमिनि । १८-(ए०, बी०) उड़ावै । १९-(बी०) साई
जो । २०-(ए०, बी०) आवै । २१-(ए०, बी०) तोहि । २२-(ए०) दीहों ।
२३-ए०×; (बी०) भोजन देहों । २४-(ए०) की । २५-(ए०) सामी । २६-
(ए०, बी०)× । २७-(ए०) रे । २८-(ए०) तोह । २९-(बी०) उड़हु सभाग-
काग ।

टिप्पणी—(१) देवसो—दिवस भी ।

३७२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बाँह^१ उमै^२ कै काक उड़ानाँ । ततखन आइ^३ सँदेस तुलाना ॥१
सुना^४ सँदेस कुँवर गा आई । कंचुकी^५ तड़क तड़क^६ उड़^७ जाई ॥२
साँवर बरन भयउ^८ सुनि राता । दुख भगान^९ मुख आयउ^{१०} गाता ॥३

सूखि रही हुत जानु^१ विचारी^२ । सुनतहि हुती^३ जइस हुत^४ बारी ॥४
 बरिया^५ कछु रे काग गल गया। अउर^६ तरकि चूना सब भई ॥५
 काग उड़ावत^७ धन^८ घरी^९, आइ^{१०} संदेस भरकि ॥६
 आधी बरिया^{११} काग गल, आधी गई तरकि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) जाह । १-(ए०) ऊमि । ३-(ए०) आए; (बी०) आय । ४-(बी०)
 सुनत । ५-(बी०) कंचुकि । ६-(बी०) तरकि तरकि; (ए०) तरकि । ७-(बा०)
 उर । ८-(ए०, बी०) भयेव । ९-(ए०) त दुख भागा; (बी०) दुख भागेव ।
 १०-(ए०, बी०) आयेव । ११-(बी०) जनौ । १२-(ए०, बी०) सुपारी । १३-
 (ए०, बी०) भई । १४-(ए०) जैसी हुती; (बी०) × । १५-(ए०) बलया; (बी०)
 बरया । १६-(ए०) और; (बी०) और । १७-(ए०, बी०) उड़ावति । १८-(ए०,
 बी०) धनि । १९-(बी०) खरी । २०-(ए०) आए; (बी०) आयेउ । २१-(ए०)
 बलया; (बी०) बरया ।

३७३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवरि कहा^१ वह^२ दूलभ आवा । दइ^३ बुलाइ^४ वहि परसों^५ पावा ॥१
 पाउ खेह आँखिह लै आँजों । जीह^६ काढ़ि तरुभा वहि^७ माँजों ॥२
 घाइ^८ पँवरियें^९ दीन्हि^{१०} बुलाई^{११} । पूछइ^{१२} लाग संदेस अघाई^{१३} ॥३
 कहिसि संदेस^{१४} जो र^{१५} कछु^{१६} आहा^{१७} । मिरगावति^{१८} साथ फुनि^{१९} कहा ॥४
 सखी कहा^{२०} मैं सपन^{२१} विचारा । मोर कहा सपने^{२२} पतिपारा^{२३} ॥५
 रुपमनि^{२४} कहा जाहु तुम्ह^{२५} दूलभ, पितहि देहु इह^{२६} चाह ॥६
 नगर न कछु^{२७} भौ मानै जिय महँ^{२८}, राजकुँवर वह^{२९} आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) कहे । २-(ए०) उवह । ३-(ए०, बी०) देहु । ४-(ए०, बी०) बोलाय ।
 ५-(ए०, बी०) परसों बोहि । ६-(बी०) जीम । ७-(बी०) तरवा बोहि । ८-
 (ए०) पूरी पंक्ति नहीं है । ९-(ए०) घाय । १०-(ए०) पँवरिआ; (बी०) पौरिये ।
 ११-(ए०) दीन्ह; (बी०) दीन । १२-(ए०, बी०) बोलाई । १३-(ए०, बी०)
 पूछै । १४-(ए०, बी०) कहाई । १५-(ए०) संदेसा । १६-(ए०, बी०) रे । १७-
 (ए०) कुछु; (बी०) किछु । १८-(ए०, बी०) अहा । १९-(ए०, बी०) मिरगा-
 वती । २०-(ए०) साथहु सुनि । २१-(बी०) कही काह । २२-(ए०, बी०) सपनु ।

१—इस प्रतिमें दूसरी पंक्ति नहीं है । इसमें पंक्ति ३, ४, ५ क्रमशः २, ३, ४ के रूपमें हैं और पंक्ति ५ के रूपमें सर्वथा नयी पंक्ति है ।

२३-(ए०, बी०) सपना । २४-(ए०) पाँचवीं पंक्तिके रूपमें—रूपमनि कहा कहत है कोई । आवत आह कुँवर वह सोई ॥ २५-(बी०) रुकुमिनि । २६-(बी०) तोह । २७-(ए०, बी०) यह । २८-(ए०, बी०) कुछु । २९-(ए०) × । ३०-(ए०) सो ।

टिप्पणी—(१) परसों—स्पर्श करूँ ।

(२) पाउ—पैर । खेह—धूलि । आँजों—अंजनकी भाँति लगाऊँ । जीह—जीभ । तरुभा—तालू । भाँजों—साफ करूँ ।

(३) पँवरिये—द्वारपाल ।

३७४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूँलँभ^१ जाइ^२ राइ^३ सों कहा । सभा लोग सब बैठेउ^४ आहा ॥१
नगर जो परा हुतेउ^५ अहँदोग^६ । सान्त^७ भई मन का^८ वह^९ रोरा^{१०} ॥२
राइ कहा उन्ह आगे^{११} जाई^{१२} । गारो दै कुँवर^{१३} लै आई^{१४} ॥३
इहाँ^{१५} वात बहु^{१६} कुँवर जो कही । मिरगावती सों जो कछु^{१७} अही ॥४
कहसि बिहाहि^{१८} न छाड़ी जाई^{१९} । औ जो कछु^{२०} कहहु सो किये सिराई^{२१} ॥५
मिरगावती बृद्धि मन देखा^{२२}, अब न चली^{२३} कछु^{२४} मोर ।६
कहिसि सोइ सिर ऊपर मोरें, जो रुचत हिय^{२५} तोर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) सभ । २-(ए०) जाए; (बी०) जाय । ३-(ए०, बी०) राय । ४-(ए०) बैठेव; (बी०) बैठ । ५-(ए०) हुतेव; (बी०) परा जो होत । ६-(ए०) आहि डोरु; (बी०) अँदोरा । ७-(ए०, बी०) सान्ति । ८-(ए०, बी०) गा । ९-(ए०, बी०) वहि । १०-(ए०) रोरु । ११-(ए०) आगे उन्ह । १२-(बी०) जइयै । १३-(ए०, बी०) कुँवरहि । १४-(बी०) अइयै । १५-(बी०) इहाँ रे । १६-(ए०, बी०) × । १७-(ए०, बी०) कुछ; (बी०) किछु जो । १८-(ए०, बी०) बियाही । १९-(ए०) न छाडै; (बी०) छाडि न । २०-(ए०, बी०) × । २१-(ए०) सेराई । २२-(ए०) देखी । २३-(ए०, बी०) चलै । २४-(ए०) कुछु; (बी०) किछु न चलै अब । २५-(बी०) है ।

टिप्पणी--(१) रोरा—पेशानी ।

(२) गारो दै—गले लगाकर ।

(६) मोर—मेरा ।

(७) तोर—तुम्हारे ।

३७५

(दिल्ली; बीकानेर)

राजा इहाँ भयउ असवारू^१ । दर परिगह संग भयउ अपारू^२ ॥१
 कुँवर इहाँ सेउ कियउ^३ पयानाँ । राजो^४ आइ संगति^५ नियरानाँ ॥२
 राजा देख कुँवर [ऊतरा*]^६ । राजा^७ भयउ^८ उतरि कै^९ खरा ॥३
 कुँवर पायहिं^{१०} कहँ बाँह पसारी । राइ उठाइ दीन्ह अँकवारी ॥४
 भये असवार दोउ^{११} जन चले । खेम कुसल^{१२} पूछहिं दोउ^{१३} भले ॥५
 बातें^{१४} करत नगर मँह पैठे^{१५}, सब कोई देखै लाग । ६
 साह महाजन करहिं निछावर^{१६}, धन धन कुँवार^{१७} कै भाग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-राय इहाँ सै भवा असवारू । २-लिहेहि अपारा । ३-सँ कीय । ४-राजा ।
 ५-संगित । ६-(दि०) अतूरा; (बी०) उतरा । ७-राजा । ८-पुनि । ९-मा ।
 १०-पाइ । ११-दुवौ । १२-कुसर । १३-दहुँ । १४-बात । १५-आये ।
 १६-न्योछावरि । १७-धन रुकुमिन ।

टिप्पणी—(२) राजो-राजा भी ।

(३) खरा-खड़ा ।

३७६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मागग नेत पटोर विछाये^१ । पँवरहिं^२ गरगज बाँधि सुहाये^३ ॥१
 चहिं^४ धौराहर देखहिं रानी । राजकुँवर आवहिं^५ किह^६ बानी ॥२
 कर पसारि वहि वहि दिखरावइ^७ । राजकुँवर सुन्दर वह [आवइ*]^८ ॥३
 राजकुँवर पर चँवर^९ ढरार्हीं । छात^{१०} मेघडम्बर तिह^{११} छाहीं ॥४
 धनि रुपमनि^{१२} जँ यह^{१३} बर पावा । दर्ई^{१४} गुसाई^{१५} जोग मिरावा^{१६} ॥५
 पैठेउ^{१७} आइ^{१८} मँदिर मँह गाजत^{१९}, बाजै लाग बधाउ^{२०} । ६
 रुपमनि^{२१} मनसा पूजी मनकी^{२२}, राजकुँवर घर आउ^{२३} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) विछाई । २-(ए०) पटोरनिह । ३-(ए०, बी०) सोहाये । ४-(ए०)
 चहि । ५-(ए०, बी०) आवै । ६-(ए०, बी०) केहि । ७-(ए०) उहि उहि देखरावै;
 (बी०) वोहि वह देखरावै । ८-(ए०, बी०) आवै; (दि०) आहै । ९-(ए०, बी०)
 चौर । १०-(बी०) छत्र । ११-(बी०) बहु । १२-(बी०) रुकुमिनि । १३-(ए०) जे
 अस; (बी०) जो यह । १४-(ए०) दैअ; (बी०) दैव । १५-(ए०, बी०) गोसाई ।

१६-(ए०, बी०) मेरावा । १७-(ए०, बी०) पैटे । १८-(ए०) आए । १९-(ए०, बी०) × । २०-(ए०) बाधाए; (बी०) बधाव । २१-(बी०) रुकुमिनि । २२-(ए०, बी०) × । २३-(ए०) आए; (बी०) आव ।

३७७

(दिल्ली; बीकानेर)

बिरह सुरज कर आउ घटानी^१ । अस्त भयउ किह जाइ न जानी^२ ॥१
भोग चाँद आयउ^३ उजियारा । सैन मँदिर बहु भाँति सँवारा ॥२
रुपमनि^४ कै सिंगार तहँ आई । ठाढ़ भई बहु मान कराई ॥३
कुँवर कहा कस नियर^५ न आवहु । कहिसि कुरंगिन धनिह बुलावहु^६ ॥४
बोलत लाज न आवइ^७ तोही । नैन सोंह कै बालहि मोही ॥५
बरया भंजन कर गहन, कुच मंडन भौ ढीठ ॥६
तरल बीजु भौ सों बन्नों,^८ दै जे गयउ हन^९ पीठ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-सूर । २-आव खुटाना । ३-भयेउ केहु जात । ४-जाना । ५-चन्द आयेउ ।
६-(बी०) सबै । ७-रुकुमिनि । ८-नियरि । ९-कहिसि चकित घन डादि
मिरावहु । १०-आवै । ११-त्रिभुवन बीच बाँधि हौं । १२-गये मोहि ।

टिप्पणी—(१) आउ-आयु ।

३७८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसि^१ कै कुँवर चीर^२ कर गहा । बाँह^३ मोरि कै मुकै^४ चहा ॥१
पिता सपत सो छाड़ न^५ चीरू^६ । जाइ गहहु मिरगावति खीरू^७ ॥२
अब जिउ मोर तोहि न^८ मिलई । काह^९ करौ हौं सखिह^{१०} पठाई ॥३
राजकुँवर^{११} चौदह बुधि^{१२} जानै । मान करै वह^{१३} हँसि हँसि मानै ॥४
तिरी^{१४} सुभाउ मान कर^{१५} भाऊ । नहिं नहिं^{१६} करै न मानै काऊ ॥५
नहिं नहिं^{१७} करत भौ ऊपर^{१८} कुँवर^{१९}, गहि आन सेज बैठाइ^{२०} ॥६
तिह^{२१} तिरी^{२२} पसंगै^{२३} कवन^{२४} गुन, मान भाव न कराइ^{२५} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) असि । २-(बी०) चीर कुँवर । ३-(ए०) पाव; (बी०) पुनि । ४-(ए०)
कर । ५-(ए०) मोकै; (बी०) मुकै । ६-(ए०) बिना । ७-(बी०) तुम्ह छाड़हु ।
८-(बी०) चीरा । ९-(ए०) जाए; (बी०) जाय । १०-(ए०) खीरू; (बी०)
खीरा । ११-(बी०) न तोहि । १२-(बी०) कव । १३-(ए०, बी०) सखिह ।
१४-(ए०, बी०) कुँवर चतुर । १५-(बी०) विधि । १६-(ए०) जो । १७-(बी०)

त्रिया । १८-(ए०) के; (बी०) गुन । १९-(बी०) ना ना । २०-(बी०) ना ना ।
 २१-(ए०) कुँवर भौ विरहाह; (बी०) कुँवर आनि । २२-(ए०) आनि सेज
 बैठाए; (बी०) भुजवर गहि बैसाइ । २३-(ए०, बी०) तेहि । २४-(बी०) त्रियहिं ।
 २५-(ए०) अखते; (बी०) बिसमाँ का । २६-(ए०) कौन । २७-(ए०) कराय ।

३७९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जोवन' साँजैउ' गही' दुसारी । जीउ बहलाइ' कण्ठ संउ धारी' ॥१
 खोलि चौक दोइ बात कहाई' । दुनिया रैन यह तर' हम आई ॥२
 एती' बात सुनु' पिय' भोरी । वनु जिय रही पिरित न तारा' ॥३
 दसयें दाउ' [दई*]' सत राखा । बाँउ' चार होउ' हम साखा ॥४
 वेदना' बात छाड़' जिय केरी । अति' चतुराई निभायहि केरा' ॥५
 जो र जिह जग जानै बात', दूतचार' तुम्ह' पास । ६
 बहुत चरित चतुराई सर' बासा', सौ सौ एक एक साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला ओर बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) चोपट । २-(ए०) साज; (बी०) साजि । ३-(ए०) गहै; (बी०) किही ।
 ४-(ए०) जीव वर लाये; (बी०) जो पर लाइ । ५-(ए०) कन्त सौं ठारी; (बी०)
 कन्त सौं दारी । ६-(बी०) कहाही । ७-(ए०) अहेरे; (बी०) बहुरि । ८-(ए०)
 बीती; (बी०) बीता । ९-(बी०) मुनहु । १०-(ए०) ओह । ११-(ए०) पचती
 अहिहि प्रीति नहिं तोरी; (बी०) वाचति रही प्रीति नहिं तोरी । १२-(ए०, बी०)
 दाँव । १३-(ए०) दैअ; (बी०) दइय । १४-(ए०) नाव; (बी०) बाँव । १५-
 (ए०, बी०) रहेव । १६-वेदु; (बी०) वेद । १७-(ए०) छाड़; (बी०) छाँहु ।
 १८-(बी०) अव । १९-(ए०) पठाइन्ह केरी; (बी०) फवहि न तोरी । २०-(ए०)
 चौर जाह जग जानै; (बी०) चौर चाहि जग जानियै वार्तै । २१-(बी०) चरित्र ।
 २२-(ए०) तोह; (बी०) तुम । २३-(ए०) X; (बी०) सीखेउँ ।

टिप्पणी—(२) चौक-दन्त-पंक्ति । दुतिया-द्वितिया ।

(६) दूतचार-धूर्ताचार ।

३८०

(दिल्ली; बीकानेर)

अब तो मैं' निहचो' कै वृझा । येहि जग दूसर अउर' न सझा । १
 दू औ एक न छाड़सि' नाहाँ । तो गुन अब वृझेउँ मन' माँहाँ ॥२
 तेवरी' जुआ सरि' जिह' आवइ । दून किये र तुम्ह नीकै लावइ ॥३

खेल कियहु तू मैं^{१०} न संभारा । भयउँ अमोली दूटि हारा^{११} ॥४
 तौ^{१२} मैं मरम न जानेउँ तोरा । अब रे खेल दिन^{१३} घटवँहु^{१४} मोरा ॥५
 अब रे चीर^{१५} चर करों, खेल पिय की नहिं गौं^{१६} ।
 बिवि भुज बंधन बाँधहु^{१७}, कुचहिं^{१८} बीच राखों^{१९} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-मैं तू । २-निहचै । ३-और । ४-दुनै कियै न छाँड़ौ । ५-हिय । ६-तिउरी ।
 ७-सारी । ८-जेहि । ९-दुनै कियै इतौ तुव गुन पावै । १०-खेलि गयेहु पै मैं ।
 ११-रहेउ अमूलि तौ बी तुम्हारा । १२-तब । १३-देखहु तुम । १४-चपरि ।
 १५-खेलि गहि आपहि लेउँ । १६-बाँधि के । १७-फुनि कुच । १८-रखौँउ ।

टिप्पणी—(१) निहचों-निश्चय ।

३८१

(दिल्ली; बीकानेर)

कियेउँ चीर चर^१ कन्त जोहारा । छाड़ न देउँ बाँत को मारा^२ ॥१
 दुहुँ भुववर^३ बीच परहु जो^४ आई । छाड़ों तोहि न^५ सपत हम खाई ॥२
 छाड़ छैल कीनहु^६ छरि मोहि । चलै न देउँ सपत हम तोही ॥३
 कुँवर कहा सुनु उतर हमारा । झागा^७ छोर गहु^८ हम^९ वारा ॥४
 सेज पिरम रस मानै भोगू^{१०} । रस अहार अब दइ हम जोगू^{११} ॥५
 सूर उवहि^{१२} दिन होइहि^{१३} रुपमिनि^{१४}, जाइ रंग रस सार^{१५} ।
 कुँवर हाथ उर मेले, कर पल्लव^{१६} सो वार ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-गयेउ चपरि । २-छाड़हु नाट करहु अब सारा । ३-दुहु भुअ । ४-परेहु लु ।
 ५-न तोहि । ६-गयेहु । ७-जाइ । ८-छग । ९-किहेहु । १०-बड़ि । ११-
 मानहिं भोगा । १२-रस अहै हम देखव जोगा । १३-उयेहिं । १४-होइहैं ।
 १५-X । १६-रुकुमिनि चउदरु सारु । १७-(दि०) वारन । १७-सँउ मारु ।

३८२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

अनपट^१ खौटै^२ उर मेलहिं^३ हाथा । गहहु जाइ^४ आनहु जिन्ह^५ साथा ॥१
 कुँवर माँग^६ वह^७ सेज न देई । चिहुर खेलि^८ अधरन्ह रस लेई ॥२
 करपल्लों नख सँउ^९ कुच गहा^{१०} । उरध^{११} साँस के छाड़े कहा^{१२} ॥३
 सन्धि^{१३} गहै कुँभस्थल आई । आहै पुरुब कर मेंट^{१४} न जाई ॥४
 सिंघ के भयँ हम उरहिं छुपानी^{१५} । इनहि विखम लागहिं अँकुतानी^{१६} ॥५

गहे कुंभस्थल सिंह भै, कामिनि उरहि आवद्ध^१ ।६
लिहे पुरवकम न चलहि, बिलवै निकरहि कर हृद्^{१०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) आव; (बी०) अव न । २-(ए०) खोंटि । ३-(बी०) मेलहु । ४-(ए०) जाय; (बी०) जाइ गहहु । ५-(ए०, बी०) जेहि आनेउ । ६-(बी०) माँगे । ७-(ए०) उवह । ८-(बी०) चिहुर गहे; (ए०) चीर गहसि । ९-(ए०) सै; (बी०) सौं । १०-(बी०) गहे । ११-(ए०) ऊध; (बी०) आध । १२-(ए०) गहा; (बी०) छाड़ेउ अहा । १३-(बी०) सिंघ । १४-(बी०) लिखे पुब्बखर मँट; (ए०) अहे पखर मँमत । १५-(ए०) सिंघ के भौं रही छपानी छाती; (बी०) सिंघन्ह कै भई आरहि छाती । १६-(ए०) हेठहि लग तेहि बिखम काँती; (बी०) लगे बिखम तवहीं अकुतानी । १७-(ए०) कै कुंभस्थल सिंघकै, कामिनि उरही उवै न । लिहे बीववर नच लहि, बल भु नख कर मन ॥ (बी०) गहेउ कुंभस्थल सिंह होइ, उरहि समानी मुख । लिखे पुब्बखर चलहीं, बालम न खर जुध ॥

३८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूत^१ रवन^१ निसि रंग रस^१ रहा^१ । पीउ मकरन्द पेम कर गहा ॥१
मधुकर केवइ^१ कँवल^१ विसारा । मालति^१ परिमल कियउ^१ अहारा ॥२
भँवैर^१ पुरुख अपनेउ^१ न^१ होई । चाँडि^{१०} परै पै^{११} मिलै न^{१२} सोई ॥३
रुपनि^{१३} कर^{१४} मन पूजी^{१५} आसा । सौ सौ दुख काढ़ै एक साँसा ॥४
आसा लागि सहै दुख^{१६} कोई । पूजइ^{१०} आस^{१८} विरथ^{१९} न होई ॥५
आसा सहन्त^{१०} दुखौ^{११} गरु^{१२}, भाव बन्धन अरम्मो^{१३} ।६
तो^{१४} इन्ह^{१५} उत्तिम संगेउ^{१६}, जा कारन सहन्त^{१७} दुखो^{१८} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) कुच; (बी०) रैन । २-(ए० बी०) रौव । ३-(बी०) तरंग निसि; (ए०) अस रंग उर । ४-(ए०) कँव; (बी०) केवहि । ५-(बी०) कमल । ६-(बी०) मालती । ७-(ए०) किएव; (बी०) कियेव । ८-(ए०, बी०) भौर । ९-(बी०) आपन नहिं । १०-(दि०) चाड । ११-(ए०, बी०) विनु । १२-(बी०) नहिं । १३-(बी०) रुकुमिनि । १४-(ए०, बी०) कै । १५-(बी०) पूजी मन । १६-(बी०) दुख सहै जो । १७-(ए०, बी०) पूजै । १८-(ए०, बी०) आस । १९-(बी०) न अविरथा । २०-(ए०) सहहि । २१-(बी०) दुख । २२-(ए०) ×; (बी०) गरुवा । २३-(ए०) भार बीधनारंभो; (बी०) मा विधना अरु भोग । २४-(बी०) होई । २५-(ए०) उन्ह; (बी०) × । २६-(बी०) संगत; (ए०) संगो २६-(ए०) सहिअै; (बी०) सहत्ति । २७-(बी०) दुख ।

३८४

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन सपूरन सगुनहि भई^१ । तरुवर छाँह बहिरि^२ घन भई ॥१
 पंखि जो तरुवर छाड़ुँ आहा^३ । आई बहुरउ नहिं किछू कहा^४ ॥२
 उत्तिम सो जोन्ह मुँह पर आना^५ । वृद्धि रही मन बलग न मानाँ ॥३
 वै^६ बाँके दिन^७ चलि गये । जिह दियसहिं सुरजन^८ रिपु भये ॥४
 एक निमिख वर^९ दोइ जग देवाँ^{१०} । सों कहे मोल एइ दिन लेवाँ^{११} ॥५
 मोल नाँहि इह^{१२} दिन कर दोइ^{१३} जग^{१४}, जिह^{१५} दिन दुख^{१६} तनतज्ज ॥६
 कुंजर विरह परानेउ जीउ लै, पिउ केहरि हो^{१७} गज्ज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-सुख भँह गई । २-बहुरि । ३-अहा । ४-आयेउ बहुरि किछू नहिं कहा ।
 ५-उत्तिम सजन मुँह पर न आना । ६-वै जो बाँके दिन तबके । ७-जिन देवसन
 सुरिजन । ८-पर । ९-देऊँ । १०-सौंघे मोल न ए दिन लेऊँ । ११-न आहि
 एहि । १२-१३-X । १४-जेहि । १५-विरह । १६-मे ।

३८५

(दिल्ली; बीकानेर)

दन्द उदेग उचाट वियोगू^१ । ईह कै जीह परेउ वर सोगू^२ ॥१
 करहिं मन्ता^३ अब कीजै काहा । सेउ किही तिह भयेउ न दाहा^४ ॥२
 चलहु जहाँ मिरगावति^५ राँधा । सबई साँभर सकलहि बाँधा^६ ॥३
 आई मिलि^७ मिरगावति^८ ठाँऊँ । आयसु^९ होइ बसहिं^{१०} तुम्ह गाँऊँ ॥४
 मिरगावति^{११} उन्ह आयसु^{१२} दिया । गरहँहि कया गाँउ सब लिया^{१३} ॥५
 सुख अनन्द दोइ बहुमूली^{१४}, उनहि र निकासहि मारि^{१५} ॥६
 गरहँहि कया गाँव सब हूँदे^{१६}, खेलै लाग^{१७} धमारि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-वियोगा । २-उन्ह कै जीय परा बड़ सोगा । ३-मता । ४-सेवा किही बहु
 भवा न लाहा । ५-मिरगावती । ६-सब लेहु बहु सँवर बाँधा । ७-मिले ।
 ८-मिरगावती । ९-आइस । १०-बसियै । ११-मिरगावती । १२-आयस । १३-
 गरहिन्हि कया रङ्ग कुहलिया । १४-सुख आनन्द दुवौ रस वरसहिं । १५-जो
 उन्हहि निकारिन्हि मारि । १६-हूँदेहि । १७-लागि ।

टिप्पणी—(१) जीह-जी । वर-बड़ा । सोगू-शोक ।

३८६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुख अनन्द दुऔ रस' चले' । करै पुकार कुँवर सँउँ चले' ॥१
 कुँवर सभा बैठ हुत' जहाँ । कीन्हि पुकार लूट' कै' तहाँ ॥२
 कुँवर कहा कस करहु पुकारा । बिरह वियोग' परी हम बारा' ॥३
 हम तुम्हरे' पुर' वसहि' जो' आये' । तुम्हरे इहाँ उन्ह अवसर' पाये' ॥४
 कुँवर कहा सँग आवहु मोरें । मार निपारों' उन्ह कह' भोरे ॥५
 राति गयी' रुपमनि' संग, भोर भयउ' उजियार ॥६
 भोग अनन्द रहस उन कहँ सँग', कुँवर भयेउ असवार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०) रिसि । २-(बी०) भले । ३-(बी०) पहुँ चले; (ए०) सौँ मिले । ४-
 (बी०) महँ बैठे । ५-(ए०, बी०) लौटि । ६-(बी०) गये । ७-(ए०) विउग;
 (बी०) विवोग । ८-(ए०) बरिअ हम मारा; (बी०) परा हम नारा । ९-(ए०)
 तोहरे । १०-(बी०) बर । १०-११-(ए०) परोसहि । १२-(ए०) X । १३-(बी०)
 आई । १४-(ए०, बी०) औसर । १५-(बी०) पाई । १६-(ए०, बी०) पवारों ।
 १७-(बी०) कहँ । १८-(ए०) गए । १९-(बी०) रुकुमिनि । २०-(ए०) भयेउ;
 (बी०) भयेउ । २१-(ए०) रहस ले कै संग; (बी०) रहसि कै लिये ।

३८७

(दिल्ली; बीकानेर)

जहाँ बैठि मिरगावत आही' । कुँवर कयउ पीठि दइ' रही ॥१
 मनमँह' बूझि कुँवर अस कहा । मिरगावती कुहानेउ आहा' ॥२
 तिह' रस यह सेउ' बकतों बाता । एको दुख न रहै जिह' गाता ॥३
 कहसि पौन पाहुना जो मैनी' । बदन' फिरेउ कस पंचम वैनी ॥४
 हम देखत कस दीनहु' पीठी । चकित साँह न' लावहु दीठी ॥५
 कया जीउ मन मानिक मोरें, हों तूँ तूँ हों सोइ ॥६
 दूसर' को अस आहे यह' जग, जो र बराबर' होइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-अही । २-दै । ३-मनहिं । ४-कुहानी अहा । ५-तेहि । ६-इह सैं । ७-रहै
 न । ८-एहि । ९-कहेसि पवन वाहन जो नैनी । १०-बर्न । ११-दीन्ही । कहे न
 चकित धन । १३-X । १४-दोसर । १५-येहि । १६-बराबरि ।

टिप्पणी—(२) कुहानेव-रूठी ।

३८८

(दिल्ली; बीकानेर)

इह र' बात इह' कारन आवा । देस क ओरहन आइ मिटावा ॥१
 उहो चेरि' एक सेउ कराही' । पाइ पखारी' पानि भराई' ॥२
 सुनी बात यह चकित' हूँसी । बदन विरचि बोली' ससी ॥३
 कहिसि' कुँवर वह बारि'० बियाही । तूँ तो' रहिसि'१ रोझ कै ताही ॥४
 कुँवर कहा वह'२ साँच न कोहू' । नैन देखि बूझउ इह मोहू' ॥५
 बदन विरचै रामाँ मुह सों, जियँ न वरजों नाँह' ॥६
 देखसि निरखि निहारि कै, जगत साखि'३ भराँह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-यह रे । २-ऐहि । ३-एहउ चेरी । ४-सेवा करई । ५-पाँव पखारै । ६-पानी पियावई । ७-चकित । ८-बन्दन विरचै बोलै । ९-कहेसि । १०-बरी । ११-तौँ तूँ । १२-रहेसि । १३-दहु । १४-साँचहु कोही । १५-देखके बूझहु मोहीं । १६-बदन विरचेउ राम पिय, पिय जिय विरचेउ नाहि । १७-चकित सखी भराहि ।

टिप्पणी—(१) ओरहन-उपालम्भ; शिकायत ।

(२) पखारी-धोयेगी ।

३८९

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवर बाँह गही कर वारी । ऊपर सेज आनि बैसारी ॥१
 इह का' मन ऐसहिं यह' राखी' । अहो सेउ ऐसहि मुँह भाखी' ॥२
 मिरगावती' जानैँ हम चहा । रुपमनि' जान' कि' पेम हम' गहा ॥३
 वेगर वेगर दुहों कर तोखू'० । ऐसहि राखहि' न लागै दोखू' ॥४
 एक देवस दूलभ हँकरावा । राजा सनाँ'१ कहाइ' पठावा ॥५

आयसु'२ होइ त गवनी,' कुसल जाउँ पिता कर'३ ठाँउ । ६
 देवस वरस वर'४ जानों तबलग, जबलग उँहि'५ न मिलाँउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-एहिका । २-इनि । ३-राखा । ४-बोहि सै फुनि एहि मुख भाखा । ५-मिरगावती । ६-रुक्मिनि । ७-जानै । ८-X । ९-कर । १०-तोखा । ११-ऐसे रखे । १२-दोखा । १३-सैनि । १४-कहै । १५-आइस । १६-तो गवनौ । १७-कै । १८-दिन कै बारिस पर । १९-जब लग पितहि ।

३९०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूँलभ^१ जाइ राइ सँउ^२ कहा । कुँवर विनति^३ अस कीन्हेउ^४ आहा^५ ॥१
 पितै^६ बहुत कै पठै बुलाई^७ । तुम्हुहुँ^८ कहउ त^९ वेगि चलाई ॥२
 राइ^{१०} कहा हौं कहै न पारउँ । जो इ^{११} कहहि^{१२} सीस^{१३} पर धारउँ^{१४} ॥३
 पितै^{१५} बुलाईन्ह^{१६} बरजि^{१७} न जाई । राजकुँवर कहुँ चाल कराई^{१८} ॥४
 जो कछु^{१९} दायज दीतसि^{२०} आहा^{२१} । दूगुन दीतसि^{२२} औ अस कहा ॥५
 राजा गनपतदेउँ सँउँ^{२३} दूँलभ, अस^{२४} गुजरहु^{२५} हम लागि ।६
 एक यहाँ जस चेरी राजा,^{२६} करिहि रसौई आगि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) जुलभ । २—(ए०, बी०) राय सो । ३—(ए०, बी०) विनती । ४—(ए०, बी०) कीन्हीं । ५—(ए०, बी०) अहा । ६—(बी०) पिता । ७—(ए०) पठए राई ; (बी०) पठयेउ बुलाई । ८—(ए०) तोहउ । ९—(ए०, बी०) तो । १०—(ए०) राय । ११—(ए०) जो रे; (बी०) जो वै । १२—(ए०) कहहु सो; (बी०) कहहि सो । १३—(ए०, बी०) सिर । १४—(ए०) बारों ; (बी०) दारों । १५—(ए०) बुलाएवि ; (बी०) पिता बोलाये । १६—(बी०) विलम । १७—(ए०) राजा कुल का चार कराई ; (बी०) राजा गौने क चार कराई । १८—(ए०, बी०) कछु । १९—(बी०) दीन्हेव ; (ए०) दीतिसि । २०—(ए०, बी०) सौं । २१—(दि०) औ । २२—(ए०) गुजरहु ; (बी०) गुचरयेहु । २३—(ए०) एहौ एक जस चेरी राजा कै ; (बी०) एहउ चेरी एक राजा कै ।

टिप्पणी—(४) बरजि—मना ।

(७) गुजरहु—निवेदन करना ।

३९१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूँलभ बोलि जननि^१ अस कहा^२ । मोरे जनम यहै धिय^३ आहा^४ ॥१
 रानी सँउ^५ अस करहु विनाती^६ । हीन आहि यह^७ धिय कै जाती ॥२
 दुखिया^८ होइ^९ न पावै मोरी । दुलभ कहिहु^{१०} चेरी हौं तोरी ॥३
 औ जस जानहु कहिहु^{११} सँवारी । एहि^{१२} कै^{१३} बात मैं तुमहि^{१४} उभारी ॥४
 जाति कै^{१५} दई^{१६} गोसाई मोरी । और किह^{१७} पूजहि^{१८} उन्हे कै^{१९} जोरी ॥५
 इहै कुलवन्ति सुलाखन सरूप,^{२०} और^{२१} किह^{२२} पूजै कोइ ।६
 बारि^{२३} बियाही उत्तम^{२४} सुवंस, अरु वह किह^{२५} सरवरि होइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) जतन । २—(ए०) कही । ३—(ए०) दुख । ४—(ए०) अही ; (बी०)

अहा । ५-(ए०, बी०) सों । ६-(ए०, बी०) करेहु चीनती । ७-(ए०) बहु ।
 ८-(ए०) दुखीअ । ९-(ए०, बी०) होय । १०-(बी०) कहेहु । ११-(बी०)
 जानहु तस कहेहु । १२-(ए०) येहि की; (बी०) यहिकै । १३-(बी०) तोहि; (ए०)
 तोहही । १४-(बी०) की; (ए०) क । १५-(ए०, बी०) धीय । १६-(ए०, बी०)
 कि । १७-(ए०) पूजिह; (बी०) पूजै । १८-(ए०) अहिकी; (बी०) इन्हकी ।
 १९-(बी०) ए कुलवन्ती सरूप सोलखिनि; (ए०) अ कुलवन्ती सुलाखिनी ।
 २०-(बी०) रूप । २१-(ए०) की; (बी०) कि । २२-(ए०, बी०) बरी ।
 २३-(ए०) उत्तिउँ । २४-(ए०, बी०) अरुधीकी ।

टिप्पणी—(२) बिनाती-विनती; निवेदन ।

३९२

(दिल्ली; बीकानेर^१)

दूल्ह जो आइ बचन सुनावा । राइ बहु दइ भला मनावा ॥१
 पुनि धिय कँह रोवइ गिय लाई^१ । बुधि बहु दइ के समुँद^२ चलाई ॥२
 कुँवर ठाँउ दूल्ह लै आवा । चली वजाई सगुन भल पावा ॥३
 कुँवर कहा तिह^३ मारग जाई । जिह मारग कलु^४ अनों^५ न^६ पाई ॥४
 दूल्ह अगुवा होइ^७ जो^८ चलाई । जिह^९ मारग सुख सेउ लै जाई ॥५
 दोउ चले जो दल सुहावन, सौ सौ लाग गुहार^{१०} ।
 दिन वृडइ जाइ मग खीन्हा, कुसल कहै करतार^{११} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-यह कहि रोवै गीय लाई । २-बहु विधि देके समदि । ३-तेहि । ४-किछु ।
 ५-अनवन । ६-× । ७-भै । ८-× । ९-जेहि । १०-ये पंक्तियाँ नहीं हैं ।

३९३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चन्द्रागिरि नियरानेउ^१ आई^२ । दूल्ह पठये अगुमन^३ जाई^४ ॥१
 पठये^५ दूल्ह राइ^६ के ठाऊँ । कुँवर इहाँ उतरे^७ एक गाँऊँ ॥२
 राजा मारग देखत अहाँ । दुल्लभां^८ जाइ^९ छाइ के रहा^{१०} ॥३
 बँभनहि^{११} कै कलु^{१२} चाह न पाई । मिलेउ आह कै नाँ र^{१३} मिललाई ॥४
 राजा यहै बात कहि रहा । दूल्ह आयउ^{१४} लोगहि^{१५} कहा ॥५

१. इस पतिमें यह तीन कड़वकोंमें बँटा है । पहली पंक्तिके साथ ६ नयी पंक्तियाँ मिलाकर एक कड़वक; दूसरी-तीसरी पंक्तिके साथ ५ नयी पंक्तियाँ मिलाकर दूसरा कड़वक और चौथी पाँचवाँ पंक्तिके साथ ५ नयी पंक्तियाँ मिलाकर तीसरा कड़वक है । और इन तीन कड़वकोंके साथ २ सर्वथा नये कड़वक भी हैं । ये सभी प्रक्षिप्त हैं और परिशिष्ट में संकलित किये गये हैं ।

राजकुँवर लइ आयउ बाँभन^{१०}, सौन^{११} परी यह^{१२} वात । ६
दूँलभ आई^{१३} राइ^{१४} के ठाँई, धाये^{१५} जन^{१६} सै सात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०, बी०) नियरानेव । २-(ए०) जाई । ३-(ए०, बी०) अगमन । ४-
(ए०) धाई । ५-(बी०) पठयेव । ६-(ए०, बी०) राय । ७-(ए०, बी०) उतरेव ।
८-(ए०, बी०) अहा । ९-(ए०, बी०) दूँलभ । १०-(ए०, बी०) जाय । ११-
(ए०) जोहारे कहा । १२-(बी०) बाँभन; (ए०) कुँवर । १३-(ए०, बी०) कुछु ।
१४-(ए०, बी०) कै नाहिं । १५-(ए०) आएव; (बी०) आवा । १६-(ए०, बी०)
लोगन्ह । १७-(बी०) राजकुँवर पुनि आयेउ । १८-(बी०) सवन; (ए०) सेव ।
१९-(बी०) यहु । २०-(ए०) आए; (बी०) आय । २१-(ए०) राए । २२-
(बी०) धाइ । २३-(बी०) जने; (ए०) जना ।

३९४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूँलभ कहँ लइ आई बोलाई । राजा कूसल पूछ सँकाई^१ ॥१
दूँलभ काह^२ बहुत दिन लाये । कुँवरहि कहाँ छाड़ि कै आये ॥ २
राजा कुँवर^३ संगति^४ नियराने^५ । जोजन^६ दस एक^७ आई तुलाने ॥३
कियहि^८ मेलान एक हुत^९ गाँऊँ । मोहि पठयहि^{१०} रउरे^{११} कर^{१२} टाऊँ ॥४
दर परिगह संग बहुत अपारा । दूरि^{१३} वयान^{१४} करै तो हारा ॥५
राउ पूछि दर परिगह^{१५} साहन^{१६}, कित कर पायिनि^{१७} एत । ६
कहिसि दई उन्ह दीन्हो^{१८}, करमहि^{१९} तुम्हरे^{२०} आह^{२१} न^{२२} तेत^{२३} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) कहा । २-(ए०, बी०) लै आए । ३-(ए०) संगार्ई; (बी०) पूछेनि
कै आई । ४-(बी०) कहाँ । ५-(ए०, बी०) राजकुँवर । ६-(ए०, बी०) संगित ।
७-(बी०) नियराना । ८-(ए०) जोजन । ९-(बी०) है । १०-(ए०) कीहे;
(बी०) आपु । ११-(ए०) है; (बी०) कीन्हेउ एक । १२-(ए०, बी०) पठइन्हि ।
१३-(ए०, बी०) रउरे । १४-(बी०) ×; (ए०) के । १५-(ए०) दूर । १६-
(ए०, बी०) पयान । १७-(ए०) विगरह । १८-(बी०) कहाँ से । १९-(बी०)
करकर पायेस । २०-(ए०, बी०) दीन्हेव । २१-ए० ×; (बी०) पुंनहि । २२-
(ए०) तोहरेव; (बी०) तुम्हारे । २३-(बी०) × ।

टिप्पणी—(१) सँकाई—शंकित होकर ।

(६) साहन—सैनिक । ऐत—इतना ।

(७) तेत—जितना ।

३९५

(दिल्ली; एकडला; वीकानेर)

फुनि' वह' बात' कहेउ' लगा। जिह' विधि कुँवर कै' जागेउ' भागा ॥१
 मारग देवराइ' इक' राजा। वार तूर' राघो कर बाजा ॥२
 तै' सब राज दइ' धिय दीन्हीं। बात जो आही' कही' सब लीन्हीं ॥३
 औ मिरगावति' कै' सब कही। सुख दुख कै न कही किहू रही' ॥४
 सुनि के राजहि बहु सुख होई। लोयन जोति भयउ' फुन सोई ॥५
 रहा जो हीउ' अमावस', होइके' पूनेउ' भा तिह' वेग ॥६
 बहिरात मढ़ि मण्डप आउ, द्रुत आइ देइ वै नेग' ॥७

पाठान्तर—एकडला और वीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) जो। २-(ए०) उह; (बी०) वै। ३-(बी०) बातें। ४-(ए०, बी०)
 कहै सब। ५-(ए०, बी०) जेहि। ६-(ए०) क। ७-(बी०) जागे; (ए०) जागेव।
 ८-(ए०, बी०) देवराय। ९-(ए०, बी०) एक। १०-(ए०) तोर। ११-
 (बी०) तेइ। १२-(ए०) देए; (बी०) देइ। १३-(ए०) अहो; (बी०) आहि।
 १४-(ए०, बी०) कहै। १५-(ए०, बी०) मिरगावती। १६-(बी०) की। १७-
 (ए०) सुख दुख की कहै नहिं रही; (बी०) दुख सुख केरि कहै सब लिही। १८-
 (ए०, बी०) भई। १९-(ए०) होतेव; (बी०) होत। २०-(दि०) अमास।
 २१-(ए०) कह। २२-(ए०) पूनिव। २३-(ए०, बी०) तेहि। २४-(ए०) भर-
 हरात मढ़ि मण्डप, आए दिही उऐ टेक; (बी०) उदरत मंडप भरहरत, अएनि
 दीन्हि उन्हे थेग।

टिप्पणी—(२) वार-द्वार। तूर-(सं० तूर्य) तुरुही; वाद्य-विशेष।

३९६

(दिल्ली; वीकानेर)

फाँद सिघासन' राइ मँगावा। आगे' लइ' कुँवर[र] कहुँ आवा ॥१
 कुँवर सुनाँ आवत है राजा। आयसु भयउ' बजावहु बाजा ॥२
 बाजन बाजै लाग' निसाना। जानु' असाढ़ दइउ' घहराना ॥३
 कुँजर बहुत' आहै' सइ' साता। चिंघरहि' चलत जुरै' मैमाँता ॥४
 कटक साज कै भयउ' जो ठाढ़ा। वासुकि' डरहिं सीस न काढ़ा ॥५
 राउ देख मन' रहसा, कहसि' कि' हम घर आहै पूत ॥६
 वायँ जाइ [अस'] आवइ', गाजत' और कोउ' जमजूत ॥७

पाठान्तर—वीकानेर प्रति।

१-सुखासन। २-आगू। ३-लेइ। ४-अइस भया। ५-लगे। ६-जानहु।

७-द्वैव । ८-हस्ति । ९-अहे । १०-सै । ११-चिघत । १२-आये । १३-भये ।
१४-बामुक । १५-कै । १६-× । १७-(दि०) आस । १८-पयज कै जो ऐसे
आवइ । २०-× । २१-कवन ।

टिप्पणी—(३) निसाना-डंका । दइउ-मेव ।

३९७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राइ सिघासन' नियर जो आवा । उतरा' कुँवर तुरिय पकरावा ॥१
पिता कै' पायहिं' परेउ' जो धाई । राइ' उठाइ रहा गिय लाई ॥२
करनराइ फुनि' पायन' लागे' । राइ' गोद लै उरहि चढ़ाये ॥३
कुँवरहि लिये सिघासन बैठे' । कुँवर साथ नगर महुँ पैठे' ॥४
जनँ पुरँगन बैठे अहँ' । तेउ आपुँ उठि' देखै' गहँ' ॥५

राजकुँवर मिरगावति' रानी', बैठी रूपमनि' आइ । ६
बहुत सिघासन डाडी घोरहि, पलकिंह चढ़ी जो धाई' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) वे गुजासन ; (बी०) राय सोखासन । २-(ए०, बी०) उतर । ३-(ए०)
क । ४-(ए०, बी०) पाँव । ५-(ए०, बी०) परेव । ६-(ए०) राए ; (बी०) राय ।
७-(बी०) फुनि ; (ए०) × । ८-(ए०, बी०) पायेन्ह । ९-(ए०, बी०) लाये ।
१०-(ए०, बी०) राय । ११-(ए०) गोदहि लिहे सुखासन बैठे ; (बी०) कुँवर
के कहे सोखासन बैठा । १२-पैठा । १३-(ए०) जनि वरांगना बैठी अहीं ;
(बी०) जननी वैरगिनी बैठी अहीं । १४-(ए०, बी०) आय उन्ह । १५-(बी०)
देखत । १६-(ए०) गईं ; (बी०) रहीं । १७-(ए०) मिरगावती ; (बी०)
मृगावती । १८-(ए०) × । १९-(बी०) रुकमिनि । २०-(बी०) बहु सुखासन
डाँडी पलकिंह, चढ़ी जो आई धाई ; (ए०) हँसत सुखासन डाँडो पलगन्ह,
चढ़ी जो धाय ।

३९८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

झमकत आइ' दुवउ' चौडोला' । चेरि' सहस दोइ' साथ अमोला' ॥१
दुवउ' आनि कै मंदिर उतारी' । भेटै सब आयउ' परिवारी' ॥२
बहुतै' निछावरि भई' वधाई । अउर' वधाई ननद लै आई ॥३
कुटुंब जहाँ लहि' सब पहिरावा' । जाचक जन कहँ' बहुत दिवावा ॥४
समुदि' सबै घरहि घर आये' । परबल अखर' लिहे ते पाये' ॥५

खेलें हसैं दुहैं सेंउ^{३३}, रवन रंग रसपान^{३४} । ६
दुख विसारि सुख भोजें^{३५} कुल^{३६} महैं, दूसर^{३७} घटा^{३८} न जान^{३९} ॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) आये । २-(ए०) दुऔ ; (बी०) दुवौ । ३-(ए०) चौडोली ।
४-(ए०, बी०) चेरी । ५-(ए०, बी०) दस । ६-(ए०) अमोली । ७-(ए०) दुऔ ;
(बी०) दुवौ । ८-(बी०) उतारा । ९-(ए०) सब आइ ; (बी०) आये सब ।
१०-(ए०) परिवारा । ११-(ए०) मॅट । १२-(ए०) होए ; (बी०) होइ । १३-
(ए०, बी०) और । १४-(बी०) लहु । १५-(बी०) बहुरावा । १७-(बी०) कहूँ ।
१७-(बी०) बहुतै । १८-(ए०, बी०) समदि । १९-(ए०, बी०) आई । २०-
(ए०) पुरुब क आँखर ; (बी०) नौ निधि अखर । २१-(बी०) धाई । २२-
(ए०, बी०) सैं । २३-(ए०) फिरि रा रंग रस मान ; (बी०) रैनि राग रस मान ।
२४-(ए०, बी०) भूजैं । २५-(ए०, बी०) × । २६-(ए०) दोसर ; (बी०) दोसरि ।
२७-(ए०) भय ; (बी०) कथा । २८-(बी०) मान ।

३९९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर^१ अहेरें दिन एक जाई । मिरगावति^२ पँह ननद जो आई ॥१
कहिसि^३ काहिह रूपमनि^४ करं ठाँऊ^५ । वात चलत है^६ तुम्हरे^७ नाऊ^८ ॥२
मिरगावति^९ पूछसि^{१०} कस वाता । भौजी कहत^{११} चढ़िह रिस^{१२} गाता ॥३
बैठी कहत संगि^{१३} सो आहीं^{१४} । मिरगावति^{१५} हम पूजै नाहीं ॥४
हैं^{१६} बियाही कुलवन्ति^{१७} जो आहीं^{१८} । वह^{१९} रे उदरि^{२०} हम सरवरि नाहीं^{२१} ॥५

जो^{२२} यह वात सुनी मिरगावति^{२३}, उठेउ कोह सिर पाउ । ६
वह रहे बरी^{२४} हम ऊपर वर कै^{२५}, वात^{२६} जात^{२७} विनुसाव ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) अरुधि । २-(ए०, बी०) मिरगावती । ३-(ए०) रहिसि । ४-(बी०)
रुकुमिनि । ५-(ए०, बी०) के । ६-(ए०) गाँऊ । ७-(बी०) हुती । ८-(ए०)
तोहरी ; (बी०) तोहरे । ९-(ए०, बी०) मिरगावती । १०-(ए०, बी०) पूछै ।
११-(बी०) पूछहु काह । १२-(ए०, बी०) जरिह तोह । १२-(ए०, बी०)
सखिन्ह । १०-(ए०, बी०) अही । १५-(ए०, बी०) मिरगावती । १५-(ए०)
मैं ; (बी०) हम । १७-(ए०, बी०) कुलवन्ती । १८-(ए०, बी०) अही । १९-
(ए०) अेह । २०-(बी०) उदरी ; (ए०) अरुधी । २१-(ए०, बी०) नहीं । २२-
(ए०) अहै ; (बी०) × । २३-(ए०, बी०) मिरगावती । २४-(ए०, बी०) परी ।
२५-(बी०) जो यह । २६-(ए०, बी०) बाट । २७-(बी०) जाव ।

- टिप्पणी—(३) भौजी—भाभी ; भाईकी पत्नी । चढ़िह—चढ़ेगा । रिस—क्रोध ।
 (४) उढ़रि—अपहृता । सरबरि—बराबरी ।
 (६) कोह—क्रोध ।

४००

(दिल्ली; बीकानेर)

चेरी सुनत रुपमनि' कै अही । कहिसि जाइ ऊहो' रिस दही' ॥१
 रुपमनि' कहा कहति है साँचू । भेस भराइ' मुहि सै गहि' नाँचू ॥२
 बारक' भोरवनि ओकर' नाउँ । भोरवसि' लइ गइ आपन' गाऊँ ॥३
 नारि छतीसी वहि में देखी । तिरिया' चरित न अउर बिसेखी ॥४
 जाति नारि कै वह सेउ' लाजै । देस देस औ खँड खँड बाजै ॥५
 मोहि सरि होइ न पाई', जो' वहि' सरग चढै' धस लेइ । ६
 मिरगावति ईह सुन अनउतर, आइ ऊतर देइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

- १—सुनति रुकुमिनि । २—वहो । ३—दही । ४—रुकुमिनि । ५—फिराइ । ६—हमगै ।
 ७ बालक । ८—बोकर । ९—भोरएसि । १०—लैकै अपने । ११—त्रिया । १२—
 से । १३—पावै । १४—X । १५—चढ़ि । १६—मिरगावती यह सुनि कै ।

- टिप्पणी—(१) अही—थी । उहो—वह भी । रिस—क्रोध । दही—दग्ध हुई ।
 (३) बारक—बालक । भोरवनि—भुलावा देनेवाली । ओकर—उसका ।
 भोरवसि—भुलावा दिया ।
 (४) छतीसी—मक्कार । बिसेखी—विशेष ।

४०१

(दिल्ली; बीकानेर)

कहिसि काह में सुनै न पावा' । यह रे कहत तिह' लाज न आवा' ॥१
 कौन लाइ मुँह बोलसि नारी । बरवस पितैं तौ' मेलि उडारी' ॥२
 राकस कह जो दीजै आनीं । सो बोले आपुन' कँह रानी ॥३
 सोवत छाड़ि' बात न पूछी' । अकलै बोलहि' हम सेउ' जूझी ॥४
 तू जो किंहर सुहागिन' नाऊँ । मैकें ससुरें कितहुँ' न टाँऊँ ॥५
 हौं मैकें सुठि मनयेउ' आदर, औ' ससुरे बहु चाउ । ६
 तू बिलखै' नहिं गारो दुहुँ ठाँ, मान कितहु न साउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

- १—पाई । २—जिय । ३—आई । ४—बारि वैसि पिता । ५—अडारी । ६—से बोलवै

आपन । ७-छाँडिसि । ८-बूझी । ९-अबकै बोलसि । १०-सै । ११-तोहु कहाँ रे सोहागिनि । १२-कतहूँ । १३-मानियौ । १४-सों । १५-बिलखी । १६-ठाऊँ । १७-कतहूँ नहि साँउ ।

४०२

(दिल्ली; बीकानेर)

रुपमनि कहि' तोसेउ' को पारा' । जगमिलि आउत' सो' सब हारा' ॥१
जिह' कहै वै सब आवहि' काजा । जो वह करै सोइ वह' छाजा ॥२
काँदो कहै जो मेलेउ' ईंटा । दोख न मोर वहिरेउ यों' छींटा ॥३
लाख टकै कर मण्डप' जो' आहै' । काग बैठि तो फोरियहि' ताहै ॥४
तैं जो अबखर' मोकै' कहा' । घाट भयेउ मुहि' तिहसों' बोला ॥५
राघोबंस सुद्ध कल, परसहि' जे जगत सब पाँउ' ॥६
धूरि जो कोउ' चाँद कहँ मेले, बहुरि आउ वहि' ठाँउ ॥८

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-कहा । २-तोसों । ३-पारै । ४-आवै । ५-सै । ६-हारै । ७-जेहि । ८-आवहि वै सब । ९-सब । १०-मेली । ११-जो भरिये । १२-मण्डफ । १३-× । १४-आही । १५-फोरो । १६-ओखर । १७-मोहि कहँ । १७-बोला । १९-खाट भयेउ मुँह तोहि सै । २०-जपै जगत सब नाँउ । २१-कोइ । २१-आवै तेहि ।

टिप्पणी—(३) काँदो—कीचड़ । मेलेउ—डाला ।

(४) फोरियहि—फोड़ेगा ही ।

(५) अबखर—अनुचित बात । घाट—बुरा ।

४०३

(दिल्ली; बीकानेर')

और होइ तो रहै लजाई । रुपमनि' कहँ ढँग' करहु बड़ाई ॥१
पाउ परहु' महि' देइ' अरुीसा । पिता कै जो किरत दिन दिन बीसा' ॥२
मोर कहत' लै आयउ' तोही । सोइ फर अब देहि तू' मोही ॥३
नीक कहों' तो अबखर' पारै' । लागिसि करै साँत कर दाई' ॥४
मोहि' लगी गा' जोजन सैसाता । तोहि छाड़िसि पूछसि नहिं वाता ॥५
खरभर सुना' सासु गंगा, आई उन्ह ठाँ' धाइ ॥६
बहुवाहि' जूँझ बिसरिगा, फेकरत' सास जो पहुँचसि' आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-रुकुमिनि । २-धरि । ३-परसि । ४-देहु । ५-पिता गृह दिन करति पीसा ।

१. इस प्रतिमें पंक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर हस्तान्तरित हैं ।

६-मोरे कहे । ७-आयेउ । ७-सेइ फल देतिहसि । ९-कियेउँ । १०-औखर ।
११-पाये । १२-कै दाये । १३-हम । १४-गये । १५-सुन । १६-बहुवन कै ।
१७-तेहि ठाँउ । १८-बहुवन । १९-विसरि गई । २०-X । २१-पहुँची ।

टिप्पणी—(४) दाई-बराबरी ।

(७) फेकरत-गरजती ।

४०४

(दिल्ली; बीकानेर)

सासु जो आइ' दोउ' चुप रहीं । आपु आपु कहँ लाजहिँ' गहीं ॥१
सास कहा तुम्ह किह अस बूझी' । आपुन' मँह अस जूझ जो' जूझी' ॥२
आस पास कर लोग जो सुनई । तुम्ह कहँ सो कुलवन्ति न गुनई ॥३
जात नीच अकुली' पै जूझा' । तुम्ह कुलवन्ति' जूझ न बूझा' ॥४
जूझ तुम्हार भाँह सेउ' जानी । नैन न मिलिहिँ तबहिँ' पहिचानी ॥५
सास दोउ बरजी हरकी',^१ घर घर रहीं कुहाइ ।^६
कुँवर खेल अहेरा, ततखन घर मँह आइ समाइ'^७ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-के आये । २-दुवो । ३-लाजन । ४-तुम जुझन बूझिये । ५-आपुस । ६-न
जूझिये । ७-गनइ । ८-अकुलीन । ९-जूझै । १०-कुलवन्ती । ११-बूझै । १२-
सै । १३-तबही । १४-सासु दुवो जनि बरजी । १५-कुँवर जो खेलत अहा अहेरा,
ततखन आइ तुलाइ ।

४०५

(दिल्ली; बीकानेर)

लै खटवाट परीं दुइ' रानी । चूल्हीं आगि न गागर पानी' ॥१
कुँवर देखि यह मनहि सकाई' । इन्ह' आपुन' मँह कीन्ह' लराई ॥२
कहिसि कवन विधि करउँ मनाव' । दुहुँ मँह कोउ जाइ न पावा ॥३
उतरि जननि घर पैठेउ' जाई । बहुवाहिँ' कस राखु रुठवाई' ॥४
जननि' कहा मैं रुठवाई' । दोउ लरतैं जाइ छुड़ाई' ॥५
कहिसि चलहु सब मिलि कै, रूठी दोउ मनावहु आइ'^६ ।
सास ननद मिलि कुटवाँ लइके,^७ दुहुँ मनावइ'^१ आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-वै । २-आगि न चूल्हे गगरी नहीं पानी । ३-सोगाई । ४-ए । ५-आपुस ।
६-कहँ । ७-करै मिरावा । ८-वैसेउ । ९-बहुअन्ह । १०-रखेहु रुठाई । ११-

जननी । १२-मैं कत रे रुठाई । १३-दुवौ लरत मैं जाइ छुराई । १४-दुहुँ मिलाइ जाइ । १५-सासु ननद मिलि कुटुंब सब । १६-मिलावँ ।

४०६

(दिल्ली; बीकानेर)

पहिलैं भिरगावति^१ घर आई । जिहकै^२ चाह करत है साईं ॥१
भिरगावति^३ जो देखेउ^४ सासू । ढारे लागि नैन भरि आँसू ॥२
सा[स]^५ पोछेहि मुख आँचर लीन्है^६ । चोलि चीर आँसू मँह कीन्है^७ ॥३
जनु^८ अमरन सेउं^९ गाँग^{१०} नहाई^{११} । कै र^{१२} मँह ऊपर बरसाई ॥४
कहै मरौं मुहिं^{१३} जिय^{१४} न जाई । देखतेउं^{१५} बोल बराबर आई^{१६} ॥५
सासु कहा यह रोस न बूझेउ^{१७} । गरुई भई^{१८} रहाहु ॥६
तुम्ह साईं कै^{१९} पियारी, हिये^{२०} छाजै जो र^{२१} कराहु ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-पहिलेहि भिरगावती कै । २-जेहि । ३-भिरगावती । ४-देखी । ५-(दि०) सा । ६-लीन्हा । ७-चोला चीर सँवारि कै दीन्हा । ८-जानौं । ९-सै । १०-गंग । ११-अन्हाई । १२-रे । १३-मोहि । १४-जियै । १५-देखहु । १६-बार बरिआई । १७-बूझिये । १८-आपु गरुई भइ । १९-केरि । २०-× । २१-रे ।

टिप्पणी—(३) आँचर—आँचल ।

(६) गरुई—गम्भीर ।

४०७

(दिल्ली; बीकानेर)

अवहाँ तो वह साईं पियारी । सुनिउ नहीं यहै देत है गारी^१ ॥१
मैं ओकँह^२ का अवखर^३ कहा^४ । ननद साखि तू बैठी आहा^५ ॥२
ननद कहा इन्ह कछू^६ न बोला । पहिलहि अवखर उन्ह मुँह खोला^७ ॥३
सास दई^८ रुपमनि कर दोसू^९ । भिरगावती कह^{१०} बुझायसि रोसू^{११} ॥४
सासु कहा ओह^{१२} समुझावौं^{१३} । दुहाँ^{१४} सौति कहँ गिये लगावौं^{१५} ॥५
सास आइ रुपमनि^{१६} घर पैठेउ^{१७} । उहो मनावइ^{१८} लागि ॥६
घालसि^{१९} पानि बुझाइसि रिस, जरत अहै^{२०} उर आगि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-सौहैं भई दै गई है गारी । २-बोहि कहँ । ३-ओखर । ४-कही । ५-तो । ६-अही । ७-तुम । ८-किछुए । ९-पहिलेहि ओखर उह मुख खोला । १०-दियेउ । ११-रुकुमिनि कहँ दोसा । १२-जो । १३-बुझानेउ रोसा । १४-बोहि गै । १५-

समझाऊँ । १६-दुवौ । १७-आनि मिराऊँ । १८-रुकुमिनि । १९-बैठी । २०-
दुहूँ मनावै । २१-घालि । २१-जरति होति ।

टिप्पणी—(७) घालसि-डाला ।

४०८

(दिल्ली; बीकानेर)

सास न होहु माइ तुम्ह' मोरी । यहु दोख ओकर' अगिनित कोरी ॥१
हिया फाटि इक दिन' मरि जइहौं । तोरें जानों इहाँ' दुख पइहौं ॥२
सासु कहा रूठै न जाई' । रुठि कै कियें' साई' न पाई' ॥३
साई' कै सेउ' करहु चित लाई' । परसन होइ बहु' मया कराई ॥४
यह र' बुधि कै देखहु' मोरी । पिय सेवइ' बुधवन्ति जो' गोरी ॥५
अउर को र मोर कहा प्रतिपारे', सुनहु' एक बात ।६
चलहु भिलहु मिरगावति सेती', सान्त' होइ हम गात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-तुम । २-बहु दुख उहिके । ३-दिन एक । ४-नैहर जाऊँ बहुत । ५-नहिं
जइयै । ६-रूठै गये । ७-नहिं पइये । ८-साई' सेवा करहु । ९-तो । १०-X ।
११-देख मुँह । १२-पिउ सेवै । १३-सो । १४-और कहा को प्रतिपालै । १५-
मोरि सुनहु । १६-मिरगावती सौं । १६-साँति ।

टिप्पणी—(१) ओकर—उसका । कोरी—करोड़ अथवा बीस ।

(२) हिअ—हृदय ।

(४) परसन—प्रसन्न । मया—स्नेह; दुलार ।

४०९

(दिल्ली; बीकानेर)

कहा तुम्हार भेंट न' जाई । जो कछु कहहु' सो कियें सिराई ॥१
देउता जो बड़ आवत राऊ' । यहि' जग जरम' न मिलतेउ' काऊ ॥२
देवतहिं सानाँ' सासु बड़' मानों । जो कछु कहै सो र' परधानों ॥३
कर गहि बाँह' सासु यह' लीन्हें' । दोउ मिराई भेंट कर बीन्हें' ॥४
मुँह तो हँसी बैरि' विनसाऊ' । सौति साल उर जाइ न काऊ ॥५
खिन' एक बैठि रहौं इक ठाँई' । फुनि' उठि घर कहँ' जाहिं ।६
राजकुँअर मानै रस' रलियाँ', नित उन्ह' भोग कराहिं ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-न भेटै । २-कछु कहौ । ३-जो अउत बड़राऊ । ४-इहि । ५-जनम । ६-

मिलतिउ । ७-देउता सेंउ । ८-बड़ि । ९-जो किछु कहेहु सोइ । १०-× । ११-यहि । १२-लीन्हीं । १३-दुऔ आनि भेंट अंकम दोन्हीं । १४-मिली । १५-विनुसाऊ । १६-खन । १७-बैठी रही एकठइ । १८-पुनि । १९-घर घर । २०-(दि०) रस मानैं । २१-रली । २२-अहिनिंसि ।

४१०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर^२)

कुँवरहिं बहुत अहेर जो भावइ^१ । अहेर खेलि निसि^२ नींद न आवइ^३ ॥१
सपनहिं^४ भीतर खेल^५ अहेरा । जो जिह^६ मँह रहे^७ सो तिह^८ केरा ॥२
भोर^९ पारुधि एक आवा । प्रतिहार रुचि बात^{१०} जनावा ॥३
कुँवर कहा वहि^{११} देहु हँकारी । कहात^{१२} भई है आनि मारी^{१३} ॥४
आइ पारुधी कही जो वाता । साउज^{१४} वनहिं किहाँ किय घाता^{१५} ॥५
जिह^{१६} डर गोर^{१७} वन तजहिं, औ सब जन्तु^{१८} [पराइ]^{१९} । ६
बाघ नहिं सरवर करि सकै, सो आयउ वन राइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(ए०, बी०) अहेरा भावै । २-(ए०, बी०) अहिनिंसि खेलै । ३-(ए०, बी०) आवै । ४-(ए०, बी०) सपनेहु । ५-(बी०) खेलै । ६-(बी०) जो जेहि; (ए) जूझै । ७-(ए०) × । ८-(र०) तिन्ह; (बी०) तेहि । ९-(ए० बी०) भोर भवा । १०-(बी०) गै कही; (ए०) रजवार । ११-(ए०, बी०) बोहि । १२-(ए०, बी०) घात । १३-(ए०) अनिय मारी; (बी०) आहि हमारी । १४-(ए०, बी०) सावज । १५-(ए०) कहा है; (बी०) घनी कै । १६-(ए०, बी०) जेहि । १७-(ए०, बी०) गैयर । १८-(बी०) जात । १९-(दि०) पराहि ।

४११

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सारदूल^१ जाकर^२ है नाऊँ । वन मँह आइ^३ रहा इक^४ ठाऊँ ॥१
कलह^५ खेलै गयउ^६ अहेरें । एक वन छाड़ि आन वन हेरें ॥२
तहाँ अचम्भो अचरज^७ देखा^८ । गज मैमत परै नहिं लेखा^९ ॥३
निकट जाइ जो^{१०} देखेउ^{११} काहा^{१२} । मस्तक माझ गूद नहिं आहा^{१३} ॥४
कुम्भ विदार गूद सब खाइसि^{१४} । अउर गात नख एक न लाइसि^{१५} ॥५
अउर^{१६} बहुत साउज^{१७} सब^{१८} वन मँह, मुये परे^{१९} विनु साँस । ६
जानहु गलगज^{२०} उहि करे, तरपै^{२१} मुये तरास ॥७

१-यह पृष्ठ इमें उपलब्ध न हो सका । अतः इसका पाठ सम्मेलन संस्करणपर आश्रित है ।

२-इस प्रति में पंक्ति २ की अधोलिखी परस्पर हस्तान्तरित है ।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) सादूल; (ए०) अंगल। २-(ए०) जाकरि। ३-(ए०, बी०) आय। ४-(बी०) कै; (ए०) एक। ५-(बी०) काल्हि हौं; (ए०) कालि हौं। ६-(ए०) गएव; (बी०) गयेंव। ७-(ए०) मेरे; (बी०) समेरे। ८-(बी०) अचिरिज। ९-(ए०) पेखा। १०-(बी०) परे बहु नहिं लेखा; (ए०) आहि परे न लेखा। ११-(ए०, बी०) कै। १२-(ए०, बी०) देखौं। १३-(बी०) कहा। १४-(ए०) अहा; (बी०) रहा। १५-(बी०) स्वायेसि। १६-(ए०) लेइसि। १७-(ए०, बी०) और। १८-(ए०, बी०) सावज। १९-(ए०) तेहि; (बी०) X। २०-(ए०) अहे। २१-(बी०) गल्लिगज; (ए०) कलकजली। २२-(बी०) बहुतै।

टिप्पणी—(२) आन—अन्य।

(५) बिदार—विदीर्ण करके; चीर करके। गूद—गूदा।

(७) तरास—त्रास; भय।

४१२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर^१)

अइसा^१ चरित देखि जिउ मोरा^२। तिमिर^३ भयानेउ^४ भा बन घोरा^५। १
भरम पाउ^६ मोर सुध न परई^७। जनु^८ पाछे^९ आवत है धरई^{१०} ॥२
कल^{११} करतार मोहि लै आवा। बन छाड़ेउं तिह कहेउ^{१२} जिउ पावा ॥३
हँस कै कुँव[र] कोह रिस^{१३} बाजा। तरपा अमर बढी फुनि^{१४} गाजा ॥४
कै परवत परवत धर मारा। कै चलि आयेउ संयसारा^{१५} ॥५
राजा सपत^{१६} आजु वहि मारौं, जानों परहि खेलाइ^{१७}। ६
जीवन कहै घरी धिर हाई^{१८}, अब मो पँह कित^{१९} जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-ए० X; (बी०) अस। २-(ए०) उहि केरे। ३-(बी०) तव रे। ४-(बी०) भयावन। ५-(ए०) भये घोरा; (बी०) भवा बन छोरा। ६-पाँउ। ७-(ए०) बहुरि न पाव सुध मोर परई। ८-(बी०, ए०) जनौ। ९-(बी०) पाछू। १०-(ए०) कालि; (बी०) काल्हि। ११-(ए०) निकसेउँ; (बी०) तो हौं। १२-(बी०) सिर। १३-(ए०) तरप अंमर परी जनु गाजा; (बी०) तरप जनों अम्बर परि। १४-(ए०) संसारा; (बी०) सँसारा। १५-(ए०) विपत। १६-(ए०) जेंव घर घर थर अहे; (बी०) जौ खंखर खरह भागिहि। १८-(ए०) जियत कि मो पह; जियत न मो पँह।

४१३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर मिरायउ हँवर हीया^१ । औ मिराइ [असिवर]^२ कर लिया^३ ॥१
 वान सान दइ पानी धरी^४ । जावस^५ साथि लै उपकरी^६ ॥२
 औ पारुधि आगें कै लीन्हा^७ । चलु दिखाउ वह जिह बन चीन्हा^८ ॥३
 रँगि पारुधी आगे भया^९ । सारदूर^{१०} जिह^{११} बन ले^{१२} गया^{१३} ॥४
 सार्वहिं^{१४} साउज^{१५} औ कुंजरा । मुयै बाघ जो नर आगें करा^{१६} ॥५
 फिरिकै^{१७} सारदूर^{१८} पह बन मँह आहँ^{१९}, अब मो पँह कित^{२०} जाय ।
 मारों आजु संघारों^{२१} भूपर^{२२}, सपत पिता कै खाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(बी०) कुँवर मिराइ हेवरहिं लिया ; (ए०) गज से वह सारे हिया । २-(दि०)
 आसव ; (ए०) असि । ३-(ए०) किया । ४-(ए०) दै पानी धरई ; (बी०) दै
 पानी धरावा । ५-(बी०) चवस ; (ए०) सावज । ६-(बी०) वेगर न आवा ;
 (ए०) से आय विलंब अेह करई । ७-(ए०) लीन्ही । ८-(ए०, बी०) जेहि बन है ।
 ९-(ए०) चीन्ही । १०-(ए०, बी०) भयउ । ११-(बी०) सारदूल ; (ए०) सार
 डाले । १२-(बी०) जेहि । १३-(बी०) तहै लै । १४-(ए०, बी०) गएउ । १५-
 (बी०) साँचेहु सारदूल । १६-(बी०) मुये बाज जोर केहि केरा ; (ए०) मुए बाघ
 जीउ रल कै करा । १७-(बी०) फुर कै । १८-(बी०) सरदूल ; (ए०) सारडोल ।
 १९-(ए०, बी०) × । २०-(ए०, बी०) कत । २१-(बी०) विघाँसाँ । २०-
 (ए०) भुववर ; (बी०) × ।

टिप्पणी—(१) हँवर-घोड़ा ।

(२) जावस-जितने भी ।

(६) कित-कहाँ ।

४१४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर^१ पारुधी का मुख चहा । तों चढ़ रूख देख अस कहा ॥१
 पारुधि^२ आई^३ रूख एक चढ़ा । कुँवर मार मन^४ भीतर कढ़ा ॥२
 जावस^५ वान फोंक धरि^६ लीतसि^७ । फिरि फिरि ढूँढै वरवर^८ कीतसि ॥३
 देखत^९ सूत^{१०} हिय विनु संका^{११} । जै^{१२} सिरजा ताहू सेउ वंका^{१३} ॥४
 कुँवर^{१४} कहा जो सोवत मारों । पुरुखन्ह मँह^{१५} पुरुखारथ हारों ॥५
 अब जगाइ कै हनों विचारी^{१६}, करों सात दुइ खण्ड ।
 नौ खँड^{१७} नौ खँड पठावँउं^{१८}, जीउ पठवों^{१९} ब्रभण्ड^{२०} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०) कह । २-(बी०) पारुधी ; (ए०) सुधी । ३-(ए०, बी०) जाय । ४-(बी०) मारि रिस । ५-(बी०) चवस । ६-(बी०) भरि । ७-(ए०, बी०) लीतिसि । ८-(ए०) तरुवर ; (बी०) वान तर ऊपर । ९-(बी०) देखै । १०-(बी०) सोवत । ११-(बी०) बन निःसंका (ए०) पत सेठ फिरे सिगारा । १२-(बी०) जेहि । १३-(ए०) तेहू से बाँका बलीं जेहि मारा । १४-(ए०) जो रे । १५-(ए०) सौं । १६-(बी०) अब जाइ कै हतौ पचारी ; (ए०) आनज देएह विचारहु । १७-(ए०) नौ ; (बी०) सै । १८-(बी०) खण्ड कै । १९-(ए०) पठवौं ; (बी०) पठावौं । २०-(बी०) पठाऊँ ; (ए०) महि औ । २१-(बी०) ब्रम्भंड ; (ए०) बरभंड ।

टिप्पणी—(२) रुख-वृक्ष ।

(३) जावस-जितने भी ; फोंक-नुकीला ; तीक्ष्ण । धरि लीतसि-रख लिया । बरबर-बर्बर । कीतसि-कहाँ ।

(४) सूत-सोया ।

(५) पुरुखारथ-पुरुषार्थ ।

(७) ब्रभण्ड-ब्रह्माण्ड ।

४१५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर वान गुन' फोंक सँभारी^१ । काल्हि सोवत हनों विडारी^२ ॥१
तुरिय मँदर^३ फुनि मेलसि भुइँ हाल^४ । नींद गयेउ^५ जागेउ जमकाल^६ ॥२
दुहुँ जम सौं भौ दीठ^७ मेरावा । काल्हि काल गाल चँहि खावा^८ ॥३
गरजा^९ पूँछि पुहुमि धरि मारिसि^{१०} । पुहुमि मार सिर ऊपर तारिसि^{११} ॥४
गरज^{१२} के सबद पूरि बन भरा^{१३} । जनु^{१४} अरराय अम्मर खसि परा^{१५} ॥५
उठा^{१६} अकूत^{१७} अँदोर प्रिथमी, सात दीप नौ खण्ड । ६
[सरग^{१८} पतार] सेस खरभरेउ^{१९}, इन्द्र, डरा^{२०}, ब्रहमण्ड^{२१} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) कर ; (बी०) × । २-(बी०) सँभारा । ३-(ए०) गालहि सोत हनी तरुवारा ; (बी०) कालहि सौं वह हनेउ पचारी । ४-(ए०) जीउ मंडर ; (बी०) मंडल । ५-(बी०) घालिह भुइँ हता । (ए०) मेलिसि भरी । ६-(बी०) गई ; (ए०) बन्द कियेव । ७-(बी०) जमकला ; (ए०) जागेव संभरी । ८-(बी०) जस । ९-(ए०) डीढ़ि ; (बी०) ट्रिस्टि । १०-(ए०) चाह फुनि खावा ; (बी०) जो काल सतावा । ११-(बी०) गरज । १२-(बी०) मारी । १३-(बी०) सारी ; (ए०) आनिसि । १४-(ए०) गरजत ; (बी०) गरज कै । १५-(ए०) पौरे रह ।

१६-(ए०) जनि ; (बी०) जनौ । १७-(ए०) चहा । १८-(ए०) परा । १८-(बी०) अकुताइ ; (ए०) X । २०-(बी०) सपत । २१-(बी०) खरभरे ; कुँवर भरि परेव । २२-(बी०) डरिय ; (ए०) मही औ ।

टिप्पणी—(५) भरराय-टूटकर । अम्भर-अम्बर ; आकाश । खसि-गिर ।

४१६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

[तमकि तरपि विजुली वर' धावा] । [भोंह के मटकै^३ तुरिय सिर आवा]^१ ॥१
तब' लगि कुँवर गहेउ कर खाँडा' । मारसि टूटि भयउ द्स' खाँडा' ॥२
सर गिय' सेउ' गिर वेगर भये'० । घर सँउ'^{११} पाव टूटि कै गय'^{१३} ॥३
कर सर'^{१३} तरकि कुँवर उर लागा । द्विये समान सुई जउ'^{१५} तागा ॥४
आउ घटा'^{११} जस सुनत'^{११} कहानी'^{११} । कलिजुग भई'^{१६} यहेउ तिह'^{१६} बानी ॥५
सिंघिनि बन मँह लागि बियाये'^{१०}, सुान गयन्द'^{११} न चाह ।६
कुंजर जूह जोरि कै आये'^{११}, आयसु'^{१३} दाउ'^{१५} न आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) पर । २-(ए०) मटक । ३-(दि०) पूरी पंक्ति नहीं है । ४-(बी०) तौ ।
५-(ए०) खण्डा । ५-(ए०, बी०) भयेव दुइ । ७-(ए०) खण्डा । ८-(दि०)
गुन । ८-(ए०) सौं ; (बी०) सै । ९-(ए०, बी०) । १०-(बी०) होई । ११-
(ए०, बी०) सै । १२-(बी०) गये सोई । १३-(ए०, बी०) सिर । १४-(ए०) जैव ;
(बी०) जनौ । १५-(बी०) आदि कथा ; (ए०) आध गहा । १६-(ए०) सपत ।
१७-(ए०) कीनी । १९-(बी०) भयेउ ; (ए०) भौ । १९-(बी०) एहि एहि ;
(ए०) एहि । २०-(ए०) बे आपै ; (बी०) बियाँइ । २१-(ए०) गयन्दिन्ह ;
(बी०) गयन्द मँह । २२-(बी०) X । २३-(बी०) अब अस ; (ए०) आएस ।
२४-(ए०) दाव ।

टिप्पणी—(६) बियाये-प्रसव करने ।

(७) जूह-जूझ ; छुण्ड ।

४१७

(दिल्ली; बीकानेर)

आगे भा मींगल' मैमन्ता । सुँड' उदारत आवइ' दन्ता ॥१
ततखन कर सौं' सर' थराना' । हाथिउ' आइ संगित नियराना ॥२
सुँड' पसार कहिसि पा' धरउ' । निकंटक तोर [......]'^{१०} करउं'^{११} ॥३
तरका कर सँती सर टूटा'^{१३} । नागा जानु उर अगिन छूटा'^{१३} ॥४

नै कुँभस्थल मँह^{१५} अस^{१५} लागा । चिंघरत हस्ति^{१५} जिउ^{१५} तजि भागा ॥५
 सिंघिनि^{१५} एकै पृत जनि^{१५}, वन मण्डन^{१५} रन घत्थ^{१५} ॥६
 कुम्भ विदारन सापुरुस^{१५}, सुँठि^{१५} गरुव कलत्थ^{१५} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-मैगल । २-सुँडि । ३-आवै । ४-सै । ५-सिर । ६-विहराना । ७-हस्ती ।
 ८-सुँडि । ९-लै । १०-(दि०) सम्भवतः शब्द की छूट । ११-काट तोरि
 निकट का करें । १२-उर तरकी सिर सेती टूटा । १३-तरक जनो उरग नग
 छूटा । १४-अस होइ । १५-हस्ती । १६-जुझ । १७-सिंघनी । १८-जनै ।
 १९-मण्डल । २०-ढीठ । २१-सपरस । २२-मुठिहि । २३-गल अहीठ ।

४१८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दोउ सिंह दोउ जम भारी^२ । दोउ काल कालहिं सेउं^३ भारी ॥१
 दुँडु धरि^४ ऊपर^५ खाइ^६ पछारा । दूनों जिय काल सँतारा^७ ॥२
 जो सिरजा मरिवै कँह^८ आवा । सो किह^९ नहिं^{१०} काल^{११} सतावा ॥३
 मुये पाछु^{१२} कोई न^{१३} रहई^{१४} । सो [झूठा]^{१५} जिउ न जो^{१६} गहई^{१७} ॥४
 कहाँ सो बल^{१८} जिह^{१९} सायर मँथा^{२०} । कहाँ सो धुन्धमाल^{२१} कै कथा^{२२} ॥५
 कहाँ सो हरिचन्द्र है सतवन्ती^{२३}, कित^{२४} रावन कित^{२५} राम ।६
 कित कौरो पँडवा^{२६} बली^{२७}, नाँ थिर छाँइ न^{२८} घाम ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) दुवौ सिंघ दुवौ । २-(ए०) गरजा मथा सिंह जिमि भारी । ३-(ए०,
 बी०) काल सों । ४-(ए०) दुओ धरनि; (बी०) दुवौ घरा । ५-(ए०, बी०) पर ।
 ६-(ए०, बी०) खाँय । ७-(बी०) दुओ जिय मिलि गये अकारा; (ए०) दुओ
 जिय मिलि किये अकारा । ८-(ए०) जेअ । ९-(बी०) कहुँ । १०-(ए०) को;
 (बी०) कहु । ११-(ए०) इन्हि । १२-(ए०) कलि न । १३-(ए०) बझ; (बी०)
 बाजु । १४-(बी०) ना; (ए०) नहिं । १५-(ए०) रहे । १६-(ए०) झुग; (दि०)
 जुटा । १७-(बी०) जो जीवन । १८-(ए०) कहै; (बी०) कहई । १९-(बी०,
 ए०) बली । २०-(बी०) जिहि; (ए०) जे । २१-(ए०) मथा परमथा । २२-(ए०)
 मालधुंध । २३-(बी०) गाथा । २४-(बी०) सतवति । २५-(बी०) कत । २६-
 (बी०) कत । २७-(ए०) ×; (बी०) कित पँडवा । २८-(ए०, बी०) अबला
 बली । २९-(बी०) रहइ ।

४१९

(दिल्ली; बीकानेर)

कहाँ सूर^१ विक्रम^२ सकबन्धी^३। कित अरजुन वाना उर सन्धी^४ ॥१
 कहाँ सो तिरिया^५ सीता सती^६। कहाँ दुरपदी पाँचहु रती^७ ॥२
 कहाँ भोज दसचार^८ निदाना^९। परकाया परवेस^{१०} जो जाना ॥३
 सँकर बचा सिध^{११} जो करता। कर पसार जिह कै^{१२} सिर धरता ॥४
 चालिस^{१३} लाख बरिस सो जिया। ताहूँ आउ^{१४} अमर नहिँ किया ॥५
 सो बाउर दोख^{१५} चित बाँधै^{१६} हरिवन्द परहि^{१७} भुलाइ ॥६
 जाकर भुवन पौन^{१८} पानी, बरु तिह का करत गराइ^{१९} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-सो । २-(दि०) विक्रम । ३-अर्जुन जिन्ह बनवारी संधी । ४-असत्री । ५-सती सीता । ६-सरता । ७-चारि दस । ८-निधाना । ९-परवेसु । १०-बचा सूर । ११-जेहिका । १२-चारिस । १३-तेहुह आपुहि । १४-सो बावर धोखेंहि । १५-बँधे । १६-पुरी । १७-पावन औ । १८-पर तेहि ककर कलाइ ।

टिप्पणी—(१) विक्रम—विक्रमादित्य; उजैनका एक प्रसिद्ध नरेश । सकबन्धी—वामुदेवशरण अग्रवालने पदमावत (४९१/४) में इसका अर्थ साका बाँधने या चलनेवाला किया है । इस पर उनकी टीका है—‘साकाका मूल अर्थ शक संवत था । पीछे केवल संवत्के लिए भी वह प्रयुक्त होने लगा ।’ ‘विक्रम साका कीन्ह’ में वही अर्थ और मुहावरा है । आगे चलकर किसी अलौकिक यश या कीर्तिके कामके लिए साका शब्दका प्रयोग होने लगा । सकबन्धी उस युगका पारिभाषिक शब्द ज्ञात होता है । जो स्त्रियोंसे जौहर करवाकर युद्धमें लड़ते हुए प्राण देनेका व्रत लेता था वह सकबन्धी कहलाता था । ‘हमारी दृष्टिमें इसका सीधा-सादा अर्थ है—शकोंको बाँधनेवाला और यह शकारिके पर्यायवाचीके रूपमें प्रयुक्त हुआ है । शकारिके रूपमें विक्रमादित्यकी जगत् ख्याति है । सन्धी—भेदनेवाला ।

(२) तिरिया—त्रिया; स्त्री । दुरपदी—द्रौपदी; पाण्डवों की पत्नी । रती—अनुरक्त ।

(३) भोज—परमार नरेश भोज, जिनकी ख्याति विद्वत्ताके लिए है । दस-चार—चौदह, यहाँ तात्पर्य चौदह विद्यासे है । निदाना—निष्णात । परवेस—प्रवेश ।

४२०

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवरहि परत पारुधी धावा । ततखन उतरि हँख सँउ' आवा ॥१
 कुँवरहि जो देखीं टखटोरी' । पुरुब' लिखा विधि लाउ' न खोरी ॥२
 इकछत राज बहुत कै गये । विधि क' चरित न एक पर' भये ॥३
 ई' अकास भुई को न कहावा' । जो' उतरि पिरथमी' मँह' आवा ॥४
 हमहँ कँह आहे यहि' पंथा । रावल' चलहि रहहि' पै कन्या ॥५
 अबन्ता समै भला', एक न आउ घटन्त ॥६
 धन जोवन सँग' साथ सँ', घरी माँझ' विहरन्त ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-से । २-देखै । ३-टखटोरी । ४-पूर्व । ५-लगै । ६-कै । ७-चरित्र आन पै ।
 ८-आपुहि अकसर दोसर न भावा । ९-जो रे । १०-प्रियिमी । ११-X । १२-
 एह । १३-खल । १४-रहै । १५-आवत सब भल । १६-परिवार सँउ । १७-
 घरी एक मैं ।

टिप्पणी—(१) परत—गिरते ही । ततखन—तत्क्षण ।

(२) टखटोरी—टटोल कर । पुरुब—पूर्व ।

(३) इकछत—एकछत्र ।

४२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर क जीउ इँदरासन गया । इहाँ रहै कसठा कै' कथा ॥१
 मरवे कँह' का तरुन तरेसा' । काल फिरै कर गहे जो केसा ॥२
 तरुनाई केर' पछतावा । मर तरेस' पछताउ' न आवा ॥३
 कुँवर अकेला' वन' कँह' जाई । राजा सँउ' काहू कह' आई ॥४
 जो' कलु' वात इहाँ कै' अही । राजा सँउ' एक एक' तै' कही ॥५
 सीस धुनत पाना कै', ततखन' राजा' लाग गुहार' ॥६
 दौर परे' घर बाहर, जानहु' सरग क' थायी धार' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) इह राही का साथ की; (बी०) रही कथा की । २-(ए०) मरावै क; (बी०)
 मरिवै कहूँ । ३-(बी०) तरुनाप तेरस; (ए०) तरुना नरेस । ४-(ए०) तरुने
 कर आवै; (बी०) तरुनापै कर । ५-(ए०) नरेस । ६-(बी०) पछिताव । ७-
 (ए०, बी०) अकेल । ८-(बी०) आपुन । ९-(ए०) मर । १०-(ए०) आवत ।
 ११-(बी०) कहा कोइ; (ए०) केहु कह । १२-(ए०) जस । १३-(ए०, बी०)

कुछु । १४-(ए०, बी०) की । १५-(ए०) ×; (बी०) सै । १६-(ए०) सो । १७-(ए०) लागै; (बी०) कै । १८-(बी०) पनगति; (ए०) वपकै । १९-(ए०) × । २०-(बी०) राना । २१-(ए०, बी०) गोहारि । २२-(बी०) रोर परा; (ए०) सोच करत । २३-(ए०) ×; (बी०) जनौ । २६-(बी०) कै । २५ (ए०, बी०) धारि ।

टिप्पणी—(१) इन्द्रासन—स्वर्ग । कष्ठा—काष्ठ; शरीर ।

(२) मरवे कहँ—मरने का । का—क्या । तरेसा—वृद्ध ।

४२२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आपु आपु कहँ लाग गुहारी । हाथिन' ऊपर परी अँवारी ॥१
जो जिह सो तिह' धावा । वार बूढ़ कोउ' रहा' न आवा' ॥२
घोरहि' बाखर पाखर परे' । लइके धाइ' हाथिन्ह धरे' ॥३
सुनिके छल' उर उठी' जो' आगी' । भीतर जनु' बहिराइ' जो' लागी ॥४
धावत राजा पेग पचासा । उढकि परा निकसि गइ' साँसा ॥५
ततखन लै चौडोल तुलानी', राजा लीनहि' बाँहि ॥६
पुन जे कहँ' धरम संग साथी' सरगहुँ राज कराहि' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(ए०, बी०) हाथिन्ह । २-(बी०) जो जैसेहि तैसेहि उठि; (ए०) [जे] जैसे थी तैसे । ३-(ए०, बी०) कोइ । ४-(बी०) रहै । ५-(बी०) पावा । ६-(ए०) घोरन्ह; (बी०) घोरेहु । ७-(ए०, बी०) परी । ८-(ए०) लैके धाए; (बी०) लैने आये । ९-(ए०) धरी; (बी०) हाथहिं धरी । १०-(बी०) राउ । ११-(बी०) उठी उर । १२-(बी०) × । १३-(ए०) कै अ ऐजन झी लगी । १४-(बी०) जारि; (बी०) जरि; (ए०) जनि । १५-(बी०) बहिर होइ; (ए०) भरण । १६-(बी०) × । १७-(बी०) सै । १८-(ए०, बी०) तुलाना । १९-(ए०) राजहिं लीतिन्हि; (बी०) लिहिसि । २०-(बी०) × । २१-(बी०) साथहिं । २१-(ए०) नबी सेख धरम संग, सरगहु रा..... ।

टिप्पणी—(१) अँवारी—झल ।

(५) उढकि परा—टोकर लगी ।

४२३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

करनराइ तिह' आइ तुलाना' । राउत पाँयक बहु समानाँ' ॥१
पारुधि चाल कटक कै' पाई' । किहिसि गुहार तुलानेउ' आई ॥२

कुँवरहि तजि कै आगे धावा । देखत करनराइ नियरावा ॥३
 सीस फेकारि पुहुमि' गा लोटी । कुँवर गयेउ छाड़ि कलखूँटी' ॥४
 कल' का मरम न जानै कोई । आँख क मँटक काह' दहुँ होई ॥५
 धरम करन्ते भोग कर', मनहि परसु' करतार' ॥६
 लछिमी' होइ' न आपुनी', बिरसि लेहु' संयसार' ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) करनराय तँह; (ए०) जब राय फुनि । २-(ए०, बी०) आय तोलाना । ३-(बी०) बहुत संग माना; (ए०) बैठ सुजाना । ४-(बी०) की । ५-(ए०) पारहि झलक गंग लै जाई । ६-(बी०) कहिसि गोहारि तोलानी आई; (ए०) कहै गोहारि तोलानी आई । ७-(ए०) फिरावा; (बी०) पुनि आवा । ८-(ए०, बी०) धरनि । ९-(बी०) कल खोटी । १०-(ए०, बी०) कलि । ११-(बी०) के मटकै का । १२-(ए०) कै । १३-(बी०) मन परसहु । १४-(ए०) पुसप तार का तार । १५-(बी०) लही । १६-(ए०, बी०) होय । १७-(बी०) आपनी; (ए०) आपन । १८-(बी०) बिलसि; (ए०) जोरे परस १९-(ए०, बी०) संसार ।

टिप्पणी—(१) राउत—राजपुत्र; श्रेष्ठजन । पाँयक—(सं० पदातिक > पाइक) पैदल सैनिक ।

४२४

(दिल्ली; एकडला'; बीकानेर)

करनराइ' आपु' भुइँ भारा । उर सारै' कहँ काड़ि' कटारा ॥१
 लोगन्हि' करहुत लीन्ह कटारा । धरा पल्लै चाहे भुँइ मारा' ॥२
 राउत पाँयक रोवहिँ परे । लोटहिँ भुँइ महँ माटी भरे' ॥३
 अइ' करतार काह यह भया । हमहँ कहँ न साथ लै गया ॥४
 आन क मीचु उठ तिह मरई' । जो बिधि लिखा सोइ' पै करई' ॥५
 रोवहि हस्ति घुर आगहि टाढ़े', रोवइ अमर पुकार' ॥६
 रोवइ' इँद्र अपल्लरी' लीहँ', वासुकि रोउ' पतार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) करनराय; (ए०) लिए । २-(ए०, बी०) आपुहि । ३-(ए०, बी०) मारे । ४-(ए०, बी०) लीन्ह । ५-(बी०) लोगन; (ए०) आगन्ह । ६-(बी०) धरे पाँलै सिर भुइँ दै मारा; (ए०) धरा न रहै तोर कर बारा । ७-(ए०) लोटहिँ पुहुमी मानुस भरे । ८-(बी०) ऐ; (ए०) त । ९-(बी०) कहे; (ए०) कस ।

१०—(बी०) आन क मीचु आन न मरई । ११—(ए०) सो रे । १२—(ए०) होई ।
 १३—(बी०) रोवहि हस्ती औ घोरा ठाडे; (ए०) रोवहिं हसती घोर । १४—(ए०)
 गहि ठाठ तुरी तुलार; ठाडे रोवहिं अवर पुकार । १५—(ए०, बी०) रोवहिं ।
 १६—(ए०, बी०) अपठरा । १७—(ए०, बी०) × । १८—(ए०) औ वामुकि;
 (बी०) रोवै ।

४२५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आदि अन्त सेउ^१ ईहै^२ वानी । इह महुँ जे हुत^३ पुरुख^४ विनानी ॥१
 समुझि सँभार राइ पहुँ आयै^५ । फेकरे सीस पाय वह लायै ॥२
 राइ समुझि करु पिता [उधारो^६] । कलखूँटी कर काठ बुहारो^७ ॥३
 मरि के कोइ बहुरि न आवा^८ । सो करु राज न होइ पगवा ॥४
 काकर वाप काहि^९ कर वारा^{१०} । भया मोह आहै सँयसारा^{११} ॥५
 महि होइह सब विरथै, रहँहिं वरलो उर संघार^{१२} । ६
 पाँच देवस मन वृझि कै, कछु उटवहु उपकार^{१३} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) से आह; (ए०) से भई । २—(ए०) अह; (बी०) यह । ३—(बी०) उन्ह
 मँह जो होत; (ए०) उई से जीअ हुती । ४—(ए०) लोग ५—(ए०) गये । ६—
 (बी०) फिकरि सीस पाइ उन्ह लाये; (ए०) जाय ठाढ़ आगे होय भये । ७—(दि०)
 निवा उर धारो; (बी०) उभारु; (ए०) समुझि की महवार ठारु । ८—(बी०) मुकुती
 होइ कलि का तेहि भारु; (ए०) महयै कहै कहु कै पारु । ९—(ए०)...त कै
 बहुरि कोइ आवा । १०—(बी०) कहे । ११—(ए०) जब कोइ देखै चरित
 अपारा । १२—(ए०, बी०) संसारा । १३—(बी०) अत्रिया होइहिं सब प्रिथिमी,
 रहै न कोई पार । १४—(ए०) पंक्ति ६-७ नहीं हैं ।

टिप्पणी—(१) ईहै—यही । विनानी—विशानी ।

(२) बुहारो—एकत्र करो ।

(५) काकर—किसका । काहि—किसका ।

४२६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

वहिं समुझाइ कुँवर पहुँ आए । दोउ^१ सिंघ वरके विगराप ॥१
 कुँवरहि बाहि सिंघासन^२ लीतँहि^३ । चले वेग कै^४ विलम्ब न कीतँहि^५ ॥२

१—इस प्रति में प्रथम पंक्ति पूरी और पाँचवी, छठी और सातवी पंक्तिके पूर्वार्ध रिक्त हैं ।

रोवत पीटत फेकरत चले^१। पाँच^२ कमर सीस उर खुले^३ ॥३
 ओलँहाँ^४ नगर सुनी^५ यह बाता। काहू कँह^६ न रही सुधि गाता ॥४
 जब सेउ कुँवर भयउ असवारू^७। ईह^८ दुहुँ^९ कै जिय परेउ^{१०} खभारू^{११} ॥५
 मिरगावति^{१२} औ रूपमनि^{१३} दूनो^{१४}, बिनु^{१५} जिय साँस अधार^{१६}।
 फिरत अहँ^{१७} मँदिरा अपनै, मुहि^{१८} का र^{१९} करिहु करतार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) बोहि। २—(ए०, बी०) दुवौ। ३—(ए०, बी०) मुखासन। ४—(ए०)
 लीतिन्हि; (बी०) लीन्हा। ५—(बी०) ×। ६—(ए०) कीतिन्ह; (बी०) कीन्हा।
 ७—(ए०) फुकरत चाले; (बी०) फिकरत चले। ८—(ए०, बी०) बाँधे। ९—
 (बी०) उघेले। १०—(बी०) उथल। ११—(ए०).....नग मसी। १२—(बी०)
 काहु कहुँ। १३—(बी०) असवारा। १४—(ए०) उन्ह; (बी०) इन्हि। १५—
 (बी०) दूनौहू। १६—(ए०) परा। १७—(ए०, बी०) खभारा। १८—(बी०)
 मिरगावती। १९—(बी०) रुकुमिनि। २०—(ए०) ×; (बी०) दुवौ। २१—(ए०) ×।
 २२—(ए०) औहार। २३—(बी०) रहीं। २४—(बी०) ×। २५—(ए०, बी०)
 काह। २६—(बी०) करिय।

४२७

(दिल्ली; ; बीकानेर)

लूक बरीं^१ चेरीं सब धाईं। पँवरि^२ वार पूछै कँह आईं ॥१
 मिरगावति^३ मन माँझ सकानीं। करों सोइ रह^४ अकथ कहानी ॥२
 वेगा परा सुनेउ हों केऊं^५। जब लगि नाँहि सुनेउ^६ जिय देऊं ॥३
 चेरीं सुनिके फिर बहुराईं^७। ईंदर के सभा गयेउ तुम्ह साईं ॥४
 का कहि हा कहि कहत^८ जिय दिया। कलजुग मँह अइसा किन^९ किया ॥५
 सरि रचि जरीं पिय लै गवनीं^{१०}, सो साका परवान^{११}।
 सती सोइ सत नागर^{१२} गुनिये, हा कहि देइ परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—कूक परीं। २—पवरी। ३—मिरगावती। ४—माँहि सुगानी। ५—करों सोइ जेहि
 रहै। ६—पूक परी सुनै है केऊ। ७—नहिं सुने। ८—पुनि फिरि आईं। ९—इन्द्र
 की। १०—का कह का कह हा कहि। ११—ऐस किनि। १२—सरा रचि जरीं साईं
 लै। १३—अपने सीस के परवान। १४—कर।

टिप्पणी—(१) लूक—मशाल। बरीं—जली।

(४) बहुराईं—लौटो।

(६) सरि—चिता। साका—वासुदेव शरण अप्रवालके मतानुसार इसका

तात्पर्य विलक्षण पराक्रमसे है। उन्होंने मुहणोत नरसी (२।२८९) के प्रमाणसे इसका अर्थ बड़ा युद्ध भी दिया है। किन्तु साकाका यह भाव यहाँ घटित नहीं होता। परवान-प्रमाण।

(७) परान-प्राण।

४२८

(दिल्ली; बीकानेर; चौखम्भा)

रुपमनि^१ फुन^२ वैसहिं मरि गई। कुलवन्ती सत सेंड^३ सती भई ॥१
बाहर वह^४ भीतर यह^५ रौरो^६। घर बा[हर]^७ मँह^८ उठा अँदोरो^९ ॥२
आजु सँघारत^{१०} पुहुमि^{११} समेंटहिं^{१२}। जो^{१३} जो सिरजसि^{१४} सो सब मँटहिं^{१५} ॥३
गंग तीर लइके सरि रचा^{१६}। पूजी आवधि^{१७} किही हुत वचा^{१८} ॥४
राजा संग^{१९} रानी चौरासी। लइ सब गवनी वै निरासी^{२०} ॥५

मिरगावति^{२१} औ रुपमनि^{२२} लइके, जरीं कुँवर क साथ^{२३}।६
भसम भई सब^{२४} जरि कै^{२५}, चोन्ह रहा नै गात^{२६} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और चौखम्भा प्रति—

१-(बी०, चौ०) रुकुमिनि। २-(बी०, चौ०) पुनि। ३-(बी०) सै; (चौ०) सों। ४-(बी०) ×। ५-(चौ०) वह; (बी०) परिगा। ६-(बी०) रोरा; (चौ०) होई। (दि०) बा। ७-(बी०) ×। ९-(बी०) अँदोरा; (चौ०) घर बाहर को रहै न जोई। १०-(बी०) संघ रन। ११-(बी०) पुहुमी। १२-(चौ०) विधि वर चरत न जानै आनू। १३-(बी०) ×। १४-(बी०) सिरजा। १५-(चौ०) सो सिरजै सो जाहिं निरानू। १६-(बी०) गंग तीर लै सरा रचावा; (चौ०) गंग तीर लै सरा रचा। १७-(बी०, चौ०) अवधि। १८-(बी०) किही होती बाचा; (चौ०) कही जो बाचा। १९-(चौ०) संग जरीं। (बी०) लै सब गौनी वै रनिरासी; (चौ०) ते सब गये इन्द्र कबिलासी। २१-(बी०, चौ०) मिरगावती। २२-(बी०, चौ०) रुकुमिनि। २३-(बी०) के संघात; (चौ०) लैके जरी कुँवर के साथ। २४-(बी०) वै। २५-कै ऐसेहु। २६-(बी०) जिउ न हुत गात; (चौ०) भसम भईं तिल एकमें, चिन्ह न रहा गात।

टिप्पणी—(२) रौरी—कोलाहल।

४२९

(दिल्ली; बीकानेर)

छुट बड़ कोउ नहि रहहि अकेला^१। करना केर^२ चरित इह^३ खेला ॥१
बेगर सरि^४ रचि वारी जरीं^५। औ नाउनिहि सरि ऊपर परीं^६ ॥२

जरीं^१ भवायत^२ पान खियावत । औ ते जरीं^३ जो पानि^४ पियावत ॥३
जरीं^५ जो कापर^६ देत सँवारी । धाँवी जरीं^७ छाडि बरि नारी ॥४
औ ते जरीं^८ करत जेवनारा^९ । बाँभन पै न जरी सुनारा^{१०} ॥५

आधा नगर आधक कछु^{११} निखसा, जरि के भये^{१२} मँसिवान^{१३} ।६
विनु जिय^{१४} नगरी क जस^{१५} कथा, वाहि^{१६} लगि सब क^{१७} परान ॥७

पाठान्तर—श्रीकानेर प्रति—

१-छोटी विधि कोइ रहे न काला । २-करत केरे । ३-सब । ४-सरा । ५-सब
जरे । ६-आ नाऊ ते सब जर । ७-जरे । ८-तंवारे । ९-जरे । १०-पानी ।
११-जरे । १२-कपरा । १३-जरे । १४-जरे । १५-ज्योनारा । १६-एक न
बामन जरेउ भुआरा । १७-कछु । १८-भा । १९-मसियान । २०-जिउ ।
२१-कैसी । २२-वाहि । २३-सबका ।

पाठान्तर—(१) करना—कता; इश्वर ।

(२) वारी—घरलू काम करनेवाली स्त्रियाँ । (२) नाउनिहि—नाइन ।

(६) निखसा—निकला । मँसिवान—राख ।

४३०

(दिल्ली; श्रीकानेर)

महते नेगी जो हे^१ बुधारी^२ । तिह^३ आपुन^४ मँह कहाँ^५ विचारी ॥१
जो कछु होनी कँह^६ सो भँटा^७ । विधि का लिखा जाइ न मेटा ॥२
सो र^८ करहु जिह^९ राज रहाई । हमरे रोयें^{१०} जिउ^{११} न जियाई ॥३
वइ कँह चलहु तिरिया कै राजू । हम पर वीस वरस करु राजू^{१४} ॥४
करन^{१५} राइ कँह घर लै आये । आन सिंघासन पर बैठाये^{१६} ॥५

सब नेगिह^{१७} मिलि माथा नावा^{१८}, जुगजुग भोंजहु राज ।६
तुम्ह हमरें सिर ऊपर राजा, चलै राज कर काज ॥७

पाठान्तर—श्रीकानेर प्रति—

१-अहे । २-बुधि भारी । ३-तेन्ह । ४-आपस । ५-कीन्ह । ६-जो कछु भवा
जाइ न मेटा । ७-अब सो । ८-जेहि । ९-रोये हमरे । १०-मुवा । ११-पूरी
पंक्ति नहीं है । १२-कन । १३-बैसाये । १४-नेगिहु । १५-माथ जो नावा ।

टिप्पणी—(१) बुधारी—बुद्धिमान ।

(२) भँटा—मिला; प्राप्त हुआ ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति चार नहीं है । उसके स्थानपर पंक्ति ५ है । पाँचवीं पंक्तिके स्थानपर
नयी पंक्ति है—बैठि सिंघासन करहि जोहारा । हम सब नेगी मुनि बार तुम्हारा ॥

४३१

(दिल्ली^१; एकडला; बीकानेर^२)

पहिले हिन्दुई कथा^१ अही। फुनि र काँहि तुरकी ले कही^२ ॥१
 फुनि^३ हम खोलि अरथ^४ सब कहा। जोग सिंगार वीर रस अहा^५ ॥२
 खट भाका जो ईहहि वाचा^६। पण्डित विन वृक्षत हो साँचा^७ ॥३
 बहुल पाख भाँदों जिह आही^८। सिंघ रासि संघ तँह निरव[१*]ही^९ ॥४
 जहिया पन्द्रह सै हुत साठी^{१०}। तहिया ईह चौपाईह^{११} गाँठी^{१२} ॥५
 बहुत^{१३} अरथ हहि^{१४} ईह^{१५} मँह कोलै^{१६}, जो सुधि सेउ कोउ वृक्ष^{१७} ॥६
 कहँउ जहाँ लग पारेउ^{१८}, जो कछु^{१९} वहै^{२०} हिये^{२१} में^{२२} सूझ^{२३} ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) पहिले हिन्दुई कसथा; (बी०) पहिलेहि ये दुइ कथा। २—(ए०) फुनि रे काटि करहि सुनाही; (बी०) जोग सिंगार वीर रस कही। ३—(बी०) पुनि। ४—(ए०) फुनि रे खोल उन्हहि। ५—(ए०) जोग सिंगार बियोगी लहा; (बी०) लघु-दीरघ कौतुक नहि रहा। ६—(बी०) खट भाखा आहहि एहि माँझ; (ए०) खट भाखा आहे एहि माँशी। ७—(बी०) पंडित विन वृक्षत होइ साँझ; (ए०) बेद विनु वृक्षत होय साँशी। ८—(बी०) पहिले पाख भादों छठि अही; (ए०) पंक्ति अस्पष्ट। ९—(बी०) सिंघ रासि सिंह नीरावही; (ए०) सिंघ रासि सिंह निरवहे। १०—(बी०) जहिया होते पन्द्र सै साठी; (ए०) छायाबन्ध सिर हुत साखा। ११—(बी०) तहिया ऐ रे चौपई। १२—(ए०) तहिया कवि सिरी जखा। १३—(बी०) बहुतै। १४—(बी०) अहहि। १५—(ए०, बी०) यहि। १६—(ए०, बी०) ×। १७—(बी०) जो कोई सुधि से वृक्ष; (ए०) जो सुधि सौं कोई वृक्षि। १८—(बी०) लहु परेउ; (ए०) लगि परेव। १९—(बी०) कछु; (ए०) कुछु। २०—(ए०, बी०) ×। २१—(बी०) हिये। २२—(ए०) मन। २३—(ए०) सूझि।

टिप्पणी—(१) हिन्दुई—भारतीय। काँहि—किसी ने। तुरकी—तुर्क भाषा; यहाँ तात्पर्य सम्भवतः अरबी से है।

(२) खट भाका—पट् भाषा (देखिये १५०।१ की टिप्पणी।)

(४) बहुल पाख—कृष्ण पक्ष।

४३२

(दिल्ली; बीकानेर)

वहै एक जव^१ लग तन साँसा। ऊ विन घटै^२ भई वहि आसा ॥१

१—दिल्ली तथा बीकानेरकी प्रतियोंमें पंक्ति ५ पंक्ति ३ के रूपमें है। किन्तु वहाँ यह असंगत प्रतीत होता है। यह पंक्ति मूलतः पाँचवीं पंक्ति के रूप में ही रही होगी यह एकडला प्रतिके आधारपर अनुमान किया जा सकता है।

नित कर आह रहहि नित ओही^१ । नित परसेउ होउ वह मोही^२ ॥२
 अहि निसि जपहु^३ छाड़ि सब काजा । अन्त रहहि ओकर^४ राजा ॥३
 प्रथम अन्त^५ काज जिह^६ सेती^७ । सो रे जपहु छाड़ बुधि चेती^८ ॥४
 मोंख न आह^९ और बुधि कीते^{१०} । बुधि ओकर अस रहु लीते^{११} ॥५
 अहै जो रे आयसु वहि केरे^{१२}, सो र दोउ जग पाउ^{१३} । ६
 जग दूनो का आहहि जग मँह^{१४}, और बहुत हहि साउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-है तव । २-औ फुनि घट मँह । ३-नितु क अहार नितु वोह वोही । ४-नितु परसहु मुमिरहु । ५-(दि०) × । ६-अनंत रहहि वोहि करपै । ७-अन्य । ८-जेहि । ९-ऐती । १०-अहि । ११-किये । बुधि वोहि केर आसरहु लिये । १२-जोरे होइहि आइस वोहि केरे । १४-दुवौ जग सो पाउ । १६-दुवौ जग कै आहहि एहि मँह ।

टिप्पणी—(२) ओही—वही ।

(३) अहिनिसि—दिन-रात । ओकर—उसका ।

प रि शि ष्ट

सद्विधि

प्रज्ञेप

यहाँ बीकानेर, दिल्ली और मनेर प्रतिके वे अंश संकलित हैं, जिन्हें हमने मूल पाठमें ग्रहण नहीं किया है और पृष्ठ ९२-९८ में प्रक्षिप्त घोषित किया है।

१

(कड़वक ९८ की पंक्ति १ और २ के बीचमें)

(बीकानेर १९११; दिल्ली मार्जिन)

उघटी काग' ररे दिग' बाँये । दहिने फेकरि सियार घटाये ॥२
विनु' रितु' बीजु चमक' घन गरजे' । कै कुसुगुन दहिनेँ घर बरजे ॥३
बाँये' डवरू आइ बजावा । रात बहिर तरहीं'० दिखावा ॥४
मारग रोदन रहै बौराई' । आगं एक अँवरी बन आई'१ ॥५

जोगी कापी जोडरी पारी, की सुगती कही न ।६
इन्हहि देखै बड़ कुसगुन, तेली चिकरा मीन ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-[...]क । २-दिसि । ३-दहिने झिकरि सियारि कहाये । ४-५—X ।
६-चमकै । ७-गराजै । ८-बाजै । ९-X । १०-राति बीहर तरई । ११-पाक
रोवै तन रहै बौरावा । १२-आगे कला दिगंबर आवा ।

(बीकानेर १९१२)

झिगा नाँधि पुनि पंथ फिराई । दहिने तै बाई दिसि जाई ।१

२

(कड़वक ११० और १११ के बीच)

(बीकानेर २१३)

राजा रोवै बहुत दुख पाई । अरथ दरब बहु दिया लुटाई ॥१
पालि पोसि कै कियेउ सँजोगा । से हम कहँ दै गयेउ विवोगा ॥२
बहि वियोग मोहि जिया न जाई । कहइ मरौँ अवहीं विसु खाई ॥३
बहुत अगिन हम उर दै खेला । जीउ न चेतै राज खर दुहेला ॥४
लोगहु राजा कहँ समुझाई । दिन एक जियत मिलिह तुह आई ॥५

होखी कोई घोहरा, कुँवर मिलिह तुह आइ ।६
तव लग विरस भजहु, करहु दइय चित लाइ ॥७

३

(कड़वक १११ और ११२ के बीच)

(बीकानेर २१।५)

सत सै धर्मपन्थ पगु दीतसि । सत साथी आगै कै लीतसि ॥१
सत संवर सत भोजन लीन्हा । सत ओढ़न सर डासन कीन्हा ॥२
सत अघार सत जीउ पराना । सत किंगरी सत भाउ बखाना ॥३
सत सै जाइ असत न रूपा । पूजै तेहि जेहि कोइ न पूजा ॥४
सत से सिध सत मन लावा । सतै जपै मन कूर न भावा ॥५
वहै एक चित लाइसि, से और न मन मै भाउ ।६
भोग अनन्द तेही दिना, जेहि दिन वहि कहँ पाउ ॥७

(बीकानेर; २१।६)

चला जाइ खिन थिर न रहाई । संवरै तेहि जेहि के पथ जाई ॥१
वहि छाँड़ि और न मन महिं भावइ । तहाँ जाइ जहँ वोहि कहँ पावइ ॥२
जेहि बेधनि सर तेही चहई । जागी रूप ठूँड़ि तेहि जाई ॥३
हाँडे गिरि साइर वन घना । सो प्रीतम भँटै केहि बना ॥४
चला जाइ दिन रैन का करई । रहा हियै धरि खिन न विसारई ॥५
गिरि परवत वन ढाढ़ें सायर, संक न मानै चित्त ।६
पिरम भुलावा विरह शर, भवै न बाँधै थित्त ॥७

४

(कड़वक ११३ की प्रथम दो पक्तियोंके बाद)

(बीकानेर २२।३)

केस कर गिय मधु औ भुजा । ऐस वादि घन आहै कुँजा ॥३
अँगुरी पदुम नख हँम कपोला । कन्धस्थल पहै अमोला ॥४
केस कुटिल औ नाँभि गँभीरा । नैन तरंग एहि भँवर कमीरा ॥५
पनि कन्द्रो सुख उदो रह, जानौ दन्त उदन्त ।६
नैन चरन कर जीभ तालुका, अघर बरुनी सोभन्त ॥७

(कड़वक ११३ की पंक्ति ३ के बाद)

(बीकानेर २२।२)

पा चीकन अस ओरारै । जानहु असोग पल्ली लै लाई ॥२

(कड़वक ११३ की पंक्ति ४ के बाद)

बतीसो लखन सो परगट पूरे। झूटे भये न आहहिं फुरे ॥४

५

(कड़वक १६७ की पंक्ति ५-७ के स्थानपर)

(बीकानेर ३१।३)

जो किछु करम लिखा सो भावा । उनहिं कोर छाड़सि मो माया ॥५
जेहि दिन विधना निरमयेव, तेहि दिन लिखा कपार । ६
सात सरग चढ़ धावौ कोई, अंक न मिटै लिलार ॥७

६

(कड़वक २०६ की पंक्ति ३ के बाद)

(बीकानेर; ३७।३ दिल्ली मार्जिन)

मालति^१ बेल^२ गुलाल सुहाई । सेवती औ चम्पा लै लाई^३ ॥४
चाँप नेवारी करना फूला^४ । बास^५ माँत^६ मधुकर रंग^७ भूला ॥५
सोनजरद नागोसर^८ जुही^९, फूले आनों फूल^{१०} । ६
यह^{११} सुहाइ देखसि^{१२} फूलवारी, देखत तिह^{१३} जिउ भूल ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-मालती । २-बेलि । ३-सेवती आनि चंबेली लाई । ४-जुही निवारी (औ)
कन फूला । ५-वासु । ६-मालती । ७-X । ८-सोनजरदा । ९-नगोसिरी । १०-
जूही ११-फूली अनवनि फूलि । १२-बहु । १३-X । १४-देखतहिं रहा ।

(बीकानेर ३७।४, दिल्ली मार्जिन)

बाला^१ दौना^२ मरुवा लावा^३ । केवइ औ केतकी सुहावा^४ ॥१
सरखण्ड फूलै औ छर वेना^५ । पादल^६ चम्पा बहुत^७ को गुना^८ ॥२
मौलसिरी^९ कुन्द पँच परका^{१०} । औ चम्पा जूरी भुँइ तरका^{११} ॥३
कूदमना^{१२} औ माधो सुहावा^{१३} । जिह क^{१४} बास मालति जिउ^{१५} लावा ॥४
फूल मझोना^{१६} सेंदुरवारी । विनु परिमल कै गही^{१७} सँवारी ॥५
सिंगारहार^{१८} औ गुडहल^{१९}, बहुत बेकर पाँत^{२०} । ६
फूल माँझ परिमल के^{२१}, कहै^{२२} सो भाँतहिं भाँत^{२३} ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-X । २-दवना । ३-लाई । ४-केलिक करै जो फूल सोहाई । ५-सिरखेडी
औ उर छुरेना । ६-पंडर । ७-बहु । ८-गना । ९-बौरसी । ११-चम्पा बागा ।
११-और जो चम्प उनै भुँइ लगा । १२-केर भसल मधुमन्त सोहावा । १४-

जेहि कर । १४-मालती मधु । १५-[.....]धनी औ । १६-गहेउ । १७-हर
सिंगार । १८-बोडहुल । १९-नहसुती पाँतहि पाँत । २०-फूल परिमल चंपच,
२१-कहेउ । २२-भाँति ।

७

(कड़वक २४५ के पंक्ति २ के बाद)

(बीकानेर ४४।१)

सुनि मिरगावति हँसि कै कहा । एत दुख हम निति केहि गुन सदा ॥३
कुँवर कहा सुनु प्राण पियारी । पटरस कैसे जाइ सँभारी ॥४
जेहि महुँ एक वह रे ना होई । रहै न जाई औँटि मरै सोई ॥५
हरिन पतिंगा भौर जिमि, नग जप कप रस लीखु ।
इनही से वै नहिं जरहिं, तेहि पर पेम बलि सीखु ॥७

८

(कड़वक २४८ की तीसरी पंक्तिके बाद)

(बीकानेर ४४।५)

जेन्ह पानन्ह तेरह गुन पूरे । कटुआ कट मधु औ गूरे ॥३
खरख खरव तस पुनि साना । किमि हरन दुरगन्ध विनाना ॥४
मुख अमरन शोभा भल पावै, काम अग्नि उनमाद ।
सुध सरीर होइ जिहि खाई, सब जो सरूप सवाद ॥७

(कड़वक २४८ की पंक्ति ४ और ५ के बाद और ६-७ से पूर्व)

(बीकानेर ४४।६)

घोरि चत्रसम धरे कचोरा । ठाँउ ठाँउ धरि गये सो खोरा ॥३
करडी चारि चारि एक एक आगे । फूल माल गुँथे विनु तागे ॥४
सुरपति सुरंग मुनि सुनि धाये । देखि समा सब पाप गँवाये ॥५

९

(कड़वक २५० और २५१ के बीचमें)

(बीकानेर ४५।३)

पाँच सबद साज सब कहे । भीन भीन कै पाँचों रहे ॥१
एक सबद करहिं सै बाजहिं । औ एक कंठहिं से साजहिं ॥२
एक मुख से जो बजावहिं । और एक बोहि डोरि जो लावहिं ॥३
औ एक नख बजै जो ताँती । सुनत सबदहिं यह रखे मन होइ साँती ॥४
पाँचो सबद कथा मँह कहे । जो ग्रन्थ हम सुने जे अहे ॥५

खर डाँडी मुख जोरि नख, ताँती जो र वजाव । ६
पाँचउ आने जोरि कै, अब जो सरसुती कहाव ॥ ७

१०

(कड़वक २५८ की प्रथम चार पंक्तियोंके बाद)

(बीकानेर : ४६।५)

औ जो खस्ट नायका कहियहि । ते पइयै जे उन महुँ चहियहि ॥ ५
आठौँ कहुँ सँभरि कै, एक एक देउँ बुझाइ । ६
आघ लेउ नव सात कै, पण्डित लेखै नहिँ जाइ ॥ ७

(बीकानेर ४६।६)

अखट एक ना कहुँ विसेखी । जो जस होइ कहुँ तेहि जोरी ॥ १
नारी खण्डित सो रे कहावइ । जाकर पिउ अनतहिँ बसि आवइ ॥ २
विप्रलुबुध मिलै नहिँ काऊ । गुपुत साथ नहिँ कामिनि मिलाई ॥ ३
बसुकी सेज मिलै की आसा । सब निसि जागै पिउ की आसा ॥ ४
अभिसारी करै जामिनी । कलिहि रति तातें त मनी ॥ ५
उत खण्डिता पिउ औ विदेसी, बिलग होइ रति नहिँ पांव । ६

..... ॥ ७

(बीकानेर ४७।१)

अनवन भाँति सखी सब आई । रूप सरूप सोहाग सोहाई । १
(कड़वक २५८ की पंक्ति ५ के बाद)

काहू हाथ चतुर सम घोरा । काहू हाथ पुहुप के जोरा ॥ ३
कोई कर नौलखी लियै । नौ जोवन औ अभरन किये ॥ ४
आपु आपु महुँ करहिँ धमारी । जहाँ बैठी भ्रिगावती नारी ॥ ५

११

(कड़वक २९९ और ३०० के बीच)

(मनेर १६० अ)

दीपक मन मँहू कहा विचारी । इँह कहँ लाज मोर हिय भारो ॥ १
हौं निघर किँह जाँउ बिछोही । लाज तज रे मनावइ रोही ॥ २
यह कह दीपक घर कँह जाई । मिरगावति मन माँझ सँकाई ॥ ३
दीपक मुहि सेउ किय चतुराई । अन्तस स्याम दइ घर जाई ॥ ४
उन सो मन्त्र करौं मन माँही । बकतहिँ मन्त्र दउर जिह पाहीं ॥
अब सो मन्त्र करौं मन भीतर, जिह दिवइ काज मिराइ । ६
मन्त्र अहै पिय चितयों, पुन र अगिन सत दिया जराइ ॥ ७

१२

(कड़वक ३७८-३७९ के बीच)

(बीकानेर ६७।३)

वह तो माननि मान दिखरावै । अखिट भाव एहि मदन सतावै ॥१
 सबै दाँव अवसथव भँवई । आइ तो पंचसर भंग कराई ॥२
 विपत विवि असुर बियापा । परा रे सर मारै गहि चापा ॥३
 बहुत जतन करै नहिँ मानै । मान भंग मूरिख कै जानै ॥४
 अखिट भाव कर सह विकरारा । रस रस विरसै वर न सँचारा ॥५
 माननि न मानै कयफर, जो रे चरन परै कन्त ॥६
 सहज भुअंगम जौ नवहिँ, कि करियहि तेहि सनमन्त ॥७

१३

(कड़वक ३९२ की प्रथम पंक्तिके बाद)

(बीकानेर ६९।५)

बहुरि लागि धिय कहुँ सिख देई । कुल राखै कुलवन्ती सोई ॥२
 सासु ननद कहुँ उतर दीजै । जो वै कहहिँ सो सिर पर कीजै ॥३
 विनु पूछै वकत न मुँह खोली । मधुरे वचन परजन सँ बोली ॥४
 पिउ चाहै सहज इन चलिये । नित नौत नौते सँउ रहिये ॥५
 केउ वच लाख जो बोलइ, आप गरुवै होइ रहिउ ॥६
 रानी कहै इन आगे, यह कुलवन्ती टेउ ॥७
 (बीकानेर ६९।६)

साँचेहु सौति करै तुम्ह जानेहु । करुवा वचन खाँड घिउ सानेहु ॥१
 बोल एक कहुँ उतर न दीजै । वहइ लजाइ हिये मैं छीजै ॥२
 लाज करेहु जनि करेहु ठिठाई । बाँह उठाइ जनि चलहु धँधाई ॥३
 सौँहे न हेरेहु नैन पसारी । अँवरइ मुख रखिहहु वारी ॥४
 कोह मारि मन करिहहु साँती । दुखित न कहै कोइ किहि भाँती ॥५
 दूनौ कुल हौ निरमल, सत साका परवान ॥६
 करतव सोई कीजियहु, जस सुनियै एहि कान ॥७

(कड़वक ३९२ की पंक्ति २-३ के बाद)

(बीकानेर ७०।१)

कलस भरे कन्या कोइ आई । मछरी जो कोई लै जाई ॥३
 आगी जरी जनों सुख राती । लटकि चली जनौ पिय मदमाती ॥४
 कुँसुम जो माली लै आवा । दरिपन आनि पुनि नरपित देखरावा ॥५

वाँभन त्रिध वचन सुभ भाखत, महरि जो दही लै आइ ।६
संख भेरि पुनि वाजत, सरस सबद कराइ ॥७

(वीकानेर ७०।२)

भई अब टेर रावत जन भले । महते नेगी समदन चले ॥१
वाँभन भाट जो माँगन अहे । लगे संग अति जाहिं न कहे ॥२
जोजन दोइ करि जाइ तुलाना । तहाँ जाइ कै कीन्ह मिलाना ॥३
घोही नदी अमर जल नाऊँ । वाग वगीचा अपूरव ठाऊँ ॥४
खिन एक माँह भई जेवनारा । सब केहू कहँ भवा हँकारा ॥५
जेइ जूँठ करि उठे, और कर दीन्हेउ पान ।६
कंचन तुरिय दै बहोरे, राखिन्हि सब कर मान ॥७

(कड़वक ३९२ की पंक्ति ४-५ के बाद)

(वीकानेर ७०।३)

बहुत कटक आगे कै पाछे । मैगल ठाकुर आवहिं काछे ॥३
गँडर चलत भवाँ अँधियारा । सर सेत कहँ चले पहारा ॥४
उठै खेह दर सुझै न हाथा । एक एक बिहरे संग साथ्या ॥५
जानौ सरग धरती सै होइ लग, मिलवा मिलै न एकहि एक ।६
दरमर पंक होइ तहाँ जाई, पानी होई अनेक ॥७

कड़वक—तुलनात्मक सारिणी

ग्रन्थके सम्पादनमें विभिन्न प्रतियोंके कड़वकोंका किस क्रमसे उपयोग हुआ है, यह इस सारिणीमें स्पष्ट किया गया है, इससे अनुसन्धितसुओंको विभिन्न प्रतियोंके तुलनात्मक अध्ययनमें सरलता होगी।

दिल्ली प्रतिमें कड़वकोंको न तो अंकबद्ध किया गया है और न उसके प्रत्येक पृष्ठमें कड़वकोंकी समान पंक्तियाँ हैं। अतः हमने उन्हें अपनी ओरसे क्रमांकित किया है और वे ही क्रमांक उस प्रतिके कड़वकोंके लिए यहाँ प्रयुक्त हुए हैं।

एकडला प्रतिके पृष्ठोंपर जो अंक अंकित मिलते हैं, वे अंक कड़वकोंके क्रमका निश्चित बोध नहीं कराते। उसके अंकोंमें तारतम्य न होनेके कारण हमने इस प्रतिके कड़वकोंके लिए भारत कला भवनकी पंजिकाकी संख्याका उल्लेख किया है। जो पृष्ठ भारत कला भवनमें नहीं हैं, उनके अस्तित्व बोधके लिए तारांकनका प्रयोग किया गया है।

बीकानेर प्रतिके लिए पृष्ठ-संख्याका उपयोग सुविधाजनक लगा। उसके प्रत्येक पृष्ठमें समान रूपसे ६ कड़वक हैं। अतः प्रत्येक पृष्ठके कड़वकोंका बोध करानेके लिए कोष्ठकमें १ से ६ संख्याका प्रयोग किया गया है।

मनेर प्रतिके प्रत्येक पत्रमें दो कड़वक (प्रत्येक पृष्ठपर एक) हैं। अतः उनके लिए पत्र संख्याके साथ पृष्ठके लिए क और ख का प्रयोग किया गया है।

चौखम्भा और काशी प्रतियोंके कड़वक थोड़े हैं। मूल ग्रन्थमें उनका क्या क्रम था, ज्ञात न होनेसे उनके लिए किसी प्रकारका संख्या-संकेत सम्भव न हो सका। उनके अस्तित्व बोधके लिए हमने तारांकन का उपयोग किया है।

सम्मेलन संस्करणमें अनेक कड़वकोंका अभाव है और मुद्रित कड़वकोंमें भी अनेक स्थलोंपर व्यतिक्रम है। अतः उनका भी निर्देश इस सारिणीमें किया जा है। उसमें जो कड़वक पाद-टिप्पणीमें दिये गये हैं, उनके लिए तारांकनका प्रयोग किया गया है।

अन्य सूचनाएँ पाद-टिप्पणीके रूपमें दी गयी हैं।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१ } २ } ३ }		७९९१			८

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	चौखम्भा प्रति	सम्मेलन संस्करण
४	४ ^१				
५	५				
६	६	७८५९			१
७	७	*		*	२
८	८	*		*	३
९	९	*		*	४
१०	१०	७९०५			५
११	११				
१२	१२	७७४३			१२
१३	१३			*	*
१४	१४				
१५	१५	७९३७			६
१६	१६	७९५०			१०
१७	१७	७८०३			७
१८	१८	७८३१			११
१९	१९	७९४०			१०८
२०	२०	७८१३			
२१	२१				
२२	२२				
२३	२३	७९६९			१३
२४	२४	७८४१			१४
२५	२५	७७६६			२८
२६	२६	७७८६			१५
२७	२७	७८००			९३
२८	२८	७९२२			१६
२९	२९	७८२४			१७
३०	३०				
३१	३१	७८२१	६ (१)		१८
३२	३२	७७६५	६ (२)		१९
३३	३३	७८५१	६ (३)		२०
३४	३४	७८१९	६ (४)		२१

१. केवल दार्द पंक्ति उपलब्ध ।

२. सम्मेलन संस्करण में वृ० २०३ में पाद-टिप्पणीके रूपमें अंकित ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
३५ } ३६ }	३५ ^१		६ (५) ६ (६)		२२ २३
३७	३६	७८५०			२४
३८	३७	७८५२			२५
३९	३८	७९४९			२६
४०	३९	७८६९			२७
४१	४०	७८७८			२९
४२	४१	७८७९			* ^२
४३	४२	७८३४			* ^३
४४	४३				
४५	४४				
४६	४५				
४७	४६				
४८	४७	७८४८			५५
४९	४८	७७९०			४९
५०	४९				
५१	५०	७७९६			३०
५२	५१	७८८१			३१
५३	५२	७९१३			३४
५४	५३				
५५	५४	७८४९			३२
५६	५५	७८२९			३३
५७	५६				
५८	५७				
५९	५८				
६०	५९				
६१	६०				
६२	६१				
६३	६२				
६४	६३	*			३५

१—इसमें कड़वक ३५ की प्रथम चार और कड़वक ३६ की अन्तिम ३ पंक्तियाँ हैं।

२—कड़वक ३२३ (सं० स० २७९) के पाठान्तर रूपमें गृहीत।

३—कड़वक ३२८ (सं० स० २८४) के पाठान्तर रूपमें ग्रहीत।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
६५	६४				
६६	६५				
६७	६६				
६८	६७				
६९	६८				
७०	६९				
७१	७०				
७२	७१				
७३	७२				
७४	७३				
७५	७४				
७६	७५				
७७	७६				
७८	७७	७८५५			३६
७९	७८	७९७४			३७
८०	७९	७७९४			३८
८१	८०	७८४४			३९
८२	८१	७९८६			४०
८३	८२	७७९२			४२
८४	८३	७८१०			४३
८५	८४				
८६	८५		१७ (१)		४४
८७	८६	७८०४	१७ (२)		४५
८८	८७	७८३९	१७ (३)		४६
८९	८८	७८२७	१७ (४)		४७
९०	८९	७८८५	१७ (५)		४८
९१	९०		१७ (६)		४९
९२	९१	७८८९			५०
९३	९२	७७९५			५१
९४	९३	७८६१			५२
९५	९४	७८८७			५१

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	वीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
९६	९६	७९२६			५३
९७	९६	७७४९			५४
९८	९७		१९ (१) ^१		५६
			१९ (२) ^२		५७
९९	९८	७८९९	१९ (३)		५८
१००	९९		१९ (४)		५९
१०१	१००	७९४८	१९ (५)		६०
१०२	१०१	७८१६	१९ (६)		६१
१०३	१०२	७८६६			६२
१०४	१०३	७९१९			६३
१०५	१०४	७८५४			६६
१०६	१०५	७९२८			६४
१०७	१०६	७९४३			६५
१०८	१०७	७८१८			६७
१०९	१०८	७८३६	२१ (१)		६८
११०	१०९		२१ (२)		६९
			२१ (३)		७०
१११	११०	७८६३	२१ (४)		७१
			२१ (५) ^३		७२
			२१ (६) ^३		७३
११२	१११	७९८७	२२ (१)		७४
११३	*		२२ (३) ^४		७६
			२२ (२) ^५		७५
११४	११२	७९४६	२२ (४)		७७
११५	११३	७७७६	२३ (५)		७८
११६	११४	७७५८	२२ (६)		७९
११७	११५	७७६३	२३ (१)		८०

१—केवल प्रथम पंक्ति ; शेष प्रक्षिप्त ।

२—प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त शेष पंक्तियाँ ; प्रथम पंक्ति प्रक्षिप्त ।

३—प्रक्षिप्त ।

४—प्रथम दो पंक्ति ; शेष प्रक्षिप्त ।

५—पंक्ति २ और ४ के अतिरिक्त ; ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
११८	११६	७९११	२३ (२)		८१
११९	११७	७७९३	२३ (३)		८२
१२०	११८	७८९७	२३ (४)		८३
१२१	११९	७८१२	२३ (५)		८४
१२२	१२०		२३ (६)		८५
१२३	१२१	७९२०			८६
१२४	१२२	७८८३			८८
१२५	१२३	७७७२			८९
१२६	१२४	७८३२			९०
१२७	१२५	७८३७			९१
१२८	१२६	७९७९			९२
१२९	१२७				
१३०	१२८	७९५९			९४
१३१	१२९	७७६९			९५
१३२	१३०	७७९९			९९
१३३	१३१	७७५२			१००
१३४	१३२	७९१६			९८
१३५	१३३	७९१५			९६
१३६	१३४	७९२९			९७
१३७	१३५	७९८५			८७
१३८	१३६				
१३९	१३७	७७४७			१०१
१४०	१३८	७७८४			१०२
१४१	१३९	७७६०			१०३
१४२	१४०	७७७३			१०४
१४३	१४१	७९०१			१०५
१४४	१४२	७७८३			१०६
१४५	१४३				
१४६	१४४	७९६१			१०७
१४७	१४५	७९५८	२८ (१)		१०९
१४८	१४६		२८ (२)		११०
१४९	१४७		२८ (३)		१११

प्रस्तुत	दिल्ली	एकडला	बीकानेर	अन्य	सम्मेलन
संस्करण	प्रति	प्रति	प्रति	प्रति	संस्करण
१५०	१४८	७७९७	२८ (४)		११२
१५१	१४९		२८ (५)		११३
१५२	१५०		२८ (६)		११४
१५३	१५१	७९३२	२९ (१)		११५
१५४	१५२	७९५३	२९ (२)		११६
१५५	१५३	७९५४	२९ (३)		११७
१५६	१५४	७७७१	२९ (४)		११८
१५७	१५५		२९ (५)		११९
१५८	१५६		२९ (६)		१२०
१५९	१५७	७९५२	३० (१)		१२१
१६०	१५८	७८३५	३० (२)		१२२
१६१	१५९	७८९८	३० (३)		१२३
१६२	१६०	७९००	३० (४)		१२४
१६३	१६१	७८२६	३० (५)		१२५
१६४	१६२	७८५३	३० (६)		१२६
१६५	१६३	७९०२	३१ (१)		१२७
१६६	१६४	७९०६	३१ (२)		१२८
१६७	१६५	७७७८	३१ (३) ^१		१२९
१६८	१६६		३१ (४)		१३०
१६९	१६७		३१ (५)		१३१
१७०	१६८		३१ (६)		१३२
१७१	१६९		३२ (१)		१३३
१७२	१७०	७८०२	३२ (२)		१३४
१७३	१७१		३२ (३)		१३५
१७४	१७२	७७६४	३२ (४)		१३६
१७५	१७३		३२ (५)		१३८
१७६	१७४	७९३५	३२ (६)		१३७
१७७	१७५		३३ (१)		१३९
१७८	१७६	७९०३	३३ (२)		१४०
१७९	१७७		३३ (३)		१४१
१८०	१७८	७८०९	३३ (४)		१४२

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१८१	१७९	७८५७	३३ (५)		१४३
१८२	१८०		३३ (६)		१४४
१८३	१८१	७८२५	३४ (१)		१४५
१८४	१८२		३४ (२)		१४६
१८५	१८३	७८३३	३४ (३)		१४७
१८६	१८४	७८४३	३४ (४)		१४८
१८७	१८५	७९३६, ७८४६	३४ (५)		१४९
१८८	१८६	७९५१	३४ (६)		१५०
१८९	१८७	७८९६	३५ (१)		१५१
१९०	१८८	७८१५	३५ (२)		१५२
१९१	१८९	७७५६	३५ (३)		१५३
१९२	१९०	७७८७	३५ (४)		१५४
१९३	१९१	७७६७	३५ (५)		१५५
१९४	१९२	७८०१	३५ (६)		१५६
१९५	१९३		३६ (१)		१५७
१९६	१९४				
१९७	१९५				
१९८	१९६				
१९९	१९७		३६ (२)		१५८
२००	१९८	७९२३	३६ (३)		१५९
२०१	१९९		३६ (४)		१६०
२०२	२००		३६ (५)		१६१
२०३	२०१	७८२०	३६ (६)		१६२
२०४	२०२	७९६७	३७ (१)		१६३
२०५	२०३	७७८२	३७ (२)		१६४
२०६	२०४		३७ (३) ^१		१६५
	*		३७ (४) ^२		१६६
२०७	२०५		३७ (५)		१६७
२०८	२०६		३७ (६)		१६८
२०९	२०७		३८ (१)		१६९

१-प्रथम तीन पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त ।

२-प्रक्षिप्त

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
२१०	२०८	७८०७	३८ (२)		१७०
२११	२०९		३८ (३)	*	१७१
२१२	२१०	७९३८	३८ (४)	*	१७२
२१३	२११	७८१४	३८ (५)	*	१७३
२१४	२१२		३८ (६)	*	१७४
२१५	२१३	७९४१	३९ (१)	*	१७५
२१६	२१४	७८७७	३९ (२)	*	१७६
२१७	२१५	७७४६	३९ (३)	*	१७७
२१८	२१६	७८७६	३९ (४)	*	१७८
२१९	२१७		३९ (५)	*	१७९
२२०	२१८	७९५४	३९ (६)	*	१८०
२२१	२१९	७९७५	४० (१)	*	१८१
२२२	२२०	७९४५	४० (२)	*	१८२
२२३	२२१	७८४२	४० (३)	*	१८३
२२४	२२२	७९८१	४० (४)	*	१८४
२२५	२२३	७८२३	४० (५)	*	१८५
२२६	२२४	७९७७	४० (६)	*	१८६
२२७	२२५		४१ (१)	*	१८७
२२८	२२६	७७७०	४१ (२)	*	१८८
२२९	२२७	७९१२	४१ (३)	*	१८९
२३०	२२८	७९४२	४१ (४)	*	१९०
२३१	२२९	७७७७	४१ (५)	*	१९१
२३२	२३०	७९०८	४१ (६)	*	१९२
२३३	२३१	७९४७	४२ (१)	*	१९३
२३४	२३२	७७७९	४२ (२)	*	१९४
२३५	२३३	७८१७	४२ (३)	*	१९५
२३६	२३४		४२ (४)		१९६
२३७	२३५	७९०९	४२ (५)		१९७
२३८	२३६	७९७३	४२ (६)		१९८
२३९	२३७	७७९१	४३ (१)		१९९
२४०	२३८	७७५०	४३ (२)		२००
२४१	२३९		४३ (३)		२०१

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
२४२	२४०	७८३८	४३ (४)		२०२
२४३	२४१		४३ (५)		२०३
२४४	२४२		४३ (६)		२०४
२४५	२४३	७९८२	४४ (१) ^१		२०५
			४४ (२) ^२		*
२४६	२४४	७९१८	४४ (३)		२०६
२४७	२४५	७८८४	४४ (४)		२०७
२४८	२४६	७९११	{ ४४ (५) ^३ ४४ (६) ^४ }		२०८
२४९	२४७	७९६०	४५ (१)		२०९
२५०	२४८	७९६२	४५ (२)		२१०
			४५ (३)		२११
२५१	२४९		४५ (४)		२१२
२५२	२५०		४५ (५)		२१३
२५३	२५१		४५ (६)		२१४
२५४	२५२		४६ (१)		२१५
२५५	२५३		४६ (२)		२१६
२५६	२५४		४६ (३)		२१७
२५७	२५५		४६ (४)		२१८
२५८	२५६	७९८३	{ ४६ (५) ^५ ४६ (६) ^६ ४७ (१) ^७ }		२१९
२५९	२५७		४७ (२)		२२०
२६०	२५८	७७८९	४७ (३)		२२१
२६१	२५९	७९७६	४७ (४)		२२२

१-प्रथम दो पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

२-दो पंक्तियाँ रिक्त ।

३-प्रथम तीन पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

४-प्रथम दो और अन्तिम दो पंक्तियाँ; पंक्ति २-^५ प्रक्षिप्त ।

५-प्रथम चार पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

६-प्रक्षिप्त ।

७-केवल पंक्ति २, ६, और ७; शेष प्रक्षिप्त

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
२६२	२६०	७८९५	४७ (५)		२२३
२६३	२६१	७९७६	४७ (६)		२२४
२६४	२६२		४८ (१)		२२५
२६५	२६३	७९२७	४८ (२)		२२६
२६६	२६४	७७४८	४८ (३)		२२७
२६७	२६५		४८ (४)		२२८
२६८	२६६	७९३४	४८ (५)	१४४ अ	२२९
२६९	२६७	७८४५	४८ (६)	१४४ ब	२३०
२७०	२६८	७८७१	४९ (१)	१४५ अ	२३१
२७१	२६९	७८९१	४९ (२)	१४५ ब	२३२
२७२	२७०	७८६०	४९ (३)	१४६ अ	२३३
२७३	२७१	७७८८	४९ (४)	१४६ ब	२३४
२७४	२७२		४९ (५)	१४७ अ	२३५
२७५	२७३		४९ (६)	१४७ ब	२३६
२७६	२७४	७९२६	५० (१)	१४८ अ	२३७
२७७	२७५	७८४०	५० (२)	१४८ ब	२३८
२७८	२७६	७९१०	५० (३)	१४९ अ	२३९
२७९	२७७	७७६८	५० (४)	१४९ ब	२४०
२८०	२७८	७९८९	५० (५)		२४१
२८१	२७९	७७५४	५० (६)		२४२
२८२	२८०	७७५१	५१ (१)		२४३
२८३	२८१	७९७७	५१ (२)		२४४
२८४	२८२		५१ (३)	१५२ अ	२४५
२८५	२८३	७८९०	५१ (४)	१५२ ब	२४६
२८६	२८४	७८६६	५१ (५)	१५३ अ	२४७
२८७	२८५	७८९३	५१ (६)	१५३ ब	२४८
२८८	२८६		५२ (१)	१५४ अ	२४९
२८९	२८७	७९१४	५२ (२)	१५४ ब	२५०
२९०	२८८	७९८४	५२ (३)	१५५ अ	२५१
२९१	२८९	७८५८	५२ (४)	१५५ ब	२५२
२९२	२९०		५२ (५)	१५६ अ	२५३
२९३	२९१		५२ (६)		२५४

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	वीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
२९४	२९२	७९६४	५३ (१)	१५७ अ	२६७
२९५	२९३	७९५७	५३ (२)	१५७ ब	२६८
२९६	२९४	७९२४	५३ (३)		२६९
२९७	२९५	७९०४	५३ (४)		२७०
२९८	२९६	७७४४	५३ (५)	१५९ अ	२७१
२९९	२९७		५३ (६)	१५९ ब १६० अ ^१	२७२
३००	२९८		५४ (१)	१६० ब	२५५
३०१	२९९		५४ (२)	१६१ अ	२५६
३०२	३००	७९९०	५४ (३)	१६१ ब	२५७
३०३	३०१	७८७२	५४ (४)		२५८
३०४	३०२		५४ (५)	१६२ अ	२५९
३०५	३०३		५४ (६)	१६२ ब	२६०
३०६	३०४		५५ (१)	१६३ अ	२६१
३०७	३०५		५५ (२)	१६३ ब	२६२
३०८	३०६	७८७५	५५ (३)	१६४ अ	२६३
३०९	३०७		५५ (४)	१६४ ब	२६४
३१०	३०८		५५ (५)	१६५ अ	२६५
३११	३०९		५५ (६)	१६५ ब	२६६
३१२	३१०	७९५५			३०५
३१३	३११				
३१४	३१२				
३१५	३१३				
३१६	३१४				
३१७	३१५			१६८ अ	२७३
३१८	३१६			१६८ ब	२७४
३१९	३१७			१६९ अ	२७५
३२०	३१८			१६९ ब	२७६
३२१	३१९			१७० अ	२७७
३२२	३२०			१७० ब	२७८
३२३	३२१			१७१ अ	२७९

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
३२४	३२२		५८ (१)	१७१ ब	२८०
३२५	३२३		५८ (२)	१७२ अ	२८१
३२६	३२४		५८ (३)	१७२ ब	२८२
३२७	३२५		५८ (४)	१७३ अ	२८३
३२८	३२६		५८ (५)	१७३ ब	२८४
३२९	२२७		५८ (६)	१७४ अ	२८५
३३०	३२८		५९ (१)	१७४ ब	२८६
३३१	३२९		५९ (२)		२८७
३३२	३३०		५९ (३)		२८८
३३३	३३१		५९ (४)	१७६ अ	२८९
३३४	३३२		५९ (५)	१७६ ब	२९०
३३५	३३३		५९ (६)	१७७ अ	२९१
३३६	३३४		६० (१)	१७७ ब	२९२
३३७	३३५		६० (२)	१७८ अ	२९३
३३८	३३६		६० (३)	१७८ ब	२९४
३३९	३३७		६० (४)	१७९ अ	२९५
३४०	३३८		६० (५)	१७९ ब	२९६
३४१	३३९		६० (६)	१८० अ	२९७
३४२	३४०		६१ (१)	१८० ब	२९८
३४३	३४१	७९३९	६१ (२)	१८१ अ	२९९
३४४	३४२		६१ (३)	१८२ ब	३००
३४५	३४३		६१ (४)		३०१
३४६	३४४	७८६४	६१ (५)		३०२
३४७	३४५	७७५५	६१ (६)		३०३
३४८	३४६	७७५३			३०४
३४९	३४७				
३५०	३४८				
३५१	३४९				
३५२	३५०				
३५३	३५१		६३ (१)		३०६
३५४	३५२		६३ (२)		३०७
३५५	३५३		६३ (३)		३०८

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
३५६	३५४	७८७०	६३ (४)		३०९
३५७	३५५	७८७३	६३ (५)		३१०
३५८	३५६	७८९८	६३ (६)		३११
३५९	३५७	७७४२	६४ (१)		३१२
३६०	३५८		६४ (२)		३१३
३६१	३५९	७८०६	६४ (३)		३१४
३६२	३६०	७८८०	६४ (४)		३१५
३६३	३६१	७८८२	६४ (५)		३१६
३६४	३६२		६४ (६)		३१७
३६५	३६३		६५ (१)		३१८
३६६	३६४	७७८०	६५ (२)		३१९
३६७	३६५		६५ (३)		३२०
३६८	३६६		६५ (४)		३२१
३६९	३६७		६५ (५)		३२२
३७०	३६८		६५ (६)		३२३
३७१	३६९	७७५९	६६ (१)		३२४
३७२	३७०	७९१७	६६ (२)		३२५
३७३	३७१	७९३०	६६ (३)		३२६
३७४	३७२	७९७८	६६ (४)		३२७
३७५	३७३		६६ (५)		३२८
३७६	३७४	७७५७	६६ (६)		३२९
३७७	३७५		६७ (१)		३३०
३७८	३७६	७७६१	६७ (२)		३३१
			६७ (३)		३३२
३७९	३७७	७८८८	६७ (४)		३३३
३८०	३७८		६७ (५)		३३४
३८१	३७९		६७ (६)		३३५
३८२	३८०	७८११	६८ (१)		३३६
३८३	३८१	७९८०	६८ (२)		३३७
३८४	३८२		६८ (३)		३३८
३८५	३८३		६८ (४)		३३९

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	वीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
३८६	३८४	७९३३	६८ (५)		३४०
३८७	३८५		६८ (६)		३४१
३८८	३८६		६९ (१)		३४२
३८९	३८७		६९ (२)		३४३
३९०	३८८	७८६२	६९ (३)		३४४
३९१	३८९	७८२८	६९ (४)		३४५
			{ ६९ (५) ^१		३४६
			{ ६९ (६) ^२		३४७
३९२	३९०		{ ७० (१) ^३		३४८
			{ ७० (२) ^४		३४९
			{ ७० (३) ^५		३५०
३९३	३९१	७८३०	७० (४)		३५१
३९४	३९२	७७६२	७० (५)		३५२
३९५	३९३	७७८१	७० (६)		३५३
३९६	३९४		७१ (१)		३५४
३९७	३९५	७९७२	७१ (२)		३५५
३९८	३९६	७८०८	७१ (३)		३५६
३९९	३९७	७९७१	७१ (४)		३५७
४००	३९८		७१ (५)		३५८
४०१	३९९		७१ (६)		३५९
४०२	४००		७२ (१)		३६०
४०३	४०१		७२ (२)		३६१
४०४	४०२		७२ (३)		३६२
४०५	४०३		७२ (४)		३६३
४०६	४०४		७२ (५)		३६४
४०७	४०५		७२ (६)		३६५
४०८	४०६		७३ (१)		३६६
४०९	४०७		७३ (२)		३६७

१. प्रथम पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त ।

२. प्रक्षिप्त ।

३. प्रथम दो पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त ।

४. प्रक्षिप्त ।

५. प्रथम दो पंक्ति; शेष प्रक्षिप्त ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	चौखम्भा प्रति	सम्मेलन संस्करण
४१०	४०८	७९८८	७३ (३)		३६८
४११	४०९	७८४७	७३ (४)		३६९
४१२	४१०	७९३१	७३ (५)		३७०
४१३	४११	७९७०	७३ (६)		३७१
४१४	४१२	७७७५	७४ (१)		३७२
४१५	४१३	७८६७	७४ (२)		३७३
४१६	४१४	७९६५	७४ (३)		३७४
४१७	४१५		७४ (४)		३७५
४१८	४१६	७८९२	७४ (५)		३७६
४१९	४१७		७४ (६)		३७७
४२०	४१८		७५ (१)		३७८
४२१	४१९	७९६६	७५ (२)		३७९
४२२	४२०	७९६८	७५ (३)		३८०
४२३	४२१	७७७४	७५ (४)		३८१
४२४	४२२	७७८५	७५ (५)		३८२
४२५	४२३	७८९४	७५ (६)		३८३
४२६	४२४	७७४५	७६ (१)		३८४
४२७	४२५		७६ (२)		३८५
४२८	४२६		७६ (३)	*	३८६
४२९	४२७		७६ (४)		३८७
४३०	४२८		७६ (५)		३८८
४३१	४२९	७९४४	७६ (६)		३८९
४३२	४३०		७७ (१)		३९०

शब्द-सूची

भाषा-विज्ञान और व्याकरणकी दृष्टिसे उहापोह करनेवाले पाठकों और कोश-कारोंकी सुविधाकी दृष्टिसे यह शब्द-सूची प्रस्तुत की जा रही है। काव्यमें आये अति प्रचलित शब्दोंको छोड़कर, प्रायः सभी शब्द यहाँ एकत्र किये गये हैं। जहाँ वे प्रयुक्त हुए हैं, उन सभी स्थलों का निर्देशन यथासाध्य किया गया है। यदि कहीं कोई शब्द या निर्देश छूटा प्रतीत हो तो उसे हमारी विवशता मानकर क्षमा करें। कुछ स्लिपोंके खो जानेके कारण हम उन्हें न दे सके हैं।

कोशोंमें प्रयुक्त क्रमसे शब्द संचित किये गये हैं किन्तु शब्दोंके विभिन्न रूपोंको एक ही स्थानपर देनेकी पद्धति अपनायी गयी है। इससे जिज्ञासुओंको शब्दोंके परीक्षणमें सुविधा होगी। अपनी सुविधाके कारण हमने शब्द-क्रममें पहले आने वाले रूपको मुख्य स्थान दिया है। यह क्रम वैज्ञानिक न होनेपर भी ढूँढ़ने-पहचाननेमें असुविधा न होगी, ऐसी आशा है।

अ

अह ४२४४

अहस ९६; ११४; २७२; ३०३;
४५३; ४७४; ७४३; ११३६; १५४६;
१८५४; १८९७; २१६१; २१०३;
२१९१; २३५५; ३४३५; अहसहि
२८६५; अहसा ४१२१; ४२७५;

अहसी ६८१२; १७०५

अहहि ९१५; अहहौ ३५०२

अउतारा ८४

अउर १११; १२३; १८१२; २३१३;
७९४; ८४१,५; ८७१; ९१६; १११३;
११२२; ११५५,६; ११६३; १२३२;
१३३५; १४७४; १६८१२; १९६५;
२०२५; २२९४; २४६३; २४७७; २६०१;
२६८१२; २८३२,४; ३१२७; ३१४१;
३४४५; ३४६२,४; ३४९२; ३५१५;
३६७७; ३७२५; ३८०१२; ३९८३;
४००४; ४०८६; ४११५,६; अउरहि
१७७३; २८५६

अउसा २६१५

अकथ ४२७२

अकलै ४०१४

अकार १२२७; ३१४४,५;

अकास ४६४; ४२०४

अँकवारी ३७५४

अंको १४६१२; ३५९४

अकुताना २८७२; अकुतानी ३८२५

अकूत ४१५६

अकेल २३१२; अकेलि १०२२; अकेलै
१०३५

अखर ३९८५; अखरहि ४२६

अया ९६१२; २०२२; २१४४, ६

अँगहस २८९४

अगनित १५३

अगरख ३०१५; अगरग ३०१३

अँगरान ३०१६; अँगरानेव ३०२१

अगरिह २७३५

अगाऊ ५०३

अँगारा ४४११; ५५३; ३०८१; ३३२२

अगाहू १०२१
 अगिन ७१५
 अगिनमुख ६०२
 अगिनित १४६५; ४०८१
 अगुमन ३६५७; ३६८१; ३९३१; अगुमना
 ९५५
 अँगुरि १६९५; १७०७
 अगुवा १७२४
 अवाइ १७९५; अवाइ ३७३३
 अचकर १२१२; ९९४; १७३२
 अचम्मो २१६; ३३४; ४७१; १२३२;
 १८९१२; ४११३
 अच्येठ ११९६; २२०७
 अचेत ३२७५; अचेती ३२७४
 अछरि ७४१२
 अजगुत १६६२
 अँजुरि ३४८४; अँजुली ३२६६
 अटारी ३९१२
 अडाइ २७५१; अडारा २८६१; अडारो
 २७४४
 अड्डे ९०१३
 अँतर ३२७६
 अति ९४६
 अतिवानी २५२
 अतै ७७२
 अथयै ११७६; अथा २०१; अथाई २१२१
 अथरवन ४०४
 अँदोर ४१५६; अँदोरो ४२८२
 अघरन्ह ३८२२
 अधिकार्ह ३१२२
 अँघियारहि ३५२६
 अन्तर ३२७७
 अन्हाइ ८०६; अन्हाई १३७५
 अन (अन्न) ३४४; ८५६; ३४७३
 अनऊतर ४००७
 अनजानत १८४४
 अनतै १५९१२
 अनन्द ३०८३, ५; ३६७५
 अनो ३९२४
 अनपट ३८२१

अनपानि ३६७१
 अनभला ३२१
 अनल ३३५
 अनुसारी १४२
 अपकार ४०६; ४५३; अपकारा ८१५
 अपछर ५०१; अपछरहि ४५५; अपछरा
 ३०४; ५२३; अपछरि २३७७; अपछरी
 ४२४७; अपछारी ७६२
 अपनह ६९४; अपनेउ ३८३३; अपनै २१३;
 अपुनहि १०२; अपुनै १४१६; १८५१
 अपान ३६६६
 अपारू १३६३; ३७५१
 अपुरुव १८९४; ३४०४; ३४३७; अपूरब
 ३३५; ३७३; ४६३; १२७६; २०८४;
 २४८२,
 अपूर २८१६
 अपूरन ५९६
 अपै ३०२५
 अँवराई ३१२२; ३३१३; ३४०४; अँवराउ
 १२७१
 अँवरित २७२; २८१; ८५४; २६०५
 अबलहि ४७४; २०३५; ३३१३
 अबला ३०४७
 अबहि १२३५; १७९४; ३४८२; अबहीं
 १९५१; ४०७१; अबहुत २८५७; अबहूँ
 १९९५; २३०१; ३१६६; ३६४१
 अँवारी १४४७; ४२२१
 अभरन ६६५; ७६१, ७; ७७१; ८०६;
 २३२२; २५५२; २५७७; २६३३, ४;
 ४०६४
 अभारहु २४६२
 अभोली ३८०४
 अम्बर १०४; अम्मर ४१५५; अमर ३५७५
 ४१२४; ४२४६
 अम्भु २७३
 अमरबेल ३१२२
 अँमरित ६२३
 अभाई ९३१
 अमिय ४९४; ५१५; ६३२; ६५४; ७४७;
 २७१६; ३०४५, ६; ३३१२

- अमोलक १२८।५; अमोला ६५।५; ३७०।४; ३९८।१
 अयान १७०।६; अयानी १९९।१
 अरकत ३२७।२; अरकहूँ १७४।६
 अरथ १५।६; १६।५
 अरम्भो ३८३।६
 अरराय ४१५।५
 अरहे ७।३
 अरिला १३।३
 अरु २६९।७
 अलख १।१; अलख निरंजन १।२
 अलप ९१।५; १६२।४; २०३।६; २८०।३;
 ३३१।५; ३५५।७
 अवैक २३०।१; ३१४।१
 अवखर ४०२।५; ४०३।४; ४०७।२, ३
 अवगाह ३३४।५
 अवगुन ३०२।७
 अवटि २८५।१
 अवन्ता ४२०।६
 अस्तुति ३०१।७
 अस्थिर १२।५
 अस ४।७; १६।५; १७।३; १९।२, ५; ३०।४;
 ३१।१; ४५।५; ६३।६; १५७।१; १८४।१;
 १९६।६; १९७।३; २०१।४; २०४।१;
 २२१।४; २२७।४; २६३।४; २६५।६;
 ३०४।७; ३२०।३; ३३५।३; ३४२।६;
 ३४३।६; ३४७।४, ६; ३६८।७; ३६९।६;
 ३७०।१, ४; ३८७।२, ७; ३९०।१, ५, ६;
 ३९१।१, २; ३९६।७; ४०४।२; ४१४।१;
 ४१७।५
 असैभारी ३००।१
 असरो २२५।३
 असवार २०।५; ३३।३; ९५।२, ५, ७;
 ३७५।५; ३८६।७; असवारा १५।३;
 १४९।१; असवारू ९३।२; ३७५।१;
 ४२६।५
 असाढ़ ३३३।१; ३६८।३; ३९६।१
 असाध २००।३
 असिख्या ३४५।२
- असिवर ४१३।१
 असीस १८।५; असीसा ४०३।२
 असुवइ ३०५।४
 अहई ९।५; २५।३; १६७।२; २०५।३; अहहि
 २४६।२; अहहीं २१७।५; ३१४।२; अहा
 ७८।३; ७९।४; १२०।५; १९७।१; २३८।१;
 ३५४।५; ३९३।३; ४३१।२; अहीं ३०।४;
 ७९।३; १५४।५; १६६।१; १९७।४; २१३।३;
 २४४।४; २४५।४; २५१।२; २८४।४;
 ३५८।१; ३७४।४; ४००।१; ४३०।१; अहे
 २०।७; २४७।३; अहै २३।१; १२६।७;
 १९८।२; २०८।२; २६४।२; ३१२।५, ७;
 ३४०।७; ३४३।६; ४०७।७; ४२६।७;
 ४३२।५; अहौँ ३६३।६; आह १२।७;
 ९८।५; ११६।५; १३६।६; १६०।४; १६८।६;
 १७८।७; १८३।६; १९०।७; १९२।४;
 १९८।१; १९९।४; २०८।१; २०९।६;
 २१५।१; २२१।३; २२५।२; २२६।३;
 २२८।६; २६५।७; २७२।७; २७७।३;
 २९१।५; २९९।६; ३१३।२; ३२३।३;
 ३३०।६; ३४०।६; ३४१।६; ३६७।७;
 ३७३।७; ३९३।४; ३९४।७; ४३२।५;
- आहहि १।४।३; १८।४; ८५।७; २०३।६;
 २०८।७; २०९।४; २१६।४; २९९।२; आहहु
 १८३।६; १८६।५; आहा १५।५; १६।७;
 १।७।२; २।४।१; २।७।४; १००।२; १२।७।३;
 १२।८।३; १८।९।१; १९।७।२; १९८।४;
 २२।४।२, ४; २२।५।१; २६।६।१; २६।८।५;
 २९।६।१; ३०।८।६; ३१।७।१; ३३।९।२, ४;
 ३४।७।५; ३६।२।३; ३७।३।४; ३७।४।१;
 ३८।४।२; ३८।७।२; ३९।०।१, ५; ३९।१।१;
 ४०।७।२; ४१।१।४; आहि २५।९।३, ४, ५, ६;
 २९।०।३; २९।९।७; ३६।५।६; ३९।१।२; आहीं
 १।४।२, ४; ८।९।२; ९।९।१; ११।४।२; १२।५।१;
 १६।२।५; १८।९।२; १९।२।२; २१।०।१, ५;
 २१।४।४; २१।५।४; २४।२।३; २४।५।५;
 २६।७।१; ३१।३।१; ३१।४।३; ३१।९।३;
 ३२।०।२; ३३।९।१; ३६।७।३; ३८।७।१;
 ३९।५।३; ३९।९।५; ४२।१।५; आहे २९।५;
 १२।३।४; १३।८।१; १६।५।१; १७।९।१;

२०६।१; २३९।५; २५२।७; २५७।६;
 २६५।६; ३०८।२; ३३९।६; ३४२।१;
 २४३।७; ३६६।३,६; ३८७।७; ३९६।४,
 ६; ४२०।५; आहै ७।२; ९।४; ११३।१;
 ११४।५; १२२।७; १३०।४; १३४।६;
 १६२।४; १७६।४; १८५।४; १८९।३;
 २१६।२; २२३।६; २२५।७; २३६।६;
 २५४।२; २३८।५,७; ३४७।६; ३८२।४;

४०२।४; ४२५।२

अँहदोरा ३६७।१; अँहदोरा ३७४।२

अहर ३२९।५

अहार ४०।७; ३८१।५; अहारा ३८३।२;

अहारू २३४।२; अहारै १५६।४

अहिनिमिसि २१९।२; २४९।७; ३०५।३

अहेर २०।६; ४१०।१; अहेरा २०।२; २६।१;

४०४।७; ४१०।२; अहेरै २०।३; १६३।३;

२९९।१; ४११।२

आ

आइ २०२।६; ३४९।६; ३६५।५; ३९२।१;

३९४।१; ३९७।६; ३९८।१; ४०३।७; ४०५।७;

आइके ३९२।१; आइहि १९७।२;

३२६।३; आइँ ३८२।४; आइँ ३६८।६;

आठ १७।३; २२।२; २५।६; ३८।१; ७८।६;

८१।६,७७; ८४।७; १७१।६,७; १८२।४;

२१४।३; २१६।६; २२६।१; २३३।७;

२४९।३; २७८।२; ३०९।५; ३१३।३;

३१६।१; ३१९।१; ३३२।६; ३३४।४;

३४८।४; ३५०।६; ३७०।७; ३७६।७;

३९५।७; ४०२।१, ७; ४१६।५; ४२०।६;

आठ ३५५।५; आठब ३५५।७; आऊ

३१३।३

आउ (आयु) १२।७; ११०।४; १२५।५;

१८७।५; ३७७।१; आऊ ९२।५

आँखिउ ३३९।४; आँखिह ३७३।२; ६४५।५

आखर २३।४; २६०।३

आँग २५७।६

आँगन ३२९।४

आगि ११०।१; १४७।२; ३०८।५; ३९०।७;

४०५।१; आगी १०५।२

आगै २९।३; १६८।५; २१४।५; आगों

१८८।१, ४; १९१।४; २०५।२; २०९।१;

२१५।४; २३३।५

आँचर ४०६।३

आछत २१५।६

आछर ३१८।५

आछहि १३०।१

आछी ४१।२

आजु १७२।१; ३५४।४; ३६७।३, ४; ३७१।४

आजों ३७३।२

आँत ७२।२

आथि १०।४

आदुरस ३३६।४

आँधर १९०।७; ३२३।१; ३६२।३

आन (लाकर) ६३।४; १६२।२; २८६।३;

३७८।६; ४२४।५; आनउँ १५।१; आनहु

१८२।६; ३८२।१; आनाँ ३३३।३; २८७।३;

२९४।१; आनि १८२।७; १९४।३; २७९।२;

२८२।२; २९५।६; ३५६।४; ३८९।१;

३९८।१; आनी १६।२; २०।४; ८६।५;

८७।४; ४०१।३; आनै २८१।७

आन (अन्य) १।७; ३६।६; ११२।१;

२२९।७; ४११।२; आनू १३।५; ३०६।५;

आनों ३९।६; ११७।३; २९०।१; ३५०।१

आँपी ६०।१

आयु १६७।५; १७६।७; १८३।३; १९८।१, २;

२००।१; २०३।४; २२२।२; २५७।६;

२६४।७; २८१।२; २८३।१; २९७।५;

३६५।३; ४०४।१; ४२४।१; आयुँ ३९७।५;

आपुन ३१।२; ४८।६; ६४।७; ७९।४;

८०।१; ८२।४; ८७।२, ४; ९०।१; ९५।१;

१९४।३; २२१।२; २२२।४; २२४।७;

२२५।१, ६; २२६।४; २२९।७; २३५।२;

२४५।६; २५९।३; २८९।७; ३०२।७;

३३९।७; ३४३।४; ३४५।४; ३४९।५;

३६०।६; ४००।३; ४०१।३; ४०४।२;

४०५।२; ४३०।१; आपुनी ४२३।७; अपुहि

२२७।३; २८१।२; ३४२।७

आफुहि २४८।३

आँब ६३।६

आबद्ध ३८२।६

आयड १७२१२; १७३१६; १९११५; २१०१२;
 २१११५; २२२१२; २३५१२, ३; २३७१२, ५, ७;
 २३९१६; २४५१२, ३, ४; २५२१३; २७११६;
 ३२२१२; ३२८१२; ३२९१७; ३३३१५;
 ३३८१२; ३४११३; ३४२१२; ३४५१७;
 ३५४१५; ३७०१२; ३७११२; ३७२१३;
 ३७७१२; ३९३१५, ६; ३९८१२; ४०३१३;
 ४१०१७; **आयँड** १७८१६; २२२१६; **आयहि**
 २८४१६; ३१०१२; **आयहु** १६११६;
 २२८१२; **आयँहु** १९२१७
आयसु १११२; १९११२; २९१२; ३७५१, ६;
 ९०४; १६११५; १७२१२; २१२१६; २१४१२,
 ६; २१६१५; २१७१६; २३११३; २४७१३;
 २४८१७; २५५१५; २६३१३; ३८५१४, ५;
 ३८९१६; ३९६१२; ४३२१६
आरन २२६१३; २३६१३; ३३०१४
आरो ८२१३; १२८११
आवह ८९१३; ९११७; १२११४; १३४१३;
 १७४१६; १७५१५; १९५१४; १९६१७;
 २०२१२, ४; २१६१३; २४२१७; २९२१३;
 २९६१७; ३४२१७; ३४३१३; ३५२१३;
 ३५४१२; ३६६१५; ३६७१२; ३७११२, ५, ७;
 ३७६१३; ३७७१५; ३८०१३; ४१०१२;
आवई २१०१७; २८०१२; **आवई** २४७१४;
आवड १३४१२; **आवँड** ३४६१२; **आवत**
 २४४१६; ३९६१२; ४१२१२; **आवन्त**
 २८०१७; ३१०१६; **आवहि** १७७१२;
 १८५१२; १९११४; २१३१२; ३१६१६;
 ३७६१२; ४०२१२; **आवहु** २६२१२; ३३२१४,
 ५; ३३४१२ ३५४१६; ३७७१४; ३८६१५;
आवा २९१३; ३४९१५; ३५४१४; ३६८१२;
 ३७११४; ३९२१३; ३९६१२; ३९७१२;
 ४०११२; ४२५१४; **आवों** ३४४१२; ३४९१७;
आवधि ९२१२; ४२८१४
आसा ७११७; ३२२१५; ३५०१६; ३८३१४,
 ५, ६
आसिखा ३४५१२
आसिन ३२४१२
आहर ३२९१५
आहु ३४७१५

इ
इ ३९०१३; **इँ** १७०१४; ३४४१३; ३६०१७;
इँ ४२०१४
इक १६३१७; २०५१२; २१९१३; २८८१२;
 ३९५१२; ४०९१६; ४१११२
इकछत ४२०१३
इकसर १२८१५; ३४४१७
इत २०६१६; २४११२
इंदरासन ४२११२
इन्ह २४५१५; ३४११४; ३६०१४; ३८३१७;
 ४०५१२; ४०७१३; **इन्हसेठ** ३६०१५;
इनहि ३६०१५; ३८२१५
इस्तिरी १८९१५
इह ८७१३; १०११४; १९६१७; २०९१६;
 २१०१५; २६५१६; ३५५१२; ३६८१२;
 ३६९१६; ३७३१६, ३८४१६; ३८८१२, ५;
 ३८९१२; ४२५१२; **इहवइ** ३६०१६; **इहवै**
 १२०१३; २०५१२; **इहवें** २०९१२, **इहसो**
 २७४१२; **इहै** ११६१३; १४३१७; १८४१६;
 १८७१२; २१३१५; २२४१२, ३, ४; २२९१२;
 ३९११६; **इँहहि** ४३११२; **इँहै** ४२५१२
इँह १११२; २९१७; ३९१६; ८११७;
 १२३१७; १६७१२; १७११२; १८८१६;
 १८९१२; २०२१३; २१८१२; २२२१६;
 २२३१२, ५; २२९१२; २८०१३;
 २८६१५, ७; २९०१६; ३३८१५;
 ३४०१७; ३५५१५; ३६०१७; ३६४१७;
 ३८५१२; ३८८१२; ४००१७; ४२६१५;
 ४३११५; **इँहके** ३६०१२ **इँहवहि** २८८१२;
इहवाँ ९८१७; १८९१२; ३३८१७;
इँहहि २१०१४; **इहाँ** ६०१४; १५६१४;
 १७३१४; १९७१२; २१०१७; २३०१४;
 २७७१२; २९०१२; ३०५१२; ३४०१४;
 ३४६१२; ३५३१५, ६; ३७५१२, ९; ३८६१४;
 ३९३१२; ४०८१२; ४२११२; ५; **इहाँहुत**
 १०१७

ई
ईगुर २६१६; ३९१४; ६३१२
ईछा १६१४
ईत ८११५; ८२१७; ९८१२; १५२१६

उ

उआई ६०४
 उई २१५५
 उखटे ३६९१३
 उखम ४४५५; ४४५२;
 उगसत ६०१३, ४
 उघर २८६१७; उघरहि २५४४; उघरि
 २८०४४
 उघार ९२१२; उघारि २६८१२; उघारी
 २६८१३; उघारे २६६१३; २७६१४; उघारौ
 २६५१७
 उचाइ ३७१३; ५१३३; ८४१७; २८४१७;
 ३४८१७; उचाई ३७३३; ३९१३;
 ३०१३३; उचाये ३४७१३; उचावइ ३७३२;
 ३०१३२; उचावठ ३०१३३; उचावत
 ३८१५; उचावहु १५७१५; २१६१४; उचावा
 २१६१५; ३५८१३
 उचारि १६१३३
 उचाट ३३५१३; ३४४१६; ३५०१४; ३८५१३
 उजारेड ३१५१३
 उजिआर १५७१३; उजियार १७१३३;
 उजियारा २३२१३; ३५२१३; उजियारी
 ३२५१३; उजियारे ३५२१३
 उटयेड २६३१२; उटवहि २००१६; उटवहु
 ४२५१७
 उठाइ ३७५१४; ३९७१२; उठि ४०९१६;
 ३७१३५; ३९७१५; उठेड ३७७१२; ३९९१६;
 उठेसि २३१३३
 उडहु ३७१३५; उडाइ १३८१२; उडाई
 १९९१४; २७९१३; उडानौ ३७२१३;
 उडानी २०४१४; उडावड २७८१३; उडावइ
 ३७१३५; ३७२१६; उडावसि ३६१३३;
 उडावो २५१५; ३३१३५
 उडारा २७५१३; उडारी ४०१३२
 उडि ३७१३७; उडिह १९१३३
 उडकि ४२२१५
 उडरि ३९९१५
 उडिउँ ३४०१५; उडिमि १८१४; १४९१७;
 २२५१२; २५७१३; ३९१३७; ३८३१७;
 ३८४१३;

उतंग ३१७१३

उतर २९१३; १६५१७; उतर २२५१४
 उतरउँ ३४९१४; उतरि ४०५१४; उतरे
 ३९३१२; उतरेड ३१९१२; ३४०१४
 उतरि २३१३५; उत्तारी २३१३३; ३९८१२;
 उत्तारु २३१३२; उत्तारहु १४२१३
 उदराई ३६५१४
 उद्वै १८८१५
 उदिआनी १०९१३
 उदिनल ५५१२; १२८१३
 उदेक ३४४१६; उदेग १०४१३; ११५१४;
 ३३५१३; ३५०१४; ३८५१३
 उदो ८७१७
 उन्दिर ९३१६
 उन्ह १२३३; १३३३; १८१३; २८१३; ३१३३;
 ४५१६; ४६१३; ८२३३; १३०१५; १९३३७;
 १९५१५; २०३३३; २०४३२, ५, ६; २४५१६;
 २५१३३; २५३३५; २५४१४; २५५१५;
 २५६१६; २८९१५; २९१३५; ३३८१४;
 ३४५१६; ३४६१७; ३४७३२; ३६६१६;
 ३७४३३; ३८५१५; ३८६१४, ५; ३९१३५;
 ४०३३३; ४०७३३; ४०९१७; उन्हकै १२३३५;
 उन्हारी २०३३३; २४९३३; ३०५३३;
 उन्हारे १७१५; उन्हारी ३१०१५; उन्हकै
 २३७१४
 उनकहँ १७७१३; उनहि ३८५१६
 उनै २४४१५; ३३२३६; ३३३३२; ३६८१३;
 २७०१२
 उपकरी १७७१३; ४१३३२
 उपनाई ६८१२
 उपरि २४४३३; उपारी १४५१४
 उपफाँई २८३३३
 उबर २७५१६; उबरा १२६१५; उबरे
 १४७१७; १७५१६; ३६३१५; उबरतेंड
 १२५१७; उबरेंड १२६१७; उबारहु
 २२३३७; उबारा १७५३२; २३७३३;
 २७५३२; २७९१४; ३१९१३; उबारी २७५१४;
 उबारे ३६३१५
 उभारी २०१३३; ३९१३४
 उभै ३७२३३

उयेउ ३५५१,३
 उरघ २८२।२; ३८२।३
 उरबाई २५५।३
 उरहिं २४१।६; ३८२।५, ६
 उरेहा ४०।१; उरेही ३९।६; ४०।६; उरेहे
 ३९।७

उवइ २८।६; ३५३।७; उवई २४३।१; उवहि
 ३८१।६; उवहु ३५१।४; उवै ३२४।२;
 ३५७।१

उह २६०।२; २६२।१; उहि १।३; ३६।४;
 ८७।७; ८८।१; १८३।१; २६६।१; २६८।४;
 ३६३।६; ४१०।७; उहेउ १९३।१; उहै
 ४०।७; १२४।१; १३८।३; १९३।७; १९६।७;
 २२३।४; २७३।३; ३५६।५; उहो ११७।४;
 १७४।३; २२३।२; २४४।४; ३८८।२;
 ३८९।२; ४०७।६; उहौ ३१३।१; ३३०।२;
 ३३८।३

उँह ३२।७; १९०।६; उँहहि ३४१।६;
 उहाँ १९२।१; २६५।५; २७७।१; उँहि
 १९२।७; १९६।२; २५९।६; ३८९।७; उँहै
 ३९१।६

उँहरेउ ३०३।७

ऊ

ऊ ३१५।२; ३१७।३; ४३३।१
 ऊखम ३३३।३
 ऊर्नी ८७।५
 ऊपम ६२।५
 ऊवरा १४७।५
 ऊभि २९९।३; ऊभै २७९।४; ३११।६;
 ३१७।२; ३१८।७; ३६९।३
 ऊहो ४००।१

ए

एइ ३८४।५
 एकसर १२८।४
 एकहिं १३४।२; ३४२।५; ३५३।२; एकै
 २९२।६; ४१७।६; एको १९।४; १६।४, ६;
 २७।१; ३३।२; १५०।४; १७५।१; १८९।१;
 २१५।७; ३८७।३
 एकादसि ७८।५; ७९।२; ८०।२; ८६।३

एत २१४।७; ३९४।६; एतहिं २२३।४; एती
 ४३।३; ३७९।३

एह १६२।१; ४१३।६; एहाँ ४७४ एहिकै
 ३९१।४; एहु ३०४।४

ऐ

ऐंचसि १८५।५

ऐती २१३।३

ऐस ३७०।६; ऐसहिं १९९।६; ३८९।२, ४

ओ

ओकर ४००।३; ४०८।१; ४३२।३, ५; ओकै
 ११७।४

ओकहँ ४०७।२

ओखाँ (?) १८८।७

ओरहन ३८८।१

ओराइ १९।४; ओरान ४४।७; २३९।१;

ओराना १७१।१; ओरानेउ ३१३।६

ओलँहाँ ४२६।४

ओसरी १३०।७

ओहट १८७।२

ओही ८८।५; १२५।३; ४३२।२; ४०७।५

औ

औ १५०।२; १८०।३, ४; १९५।३; १९६।६;
 २०८।२, ५; २१०।६; २११।६; २१२।३;
 २१५।६; २१९।३; २२१।६; २२२।७;
 २३४।६; २४२।१; २४६।६; २५७।५;
 २९९।६

औखद ५१।७; ५५।७; ५६।४; १४७।२;
 २०४।२; ३००।३

औगुन ३३०।६; ३६२।६

औतरा ३५६।५; औतरी १४६।३ औतारा
 ७१।१; औतारी ६२।४

औधि १३१।६; १९६।७; ३२९।४

औरौह ३१८।६; ३३१।६; ३३५।७; ३५१।६

क

क (का) १८३।१; ३३४।५; ३३६।३, ५;
 ३४४।५; ३४५।२, ६; ३४७।१; ३५३।२, ५,
 ६; ३५४।२; ३५६।६; ३६०।७; ३६३।३;
 ३७०।४; ३८८।१; ४२४।५; ४२८।६;
 ४२९।७

कइके ३६३४
कइसइ ६३५; कइसे ९८३; १३६६;
१४०६; कइसेउ ३६५२
कउन १४४५; १४१३; २०९६; २२२३;
२२८६; कउनउ ३१७; कउने १८३३

ककाह ९३५

ककनिया ९४५

कंकर ७४३

कंचन ६०१

कंचु ३३२३; कंचुकी ३७२२

कचोरन्ह २३२४; कचोरी ३९१४

कछु १८४, ५; १९५; २५६; १८९२;
२०२५; २२७५; २३६४; २५९३;
२६२१, ६; २६३२; २६४४; २७२३, ७;
२७७२; २८५४; ३२७५; ३३९५;
३४२२; ३४३४; ३४५३; ३४६३;
३५०३, ४; ३५१३; ३५२३; ३५३५;
३५४३; ३५९३; ३६७५; ३६८३;
३७३४, ७; ३७४४, ५, ६; ३९०५;
३९२४; ३९३४; ४०९३, ३; ४२१५;
४२५७; कछु १००३; १७८३; १८२७;
२२८३; २९४६; ४०७३

कजलीन्न ३३८३

कटक १५३; ३३७६; ३९६५; ४२३२

कटि (कट कर) ७१५

कटारिंह ३४९३

कैठमाला ६६५

कड़ा २४५

कण्ठन ४६५

कतरनी ९४५

कतहू ९९६

कन्त ३२३३, ७; ३२५७; ३२६३; ३२९७;
३३१३; ३३२६; ३८१३

कन्या ४२०५

कन्ह (कृष्ण) ३९५

कनक ३९३; ५९७; ६१३

कनसुई ३१३२

कपँहि ३२८३

कमाता ७३३

कय २९८५

कया ३३५; ३४४; ३६२; ४१४; ४४६;
४९५; ७१५; ९०२; १०३५; ११८३;
११९३; १३५७; २४२३; ३०७३, ४;
३०८३; ३११४; ३१५७; ३८५५, ७;
३८७६

कयाह ९३४

कर २७३; ३२०३; ३२६६; ३३७३, ४;
३४५४; ३४७४; ३५०२; ३५४४;
३६०४; ३६७३; ३७७३; ३७८५;
३८२४; ३८३४; ३८४६; ३८९६;
३९४४; ३९५२; ३९९२; ४०३४;
४०४२; ४०७४; ४२५३

करहू १४२४; २२७२, ४; ४२४५

करउँ १७७३; २७०३; ४०५३; करऊँ
२९०२

करंजी ३५२३

करत २००२; ३२६४; ३७५६; ४०६३;
४२९५; करतेउँ २२५७

करतार १५७; ४२३६; ४२४४; ४२६७;

करतारू १३

करन्त २२०७; २३१७; करन्ते ४२३६

करन ७४७

करना ४२९३

करपल्लौ ७५६; ३८२३; करपालो ६७४

करव ३१६३

करम १७२२; २९४३; करमहि १६९४;
३९४७

करवट ३३५६; करवत ७१४, ६

करवतिया ३८५

करसि ७१५; करसु १९५२

करहूँज ३०६७

करहि ३३२७; ३६०५; ३८५३; करहि
२३१७; २६१७; ३७५७; करहु ९१७;
१६७३; १९७६; १९८३; २००३, ५;
२३३६; २३४२; २६३६; २७२६;
३३२५; ३३६५; ३६३३; ३८६३;
३९१२; ४०३३; ४०९४; करहूँ
२१२७; करिहि ३९०७;

करहुत १०३३; ४२४२

करा ५२३; करौ ७४६; २६५३; ३५६५

कराई ३७८१७; कराई २७७३, ४; ३९०१४;
४०८१४; कराण्ड २४३१४; करौहि २४८१६;
२६११६; ४०९१७; कराही २०६१४; ३६६१२;
३८८१२; कराहीं ३११२; २४५१२; २६७१५;
२९७१५; कराहु ४०६१७

करि ३५०१२; ४१०१७; करिउय १६९१६;
करियहु ३४७१५; करिह १८५१७; करिहु
४२६१७; करिहौं २६६१७; ३०७१४; करेइ
३०४१७; करै २४३१२, २; २६६१२; ३८६१२;
४०३१४; करौं ३५३१६; ३८०१६;
४७२१२; करौं ३२८१२; ३६७१; ३७८१३

करिया ३२३१७; ३३४१३

करी (कली) २९२१२

करीलहि २२९१३

करेज ५५१७; २१३१७; २८८१७; ३४९१३

कलह ४१११२

कलखुँटी ४२३१४; ४२५१३

कलथ ४१७१७

कली ७७१२

कलाई ६७१२

कवन १२२१५; १२८१४; १३५१३; १६५१७;
१८३१६; १८४१६; १९२१२; २१०१५; २१४१५;
२२७१३; २५९१४; २९९१३; ३१९१३, ५;
३७८१७; ४०५१३

कँवल २७१४; २८१६; ४९१३; ६०१७; ६५१५;
७०१२; ७४१३, ४; ८११३; ८७१७; ३१५१४,
५, ६; ३१८१२; ३८३१२; कँवलघट ८११२;

कँवलपत्र ५८१२

कस्टा ४२११२; कस्था १७०१५

कस ६५१५; ३३१६; ८७१२; ९०१३; १३०१२;
१८२१३; १९९१३; २१०१३; २१७१६;
२२५१४; २२७१४; २३४१४; २४४१६;
२८८१२; ३३५१४; ३६९१५; ३७७१४;
३८६१३; ३८७१४, ५; ३९९१३; ४०५१४;

कसकै ३५९१६

कसि १९७१७; कसिसि २४३१५; कसी
२४४१४

कह (का) २६७१२

कँह ७४१३; ७८६१७; ९२१३; १२०१२;
१२३१७; १२४१५; १३०१३; १३५१३;

१४०१६; १६०१२; १६४१२; १६६१४;
१६८१४; १७३१३; १७४१२, २, ३, ५;
१७८१३; १७९१४; १९४१२, ६; १९६१३;
२०२१३, ४, ६; २०३१२; २०७१५; २०८१२,
३; २१०१२; २१५१३; २१७१६; २२२१५;
२२९१२; २३११२; २३२१२; २४६१२, ७;
२४७१४; २५२१७; २५५१५; २५८१२;
२६११६; २६२१७; २६३१३; २६४१२;
२६८१७; २७११४; २७२१६;
२७७१६; २७९१६; २८२१५; २८३१२;
२८८१५; २८९१२; २९७१५, ६; ३१९१५;
३२५१३; ३२६१३; ३३०१२; ३३५१३;
३३६१२, ७; ३३९१३; ३४११७; ३४२१६;
३४६१५; ३५०१२; ३५३१५; ३५५१४, ५;
३५६१२, ४; ७; ३८७१४, ६; ३५८१३, ६;
३६०१३; ३६११२; ३६३१३; ३६४१४;
३६६१३; ३७०१५; ३७११३; ३७५१४;
३८६१६, ७; ३९२१२; ३९४१३; ३९६१३;
३९८१४; ४०३१३; ४०२१२, ३, ७; ४०३१३;
४०४१३; ४०७१५; ४२११२; ४२४१३;
४२६१४; ४२७१२

कहइ ३५५१५; कहइओं १४४१२; कहइ
१५११५; १५८१५; २३०१३; २८८१५;
२९३१४; ३१४१३; कहउ ३४५१४; ३९०१२;
कहउँ १५१३; १९२१५; २६३१५; कहत
२२१३; २२७१६; २७५१५; २८२१६;
३५१२; ३५२१३; ३७१२; ३९९१३, ४;
४०१३; ४०३३; कहति २२४१३; ४००१२;
कहसि २११७; ३११४; ३३११६; ३४११३;
३५६१२; ३५७१५; ३७२१२; ३९५१३;
२०३१३; २०५१३; २१६१२, ४; २२२१५;
२६८१२; २७८१२, ३; २८७१४; २८८१२;
२९५१४; ३७४१५; ३८७१४; ३९६१६; कहसु
२२२१४; कहहि २९१२; २२११४; २२५१३;
२९७१५; ३६०१२; ३६७१३; कहहिँ १६५१३;
१६९१७; १७९१२; २००१४; २१०१६;
२२११४; २५०१२; २५९१३; २८५१५;
३४२१२, ४; ३४७१४, ६; ३९०१३; कहहिँ
२१७१५; कहहु १३५१४; १६११३; १७२१३;
२०१३; २५८१७; २५९१४; २७७१३;

२९४१२; ३२३५, ७; ३२७५; ३४६१३, ४,
 ६; ३५५१, ३; ४०९१; कहुँ २७४१३;
 कहाइ ३८९५; कहाई १६९१३; २३३१२;
 २५९१४; २७०१४; ३७१३३; ३७९१२; कहि
 १८७१३; ३४३१४; ३५५१३; ३६११३;
 ३६३१२; ३९३१५; ४०२१३; कहिउ ३७५१३;
 कहियहु २९११५; ३३२१६; ३४७१४;
 कहिसि २६१३; २९१३; ४९१६; ८०१२;
 ८११६; ८३१३; ११६१२; १२७१७; १३३१२;
 १६०१५; १७११२; १८५१६; १८६१३, ४;
 १८८१६; १८९१२; १९०१६; १९२१५;
 १९५१३; १९७१५; २०५१३, २; २०९१३, ६;
 २१११३; २२०१३; २२५१५; २३०१५;
 २३११३, ४; २३३१४; २४४१२; २५८१२;
 २६२१२; २६३१२; २६७१२; २६८१२; २७०१२;
 २७२१३, ४; २७४१३, २७७१२; २८११५;
 २८४१३, ५; २८६१५; २८७१४; २९३१२, ५;
 ३२०१३; ३४०१३; ३४११२; ३४५१५;
 ३५०१२; ३६२१२, ५; ३६४१३; ३७११३, ३;
 ३७३१४; ३७४१७; ३७७१४; ३८८१४;
 ३९४१७; ३९९१२; ४००१३; ४०११३;
 ४०५१३, ६; कहिहु ३९११३, ४; कही
 ३९५१३; कहु २७३१७; २९४१४; ३३८१५,
 ७; ३४६१७; ३६९१५; ३७११४; कहुँ
 ३९०१४; कहेउ १९२१४; २३७१३; २६३१७;
 २७२१५; २९२१४; २९४१४; ३५४१३;
 ३९५१३; कहेंउ १७५१४; १९६१६; १९७१२;
 २०८१६; २३५१४; ४३११७; कहे ३४९१७;
 ३७०१३; ४०६१५; कहौ २९१४; ९८१२;
 १३५१६; २०६१२; २३६१३; २५३१७; ४०३१४

कहनी २१९१३

कहा (कहाँ) ३३८१४

कहा (क्या) ३६६१५

कहि (को) ११९१५

कहियउ २११३; कहियेउ ३६७१४; कहिया
 १२०१६; कहियो ३५११४

कहिसि १६४१३

कहुँ (कहाँ) १९२१३

का (क्या) २९१४; ३०१३; १८३१२; २००१३;
 ३१९१४; ३५२१२; ३६७१६, ७; ४०७१२

काँई ३१६१७;

काऊ (कोई) २८६१७; ३४६१२; ४०९१५; काऊ
 १११५; १८५१४; २०६१२; २२८१३; २८९१४;
 ३५२१२; ३७८१५; ४०९१२

काँऊँ (कहाँ) २९०१३

काकर १८९१३; ३५२१७; ४२५१५

काकरूद ३०९१२

काकल ६५१२; ३३०१३

काकहि ३१३१५

काँख ३३४१४

कागल ३२५१५

काँची ३१५१३; काँचे ७४१३; १८३१७

काजर ५७१५; ६४१२; ७६१३

काजा ४०२१२; काजू ३६०१४

काटा ३४९१३

काँटे २२६१६

काठ ४२५१३; काँठ ३६३१७

काइसि १६४१३; ३६४१३; काड़ा ८३१२;
 १८५१५; २२६१४; २९६१५; ४०२१३; कादि

१८५१२; २५५१६; २७९१३; ३७३१२;

कादिसि १६३१५; कादी १७६१६; २९०१४;

३००१३; ३४४१३ कादौ १८५१३; ३०५१४;

३१११३; ३८३१४; कादों ३०७१३, ७

कातिक ३२५१३

कानि ३१५१७

कापर १६१२; २३१६; ३११४; १०३१३;

२४७१३; ३५६१७; ४२९१४

काँम ५१६; ३०७१२; ३३५१५; ३३८१३

कामिनि ५६१६

कार्मी ३५५१२

कार ७८१३; ९३१४

कारन १८७१७; २७११६; ३८३१७; ३८८१३

कारुन ११०१४

काल्हि १७२१३; ३९९१२

काह (क्या) ३३१५; ३४१३; ५११५; १०३१७;

१४३१४; १६२१२; १६५१६; १७३१५, ६;

१७८१४; १९०१६; १९३१६; १९७१३; २०११३;

२२११२; २२५१४; २६५१६; २७९१२;

२८४१५; २९०१४; २९४१३, ४; ३१६१३;

३२०१४; ३२८१३; ३४३१३; ३५२१३;

इवडा१, ७; इवडा२; इवडा३; ४०११; ४२४४; ४३१५; काहा १२७३; १२८३; १३०३; १७१३; १८९१; २६६१; २६८५; २७८१; ३२९५; ३४७५; ३६२३; ३८५२; ४११४; काही ४७४; २१०५; २१३२; ३१४५

काहि (किसी) २१३६; २७२१; ४२५५; काहि ४३११; काहु ३४१; ७१६; ७९६; २३४५; २८१३; काहुँ २२२५; काहुँ २९६५

काँहहि (क्यों) २१९४; काँहि १६५२
काहीं (कहीं) १३४१; काहुँ २६१२
काहु १३४१; १५१५; १७०४; १७९४; २४९५; २६७४; ३५१६; ४२१४; ४२६४

काहे २७४३

कि (वा) ३५८७

किहू ३८४२

कित ११९२; २८३६; २८७५; ४१३६; ४१८६, ७; कित कर ३९४६; कितहु १८४५; २७१३; ४०१५, ७; कितहु २०५६; कितहुँ ३१७६; कितहुँत २१४२

किन्हि १८६५

किन ४२७५

किमि ३०५२; ३१८५; किमिकै ३१०२

किय १७५५; २२०७; २६५५; २६६६; ३२७७; ३२८७; ३६२३; कियहू २७२५ कियउ १९१२; १९३३; २०१५; २३०६; २३१२; ३५९३; ३७५२; ३८३२; कियत १८२५; कियहि ३९४४; कियहु ३८०४; कियेउ २९६२; ३१८६; ३३३७; ३६५५; कियेउँ २९४३; ३८११; कियै २७५६; ४०८३; ४०९१

कियहु ३८०४; कियेउ २९६२; ३१८६; ३३३७; ३६५५; कियेउँ २९४३; ३८११; कियै २७५६; ४०८३; ४०९१

किह २६४; ६९१; ८६४; १००४; ११४४, ५; १२४७; १२९१; १३५२; १३६७; १६९१; १९२३; २००१; २६७३; २७०३; २७९३; २९३६; ३९१६, ७;

किहू २८५; ३६२; ९९७; १००७; ११०५; १२८७; १७२७; २७३६; २७८६; २८७१; ३०१२; ३१५१;

३२०४; ३४०३; ३४९५; ३६४३; ३७६२; ३७७३; ३९१५; ३९५४; ४०१५; ४०४२;

किहसि ३२७२; किहहु २५८७; किहिसि ३०१; ६९१; १३८२; १९४५; २३४२; ४२३२; किही ९६१; ३८५२; किहीहुत ४२८४; किहे १८४४; किहेउ ८६३; किहेउँ २३८१; २६९१; १८४४; किहँ १९२४; २२७७; किहौँ ८१५; किही १८७५; १९९१

किहौँ (के पास) २४२४; २९१२

कीज (?) ५६१७

कीजहू ४७७; ७८२; ८९४, ६; १११४; १५५४; ३६०६; कीजै १९४५; ३५१५; ३५५४; ३६६५; ३८५२

कीत २०११; ३३०६; कीतसि १७३३; २३९२ कीतँहि ४२६२; कीता ४०३; कीती ३३९३; कीते ४३२५; कीन्ह ४७४; १४४७; २४३७; २५३४, ६;

२८९७; ३४४७; ३९२७; ४०५२; कीन्हा ८३३; १८८५; २५५२; २६९२; २७२४; २७३५; २७८५; कीन्हि २३५६; २८२७; २८८२; ३८६२; कीन्ही १६७४; ३४१४; कीन्हे ४०६३; ४०९४;

कीन्हेउ ३९०१; कीन्हेउँ १२४३; कीनसि ६२; १३३४ कीनहु १००२; ३८१३; किनिहि २४६७; कीनों ३३९२; कीह १८६७; कीही १४६४; १५४५

कीतसि (कहाँ) ४१४३
कीर २४४
कीसन ७५४
कुचहि ३८०७
कुछउ २४७; ३१५

कुंजर ३२४६, ७; ३३११; ४१६७; कुंजरा ४१३५

कुट्टव ३४६४; ३९८४; कुट्टवौँ ४०५७

कुदन्तहि ३६४१

कुदेरा ३८५; कुदेरँ ६६१

कुन्द ६६१; ७४१

कुन्दन ६०२; ३१८३

कुँबलाई १६६५; ३३०५; कुँबलानाँ

३१२३; कुँबलानी ३१६५
कुँभस्थल ७०१, ७; ३८२४; ३८३६;
४१७५

कुम्भ ४११५

कुमुदिनि ८१२

कुरंगिन २१४; ४५१; ५९५; ३७७४;

कुरंगिनि २२३, ४; २३२, ४; २४२;
३४३; ४०६; ४१४, ५

कुरला ६५३; ३०८५

कुरिल ५३१

कुलवन्ति ८९२; ३९१६; ३९९५; ४०४४;

कुलवन्ती ४२८१

कुवाँ १६१२

कुसुँभ ७६४

कुहुकन ६३३; कुहुक २२८३

कुहाइ ४०४६; कुहाई १००४; ३०२१, ३;

कुहानेठ ३८७२

कुसर ३५४६

के ३९३२

के (कर) ३४९६; ३९३३; ३९५५

के (या) २१७२

केउ २९२६; केउनहि १०३६; केऊ
१३८५; केऊँ ४२७३

केयूर ३०७२

केर ६८५; ७३३; २२३१; २६०१; २६७४;

३६३५; ४२९१; केरा २३२; ३७४;

१३५३; २१३७; २६७४; २६८४;

२७५३; ३१०४; ३२२४; ४१०२; केरि

१२३; ३३९३; केरी २६१५; ३६२६;

३७९५; केरे १९९५; २०४६; ४११७

केवइ ३८३२

केवा २२६५

केहरि ६९१; ३८४७;

केस १०९१; केसा ३०८३

केहिके २१३२; केहुइँ १९०७; केहु २२९१;
३६६५

कै (का, की, के) १६११; १६९७; १७३१;

१७४६; १७५६; १७९५; १८०१, ५;

१८१७; १८२३; १८७५; १९१३, ७;

१९४३; १९८१; १९९४; २०२२;

२०५५; २०८२; २०९४; २१२५, ६;

२१४६; २१९५; २२३३; २२९७;

२३५२; २५४७; २५४७; २७३१;

२७८७; २८९६; ३१६७; ३२०३;

३३०७; ३३४६; ३३८६; ३४०६;

३४२४; ३४३६; ३४५३; ३४६३, ४;

३५२३, ४; ३५७२; ३६०१, ३, ६;

३६१४; ३६३४; ३६५१, ३; ३६७४;

३७१६; ३७५७; ३८५१; ३८६२;

३९१२, ५; ३९३४; ३९५१; ४; ३९७२;

४००१, ५; ४०६७; ४०८३, ४;

४२०३

कै (कर) ८२१; ९०२; ९६२; १४३४;

१७१६; १८१३, ५; १८६२; १८७६;

१८९५; १९२५; १९३५; २०९६;

२१७५; २२०३; २२५३; २३०३;

२३१४; २४११; २५४७; २५५१, ५;

२६१६; ३१२५; ३२९२; ३४२३;

३४४७; ३४६७; ३५१६; ३५२७;

३५८२; ३५९२; ३६२४, ७; ३६६३;

३७१४; ३७२३; ३७५३; ३७७३;

३७७५; ३७८१; ३८०१; ३८२३;

३८८४, ७; ३९०२; ३९८२; ४०५६;

४०८५; ४२१५; ४२३२; ४२६२, ५;

कै (को, के, लिए) १७१७; १९६३

कै किस १७६४; १७७५; २३८६

कै कितना ३३८७

कै (क्या) ३६७५

कै (हो) २२२१; ३५४५; ३९०२

कै (या, अथवा) ५७६; १८२२; १८८२;

२००२; २१७१, २, ३, ४, ७; ३४३१;

३५३४; ४०६४;

कै (कौन) २८२३

कै (प्रकार) १८३५

कैसहिँ ७८७; १०८६; १४३१; ३५३१;

कैसहुँ ९६७; २३५३; २३८७; २८६३;

२८८६; ३३९७;

को २०२६; २०८४, ७; २१०१; ३१२५;

३४०१६; ३६०१५; ३७०११; ३८७११; ४०२११; कौं ८२१३, ४
कोड ८२१६; १३९१७; १६९१३; १७११२, ६;
१८२१२; २१११३; २४७१५; २६६१२, ३;
२८११२; २९०१२, ३; ३०८१२; ३४२१४;
३५०१६; ३५२१५; ३५३१३; ३५९११;
३९६१७; ४०२१७; ४०५१३

कौख ७४१२

कोट ३६६१२

कोड ४५१७; ८०१५; ८११२; १८६१५; २०२१४;
२३४१५; ३०८१५, ६; ३५११३

कोर १६४१६

कोरि (कोटि) ९५१४; ३५९१२;

कोरी ४०८११

कोरीं ३६११४

कोलाहर ३६९१२

कोस ३५१५; ३५९१३; ३६५१६

कोह ५१६; ३९९१६; ४१२१६; कोहू ३८८१५

कोहू ७२१४

कौ २७०१७

कौघा ५५१४

कौरा १७७१२

कौरों ४१८१७

कौसीसा २६१७

ख

खटरितु ४४१७; ४५१३

खटवाटि १५९१३

खटारस ६५१३

खँड ३९११

खँडवानि ४४१२; ३३२१४

खतरी १३११४; १५१११; २६६१६

खपर १०९१२

खभारू ४२६१५

खर ५८१३

खरग ५९१७

खरा (खड़ा) ३७५१३

खरदम १०१३

खरभर ३६७११; खरभरेउ ४१५१७

खलरी २८९१६

खसि ८५१३; ४१५१५

खाई ३४९१७; खाइसि २३९१७; ३६४१७,

४१११५; खाइहि १८०१५; खाई २२९१३;

खाउ २७४१७; खात ३६२१७; खातेउ

१८६१४; खाव १८३१७; खायउ ३६३१४;

खायउँ २३९१२; खायहि ३१०१४; खायहु

१८२१३; खायसि १२३१४, ५; खायसु

१८०१४; खाव १६२१७; खावँ १०३१४;

खावउँ ३६३१२; खावा ३३११४; खाइहिं

२१२१४; खाइहि २६११७; २७४१५; खाइही

३०४१५; ३१०१५

खाइ २३७१२; २६६१२

खाँग १६१६; ३६१५; १५११७; खाँगा ४९१२;

खाँगी १६१४; खाँगों १२२१२

खाँड ७७१२; ३३९१६; ३४११५

खाँडा (भस्त्रा) ५३१६; ३३७१४; खाँडि १९४१६;

खाँडे २४९११; ३०६१५; ३६३१७

खाँडा (काटा) ३१९१५; ४१६१२; खाँ डेउ

९११२;

खानि २१२१४

खारू २५९१५

खाल ६६१७; २०५१६

खिडरिज २३४१२

खिन ४११३, ५; ४८१४; ९९१५; १८८१३;

१९११६; १९४१७; २१६१७; २३५१४; ३२३१४;

३४४१२; ३५९१७; ४०९१६; खिनक १५९१७;

२०४११; ३११११; ३८४१३; खिनखिन २४१५;

२५१४; ३१११६; ३३४१६; ३५११२

खियाइ १६११४; खियाइसि १७३१७;

खियावत ४२९१३; खियायसि १७९१३;

खियावा १९११३

खीन ३४१६; ७५१४, ६; ११२१७; ३२६११

खीर १९१२; ४११२; ३२७१२; खीरू ८२१५;

८७१२; ३७८१२

खुरकहि १२११७

खँही ६०१३

खेता ५७१४

खेम ३७५१५

खेलइ ४५१७; खेलसि १४८१६; १९७१४

खेलेउँ २२८१२; खेले ४१११२

खेह १०१, ४; खेहा ४३१
 खें १६९११; १७६१४; २३८१६
 खोइ खोइ ३३०१२
 खोयेंड १२९१२; खोयसि १२९१२
 खोरी ४२०१२
 खोलसि २७२१२

ग

गइ ४००१३; गइड १९२१६; गइह १९३१४;
 गइसि ८४१४; गवई ३६८११; गयउ
 २३१५; ३६१२; १६६१६; १८९१७; १९६११;
 २३९१३; २७०१४; २९४१५; २८९१४;
 ३०८१३, ६; ३१०१४; ३४९१४; ३७७१७;
 ३८७११; गयउ १३७११; १९३१४; गयाहु
 १७०१७; गयेउ २८४१२; ३२९१५; ३३७१३;
 ३३९११; ३५४१३; ३६४१२; ४१५१२;
 ४२३१४; ४२७१४

गांग ३३४१२, २; गांग ३२४१२; ३५८१५;
 ४०६१४; ४२८१४

गज्ज ३८४१७
 गजमैमत ८८१२
 गजमोति ६४१७
 गजेउ ३२११६
 गकरियहि ३६२१२, ३
 गदा ३६६११; गदेउ ३०५१७
 गंधरप ९१५
 गंधाई ७४१४; २७११३
 गन्धरवाहि ३००१६
 गंभीरा ६४१२
 गयन्द ४११७; ४१६१६
 गर २७१५; ५२१७; ४०९१४
 गरगज ३७६११
 गरव ७७१५
 गरया ९३१५
 गरलाई २५१४
 गरह १७१६; १८१४; ३०६१६
 गराइ ४१९१७
 गराह ३३११७; गरु ३८४१६; गरुई ४०६१६;
 गरुव ४१७१७
 गलगजेउ ३२४१७; गलगजे ४१११७

गवन १०१५; ७७१४; १३४१३; २६३१५;
 गवनइ ३६०१५; गवनी ३२५१५; ३८९१६;
 ४२७१६; ४२८१५;
 गवईह १३८१७; गवाई २२३११; गवावइ
 २२६१६; ३०५१२; ३५२११; गवावउ ११२१३
 गवेस ७९१६; ३३६११
 गहाई २४१४; १७९१३; २१३११; ४१८१५;
 गहसि १४९११; १९४१३; ३०६१३; गहाही
 १९०१३; २१९१५; गहहु ३७८१२; ३८२११;
 गहा ४५११; २४२१४; ३०७१५; ३३५१३;
 ३४८१३; ३७८११; ३८२१३; ३८३११;
 ३८९१३; गहि ४४१६; ३७८१६; ४०९१४;
 गही ८२१२; २५५११, ४; ३०२१२; ३७९११;
 ३८९११; ४०४११; गहीं २५११२; गहु
 १३२१४; ३८११४; गहे ६८१५; ३१७१५;
 ३८२१६; ३९७१५; गहेउ १६४१७; गहै
 ३०३११; ३८२१४
 गहन ७०११; ३४७१७; ३७७१६; गहन
 ३१३१३
 गहन (ग्रहण) २४१५; ३३१४; १२९११; १६८१५
 गहर ४२१६; गहरें ३१६१५; गहिरें ३३४१४;
 गहिराना २९११४
 गहिगहि ३६७१२, ३
 गा १८०११; १८६१३; २३४११; ३०२१४;
 ३१४१४, ५; ३५८१४; ४०३१५; ४२३१४
 गाँउ ९६१६; २०५१२; २१०१३; २२२१६;
 ३८५१५; गाँऊ ११७१३; १२७१५; २०९१४;
 ३८५१४; ३९३१२; ३९४१४; ४००१३
 गागर ४०५११
 गाजत ३७६१६; ३९६१७; गाजा ४१२१४;
 गाजे ३६६१३
 गाँठि ६८१४; गाँठी ४३११५
 गाडिहि ३५९१२
 गाढ़ १६८१६; ३०३१७;
 गात ७५११; ४०८१७; ४१११५; ४२८१७;
 गाता ३७२१३; ३८७१३; ४९९१३
 गाथा १३१३
 गायहिं २५०१५; २५११६; २५२१६, ७
 गारी ४०७११
 गारो ३७४१३; ४०११७

गाल ६११; गालहिं ६१२
 गिय ६६१, २; ७७३; ८८७; ९५६; १४०४; १४१२; १९०२; ३०४२; ३१६३; ३५८२; ३५९६; ३९२२; ३९७२; ४१६३; गियै ४०७५
 गियमारी ३२११
 गियान ४७६; ८७२, ३; १५९१; ३१३५
 ग्रिहम ४५२; गिरखम ३३२५
 गिरही ३६४४
 गिराई ३४७४
 गिरिमलया ३३२५
 गुजरहिं २१२७; गुजरहु ३९०६
 गुंजी ३५२३
 गुण (गुण) १९१४, ५; ३६६; ७७५
 गुण (रस्ती) ५०२; ५६२; ३२३७; ३३४२; ४१५१
 गुणधारा ३३४३
 गुणवन्ती ३३४२
 गुणवार ७२३
 गुणहिं १८१; गुणहु १७५; गुणहू २३६१; गुनि १८३; गुनि-गुनि १७५; १८५; गुनिये ४२७७; गुने १८४; गुनै १८१
 गुनाई ७४१
 गुनी ११२; १८२; ७८३; २१२२
 गुनीज ५६६; गुनीजइ १११४
 गुहार २८९५; ४२१६; ४२३२; गुहारी २६६२; ४२२१
 गुसाई ३४१२; ३६०२; ३७६५; गोसाई ३९१५
 गूथिम २३५६
 गूद ४११४, ५; गूद २५५३
 गोरि २८७२
 गोला २८३४
 गै १३३१; १५७४; १६४३; २६८७; २९५३; ३०६४; ३५६६; ४१७५
 गौ २१६७
 गौठ १५८४
 गोद ३९७३
 गोरी ६६७; ४०८५
 गोहन ८०३

गौर ६४३
 गौरा ६१२
 घ
 घट ३६७; ४१४
 घट (षट्) ६१३
 घटन्त ४२०६
 घटवैहु ३८०५
 घटा ६१२; ३९८७; घटाई ५५२; घटाना ३४०३; घटानी १३२१; २८२१; ३४७३; ३७७१; घटाही ३५३१
 घण्ट २७०२
 घन ३२८३; ३८४१; घनेरा २६९७
 घनथहू ३३२६
 घबर १५९६; घबरी १३२३; घभरी १४०३
 घरी १२३५; २७८३; २९६५; ३३३४; ४२०७
 घहराना ३५७५; ३९६३
 घाड ३५७५
 घाट २६६; ३५९१; ४०२५
 घात ४७५; ५०७; घाता ३६३४; ३६९५
 घाम ४१८७
 घाल २६६७; २८९६; घालि २०४; घालसि ४०७७; घालहु २८६७
 घिड १९९६; ३३९६
 घिरत १९७६
 घिरा २१२
 घिसियाइ २४८६
 घुर (घोडा) ४२४६
 घोटी ६८१; घोंटसि ७७३; घोटी ६१२
 घोड़ २२१; घोर २६६; ६३१; ७४४; ३५६६; घोरहिं ३६१२; ३९७७; ४२२३; घोरा १५६; घोरे ३६११; घोरा (घोर) ४१२१
 घोला ७६४
 च
 चक्कवहू ३००६
 चख १०७; ४०५; ५८४; ६४२; ७६३; चखत ५०५
 चगत ५९१; चुगत ६४४

चटपटी ७९१६; ३५४१
 चढ़ऊँ २९०१२; चढ़स २२५१६; चढ़ि १९४१२;
 ३५११३; ३७६१२; चढ़िह ३९९१३; चढ़ै
 २३६१७; ४००१६
 चपल ५८१२
 चबाहीं २४५१२
 चतुरंग ३९१२
 चतुरोख ३०८१४
 चन्द्रमाँ २४५५
 चर ३६४५५, ६; ३६५१३, ४
 चर-चर (चार-चार) २०५१७
 चरचै १८९१४; २४५१२
 चरन ३६११
 चराई २९०१५; चरायहु १६०१५
 चरित ४७१४; ४०४१४; ४१२१३;
 चलड २८२१५; चलडँ २६२१७; चलहि
 २०९११; चलहीं २९७१३; चलहु; २६१३
 २१४१६; २३४१७; २४५१७; २५८१३;
 २९७१५; ३२०११; ३४२१२; ३४७१३;
 ३८५१३; ४०५१६; ४०८१७; चलाई ३३७१५;
 ३६८१४; ३९०१२; ३९२१२, ५; चलाँड
 १८८१७; चलानसि २११६; चलावहिं
 ३४७१२; ३५९१२; ३६०१४; चलावा
 २०२११; ३३५११; चलाहिं ३६११६; चलि-
 हौं ३५३१४; चली ३७४१६; चलु ३४४१३;
 चलेड ३९४१५; ३३७१३; चले ३८१३३
 चँवर ९४१४; ३७६१४
 चँवरभार ९४१४
 चहई ९१५; चहा २५८१३; ३७८१३; ३८९१३;
 ४१४१३; चही २४५१४
 चहु ३६८१५; चहुँ २०५१४; चहुँ १८९१५;
 ३३०११; ३४७१७; ३६८१३
 चाड ३११४; ३०८१४, ६; ३१११३; ४०११६;
 चाऊ १५६१५; २८९१४
 चाकर ९४१६; ११३१२
 चाखी २२११५; २४११३; चाखों ७३१५
 चाँचर ३२९१३
 चाँट ६३१३; २८४१७; चाँटहि २३६१७
 चाँदि ३९३१३
 चावें १८०१३

चारि १९०१४; ३५६१३; चारैठ १२१३३;
 १८११५; १८२१३
 चाल ३९०१४; चाली ३४२१४
 चाह ४५१३; ४९१५; १९३१७; ३१२१५;
 ३१८१६; ३६७१५, ६; ३७३१६; ३९३१४;
 ४०६१३; चाहत २८४१४; चाहसि १२६१३;
 २२११५; २८४१२; चाहहि १६९१७; चाहा
 २४१३; ३१७१३; चाहिउँ ९२१६; चाहिसि
 २४१६; १८१३३; १८६१३; २३९१३; चाही
 २४५१५; ३२०१२; ३४२१२; चाहुत
 ३१८१३; चाहेउँ २६०१५; चाहै १७४१२;
 १९८१५; ३४८१३
 चिघरत ४१७१५; चिघरहिं ३९६१४
 चित २९१२; ३५३१३; चितहिं १११७
 चितेरा ३८१४
 चिनिया ७४१२
 चिय २८४१५; २८५१५
 चिर १५९१५
 चिहटेव २४२१५
 चिहुर ३८२१२
 चीत (चित) ११५१७; ३००१७; चीता २९१३;
 २७४१३; चीतै २८१७
 चीत (चिन्ता) १५११४
 चीता (चित्रित किया) ३९१४
 चीन्ह (चिह्न) २५३१७; ४२८१७
 चीन्ह (पहचाना) १६५१४; चीन्हसि ३६४१२;
 चीन्हा २७३१५; २८९१२; ३४५१२;
 ४१३१३; चीन्हौं १९१३; चीन्हौं २२३१३;
 चीन्हौं ३४११४; चीन्हें १७०१३; चीन्हेंड
 ३६२१२;
 चीर ३६८१६; चीरू ३३२१३
 चुक ६०१५; चुकाई ३६०१३
 चुनहारू ३८१४
 चुनहि २०७१३
 चुपकै २५९१३
 चुराइसि २२२१७
 चुवहिं २९७१२
 चूक ५०१५
 चून ३०६१२
 चूना ३३५१५

चूरा २११४
 चूल्ही ४०५११
 चेत २८७; ४९१४
 चेरी ३६११२; ३८८१२; ३९११३; ३९८१३; चेरी
 २९०१७; ४००११; चेरी ४२७११,३
 चेल ९०१६
 चैत ३३०११
 चोखा २७११
 चोला ३७०१४
 चोलि ४०६१३
 चौक ६४११, ६; ७५१५; ३७९१२
 चौखण्डी ३९१३
 चौडोल ३६११३; ४२२१६; चौडोला ३९८११
 चौदस ४६११
 चौदी ५२१६
 चौधि ५५१५
 चौपाइन्ह १३१३; ४३११५

छ

छतनारी २८११
 छतीसी ४००१४
 छँद ३०२१६
 छपानेउ ३२३१५; छपाही ३०३१३
 छया ३३१५; ४२१३; ८४१३; १९३१२
 छरा २१७१२; छरि ३८११३
 छही ६७१४
 छाइ ३९३१३; छाई २७७१४; छाउ २७०१३
 छाँगर १७१११
 छाजा ९१३; ९२१४; ४०२१२; छाजै ४०६१७
 छाब १९७१७; २१२१७; २२६१५; २६६१५;
 २८७१७; २८८१६; ३०९१६; ३१०१३;
 ३३५१३; ३६४१४; ३७८१२; ३७९१५;
 ३८१११, ३; ३८२१३; छाबउ २७२१३;
 ३६३१४; छाबसि २२११; १०८१५; १३८१६;
 ३४४१५; ३६०११; ३६४१७; ३८०१२; छाबहु
 ४७१५; २८७१४; ३१५१७; छाबि ३११२;
 ११२११; १२५११; १३११३; १६०१३;
 १६३१५; १६८१६; १७७१३; १९६११;
 १९९१२; २३६१२; २८७१५; ३०८१२, ४;
 ३२११५; ३९४१२; ४०११४; ४१११२;
 ४२३१४; छाबि ३०३१४; छाबिसि १६३१५;

४०३१५; छाडी ७२१४; १२५१४; ३७४१५;
 छाडे १७६१३; २८८१५; छाडेउ २३८१४;
 ३४७१२, ५; ३८४१२; छाडेउ ४१२१३;
 छाडे १६०१२; १८४१७; छाबों १८३१७;
 १८४१३, ५

छात ९११; ३७६१४;
 छायउ ८८१५; ३३३१५
 छाया ८६११
 छार १०१७; छारा १६८१३; छारि २१११७
 छाला १०११; ७९११
 छाँह ३०८११; ३०९१७; ४१८१७; छाँहों
 २४११२; २८११५; ३२८१४; ३३२१५; छाँहीं
 ३१०११; ३७६१४

छिकारहँ २३८१५;

छिन १९६११

छिपाव १४१६

छिरकहि २८५११; छिरकि ८०१३

छीटा ४०२१३

छीन ७५१७

छुबाई १७८१६; ४०५१५; छुबावउ २६७१२;

छुपाओं १९२१५; छुपायसि १९४१४; २८९१२;

छुपि ७९१२; १८९१२

छुपानी ३८२१५

छूछ ३५०१७

छेबें २४७१५; छेबें ३३३१६

छैल ३८११३

छोट ६०११; छोटहि ३५६१३

छोबों २८११२

छोर २८७१६; ३८११४; छोरी ३११४

छोह २७५१७; छोहू २२६१३

ज

जइस १४६१७; १५६१३; २१५१७; २७८१५;

२८०१२; ३७२१४; जइसे २६६१६; जइसे

२२२१२; २७३१२;

जइहइ १८३१३; जइहइ ३२०१५; जइहों

३१९१६; ४०८१२; जइहों ३६१३; ३२०१७

जगती २४८१२

जंगम ६११६

जती ६११६

जन ९५१७; जनै ३९७५; जनहि १८०२; ३५९१४; जनाँ १४५५; २३११६; २८४३; ३४४१; जनीं ४६१; ६२३; जनै १५५१; २१४५;

जनत ३३८२; जननि ३९११; ४०५४, ५ जनभी ७६१२

जनाड ३४१३; जनावा ३२६१; ३३३१; ३३८३; ३६८३; ४१०३

जनि २६३; १६३६; २६४३; २७७४; ३१५७; ३६४४

जनु २४५; ३३४; ४४१; ८८१; १६६४; १८८१; २०४२, ३; २०७१; २१०४; २११३; २१५५; २१७३; २५४५; २६२५; २९११; ३२२१; ३२२२; ३३२१; ३६४२; ३६९१; ४०६४; ४१२२; ४२२४

जनौ १७२ जबलग ३१६४; ३५५६; ३८९७; जबलगि १४२५

जमकाल ४१५२

जमजूत ३९६१७

जमु १२५

जर (जळ) ३४७५

जर (जळ) १६८३; ३०८१; ३३७७; जरई ३०७२; जरऊँ २७१५; जरत १९९६; १६१२; ३०९३; ३३२५; ४०७७; जराई ३३२१; जराऊँ २४८५; जरि ११४७; ३२९१; जरिहौँ १६७७; जरीं ४२९२; जरे २१५२; जरै २३३१; २७९१

जरम ७७; ११५; २१३, ४; १३६१; १६७१; ३०३६; ३०४१, ४; ३२६५; ३३०३; ३५८५; ३६०७; ४०९२; जरमहुँ २२९१;

जरमीं ४६१२

जरी (जकी हुँ) २९४

जरी १२९६

जलहर ४२१; ३२२५; ३३३५, ६; ३३४४

जवन (यमुना) ३५८५

जस १३१७; २५२; ५७४; ७४६; ११२५; १७११; १७४७; १८११; १८७४; १९१३; १९५७; २१६६; २७५२; २७९६; २८४७; २८६४; २८९५; ३१७३; ३२०१, २; ३२७२; ३२८७; ३४७६; ३४८१; ३५६४; ३५९५; ३७०६; ३९०७; ३९१४

जहिया २१८४; ४३१५

जहिये ११०७

जैह २०६१; जहवाँ २५३; ७९४; २०१७; २३४६; जेहवाँ ३८२

जा (जो) २२२१

जा (जिस) ३८३७

जाइ १४१६; १७३१; ३३५५; ३४२६; ३५८६; ३५९७; ३६२३; ३६५१; ३७१३, ४; ३७४१; ३७७१; ३७८२; ३८१६; ३८२१; ३९०१; ३९३३; ३९६७; ४००१; ४०५३; जाइहि २२७७; ३२६३; जाई ३३०४; ३३१३; ३३६२; ३४७४; ३५०१ ३५१४; ३५४३; ३५६२; ३५७३; ३६२२; ३६४५; ३६५३, ४; ३७१२; ३७४५; ३८२४; ३९०४; ३९२४, ६; ४०५३, ४; ४०६५; ४०९१; जाड ३१५१; ३६४३; जाऊँ १८५६; २०३१; २३०५; २८८२; २९९३; ३२९२; ३८९६; जाओँ १३१२; जात ३२६५; जाति ३९१५; जातसि १३१५

जाकर ४४४; २२१३; ४१११; जाकहँ १०७; २६७५ जाकहि १३२१; जाके ७०३; ३४२२

जागेड ३९५१; ४१५२; जागेऊँ २४०४ जाँघ ३९५

जाचक ३९८४

जाइ ३२७४; ३२८२

जात (जाति) ६१; जाती ३९१२

जान ३६६७; ३८९३; जानसि १९७५; जानहिँ ३६६७; जानहु १४०५; २४७७; २५६२; २६५२; २७८७; ३५६५; ३६०१; ३९१४; जानाँ १५०३; २४६५ जानि २१७५; ३३४७; जानी

१८९१७; २०४१७; ३५३१२; ३७७१२;
४०४१६; **जानेठ** १७६१२; ३०७१५, ६;
जानेठ ३२५१६; ३८०१५; **जानै** १५०१७;
२२०१३; २४४१६; २६४१४; ३७९१६; **जानै**
३८९१३; **जानों** २१११२; ३८९१७; ४०८१२;
४१२१६; **जानों** १४३१५

जानु ६११२; ६३१३; ६८१३; ८०१२; १२१२२;
१४३१४; १४६१३; १८२१२; २०५१५, ६;
२६५१२; २९०१७; ३४५१२; ३४९१३;
३६८१३; ३७०१२; ३७२१४; ३९६१३

जाव १८३१६; १८४१६, ७

जामा २८८१४; ३२७१२

जायसि १२३१५

जारत ३३८१२; **जारसि** १०५१३; १८०१३;
जारहिं २३३१२; **जारहु** १४२१२; **जारा**
१४४१५; १६८१३; ३०८१२; ३२२१२;
३३०१२; **जारि** ३३२१७; **जारी** २८५१५;
जारे ३५२१४; **जारेठ** ३३३१३; **जारेठे**
१७५१३; **जारै** ३५२१२; **जारों** १३९१३;
२८६१५

जावस ४१३१२; ४१०१३

जावों २५१५

जासेठ ६३१५; ३५११५; **जासों** १११३; २७१४;

जाह (जामो) २२८१७; **जाहहिं** ४८१२; **जाहि**
२४५१७; ३६५१७; **जाहिं** २०३१५; २०४१५;
२४८१७; २६४१६; २८३१७; ३३६१३;
३६११७; ४०९१६; **जाही** १९२१२; **जाही**
३११२; १९११२; २९६१२; **जाहु** १८३१६;
१८६१४; २३०१४; ३७११४; ३७३१६;

जाह (जहाँ) ६६१५; **जाहिं** ८२१७;

जाहि (जिसको) ९२१६

जाही (जगह) ३३९१२

जाही (उसको) ९२१२

जाही (उसको) १७८१५; ३१८१२;

जिअठ १९४१७

जिठ २४१२; ३६१२; ७९१५; ८३१६; ९८१७;
११४१५; ११८१२; १६७१७; १७५१६;
१७७१७; १७८१२, ३; १७९१५; १९११२;
१९३१५; १९६१२; १९७१२; १९८१३, ५;
२०५१३; २०७१७; २१११२; २२६१४, ५, ७;

२२८१३; २३०१३, ५; २३५१३; २४११२;
२६२१६; २६४१७; २६९१५; २७७१३, ५;
२७८१५; २८११७; २९०१४; २९११६;
२९२१५; २९६१६; ३०९१२; ३२२१४, ७;
३२३१४; ३२९१२; ३३६१२; ३४८१२; ३७८१३;
३९११४; ४१२१२; **जिव** ३४६१२; **जीठ**
९०१२; १०१२२; १०९१७; १७४१३; १९५१२;
२१६१५; २२२१५; २२३१४; २२६१६;
२३७१३; २७०१६; २७६१४; २७७१६;
३२३१५; ३२७१५; ३३३१४; ३६७१२;
३६९१४; ३७९१२; ३८४१७; ४२११२; **जीऊ**
११९१२; ३१११४; ३१६१२

जिठ भारी १६०१४

जिन्ह १६१२; २६२१३; ३८२१२;

जिमि २८१७; २४२१५; २६९१६; ३१११७;
३२६१६; ३६६१३

जिय १०१६; २११२; २२१४; ५३१२; ८०१२;
८११६; ९०१२; १६४१६; १८४१६; २१९१६;
२३०१६; २३११५; २७२१३; ३१४१३;
३६७१५; ३७३१७; ३७९१३, ५; ४०६१५;
४२६१५; ४२९१७; **जियै** १७२१३; १८४१२;
२९३१२; ३८८१६

जियइ ३१६१४

जियके १४६१७

जियत १३९१६; १८३१७; १८४१५; २७११२;
जियतहिं १६९१५; ३१६१२; ३४८१५

जियहिं १५८१७; २७६१३

जियाओ १३११२; **जियाई** १३३१२; ४३०१३;
जियायठ ८५१४;

जिह (जिस) ८११५; १३५१५; १७४१४;
१८७१७; २२४१५; २३६१२; २५११७;
२७११४; ३४११३; ३४४१७; ३६७१४, ६;
३७९१६; ४१०१६; **जिहके** ४९१५; २१९१३;
४०६१२

जिह (जहाँ) १०१४; १५१५; ३६१७; ३७१२;
७८१६; ८११२, ३; ८४१३; ९७१७; ९९१३;
११३१७; १२११२; १२२१६; १३३१७;
१३५१४; १४५१७; १५११७; १५५१३;
१५६१७; १७७१२; १९२१६; १९३१४;
२०११३; २०४१५; २०८१३; २०९१२;

२१०३; २१३७; २१८१; २२०७;
 २२६४; २२८२, ४; २५२६, ७; २६०३;
 २७४२; २८३६; २९१६; २९६१;
 २९९५; ३००१; ३०६२; ३०८३;
 ३१३४; ३२०१; ३३६१, ६; ३३७२, ३;
 ३३८६; ३४१५; ३४३३, ७; ३४४५;
 ३४७१; ३४९२; ३६१७; ३८०३;
 ३८४४, ६; ३८७३; ३९२४, ५; ३९५१;
 ४०२२; ४१०२; ४१३४; ४२२२

जिहिं २२०६
 जीआ २२९४; जीयहिं ३०५; जीये २२०४;
 जीवद् २२६३; जीवउ १८७; जीहों
 ३५९६

जीठ १०३६; २४५६; ३८७६
 जीतेउ २४३७
 जीह (जो) ३८५१
 जीह (जीम) १९४६; २२८३, ४; २८४४;
 २८५३; ३७३२

जीह (जोमे) १५२५
 जुग ९३; ४०४; ३०४३; ३५९७; जुग-जुग
 ३३६२; ४३०६

जुगुति १०९६
 जुरे ३९६४
 जुवत (जोहत) ४५४

जुहार २८४; ३२०३; जुहारी ९५६;
 ३४२३; जुहारू २०१५; २३४२; ३६०५;
 जोहारा ३८११

जूझ १५४; २३७२; २४९७; ३०१३;
 ४०३७; ४०४२, ४, ५; जूझी ४०१४;
 ४०४२;

जूह ३३३१; ४१६७
 जे (जो, जितने) २०८५, ६; २३१६;
 २६२५; ३७७७; ४०२६; ४२५१

जेह (जोजन करके) १५३१
 जेंउ (जिमि) ८१४; १०८७; २२७२, ३;
 २१९७; २३०४; ४१६४

जेता (जितना) २३१७; जेती २७२४;
 २९९२
 जेवनारा ४२९५
 जेहि १९७२

जै, जैं (जो) ४०६; १६९७; १८२२; १९२२;
 २१३६; २२३४; २४५३, ४; ३४१४;
 ३६३६; ३७१७; ३७६५

जैमारा १५३५
 जैस २९०३; जैसन १४३
 जोग १०७७; २६०६, ७; ३७६५

जोगियेउ ३६२५; जोगीउ ३३९१
 जोगू ३३१२; ३८१६
 जोगीटा १०९३

जोजन २२६; २६२; ३२७; ३३८७;
 ३३९१; ३९४३; ४०३५
 जोत ६४१; जोति ५५५; ११२७; १४२२;
 ३९५५

जोतिखी १८६
 जोन्ह ३८४३; जोन्ही ८७५
 जोबन ३१४७; ३१५७; ३२६३, ५, ६;
 ३२९६; ३३०३; ३७९१

जोबन बारी ८०४
 जोय (जोह) ३०७
 जोरत १३६

जोरि १५२४; १८७६; ४१६७; जोरी ६९१
 जोरी (जोही) ३९१५
 जोवद् २५१; ३११६; ३५०५; जोवहि
 २१२६ जोव्हि २४८७; जोवन्त ३१०७

जोहत १६२६
 जो (जब) ३४४३
 जौलहि ९९३

झ

झँई २१७७
 झँकि ६३७
 झनकार ७७७

झमकत ३९८१; झमकि ८०४
 झरकहि ६०२; झरका ५१६; झरकि
 १९१७; झरकी ३६९७; झरकी ३६९४;
 झरकै ३२८२

झरि (झर) २६७; ३२९७; झरहि ६५५;
 झरे २११७

झरि (झरी) २८०१, ४
 झरन्ख २७८७

झरोखा ३१२	३५६३; ३६२२; ३८५४; ३९३२;
झागा ३८१४	३९४४; ३९९२; ४०१५; ४११२;
झार ५२५	ठाँव १९४४; २३२५; ३३८५
झार (झाङ) ७०३	ठाट १०१
झारि ३९६	ठाढ़ २४६; २५१, ६; २३४१; २६८३;
झुरवइ २५६; २०४६; १५१६; १७५१;	३४४२; ३७७३; ठाढ़ा ८३२; ३९६५;
२८३५; ३५०४	ठाढ़ि ४३२; ९४७; २३१५; २६३१;
झुलाइ ३२२४	२९०४; ठाढ़ी ३११५; ३१८७; ३४०३;
झरी ३२२५	ठाढ़े ४२४६
	ठेलि १६७४

ट

टकै ४२०४
टखटोरी ४२०२
टटकारी ६७१
टाँड ३३७५; ३४२१; टाँडा ३१९५, ६;
३३७४
टाप १०४
टीका ३५६४
टेक १२७; ५२४; ६९७; टेकहु ३४८१;
टेकि २५१
टेरा ३३४१ टेरी ३३४३
टोइसि १८६३

ठ

ठकुरहिं ३४३६; ठाकुर ९०३
ठाँ ८७; २५५; २६४; ७८६ ७९२; ८३७;
१२२५; १३७६; १६२४; १७५७;
१८६२; २२९२; २३३३; २४०५;
२७५५; २८५७; २४४७; ३६३७;
३६५६, ७; ४०१७; ४०३६; ठाँइ ४९६;
५१२; १९५७; ३४२५; ठाँइ ३२७;
४१२; ७८६; ८४७; ९८७; १३५७;
१५७७; १६०७; १७१४; २३६४;
२४३५; ३४१२; ३६०३; ३९३७;
४०९६; ठाँउ ४४३; ८१७; ८४४; ९७१;
१२९६; १७८६; १८८६; १९१२;
२०५२; २६०३; २९३७; ३४८७;
३४९१; ३८९६; ४०२७; ठाँउ ठाँउ
३६६२; ठाँके २०१; ९७५; १३६४;
१५८४; १७६४; २०८४; २०९४;
२४८२; २७७३; २९०१; ३१९४;
३२०१; ३३९४; ३४११; ३४५४, ५;

ड

डकरै १८०६
डबडब ३५९५
डम्बर २८३
डरहिं ३९६५ डरही ३६४४; डराउं
१८५७; डराऊं २२८३; ३२३३; डरायउं
३२४४; डराहीं १९११ डराहू १२०४;
डरेउ ३२४५; डेराऊं १२१५
डसत ५०४
डाँइ १११
डाँडि ३६१२; डाँडी ३९७७
डाढ़े ३०५४
डारै २८१
डालिंह २०३२
डुब्बि ३०७६; डुबि डुबि २३७; डुबोवइ
४२६; डुबौं ३२३७
डुलावइ ३१३
डंगा १२०५
डोल ६९२; डोलों ३०६२
ढ
ढंग ४०३१
ढँढोरा १८१५
ढव ३०७६
ढरहीं ३७६४
ढार ८८२; ३०७२; ढारइ ३८४; ढारहि
३२१२; ढारि २०५६; ढारियहु ३६२४;
ढारी ३९३; ६८१; ढारे ४०६२
ढीठ ३७७६
ढूँढइ ३१४, ५; ढूँढउ २९०१; ढूँढहि
२८२५; २८३१, २

त

त (तो) ३२८१३; ३५८१३; ३५९१३; ३८९१६;
३९०१२; ४०२११
तइसे १८१६; तैसहिं ११७; ४१६; तैसों
६२३
तज ३८४६; तज १९२१७; तजहिं ४१०६;
तजि ४२३३
तडक ३७२२
तत्त ५४
ततखन १५४; २३६; ३६३; ११०२;
११६६; १२३५; १४०३; २७७७;
२७८५; २८४३; ३०४२; ३७१५;
३७२१; ४०४७; ४१७२; ४२०१;
४२१६; ४२२६
तन्त ५६४; १०८३; १६७२
तपहु ३२८४; तपाई २१७४; तपै ३२८३;
तपौ ३२८२
तबलग ३८९७
तबहिं २२३५; २२९५; ४०४५; तबही
१९७३; २२६४; २३११; ४०४५
तँबोल ७६३; ८५५; २३२७; तँबोलहिं
६४४
तयेंड १६१२
तर २३३; २६५; २८३; ४५५; ६८४;
१२१३; २०३१; ३७९२
तरक २२३; ३५१६; तरक ३०७७; तरका
४१७४; तरकि ३७२५; ४१६४; तरकि
३७२७
तरत २२०६
तरपै ४११७
तरल ७०३
तराइन ३४७७
तरास ४११७
तरुभा ३७३२; तरुवह ७३४
तरुनापा १२९७
तरुनिह ३२२४; तरुनीं ७६२
तरुवर ३०८५; तरुवरि २३५
तरेंडा ३०७७
तरेसा ४२१२

तवई ६०१२; तवाई ६१४; तवै ३३२२
तवाँये १६५५
तस १७४७; १८१७; १८६६; १८७४;
२२५६; २६९३; २८६४; २८९४;
२९१७
तँह ३७७३; तहाँ २३१; २६१; १७२४;
१७३४; १७५५; २०७४; २३८५;
२७०४; २८९३; २९३५; ३५१४;
४११३
तहिया २३४३; ४३१५
ताकर ५२४; ८९७; ११८७; १७२७;
२२०२; २५९७; २६६७; २६७५;
२७२६; २८८६; ३३९७
ताजन ९४३
ताता २९३२
ताप ८८३
तारिसि ४१५४
ताँवर ६१४
तासों ३५६
ताँह (बहाँ) १९१७
ताँह (उसका) ३४४७; ताहि ४११; १३५४;
१८०७; २१३७; ताही १४४; ६५१;
१७०३; १८९२; २१४४; २१५४; २४९४;
३१०२; ३८८४; ताहू ३१८५; ४१४४;
ताहै ४०२४
तिन्ह १६१; ३१९७
तिन २२९५; तिनकहँ २१९३
तिंभुवन ३०५५
तिमि ३२६६
तिय १८५; १३३३; ३३६४
तिर (तीर) २३६५
तिरदोखा २१७१
तिरमूल १०९३
तिरि (खी) १३११; तिरिया ३३५७; ४००४;
४१९२; तिरि १३; १३१६; १५६५;
३१४४; ३७८५, ७
तिल ११५१
तिस्नों ५६; २४२२
तिह (उस) १६७; १८५; २५१, ५, ७;

२६३; ३२३; ६५६; ७८६; ७९२; ८२६;
 ८७३; ९१४; १०३७; ११४५; ११६४;
 १३०५; १३११; १५६५; १६२५; १६६१;
 १७४५; १८३७; १८४२; १९९१;
 २००३; २०४७; २०५५; २१९१;
 २२२५; २२७४; २३३३; २३५२, ४;
 २३६२, ६; २३९४; २४०५; २४३३;
 २५५६; २६६२; २६७१, २; २७५५;
 २८८७; २९०१; २९३७; २९४१;
 ३०८१; ३३६४; ३३८४; ३४७२;
 ३५३३; ३६३३; ३६५६; ३७८७;
 ३८५२; ४१०२; तिहकै १३३७;
 तिहॉ ११९६; तिहि २३३; ३४६; ३९३;
 २१०७; २२८२; तिहि २६५; तिहै
 ३५२५

तिह (वहॉ) २४७; २७४; २८३; ९८५;
 ११३७; १२२६; १६५२; १६९२;
 १७३७; १८०७; १९२७; १९७५;
 २०७५; २०८७; २१३४; २१७७;
 २२२७; २२७७; २२९६; २४०७;
 २४४१; २४९७; २५४७; २६४४;
 २६९१; २९९४; ३२०७; ३३२२;
 ३३७३; ३३८६; ३५०६; ३६९७;
 ३७१६; ३७६४; ३८७३; ३९२४;
 ३९५६; ४०११; ४२२२; ४३०१; तिहा
 २१५६

तिहसॉ (तुमसे) ४०२५
 तिहार ३२१; तिहारे ३६३५
 तिहु (तीन) ७४५
 तीख ७०३;
 तीसर २३१
 तुखार ९३६

तुम्ह ८९३; १३६६; ३३४१; ३३५४;
 ३४२६; ३४४१; ३४६५; ३४७६;
 ३४८६; ३५०५; ३५५१, २; ३६७४;
 ३७०२; ३७१७; ३७३६; ३७९६;
 ४०४२, ४; ४०६७; ४०८१; ४२७४;
 ४३०७; तुम्हरे १९२६; ३४५६; ३८६४;
 ३९४७; ३९९२; तुम्हसँड १०६३;
 तुम्हँ ३९०२; तुम्हार ३०५; ४०४५;

४०९१; तुम्हारेड २३८७; तुमरें ९२६;
 तुमहि ३३४७; ३९१४; तुमहू २६४३
 तुर (तोर) १२९६
 तुर (तुरन्त) ८२७; तुरत ७१५
 तुरकी ४३०१
 तुरंग २२४; तुरंगम ९३३
 तुरिय १०४; २३६; ३३१; ३४३१; ३९७१;
 ४१५२; ४१६१; तुरियहि ३५३७;
 ३५७१; तुरिह ९३७
 तुलाई २०३; तुलाना ३२६; ३३३;
 २९४१; ३४०३; ३७२१; तुलानॉ ३३६३;
 तुलानी २७५५; तुलाने ३९४३; तुलानेड
 ३२७१; ४२३२

तुसार ४३१, ३; १६६३; ३२७२
 तू ३५५२; ३८०३; ४०३३; ४०७२; तूँ
 ५१५; ८५३; ९०६; ९१३; २३४७;
 ३३८५; ३४४२; ३६५७; ३८७६;
 ३८८४; ४०१७

तूर ३९५२; तूरा ९५३
 तुल २३२६
 ते २०८५; ३००१; ३५४६; ३९८५
 तेड ३६९३; ३९७५
 तेत ३९४७; तेता २३१७
 तेलिया २३२५
 तेवरी ३१४३; ३८०३
 तेहि १९५; २३४; ३६२; २६५४
 तै (तूँ) ४८१; ९११; १३३५; १७५५;
 १८३६; १८४२; १८६४; १९५३;
 २२५५; २७०१; २७८३; ३६३३;
 ३९५३; ४०२५; ४२१५

तेरि १७६१
 तौ (तुम्हारा) ८४१; २३५७; २४०५; २७१२;
 ३८०२; तौको २७२५
 तोखू ३८९४
 तोपँह ३०२४
 तोर (तुम्हारा) १२४; ८६६; ९०१; २३४४;
 २७२५; २७४३, ५; ३७४७; तोरहि
 १३०३; तोरा ३४८४; ३७०३; ३८०५;
 तोरी ३७९३; ३९१३; तोरेड ३६३७; तोरें
 ४०८२

तोर (तोड़) २३०७; तोरहि ८१२; तोरि
१२३५; २३९१७; २७९१३; तोरी ३३४२;
तोरे १०७१

तोसैंड १२२२; ४०२११; तोसों ८९६
तोह (तुम्हारा) ९०११; तोहें २७२४; तोहि
१८७६; २२७३, ७; २७०३, ६, ७;
२७३६; ३३५३; ३७८३; ३८१२;
४०३५; तोही ५२४; १२५३; १८४५;
२२२४; २३४३; २७०२; २८७४;
३४४२; ३४६३; ३४९१७; ३७७५;
३८१३; ४०३३

तौ (तब) २८९१७; ३८०५
तौलहि ९१५; १८१३; १९६४; ३४४३

थ

थकेठ २५१७; थाकिह १८६६
थवई ३८३
थापी २५२१, ४; २५४१; थापे २५११
थाहा २३४५
थिर ५८२; १८८३; १९९३; ४१८१७
थोरी ३५१

द

दइ (दिया, देकर) ९१७; १८६; १३५१;
१४१२; १६४१; १८५३; २०१५;
२०३३; २०९५; २३०३; २३३४;
२३९५; २६६७; २८९२; ३००२;
३३५६; ३४१६; ३४२७; ३४८२;
३७३१; ३८१५; ३८७३; ३९२१;
३९५३; दइके २४६२; ३५८६; ३९२२;
२९८४; दई ३२५; १८११; २५७६;
२५९२; २८९७; ३४३६; ३५६६;
४०७४; दयी १८७४; ३५५५

दइ (इंअवर) १२२१; २३७३; दइउ
३९६३; दइय १२२३; दइयहि १७७४;
दई १५३; ४२७; ८२१; १२०४;
१२५१; १२६२; १२९४; १७०१;
१७५२; १८६१; १८७५; २६९२;
२७६७; २७९४; २९४१, ४; ३३६५;
३५८३; ३७११; ३७६५; ३७९४;

३९१५; ३९४७; दयी ९६३; २६०५;
२७०१; ३४१२; ३६५२
दगध १६८४; १७९६; २०४७; ३३५५;
दगधि २४०३; दगधी १८०७;
दन्द ६७७; १०४१; ११५४; ३३५१;
३४४६; ३५०४; ३८५१
दण्ण ५८६
दण्ण २८७
दर (दल) ३५७५; ३७५१; ३९४५, ६
दरक ३०७६; दरकै ३२३२
दरब १५६; १६५; ९५४
दरस ३२४१; दरसत ३३०५; दरसा
३२५३; दरसाइह ३१०२, ३
दरेरी ३१०६
दलमले ३०४६
दलै ३२४६
दवाँ ३१०६
दसन ११८५; ३२८३
दसयें ३७९४
दहन्त ५०७; दहा २१८४; ३०८५; ३०९२;
३१६२; ३३९४; दही ३३५; ३३६१;
३६२५; ४००१; दहेउ ३०९६; दहै
२९१७

दहिघट ३३२७
दहिनो १७६
दहुँ २६४; ३४३; ४८२; १२७७; १६५२;
१८९१७; २२२४; ४३५५
दाई (भागीदार) २२७४; ४०३४
दाउ (दाँव, भवसर) १८५४; २९८६;
३७९४; ४१६७
दादुर ४२४; ३२३४; ३६८५; ३७०३
दाघा २२०३
दानी ३३७७
दानौ १७७१
दाम ३५६६
दामिनि ४२३; ५५४; ६४१
दायज ३९०५
दारिउ ६४३
दालदि २०४३
दाहा ३८५२

दिखाइसि ३३९५; दिखाड २७६१७; दिखराई ८४३; दिखरावइ ३७६३; दिखरावहु ३४८५	दुआदस ३४४३ दुइ २९४७; ३३५३; ४०५१ दुइज २४५; ५५१; ३२५५, ६
दिनयर ६०७; ८७७; १६८२; १८८५; ३१५५	दुऔ ३६८१ दुकन्त ३१९१
दिनैह ३५५७	दुकव १६४७
दिपै १७४; दिपौ ३०६१; दीपै ६८३	दुखिया ३९१३
दिय ३२७६; दियउ १०७६; दियउँ १९३३	दुखौ ८३६
दियसहिं ३८४४	दुगुन ३९०५
दिवाऊँ १९५२; दिवावा ३९८४; दिवावों २२७५	दुतिया ३७९२
दिस्ति १७३; ३४५; १००१; १३६५; १८८४; २०५२; २८२१; ३४७३; ३५४७	दुदिस्ति ९२४
दिस ३६८५; दिसि २०५४	दुन्दु २६२६
दिहसि ६६४; १३७१; १९४३; दिहिसि २३९४; २७४७; २९२५; दिहिंह २५६४;	दुव (दो) ३००७; दुवठ ९८६; २३५३; ३१४२; ३९८१, २
दिही १५३५; १७५३; १८७५; २२९२; २६१३; दिहेउँ २३०७; दिहों १७२४	दुवारी ३४३४; ३७१२
दीख २३३; ५५१; दीखि २६५; दीखत २७१; ६२७	दुसर (दूसरा) ८५१; दुसरहि १२४१; दुसरे ३५६३; दूसर ६०४; ८३७; ३८०१; ३८७६; ३९८७; दूसरि ८३४; १३७७
दीजइ ११८७; दीजै १७७७; १९८७; ३५३५; ३५५५; ४०१३	दुहुँ १३४४; १७८२; २३७३; २४३२; २४४७; २९२६; ३२७४; ३६८२; ३८१२; ३९८६; ४०१७; ४०५३; ४१५३; ४२६५; दुहुँ ९२१ १०५६; १८१३; २३७२; २९६७
दीठ २४२७; ४१५३; दीठा २७२; दीठी १३०२; २०३२; दीठी ३८७५	दुहेला ३५८४
दीतन्हि ३४८६	दुहों १०५; ६२२; ३८९४; ४०७५
दीतसि १७३३; ३३१७; ३९०५	दुसारी ३७९१
दीन्ह १३५६; १४६५; १४९६; दीन्हा १८८५; २३१३; २४७२; २५५५; २६९२; २८९२; ३२८५; ३५७४; दीन्हों १९११; दीन्हि १४६५; १९४१; २५७५; २६८३; ३७३३; ३७५४; दीन्ही १६२; १६७४; ३९५२; दीन्हे २४८३; दीन्हेउ २३४३; दीन्हेउँ ३५६४; दीन्हों १७६६; १९६५; ३९४७; दीनसि १३३४; दीनहि १५४६; २३०२; दीनहु १८२७; ३८७५;	दू ३८०२ दूतचार ३७९६ दूनों १५५१; २४४५; ४२६६ दूबर ३६२४ दूभर ३२२१, ३; ३३६१ दूरि १९१५; ३९४५ देइ (दे) २९११; २६२३; २६६२; ३२२४; ३९५६; ४०३२; देइह १७९४; देई १७३२; २२५४; २३८३; ३४०४; ३४५३; ३५१२; ३५८२; ३५९१; ३८२२
दीनिहि २०४; दीह १३५५; ३३५५; दीही १४६४; १५४५	देउ (देव) २९३५ देउ (दो) २४७४
दीरघ १६४५	
दुआर १७६३; १८३४; दुआरि १८३३	

देंडें (दू) १११४; ८६१७; १६७६; १७२१२;
१८५१२; २२२१२; २२८१७; २६८१२;
२९४१३; ३४६१६; ३५३१७; ३८१११, ३;
देऊं १६११२

देउता ४०९१२

देउर २१११७

देखेंउ १२७१२; १८९१२; २०९१६; ३४८१४;

देखत १८७१२; १९११४; ३८७१५; ३९३१३;

देखतेउ ४०६१५; देखसि ४११२; ४९१५;

१४११२; १७९१६; ३८८१७; देखहिं २६१२;

३७६१२; देखहु २२४१२; २२७१२; २५०१२;

२६४१३; ३५११४; ३५३११; ४०८१५; देखाइ

१९३१२; देखाई १६९१३; देखावइ

१२०१२; देखावा ३४०१२; देखि १८०१४;

२३०१२; ३८८१५; ४०५१२; देखिसि ८११३;

८३१२; ११६१५; १२२१४; १२७१२; १७११२,

६; १८८१६; १९११६; २०९१३; देखिह

२०३१६; देखिहु २४११२; ३६७१४; देखु

३४८१२; ३५४१७; देखेउ ३७०१५; ४०६१२;

४१११४; देखेंउ ९१६; २२३१५; ३६९१६;

देखेहु ११७१३; देखैं ३५१३, ४; ३६२१२,

३; ३६४१५; ३६८१२, ७; ३७५१६; ३९७१५;

देखों ३५११५; देखौं ३५११६; ३५२१७

देत ३४५१२; ४०७१२; देतसि १३६१२;

१७४१२; २३९१३; देतेसि १५८१७

देन्हि २५६१२

देब १६५१७; १७२१४; देबा १००१५;

देवतहिं ४०९१३

देवस १९१२; २०१२, ३; ४७३२; १३०१६;

१७०१४; १८५१२; २००१४; २३३१२;

३१०१३; ३५०१२; ३५३१४; ३६११६;

३६८१२; ३८९१५, ७; देवसो ३७११२

देवाई २५७१४

देवों ३८४१५

देह (दि) २०२१३; देहि ४०३१३; देही १६३१२;

२५०१४; देहु १५१७; १८२१५; १८५१४;

१८६१२; २४७१५; २७७१५, ६; २७९१२;

३४८१७; ३७३१६; ४१०१४; देहु १६३१२;

२२५१३; २२९१२; ३४२१५; ३६६१५; देहों

३७११६

देहा (शरीर) ४४१४

देस १७११२; देसी २५३१२

दे २८२१३; दे३४१२; दे७४१३; दे७७१७

दोइ (दो) ९६१२; १८९१६; १९८१२; २०३१२;

२०४१६; ३४९१६; ३५६१२; ३७९१२;

३८४१५, ६; ३८५१६; ३९८१२; दोउ ९५१७;

२०३१४; २९७१६; ३५९१४; ३७५१५;

४०४१२, ६; ४०५१५, ६; ४०९१४

दोख २५२१६; ४०८१२; दोखें १०११२;

२३०१४; दोखन १६६१७; दोखा २७१२;

दोखू २६८१२; ३८९१४

दोमन ३५८१६; ३६९१४, ५

दोमु ४०७१४

दोह २६७१७

दोहा १२१२

दौ ३५३१२

दौं ३०८१२; ३०९१६; ३१११५; ३३२१२

दौर ४२११७; दौरि ८५१२; १७११७; ३०२१२;

दौराय ११६१६

ध

धत्य ४१७१६

धन (पन्थ) धन-धन ३७५१७; धनि १७१२;

२०७१७; ३७६१५

धनि (श्री) ६५१७; ३०६१२; ३४०१७; धनिह

३७७१४

धनुक ५६१२

धमार २०१२; ४५१७; धमारि ३८५१७;

धमारी ८११२

धनबारी २३३१३

धर (धर) ९८१७; १६०१७; धरि २७०१७

धर (रख) ६२१२; धरसि २३१६; ३५१६;

२८९१३; धरहिं ४८१५; १८९१५; धरही

१४२१४; धरहु १७१७; धराउ ११३१७; धरि

८०१६; १९३१२; २७३१६; २७९१४; ३३०१७;

४१४१३; धरी ८६१२; ३७०१५; धरेउ ६२१२;

धरें २८९१२

धरई (पककता है) ४१२१२; धरहिं २७९१५;

धरा ४२४१२; धराई ३६४१५; धरिके

१२३१७; धरै २२१२; १८४१७; १८६१३, ४;

१९३३; धरों २१७; २०१५; धरौं	न
२२२, ३	नखत १७५; ४६४; ८०७; १३३३
धरव ६१५	ननद ३९८३; ३९९१; ४०५७; ४०७२, ३
धरम ९२४	नरिन्द १४२; ४३३
धरहर २४३१	नरमै ७४४
धस ४००६; धसि २७७६; धसायेउँ	नव ३६६४
२३६३	नसाउ १४२७
धाइ (दाई, सेविका) ४१२, ३; ५१४; ५२१;	नहाइ २६१३; नहावहिं २३१५
५१५; ६६७, ७९१; १३७६; १९६२;	नहिं ४०१७; ४११४
३९७७; धाईहि १९१, २; ८८५; ९७६;	नाँ २३१७; ३९३४; ४१८७
९९२; ३६१४; धाई ६१३; ६३४; ६४७;	नाइ (नहीं) ३५८७
६६१; ८२२; ८५४; ८६६; १९४१;	नाई ३६७४
३६१३; धाहि १०४६	नाउ (नाव) ३२६६; ३३४२
धाइ (दोहकर) ४९६; ५५४; ८३१ ११७१	नाउ (नाम) १७६; १८३; नाउँ ६३; ९१,
१४०१; २१४७; २१६५; २३३५; ३४९६;	२; १५५; १७८७; १८१४; १८४१;
३७३३; ४२२२; धाय २२५६	१९६५; २०६२; २०८७; २११२; २२२७;
धाई (दोही) ८२१; १९२१; २०४५;	२२८६; २३८७; २३९१; २४१३;
२७७७; २८३१; ३९७२; ४०३६	२५०४; २९१६; ३२०४; नाऊँ ६५;
४२७१; धायउँ (दोही) ८५२; १३७३;	२०१; १०१५; १२७५; १३६४; २०८४;
धायेउँ ७७६; धायों २३७६; धाये	२४८२; ३१९४; ३२०१, ६; ३३८४;
(दोही) १५२२; ३४४१; ३९३७	३४११; ३४५४, ५; ३५६३; ३९९२;
धापें १८१४	४००३; ४०१५; ४१११; नाँव १३०५;
धार ३१४४	१७२५; २५१७; २७५१; ३४५४;
धारी (धारण किया) ३७९१; धारउँ ३९०३;	३४६१
धारेउ १९६४; धारहु २३३६	नाउनिह ४२९२
धावइ १२१४; १२५२; धावउ १३४२;	नाँगहि १६२
धावत २०४६; ४२२५; धावहु १९४२;	नाँधि २११४; २१५३; २३७४
धावा १४५१; १८३१; २०५१; ३७१४;	नाचइ २५६३; नाचहिं २५६३; नाँचू
४२०१; ४२३३	४००२
धावन ३२४; ३४४१	नाँधसि १४५२; नाँधि १२८१
धिय ३२०१; ३९११, २; ३९२२; ३९५२;	नायक ३१९४; ३२०३; ३३५१; ३३७१
धिया १३०५	३४२६; ३४३१, २; ३४४१; ३४९५;
धुकचुकी ८१६	३६२५
धुधुआई ३२८२	नारा ३४०४
धुन ७०५	नारि ४००५
धूर ५१७; धूरि १०२; ४०२७	नावा १६८५; ४३०६
धोवइ २९०५; धोवहु २८२४	नास २२५७; २२६१; ३५०७
धौराहर ३७६२	नाँह २४३७; ३०७२; ३१६४; ३८८६;
	नाहाँ ९१५; ३०६१; ३०७३; ३१५२;

नैनहि ३४७३
 नैनुँ ७२१२
 नौ ८१४
 नौसता ३०४१७

प

पइठ २३१७; ३१५; पइठा १७३१२; १८३१५;
 १८५३
 पइहौं ३६३; १८५४; ४०८१२
 पउतेउ १८६४
 पकरावा ३९७१
 पखरोटा ३०६४
 पखाउजि ३५०३
 पखारहिं २४५१२; पखारी ३८८१२
 पंखि १६४५; ३८४१२; पंखिम ३०९४, ६
 पगु २६२४
 पँचकल्यान ९३५
 पंचवान ५६१२; ३१४६
 पँच-पँच २०५१७
 पंचमवैनी ३८७४
 पचि २९७४
 पछताउ २७७५; ३४८१५; ४२१५
 पछयें २२६
 पछारा १०३१२; पछारा २७९४; ४१८१२;
 पछाड़ा २३७३
 पछिउँ ७२१२; १२१४
 पटकसि १८०१२; पटकों २७०१७
 पटोर ३५६१७; ३७६१२
 पठयहि ३९४४; पठये ३८१२; २४६३;
 ३४५६; ३४६१२, ६; ३६५१७; ३९३१२, २;
 पठयो ३१९१२; पठवउँ १२४१७; २९३६;
 पठाई १९६३; ३७८३; पठायउ २९०१२;
 पठावइ ३१११२; पठावा ३४६१२; ३४९१२;
 ३८९५; पठैं ३९०१२
 पढ ६१३
 पँडितहिं १८५; १९३
 पण्डुर ३२६४; ३५४६
 पण्डो १७७१
 पदावइ १९५
 पतरा १७६

पतरी ३४४४
 पतार ५७७; ३२८४ ४२४१७
 पतिपारहु ८९१२; पतिपारी २२९१७; पति-
 पारी १३११७
 पतियाइ १४८१७; पतियाही १५५३
 पतिह ३५३२
 पतुरिंह २५७७
 पतोहु ९५४
 पथरिया ३६५४; पथेरिया ३९३
 पदुमनि ५२४
 पन्थिह ३३४७; पन्थिहि ३६२१७
 पपिहा ३७०३; पपीहें ३६८५
 पवारी २८५५; २८६३
 पयान २००१२; ३५३५; पयाना १९११२;
 ३३७१२; ३४८१७; ३६५५; पयानों
 ३६१७; ३७५२
 पयोहर ५२१७; ७०१२; ३०२५; ३०४६
 परई ४१२१२
 परकार ८८३
 परखहिं २३१६; परखेउ १३८५
 परगट ५०३
 परगासा ४६४; १४६१२; परगासा २२४१
 परगाही १३३५
 परजै ४३५
 परत २७३१२; ४२०१२
 परदेसहिं ३३३३
 परन ५४१७
 परब ७८६
 परवत ११७५; १२२१७
 परबल ३९८५
 परभातहिं ८७७
 परमेसा १३
 परलो २८०१२
 परवान ४२७६; परवानउँ ३५४; परवानहु
 ३६०१२; परवानों ३७५; परवानों ४०९३
 परस २६६; परसहिं ११७; ४२०६; परसु
 ४२३६; परसेउ १३७४; १९४७;
 ४३२१२; परसेँउ २२४५; परसों ३७३१
 परसन २५७१२; ४०८४
 परसाद् ११६१२

परहल्ये ३३६१४
 परहिं ३५९१५; परहु २१७७; ३८११२;
 ४०३१२; परहुँ १९९१५
 परा २२१६; ४५१६; ५०११; १२६१५; १४३१६;
 १६६१२; १८४१२; २१७११; २८११२;
 ३६७११; ३७४१२; ४२२१५; ४२७१३
 पराइ (भाग) ४१०१६; पराई २२१३;
 १२६१४; १८७१२; १९११४; २८२१५;
 ३१०१३; ३२४१७; ३६४१३
 परान (प्राण) ४१६; ३६१७; ४४१६; ५०११;
 २६३१४; २८३१७; २८४११; २९५१७;
 ४२७१७; ४२९१७
 परान (भागे) ४३१५; ३०८१२; परानाँ
 १९११२; ३०८१४; ३३६१३; ३८४१७
 परावा ४२५१४
 परि (पह) १७९१५; १८०१६; २४०१२
 परिगाह ३५७१५; ३७५११; ३९४१५,६
 परिचै ११११५
 परिछि ३४७१७
 परिताऊँ १४८११
 परिवारी ३९८१२
 परिह ३४८१२
 परिहरन्दि ५०१३; परिहरै २२६१७
 परी १७०१५; १७६१५; २६९११; ३३४१२;
 ३४०१६; ३५४११; ३८६१३; ३९३१६;
 ४०५११; ४२२११
 परीती २२७११
 परे ३२९१७; ३६३१५; ३६६१६; ४१११३; ६;
 परेड ५५१४; १३२१७; १८४१३; १८८१५;
 १९२१७; २१६१४; २३६१४,६; २४०१४;
 २७५१५; २७६१४; २७७११; ३००१२;
 ३५७१३; ३६६११; ३८५११; ३९७१२;
 ४२६१५; परेडें ५५१५; ८४१४; १३३१६;
 १६७१५; १७६१२; २३८१५; २८८११;
 ३०२१५; परें १०१२; २६१३; ७७१६;
 २३७१४; ३२७१२; ३८३१३
 परेत ११७१६
 परेवा ३०८१४
 परोसि २३१११
 परौ ४९१६

पल्लवें ३८११७
 पलकिह ३९७१७
 पलटि १४११७; १४२१२
 पलटेड २९८१६
 पलान ३५३१७; ३६१११; पलानी ९०१५;
 ३५७११; पलाने ९३१४
 पलुह ३७०१३; पलुहे ३६९१३; पलुहै २६९१७
 पलैट २७९१३; २८७१३
 पँवर ७५५; पँवरी ३९१२; १२८११; ३५७१२;
 ३७११२; ४२७११; पँवरहि ३७६११
 पँवरियो ३७११४; ३७३१३
 पँवार ६३१४
 पसरन्त १२०१७; पसरा १५२११; पसरी
 २९६१७; ३१२१३
 पसबहु २३४१७
 पसारि ३७९१३; पसारी ३७५१४; पसारिसि
 ३६२१७
 पसीजा २८८१३
 पँह २६१२; २१८१४; २३३१५; २४११३;
 २६२११; २६३११; २९८१५; ३३११३; ३४११६;
 ३४३१४; ३९९११; ४२५१२; ४२६११
 पहिचानेड २२३१५; पहिचौनी ४०४१५
 पहिर १९६१४; पहिरसि ७६१२; पहिराहुँह
 १५७१२; पहिराड २६११२; पहिरायहि
 १४४१६; पहिरावहु २३११४; पहिरावा
 २६११३; ३९८१४; पहिरि ४९११; १८५१६;
 २६११४; ३४४१४; पहिरिहहु ३७०१४;
 पहिरिसि २३२१२; पहिरे २५७१६
 पहिलेहि ४०७१३; पहिलें ४३१११
 पहुँचई २३१११; पहुँचसि ४०३१७; पहुँ-
 चाओं २२६१२; पहुँचावइ ३५९१४;
 पहुँचै १९७१४
 पहुनाई १७४१२; २०७१५; ३३९१२ पहुँनाई
 ३९२११
 प्रभुता ९०१३,४
 पा (पॉव) ८१२; ५२१७; पाँ १७२११; पाइ
 ३५१७; ४९१६; ९४१३; ३८८१२; पाड
 ८५१२; २६८१४; ३४९१६; ३७३१२;
 ३९९१६; ४०३१२; ४१२१२; पाडें २९११५;
 २७४१६; ४०२१६

- पाइसि** २४६; १८३२; ३३९५; **पाई** ५००६; ४०३४; **पाड** ७८१७; १५७७; १६५४; १८४७; २२९४,५; ३१४४; ३४१५; ३००१,६; **पाऊं** २०७२
पाइक ९३२
पाकै २००५
पंखि १८९११
पाख ४३१४
पाँख २७९१; ३९४१
पाखर २०४; ९४७; ३५७१; ४२२३
पाग ३७१६
पागेड ३१५३
पाछ २९३३; **पाछहिं** १८७३; **पाछु** ३०३; ८५४; १६३६; २०४५,६; ३२५४; ४१८४; **पाछे** २६३; **पाछेउं** २८७३; **पाछें** १०२; ८४३; ८८१; १७१५; १८३१; ३३७५; ४१२२; **पाछों** ११०५; १८८१
पाट ७२१
पात (पत्ता) २८२; ३२९७; **पाती** ९५१
पाँत (पंक्ति) ३९७; ३७०२; **पातहिं** ३९७; ७७५; **पाँति** ५३२; **पातिह** १५२४
पाँती ७७५; ३६८४
पातर ६११; ६६३; ७२३; ७५१
पाती (पत्र) ३७५; ३८१; ९२१,३; ९३१
पायर २४४; २८८३
पाना ३१२३; **पानाँ** १४९२
पानि ३४८४
पाय (पैर) ४२५२; **पायन** ३९७३; **पाँयहि** ११९५; २४५५; ३७५४; ३९७२;
पायड १२६६; १७२२; २५७७; २७१७
पायड ३४१३; **पायउं** ९२६; १३७३; १५६३; १६४२; १७५४; ३२४२; **पायेंड** १४९७; २०९४; **पायसि** १६५; **पायिसि** ३९४६; **पायसु** २४१; १३३६; १३९६; २२२७
पायेंहि १८६; **पायहु** १८६७
पाँयक ४२३१; ४२४३
पाँयड ९३३; २५७३
पारई १५४; **पारउं** ३९०३; **पारहु** २००२;
- पारा** ९०४; ३६५२; ४०२१; **पारेंउं** ४३१७; **पारै** ३२९३; **पारों** २१८१; **पारौं** ५७२,३; ८६६; २८६२
पारसी ५०४
पारुधि ५०७; ५६५,६; ४१०३; ४१३४; ४१४२; ४२३२; **पारुधी** ४१०६; ४१३४; ४१४१; ४२०१
पालहु १९१
पालो ६७१; ७३३
पावइ ९०७; १२५२; १९८३; २२०५;
पावउं २४२; ३६७६; **पावसि** ६१२; २७११; ३६३३; **पावसु** १७९६; **पावहिं** १८५२; २१३२; ३३४५; **पावहु** १९४२; १९५५; **पावा** १९४४; २८१५; ३५४४; ३९१३; ३९२३; ४०११; ४०५३
पावा (पैर) ३७३१
पासहिं २९९६; **पासा** ५१४; ३३६३; ३२९१
पाहन ६१३
पाहुन ३६३६; **पाहुना** ३८७४
पिड ३२५४,६; ३२९५; ३३५३; ३३५३; ३७११; ३८४७; **पिय** ३२७१; ३५१५; ३५२२,३; ३६७५,६; ३७०७; ३७९३; ४०८५; **पियै** ३३०५; **पीड** २४५७; ३२३३; ३३५४; ३६८५; ३८३१; **पीऊ** ३११४; ३१४४
पिंजर ३१५१,२; ३५०७
पितहिं ३५५५; ३७३६; **पितें** ८४६; १६७४; ३४६३; ३५४५; ३५५३; ३९०२,४; ४०१२
पियत २७१,२; **पियहिं** २६१७; ३४७३; **पियावत** ३६१४; ४२९३; **पियावहु** १५७५; **पियावा** १९१२
पियर ६३६
पियारी २६३४; ४०७१; **पियारी** ४०६७; **पियास** २०४२; **पियासहि** १६२
पिरम २४३; १३८४; ३७०५; ३८१५
पिरत (प्रीति) ८९४; **पिरित** २२६४; ३७९३; **पिरिति** १९९१; ३२५५; **पिरीति** २२६२; ३२५६; **पिरीती** ९४३;

पिरवा १३१७
 पिरिय १११४; पिरयीं १३२१७; पिरथमीं
 ४२०१४; प्रियमी ५७६; ४१५६
 पिहान १७३२
 पीका ७७३
 पीठ ३७७७; पीठि ३८७१; पीठी ३८७५
 पीयड १८७३; पीयै २२०१४
 पीरी ३३०७
 पुकारति २७७७
 पुळारि ३०८३
 पुजै २३१२
 पुन ९२१७; पुञ्ज ११५; १५८२
 पुनवन्त २६६२
 पुनि ३९२२
 पुर ३८६४
 पुरँगन ३९७५
 पुरबकम ३८२१७
 पुरि २०११
 पुरइन २७४४; ३१६४,७
 पुरवड १६३; १५४४; पुरवहिं २९२; पुरवहु
 १४४३
 पुरुख १३; ९१३; २३४७; २६४१; ३८३३;
 ४२५१
 पुरुख्हें १४७; ४१४५
 पुरुखारथ ४१४५
 पुरुव १२१४; ३८२४
 पुरुबलिखा ४२०२
 पुसैं १७०७
 पुहुमि ७५; १०४; ४३५; २७०७; ३००७;
 ३२२१; ४१५४; ४२३४; ४२८३; पुहुमी
 १८०२; २७३७
 पूळइ २६२; १३६२; १४१३; २०२७;
 २६७१; ३११२; ३७३३; पूळउ ३४६३; ४
 पूळउँ २०९५; २६२७; पूळसि १२२५;
 १५०१; १६१६; १७३४; २१०५; २२८६;
 ३१९३,४; ३४०६; ३४५४; ३४९५;
 ३९९३; ४०३५; पूळिसि २२२३; पूळहु
 १३६६; १५१३; २०२५; २१७६;
 २२१४; ३३८५; ३६९५; ३७५५; पूळि
 १४०६; २०९६; ३५७६; ३९४६ पूळै

१७०१; १९२२; २८४५; ४२७१; पूळों
 ३३८७; पूळों २१४४
 पूजइ ३८३५; पूजहिं ३९१५; पूजी २६०६;
 ३८३४; पूजै १११७; ३९९४
 पूत १५५,७; १९५,७; १७१,३; ८९२;
 ९२६; पूतहिं ३५७३
 पूनिउँ १७२; पूनेउ ३२५५,७; ३९५६
 पूर ४२१; पूरि २८०१
 पूरी ७२३
 पूस ३२७१
 पेखना ४०५
 पेखा ८८२; १८८१; पेखी २१३; ५९७;
 पेखें २३४५; २३६७
 पेग १७०२; २३४२; ४२२५
 पेम २३२; २४५; २५१; २७४; २९१;
 ३१३; ६५३; ८४३; ८८५; १०४३;
 ११४३; ११५१; ११९४; १६९४,५,७;
 १९६६; १९७४, ५, ७; १९८१, २,
 ३, ४, ६; १९९१, ३, ४, ७; २००१;
 २०३३; २०४२; २२०१, ४, ७;
 २२६२, ४, ५; २२८२; २४२४, ७;
 २६३४, ७; ३८३१; ३८९३; पेमहिं
 ३३४६
 पै (पर) ७९५; ९१४; १६५३; १६८२;
 १६९५; १७८४; १८२६; २१२५;
 २२६१; २२९५; ३२६१; ३४२७;
 ३६०५; ३८३३; ४२४५
 पैठहु ३१४; पैठा ८८४; २३९४; पैठि
 २०५४; पैठी ८०६; २६५१; पैठै २९८२;
 ३७५६; ३९७४; पैठैउ ३५०३; ३७६६;
 ४०५४; ४०७६; पैठैउ १३७३;
 पैहसि १९२६
 पौ ३४४४
 पोंखर ३४०४
 पोछेहि ४०६३
 पोथा ९२; १९५
 पौन ४१४; ७७१; ९४३; २९५१; ३८७४;
 ४१९७

फ

फकावा १०१२
 फँदाई ३६१२
 फर १२७३; २२१६, ७; ३१०४, ५;
 ३३११, ४; ४०३३; फरा ३१०१२
 फाग ३२९१२, ६
 फाटि ४०८१२; फाटी ३६३; फाटेउ १३२१७;
 फाटै १५९१७
 फाँद ८४३; १९९१२; ३६१३; ३६३५;
 ३९६१
 फारा १०३२; फारि १२३५; फारी २४४४
 फाँस ६६६
 फिरउँ २०९५; फिरत ४२६१७; फिराइसि
 २७४६; फिरावा १८९५; फिरि १६७२,
 १७१६; फिरिकै ३३०३; ४१३६; फिरी
 ३१४३; फिरेउ ३८७४; फिरै १४०५
 फुन १६७७; १८९३; २३६४; २६२१७;
 २६६१७; ३४५१; ३९५५; फुनि २१२१२;
 ७८६; १६८५; १७५४; १८०६; १८८५;
 १८९६; १९१३, ७; १९५१; २०४४;
 २०६३; २११५; २१२१; २२१२;
 २२२३; २२३१; २२५३; २३५१;
 २३६५; २३७१; २४०३; २४६१७;
 २५४३; २५६३; २६०२; २६१३, ४;
 २७९१७; २९९१७; ३२६३; ३३३३;
 ३३८३; ३४०१; ३४२४; ३४५४;
 ३६५५; ३६९१; ३७१४, ७; ३७३४;
 ३९५१; ३९७२; ४०९६
 फुर १९२४; २५९२, ४; २६७२; २८७१७;
 ३४६१; ३७११; फुरहिँ २३०७; २७३५;
 ३६४२; फुरै ३२३३
 फुलेल २३२६
 फुसलावइ १५९२; २८७६; फुसलावहि
 २८८३; फुसलावा १४३१
 फूटहि ३५१६; फूटि २४४३
 फूलसि २१५५
 फेकरत ४०३१७; ४२६३; फेकरि ११०६;
 फेकरे ४२५२; फेकारि ४२३४
 फेरि ३२८५; ३३९५; ३७०७

फोंक २११; ४१४३; ४१५१
 फोरियहि ४०२४; फोरेउँ २४०४

व

वइठ ३१५; ७०२; १४०२; १५७३;
 १६४५; वइठा १८३५; १८५३; २३०३;
 वइठि २३४३; वइठे १५५१; २३५१;
 वइठै १४२५; १८५१; वइठों १७२२;
 १८९१२; वइठ २४२६
 वउराई ८३५; १२३३; १६९१; २८५३;
 वउरावा १०८४; १४३१; २३५३
 वकत ६३५; २२१४; २८५२, ३, ४;
 २७२१; वकतहिँ २०३४; २९७१;
 वकता १३१७; वकति ६४; १२२; ६१३;
 १६६२; वकती ७९५; ११५२; वकर्तौउ
 ६९१७; वकर्तै ९९१७; २८५१; वकर्तों
 ३८७३; वकर्तों ३१४५
 वंका ४१४४; वंके ३८४४
 वखानी ३५०३; ३५३२; २६५३; वखानै
 २६०३; वखानों ९१७
 वग ५३३
 वचा १३११७; ४२८१४
 वजाइ ३९२३; वजावहि २५०५; वजावहु
 ३९६२
 वटोरि १५९४
 वइ १४४; १८२; ७४५; १७६३; १८७५;
 २७०२; ३३४७; ४०९१; वइउ ३६५१
 वडवारू १३६३; ३६०५
 वडवानी २८०३
 वडावा १९६१
 वडेउ २९८१७
 वतै १९६१
 वदन ३३४; ४९३; ५५३; ३८७४;
 ३८८३, ६
 वँधाइ ३५६१७; वँधायेउ २६७६; वँधावइ
 २९२३
 वधाई ३९८३
 वन्धो २९९२, ७
 वनखँड ३६९३; ३७०६
 वनजारा ३१९१; ३४३३, ५

वनस्पति ३३०१२
 वनिज ३२०१६; ३३५११; ३४२१२, ५, ७;
 ३४३१७; वनिजों ३४२१७
 वनाहूँ २८३१३
 वैभनहि ३९३१४
 वयस ३३३१५
 वयान ३९४१५
 वर (वरदान) ४८१६
 वर (वड़ा) ३८५१२
 वर (समान) ३३६१२; ३५९१७; ३८९१७
 वरक ३००१७; वरके ४२६१२
 वरखा ३७०१६
 वरछेना ३६०१३; २२६१५
 वरज २६९१२; वरजत ९०१६; वरजन २६९११;
 वरजा ३०६११; २६४११; २६५१५; २७५१७;
 २७७१४; २९४१३; वरजाई ३२५१२; वरजि
 २६४१५; ३९०१४ वरजी; ४०४१६; वरजेउ
 १०७१७; वरजों २६३१५; २६४१२; ३८८१६
 वरद (वेल) ३३७११; वरदै ३४०१२
 वरन २१११३; २९११३; ४५१३; ४६१३; ५८११;
 ७०१२; ७४११, २, ५; ७५१२; ९३१७;
 २५४१६; ३७२१३
 वरवस ४०११२
 वरसावइ ३२५१२; वरसाई ३२३११; ४०६१४;
 वरिस (वर्ष) ४७१३; ८३१४, ७; १३०१७;
 १५४१७; २७११६; ३३६१३; ३५६११;
 ३६४१२; वरिसा ३०५१२
 वरिस (वर्षा) २७३११; ३१६१४; वरिसाई
 ३६९११; वरिसै २५१२
 वरहिं ३३२१२
 वरी (वली) ३९९१७
 वरीं (जली) ४२७११
 वरू ३५२१६
 वरुनि ५७१२, ३, ५, ७; ३१११३
 वरै २३२१५
 बलाई २६९११; ३६५११
 बलोल ८५१२
 बवैडरा ५४१४
 बसन्ता ४५१२

बससि २४०१७; बसहिं ३८५१४; ३८६१४;
 बसायसि ३१५१२; बसेउ २९८१७
 बसीकरन ३००१४
 बहई २५१३
 बहमन ३४५११
 बहलाइ ३७९११
 बहलिया ३१०६
 बहावइ ८८१३
 बहिराइ २८७१७; ४२२१४; बहिराई १०७१५;
 १२६१४; २३७१४; २८११२; बहिरात
 ३९५१७; बहिरि २४०११, ४; ३८४११;
 बहिरैउ ४०२१३; बहीर ३०९१६
 बहु २०२११; ३५६१६; ३६१११; ३९२११
 बहुतैहि २२२१७; २२९१२; ३६११२; बहुतै
 २३०१६; ३५८१२; ३६३१३; ३६६१३;
 ३९८१३; बहुता ७८११
 बहुमूली ३८५१६
 बहुराई ४२७१४; बहुरि २३१५; ३११३; ३७१७;
 ८३११; १९११४; २१३१३; २५११३; २६११६;
 २८६१५; २८९१५; २९७१७; ३०९१५;
 ३१०११, ५; ३१८१२; ३२६१३; ३६५१३;
 ४०२११; ४२५१४; बहुरी ३२८१५; बहुरे
 १८१६; २०३१७; ३४३१४; ३६१११; ३८४१२
 बहुल ४३११४
 बहुवहिं ४०३१७; ४०५१४
 बहोरा १५३१२; ३६७१२; बहोरी २५०११
 बा ३३५१३
 बाई २०९१२; ३४०१४
 बाउ १२४१२
 बाउर १६९१५; १९६१३; १९८१४; १९९१२, ३;
 २८५१३; ३४३११, २; ४१९१६; बाउरेउ
 ३३६१६
 बाँके ३१०१३
 बाखर ४२२१३
 बाच (वचन) २०९१२; बाचा ९११४; ९२१२;
 १३८१२; २२९१६; ४३११३
 बाँच (पढ़कर) ९१२; १९१५; ९२१३; १५४१३;
 बाँचे २६०१२; बाचे ९२१२
 बाजन ३९६१३; बाजा ३९५१२; ४१२१४; बाजै
 ३७६१६; ३९६१३

- बाजै (लङ्गे) ४००१५
 बाट ८१५; १८४६; ३३७४४, ६; ३३८६; ३४०२; ३५९१; ३६२१७; ३६५११
 बाढ़ा १८५१५; २२६१४; बाढ़ेउ ३२६१२; बाढ़ै ३१११३
 बातहिं १५५१५; १९६१२; बाता १९२१५; ३६९१५; बाति २६२१३; बातिक ८३१४; बातिह १५५१३; बातै ३६२१४, ५; ३७५६; बातो ३२१५
 बाती (बत्ती) २३३११; बाँती ५८१३
 बादर ५३१३; ३६८१४
 बाधिसि १६४११; बाँधाहु ३८०१७; बाँधा ३८५१३; बाँधि २५५१२; २८५१२; बाँधेउ २९२१२
 बान (बाण) १९१४; २११, ७; ४११४; ५०१२, ४; ५६११, ५; १०४१३
 बानन्ह १८५१५
 बानी ६२११; ३७६१२
 बाँभन १८११; ३१११२; ३१९१७; ३२०१३; ३४५६; ३५४११; ३५७६; ३७११२; ३९३६; ४२९१५
 बायँ ३९६१७
 बार (द्वार) ३४४१३; ३९५१२; ४२७११; बारा २४५११; ३५०१५; ३८६१३; बारि ३५७१२; बार (बालक) ३७६; ३८१२; ३५५६; ४२२१२
 बार (समय) २७२११; ३२६१३; बारा २५२१३
 बार (केश) ३८११७; बारा १०७११; ३८११४
 बारक ४००१३
 बारहिं १२८१४
 बारा (बाल) ४२५१५; बारि ३८८१४; ३९११७; बारी १५३६; ३०५१३; ३१११२; ३२११४; ३४९१२; ३७११२; ३७२१५; ३८९११
 बारि (पारी) ९१५; २०६१५
 बारी (जाति विशेष) ४२९१२
 बारे ३४११२
 बारौ ३०६
 बावन ३६०१४; बाँवन ३५९१२
 बास २०७१७
 बासर ४११५; १७०१३; २३३१२; ३०५१२; ३११११; ३५०१५; ३५२११
 बासुकि ६५१४
 बाँह (हाथ) ३७२११; ३७५१४; ३७८११; ३८९११
 बाँह ४०९१४; बाहाँ २४४१३; ३३११५; बाँहि ४२२१६; बाही २८७११
 बिऊग ३३५१२
 बिकरार २०७१७; २१६६; ३००१७; बिकरारा २८३१५; ३३२१२
 बिकली २९३१३
 बिख ३२५१२
 बिखम ६८१५; २१८१२; ३८२१५
 बिगनसि २१९१४
 बिगराये ४२६११
 बिगस ८७१७; ३३०१३; बिगसत २८६; बिगसा ८७६; बिगसाई ८११४; बिगसाना ८१३; बिगासा २२४११
 बिगोतिह ३२९१५
 बिच २६२६
 बिछराई ७२१३
 बिछरेउ २७९१३; ३६७१४; बिछुवन ३१२६
 बिछुरी ३५८१४, ७
 बिछाई १५२१४
 बिछोवा २४०१२
 बिछोह ८३१३; बिछोही २७६६
 बिडारी ४१५११
 बितारा १४५१३
 बिदार ४१११५; बिदारन ४१७१७
 बिदराई ४१७१७
 बिध (ढंग) ८४६; बिधि ३०११२; ३४११३; ३९५११; ४०५१३; ४२४१५
 बिध (ईश्वर) ५९११; ७४१३; ७९१७; ३४११४; ३६३१५
 बिधौसा १०५१५; बिधौसी ३२४१५; बिधामै ३२४६; बिधौसो १३१३
 बिन ३५११५; बिनु १९२१३; १९४१२; १९८१४; १९९१२; २०८१२; २१७१४; २१८१३; ३४६१२; ३४७१७; ३५११७; ३७९१३
 बिनति ३९०११; बिनाती २६४११; ३९११२

विनसाउ ४०९१५; विनुसाव ३९९१७
 विनानी ३८१४; ९४१४, ५; ५०१४; ६२१२;
 ४२५१३
 विपिरित १२३१२
 विवि १११७; ४११६; १८७१६; २०३१७;
 ३०५१७; ३८०१७
 विमोहहिं ६९१४; विमोहेउ २९८१५; ३५५१६;
 वियापहि ५१६; वियापी २९४१६
 वियाहि ३२११४; वियाहिय २३८१३; वियाही
 ३९११७; ३९९१५; वियाहू १५११३
 वियोग ३०९१२; ३२७१२; ४१६१६
 विरत २६३१७
 विरथ ३५१५; ३८३१५; विरथहि ३३०१४
 विरथ ३४७१५; ३५४१६
 विरलो ४२५१६
 विरसहिं ३०४१५; विरसहु २४११४; विरसि
 ४२३१७; विरसु ३२६१५; ३३११३; विरसेऊँ
 १९५१३; विरसे २०७१७; २३२१७; ३६९१२;
 ३७३१४; विरसौँ ८९१५
 विरहा ३०९१२; ३२२१२; विरहै ३०८१२;
 ३२५१२; ३२६१४; ३३७१६
 विरहानल ३३१५
 विरिख २३१३; २६१५; १३४१४; २०३१२;
 ३०८१२, २
 विरित २३५१२
 विरिया ३०६१३; विरियाँ ६७१२
 विलखै ४०११७
 विलग १४१५
 विलँव ३३५१४; विलँवै ३८२१७; विलँवाउ
 २८४१२
 विलाइ २९१७; ४८१४; ४८१६; विलाई ७११५;
 ८४१४; ८५१३; १९३१४; ३४९१४
 विवान ४८१७
 विस्तरौँ ३०५१६
 विस्थाली ३४२१४
 विस १०३१६; १०४१३; १६९१४; ३४९१७;
 विसा ६९१३; विसार ५६१५; विसारीं;
 ५०१२
 विसँभार ५२१६; विसँभारा १३३१२; ३०२१४;
 विसभारी ५११५

विसमौ ११९१४, ७
 विसरा २५१७; विसरि २४१४; विसरिगा
 ४०३१७; विसरी २४१३; विसरौ ३५१५;
 विसारसि ३०७१४; विसारा ३५०१५;
 ३८३१२; विसारि ३९८१७; विसारी ३२३१२;
 ३३०१५; विसारे ४११५; विसारेउँ २३८१७;
 ३३११७
 विसवास ३६३१४; विसवाम् १७५१५
 विसहँर १२३१६
 विसाउ १८१६
 विसाही ३४२१२
 विसेख २१२१२; विसेखहिं २१०१४; विसेखा
 ६८१४; ११३१४; विसेखी ५८१३; ६९१४;
 ३४५१३; ४००१४
 विहंगम ११५
 विहयहु ३४९१२
 विहर ३०४१५; विहरन्त ४२०१७; विहरहि
 ३१८१२; विहरान २८३१६; विहरे ३१८१२;
 विहरेउ २७८१६
 विहसति ३६९१४; विहसन्त १२०१६; विहँ-
 सहि ८११२; विहसा २११२
 विहान ८०१२
 विहावैहि १९०१४; विहावा २८११३
 विहाहि (विवाही) ३७४१५
 विहून ३४७१६
 वीछ २८३१३
 वीजु ५२१६; ३२३१२; ३७०१७
 वीरहि ९५१२
 वीरा ७७१२;
 वीरी ७७१२; ३०६१४
 बुझाइसि ४०७१६; बुझायसि ४०७१४;
 बुझाई २२३१२; बुझानेउ २२३१५; बुझावहु
 १९१४
 बुद्ध १७१७
 बुधवन्त ९१२; ३६१६; ७८१३; बुधवन्ति
 ४०८१५
 बुधारी ४३०१२
 बुधि ८२१२; ८७१४; ३७८१४; ३९२१२; ४०८१५
 बुयउ १८६१६
 बुलाइ ३७३१२; बुलाइन्ह ३९०१४; बुलाई

३५५५; ३६०१; ३७३३; ३९०२; बुलाउ
१७११७; २३३३७; बुलायउ २३०१४;
बुलायहि २१४६; बुलाये ३४४१; ३४४११;
बुलावइ २०२४; २१४५; २६३३; ३६३३;
बुलावहि ३५१४; बुलावहु २१४४;
२४६३; २५८२; ३७७४; बुलावा ३४३२;

बुलाह ९३६

बुहारो ४२५३

बृह ३५३१; बृहइ १४८४; बृहउ १४८७;
३८८५; बृहहि ३१३१; बृहहि २५९५;
बृहहु ४७६; ३३५४; बृह्ना १९८२;
२७३१; ३८०१; ४०४४; बृह्नि १५११;
२००५; २२०१; २७४१; २८९३;
२९६६; ३७४६; ३८४३; ३८७२;
बृह्नी ४०४२; ४४५१; बृह्णे २५९७;
बृह्णेउ ३८०२; बृह्णेउ ४०६६; बृह्णेउ
१६०६

बृह ३३४५; बृहइ २९२७; बृहू १२३१;

बृहउ ३३४१

बृहै ३३१४

बेग २७४२; ३४८४; बेगि २३७;
३८१, २; ३९०२; बेगी ९०३; २६७२

बेगार १५७; २११, २; २२७; ५३६; ६९२;
१४९२; १६३४; ३५६७; ३८९४;

४१६३; ४२९२

बेगा ४२७३

बेदन ३१५३; ३३५४, ५

बेदनों ३७९५

बेघा ४१५; ५७१

बेना २७२

बेनी ६८५

बेरहन (१) २०४

बेर (दर) ३७४; ३८५; ७०४; ८६३

बेर (वार) ३२२४

बेरास २२१७

बेल ९०७

बैठउ १८०२; बैठउ १९१६; बैठहि ३५११;

बैठहु २७८१; ३३४७; बैठाइ ३७८६;

बैठार ५१५; बैठारे २०१२; बैठारेउ

२२५१; बैठावा २०१४; बैठाँह २४३६;

बैठि १६१५; १८९३; १९१७; २११५;
२४२३; ४०२४; बैठु १३१५; बैठेउ
१८३३; २४६५; ३७४१; बैठेँ २०३१

बैद ५१७; ९०५, ६, ७

बैन ३६८४

बैपारि २११६; बैपारिह ३४३१; बैपारी
३४२१, ३; ३४३४

बैरि ४०९५

बैस ३१४४ बैसहु १८६६; बैसारी ३८९३;

बैसारे ३६६४; बैसावहि २८७६; बैसावा
६११; बैसि २८२४

बैसाखें ३३११

बोराइ ३५११; बोराई १९६३; २८८२;

३५०१; बोरायसि ९९२; १५६६; बोरा-

वहि ३५११; बोरावों १५५६

बोरे ३३९६

बोलइसि २१९४; बोलई २०३२; ३४३५;

बोलउ २७२४; बोलत ३७७५; बोलब
३६४१; बोलसि २७२१; २८७७; ४०१२;

बोलहि १४१५; १५३७; २१०५; ३६६६;

३६८५; ३६९२; ३७७५; ४०१५; बोलहु

१३५४; २४६१; २७२३; बोलाई ३९४१;

बोलाये १९०१; बोलावा ३६८५; बोलि

३६५४; २९०१; बोलेउ ३४९५

बोलाह ३५१७

बोहित ३३४५

बौराई ४७५; २१७१; २८४१; २८८४;

बौरौ १८२१

भ

भइ २०११; ३२३६; ३६९४; ८३६;

१४३४; २००३; २०१६; २०२२; २१४६;

२३३५; २४७४; २६३१; ३५६४; ३७२५;

३७४२; ३७७३; ३८४१; ३९८३; ४०६६;

भई ८०३; भयई २३२२; ३६८१;

भयउ ११४; ८३७; ११८७; १६३५;

१६८३; १७१४; १८८३; २१३३;

२४३२, ३; २४५१; २४७३; २६८४;

२६९५; २७८५; २७९६, ७; २८४५,

२९५५; २९६२, २९७६; ३०८१; ३२२४;

३३७१; ३४१२; ३५७२; ३५९३; ३६२३,

२; इ६७१; इ६९१; इ७२३; इ७५१,२,
 इ७७१; इ८६६; इ९५५; इ९६२,५;
 ४०२५; भयर्ट २८४२; इ२७४; इ४८१;
 इ८०४; भयहुँ इ५४६; भयसि ११४४;
 १९९१; भया २१३७; भयी
 ३०३; भये ९५३; १७०४; १९०२;
 इ५४६; इ७५५; इ८४४; ४२९६; भयेउ
 इ२४५; इ८५२; इ८६७; भयेउँ इ४७५
 भकसी १४३२
 भक्लि १०३६
 भगान इ७२३; भँगानाँ इ५७२
 भंजन इ७७६
 भटभेर २०७
 भँडार १५६; १६१; इ५९२; भँडारा इ५५
 भनहि १५३६; भनैँ १६७३
 भयानेउ ४१२१
 भरक्कि इ७२६
 भरम ६५; इ३५; ६९४; २१७३; २७७३;
 इ२३२; इ२४४; ४१२२
 भरमाना २७७६; भरमानेउ इ१७५; भरमैँ
 इ६६५
 भराइ ४००२; भराइँ इ८८२; भराऊँ
 २२८३ भरायेउ २३६३; भरावा १६८१;
 २२२५; भराँह इ८८७; भरि १७३;
 १८०६; इ२८५; इ३४१; इ४४६; इ५९२,
 ५; ४०६२; भरिये २८५६; भरी १४६३;
 २३२४; भरेउँ इ६९७
 भल १९७; २०१; ८७५; इ३९५; इ४१२;
 इ९२३
 भव १०४
 भँवर २७४; ५४१; ६४३; ७०२; इ८३३
 भँवहि २५६४
 भवाई ६६१
 भवायत ४२९३
 भसम ४३४; ४२८७
 भसमन्त इ३७७
 भसँल २०८३
 भडराइँ इ४८१,२
 भा १७३; २४६; इ३१; ७७७; १७११;
 १७२६; २०४१; २१७१; २३५३;

२५४२,७; २६९३; इ३७५; इ६२४;
 इ९५६; ४१२१
 भाइँ (भाँलि) २९३
 भाई २६११
 भाउ (भाव) ६६; ९१६; २५९५,७, २६०२;
 इ०६२; इ३८७; इ९२६; भाऊ ९२५;
 इ७८५
 भाक (भाखा, भाषा) १११३; भाखा ९६;
 १५४२
 भाखी इ८९२; भाखौँ १५५५
 भाग (भाग्य) इ७५७; भागा १२४२
 भागवन्त इ४१५
 भागहिँ २४९५; भागेउँ :१९३२; इ३७५;
 २४०४; भागैँ १९१३
 भाँत इ९६; १००७; २०३६; इ३२३;
 इ५२१
 भाँदौँ ४३१४
 भान २१०६
 भामिनि ६४२
 भाय (भाव) २६३७
 भारत इ९४; ५७३
 भारू २०१५; २६७३
 भाव इ०१२; भावा ७८५; २१५३; इ४९५
 भावइँ ८७; १३५; इ४४; ४८५; १६७६;
 २७४७; इ२५२,४; इ२९४; इ६७२;
 ४१०१ भावा इ४०५; इ५५१
 भावता इ४७६; भावन्ता २६३६
 भावना ६६
 भिखा ११२४; भीखा २२८७
 भिंगराज इ०९२
 भितरहिँ १८३४
 भिनुसारा १५७१; भिनुसारी ६५३; भिनु-
 सारैँ इ६५५
 भिरे २४४४
 भौँउ (भीम) ४०१
 भीजा २८८३
 भुजन १९०३
 भुअंगम ५४५; ६८५; १६९४; इ२३३
 भुइ इ७५; २०५६; भुइँ २८४; ७३५;
 १०७१; २०७३; २१९५; इ७०५; ४२५३;

- ४२४१,२,३ **भुईं** ८५३; १०३२; १२३६; **मग** ४५१; ३११६; ३९२३
 ४२०४ **मगाहु** १८६३
मुएँ ४०१ **मंगों** १८७६
मुखवइ २५९१४ **मघा** ३२३५
मुगुति १६१; १०९३; १७२१; ३३९३ **मछेहू** ३४१५
मुजइल ३०९१ **मँजूर** २९०३; **मजूरि** ६६१२
मुजंग ५९१ **मँझ** १०५२
मुनाँ १८१२ **मझारी** २११३, ५; २४६४; ३०२५
मुरउ १५५३ **मँटक** ४२३५; ४१६१
मुलाई २६३; २२०२; **मुलानेउ** २०७६; **मँढाई** २६८६; २६५१
मुलाय १९२३; **भूली** १२२६; **भूलेउ** २१३६; २३८६ **मङ्गन** ३७७६; ४१७६
भुवन ५७६ **मण्डप** ३९५३; ४०२४
भुववर ३८१२ **मँता** ३१२; ३६६२; **मतै** २०१२, ४;
भूखहिं १८२४; **भूखँ** २००५; २२९५ ३६६४
भूँज १७९४; **भूँजसि** २३९३; **भूँजी** १८०५ **मँतरी** १५११
भूपर ६७१ **मद्ध** ३०१७
भै ५७४; ३२५३; ३८२६ **मँद** ३३९३
भेंट ३८२४; ४०९१; **भेटइ** ९७३; **भेंटा** ४३०१; **भेंटी** २११२; ३५८२; **भेते** ३५८१; ३९८२
भेंट घाँट ३४२३ **मँदर** ४१५२
भेस ४००२; **भेसा** २४३४; ३०८३ **मँदिर** १७१; ३२९४; ३४८१, २; ३५१३;
भो २९८४ ३५४३; ४२६३
भोजहु २७१३; ४३०६; **भोजि** १५३१; **मँदाइ** २७२६; **मँदाई** २७२५
 १८०३; **भोजों** ३०७२; ३९८३ **मन्त** ५६४; **मन्ता** ४५२; ३६७१; ३८५२;
भोर ३८६६; ४१०३; **भौरै** ३८६५ **मन्ती** २०१२; **मन्तै** ३०६
भोरयसि १५६६; **भोरवनि** ४००३; **भोर-** **मन्त्र** ७९१; ३६६५
वसि ४००३; **भोरा** १५६७ **मन्द** २७४५; २६३३
भौ ५०२; ५३४; ११२२; ११९२, ७; **मनतै** ९०४
 २०४७; २६८३; २८१६; २९३३; ३२४३; **मनमँह** ३८७२
 ३२७४; ३७३३; ३७७६; ३७८६ **मनयेउ** ४०१६; **मनवहु** ४०५६
भौजी ३९९३ **मनसा** २९२; ९२७; ३७६७
भौह ४०४५ **मनसेरू** १९०२
म **मनहि** ४०५२
म (मै) ११४ **मनावइ** २०६५; ४०५७; ४०७६; **मनावा**
मकु ८२३; २१५१; २२१३; ३२५३; ३९२३१; ४०५३ **मनु** ५५४
 ३४५७; **मुकुँह** २०२७; **मकुहि** २११३; **मनुसहिं** ८२३; **मनुसै** १२८१; १८१७
 २८७५; ३०५३; ३२९२ **ममँता** ३२४५
मकोइ ६४४ **मयंक** २८६; ५५१

मया १२०११; १२२३; १२६२; २२४६; ३९८१७; ४०४२, ७; ४०५२, ३; ४०६३; २३३६; ३०७४, ५; ३०९४; ४०८४; ४१०२; ४१११, ६; ४१७५; ४२४३; ४१३५; ४२५५	३९८१७; ४०४२, ७; ४०५२, ३; ४०६३; ४१०२; ४१११, ६; ४१७५; ४२४३; ४२८२, महाँ २३८५; महिं ३३३; २७४२
मराई ११०४; २३७२; २९७४; ४२४५; मरत ३२२१७; मरतेउँ १२५५; मरब ३५३; मरबहि २७४२; मरबे ४२१२; मरहु २७४४; मराई १०७३; मराऊँ २८४५; मरि ३६२४; ४०८२; मरिबै ४८३; मरिह १००५; मरिहौँ ३३६४; मरेउँ ८१७; मरै ३६३३; मरौँ ३२२५, ६; ४०६५; मरौँ ३२८२	महकाहहिं २१२४ महतैँ ३५३६; ३५६६; ३६०३; ४३०१ महन्दरी २७११ महाजन ३७५७ महावत ४१७ महावर ७४४ महिं (मै) ११८२; १५८६; २१८७; २९५६; ३०७५; ३२१३; ३२८४; ४०३२ महोजू ९३४ माइ ३५९६; ४०८१; माई ५२१ माँग ५३२; ३७०२; माँगा ४९२ माँग (माँगना) ३६११; ३८२२; माँगत ९४४; माँगहि ७९७; माँगसि १९५६; माँगिसि २५०२; माँगिसि १६६ माँजन ७६३ माँजों ३७३२ माँझ २४४; ३५२; ४८१; ५९१; ६५२; ९२३; ९९५; २१५५; २१६१; ३२९१; २३६३; २४८५; २६५२; २७४४; ३६२७; ३६७५; ४११४; ४२०७; माझी ३४२५ माटी १२९५; ४२४३ माँत (मत्त) २०७७; माँता ३०११; माँती ७७५ माँतैँ ३४९१; ३५४५; ३५५१ माथ ३४६७; माथा ४३०६; माँथा २५३४ मानभाव ३०१२; ३०२२ मानसरोदक २३३, ४; २६५; ३७२ मानसि १९५६; मानहु ९१६; ३३१२; मानी ३५०३; मानैँ १७५७; २४३२; ३७३७; ३७८५; ३८१५; मानो ९१७; मानों २६०७; ४०९३ मानुस ९७१; १२३४; १६८२; १७१४, ६; १८८३; १८९१; ३६५३ माया ३४६५ मारग १६८७; २०५१; २३९१; २६३१; ३७६१; ३९२४, ५; ३९३३; ३९५१
मरताळ ६७१ मरम १६३; १४८१; १९७१, २; २२५३; २६४४; ३५३२; ३८०५ मरमी ४६२ मरोरा १८३२ मरोह ११८७; ३५४२; मरोहु २२८५; मरोहू ३२२; ५२१; २२६३ मलळ २७१५; मलि २८०१; मलै २२४ मँसिवान ४२९६ मँह २९७; ३९५; ८३१; ८४४; १२२१; १२३७; १२६३; १३४७; १६७३, ४, ७; १६८३; १७०२, ४; १७१४; १७२५; १७३२; १७५१, ४; १७६२; १७७६; १७८१; १७९७; १८०१, ७; १८११, २; १८४६; १८५१; १९०५; १९७४; १९९६; २०१६; २०३४; २०६१; २०८७; २१०३; २१४७; २१६५; २१७२; २२१२; २२३३; २२४७; २२५१, ७; २३०६; २३३७; २३६१, ४, ५; २३७१, २, ३; २३८७; २३९६; २४०१, २, ३, ५; २४३१; २४८४; २४९४, ६; २५६४; २५९१, ३; २६२४; २६४४, ७; २६५६; २६६१, २; २६९२; २७३६; २७४७; २७५६; २७७२; २७८६; २८७५; २९५१; २९६३; २९८२; ३२६३; ३३४२, ४; ३४४५; ३५४३; ३५५७; ३५६१; ३५७२; ३५८५; ३६४३, ७; ३६६६, ७; ३६८१, ४; ३७३७; २७५६; ३७६६; ३९७४;	

- मारसि १४९१२, ५; मारि १८५५; ३८५६; मुँके ३२१७; ३७८१
 मारिसि १४११; २१५७; २३९६; मुँदरा ३०५७
 ४१५४; मारी ३२५१; ३६५१; मारेड मुदिरासार ३००६
 १४५२; मारेड १३३३; १७५३; २३८१; मुरकाई १५८७
 मारेड १८२७; मारों ३०७३; ३६३७ मुरझागति ३०१५
 माल २०५७ मुरझि ४५६; ५०१; २१६१४; २३११; मुख्य
 माँस (मास) १२२१; ३४०३ २१८१
 माँसा (माँस) ३५०७ मुहि ८३४; १४४४; १६०२, ४; १९३३, ६;
 माँह (माघ) ४३१; ३२६१ २२६३; २६३५, ६; २८१६; ३२२३;
 माहाँ ३७३; ९१५; २६४२; ३१५२; ३२९१४; ३३२५, ७; ३४६२; ४०२५;
 ३२६५; ३३३५; ३८०२; माँही ३५३१ ४०६५; ४२६७; मुँहि ४०५; १६७५;
 मिरगी २३५; मिरिग ५६५; मिरिगि २२४; २३६२; २८८७; ३५२१
 २३१; २६३; २९३; ७७५; मिरव ९४१ मूठ ६९३
 मिरवइ २८२१, ३; मिरवड १८७४; मिरवहि मूद २८९६; मूदसि १७५५; १८३५; मूँदि
 २००७; मिरवहु १८७७; मिराइहि १७६३
 ३४१४; मिराइ ४०९४; मिराड ३५८३; मूर २८१७; ३००५; मूरि ३००३
 मिरायड २६०७; ४१३१; मिरावा मूरत ३३५
 २६०५; ३०३१; ३५८३; ३७६५; मेखा ८८२
 मिरियहि २७९५, ७ मेघडम्बर १०३; ९५२; ३७६४
 मिलत ३५८४; मिलतेड ४०९२; मिलहि मेघा ४२१
 ३५८७; मिलहु ४०८७; मिलाई ३५५५; मेंटहि ४२८३; मेटा ४३०२; मेंटि २७२७;
 ३७८३; ३९३४; मिलाँड ३८९७; मिलि मेंटी १४७६; मेटेहु २८३७; मेंटें
 १८५६; ३८५४; ४०५६, ७; मिलिकें १४४४; मेटो १९५३
 ३४२३; ३५५७; मिलिहि ४०४५; मेढा १७१२
 मिलिहें ३५८७; मिलेड ८१५; २३९२; मेराई २४८५; मेरावा १९७६; ४१५३;
 २६०६; ३९३४; मिलें २३४५ मेरै १६३३
 मिलानहि ३६५३; ४; मिलाना ३५९३; मेल ७५२; मेलसि ४१५२; मेलहि २८७२;
 मेलान ३६१६; ३६२१; ३९४४ ३८२१; मेला ३२९१; मेलि ८८७;
 मिस ६३७; ८६३; १९३५ ४००२; मेलेड ३५७६; ३६१५; ४०२३;
 मींगल ४१७१ मेलेडें १९९६; २२८२; मेलै ३८१७;
 मीचु १२५४; ३५४५; ३६४३; ४२४५ ४०२७
 मीज २६६४ मेहाँ १७७५
 मीत १९८२; मीता २७४३ मै ४३१७
 मुँ ११०६; १७८१; ३१६३; ३४८५; मैके ४०१५, ६
 मुयँड २२८२; मुयहि २२८१; मुयहु मैन ६८१
 ११०७; मुये २२८१; ४११७; ४१८४; मैमत ४११३; मैमन्त ७०७; ३२९६;
 मुयेड १२५६ मैमन्ता ४१७१ मैमाँता ३९६४
 मुक्क ३५२७ मों २०६६; २३५७; २४०७; २६२५; मो
 मुकरावा ५४१ पँह ४१२७; ४१३६
 मुकुन्द ३१७१ मोइ ५९३; ९६६

मोकॅह १४२३; २७२४; ३५९७; मोकें

र

४०२५; मोको १४२६

मोंकी १८८२

मॉख ६३; १४७; १२२२; १८७४; २२६२;

२३८२; २६६७; ४३२५; मोकू २६८२

मोट ६६३; मॉट १७३५

मोंति १३३३; ३५९५

मोर (मिरा) ५२३; ९०२; ९२४; ३४३३;

३७३५; ३७४६; ३७८३; ४०२३;

४०३३; ४०८६; ४१२२; मोरा ३४८४;

३८०५; ४१२३; मोरि २१३३; ३७८३;

मोरिठ १३३३; मोरी ३३४२; ३३९२,३;

३९३३,५; ४०८३,५; मोरे ३४९६;

३९३३; मोरें ३७४७; ३८६५; मोरें

३८७६

मोरा (मोर पक्षी) ३७०३

मोसॅउ ३४६७; ३६०२; मोसों ९१६

मोहनवान ३००३

मोहि (मुसे) १८७७; २२७६; २७०७;

२७३७; ३४८३; ३४९७; ३९४४;

४००६; ४०३५; ४१२३; मोही १७६३;

२३४३; २७०२; ३४६३; ३७७५; ३८३३;

४०३३; मोहें २७०५

मोहू ३१२४; ३८८५

मौली ३३०२

य

यडू २५५७; ३०५३; ३०७३; ये २२४४;

२५३२,७

यक ३००३

यहि १८२; ३०३; ८४७; १४३५; १८५२;

१९३३; २०५३; २०९४; २१०५;

२१७१,२,३; २१८५; २३०७; २५३५;

२६४४; २७०३; २८६२; ३२७५; ३२९२;

३४६६; ३४८७; ३५२३; ३६३३;

३६३७; यहि २२३३; यहिक १३४६;

यहेउ ४३६५; यहै २०२; २१८४;

३३९३; ३४०३; ३९३३; ३९३५; ४०७३;

यहो ४४७; यहों ३३०४; ३९०७; येहि

८३७; १८६३; ३८०३

यों ४०२३

रउरे ३९४४

रकत ६३५; ६७३; ११९३; ३५०७

रंगरात ८९७

रचि ४२७६; ४२९२; रचि रचि २६६

रजायसु ३७४

रतनारी ५८३; रतनारै ३२९३

रमायन ३९४

ररै ३२३४

रलियाँ ४०९७

रवन १९५५; ३८३३; ३९८६

रसना ४३२; रसनाँ ६३

रसा ४६४

रसाइ २६६

रसाल १५३

रसॉई ३९०७

रहई २०५३; २३०३; २८८५; २९३४;

४१८५; रहड १४४२; ३५०७; रहतहि

२७६६; रहहि १३४४; ३३६३; ३४८५;

रहहीं १९०३; रहहु १७३५; ३३८५;

३५०३; ३३६७; रहाई ४२३; १६७३;

१८८३; २६२४; ४३०३; रहात २९५७;

रहाही ५८५; रहाहु ४०६६; रहि २७३४;

रहिसि २८८४; रहों ४०४६; रहेड

१९२४; २२८४; २९९५; ३०८७;

३२९५; रहेंउ २३५४; रहेवें २९४३;

रहेहु २०४४; रहै १७०२; रहों २३४५

रहस ३०८६; ३६९४; ३८६७; रहसत

२०६; ८८४; २३३७; रहसति ३६९५;

रहसहि ४५७; रहसा ९३३; १२६६;

१४९७; ३९६६; रहसि ९८६; रहसी

२२२२; रहसै २०४३

रहसि ३०८४

राइ ४९४; ९५६; २८९३; ३४२७; ३४३२;

३४५५; ३५७७; ३७४१,३; ३७५४;

३९०३,३; ३९२३; ३९३२,७; ३९६३;

३९७३,२,३; ४१०७; राउ १०३; १५४;

१८७; २३३; २३३; २३४; ९३३; ९५२;

२२०५; ३४४७; ३९४६; ३९६६; राउ

४०९२

राउत २०१२; ९३१२; ४२३१२; ४२४१२
 राकस ११७५; ४०१२
 राखसि १९६१२; राखहि ३८९५४; राखहु
 १८२१६; २९५५७; राखा १८१२; ३७९५४;
 राखि ३३२१२; राखिन २६७१२; राखिसि
 २५०१२; २९४५७; राखी २२१५; ३३११२;
 ३६४५४; ३८९१२; राखु ४०५५४; राखेउ
 ३३११२; ३५०१२; राखेउ २४११२; राखों
 ३८०१७
 राघो ३९५१२
 राचा ९१५४
 राजें १९११२; १७१२; ३३१२; राजो ३७५१२
 रात (रक्त) ७९५७; राता २८५; ३४१२; ७९५५;
 १३६१२; २०३५४; ३६८१६; ३७०५४; ३७२१२;
 राती ७७१२; ३५०१७
 राति (रात) २३३१२; राती ३८१२
 राँधा १५४१२; ३८५१२
 रानाँ २८१२; राने ९५१२
 रामाँ ३०१२; ३१६५; ३१८१६; ३२७१२;
 ३३५५४; ३८८१६
 राय ३४४१२; राया ८६१२; २४६१२; ३४६५;
 रावइ २०६५; रावसि २७११२, २, ५; रावहु
 १९५५५
 रावटि २६५७
 रावल ४२०५
 रासि १७५; १८१२, २, ३
 राहा २७८१२
 रिग ४०५४
 रिनु ६५१२; ७४१६; ७६५४; १६६१२; ३२८५;
 ३६८१७; ३६९१२
 रिस १५९५; २२७१६; ३९९१२; ४००१२
 ४०७५७
 रिसाई ५४१२; रिसावा ७९१२
 रीझ ३८८५४
 रीती २२७१२
 रीस ३३११६
 रुगिया २००१२; रोगिया ५११७; ९०१६, ७
 रुचि ४१०१२
 रुठवाई ४०५५४, ५; रुठि ४०८१२; रुठी
 ४०५५६; रुठै ४०८१२

रुद्रराख १०९१२
 रुहिर ५६५७
 रुख २५५१२; ३१२१२; ३५०५; ३६९१२;
 ४१४१२, २; रूख ४२०१२
 रुच ३४५४; रुचत २७३५७; ३५५१२; ३७४५७
 रूपमरारी ३०९५४
 रेंग ९०५; रेंगि ४१३५४; रेंगें १७३५५; रेंगत
 २१५
 रैन ३२५१२, ४; ३७९५; रैनि १०९५
 रोइ २८११२; रोउ १०२५४; रोवइ २५१२;
 १०६१२; १२४१२; २१९५६; २७९१२; २८०१२;
 २८२१२; २९०५४, ५; ३५०५४; ३५९५६;
 ३९२१२; रोवत २८१५४; ३४७१२; रोवति
 २७७५७; रोवसि १५५१२; रोवहु १६०१२;
 २८२५४; रोवों ३३६५७

रोझा १६९१२
 रोपहि १४९१२; रोपी ३९५
 रोरा ३७४१२
 रोस ४०६५६; रोसु ४०७५४
 रोही १८३५४
 रोहै ३३३५७; रोरो ४२८१२

ल

लइ (लि, लिया) १६५७; ११७१२; १२३५४;
 १८९५७; १९३५५; २६८५७; ३९३५६; ३९४५१;
 ३९६५१; ४००१२; लइके १२३५५; १५३१२;
 १६४५५; १७३१२; १८११२; १९४५४; ३३९५५;
 ३४२१२; ४०५५७; ४२२१२; ४२८५४, ६;
 लइगा १२४१२; लइ-दइ ३४२५४; लई
 ४९१२; लई ८०१२

लंक २५१२
 लखन १७५४; १७७; ११२५७; २२५१२
 लखराऊँ २०५१२
 लखाई ६६५४
 लग्गा ३२५५७; लग्गा २५५७; ३७५५; ८१५५;
 ८४५६; ८६१२; १८४५५; १९६५७; २०६१२;
 २२४५४; २५७५७; २७२१२; ३०८१२; ३४३१२;
 ७; ३४४१२; ३५८५५; ४३१५७; लग्गि ८४१२;
 १०५५५; १७७५७; ३३११६; ४०३५५
 लगाई ३३६५४; लगायेउँ ८६१२
 लछ (लक्ष, लाख) २०४१२

लछिमी ४२३७
लज्या ११९७
लदावा ३३५१
लवह ३२३१; लवई ६०२ लवँहि ३३२१
लपटाई २८५३; लपटानी २६५५
लये ८२३, ४
लरतै ४०५५; लराई ४०५२; लरे १२६३
ललाट ५५१
लह २५३; ७४४; २१७५; लहि ९५; ३३२
३८२; ४०५; ७९४; ९५३; १७९३;
२०१७; २०६२; २२८३; २३४६;
२५४२; २५६६; २५७७; ३५८१; ३९८४
लहई २४४
लहर ५४६; ५७१
लाइ १९६३; २३१४; ३३५४; ३५८२;
लाइसि ४११५; लाई ३३२१; ३५९६;
३९२२; ३९७२; ४०८४; लाउ ४३२;
१७९७; २०६६; ३३४१; ३३८६; लाओं
६९१; लायउँ ८६३; लाये ३९४२;
लावइ ५१७; ३१६३; ३८०३; लावहि
४६२; २५४३; लावहु ३८७५
लाग २०५, ७; ३८५; ४६५; ६५७;
१४०७; १६०३; १६५५; १७८२;
१८९४; १९१४; १९३१; २१५७; २१६३;
२२४६; ३१४७; ३३३६; ३४५१; ३७३३;
३७५६; ३७६६; ३८५७; ३९६३; लागत
६९२; लागहि ३८२५; २०४५; लाग
२२४; १९१५; ३२१५; ३९५१; लागि
३१३; १७८३; १८७२; २०१७; २३४४,
५; २४६७; २६९१; २७१४; २८४६;
३४१३; ३५५५; ३६८२, ७; ३८३५;
३९०६; ४०६२; ४०७६; लागिसि
४०३४; लागी ७९६; २१८२; २२७३;
३६८२; ३७०१; लागु २८२७; लागे
१९५; १७१२; १९७२; ३३११; ३९७३;
लागेउ ८३६; १३७२; १६७७; १६९१;
१७७६; २३९७; २८१६; २९१२; लागै
४४४; १७२१; १७८१; २१८७; ३२८३;
३८९४
लाजहि ४०४१; लाजै ४००५

लाहू ६६४
लादि ३३७१; लादेउ ३१७७; ३१५५, ६;
लादेउँ ३२०६
लाँव ६६३; ७५१; लाँवी ६०१
लाला ६६५
लावइ ४२७
लाहु १७०६; लाहू ३५१५
लिखि ३४६६
लियेउ १७५६
लिकार ५५५, ६; ६५७; लिकारा १७४
लिवाइ १७२६; लिवावहि ३५९२
लिह १७८६; लिहसि २०३; ८२२; १३८६;
१३९२; लिहा १२०२; १६८६; लिहिसि
१०३२; २१३४; २२३२, ६; २७४६;
३३७३; लिही ७८४; ९६१; २६१२;
३२०३ लिहेउ ३०७७; लिहै १९४२;
लिहों १३८१
लिहा (लिखा) ४०१; २, ४; लिहि ३२५;
लिहे ३८२७; ३९८५; लिहै २९७३
लीका ७७३; लीकै ६३३
लीजै १९४५
लीतसि ४१४३; लीतँहि ४२६३; लीता
२९१; २१८५; लीते ४३२५
लीन्ह २८२३; ३४४६; ४२४२; लीन्हा
२३१३; २४७२; २५५५; ३१५१;
३४५२; ३५७४; लीन्हों २८६४; लीन्हि
२२३४; ३६४५; लीन्ही ८२५; २२३३;
३९५३; लीन्हे ४०६३; ४०९४; लीन्हेउ
२२४४; लीन्हेउँ १२४३; लीन्हों
१९६५; ३६३७; लीनसि ८२१; २९२१;
लीनहि ३५७७; लिहन्त २२०६; लीहिसि
१०६५; ३३९४; लीहें ४२४७
लुकाइ १८९३; लुकाई ३६२; ७८६;
७९२; २९९५; लुकाउँ ३२३३; लुकानों
८१३; लुकायहु ८६४
लुटावा २९८३
लुबुध ५९२; २९२३; ३५०३; लुबुधा
२३२; २७४; १९७१; २७०६; लुबुधी
१९३५; १९६६; २७०६; लुबुधेउ २४२७;
लुबुधा ११५४

लुक ४२७१;

ले ३६५४; लेह २३१२; २५५१; २७९४;
 ४००६; लेहह १७९४; लेई ६२६;
 २६२३; ३५१२; ३५९१; २६२३;
 ३८२२; लेई ११५; ८१६; १९२२;
 २०९७; २२२७; ३४६७; लेई १६११;
 लेत २०२६; लेतस १७२७; लेतसि
 १२३७; १९२३; लेतै १२३३; लेवा
 १००५; लेवै ३४४२; लेवौ ३८४५;
 लेहि १९७६; २५६५; २९१५; २९९४;
 लेही १६३२; २०९२; २५०४; लेहु
 १९५५; २७५४; ३४८६; लेहू ३७१;
 ८९३; १६३१; २२५३; ३४२५; ले
 ७८७; ८०७; १८३४; १९१२; २२६२;
 २३०५; २३३७; २४६६; २७८१;
 ३१६३; ३२२५; ३४४४; ३६२७;
 ३६४६; ३७३२; ३७४३; ३८४७;
 ३९२३, ५; ३९७३; ३९८३; ४०३३;
 ४०५१; ४२७६; लेलाये २८४;
 ३५९४

लेखा १७३; ४११३; लेखी २०३५

लोहनहि २४३६; लोयन ३४६; ४३२;
 ४४३; ५८१; १२०६; २८०५; ३२३६;
 ३५४७; ३६८२; ३९५५

लोगहि २०९५; ३४०६; ३६२६; ३९३५;

लोगन्हि ४२४२

लोटे १८९५; १९०२; लोटी ४२३४

लोन ७४५; लोना १५२; लोनी ४६१

लोवै ३३२१

लोहु ५५७; लोहू ३२२; ३३६७;

लौ २३२५

लौकाई ५५४

व

वइ २५२१; २६०१; ३०४५

वइस २६९५; वइसै २६६७

वस ३४८१

वई १७९७; १९०५; १९४२; २०२७;
 २२९६; २३६५; २६५७; ३६२१

वहइ १७६५

वहि १५४; १६७; २०१२; २२१; ३१३;
 ७४३; ७८३; ८३५; ९०५; १०४७;
 १०५५; १०६२; ११४१; ११५१; १३९३;
 १७८३; १७९६; १८०३; १८४३; १८६२;
 १९१२; १९२२; १९३१, २, ४; १९४१, ६;
 १९५१; २१४१; २१५२; २१६३; २२४२;
 २७०६; २७११, ६; २७९४; २९३४;
 २९६४; ३०३१; ३१०४; ३३१६; ३३८४;
 ३४११; ३६२२; ३६३१, ४; ३७३१, २, ३;
 ४००४, ६; ४०२७; ४१०४; ४१२६;
 वहिक ३४९३; वहिकै ७७६; वहै १९८३;
 २२२१; २७२२; ३३८४; ३४०२; ३७१२;
 ४३१७; वहौ ३०८५

विकली २७७७

विचाखन २६१४

विधासौं १०५३

विपति ३१२७

विपरित १३२६; २३७१

वै ८०५; १३३५; १७६७; १८६२; १९११;
 १९३३; २०१२; २२१७; २३३५;
 २३९५; २५२४; २५५५; २५८४;
 २५८५; २६४६; २७८२; ३०९३;
 ३५०५; ३६११; ३६४४; ३८४४; ३९५७;
 ४०२२; ४२८५; वै ४७२; १७६६;
 २०३५

वैसहि १९१३; ४२८१; वैसहु २३८७;
 २४०५

स

स (सो) १७७४

सउजहि २०१; साउज २०२, ७; २१२;
 ३९७; ४१०५; ४११६; ४१३५

सकताई १३३२

सकति (शक्ति) ६२; सकती ३००५

सँकती २८६६; २८७१

सकबन्धहि २७५४; सकबन्धी ४१९१

सकलहि ३०१; ३८५३; सकलेठ ३७५१

सँकाइ १४७२; सँकाई २१६१; ३९४१;
 ४०५२; सकानी ४२७२

सँकोरा १९५३; सँकोरि २८४४

सँखा ३३६१; सँखिह ७९१४; २६११२; ३७८१३
 संगति २३१४; ३७५१२; ३९४१३; संगित
 ४१७१२
 संगि ३९९१४
 सगुन ३९२१३; सगुनहि ३८४११
 संगेउ ३८३१७
 संघाति १७८१५; संघाती ७७११
 संघार ४२५१६; सँघारत ४२८१३
 सँघारह २१२१५; सँघारत ३२७१६; सँघारहु
 १९४१७; सँघारा १३८१३; सँघारी १५६११
 सजग ४७५५
 संजम ११११६
 सँझर १०१२
 सँझायउ २३०१४
 सठि ३६२१४
 सत्य ५१७
 सत १३२१६; ३७९१४
 सतवन्ती ४१८१६
 सँताई २१४११; ३२७१३; ३५०१४; सँतावह
 ३२११४; सतावा २१७१३
 सँताप ३०८१७; ३०९११; ३१११५; ३२८१५;
 ३५०१३
 सतायस ३४८१३
 सँतारा ४१८११
 सतुरहि २६७१६; सतुँ रो १७७१२
 सतै १६२१७
 सथ २७६१६
 सँदेस ३७२११,२; सँदेसा ३४७११; ३५०१२
 सन्धि ३८२१४; सन्धी ४१९११
 सना १५९११; सनाँ १५११६; १६३१२; ३२०१२;
 ३३२१३; ३८९१५
 सनेहू १६१५
 सपत १३५११; १९२१४; ३७८१२; ३८११२,३;
 सपन ३५१२; ३७०१४,६; ३७३१५; सपनहि
 ४१०१२; सपनाँ ३६८१७; ३६९१६; ३७०११;
 सपनै ३७०१७; ३७३१५
 संपुट ३१८१३,४
 सपूती ६२१२
 सपूनी ४६११
 सपूर २५११६

सपूरन १३१२; ३०११; ७३१७; ७४१४; १४८१६;
 २५१११,५; २६०१५; ३५६१५
 सबई ३८५१३; सबकहँ ९३११; ३४६१५;
 ३५३१२; सबै २६११; ४५१७; १६५१६;
 २०८१२; २१२१४; २१४११; २३२१७;
 २४३११; २४८११; २५६१६; २६७१३;
 ३४७१२; ३५८१६; ३६६१४; ३९८१५; सँभ
 ७६११; सभै ३६१६; ६२१६; २०६११;
 २५५१२; ४२०१६
 सबद ८०१५; ९५१३; २५०१७; २५१११; ३६८१५
 सँभरि ८२११; सँभरे ४०१७; १०६११; सँभलहु
 ४७१६; सँभार २१६१७; २९४१६; ४२५१२;
 सँभारहु ८९११; ९११५; २००१२; सभारो
 ८४१५; १३२१५; २००११; ३२३१४; ३८०१४;
 सँभारी ५११५; ३२८११; सँभारो २१८११
 सम्पति ३१२१५,६,७; ३१३११
 समत्य ३०५१७
 समतूल ७१६
 समाइ २०४१७; २१४१७; समाई २०४१३;
 २९९१५; समानी १३८१४; २०८१६; ३२५१५;
 समानै ३०५१७; समाहि २६४१७; समाही
 २९६१३
 समाधान ३५३१६; समाँधान ३५३१५
 समुँ झ २८४१४; समुँझाई २७८१३; समुँझावइ
 ३११४; ३५२१५; समुँझावउँ ३३६१६;
 समुँझावौँ ४०७१५; समुँझि २२५१५;
 २७९१५; २८२१६
 सँमुद ७७१४; ९३१६; ३३८१२; ३५६१६;
 ३५८१२; ३९२१२; समुँदु ३५८१६
 समुन्द (समुद्र) ११७१५; १२०१३
 समेटहि ४२८१३
 समो ८३१७; ३२११५
 सयाना ४०१४; सयानाँ ४१६; ९१२; १११२;
 ५११२; सयानी ४७१२; ५०१२
 सँयसार १११; २५१७; ६८१६; ४२३१७; सँय-
 सारा ८५१५; १३९११; १५४१४; ४१२१५;
 ४२५१५; सँयसारू ६१६; ५९१५; १०८१५
 सर ५७१३; ३१४१६
 सरै १२८१६
 सरग ११०१७; सँरग ६३१४

- सरजन २२४।२
 सरजी १४।६
 सरसती ३०१।३
 सरद ४५।२; ३२५।१
 सरन १३२।४; ३२३।३
 सरव २०९।३
 सरवर ४१०।७; सरवरि ९।४; ३९१।७;
 ३९९।५
 सरबस २०८।६; ३००।२
 सरभाहि ६६।७; ६७।७
 सरवर ४५।७, ७९।१
 सरवाहा ९३।५
 सरसेउ ७३।७
 सराउ २०६।७
 सराहहि ६२।३,४; सराहों ९३।५; २६८।५
 सरि (समान) १८।२
 सरि (चिता) २२६।२; ३८०।३; ४००।६;
 ४२७।६; ४२८।४; ४२९।२
 सरिल ३२।२
 सरूप ४९।३; ८०।४; ३९१।६; सरूपा २१२।३
 सरेख १६९।५; सरेखा ५९।२; २७४।१;
 ३२३।५
 सरोदक ३१९।२
 सलिल ४२।७; सलिला २५।३
 सवन १२।६; १५।२; ३४।१; ५९।१; २०६।२;
 सवनों १४।१
 सँवर २७।१; सँवरउँ १७७।३; सँवरत
 १२०।४; १७७।४; १८८।४; २३५।४; सँवरि
 सँवरि ३३।७; सँवरसि ८२।२; सँवरहु
 ३३३।२; सँवरेउ २४०।२; सँवरै ४१।१;
 सँवरों २७०।२
 सवाई १९।३
 सँवाँगा २९।४
 सवाद १९८।२
 सँवार ६०।१; सँवारसि ५३।१; सँवारहि
 २०५।७; ३६६।२; सँवारहु ३५५।६; सँवारा
 १५।३; २३२।३; सँवारि ४९।१; ३६८।६;
 सँवारी १४।२; २८।१; २०१।३; ३९१।४;
 ४२९।४
 ससहर ७४।६; ससिहर १७।२
 ससिबदनी ३०४।७
 ससी ३८८।३
 ससुरें ४०१।५,६
 साँसो १०।४
 सहँ ९४।१
 सहन्त ३८३।६,७
 सहल २९९।७
 सहस १५०।२; ३३७।१; सहँस ९२।५; सहँस
 २६५।३
 सहारहु २००।६
 सहेट १७७।५
 सहैलिह ३५।१; ६४।४; ८१।१; ८९।३; ३५२।५;
 सहैली ३५८।६; ३६७।३
 साई ४०८।३; साँई ३१६।१,७; ३६७।४;
 ३७०।२; ३७१।५,७; ४०६।१,७; ४०७।१;
 ४०८।४; ४२७।४
 साउ ३०६।४; ४०१।७; ४३२।७
 साका ४२७।६
 साख ३६०।४,५
 साँख (शंख) ६८।१
 साँख (साँस) ३६४।६
 साखा ३७९।४
 साखि ३०१।३; ३८८।७; ४०७।२
 साँच (सच) २८७।७; ३८८।५; साँचहि १४८।२;
 १५१।२; ४१३।५; साँचा ८।१; साँची
 ३१५।३; साँचू ४००।२
 साँचे (साँचा) ६८।१; साँचहि ६८।२
 साज ३९६।५; साजहि ३६६।२; साजेउ
 ३७९।१
 साँठ १६४।१; ३३९।४,५; ३६३।६; साँठो
 ३५९।१
 साँत (शान्त) १००।६; २०३।७; शान्त ३७४।२;
 ४०८।७; साँती ६४।५
 सातउ २१५।३
 साधा १९८।१; २२७।३; साँधी २१८।२
 सान ५६।३; ६२।४
 सानाँ (संकेत) २४८।३
 सानाँ (समान) ४०९।३
 सापुहस ४१७।७
 साँभर २९९।६; ३८५।३

साम (विद्र) ४०।४
 सामाँ २१।४; ३३५।४
 सामि २६६।५; २६७।४,७; २६८।२; सामी
 २३४।२,६; ३५५।१
 सायर ३४।७; १२०।५; ३२७।७; ३३४।५,७;
 ३६९।३; ३७०।३; ४१८।५
 सारंग ३६८।४
 सारद ८८।६
 सारदूर ४१३।४,६; सारइल ४११।१
 सारि २१।१; १८३।४; २०१।५; सारैँ ४२४।१
 साल ५०।३; ५८।७; ४०९।५; सालैँ २६९।६,७
 साँवकरन ९३।४
 साँवर २८।५; ३१५।५; ३७२।३
 साखी १३।४
 सास ४०३।७; ४०४।१,६; ४०५।७; ४०६।३;
 ४०७।४,६; ४०८।१; सासु ४०३।६; ४०४।१;
 ४०६।६; ४०७।५; ४०८।३; ४०९।३,४;
 सासू ४०६।२
 साँसा २७२।३; साँसैँ ३५।२
 साह ३७५।७
 साहन ३९४।६
 साही २६७।१
 सिखर २२१।६
 सिखरावहु १९।३; सिखरावा ८७।३
 सिंगार ५७।५; सिंगारू ५९।४
 सिंघ (सिंह) ३९।६; ३६६।३; ३८२।५
 सिंघासन ८८।४; ३९६।१; ३९७।१,४,७;
 ४२६।२; सिंहासन ३६१।३
 सिंधिनि ४१७।६
 सिंध १०९।६; ११८।२; १२०।४; १३६।४;
 २१५।१
 सिरज १६८।६; सिरजसि ४२८।३
 सिरजनहार ६८।७; सिरजनहारा १७।१
 सिराइ ४९।४; २९५।४; सिराई २९५।४;
 ३११।१; ३७४।५; ४०९।१; सिरायोँ २१५।२
 सिरीवन्त ३४१।७
 सिवाती ११५।७
 सिंसिर ४४।५; ४५।२
 सीड ४३।५; २२८।३; ३०६।६; ३२६।१;
 ३२८।३

सींचि २८।१
 सीतल २७।३; १८८।६; ३२५।४
 सीप ६०।१
 सु (सो) ३३८।७
 सुआ ३०८।३
 सुक्ख १६४।६; २७८।६; ३५२।६
 सुकुवार २८।२; ८८।२
 सुखिये ३१२।६
 सुखरावहु २७०।५
 सुखानी १५९।३; २७६।३
 सुघर २६०।६
 सुघरी ३५७।६
 सुजान ८१।१
 सुझर २७।१; ३१९।२
 सुठि ४०१।६; सुँठि ४१७।७
 सुद्ध १७।६; ४०२।६; सुध २२१।१; ४१२।२
 सुदिन ३४८।७; ३५७।६
 सुनइ ३३०।७; सुनई ४०४।३; सुनउ ९।७;
 सुनत ४००।१; सुनतहि १६६।५; १७४।१;
 २७८।२,५; २९५।३; ३४२।१; ३७२।४;
 सुनसि ३२०।१; ३४१।१; सुनहु १७९।२;
 १९२।५; १९५।४; २३६।१; २६२।५;
 २७७।२; ३४७।१; ३४९।१; ४०८।६; सुनोँ
 १८१।२; २७३।१; ३९६।२; सुनावा ३९२।१;
 सुनि ३९५।५; सुनिउ ४०७।१; सुनिके
 २६१।१; २८२।६; सुनिकैँ १९१।१; सुनु
 ३५५।२; ३७९।३; सुनेउ ११।४; २३७।५;
 ४२७।३; सुनेउँ ३४१।२; सुनैँ ४०१।१
 सुनकारि १९०।१
 सुनवानी २०।४; ९४।७
 सुनारा ४२९।५; सुनारि ३६८।७; सुनारी
 ८१।१; ३०२।२
 सुपेती ३२५।२; ३२७।४
 सुफल ३०४।५; ३३१।२
 सुबर्न ९३।३
 सुबंस ३९१।७
 सुबुधि ७७।५
 सुभर ६१।१; ६७।१; २८०।५
 सुभाउ ३७८।५; सुभावा २२३।४
 सुभाग ८०।४; सुभाग १८।३; ३२१।५;

सुभागी ३४५; ३६८२; ३७०१; सुभागे	२२४३; २२७२; २३६२, ५; २३८२;
१८१; ३२०५; ३३११; सुभागी २६०४	२५२१; २५३५; २५८३, ४; २५९३;
सुरंग ६९५४; सुरंगी ६३१; सुरंगिनि ७७५	२६०२; २६११; २६६३, ६; २७३६;
सुरजन ३८४४	२७७२; २८४२; २८६५; २९२४;
सुरुज ३७७१	३००१; ३०२२; ३१३२; ३१४१;
सुलाखन ११२६; ३४१६; ३९१६	३१९५, ६; ३२५७; ३३२६; ३३८३;
सुवत ३३९४	३४२५, ६; ३४३३; ३४७१, २; ३४८७;
सुवन १०३१; २३७६; सवन २९१; ३५६;	३५३३; ३५४३; ३५६३; ३५८७;
६०१; ७८१, २	३५९३; ३६२५; ३६५६; ३६७४;
सुवा ३३१४	३७५२; ३७९१; ३८२३; ३८६१;
सुहर ७३१३	३८७३; ३८९२; ३९०१, ६; ३९१२;
सुहाई ३५४१; ३६९१; सुहाड ५९६, ६५२;	३९२५; ३९८६; ४००५; ४०१४;
सुहानी ६०३; ९४५; २५४६; सुहावना	४०४५; ४०६४; ४१४४; ४२०१;
३२९६; सुहावा ३२९५; ३६८५	४२१४; ४२६५; ४२८१
सुहागिन ४०१५; सुहागिनि ३५८५	सेज ३२७२; ३२८५; ३२९४
सुहारी ७०१	सेजी ५७३
सुख ३७०६; सुखि १६६४	सेत २७३; ४६५; ५३२; ५८१; ७५४, ५;
सूझा १९८२; २७६१; ३८०१; सूझे २३८१;	२९३१; ३२५२, ४
सूझें १६८७	सेंत २७१७
सुत ३६८७; ३६९७	सेंती १०१३; २१३२; २७२४; २९९२;
सून ३४७७	४०८७; ४१७४; ४३२४
सूर (सूर्य) ३२८३; ३४७६; ३८१६	सेतें २२११
सूर (वीर) ३६६३	सेंदुर ७३२; ७६३
सेइ (वह) १८७७; २३७६; सेई २२५४;	से १६२३, ६; १६३३; १७०७; ३०५२;
२३८३; ३४५१; ३५८२; सेउ १७७७;	३२२४; ३४४५; ३९३७
३८५२	सेंतहि २८९७
सेई (सेवा) ११९१; ३४४४; सेउ ३६०१;	सेन ३७७२
३८८२; ४०८४; सेऊँ १९५२; ३१४४;	सेसांत १०२७
सेवइ ४०८५; सेवों २६६४	सों १५४; ७९५; १९६५; २१२७; २१८१;
सेउ, सेउ, सेउँ (सि) ८४; १११; १४१;	२२०४; २७०३, ४; ३४१४; ३७४५;
१८६; २२७; २३६; ३६७, ४८३; ८२६;	३८१७; ४०२१; सों १९४६; २३४१;
८५२; ८९५; ९१२; ९२१; ९९१;	३७४१, ६
१००४; १०११; ११४५; १२१२;	सोइ ५२२; ८७३; १६९७; १९८४;
१२२१; १२४५; १२६७; १३२५;	२०९४; २१८६; २२०४; २३४५;
१३६२; १५५५; १६१७; १६७१;	२४५४; ३७४७; ३८७६; ४०३३;
१६९२; १७५२; १७७३; १७८६;	४२४५; ४२७२; सोई २९२; १४०२
१७९५; १८४२; १८५२; १८६१, ५;	१७१५; १८६३; १८९३; १९८३
१८८२; १९०३; १९१२; १९२१, ४;	२१६२; २२०५; २२२२; ३२६४;
१९५५; १९६६; १९७३, ६; १९८५;	३३८५; ३४१३; ३५१३; ३५५१, ३;
१९९७; २००४, ७; २०४४; २२२३;	३८३३; ३९५५

सोड १६८६
 सोगू ३८५१
 सोझा १६९२
 सोनारी ४९३
 सोबेर १९९५
 सोमेल ६०१; ६२१; ७५२
 सोरठा १३३
 सोरह ७४६
 सोवत ३६९६; ४०१४
 सोह (सोमा) २१९१; सोहै २४७६
 सोंह ३८७५
 सोहाई २३४१
 सोहाई ४९३
 सौत ३७०७; ४०३४; सौति ४०७५;
 ४०९५
 सौत ३४८६
 सौतुक ३५२; सौतुख ४६६; ५१६
 सौतेरी ५३
 सौन ८९३; २१२२; ३३०७; ३९३६
 सौर ३२७४
 सोंह ३७७५

ह

हँकरावा ३८९५; हकवाई ३४०२; हँकारहु
 २४६२; हकारा १५२३; हँकारी ४१०४;
 हँकारु २३३४; हँकारे १७५; ३६६४;
 हँकारेउ २१५१
 हथ २०५७
 हतो ८१२, ३
 हथजोर २१७
 हद्द ३८२७
 हन्त २३१६
 हन (?) ७४५
 हन ५६५; हनौ ५०२; १४०१; १४५५;
 हनी २१८७; हनु ३२८७; हनेउ
 १३२६; २१८३; हनौ २७४३; ४१४५;
 ४१५१
 हनिवन्त १०५३
 हम्ह ५७; १७६७; ३२५४; हम्म २२७७;
 हमकह १९१; १५९२; २३९५; २७३५;
 हमकै २७२७; हमरि १२३१; २१३२;

हमरी ८९३; हमरें १२३; ४३०३;
 हमरेउ १२४४; १९७२; हमरै १००६;
 २२४३; २६२२; ४३०७; हमलग ४७४;
 हमसेउ २२७४; २८७७; हमहि ४८४;
 १८२७; २६०२; ३१११; ३४३७;
 ३६०४; हमहु २०४५; २६३५; हमहूँ
 १८०५; ४२४४; हमार ६३५; ८७१;
 १९५४; हमारेउ ६२७; ८६७; ९७२;
 १०६५; १६१७; २१५१; २४७५; ३४५५;
 हमौह १६६७; ३३५६
 हरक ६७७
 हरख ११९४, ७; १९८३; ३०८३, ६;
 ३२२१, २; ३३१७; ४०४६
 हरिभारजा १२५
 हरियर २३३; ३०८३; हरियरि ३६९१;
 हरियारा ३२२१
 हरी १७७१
 हँस २००७
 हसँत २२८५; २५८५; हँसहि २४५२; हसौई
 २०६७; हँसि ३७८१; हँसे २४१७
 हसला ९३४
 हहि ११३३; २५८२; ३१८१; ४३१६;
 ४३२७
 हा १८०१
 हाँकिसि ३३७४
 हाट ६३२
 हाड ३६३२; ३६४६; हाडो १२३३
 हाथिन्ह ४२२३
 हिउ ३६३; हिय ३१४; ५९५, ७; ३१५१;
 ३१८२; ३२२७; ३२३२; ३३५४;
 ३४९३; ३६४३; ३७४७; हिया ३१५३;
 ३३६६; ४०८२; हियारी १६९३;
 २२१४; हियें ५६७; ८४२; ४०६७; हियें
 ५०३; २१८२; २३५५; ३११४, ५;
 ३२५५; ४३१७; हीउ ३२७२; ३९५६
 हिडोल ३२२४
 हिन्दुई ४३०१
 हियो ३४९७
 हिरद २८८७; हिरदै २४०७; हिरदो
 २८८६

हिराई २३१५

हीन ३९११२; हीना २१९१२

हुत ३२१७; ९६१७; १२५१५, ७; १३९१४;

१६४१२; १६६१२; २४५१३; २६४१५;

२६९१४; २७५१५; २९७१२, ७; ३३६१५;

३३८१४, ७; ३४४१३, ७; ३४९१५; ३६३१५;

३७११२; ३७२१४; ३८६१२; ३९४१४;

४३११५; हुती ३७२१४; हुतेउ ३७४१२;

हुतै ८३१६; १६२१४

हुतै १७०१५

हु (ये) ४३०१२; हुँ ३९९१२; हुँतो ३६७१३

हुंगुरि १९१७

हुंठे १७०१२

हुंत २०७११

हेरा १३५१३; २६७१४; २७५११; हेराई ३५१२;

हेरानी २४१३; हेरै ४१११२

हेला १६९१५

हेंच ४५१२; ३२६१३;

हेंचैत १६६१३

हेंवर ४११११

होइ १७३१२; ३५३१३; ३५८१३; ३८७१७;

३८९१६; ३९११३; ३९२१५; ४००१६;

४०८१४; होइके ३९५१६; होइह १६२१७;

१८५१७; ३१५१६; होइहिं १४८१२;

१७११२; २०३१७; २०५१२; ३०९१७;

३४११४; ३८११६; होई १८१२; ३२६१४;

३३६१३; ३४११३; ३४४१२; ३५११३;

३५५१३; ३६७१६; ३६९१२; ३८३१३;

३९५१२; होउ १४६१७; १६७१६; १८११७;

होउँ २७२१२; होय ३३९१७; होहि

२७४१५; ३०११३; होहिंह २१०१३; होही

१३५१३; होहु ४०८१२

होरी ३२९११

हौ १२१६; २११७; २४१२; २५१५; १०५१७;

१०८१२; १३४१४; १३५१३; १६२१२;

१६७१६; १७६१३; १८७१६; १९२१७;

१९३१४, ५; १९४१७; १९५१२, २; १९७१५;

२१८१३; २२२१६, ७; २३४१४, ६, ७;

२३५१४; २३६१३; २३७१३; २३९१३;

२६२१५; २६६१४; २६७१२; ३०२१४;

३२११४, ७; ३२३१२; ३२५१३; ३२९१२;

३३९१४; ३४८१३, ३; ३५५१२; ३६३१२, ६;

३६९१७; ३७८१३; ३८७१६; ३९०१३;

३९११३; ३९९१५; ४०११६; ४२७१३





Gal
M4.3.74

"A book that is shut is but a block."

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY

GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book
clean and moving.
